श्रीधरभाषाकोष ॥

जिसमें

संस्कृत और भाषा के शब्द, शब्दार्थ, अनेकार्थ धातु, धात्वर्थशब्दलक्षण और उनके प्रमाणिक उदाहरण व्याकरणसंयुक्त पाठकजनों की विद्योन्नति और सहायार्थ लिखेगये हैं

सकल गुणाकर वीरेश नरेश विज्ञातिविज्ञ श्रीमान् टामस सी ल्यूस एम्, ए, डैरेक्टर शिक्षाविभाग मुमालिक मुतहद्दा आगरा व अवध तथा श्रीयुत मार्लबरो क्रास साहब बहादुर एम्, ए, इन्स्पेक्टर अवधदेशीय पाठशालाध्यक्ष के अधिकार में

सद्गुणसम्पन्न

पण्डित बद्रीनारायण मिश्र हेडमास्टर सेण्ट्रल नार्मल स्कूल लखनऊ की प्रेरणा से

कान्यकुब्ज पण्डित श्रीधरत्रिपाठि उक्त सेण्ट्रल नार्मल स्कूल के संस्कृत और भाषा के अध्यापक ने रचना करके

दूसरीबार

लखनऊ

मुंशीनवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखाने में छपागया

सन् १९०२ ई०

ऐक्ट २५ सन् १८६७ ई० के अनुसार रजिस्ट्री हुई

मूल्य प्रतिपुस्तक २॥) डाकमहसूल ।)

ॐ श्रीसच्चिदानन्दमूर्तये नमः ।

श्लो० परमानुग्रहाकारं गणाध्यक्षं सुखप्रदम्
बुद्धिराशिं गुणागारं प्रणमामि गजाननम् ॥ १ ॥

भूमिका

प्रकट हो कि वर्तमानकाल में जो शिक्षाप्रकरण अर्थात् सरिश्ता तालीम में जो पुस्तकें पठन पाठन में आती हैं वे प्राचीन और अर्वाचीन पुस्तकों से संग्रह कीजाती हैं बहुधा अंगरेज़ी भाषाकी पुस्तकों से भी अनुवाद कीजाती हैं उन में ऐसे अपूर्वशब्द आजाते हैं कि जिन को सर्व साधारण लोग और पाठकजन नहीं समझसक्ते न अद्यावधि भाषा में कोई उत्तमकोष ऐसा निर्म्मित किया गया कि जिस की सहायता से शब्दों की धातु धात्वर्थलक्षण अर्थों का प्रमाण और वाच्यादिशब्दसम्बन्धी बातोंका बोध भली भांति ज्ञात होता यद्यपि एक दो कोष भाषाके बनाये भी गये हैं तथापि उनमें केवल शब्द और शब्दार्थ लिखा गया है पर उपस्थित काल में जो पुस्तकें शिक्षा विभाग में प्रचलित हैं उन में बहुत से शब्द ऐसे प्रयोग किये गये हैं कि जो इन कोषों में नहीं मिलते हैं ऐसे अभिधान अर्थात् कोष के अवलोकन से पाठकजनों का चित्तोत्साह मन्द हो जाता है इस दशा को देख खेद होताहै अतएव एक भाषा का अभिधान लिखना समयानुसार उचित जान पड़ा मैं चौतीस वर्ष से अवध शिक्षा विभागका सेवक अर्थात् मुलाज़िमहूं इतने समय की सेवकाई में संस्कृत और भाषाकोष और नाना समाचारपत्रों में जो २ विलक्षण और अपूर्वशब्द दृष्टिगोचर हुए उनको संग्रह करता रहा इन से अतिरिक्त सर्वगुणगणालंकृत महाशय बाबूमधुसूदनगुप्त जी हेडमास्टर हाईस्कूल सुलतानपुर कि जिनकी मददगारी में मैं चौदह वर्ष [illegible] रहा पूर्वोक्त महोदय से बंगदेशीय कोषों का उत्तमोत्तम आशय ग्रहण [illegible] मातृभाषाके संशोधनार्थ और पाठकजनों के उत्साह बर्द्धन हेतु इस संग्रह [illegible]

ॐ श्रीसच्चिदानन्दमूर्तये नमः ।

श्लो० परमानुग्रहाकारं गणाध्यक्षं सुखप्रदम् ।
बुद्धिराशिं गुणागारं प्रणमामि गजाननम् ॥ १ ॥

भूमिका

प्रकट हो कि वर्तमानकाल में जो शिक्षाप्रकरण अर्थात् सरिश्ता तालीम में जो पुस्तकें पठन पाठन में आती हैं वे प्राचीन और अर्वाचीन पुस्तकों से संग्रह कीजाती हैं बहुधा अंगरेज़ी भाषाकी पुस्तकों से भी अनुवाद कीजाती हैं उन में ऐसे अपूर्वशब्द आजाते हैं कि जिन को सर्व साधारण लोग और पाठकजन नहीं समझसक्ते न अद्यावधि भाषा में कोई उत्तमकोष ऐसा निर्म्मित किया गया कि जिस की सहायता से शब्दों की धातु धात्वर्थलक्षण अर्थों का प्रमाण और वाच्यादिशब्दसम्बन्धी बातोंका बोध भली भांति ज्ञात होता यद्यपि एक दो कोष भाषाके बनाये भी गये हैं तथापि उनमें केवल शब्द और शब्दार्थ लिखा गया है पर उपस्थित काल में जो पुस्तकें शिक्षा विभाग में प्रचलित हैं उन में बहुत से शब्द ऐसे प्रयोग किये गये हैं कि जो इन कोषों में नहीं मिलते हैं ऐसे अभिधान अर्थात् कोष के अवलोकन से पाठकजनों का चित्तोत्साह मन्द हो जाता है इस दशा को देख खेद होताहै अतएव एक भाषा का अभिधान लिखना समयानुसार उचित जान पड़ा मैं चौबीस वर्ष से अवध शिक्षा विभागका सेवक अर्थात् मुलाज़िमहूं इतने समय की सेवकाई में संस्कृत और भाषाकोष औरनाना समाचारपत्रों में जो २ विलक्षण और अपूर्वशब्द दृष्टिगोचर हुए उनको संग्रह करता रहा इन से अतिरिक्त सर्वगुणगणालंकृत महाशय बाबूमधुसूदनगुप्त जी हेडमास्टर हाईस्कूल सुलतानपुर कि जिनकी मददगारी में मैं चौदहवर्ष ... रहा पूर्वोक्त महोदय से बंगदेशीय कोषों का उपयोग आश्रय ग्रहण ... मातृभाषाके संशोधनार्थ और पाठकजनों के उत्साह वर्द्धन हेतु इस संग्रहको सु-

द्रित कराया पुनः इस स्थल पर इस बात को भी सूचित करना योग्य है कि भाषा का प्रचार कबसे और किसप्रकार से हुआ इतिहासों से विदित हुआहै कि संवत् ७७० में अवन्तिकापुरी अर्थात् उज्जैननगर में राजा भोज के पिता राजा मान काव्यविद्यामें अतिनिपुणथे उन्हों ने पुष्पनामक बन्दीजनको संस्कृत काव्य और अलङ्कारादि पढ़ाये उसने उनको भाषा दोहों में अनुवाद किया उसी समय से भाषा काव्यकी नीव पड़ी तब से दिनप्रति भाषा की उन्नति होती गई सूरदास, तुलसीदास, केशवदास, विहारीलाल आदि कवियों ने भाषाके उत्तमोत्तम ग्रंथ निर्म्माण किये उनके शब्दों का ज्ञानदाता केवल कोषही होसक्ता है यद्यपि बहुत प्रकारकी विद्या हैं और उनके विषय भिन्न २ हैं यथा व्याकरणविद्या से वर्णविचार, शब्दविचार, वाक्यरचना, छन्दरचना, उन की विवेचना, योजना और शुद्धाशुद्ध का ज्ञान होताहै परन्तु वाक्य और छन्दका भावार्थ और तर्क वितर्क का ज्ञान न्यायशास्त्र से होता है और साहित्य अर्थात् काव्यविद्या शब्दों की सजावट लालित्य और विचित्रता के काम में आती है परन्तु सर्वोपरि कार्य अभिधान से निकलता है अभिधान में एक २ शब्द के नानार्थ दिखलाये जाते हैं एकही शब्द है पर स्थानान्तर से भिन्न २ अर्थ दिखलाता है इन बातों के विचार का भार कोषसंग्रहक पर रहता है क्योंकि वह शब्दों को श्रेष्ठतमरीतों से चुन २ कर एकत्रित करता है वह शब्दों को इसढब से क्रमबद्ध करता है कि जिस शब्द या उस के अर्थको जो लोग देखना चाहें तुरंत निकल आवें, वह शब्दों की योनि अर्थात् धातु, धात्वर्थ, प्रत्ययादि की रचना का विषय ठीक २ लक्षण या पहचान और उपसर्गादि के संयोग से जो अर्थों में भेद होजाताहै प्रकट करदेता है इसका वर्णन आगे विस्तारसहित होगा अब कोषके उपयोगी संकेतों का उल्लेख किया जाताहै ॥

इस कोष में निम्नलिखित संकेत ठहराये गये हैं ॥

संकेत	शब्द	संकेत	शब्द
सं०	संस्कृत	अं०	अंगरेजी
प्रा०	प्राकृत वा हिन्दी	( )	शब्दोत्पत्ति वा माद्दा
अ०	अरबी	पु०	पुँल्लिङ्ग
फा०	फ़ारसी	स्त्री०	स्त्रीलिङ्ग

संकेत	शब्द	संकेत	शब्द
ब० व०	बहुवचन	गु० उपस०	गुणवाचक उपसर्ग
गु०	गुणवाचक	समुच्च०	समुच्चयिक अव्यय
सर्वना०	सर्वनाम	वि० बो०	विस्मयादिबोधक
सं० सर्वना०	सम्बन्धी सर्वनाम	बोल०	बोलचाल वा मुहावरा
नित्य सं०	नित्य सम्बन्धवान् वा कृतसम्बन्धी	अव्य०	अव्यय
		क०	कर्तृवाचक
क्रि० अ०	क्रियाअकर्म्मक	र्म०	कर्म्मवाचक
क्रि० स०	क्रियासकर्म्मक	भा०	भाववाचक
क्रि० वि०	क्रियाविशेषण	ण०	करणवाचक
उपस०	उपसर्ग	धि०	अधिकरणवाचक

उक्त संकेतों का स्फुट विचार ॥

पु० जिस नाम से पुरुषत्व का बोध हो उसे पुंल्लिङ्ग कहते हैं जैसे पुरुष लड़का, घोड़ा ।

स्त्री० जिस नाम से स्त्रीत्व का बोध हो उसे स्त्रीलिङ्ग कहते हैं जैसे स्त्री, लड़की, घोड़ी ।

भाषा में नपुंसक शब्द पुँल्लिङ्ग ही मानेगये हैं जैसे सागर, जल, रत्न, कुछ इत्यादि पर ये संस्कृत में नपुंसक लिङ्ग हैं ॥

वचन—संख्या को कहते हैं वे दो हैं एक वचन और बहुवचन जिस रूप से एक का बोध हो उसे एकवचन जैसे लड़का, घोड़ा इत्यादि ॥

---

(१) [illegible]

जिसनाम से एकसे अधिक का बोध हो उसे बहुवचन जानो जैसे लड़के, घोड़े इत्यादि ॥

गुणवाचक—गुणवाचक संज्ञा वह है जो पदार्थ के गुण वा धर्म्म को बतावे जैसे काला घोड़ा, धनी पुरुष, प्रतापी मनुष्य इस स्थल पर काला, धनी, प्रतापी गुणवाचक हैं भाषा में गुणवाचक शब्द बहुधा संज्ञा और कर्तादि के विशेषण होते हैं जैसे खट्टा नींबू, ऊंची भीत, प्रतापी मनुष्य, सुखी जन, खज़ानची मोहनलाल इत्यादि ।

सर्वनाम—संज्ञा उसे कहते हैं जो सब नामों के बदले में आवे सर्वनाम का प्रयोजन वहाँ पड़ता है जहाँ नाम को एकबार कहकर फिर कहना हो तब उसकी जगह सर्वनाम आता है इस से वाक्य बुरा नहीं लगता और न वह संज्ञा बारबार कहने पड़ती है जैसे देवदत्त आया और उसने पोथी पढ़ी यहाँ (उसने सर्वनाम है) सर्वनामों में लिंग के कारण कुछ विकार नहीं होता जिन संज्ञाओं के स्थान में वे आते हैं उनके अनुसार सर्वनामों का लिङ्ग समझा जाता है जैसे देवदत्त ने कहा मैं पढ़ताहूं यहां देवदत्त पुँल्लिङ्ग है उसके बदलेमें मैं आया है तो मैं पुँल्लिङ्ग हुआ, लड़की कहती है कि मैं जाती हूं यहाँ लड़की स्त्री लिङ्ग है अतएव मैं भी स्त्रीलिङ्ग हुआ ।

सर्वनामों के कई भेद हैं जैसे पुरुषवाची जमीर शख़्सी, निश्चयवाचक वा दर्शक जमीर इशारह, अनिश्चयवाचक जमीर मुबहम, सम्बन्धवाचक इस्म मौसूल, प्रश्नवाचक इस्तफ़हाम, आदरसूचक इज्ज़त बतानेवाले । मैं तू वह पुरुषवाचक सर्वनाम हैं यह, वह निश्चयवाचक कोई, कुछ अनिश्चयवाचक जो जौन सो तौन सम्बन्धवाचक क्या कौन प्रश्नवाचक आप आदरसूचक ।

सम्बन्ध उसे कहते हैं जिस से स्वत्व और रिश्ता जाना जाता है वह दो में रहता है एक कृतसम्बन्धी अर्थात् मुज़ाफ़इलेह दूसरा सम्बन्धी अर्थात् मुज़ाफ़ जैसे राजा का घोड़ा राजा कृतसम्बन्धी घोड़ा सम्बन्धी इत्यादि ॥

क्रिया के विषय में ॥

क्रिया उसे कहते हैं जिससे कृति स्थिति और देह मन के व्यापार का बोध हो क्रियापद में लिंग, वचन, पुरुष, अर्थ, काल, प्रयोग अवश्य होते हैं और इनका ज्ञान क्रियापद के रूप से होता है इन भेदों से क्रियापद के रूप प्रायः बदलते हैं ॥

क्रिया धातु से बनती है इस हेतु धातु का वर्णन करते हैं ॥

क्रिया की योनि या मूल जो प्रत्ययादि कार्य्यरहित शुद्धरूप है उसे धातु कहते हैं क्रिया दो प्रकार की है सकर्म्मक और अकर्म्मक सकर्म्मक क्रिया में कर्त्ता के व्यापार का फल कर्म्म में पाया जाता है यथा पण्डित पोथी को पढ़ता है पण्डित कर्त्ता, पोथी कर्म्म, पढ़ता है क्रिया। अकर्म्मक क्रिया में कर्त्ता के व्यापार का फल कर्त्ताही में रहताहै यथा बालक होता है या रोताहै बालक के व्यापार का फल बालकही में रहा संस्कृतज्ञ धातु के दो भेद कहते हैं सकर्म्मक अकर्म्मक जो धातु वस्त्वन्तरसापेक्ष है वह सकर्म्मक है यथा राम भोजन करताहै श्याम दर्शन करता है इस स्थल में क्या भोजन करता है और किस का दर्शन करता है इसकी जानने की अपेक्षा है राम कोई वस्तु भोजन करता है और श्याम कोई द्रव्य का दर्शन करता है अतएव सापेक्षत्व प्रयुक्त भुज धातु एवं दृश धातु सकर्म्मक हैं जो धातु वस्त्वन्तर सापेक्ष नहीं है वह अकर्म्मक [1] है यथा शिशु शयन करते हैं बालक क्रीड़ा करते हैं इस स्थल में शी एवं क्रीड़ धातु किसी वस्तु की अपेक्षा नहीं करती हैं केवल कर्तृनिष्ठ हैं ॥

अकर्म्मक धातु जानने के निमित्त संस्कृत मे कोई संकेतिक चिह्न नहीं दिया जाता है वह अनायास ज्ञात होती है ॥

द्वितीय बात यह है कि इ, ओ, इत्यादि वर्णों को अनुबन्ध कहते हैं जिस धातु के परे इ, वर्ण दृष्ट होवे तिस धातुके उपान्तमें न अक्षर का आगम होगा पश्चात् वही नकार वर्गके अनुसार सन्धि के नियम से ङ, ञ, ण, म, से, बदल जाती है यथा अक्+इ+त=अङ्कित, अच्+इ+त=अञ्चित, उत्कठ्+इ+त=उत्कण्ठित, कप्+इ+त=कम्पित ॥

स्वाभाविक धातु सम्वलित नकार का भी यही नियम है यथा अन्+ज=अञ्जन एवं जिस धातु के पश्चात् ओ होगा उस के उत्तर त (तव्य) आदि प्रत्ययके परे इकार का आगम नहीं होगा यथा गमओ=गत, गम ओ=गन्तव्य तृतीय बात यह है धातु का नानाप्रकार का अर्थ होनेसे भी व्यवहारानुसार एक दो तीन पर्य्यन्त धात्वर्थ लिखे गये हैं ॥

इस ग्रन्थमें धातुनिष्पन्न शब्द का अकारादिवर्णप्रबन्ध में प्रत्यय और वाच्य का यथोचित उल्लेख रहेगा वाच्यका सङ्केतिक एक २ वर्णहोगा अर्थात् कर्तृवाच्य

---

[1] [illegible]

का क० कर्म्म वाच्य का र्म्म० करण वाच्यका ण०, अधिकरण वाच्यकी धि०, भाववाच्य का भा० लिखागया है ॥

प्रत्यय

अन, अ, ति, अ,

(संस्कृत में अनट, अल, क्ति, घञ्,) इन प्रत्ययों के योगसे क्रियावाचक शब्द निष्पन्न होता है (कहीं २ संज्ञा शब्द भी होता है) प्रकट हो कि अनट, अल प्रत्यय के ट, ल, काम में नहीं आते इस कारण अनट, अल के स्थान में अन, अ को लिखते हैं अन, अ, (अनट, अल) के प्रायः सब धातु के उत्तर भाववाच्य में अन, अ, प्रत्यय होता है अन, अ, के योग से धातु का अन्त्य वर्ण पूर्ववर्ती इ, उ, ऋ, के स्थान में ए, ओ, अर, हो जाता है एवं धातु के अन्त स्थित इ, ई, के स्थान में अय् उ ऊ के स्थान मे अव् , ऋ ॠ के स्थान में अर् हो जाता है यथा क्षिप+अन=क्षेपन। विक्षिप+अ=विक्षेप। चि+अन=चयन। सञ्चि +अन=सञ्चयन इत्यादि।

ति (क्ति)

प्रायः सब धातुके अन्त्य में भाववाच्य मे ति प्रत्यय होता है ति कभी २ धातु में युक्त हो जाता है यथा शक्+ति=शक्ति। कभी २ ति प्रत्यय के परे धातु के अन्तिम, एवं न, का लोप हो जाता है यथा गम्+ति=गति। आहन्+ति= आहति और कभी २ ति के परे धातु के अन्त स्थित म को न हो जाता है और प्रथम स्वर दीर्घ हो जाताहै यथा भ्रम्+ति=भ्रान्ति इत्यादि ॥

अ (घञ्)

धातु के उत्तर भाववाच्य में अ प्रत्यय होता है अ प्रत्यय के योग से धातु के उपांत अ को आ हो जाता है और इ के स्थान में ए और उ को ओ ऋ को अर् हो जाता है यथा स्वद् अ=स्वाद एवं अ प्रत्यय के योग से धातु के अन्त इ ई के स्थान में आय् उ ऊ के स्थान में आव् ऋ ॠ के स्थान में आर् हो जाता है यथा अधि इ+अ=अध्याय इत्यादि निम्न लिखित प्रत्ययों के योग से विशेषण शब्द कदाचित् संज्ञा शब्द निष्पन्न होते हैं

अक, तृ, इन, इष्णु, अन, उक, र, अ, आन, स्यमान, क्विप्, त, तव्य, अनीय, य, स, इ, प (संस्कृत क्रम से षाक, तृण्, णिन्, इष्णु, अन, उक, र, (ण, यण, श, उ,) आन, स्यमान ॥

क्विप्, त, तव्य, अनीय, य, क्यप, ण्यण् सन्, णि, यङ उक्त प्रत्ययों का प्रयोग अर्थात् इस्तामाल,

(अक=णक)

धातु के उत्तर कर्तृवाच्यमें अक प्रत्यय होता है अर्थात् धातुके साथ अक प्रत्यय के योग से कर्तृबोधक शब्द निष्पन्न होता है अक प्रत्यय के योग से धातु के इकारादि अन्तस्वर के स्थान में आय् इत्यादि हो जाताहै एवं उपान्त का अदीर्घ आ हो जाता है और इकारादि के स्थान में एकारादि हो जाता है, एवं आकारान्त अकारान्त धातु के पीछे अकप्रत्यय के पूर्व में य का आगम होजाताहै यथा नी+अक=नायक, पठ्+अक=पाठक, भिद्+अक=भेदक, कृ+अक=कारक, दा+अक=दायक ॥

(तृ=तृण्)

धातु के उत्तर तृ प्रत्यय होने से कर्तृवाच्य होता है तृ प्रत्यय के योग से धातु के अंत्य और उपांतिम इकारादि के स्थान में एकारादि होता है यथा जी+तृ=जेता, नी + तृ=नेता, स्तु + तृ=स्तोता, कृ + तृ=कर्ता, हृ + तृ=हर्ता, आ, हृ + तृ=आहर्ता, छिद् + तृ=छेत्ता, भिद् + तृ=भेत्ता ॥

(इन्=णिन्)

धातु के परे कर्तृवाच्य में इन् प्रत्यय होती है इन् प्रत्यय के योग में धातु के इकारादि अन्तस्वर के स्थान में आय् प्रभृति हो जाता है एवं उपांत के अ को आ हो जाता है और इकारादि के स्थान में एकारादि हो जाता है एवं अकारांत धातु के उत्तर इन् प्रत्यय के परे यकार का आगम होता है यथा शी+इन्=शायी, वद+इन्=वादी, भिद+इन् भेदी, स्था + इन्=स्थायी, दा + इन्=दायी, पा+इन=पायी, या+इन्=यायी ॥

(इष्णु)

चर, सर, हन्, वृध्, निर, आ, कृ, और कई एक धातु के उत्तर में कर्तृवाच्य में इष्णु प्रत्यय होता है इष्णु प्रत्यय के योगसे धातु के अंत और उपांत इकारादि एकारादि हो जाता है यथा चर् + इष्णु=चरिष्णु, वृध् + इष्णु=वर्द्धिष्णु, अलं, कृ + इष्णु=अलंकरिष्णु इत्यादि ॥

(अन)

ई (नि) युक्त पद प्रभृति कई एक धातुके परे कर्तृ वाच्य में अन होताहै यथा नद्+इ+अन=नन्दन, नश्+अन=नाशन, हन्+अन्=घातन, मर्द्+अन=मर्दन, तृ+अन=तारण, भू+अन=भावन, मुह+अन=मोहन, पू+अन=पावन, भिन्न उक्तरूप सब उपपद पूर्व में व्यवहार किये जाते हैं यथा, विपन्नाशन, पतितपावन, गोपीमोहन इत्यादि ॥

(उ, उक)

कई एक धातु के उत्तर कर्तृवाच्यमें उकहोता है कम्+उक=कामुक इत्यादि ॥

(र)

दीप्, नम्, कम्, हिंस, प्रभृति कई एक धातु के परे कर्तृवाच्य में र होता है यथा नम+र=नम्र, हिंस + र=हिंस्र ॥

† ‡ अ (ण, यण, श, उ)

विशेष्य विशेषण किंवा अव्यय शब्द के पूर्व्ववर्ती धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में अ प्रत्यय होता है अ प्रत्यय कई एक धातु में संयुक्त हो जाता है और अ प्रत्यय के परे कई एक धातु का अंत्य इकारादि एकारादि से परिवर्तित हो जाता है अर्थात् बदल जाता है और अ प्रत्यय के कई एक धातु का अंत्यवर्ण और तत्पूर्व्ववर्ती स्वरका लोप हो जाता है वा धातु का अंत्य अकार लुप्त होजाता है यथा मनस् रम्+अ=मनोरम, कुम्भकृ+अ=कुम्भकार, पङ्क+जन+अ=पङ्कज, सुख+दा+अ=सुखद ॥

(आन)

कई एक धातु के परे वर्तमानकालमें कर्तृवाच्य में आन प्रत्यय होता है। जिस धातु के परे अकार आता है तदुत्तर आन के स्थान में मान हो जाता है अन्यप्रकार के धातु के परे केवल आन प्रत्यय होता है कर्म्म और भाववाच्य धातु के उत्तर यकार का आगम आता है और आन के स्थान में मान होजाता है यथा धाव+आन=धावमान, शी+आन=शयान, कृ+आन=कुर्वाण, क्रिय+आन=क्रियमाण ॥

(स्यमान)

कर्तृ एवं कर्म्मवाच्य भविष्यत्काल मे धातु के उत्तर स्यमान प्रत्यय होता है किसी धातु के परे स्यमान प्रत्यय के पीछे इकार का आगम होता है यथा दा+स्यमान=दास्यमान, जन+स्यमान=जनिष्यमाण ॥

---

† [illegible] । ‡ परनिकविशेषणम ।

(क्विप्)

धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में क्विप् होता है। क्वि् का कुछ नहीं रहता है कारण शून्यमात्र प्रदर्शित होता है क्विप् प्रत्यय के परे वच् धातु प्रभृति अकार दीर्घ होजाता है और च् के स्थान में क् हो जाता है एवं क्विप् प्र के परे ज् और श् के स्थान में क् हो जाता है यथा वच् + ० = वाक्, आखु भुज् = आखुभुक्, दृश् + ० = दृक्।

(त=क्त)

गम प्रभृति कई एक धातु एवं अकर्म्मक धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में त प्रत्यय होता है और इससे भिन्न धातु के उत्तर कर्म्मवाच्य और प्रयोग विशेष उ वाच्यमें त प्रत्यय होता है यथा अकर्म्मक गम् + त=गत, भी + त=भीत, स कर्म्मक कृ + त=कृत, परिच्छिद् + त=परिच्छिन्न भिद् + त भिन्न।

जिस धातुका औ अनुबन्धनहीं है तिस से परे त प्रत्यय के पूर्व इकार आगम होता है एवं कृ, भू इत्यादि धातु के उत्तर त प्रत्ययके पूर्व इकार आगम नहीं होता यथा इकार का आगमलिख्+त=लिखित।

अनागम भू + त = भूत, कृ + त = कृत त प्रत्यय के योग मकारान्त और नकारान्त धातु का म् और न् का लोप होजाता है कभी म को न होजाता है तब प्रथमस्वर दीर्घ हो जाता है यथा लोप का उदा रण गम् + त=गत, हन् + त = हत, म को न और दीर्घ होनेका उ रण भ्रम् + त=भ्रान्त, त प्रत्ययके योग में धातु का अन्त्य हकार ग से प लित होजाताहै अर्थात् बदल जाताहै एवं त प्रत्यय का तकार ध से बदल ताहै और यह ग के साथ मिल जाता है किसी २ धातु का ह और त प्र का दोनों मिलकरके एक धकारसे बदल जातेहैं और धातुका ह्रस्व स्वर होजाता है यथा मुह् + त=मुग्ध, गुह्+त=गूढ़।

त प्रत्ययके योगमें मद्धातु को छोड़ कर दकारान्त धातु के द के स्थानमें और त प्रत्ययके त कोभी न होजाताहै यथा छिद् + त=छिन्न, डी प्रभृति धातु त प्रत्ययके त के स्थानमें न हो जाताहै यथा डी + त=डीन उड्डी + त=उड्डीन॥

शुष्, पच् धातुओं के उत्तर त प्रत्ययके तकारको क वा व होजाताहै यथा शुष् + त=शुष्क, पच्+त=पक्व त प्रत्ययके योगमें ऋकारान्त धातुके ऋ को ईर् ताहै एवं त प्रत्ययके त को न होजाता है यथा जॄ + त=जीर्ण, उत् + त=उत्तीर्ण॥

योग्यार्थ और कर्म्मवाच्य

(तव्य)

यह प्रत्यय प्रायः बहुत धातुओं के साथ योग कियाजाता है प्रायः योग्यार्थ और कर्म्मवाच्य में तव्य होताहै तव्यके योगमें धातुके अन्त्य किंवा उपान्त-स्थित इकारादिके स्थान में एकरादि होजाताहै। एवं जिस धातुका (औ) अनुबन्ध नहीं है ऐसे धातुके उत्तर एवं वृ, श्वि, श्रि, डी, शी, पू, रु, नु, स्नु, क्षि, क्ष्णु, धातु के उत्तर तव्य प्रत्ययके योगमें इकार का आगम हो जाता है तद्भिन्न एक स्वर आ, इ ई, उ ऊ, और ऋकारान्त धातु के उत्तर तव्य प्रत्यय के योग में इकारका आगम नहीं होता है यथा चि+तव्य=चेतव्य, बुध + तव्य=बोद्धव्य, दा + तव्य=दातव्य ॥

कर्म्म वाच्य और योग्यार्थ

(अनीय)

यह प्रत्यय प्रायः सकल धातु के उत्तर कर्म्मवाच्य और योग्यार्थ में होता है अनीय प्रत्यय के योग्य में धातु के अन्त्य इ ई, उ ऊ, ऋ के स्थान में अय्, अव् अर् होजाता है एवं उपान्त के इकारादि के स्थान में एकारादि हो जाता है यथा चि + अनीय=चयनीय, भिद् + अनीय=भेदनीय, भज्, यज्, जप्, आ, नम्, धातु के उत्तर एवं जिन सब धातुओं के साथ (य=ध्यण्) किंवा (य=क्यप्) प्रत्यय का योग नहीं कियाजाता है तिस के पश्चात् प्रायः कर्म्मवाच्य में और योग्यार्थ में य प्रत्यय होता है य प्रत्ययके योगमें तव्य प्रत्ययान्त धातुके अनुसार स्वरकापरिवर्तन होता है अर्थात् बदलजाता है एवं धातुका अन्त्य आ एकार से परिवर्तित होता है यथा चि+य=चेय भिद् + य=भेद्य, दा+य=देय, धा + य=धेय, ज्ञा + य=ज्ञेय वि, ज्ञा+य=विज्ञेय।

(य=क्यप्)

वृ, दृ, भृ, स्तु, इ, शास् एवं ऋकारान्त धातु के उत्तर एवं और कई एक धातु के उत्तर प्रायः कर्म्मवाच्य नित्य (य, क्यप्) प्रत्यय होताहै कृ, वृष्,मृज्, गुह, दुह, शंस्, संमभृनि वा आपि अभिपूर्वकग्रह धातुके उत्तर विकल्पसे (य,क्यप्) होता है य प्रत्ययके योगमें धातुके स्वरका परिवर्तन नहीं होता अर्थात् नहीं बदलता यथा मृज्+य=मृज्य, गुह् + य=गुह्य परन्तु वृ, आ, दृ, भृ, स्तु, कृ धातुके उत्तर (य, क्यप्) प्रत्ययके पूर्व्व त का आगम होजाता है यथा भृ + य भृत्य, आ,दृ + य=आदृत्य।

इकारान्त वा उकारान्त एवं हलन्त अथवा ऋकारान्त धातु के उत्तर कर्म-वाच्य में (य, घ्यण्) होजाता है य प्रत्ययके योग में धातु के इकारादि अन्त्यस्वर आय् आदि के रूप में बदलजाता है एवं उपान्त्यका इकारादि स्वर एकारादि में परिवर्तित होजाता है एवं जन्, वध् धातुको छोड़ अन्य धातुका उपान्त्य अ को आ होजाता है यथा श्रु+य=श्राव्य, दुह्+य=दोह्य, क्रम्+य=क्राम्य ।

(इ, ञि)

धातुके परे प्रेरणार्थ में और स्वार्थ में इ प्रत्यय होता है इस प्रत्यय के होने में शब्द निष्पन्न नहीं होता है धातु के उत्तर इ प्रत्यय कियाजाय तिसके परे और कोई एक प्रत्यय करते हैं इ प्रत्यय के परे धातुके अन्त्य इकारादि के स्थान में आय् इत्यादि एवं उपान्त्य के इकारादि के स्थान में एकारादि होजाता है परन्तु कभी २ इ प्रत्ययका लोप होजाता है वा कभी इ प्रत्ययका परिवर्तन अय् से होजाता है यथा कृ+इ+त=कारित, कृ+इ+तृ=कारयिता, चु+इ+त=चोरित ।

(स, सन्)

धातुसे परे इच्छार्थ में स प्रत्यय होता है इस स प्रत्ययके करने में और एक प्रत्ययका योग होता है स प्रत्ययके परे एकस्वर के सहित धातुके आद्य अक्षर की द्विरुक्ति अर्थात् द्वित्व होजाता है एवं द्विरुक्ति के क को च होजाता है और ग को ज और भ को व एवं ध को द होता है यथा कृ+स—आ=चिकीर्षा, पा+स—आ=पिपासा, गुप+स—आ=जुगुप्सा ।

स प्रत्ययके परे लभ्, दा, आप् के स्थान में क्रमशः लिप्, दित्, इप होजाता है यथा लभ+स—आ=लिप्सा, दा+स+आ=दित्सा, वि—आप्+स—आ=वीप्सा ।

(य, यङ्)

धातु के उत्तर पुनः पुनः अर्थात् वारम्वार अर्थ में य प्रत्यय होता है य प्रत्यय के परे एक प्रत्यय और होता है य प्रत्ययके परे एकस्वर सहित धातु के आद्यवर्णकी द्विरुक्ति अर्थात् द्वित्व होजाता है एवंद्विरुक्तिके क को च होजाता है ग को ज और भ को द एवं भ को व होजाता है यथा दीप+य—मान—देदीप्यमान इस य प्रत्यय का किसी २ स्थान में लोप होजाता है [illegible]

थ प्रत्ययका कार्य्य समुदाय होता है पीछे अन्य प्रत्यय का योग होजाता है यथा क्रम् + अन=चङ्क्रमण

(तद्धित प्रकरण)

तद्धित उसे कहते हैं जिससे संज्ञाके अंत में प्रत्ययों के लगाने से अनेक शब्द बनते हैं जो भाषा में व्यवहृत प्रत्यय हैं उन्हें नीचे लिखते हैं तद्धित के प्रत्यय से अपत्यवाचक, कर्तृवाचक, भाववाचक, ऊनवाचक, गुणवाचक संज्ञा उत्पन्न होती है जैसे।

१ अपत्य वाचक संज्ञा नामवाचक से निकलती है। नामवाचक के पहले स्वर को वृद्धि करने से अथवा ई प्रत्यय होने से जैसे शिव से शैव विष्णु से वैष्णव गोतम से गौतम मनु से मानव वशिष्ठ से वाशिष्ठ महानन्द से महानन्दी रामानन्द से रामानन्दी हुआ है।

२ कर्तृवाचक संज्ञा उसे कहते हैं जो क्रिया के व्यापार का कर्ता है उसे बतावे संज्ञा से वाला, हारा, इया, इन, प्रत्ययों के लगाने से बनती है जैसे चुडिहारा दूधवाला आढतिया इत्यादि॥

३ भाववाचक संज्ञा और संज्ञाओंसे इन प्रत्ययों के लगाने से बनती है जैसे ता, त्व, आई ई पन पा वट हट स इत्यादि उदाहरण ये हैं चतुराई बोआई लड़काई लम्बाई पशुत्व उत्तमता मित्रता बालकपन बुढापा बनावट चिकनाहट।

४ ऊनवाचक संज्ञा अक इया आ वा लगाने से और आ को ई आदेश करने से बनती है जैसे मानव से मानवक वृक्ष से वृक्षक घोड़ी से घुड़िया बच्चा से बचुआ मर्द से मर्दक पलँग से पलँगड़ी।

५ गुणवाचक संज्ञा नीचे के प्रत्ययों के लगाने से बनती है आ, इक, इत, इय या ई इला, एला, ऐला, लू, लू, ल, वन्त, वान्, जैसे प्यास से प्यासा, भूख से भूखा, शरीर से शारीरिक, स्वभाव से स्वाभाविक, आनन्द से आनन्दित, समुद्र से समुद्रिय, झाँझ से झाँझिया, ऊन से ऊनी, साज से सजीला, घर से घरेला, बन से बनेला, दया से दयालु, झगड़ा से झगड़ालू, कृपा से कृपालु कुल से कुलवन्त, आशा से आशावान्॥

इति तद्धितप्रकरणम्॥

कृदन्तके विषय में

[illegible] जो प्रत्यय होते हैं कि जिन से कर्तृत्व या व्यापारका बोध

होता है उन्हें कृत् कहते हैं उनके आनेसे जो शब्द बनते हैं उन्हें कृदन्त अथवा क्रियावाचक संज्ञा कहते हैं इस हेतु से कि प्राय: क्रियाके सदृश अर्थ को प्रकाश करते हैं ॥

भाषा में पांच प्रकार की संज्ञा क्रिया से बनती हैं अर्थात् कर्तृवाचक, कर्मवाचक, करणवाचक, भाववाचक और क्रियाद्योतक उनके बनाने की रीति नीचे लिखी है ॥

१ जिस से कर्तापन का बोध हो वह कर्तृवाचक है उसके बनाने की रीति यह है कि क्रियाके साधारण रूप के अन्त्य आ को ए करके आगे हारा वाला लगा देते हैं यथा करने वाला मारने हारा इत्यादि स्त्री लिङ्ग में अन्त आ को ई से बदल देते हैं यथा करनेवाली मारने हारी दान देनेवाली ॥

धातु के न चिह्नका लोप करके अक, इया, वैया प्रत्यय करनेसे कर्तृवाचक संज्ञा हो जाती है, यथा पालना से पालक, जड़ना से जड़िया, जीतना से जितवैया जिस धातु का स्वरदीर्घ हो तो वैया प्रत्यय के लगाने पर उसे ह्रस्व करदेते हैं यथा खानासे खवैया गाना से गवैया आदि जानो ॥

२ जिस संज्ञा से कर्मत्व जाना जाता है उसे कर्मवाचक संज्ञाकहते हैं वह सकर्मक क्रियासे बनती है और उसके बनाने की यह रीति है कि धातु के ना चिह्न को पुल्लिङ्ग में आ से और स्त्रीलिङ्ग में ई से बदल देते हैं उसके पूर्व स्वर का लोप करके आ और ई को मिला देते हैं वही कर्मवाचक संज्ञा होजाती है अथवा उस रूपके आगे हुआ लगादेते हैं यथा देखना से देखा मारना से मारा अथवा मारा हुआ देखा हुआ स्त्रीलिङ्ग में मारी हुई देखीहुई आदि ॥

३ भाववाचक संज्ञा उसे कहते हैं कि जिसके कहने से पदार्थ का धर्म वा परिणाम समझाजाय अथवा जिससे किसी व्यापार का बोधहो व्यापार की भाववाचक संज्ञा कई प्रकारसे बनाई जाती है यथा कहीं धातु के ना के लोप करदेने से कहीं ना को आव आदेश करने से कहीं न धातु के ना के स्थानमें ट करनेसे और कहीं आ का लोप करके आ, ई लगानेसे और प- हि का ना लोप करके आनट आहट अथवा वट हट लगाने से बनती है [illegible] से बोल [illegible] देना [illegible] से

मार पीट और बोनासे बोआई ठगनासे ठगाई सिखना से सिखावट लिखना से लिखावट ॥

४ करणवाचक वह है जिसके द्वारा कर्ता व्यापारको सिद्ध करता है उसके बनाने का नियम यह है कि धातु के ना के आ को ई करदेने से कहीं २ ना का लोप करके ना से पूर्व अक्षर में आ लगाने से कोई २ धातुही करणवाचक का काम देती है यथा कतरना से कतरनी खोदना से खोदनी घेरना से घेरा फेरना से फेरा बेलना यह धातु ही करण का काम देती है ॥

५ क्रियाद्योतक संज्ञा वह है जो संज्ञा का विशेषण होके निरन्तर क्रिया को जनावे उसके बनाने की रीति यह है कि धातु के ना चिह्न को ता करने से और स्त्रीलिङ्ग में ती करनेसे बनती है अथवा उसके आगे हुआ लगानेसे बनती है यथा देखता देखता हुआ इत्यादि ॥

इति कृदन्तप्रकरणम् ।

१ अव्यय अ=नहीं व्यय=नाश, क्षय, खर्च ।

अव्यय[1] उसे कहते हैं जिस में लिङ्ग वचन कारक के कारण विकार नहीं होता है सदा एकसा रहता है अव्यय चार प्रकार के हैं क्रियाविशेषण उभयान्वयी, शब्दयोगी, विस्मयादिबोधक देशभाषा में क्रियाविशेषण बारम्बार आते हैं वे पांच सर्वनामोंसे बने हैं उनका एक कोष्ठ आगे दिया गया है यह वह कौन जौन तौन इन पांच सर्वनामों से स्थलवाचक, कालवाचक, प्रकारार्थक, परिमाणवाचक, क्रियाविशेषण–अव्यय बनते हैं ॥

	यह	वह	कौन	जौन	तौन	
१	अब	०	कब	जब	तब	कालवाचक
	०	०	कद	जद	तद	
२	यहां	वहां	कहां	जहां	तहां	स्थलवाचक
३	इधर	उधर	किधर	जिधर	तिधर	
४	यों	वों	क्यों	त्यों	ज्यों	गुणवाचक वा प्रकारार्थक
५	ऐसा	वैसा	कैसा	तैसा	जैसा	
६	इत्ता	उत्ता	कित्ता	जित्ता	तित्ता	परिमाणवाचक
७	इतना	उतना	कितना	जितना	तितना	

समुच्चय बोधक वा उभयान्वयी अव्यय जो दो शब्दों या दो वाक्यों के बीच में आते हैं और प्रत्येक पद को भिन्न २ क्रिया सहित अन्वय का

(१) [illegible] विभक्तिषु । वचनेषु च सर्वेषु यन्न व्येति तदव्ययम् ॥ १ ॥

संयोग अथवा विभाग करते हैं उन्हे संयोजक और विभाजक अव्यय कहते हैं जैसे राम और कृष्ण आये।

संयोजक अव्यय		विभाजक अव्यय
औ	यथा	वा
और	यदि	अथवा
एवं	जो	क्या
अथ	भी	परंतु
कि	पुनर	किन्तु
तो	पुनः	पर
फिर		चाहे
		जो

शब्द योगी अव्यय जब नाम या सर्वनाम के संग न आवे तो क्रिया विशेषण होते हैं जैसे नाम या सर्वनाम के साथ उदाहरण जिस लिये उस विना किसलिये इत्यादि गोपीसहित कृष्ण आये गोपालसमेत कृष्ण आये क्रिया विशेषण जैसे वाहर गया पीछे गया।

शब्द योगी अव्यय।

आगे पीछे भीतर ऊपर वाहर वरावर वदल वदले समीप बीच पास तले ऊपर विना साथ सहित समेत समक्ष लिये प्रभृति॥

विस्मयादिबोधक या केवल प्रयोगी अव्यय जिन अव्ययों से कहने वाले का दुःख हर्ष धिक्कार धन्यता इत्यादि के भाव या दशा का बोध होता है वे विस्मयादि बोधक हैं।

दुःख और धिक्कार बोधक वा परे, हाय, हाय, अरे, रे, हा, धिक दूर दूर चुप छी त्राहि हर्ष और धन्यता बोधक जय जय शावाश वाह वाह धन्य धन्य, सन्मुखी करण बोधक—अय ओ अरे अवे॥

नीचे के अव्यय संस्कृत और भाषा में उपसर्ग कहाते हैं उप=ऊपर+सृज =सर्ग, सृज=वनाना) उपसर्ग प्रायः क्रियावाचक शब्द के पूर्व युक्त होके क्रिया के भिन्न २ अर्थ का प्रकाश करते हैं वे एक से ले चार तक क्रिया के पूर्व में आते हैं यथा विहार, व्यवहार, सुव्यवहार, समभिव्यवहार उपसर्ग द्योतक हैं वाचक नहीं संयुक्त होकर दूसरे का अर्थ प्रकाश करते हैं असंयुक्त रहने से निरर्थक रहते हैं उपसर्ग से धातु का अर्थ बदल जाता है यथा हार आहार प्रहार विहार इत्यादि॥

( ) [illegible]

अब मैं अपना संक्षेप वृत्तोल्लेख करताहूं ॥

मेरे पितामह पण्डित रामप्रसाद जी जोकि पौराणिक और अपने समय में वैद्य शिरोमणि थे कान्यकुब्ज मुहल्ला मकरंदनगर शुक्लनटोला के निवासी थे और मेरे पिता श्रीपण्डितलालमणिजी पुराण, ज्योतिष, वैद्यक के ज्ञाता थे उन्हों ने सरकारी नौकरी भी १४ वर्ष पर्य्यन्त की और समयानुसार मुझे सातवर्ष की अवस्था से १६ वर्ष पर्य्यन्त संस्कृत अध्ययन कराकर फारसी और गणितविद्या पढ़ने को उपदेश किया उन्हीं के आशीर्वाद से मैंने कुछ सीख पाया जिस का फल आप सज्जनों की सेवा में अर्पण किया जाता है ॥

इस अभिधान के बनाने में निम्न कोषों और समाचार पत्रों की सहायता लीगयी है ॥

फैलन साहेब का हिन्दुस्तानी अंगरेज़ी कोष ।
फार्ब साहेब का हिन्दुस्तानी अंगरेज़ी कोष ।
बेट साहेब का हिन्दी अंगरेज़ी कोष ॥
पण्डित तारानाथ वाचस्पतिका शब्द स्तोम महानिधि ।
वावन शिवरामआप्तेकृत संस्कृत अंगरेज़ी कोष ।
वाबू राधालाल साहेब का शब्द कोष ।

प्रतिष्ठित वंगवासी समाचार पत्र कलकत्ता और राजारामपालसिंह कालेकाँकरका हिन्दोस्तान नामक समाचार पत्रादि इस कोष के मुद्रित कराने में मेरे चित्त में कई कारणों से नाना प्रकार के संकल्प विकल्प उत्पन्न होतेथे पर श्रीकश्यपवंशोद्भवलखीमपूरनिवासी पण्डित बेचेलालात्मजमनीषिमाननीय पण्डित बद्रीनारायणमिश्र हेडमास्टर नार्मलस्कूल लखनऊ की निर्भर सहायता और प्रेरणा से कटिबद्ध होकर इस को मुद्रित कराया ॥

प्रकट होकि सिवाय मेरे उक्त कोष गोवर्द्धन उपनाम मान त्रिपाठि कान्यकुब्ज निवासि की दूकान नज़ीराबाद शहर लखनऊ में भी ग्राहक जनोंको मूल्य प्रेषित करने पर प्राप्त हो सकेगा ।

कवियों का जीवनचरित्र

कबीरदास—संवत् १६१० में उत्पन्न हुआ एक जुलाहे का लड़का था स्वामी रामानन्द के खड़ाऊं की ठोकर खाकर आह का शब्द किया इस को सुन स्वामीजी ने राम राम कहा इस ने उनको अपना गुरु मान लिया इन के कबीर की साखी आदि कई ग्रंथ हैं ॥

केशवदास—सनाढ्य ब्राह्मण देहली के महाप्रतापी अकबर बादशाह के समय में संवत् १९२४ में उत्पन्न हुये थे उस समय से अब तक के और किसी कविने गुरु आशय की चमकदार काव्य की रचना नहीं की है ओरछा के राजा इन्द्रजीत के यहां ये कवि जी रहा करते थे वहां उन्हीं राजा के नाम से चार पुस्तकें अर्थात् रामचन्द्रिका, रसिकप्रिया, कविप्रिया, विज्ञानगीता की रचना की थी जिस में विज्ञानगीता तो ज्ञान के विषय में और शेष तीनों रस के काव्य हैं जिनका आशय कहना बहुत कठिन है इस से जाना जाता है कि केशवदास जी पिङ्गल नायिका भेद अलंकार लक्षणा व्यञ्जना कोष आदि जो काव्य के अंग हैं इन में बहुत विज्ञ थे प्राचीन लोग कहते चले आते हैं कि रसिकप्रिया के एक कवित्त का एक चरण (गखतून के झलझुल्लावन केशव भानु मनो शनि अंक लिये) ऐसा लिखा है जिस में असम्भव उपमा होगई है जिस से स्वप्न में श्रीराधा महारानीजी ने कहा कि तुम्हारी प्रेतों की सी बुद्धि है तुम प्रेत होगे तिस पीछे कुछ काल व्यतीत कर ओरछा में प्रेत यज्ञ करके केशवदासजी ने अपना शरीर त्याग किया और प्रेत हुये ॥

सेमकरण—सरवरिया ब्राह्मण गांव धनौली जिला बाराबंकी के वासी संवत् १८३४ में पैदा हुये थे संस्कृत और भाषा दोनों की कविता में बड़े सिद्ध थे इन्हों ने श्रीरामस्तवराज संस्कृत में रामगीतावली आदि भाषा के ग्रंथ बनाये संवत् १९१८ में स्वर्गवासी हुये ॥

खानखाना नव्वाब अबदुलरहीम—जिनका छाप अर्थात् तखल्लुस् रहीम और रहमन है संवत् १५८० में उत्पन्न हुये थे याविनभाषा तथा संस्कृत और व्रजभाषा के बड़े पण्डित इन की सभा रात दिन पण्डित जनों से भरीपुरी रहती थी संस्कृत में इन के बनाये हुये श्लोक बहुत कठिन हैं और भाषा में नवो रस के कवित्त दोहा बहुत सुन्दर हैं संवत् १६५२ में इन का देहान्त हुआ ॥

गिरिधर—कविराय अन्तरवेद के रहनेवाले संवत् १७७० में उत्पन्न हुये इन की नीति सामयिक सम्बन्धी कुण्डलिया विख्यात हैं ये जयपुर के जयसिंह सवाई की सभा में थे उक्त महाराजा ने इन को कविराय की पदवी दी थी ये एक कुण्डलियों का ग्रंथ बना रहे थे पर पूरा न हुआ मृत्युवश हुये पश्चात् उन की स्त्री ने उसे पूरा किया जिन कुण्डलियों में साईं का पद पड़ा है लोग कहते हैं कि उनकी स्त्री की कही हैं ॥

देवकीनंदन, शिवनाथ, गुरुदत्त शुक्ल—ये तीन भाई कान्यकुब्ज ब्राह्मण कन्नौज के समीप मकरंद नगर के वासी हिंदी भाषा में बहुत अच्छे कवि थे इन्हों ने फुटकर काव्य तो बहुत की है परन्तु पक्षीविलास नामक एक पुस्तक कही है जिस में सब पक्षियों का जुदा २ रंग ढंग स्वभाव आदिका वर्णन किया है जिन दिनों पक्षीविलास की रचना करते थे तब कबूतर पक्षी के वर्णन में (गुरुदत्त तुम्हें यह छोड़बे टोला) यह पद अंत में कह गये जब पीछे को सोचा तो जाना कि यह काव्यागण पड़ गया है सो मिथ्या न होगा अब अवश्य कर के यहां का वास छूटैगा दैवयोग से गोरखपुर की ओर किसी राजा के यहाँ गये वहाँ बहुत मान से ठहराये गये दो ग्राम राजा ने नानकार दिये वहाँ गुरुदत्त जी रहने लगे और विक्रम के संवत १८६४ में उत्पन्न हुये मैं (पण्डित श्रीधर त्रिपाठि) इन के मान्यों में हूं ॥

गंगकवि—एक नौरगांव जिला इटावा के वासी थे संवत् १५९५ में उत्पन्न हुये ये बड़े कवि थे राजा बीरबर ने इनको छप्पै में एकलाख रुपये इनाम दिये इसी प्रकार से अकबर जहांगीर खानखाना मानसिंह सवाई आदि सबों ने इनका बहुत मान किया और दान दिया ॥

घाघकवि—कान्यकुब्ज अन्तरवेदनिवासी संवत् १७५३ में उत्पन्न हुये इनके दोहा छप्पय लोकोक्ति अर्थात् जर्बुलमसल तथा नीतिसम्बन्धी सामयिक ग्रामीण बोल चाल मे विख्यात हैं ॥

चन्द्रकवि—प्राचीन बन्दीजन संभलनिवासी सन् ११९८ में उत्पन्न हुये ये चन्द्रकवि महाराजा वीसलदेव चौहान रणथंभौरवाले के प्राचीन कवीश्वर के औलाद में थे संवत् ११२० में राजा पृथ्वीराज चौहान के पास आय मंत्री औ कवीश्वर दोनों पदों को प्राप्त हुआ औ पृथ्वीराज रायसा नाम एक ग्रन्थ एक लक्ष श्लोक संस्कृत भाषा मे रचे जिसमें ६९ खण्ड हैं और पुरानी बोली हिन्दुओं की है। इस ग्रन्थ में चन्द्रकवि ने संवत् १११० से संवत् ११४९ तक पृथ्वीराज का जीवनचरित्र महाकविताई के साथ बहुत छन्दों में वर्णन किया है छप्पय छन्द तौ मानों इसी कवि के भाग में थे जैसा चौपाई छन्द श्रीगुसाईं तुलसीदास के हिस्से मे पड़ी थी इस ग्रन्थ में क्षत्रियों की वंशावली और अनेक युद्ध औ आबू पहाड़ का माहात्म्य औ दिल्ली इत्यादि राजधानियों की शोभा औ क्षत्रियों के सुभाव चाल चलन व्यवहार बहुत विस्तारपूर्वक वर्णन किये है ये कवि केवल कवीश्वरही नहीं थे वरन नीति शास्त्र औ चारन के काम काज में महाशूरवीर थे संवत् ११४६ मे साथ पृथ्वीराज के येभी मारे गये इन्हीं की औलाद में शारंगधर कवि थे जिन्हों ने हमीररायसा और हमीर काव्य भाषा में बनाया है ॥

चिन्तामणि त्रिपाठी—टिकमापुर जिले कानपुरवाले संवत् १७२९ में उत्पन्न हुये ये महाराज भाषा साहित्य के आचार्यों में गिने जाते हैं अन्तरवेद मे विदित है कि इन के पिता दुर्गापाठ करने नित्य देवीजी के स्थान मे जाते थे वे देवीजी वन की मुइयां कहाती हैं टिकमापुर से एक मील के अन्तर पर है एक दिन महाराज राजेश्वरी भगवती प्रसन्न है चारि मुण्ड दिखाय बोली यही चारो तेरे पुत्र होंगे निदान ऐसाही हुआ कि चिन्तामणि १ भूषण २ मतिराम ३ जटाशंकर या नीलकण्ठ ४ चारि पुत्र उत्पन्न हुये इन में केवल नीलकण्ठ महाराज तो एक सिद्ध के आशीर्वाद से कवि हुये और तीनों भाई संस्कृत काव्य को पढ़ि ऐसे पण्डित हुये कि इनका नाम प्रलय तक रहैगा इन्हीं के वंश में शीतल औ बिहारीलाल कवि जिनका नाम शेष है संवत् १९०१ तक विद्यमान थे निदान चिन्तामणि महाराज बहुत दिन तक नागपुर में सूर्यवंशी भोंसला मकरन्द शाह के यहां रहे और इन्हों ने

नाम छन्दविचार नाम पिंगल १ एक बहुत भारी ग्रन्थ बनाया और काव्यविवेक २ कविकुलकल्पतरु ३ काव्यप्रकाश ४ रामायण ५ ये पांच ग्रन्थ इनके बनाये हुये हैं ॥

तानसेन कवि—ग्वालियरनिवासी संवत् १५८८ में उत्पन्न हुये ये कवि मकरन्द पांड़े गौड़ ब्राह्मणके पुत्र थे प्रथम श्रीगोसाईं स्वामी हरिदासजू गोकुलस्थ के शिष्य हुये काव्य विद्या को यथावत् सीख तत्पश्चात् शेख मोहम्मद गौस गवालियरवासी के पास जाय संगीत विद्या के लिये प्रार्थना करी शाह साहब तन्त्र विद्या में अद्वितीय थे वरन मुसल्मानों मे इन्हीं को इस विद्याका आचार्य्य सब इतिहासों में लिखाहै शाह साहब ने अपनी जीभ तानसेनकी जीभ में लगाय दी उसी समयसे तानसेन गान विद्या में महानिपुण होगये इनकी प्रशंसा आईन अकबरी में ग्रन्थकर्ता फहीम ने लिखी है कि ऐसा गानेवाला पिछले हजारों में कोई नहीं हुआ निदान तानसेन दौलतखां शेरखां बादशाह के पुत्र पर आशिक है उनके ऊपर बहुत सी कविता करी तेहि पीछें दौलतखां के मरने पर श्री बांधव नरेश रामसिंह बघेले के यहां गये और वहां से अकबर बादशाह ने अपने यहां बुला लिया तानसेन और सूरदासजी से बहुत मित्रताथी तानसेन जी ने सूरदास की तारीफ में यह दोहा बनाया ॥

दो० किधौं सूरको शर लग्यो किधौं सूर की पीर ।
किधौं सूरको पद लग्यो तन मन धुनत शरीर १ ॥

तब सूरदासजी ने यह दोहा कहा ॥

दो० विधना यह जिय जानि कै शेष न दीन्हे कान ।
धरा मेरु सब डोलते तानसेन की तान २ ॥

इन के ग्रन्थ रागमाला इत्यादि महाकाव्य उत्तम के ग्रन्थ हैं ॥

तुलसीदास संवत् १६०१ में उत्पन्न हुये सरयूपारीण अर्थात् सरवरिया ब्राह्मण चित्रकूट के इलाके में राजापुर नामक ग्राम के रहनेवाले थे प्रथम तो पाण्डित्य के द्वारा अपना निर्वाह करते थे परन्तु अन्त को अपनी स्त्री के उपदेशसे संन्यास धारण करके अयोध्यापुरी चित्रकूट काशीजी आदि तीर्थों में रहते रहे श्रीरामोपासक इन्हों ने इसी संन्यास धर्म्म में रामायण की रचना की है सात प्रकार से रामायण कवित्तावली दोहावली और विनय-

पत्रिका आदि बहुत अन्य काव्य करे मरण समय से पहले तुलसीदास को यह ज्ञान हो गया था कि मैं अमुक दिन इस संसार से पधारूंगा तब यह दोहा लिख अपने मित्रों को दिखा दिया ॥ दो० ॥ संवत सोरह सै असी असी वरुण के तीर । श्रावण शुक्ला सप्तमी तुलसी तजे शरीर ॥ उसके लिखने के अनुसार उनका देहान्त हुआ ये पट्शास्त्री पण्डित थे ॥

द्विगदेव—महाराजा मानसिंह शाकद्वीपीय अवध नरेश संवत् १८८० के लगभग उत्पन्न हुये ये महाराज संस्कृत भाषा फारसी अंगरेज़ी इत्यादि विद्या में महानिपुण थे प्रथम संवत् १९०७ के क़रीब इनको भाषा काव्य करने की बहुत रुचि थी इसी कारण शृंगारलतिका नाम एक ग्रंथ बहुत सुन्दर टीका सहित बनाया इनके यहां ठाकुरप्रसाद, जगन्नाथ, बलदेवसिंह इत्यादि महान् कवि थे अन्त में इन दिनों अब कानून अंगरेज़ी का शौक हुआ था संवत् १९३० में देहान्त हुआ औ इस देश के रईसों के भाग फूटगये ॥

पण्डित पुत्तीलाल त्रिपाठी गिरवानिवासी जिला फर्रुखाबाद के जो अष्टादश पुराण और कोष काव्यादि में अतिप्रवीण समस्या और कवित्तादि की रचना में अतिनिपुण हैं इन्होंने सामयिक कवित्त व दोहादि बनाये जो कि हिन्दी समाचारपत्रों में बहुधा देखने में आये हैं ये इस ग्रन्थकर्त्ता के ज्येष्ठभ्राता पण्डित बद्रीनाथजी के पुत्र हैं ॥

पद्माकर भट्ट—बांदावाले मोहन भट्ट के पुत्र संवत् १८३८ में उत्पन्न हुये ये कवि प्रथम आपा साहब अर्थात् रघुनाथ राव पेशवाके यहां थे जब पद्माकर जी ने यह कवित्त (गिरत गंरेने निज गोदने उतारे ना) बनाया तो पेशवाने एक लक्ष मुद्रा पद्माकर को इनाम दिया तत्पश्चात् पद्माकरजी जयपुर में जाय सवाई जगतसिंह के नाम जगद्विनोद नाम ग्रंथ बनाय बहुत रुपया हाथी घोड़े रथ पालकी लाय गंगा सेवन में शेष काल व्यतीत किया गङ्गालहरी नाम ग्रन्थ इनका है ॥

ब्रह्मकवि राजा बीरबर का भोग है—ये महाराज कान्यकुब्ज द्विवेदी ब्राह्मण कानपुर से दक्षिण ओर यमुनाजी के तीर ग्राम अकबरपुर के रहनेवाले थे अकबर शाह बादशाह के बड़े नामी मुसाहबों में शिरोमणि थे संस्कृत विद्या के पण्डित दान में कर्ण [illegible] वा बहुत धर्म्म करने में [illegible] के [illegible] सम [illegible] ने राजा बीरबर जी को [illegible]

मणि कहना चाहिये तो थोड़ा है क्योंकि उस समय से अब तक कोई और दूसरा ब्राह्मण ऐसे दर्जे को नहीं पहुंचा औ न नाम चलाया जो आज तक कहावत चली जाती है कि उस मनुष्य वा उस लड़के का अथवा उस राजाकी बुद्धि को क्या कहना है वे तो मानों दूसरे बीरबर हैं उन्होंने जो काव्य भाषामें की है वह बहुत मनोरंजन है ॥

भूषण त्रिपाठी—टिकमापुर जिले कानपुर संवत् १७३८में उत्पन्न हुये रौद्र, वीर, भयानक ये तीनों रस जैसे इनकी काव्य में हैं ऐसे और कविलोगों की कविता मे नहीं पाये जाते ये महाराज प्रथम राजा छत्रशाल परना नरेश के यहां छः महीने तक रहे तेहि पीछे महाराज शिवराज सुलंकी सितारा गढ़वाले के यहां जाय बड़ा मान पाया औ जब यह कवित्त भूषणजी ने पढ़ा (इंद्र जिमि जम्भपर) तब शिवराज ने पांच हाथी औ पच्चीस हज़ार रुपया इनामदिया इसी प्रकार से भूषण ने बहुत बार बहुत २ रुपया हाथी, घोड़ा, पालकी इत्यादि दान में पाये ऐसे २ शिवराज के कवित्त बनाये हैं जिनकी बराबर किसी कवि ने वीर यश नहीं बनाय पाया निदान जब भूषण अपने घर को चले तो परना होकर राजा छत्रशाल से मिले छत्रशाल ने विचारा अबतो शिवराज ने इनको ऐसा कुछ धन धान्य दिया है कि हम उनका दशवां हिस्सा भी नहीं देसक्ते ऐसा शोच विचार कर चलते समय भूषण की पालकी का बाँस अपने कन्धे पर धरलिया ब्राह्मण कोमल हृदय तो होतेही हैं भूषणजीने बहुत प्रसन्न है यह कवित्त पढ़ा ॥

साहू को सराहौं की सराहौं छत्रशाल को ॥ और दूसरा यह कवित्त बनाया ॥ तेरी बरछी ने बर छाने हैं खलनके ॥ औ दो दोहा बनाय छत्रशाल को दे घर में आये ॥

दो० एक हाड़ा बूंदी धनी मरद महेवावाल ।
शालत औरंगजेब के ये दोनों छत्रशाल १ ॥
ये देखो छत्ता पता ये देखो छत्रशाल ।
ये दिल्ली की ढाल ये दिल्ली ढाहनवाल २ ॥

भूषण जी थोड़े दिन घरमें रह बहुत देशान्तरों में घूम २ रजवाड़ो में शिवराज का यश प्रकट करते रहे जब कुमाऊं में जाय राजा कुमाऊं के यश में यह कवित्त पढ़ा (उलदत्त मद अनुमद ज्यों जलद जल) तब राजा ने शोचा कि ये कुछ दान लेने आये हैं औ जो हमने सुना था कि शिवराज ने लाखों

रुपया इन को दिया सो सब झूठ है ऐसा विचार हाथी घोड़े मुद्रा बहुत कुछ भूषण के आगे किया भूषण जी बोले इसकी अब भूख नहीं इसलिये यहां आये थे कि देखें शिवराज का यश यहां तक फैला है या नहीं—इन के बनाये हुये ग्रंथ शिवराजभूषण १ भूषणहजारा २ भूषणउल्लास ३ दूषणउल्लास ४ ये चार ग्रंथ सुने जाते हैं कालिदासजीने अपने ग्रंथ हजारा की आदि में ७० कवित्त नौरस के इन्हीं महाराज के बनाये हुये लिखे हैं॥

मदनगोपाल—ये कान्यकुब्ज ब्राह्मण फतूहाबाद के निवासी थे इन्हों ने संवत १८७६ में बलिरामपुर के महाराज दिग्विजयसिंहजी के पिता अर्जुनसिंह के नाम से अर्जुनविलास नामक ग्रन्थ बनाया ये अच्छे कवि थे उस ग्रन्थ में इन्हों ने सब पदार्थों का वर्णन संक्षेप से किया है और ग्रन्थ बनाने के पश्चात् थोड़ेही दिनों में इस असार संसार को छोड़ दिया॥

मतिराम—ये महाराज भाषाकाव्य के आचार्यों में गिने जाते हैं हिंदुस्तान में बहुधा बड़े राजों महाराजों के यहां थोरे थोरे दिन रहे और राजा उदोतचन्द कुमाऊ नरेश औ भाऊसिंह हाड़ा छत्रशाल राजा कोटाबूंदी औ शंभुनाथ सुलंकी इत्यादि के यहां बहुत दिनों तक रहे ललितानाम अलंकार ग्रन्थ राव भाऊसिंह कोटावालेके नामसे बनाया औ छन्दसार पिंगल फतेशाह बुंदेला श्रीनगर के नाम से रचा औ रसराज ग्रंथ नायकाभेद का बहुत सुंदर बनायाहै॥

यशवन्तसिंह—बघेले क्षत्री तिरवा नामक ग्राम कान्यकुब्ज नगर से छः कोस दक्षिण के राजा थे संस्कृत में पण्डित काव्य रचना में बड़े कवि समर में शूर योग तप में योगी पण्डित कवि गुणीलोगों का आदर सत्कार बहुत करते थे संस्कृत के १८ हों पुराण उन्हों ने अपने पुस्तकालय में रक्खे थे वे अब तक उनके पौत्र राजा उदितनारायणजी के यहां विद्यमान हैं भाषा काव्य की रचना करने में बड़े कुशल थे शृङ्गारशिरोमणि शालहोत्र दो पुस्तकों की रचना की जिन में अपना संभोग यशवन्त कहा है इन महाराज के कोई पुत्र न था इस कारण अपने भाई का पुत्र गोद लिया था और काशी में श्रीअन्नपूर्णाजी का मन्दिर बनवाने के मनोरथ से तीन लक्ष रुपये खर्च करने का सङ्कल्प करके कार्शीजीमें बहुत उत्तम पाषाण का मन्दिर और गाल्लाव का चित्र बनवाकर रक्खा और मन्दिर बनवाने का आरम्भ किया परन्तु गाल्लाव तो महाराजजी के मनमाना बन चुका और मन्दिर पनियां गांव से जुड़वाकर पूर्ण्णीतया न्यव करने [illegible] था कि एक दिन रात्रि समय महाराज को कुछ ज्वर आया दो चार दिन

ज्यों त्यों कर बीते अन्त को अवश होकर विक्रम के संवत् १८७१ में स्वर्गवासी हुये उनके पश्चात् छोटे भाई पीतमसिंहजी जो उनके स्थानाधिप हुये उस मन्दिर को पूर्ण किया जिन्हों ने देखा है वह कहते हैं कि गंगा यमुना के मध्य में ऐसा दूसरा मन्दिर नहीं है ॥

लालकवि लल्लू लालजी—गुजराती आगरेवाले संवत् १८६२ में उत्पन्न हुये महाराज वार्तिक भाषा की बोल चाल में प्रथम आचार्य्य हैं इनका बनाया हुआ प्रेमसागर ग्रंथ इस बात का साक्षी है औ दोहा चौपाई इत्यादि सीधे २ छन्दों के बनाने में भी निपुण थे सभाविलास २ माधवविलास ३ वार्तिक राजनीति ४ इत्यादि इनके ग्रंथ बहुत सुन्दर है ॥

बन्दीदीन दीक्षित—ग्राम मसबासीनिवासी ज़िला उन्नाम जो कि संवत् १९२० में उत्पन्न हुये जिन्हों ने महाभारत भारतखण्ड भाषा आल्हा छन्द में बनाया उक्त पण्डित भाषाकाव्यादि में बड़े प्रवीण हैं सूरसागर रामायणादि भाषा के ग्रन्थों में बड़े विद्वान् हैं महाभारत आल्हखण्ड के अवलोकन करने से उनका विद्वत्त्व प्रकट होताहै कथन की कोई आवश्यकता नहीं है ॥

बिहारीलाल चौबे व्रजवासी सं० १६०२ में उ० ये कवि जयसिंह कछवाहे महाराजा अजमेर के यहाँ थे जयपुरकी तारीफ देखने से प्रकट है कि ये महाराजा मानसिंहसे जो संवत् १६०३ विद्यमानथे संवत् १८७६ तक तीनि जयसिंह होगये है पर हमको निश्चयहै कि ये कवि महाराजा मानसिंह के पुत्र जयसिंह के पास थे जो महागुणग्राहक थे औ दूसरे सवाई जयसिंह इन जयसिंह के प्रपौत्र संवत् १७५५ मे थे यह बात प्रकट है कि जब महाराजा जयसिंह किसी एक थोरी अवस्थावाली रानी पर मोहित ह्वै रात दिन राजमंदिर में रहने लगे राज्यके सम्पूर्ण काज काम बन्दहोगये तब बिहारीलाल ने यह दोहा बनाय राजाके पासतक किसी उपाय से पहुँचाया ॥ दोहा ॥ नहिं पराग नहिं मधुर रस नहि विकाश यहि काल । अली कलीही सों विंध्यो आगे कौन हवाल १ ॥ इस दोहापर राजा अत्यन्त प्रसन्न है १०० मोहर इनाम दै कहा इसीप्रकार के और दोहा बनाओ बिहारीलाल ने ७०० दोहा बनाये औ ७०० अशरफी इनाम में पाई यह सतसई ग्रन्थ अद्वितीयहै बहुत कवि लोगों ने इसके ढंगपर सतसई बनाकर अपनी कविता का रंग जमाना चाहा पर किसी कवि की सुर्खरूई प्राप्त नहीं हुई यह ग्रन्थ ऐसा अद्भुतहै कि हमने १८ तिलक तक इसके देखे हैं औ आजतक तृप्तिनहीं है लोग कहते हैं कि अक्षर कामधेनु होते हैं सो

भारतमें इसी ग्रंथके अक्षर कामधेनु दिखाई देते हैं सब तिलकों में सूरतिमिश्र आगरे वाले का तिलक विचित्र है औ सब शतसैयों में विक्रम शतसई औ चंदनशतसई इसके लगभग हैं ॥

सुखदेवमिश्र—ये कवि भाषा साहित्य के आचार्य्यों में गिनेजाते हैं प्रथम राजा अर्जुनसिंह के पुत्र राजाराजसिंह गौर के यहां जाय कविराज की पदवी पाय वृत्त विचार नाम पिंगल सब पिंगलों में उत्तम ग्रन्थको रचा तत्पश्चात् राजाहिम्मतसिंह बंधनगोती अमेठी के यहां आय छंदविचार नाम पिंगल बनाया फिर नव्वाब फ़ाजिलअलीखां मंत्री औरंगजेब बादशाह के नाम भाषा साहित्य में फ़ाज़िल-अली प्रकाशनाम ग्रंथ महाअद्भुत रचा इन तीनों ग्रंथों के सिवाय हमने कहीं लिखा देखा है कि अध्यात्मप्रकाश १ दशरथराय २ ये दो ग्रंथ औरभी इन्हीं महाराज के किये हुये हैं ॥

सुन्दर कवि—ब्राह्मण ग्वालियरनिवासी संवत् १६८८ में उत्पन्न हुये ये महाराज शाहजहां बादशाह के कवि थे पहिले कविराय का पदपाय पीछे महाकविराय की पदवी पाई इनका बनाया हुआ सुन्दरशृङ्गार नाम ग्रन्थ भाषा साहित्य में बहुत सुंदर है इन्हीं कवि के पद में यह अगम पढ़ाथा (सुन्दर कोप नहीं सपने) यह कवित्त इस ग्रन्थ में है ॥

सबलसिंह—चौहान क्षत्री चन्द्रगढ़ के राजा थे इन महाराज के कोई पुत्र न था इसलिये बहुत से सज्जन तांत्रिक मांत्रिक पण्डित बुलाकर पुत्रोत्पन्न होने के हेतु देवपूजन का आरंभ कराया बहुत दिनों तक पूजन होतारहा परन्तु पुत्र होने की कुछ आशा न हुई जब इस बात से राजा और पण्डित सब निराश हुये तब सब पण्डितों ने एक मत होकर कहा कि आप का नाम चलता यदि आपके पुत्र होता सो उस नाम के टूट जाने का संदेह था जिससे उत्तम यह है कि हम सब लोग मिलकर आप के नाम से एक पुस्तक की रचना करें जिसमें हज़ारों वर्ष आपका नाम इस भूमण्डल पर बना रहै इस बात को राजाने स्वीकार किया और आज्ञा दी कि महाभारत जो संस्कृत में है उसको भाषा काव्य में करो तब सब पण्डितों ने विक्रम के संवत् १८२७ में महाभारतको भाषा छन्दबद्धग्रन्थमें बनाने का आरंभ किया और कुछ काल में सम्पूर्ण भारत को भाषा काव्य में सबलसिंह जी के नाम से प्रकट है ॥

सूरदास [illegible]—ब्रजवासी बाबा रामदासके पुत्र वल्लभाचार्य के शिष्य [illegible] [illegible] में उत्पन्न हुये इन महाराज के जीवनचरित्रों में सब छोटे बड़े [illegible]

हैं भक्तिमाल इत्यादि में इनकी कथा विस्तारपूर्वक है सूरसागर इनका बनाया ग्रंथ विख्यात है हमने इन के पद साठहज़ार तक देखे हैं समस्त ग्रंथ कहीं नहीं देखा इनकी गिनती अष्ट छाप अर्थात् व्रजके आठ महाकवीश्वरों में है ॥

सहजराम--ये सनाढ्य ब्राह्मण पञ्जाब के रहने वाले थे और यहां सुलतांपुर के ज़िले में जो बंधुवा ग्राम है वहां के रहनेहारे एक नानकसाही ब्राह्मण के शिष्य हुये ये भी बड़े महात्मा हुये हैं और सहजराम रामायण प्रह्लादचरित ये दो ग्रन्थ इन्हों ने रचित किये और संवत् १२०५ में इस संसार से निराश हो स्वर्गवास किया ॥

नन्ददास ब्राह्मण--रामपुरनिवासी बिट्ठलनाथजी के शिष्य संवत् १५८५ में उत्पन्न हुये इन की गणना अष्ट छाप में है अर्थात् व्रजभूमि के आठ महानन्द कवि सूर १ कृष्णदास २ परमानंद ३ कुंभनदास ४ चतुर्भुज ५ छीत ६ नंददास ७ गोविन्ददास ८ में ये भी एक हैं इन की बावत यह मसल है (और सब गढ़िया नंददास जड़िया) इनके बनाये हुये ग्रन्थों के नाम ये है नाममाला १ अनेकार्थ २ पंचाध्यायी ३ रुक्मिणीमंगल ४ दशमस्कंध ५ दानलीला ६ मानलीला ७ औ इन ग्रन्थों के सिवाय हजारों पद इन के हैं इन आठों महकवीश्वरों के रचे अनेक ग्रन्थ आज तक व्रज में मिलते हैं ॥

हुलासराम—ये शाकद्वीपीय ब्राह्मण जिले वारहबङ्की तहसील फतेपुर ग्राम रामनगर के रहनेवाले थे इनके पिता का नाम प्रयागदत्त था इन्हों ने बुद्धिप्रकाश वेतालपंचविंशतिका लङ्काकाण्ड आदि ग्रन्थ निर्मित किये १८४५ संवत् में उत्पन्न हुये और १६१२ में मृत्युवश हुये ॥

सच्चिदानन्द मूर्त्तयेनमः।

श्रीधर भाषा कोष।
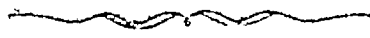
अ० देव नागरी वर्णमाला का प्रथम अक्षर, जिस शब्द के आदि में आता है, उसका अर्थ पलट जाता है, जैसे धर्म से अधर्म और शोक से अशोक और जब शब्द का प्रथम अक्षर स्वर होता है तो अ के स्थान में अन् होजाता है और न् शब्द के आदि स्वर में मिला देते हैं जैसे अन्+अंत=अनंत, अन्+एक=अनेक इत्यादि।

सं० अ (अव=बचाना) पु० रक्षक, विष्णु, ब्रह्मा, शिव, पिता, गुरु, वायु, कृपा, स्वर्ग, अधिपति, मालिक।

प्रा० अउत्त / ऊत } (सं० अपुत्र स=नहीं पुत्र=बेटा.) पु० जिसके लड़का बाला न हो, निर्वंश, २ अभागा, ३ दुष्ट, अहित।

सं० अंक (अंक=चिह्न करना) भा० पु० १ गोद, कोर, [illegible], २ [illegible] [illegible] [illegible]

वर टुकड़े कर के उसने से जितने लेवे उसे गुमारकुनिन्दा कहते हैं।

सं० अंशक (अंश+अक) क० पु० बांटने वाला, हिस्सेदार।

सं० अंशांश (अंश+अंश) अंश का अंश, भाग का भाग, हिस्सा दर हिस्सा।

सं० अंशी (अंश+ई) क० पु० बटाऊ, बांटने वाला, बटवैया साझी, हिस्सेदार।

सं० अंशु (अंश्+उ) पु० सूर्य की किरन, २ तेज, उजाला, प्रकाश।

सं० अंशुक (अंशु+क) पु० वस्त्र, रेशमी वस्त्र, दमक, रेशम।

सं० अंशुजाल (अंशु=किरण, जाल=समूह) पु० किरण समूह, [illegible]

सं० अंशुधर (अंशु=किरण धर=धारने वाला) क० पु० किरण धारी, सूर्य, चन्द्रमा, अग्नि, दीप, [illegible] [illegible]

सं० अंशुमान् [illegible]

नाम सूर्यवंशी राजा का असमंजस का पुत्र सगर राजाका पोता।

सं० अंशुमालिन् } (अंश=किरन
अंशुमाली } माला=पांति)
क० पु० सूर्य, आफ़ताब।

प्रा० अंसनि (सं० अंश, अस्=बाँटना) पु० किरन, २ भाग, ३ कंधे।

प्रा० अंसल (सं० अंशल=बाँटनेवाला) गु० साझी, हिस्सेदार।

सं० अंहति (अंह=जाना+ति) भा० स्त्री० त्याग, दान, २ रोग।

सं० अंहस् (अंह्+अस) पु० पाप, स्वधर्म त्याग, गुनाह, दुःख।

सं० अंघ्रि-सा० पु० चरण, पांव, हाथ पेर।

सं० अकच्छ (अ=नहीं, कच्छ=बांधना) गु० नंगा, बेहया, लंपट, छबीला।

प्रा० अकड़ (अकड़ना) भा० स्त्री० ऐंठ, टेढ़ापन, बांकापन, शेखी।

प्रा० अकड़बाज़ बोल० अकड़ैत, छैला, बांका, छैलचिकनियां।

प्रा० अकड़मकड़-बोल० ऐंठ कर चलना, घमंड, अभिमान, शेखी।

प्रा० अकड़ना (सं० आकुञ्चन, आ=उलटा, कुञ्च=सिमटना) क्रि० अ० ऐंठना, टेढ़ा होना, २ दुखना, दर्द करना ३ कड़ा होना।

प्रा० अकड़ैत (अकड़ना) गु० बांका, [illegible], ऐंठी, अभिमानी, शेखीबाज़

सं० अकण्टक (अ=नहीं+कण्टक=कांटा) गु० शत्रु हीन, निरुपाधि, चैनसे, बेखतर, बेखरखशा।

प्रा० अकथ (सं० अकथ्य, अ=नहीं कथ्=कहना) गु० जो कहने में न आवे, जिसका वर्णन न होसके।

सं० अकथनीय (अ+कथ्+अनीय) कर्म० जो कहने योग्य न हो, बयान से बाहर।

प्रा० अकनि (सं० आकर्ण्य, आ=चारोंओर से कर्ण=पैठना धा० सा० अव्य० सुनकर।

सं० अकम्पन (अ=नहीं। कम्प=कांपना) गु० दृढ़, कठोर, मजबूत, पु० राक्षस विशेष।

प्रा० अकरन (सं० अ+करण, कृ=करना) अयोग्य, बिना हथियार, बेसबब।

प्रा० अकरा (सं० अनर्घ अन=नहीं, अर्घ=मोल होना) गु० महँगा बहुत मोलका, बढ़िया, बहुमूल्य, क़ीमती।

सं० अकर्म (अ=नहीं वा बुरा कर्म=काम) पु० बुराकाम, पाप, अधर्म, अपराध, बुराई, कुकर्म, नारवा।

सं० अकर्मक (अ=नहीं, कर्म=कर्मकारक) गु० ऐसी क्रिया जिसमें कर्म नहो, जैसे आना, रहना, आदि, फ़ेल लाज़िमी।

सं० अकल (अ+कला) गु० अंगहीन परमात्मा।

प्रा० अंकवार } स्त्री० गोद, गोदी,
अकवार } बगल, कांख २ छाती।

प्रा० अंकवारभरना, बोल० गले लगाना, गोद में लेना, मिलना।

अ० अकस (अक्स=उलटा) परछाईं, बैर, विरोध, अदावत।

प्रा० अकसर-गु० अकेला २ तनहा बहुधा।

सं० अकस्मात् (अ=नहीं, कस्मात्=किससे वा किसकारण, क्रि० वि० नागहां, अचानक, अकारण, एकाएक, संयोग से, दैवात्, इत्तिफ़ाक़न।

प्रा० अकाज (सं० अकार्य अ=नहीं, कार्य=काम) भा० पु० बिगाड़, हानि, बुरी बात, अनर्थ, नुक़सान।

सं० अकाण्ड (अ+काण्ड) गु० कुसमय, बेवक्त, अचानक, दैवात्।

सं० अकापट्य-भा० पु० निश्छलता, निष्कपटी, बेगर-

सं० अकिञ्चन-गु० निर्धन, तिही-दस्त, मुफ़्लिस।

प्रा० अकीरति (अ+कीर्ति, कृ=गाना) भा० स्त्री० अयश, बदनामी।

प्रा० अकुण्ठा (सं० अ + कुण्ठ=गुठिना) गु० नाशहीन, तीक्ष्णतेज, पैना।

सं० अकुल गु० कुलहीन, नीच, २ शिव, बेहसब नसब।

प्रा० अकुलाना (सं० आकुल) क्रि० अ०, घबराना, दुखी होना, व्याकुल होना, थकना, मुज़्तरिब होना, परेशान होना।

सं० अकुलीन (अ=नहीं, कुलीन=अच्छे घराने का) गु० नीच, कमज़ात, कुलहीन, कमीना।

प्रा० अकेला (सं० एक) गु० एकला, केवल, निराला, तनहा।

सं० अक्रूर (अ=नहीं, क्रूर=कठोर) गु० कोमलस्वभाव, नम्र, नर्मदिल,

बिनटूटा-चावल जो पूजाके काममें आता है, बिनाटूटाहुआ।

सं० अक्षय (अ=नहीं, क्षय=नाश, नाशहोना) गु० अमर, चिरंजीव, स्थिर, लाज़वाल।

सं० अक्षर (अ=नहीं, क्षर=नाशहोना) पु० अकारादिवर्ण, आखर, हर्फ़, २ ब्रह्म, गु० जिसकानाशनहो, अविनाशी।

सं० अक्षांश (अक्ष=पृथ्वीकी कील, अंश=भाग) पु० पृथ्वीके उत्तर वा दक्षिण केन्द्रतक न०वे न०वे अंशपर रेखा, अर्ज़ुलबलद, लैटीच्यूड।

सं० अक्षि (अश्=फैलना) स्त्री० आंख, चश्म।

सं० अक्षोभ (अ+क्षुभ्=डरना) गु० निर्भय, बेख़ौफ।

सं० अक्षौहिणी (अक्ष=रथ, ऊहिणी=भीड़, ऊह=तर्ककरना) स्त्री० सेना जिस में १०९३५० पैदल, ६५६१० घोड़े, २१८७०रथ, २१८७० हाथी हों।

प्रा० अखड़-गु० गवाँर, अनसीखा, अनघड़, जंगली।

सं० अखण्ड (अ=नहीं, खण्ड=टुकड़ा) गु० पूरा, सारा, सब, सम्पूर्ण, तमाम।

सं० अखण्डित (अ=नहीं, खण्डित=टूटाहुआ) गु० पूरा, बिनटूटा सारा, तमाम।

प्रा० अखाड़ा, अखारा } पु० मल्लों के कुश्ती करनेकीजगह, सभा।

सं० अखिल (अ=नहीं, खिल=नाश, खिल=कण, कण=लेना) गु० पूरा, सारा, सब, सम्पूर्ण, कुल।

प्रा० अखैबृक्ष, अक्षैबृक्ष } (सं० अक्षयवृक्ष, अक्षय=अमर, वृक्ष=पेड़) पु० ऐसा पेड़ जिसकाकभी नाशनहो—दरख़्त लाज़वाल।

सं० अग (अ=नहीं, गम=चलना वा जाना) पु० पहाड़, २ वृक्ष।

सं० अगणित (अ=नहीं, गण=गिनना) गु० अनगिनत, अपार, असंख्यात, बेशुमार।

सं० अगद (अ+गद=बोलना) गु० गूंगा, २नीरोग, पु० औषधि वा दवा।

प्रा० अगम (सं० अगम्य=अ=नहीं गम्य=जानेयोग्य, गम=जाना) गु० नहीं जाने योग्य, बिकट, औघट, अपहुंच, दुर्गम, २ गहरा अथाह।

प्रा० अगर (सं० अगुरु=अ=नहीं गुरु=भारी) पु० एकप्रकारकी सुगंधित लकड़ी।

प्रा० अगरवाला (अगरोहा एक जगहका नाम जो दिल्ली के पश्चिम की ओरहै) पु० बनियोंकी एकज़ा-

ति जो अगरोहा से निकले हैं ।

प्रा० अगला (अग्य, अग्र=आगे) गु० आगेका, पहलेका, पहला २ मुखिया, प्रधान ।

प्रा० अगलौन गु० गिनती में पहला, अव्वल ।

प्रा० अगवा / अगुवा (सं० अग्रम वा अग्रगामी, अग्र = आगे, गम = जाना) गु० आगेचलनेवाला, २ मार्ग बतलानेवाला पु० दूत, अगवानी ।

सं० अगस्ति (अग = पहाड़, अस् = फेंकना) पु० एक ऋषि का नाम जो मित्रावरुण का पुत्र था जिस ने विंध्याचल पहाड़ को गिरादिया था कहते हैं कि यह ऋषि घड़े से जन्माथा और जब समुद्रपर कोप किया था तो सारे समुद्र को पी गया, एकवृक्ष का नाम ३ एक तारे का नाम है ।

सं० अगस्त्य (अग = पहाड़, विंध्याचल, स्त्यै = शब्दकराना) पु० अगस्ति ऋषि ।

प्रा० अगहन (सं० अग्रहायण, अग्र = पहिले, हायन = बरस, हा = छोड़ना अर्थात् पुरानी रीति से बरस का पहला महीना) पु० मंगसर, मार्गशिर नवम्बर का महीना ।

प्रा० अगहुड़—गु० अगला, अव्वल ।

प्रा० अगाऊ (सं० अग्र=आगे) क्रि० वि० अगाड़ी, आगे, पहले, सामने ।

प्रा० अगाऊजाना, बोल० सामने जाना, किसीके मिलनेको जाना ।

प्रा० अगाड़ी (सं० अग्र = आगे) क्रि० वि० आगे, सामने और बढ़के, स्त्री० रस्सी जिससे घोड़े के अगले पैर बांधते हैं—२ अगला हिस्सा, अगवाड़ा, आगा ।

प्रा० अगाड़ीपिछाड़ीलगाना, बोल० रोकना.बंदकरना (घोड़ेको) घोड़े के अगले पिछले पैर बांधना ।

प्रा० अगाड़ीमारना, बोल० मोहरामारना, बैरी की अगली सेना को हराना ।

सं० अगाध (अ = नहीं, गाध = थाह जगह, गाध = ठहराना) गु० अथाह बहुतही गहरा, बेपायाँ ।

प्रा० अगिया पु० एकघास वा कीड़ा का नाम ।

सं० अगुण (अ=नहीं, गुण=हुनर, विद्या, वा, रज, तम, सत, ये तीन गुण) गु० निर्गुणी, बेहुनर, २ निर्गुण, ब्रह्म ।

सं० अगेन्द्र (अग = पहाड़ + इंद्र = राजा) पु० सुमेर, २ हिमालय ।

सं० अगोचर (अ = नहीं, गो

इंद्रियों के सामने, गो = इंद्री, चर= चलना) जो देखने में नहीं आवे, अदृश्य, अलख, गायब, ।

ग्रा० अगौनी (सं० अग्रगमन, अग्र= आगे, गमन = जाना) स्त्री० मिलाप के लिये आगे जाना, पेशवाईकरना ।

ग्रा० अगौनीकरना-बोल० दुलहा के मिलने के लिये सामने जाना, बरात के साम्हने जाना, मिलनी करना ।

सं० अग्नि (अगि = जाना जोऊपर जाती है) स्त्री० आग, आगी, अनल २ दक्षिण पूर्वकोन का दिग्पाल ।

सं० अग्निकोण (अग्नि=आग, कोन = खूंट वा गोशा) स्त्री० पूर्व दक्षिण के बीच का कोन जिसका स्वामी आग है ।

सं० अग्निक्रीडा (अग्नि + क्रीड= खेलना) भा० स्त्री० आतशबाज़ी ।

सं० अग्निचूर्ण (अग्नि + चूर्ण=पीस-ना) भा० पु० बारूद ।

सं० अग्निबाण (अग्नि + बाण= तीर) पु० आगका तीर ।

सं० अग्निसंस्कार (अग्नि + संस्कार =पवित्रता) पु० मुर्देको आगदेना, जलाना, दाग देना ।

सं० अग्निहोत्री (अग्नि + होत्री= होमकरनेवाला) क० पु० अग्निपूजक, होमकरनेवाला, सदा आग रखने वाला आतशपरस्त ।

सं० अग्र (अगि=जाना) गु० आगे पहले, मुख्य, प्रधान, मुखिया, पहला ।

सं० अग्रगण्य (अग्र=आगे, गण्य =गिनाजाय, गण=गिनना) सर्व० सबसे पहला और बहुत अच्छा गिनाजाय, प्रधान, मुखिया, मुख्य ।

सं० अग्रगामी (अग्र=आगे, गामी= चलनेवाला, गमजाना) क० पु० सबसे आगे चलनेवाला, अगुआ, सरदार, प्रधान, नायक, मुखिया, पेशवा ।

सं० अग्रज (अग्र-आगे, जन, पैदा होना) पु० बड़ाभाई ।

सं० अग्रदूत (अग्र=आगे, दु=चलना दूत=चलनेवाला) क० पु० नक़ीब, जो आगे सवारी के तारीफ करता चलता है ।

सं० अग्रसर (अग्र=आगे, सृ=जाना) गु० आगे चलने वाला, अग्रगामी पु० सरदार ।

सं० अग्रिम=गु० अगौढी, पेशगी ।

सं० अघ (अघ=पापकरना) पु० पाप, अपराध, अधर्म, गुनाह, २ दोष, चूक, दुःख ।

सं० अघखानि (अघ=पाप, खानि=

उत्पत्ति स्थान, खन=खोदना) गु० पापकी खानि, पापी, गुनहगार ।

सं० अघटित (अ + घटित, घट=होना, वा चेष्टा करना) गु० अयोग्य अनहोनी, नामुमकिन, गैरमुमकिन ।

सं० अघमर्षण (अघ=पाप, मर्षण मृष=हटाना) भा० पु० पापनाशक मंत्र जो सन्ध्योपासन में पढ़ाजाताहै ।

प्रा० अघाई (अघाना) भा० स्त्री० पेटभराव, तृप्ति, आसूदगी ।

प्रा० अघाना क्रि० अ० पेटभरजाना, छकना, अफरना, भरपूरहोना, तृप्त होना, आसूदा होना ।

सं० अघासुर (अघ=पाप, असुर=राक्षस) पु० एक राक्षसका नाम जिसको कंसने श्रीकृष्णके मारने के लिये भेजाथा ।

सं० अघोर (अ=नहीं, घोर=डरावना अर्थात् शान्त, वा जिससे अधिक कोई डरावना नहीं) पु० शिव. ए०

क्रि० स० छापना, मोहरदेना, लिखना, २ मोल करना, जांचना ।

सं० अंक विद्या (अङ्क= संख्या, विद्या) स्त्री० गणित विद्या, हिसाब ।

प्रा० अंकाना (सं०, अङ्क चिह्न करना) क्रि० स० मोल ठहराना, जंचाना, परखाना ।

सं० अंकित (अङ्क=चिह्न करना) सर्व० चिह्न कियाहुआ, आंकाहुआ, मोल ठहराया हुआ, जांचा हुआ, लिखाहुआ ।

सं० अंकुर (अङ्क=चिह्न करना, वा जाना) पु० अंखुआ, आंकुर, कोंपल गाभी. फुनगी ।

सं० अंकुश (अङ्क=चिह्न करना) पु० लोहेका कांटा जिससे हाथीको चलाते हैं, अंकुस. आंकुसी

प्रा० अंकोर पु० घूस, रिशवत ।

प्रा० अँखियां (आंख) स्त्री० ब० व० आंखें ।

सं० अङ्गण } (अगि=जाना) पु० अङ्गन } आँगन, अँगनाई, चौक चौगान, आँगन, सहन।

सं० अङ्गद (अङ्ग=शरीर, दै=शुद्धकरना, वा, दा=देना) पु० बहूँटा भुजबंद, बाजूबंद २ बालि वानर का बेटा।

सं० अङ्गना (अङ्ग=शरीर, अर्थात् सुंदर शरीर वाली) स्त्री० सुन्दरस्त्री सुन्दरी, कामिनी, स्त्री, लुगाई।

प्रा० अङ्गना पु० } (सं० अङ्गन) अङ्गनाई, स्त्री. } आंगन, चौक।

सं० अङ्गन्यास (अङ्ग=शरीर, न्यास=धरना) भा० पु० मंत्र पढ़कर अंग स्पर्श करना।

सं० अङ्गपक्ष--पु० सहायक, मददगार।

प्रा० अङ्गरखा (सं० अङ्गरक्षा अङ्ग=शरीर, रक्षा=बचाना) पु० चपकन, पहनने का एक कपड़ा।

प्रा० अङ्गरी स्त्री, कवच, बखतर।

प्रा० अङ्गुली } (सं० अंगुली, अङ्ग=चिह्नकरना, गिनना) अगुरी } स्त्री० हाथका वापांव अंगुली } का अंग, हाथ पैर की अंगुली।

प्रा० अंगुली काटना, बोल० अचंभे में होना, अचंभा करना।

सं० अङ्गव (अङ्ग+अव=रक्षाकरना) पु० मेवा।

प्रा० अङ्गवनिहारा-पु० सहनेवाला, बरदाश्त करने वाला।

प्रा० अङ्गा (सं० अङ्ग=शरीर) पु० अंगरखा, कुरता, कुरती।

सं० अङ्गांगीभाव--भा० पु० शारीरक सम्बंध, बाहमी मदद।

सं० अङ्गार (अङ्ग चिह्न करना) पु० अंगारा, जलता हुआ, कोयला।

प्रा० अङ्गारा (सं० अंगार) पु० जलता हुआ कोयला, अंगार।

प्रा० अङ्गारोंपरलोटना बोल० डाह से जलना, दुखपाना, कलपना।

प्रा० अङ्गिया (सं० अङ्गिका, अङ्ग=शरीर) स्त्री० चोली, कांचुली, कंचुकी।

सं० अङ्गिरा (अङ्गिरस, आगि=जाना) पु० एक ऋषि का नाम जो ब्रह्मा के मुंह से पैदा हुआ।

सं० अङ्गी (अङ्ग+ई) क० पु० शरीर वाला।

सं० अङ्गीकार (अङ्ग=स्वीकार, कृ=करना) भा० पु० मानना, स्वीकार, अंगेजना, कबूल, मंजूर।

प्रा० अङ्गीकार करना, बोल० मानना, स्वीकार करना, अंगेजना, मंजूर करना।

प्रा० अङ्गीठी } स्त्री० आग रखने
अङ्गेठी } का बर्तन, आगकी
बरोसी, कांगड़ी।

सं० अंगुल (अङ्क=चिह्न करना)
पु० आठ जौ का नाप, एक गिरहका
तीसरा हिस्सा।

सं० अंगुलित्राण (अंगुलि+त्राण
=रक्षा) हाथका मोजा, दस्ताना।

प्रा० अंगूठा (सं० अंगुष्ठ, अंगु=हाथ,
स्था=ठहरना) पु० मोटी अंगुली।

प्रा० अंगूठी (सं० अंगुलीय) स्त्री०
मुंदरी, छल्ला, अंगुली में पहनने का
गहना।

प्रा० अङ्गोछा (सं० अङ्ग=शरीर,
उछ्=बांधना, वा, अङ्ग पोंछना) पु०
गमछा, शरीर पोंछने का कपड़ा।

सं० अंघ्रि (अघि=जाना) पु० पांव
पैर २ वृक्ष की जड़।

सं० अच पु० स्वर (अच=गुप्तकरना)
छिपाकर करना।

प्रा० अचगरी स्त्री० अनुचित काम,
धींगा धींगी, अत्याचार।

सं० अचंचल (अ=नहीं+चंचल=
चपल) गु० स्थिर, क़ायम।

प्रा० अचंभा } (सं० आश्चर्य) पु०
अचरज } आश्चर्य, विस्मय,
[illegible]।

सं० अचर (अ=नहीं, चर=चलना)
गु० नहीं चलनेवाला, अचल, अटल।

सं० अचल (अ=नहीं, चल=चलना)
गु० नहीं हिलनेवाला, ठहराहुआ अ
टल, पु० पहाड़, पर्वत।

सं० अचला (अचल) स्त्री० पृथ्वी,
धरती, भूमि, ज़मीन।

प्रा० अचानक } (सं, अकस्मात्)
अचानचक } क्रि० वि० एका
एकी संयोग से, अनुचित, विन
कारण, दैव योग से, दफ़अतन।

प्रा० अचाना } (सं० आचमन, आ,
अचवाना } चमु=खाना) क्रि०
स० खाने के पीछे मुंह साफ करना,
आचमन करना।

प्रा० अचार (सं० आचार, आ, चर=
चलना) भा० पु० चलन, चाल चलन,
रीति भांति, व्यवहार, धर्म व्यवहार,
तरीक़ा।

सं० अचिन्त (अ=नहीं, चिति=
सोचना) गु० अचेत, बेसुध, निर्बुद्ध।

सं० अचिर (अ=नहीं × चिर=देर)
तुरन्त, जल्द।

प्रा० अचीता (सं, अ=नहीं, चित
सोचना) गु० बिन चाहा २ (सं० अ=
नहीं, चित, चेत हुआ, [illegible]
[illegible]।

प्रा० अचेत (सं० अचेतस्, अ=नहीं, चित्त सोचना) गु० बेसुध, निर्बुद्धि, सुन, मूर्छित, बेहोश ।

प्रा० अचेत होना, बोल० बेसुधहोना, सुन होजाना, मूर्च्छा खाना, मूर्छित होना ।

प्रा० अचैन० (सं० अ=नहीं, चैन=सुख) गु० बेकल, व्याकुल, दुखी, बे आराम ।

सं० अच्युत (अ=नहीं, च्युत=गिरना) गु० ठहरा हुआ, अटल, अचल, नित्य, अमर, स्थिर, पु० विष्णुका नाम ।

प्रा० अच्छना, } अछना, } (सं० अस्=होना) क्रि० अ० जीता रहना, होना, रहना ।
जैसे "तुमहिअछतअसहालहमारी"
"सुखतजिभइउँशोकअधिकारी"
तुलसी कृत रामायण ।
"अच्छनपतिभभूतिकिनलाई"
"कहांकहांकी रीति चलाई"
प्रेमसागर,

प्रा० अच्छर (सं० अक्षर) पु० आखर, वर्ण, हर्फ, अक्षर, अकार आदि वर्ण, २ नागराक्षर ।

प्रा० अच्छा (सं० अच्छ, अ=नहीं, छो=काटना) गु० भला, उत्तम, सुन्दर, स्वच्छ, साफ, मनोहर, चंगा ।

प्रा० अच्छाकरना-बोल० चंगाकरना, भला चंगा करना, बीमारीसे चंगा करना ।

प्रा० अच्छालगना-बोल० मोहना, फबना, खुलना, पसंदआना, भाना ।

प्रा० अच्छाहोना-बोल० चंगाहोना भला चंगा होना, बीमारी से आराम पाना ।

प्रा० अच्छेसेअच्छा-बोल० सबसे अच्छा, उत्तम, बहुतहीअच्छा, श्रेष्ठ ।

प्रा० अछतानापछताना, बोल० क्रि० अ० पछताना, पस्तावाकरना, पश्चात्ताप करना, अफसोस करना ।

प्रा० अछूता (सं० अ=नहीं हिं० छूना) गु० नहीं छुआहुआ, जो चीज जूठीनहो, पवित्र, देवता अथवा ऋषिमुनिके लिये शुद्धभोगआदि ।

प्रा० अज } आज } (सं० अद्य, इदम्-यह) क्रि० वि० आजकादिन, वर्त्तमान दिन ।

सं० अज (अ=नहीं, ज=पैदाहुआ, जन्=पैदाहोना, वा अ=विष्णु, ज=पैदाहुआ) पु० ब्रह्म, विष्णु, ब्रह्मा, शिव, जीव, २ दशरथ राजा के बाप का नाम ।

सं० अज (अज=चलना) पु० बकरा मेषराशि ।

सं० अजा (अज्=चलना) स्त्री० बकरी, २ माया।

सं० अजगर (अज=बकरा, गर=निगलनेवाला, गॄ निगलना) पु० बड़ासांप, अजदहा।

सं० अजगव (अजगु=शिव, अर्थात् शिवका, अजोगौर्यस्य असौअजगु शिवःतस्यधनुः अजगवं आजगवं वा,,) पु० शिवका धनुष।

सं० अजय (अ=नहीं, जि=जीतना) गु० जिसकीजीत नहीं हुई हो, २ जोजीतानहींजाय, अजीत,स्त्री०हार।

सं० अजर (अ=नहीं, जरा=बुढ़ापा जॄ=बूढ़ा होना) गु०जो बूढ़ा न हो सदा जवान बनारहे।

प्रा० अजहूं ⎫
अजहूं ⎬ (अज=आज, हूं=भी, तक,)क्रि०वि० अबभी, आजभी, अबतक, आजतक।
अजौं ⎭

प्रा० अजान ⎫
अनजान ⎬ (सं०अज्ञान) गु० मूर्ख, अनसमझ, अबूझ।

सं० अजामिल-एक पापी ब्राह्मण कान्यकुब्ज जो कनौजमें रहताथा जिसके पुत्र का नाम नारायण था मरते समय नाम लेनेसे तरगया।

सं० अजित (अ=नहीं, जि=जीतना) गु० जो जीतानहींजाय, अपेल, बली, सबको जीतनेवाला।

सं० अजिन (अज्=जाना, वा चमकना) पु० मृगछाला, हरिणकी खाल जिसपर ब्रह्मचारी और सन्यासीलोग बैठा करते हैं।

सं० अजिर (अज्=जाना) पु० आंगन, चौक, अंगना, अँगनाई।

प्रा० अजीत (सं०अजित) गु०सब को जीतनेवाला, बली, जो जीता नहींजाय।

सं० अजीर्ण (अ० = नहीं,जीर्ण=पुराना जॄ पुराना होना, पचना) गु० अपच, नहींपचना, हजम न होना।

प्रा० अयोध्या (सं० अयोध्या,अ=नहीं,युद्ध=लड़ना अर्थात् जहां कोई लड़नेको नहींआसका) स्त्री० अवध, सूर्यवंशियों की राजधानी।

सं० अज्ञ (अ=नहीं, ज्ञा=जानना) गु० अजान, अनजान, अनसमझ अबूझ, मूर्ख. बेवकूफ।

सं० अज्ञात (अ=नहीं, ज्ञात=जाना हुआ, ज्ञा= जानना) गु० अनजाना. नहीं जानाहुआ, २ अनसमझा, छुपा।

सं० अज्ञान (अ=नहीं.ज्ञा=जानना) गु० [illegible]

अबूझ पु० मूर्खता बेवकूफी।

सं० अज्ञानता (अज्ञान) भा० स्त्री० मूर्खता, अज्ञानपन, बेवकूफी, नाफ़हमी।

सं० अज्ञानी (अज्ञान) गु० मूर्ख, अजान, अबूझ, अनसमझ, बेवकूफ, नादान।

सं० अञ्चल (अञ्च्=जाना वा मांगना) पु० अंचल, आंचल, कपड़ेका किनारा।

सं० अञ्जन (अञ्ज्=आंजना, सुरमा लगाना) पु० सुरमा, काजल।

सं० अञ्जना (अञ्ज्=शोभना) स्त्री० हनुमानकी मा।

सं० अञ्जलि (अञ्ज=मिलाना) स्त्री० दोनों हाथों का मिलाना, हाथ का सम्पुट, दोनों हाथों को इसतरह से मिलाना कि बीच में जगह खालीरहे जिसमें पानीआदि लिया जाय, २ एक तरहका नाप, इतनीचीज कि दोनों हाथों में अट सके।

सं० अञ्जसा (अञ्ज्=जाना, सा=साधारण, २ शीघ्र सारा।

फ़ा० अञ्जुमन-स्त्री० सभा, मंडली।

प्रा० अझ्झा (अन × नहीं, अध्याय=पढ़ना) स्त्री० नागा।

प्रा० अटक (अटकना) स्त्री० रोक, रुकाव, आड़, २ सिंधु नदीकानाम,

प्रा० अटकना-क्रि० स० रोकना बंदकरना, क्रि० अ० रुकना, बंद होना, ठहरना, रहना।

प्रा० अटकल (अटकलना) स्त्री० अनुमान, अंदाज़ा, कूत।

प्रा० अटकलपच्चू, बोल० बेअंदाज़, बे हिसाब, ऊटक नाटक, बे ठौर ठिकाने, योंहीं।

प्रा० अटकलना, क्रि० स० अंदाजा करना, अनुमान करना, सोचना, बिचारना, कूतना।

प्रा० अटका, पु० श्री जगन्नाथ के प्रसादके लिये भातबनानेका मिट्टी, का बरतन।

प्रा० अटकाना क्रि० स० रोकना ठहराना, छेंकना, बंदकरना।

प्रा० अटकाव (अटकाना) भा० पु० रोक, रुकाव, प्रतिबन्ध।

प्रा० अटखेल / अठखेल (सं० अट्टखेला अट्ट=बहुत, खेल=खेल) गु० चंचल खिलाड़, खिलाड़ी, शोख़।

प्रा० अटखेली / अठखेली (सं० अट्ट खेला) स्त्री० चंचलता, खिलाड़पन, ढिठाई, चंचलाई,) शोख़ी।

सं० अटन (अट्=फिरना) भा० पु० फिरना, चलना, भ्रमण, यात्रा, घूमना, सफ़र, सैयाही, २ अटारी।

प्रा० अटना (सं० अट्=फिरना, जाना) क्रि० अ० समाना, भर जाना, २ फिरना।

प्रा० अटपट, पु०, अटपटी, स्त्री०, अटपटांगी, स्त्री० } गु० टेढ़ा टेढ़ी, बांका, बांकी, टर्रा टर्री, पट्ठी, टेढ़ी, बेठिकाने, बेढंगी, कठिन, व्यंगयुत, पेचीदा।

सं० अटल (अ=नहीं, टल्=घबराना) गु० अचल, जो टलेनहीं, ठहराहुआ, दृढ़, पायदार।

सं० अटवि, अटवी } (अट्=जाना, फिरना) स्त्री० वन, जंगल

प्रा० अटा, अटारी } (सं० अट्ट, अट्ट=ऊंचा होना, बढ़जाना या निरादर करना) स्त्री० अटारी, ऊपरकी कोठरी।

प्रा० अटाला—ढेर, असबाब, सामान, खटना, सामग्री।

प्रा० अटूट (सं० अ=नहीं, टूट=टूटना) गु० वह्नहीं वस्तु जो टूटे नहीं, मज़बूत, पूरा, कुल।

प्रा० अटेरन (प्रा० ओट= बटनी, [illegible]

सं० अट्टहास (अट्ट=बहुत, हास=हंसी) भा० पु० बहुत हंसना, खिलखिलाकर हंसना, कहकहा मारना।

सं० अट्टालिका (अट्ट=ऊंचाहोना बढ़ना या निरादर करना) स्त्री० अटारी, अटा, ऊपरकी कोठरी, बालाखाना।

प्रा० अठतालीस, अड़तालीस } (सं० अष्टचत्वारिंशत, अष्ट=आठ, चत्वारिंशत=चालीस) गु० चालीस और आठ।

प्रा० अठतीस, अड़तीस } (सं० अष्ट=आठ, त्रिंशत=तीस) गु० तीस और आठ।

प्रा० अठवारा- सं० अष्टवार, अष्ट=आठ, वार=दिन) पु० आठवांदिन २ हफ्ता, सप्ताह।

प्रा० अठसठ, अड़सठ } (सं० अष्टषष्टि: अष्ट=आठ, षष्टि=साठ गु० साठ और आठ।

प्रा० अठहत्तर (सं० अष्टसप्तति: अष्ट=आठ सप्तति=सत्तर) गु० सत्तर और आठ।

प्रा० अठाईस, अट्ठाईस } (सं० अष्टविंशति: अष्ट=आठ, विंशति=बीस) गु० बीस और आठ

प्रा० अठानवे (सं० अष्ट नवति, अष्ट =आठ, नवति=नब्बे) गु० नब्बे और आठ।

प्रा० अठारह (सं० अष्टादश:, अष्ट= आठ, दशन्=दश) गु० दश और आठ।

प्रा० अठावन (सं० अष्टपञ्चाशत्, अष्ट=आठ, पञ्चाशत्=पचास) गु० पचास और आठ।

प्रा० अठासी, अट्ठासी (सं० अष्टाशीति:, अष्ट=आठ, अशीति =अस्सी)गु० अस्सी और आठ।

प्रा० अठोतरसौ (सं० अष्टोत्तरशत, अष्ट=आठ, उत्तर=आगे, शत=सौ) गु० एक सौ आठ।

प्रा० अड- भा० स्त्री० झगड़ा, विरोध, हठ, जिद।

प्रा० अडंग- स्त्री० मंडी, दिसावर कीचीज का उतार, २ हठ, जिद।

प्रा० अडना, अडकरना क्रि० अ० रुकना, थमना।

प्रा० अडबंगा-गु० वांका, तिरछा, वरावर नहीं, ऊँचानीचा, नाहम- वार।

प्रा० अडबडंग- पु० वावलापन।

प्रा० अडूसा-पु० एक औषधि का नाम, रूसा, वासा।

प्रा० अडोल (सं० अ=नहीं, डुल्= हिलना, झूलना, डोलना)गु० जो नहीं हिलसके, अचल, अटल, दृढ़ वेहरकत।

प्रा० अडोसपडोस-पु० बोल० प- डोस, पासवसना, प्रतिवास।

प्रा० अड्डा-सेनाकी जगह, ठहरनेकी जगह, छावनी, छतुरी।

प्रा० अढाई (सं० आर्द्धद्वय: अर्द्ध= आधा, द्वि=दो) गु० दो और आधा।

सं० अणि, अणी (अण्=शब्द करना) स्त्री० धार, नोक, बाढ़, तीखीधार, तेज़धार।

सं० अणिमा (अणु=छोटा) स्त्री० आठ सिद्धियों में की एक सिद्धि, जिससे वहुतही छोटा रूपवना के सवजगह जासके, छोटाबनजाने की शक्ति, वहुतही सूक्ष्मता, वहुत बा- रीकी।

सं० अणु (अण्=शब्द करना, जी- ना) पु० कन, कनिका, परमाणु, गु० वहुतही छोटा, महीन, सूक्ष्म, वारीक, खुर्द, जर्रा।

सं० अणुमात्र-गु० छोटासा, जरासा।

प्रा० अण्टा (सं० अण्ड=अंडा)पु० गोली, खेलनेकी गोली।

सं० अण्ड (अग=जाना, अर्थात् जिसमें से वच्चा निकलता है) पु० अंडा।

सं० अण्डकटाह (सं० अण्ड + कटाह) पु० ब्रह्माण्ड।

सं० अण्डज (अंड=अंडा, ज=पैदा हुआ, जन्=पैदा होना) पु० अंडे से पैदा होनेवाले जानवर जैसे पखेरू, सांप मछली, और गोह, गिरगिट, बिसखपरा आदि।

प्रा० अण्डा (सं० अंड) पु० पखेरू आदि के पैदाहोने की जगह।

सं० अतः क्रि० वि० इससे इस लिये, लिहाजा।

सं० अतएव—क्रि० वि० इसी लिये बस।

सं० अतसी (अत्=जाना) स्त्री० तीसी, सन।

सं० अतत्त्वज्ञ (अ=नहीं+ तत्त्व मूल+ज्ञ=जानना) गु० पु० मूल का न जाननेवाला, गलतफहम, बेसमझ।

सं० अतत्त्वज्ञता-भा० स्त्री० नासमझी, गलतफहमी।

सं० अतन } (अ=नहीं+तन=श-
अतनु } रीर) गु० शरीररहित, पु० कामदेव।

सं० अतन्द्रित-गु० आलस्य रहित चुस्त।

सं० अतल (अ=नहीं+तल=थाह) गु० अथाह पु० नीचे के सात लोकों में से पहिलालोक।

प्रा० अताई, पु० गवैया, बजंत्री, बजानेवाला।

सं० अति (अत्=जाना) गु० उप० बहुत, अधिक, बहुतही बहुत, बड़ा, बीताहुआ, होचुका, उलांघना, पार

सं० अतिकाय (अति=बड़ी, काय=देह) पु० बड़ा शरीर, २ रावणका पुत्र जिसे लक्ष्मण ने मारा था।
गु० बड़ी देहवाला, दानवरूपी, भयानक।

सं० अतिक्रम (अति=पार+क्रम=चलना) भा० पु० पारजाना, उल्लंघन, अपराध, जुर्म।

सं० अतिक्रान्त (अति + क्रान्त, क्रम=चलना) कृ० पु० पारगयाहुआ, बहुत बढ़गया, सबकत पाया हुआ।

सं० अतिथि (अत्=जाना अर्थात् जो एक जगह नहीं ठहरता फिरता रहता है) पु० पाहुना, मिहमान २ अभ्यागत, योगी, संन्यासी।

सं० अतिथिभक्त (अतिथि + भज, भज=सेवा करना) कृ० पु० अतिथि पूजक, मिहमान परस्त, मेजबान।

सं० अतिथिभक्ति—भा० स्त्री० अतिथि की सेवा, मिहमानी।

सं० अतिरिक्त (अति+रिक्त) गु० छूटाहुआ, सिवाय, अलावह।

सं० अतिरेक (अति+रेक, रिच=जुदा होना) भा० पु० अधिकता, कसरत।

सं० अतिशय (अति=बहुत, शी=सोना) गु० बहुतही बहुत, अत्यन्त अधिक, निहायत।

सं० अतिसार (अति=बहुत, सृ=जाना) पु० पेट चलना, संग्रहणीरोग, पेटौखा रोग, पेट की बीमारी।

सं० अतीत (अति=बीता हुआ, इ=जाना) कृ० पु० बीताहुआ, हो चुका, परे, गुज़रा हुआ।

प्रा० अतीत } (सं० अतिथि) पु०
अतीथ } योगी, संन्यासी।

सं० अतुल } (अ=नहीं, तुल=तो-
अतुलित } लना) गु० जिसका
प्रा० अतोल } तोल नहीं, अपार, जो तोला नहीं जाय, अप्रमाण, २ अनूप, उत्तम, जिस की बराबरी न हो सके।

सं० अत्यन्त (अति=उलांघना, अन्त=पार) गु० बहुतही बहुत, अतिशय, अधिक।

सं० अत्यय (अति=पार + अय=जाना, इ=जाना) भा० पु० समाप्ति, नाश, अपराध, गुनाह।

सं० अत्याचार (अति=विरुद्ध + आचार=चलन) भा० पु० अन्याय, जुल्म, बिदअत।

सं० अत्युक्ति (अति=बहुत, उक्ति=कहना, बच् बोलना) भा० स्त्री० बहुत बढ़ावा देकर कहना, झूठी सराह करना, एक अलंकार का नाम, मुबालिगा।

सं० अत्र (इदम्=यह) क्रि० वि० यहां, इस जगह, इस ठौर।

सं० अत्रि (अद्=खाना वा बचाना) पु० सात ऋषियों में का एक ऋषि ब्रह्मा का बेटा।

सं० अथ (समुच्च० अव्य, फिर, उपरांत) इसके पीछे, शुरू, आरंभ, इस तरह से।

सं० अथवा (अथ=फिर, वा या) समुच्च० या, वा, किम्वा, प्रकारान्तर।

प्रा० अथाई (सं० अ=नहीं, स्था रहना) भा० स्त्री० जगह जहां लोग बातचीत और हँसी ठट्ठा करने के लिये इकट्ठे होते हैं, बैठक, २ सभा जमाव।

प्रा० अथाह (सं० अ=नहीं स्थान=जगह, वा अगाध) गु० गहरा गंभीर, बहुतही गहरा, बेथाह।

प्रा० अद } (सं० अर्द्ध) गु० आधा
अध }

सं० अदन (अद् = खाना) भा०पु० भोजन, खाना ।

सं० अदनीय (अद्+अनीय) कर्म० पु० भोजन योग्य, खुर्दनी ।

सं० अदभ्र गु० बहुत, पूर्ण ।

प्रा० अदमूआ
अदमरा
अधमूआ
अधमरा (सं० अर्द्धमरण, अर्द्ध = आधा, मृ=मरना) गु० बोल० बहुतही सुस्त, बहुतही आसकती आधामरा हुआ, नीम मुर्दा ।

प्रा० अदल बदल बोल० हेराफेरी, पलटा ।

प्रा० अदला बदला करना, बोल० बदलना, पलटना, एक चीज के पलटे में दूसरी चीज लेना ।

प्रा० अदहन (सं०आदहनआ=अधिक, दहन=जलाना) पु० दाल चावल अथवा और चीज पकानेकेलिये बहुतही गर्म पानी ।

सं० अदार (अ=नहीं, दारा=स्त्री) पु० कल्याणभार्य, रँडुवा ।

सं० अदिति (अ=नहीं. दा=देना जो दुःख नहीं देवे वा, दो=काटना) स्त्री० देवताओं की मा और दक्ष की बेटी और कश्यप मुनि की स्त्री ।

सं० अदिन(अ=नहीं, दा बुरा, दिन= समय) पु० दुर्दिन, बुरा हुआ, खोटे दिन, खोटे हाल, दुर्दिन ।

सं० अदूरदर्शी, क० पु० अल्पदृष्टि, कोताह नजर ।

सं० अदृश्य
अदृष्ट (अ=नहीं,दृश=देखना)गु०अलख,जोदेखनेमें न आवे, अगोचर,गुप्त, अदेख ।

सं० अदेय (अ=नहीं, देय=देनेयोग्य, दा=देना) गु० नहीं देने योग्य ।

प्रा० अद्धी (सं०अर्द्ध=आधा) स्त्री० आधीदमड़ी २ एकप्रकारकीतनजेब ।

सं० अद्भुत (अत्=अचंभा,भू=होना वा, भा=चमकना) गु० अनोखा, अपूर्व, अजीब ।

सं० अद्यापि (अद्य+अपि) क्रि० वि० आजतक, अबतक ।

सं० अद्यावधि (अद्य+अवधि) क्रि० वि० अभीतक, इस समयतक ।

प्रा० अद्रक (सं० आर्द्रक, आर्द्र=गीला) पु० आदा, आद, कच्ची सोंठ ।

सं० अद्रि (अद्=खाना) पु० पहाड़, पर्वत, २ वृक्ष, पेड़. नाग ।

सं० अद्वितीय (अ=नहीं, द्वितीय= दूसरा) गु० केवल, निकेवल, एकही. २ अनूप, अतुल्य, लासानी ।

सं० अद्वैत (अ=नहीं, द्वैत=दूसरा) गु० जिसके समान दूसरा नहीं है, भेद रहित, बे मिस्ल ।

प्रा० अधकपाली (सं० अर्द्ध कपाल, अर्द्ध=आधा, कपाल=सिर, स्त्री० [illegible] [illegible] ।

प्रा० अधवर (सं० अर्द्ध=आधा) गु० आधी दूर, बीचमें, मध्य, दर्मियान।
सं० अधम (अव्=बचाना) गु० नीच, कमीना।
सं० अधमर्ण (अधम+ऋण) क० पु० ऋणी, खादक, क़र्जदार।
सं० अधर (अ=नहीं, धृ=रखना) पु० होठ, नीचेका होठ, २ बीच, शून्य, स्वर्ग और धरती के बीच की जगह, गु० नीच, कमीना, छोटा, लघु।
सं० अधरामृत (अधर=होठ, अमृत =अमी) पु० होठों में की अमी।
सं० अधर्म (अ=नहीं, धर्म=पुण्य) पु० पाप, अन्याय, अपराध, अन्धेर, बुराकाम, दोष, गुनाह।
सं० अधर्म्मी (अ=नहीं, धर्म्मी=धर्म करनेवाला) क० पु० पापी, दुराचारी, अन्यायी, दुष्ट, दोषी, अपराधी, बदकार।
प्रा० अधवाड़ (सं० अर्द्ध=आधा) पु० कपड़े का आधा थान, आधे घरके लोग।
सं० अधस्, अधः — अव्य० नीचे, तले।
प्रा० अधार (सं० आधार) भा० पु० आसरा, आड़, २ खाना, आहार, भोजन।
सं० अधार्म्मिक (अ=नहीं, धार्मिक =धर्मी) क० पु० अन्यायी, पापी, दुष्ट, बुरा।
सं० अधि—उप० पर, ऊपर, ऊंचा, २ मुख्य, प्रधान, ३ बहुत, अधिक, ४ साम्हने, ५ वशमें, यह उपसर्ग अप का उलटा है।
सं० अधिक (अधि=ऊपर) गु० बहुत, विशेष, जियादह।
सं० अधिकता (अधिक) भा० स्त्री० अधिकाई, बहुतायत, बढ़ती।
सं० अधिकरण (अधि=ऊपर, कृ=करना) पु० आधार, आसरा, २ व्याकरणमें सातवां कारक, ज़र्फ़।
प्रा० अधिकाई (सं० आधिक्य, अधिक=बहुत) स्त्री० बहुतात, बढ़ती।
सं० अधिकार (अधि=ऊपर, कृ=करना) भा० पु० हक़, बपौती, २ योग्यता, स्वामीपन, ३ राज, ४ अख़्तियार, ५ ओहदा, काम।
सं० अधिकारी (अधिकार+ई) क० पु० अधिकार रखनेवाला, स्वामी मालिक, धनी, वारिस, हक़दार २ पुजारी, पण्डा।
सं० अधिकृत, कर्म० पु० अधिकारपाये हुआ, अधिकार किया हुआ, मक़बूज़ा
सं० अधित्यका (अधि+त्यकन त्यज्=छोड़ना) स्त्री० टीला, तराई दामन कोह २ कुबरी।

सं० अधिप / अधिपति (अधि=ऊपर, पा=पालना) क०पु० राजा, मालिक, स्वामी, प्रभु ।

सं० अधिमास (अधि=अधिक, मास=महीना) पु० मलमास, लौंदका महीना ।

सं० अधिराज (अधि=ऊपर, वा, प्रधान, राजन्=राजा) पु० महाराज, राजाधिराज ।

सं० अधिरूढ़ (अधि=ऊपर, रूढ़ रुह=जमना) क०पु० आरूढ़, सवार ।

सं० अधिवास (अधि+वास-वस्=रहना) भा० पु० रहनेकी जगह, मकान ।

सं० अधिवेशन (अधि=ऊपर, वेशन-विश्=घुसना, जाना) बैठक, दरबार, इजलास ।

सं० अधिष्ठाता (अधि=ऊपर, स्था=ठहरना) क० पु० स्वामी, मालिक, रक्षक, थामनेवाला, अध्यक्ष, मुख्तार, मुखिया ।

सं० अधिष्ठान (अधि+स्थान) भा० पु० स्थिति, मुकाम, मुकाम ।

सं० अधीन (अधि=[illegible]=जाना) [illegible] पढ़ा हुआ, पठित ।

सं० अधीति (अधि+इति—[illegible]) [illegible]

सं० अधीन (अधि=पर अथवा वश इन=स्वामी) गु० वशमें, आज्ञाकारी, दबैल, ताबेदार ।

सं० अधीनता (अधीन) स्त्री० तावेदारी, चाकरी, दबाव हुक्म मानना ।

सं० अधीर (अ=नहीं, धीर=धीरज वाला) गु० चंचल, उतावला, घबरायाहुआ, असंतोषी, चपल, अस्थिर, हड़बड़िया, चटपटा, जल्दबाज़, पस्ताहिम्मत ।

सं० अधीरता (अधीर) भा० स्त्री० घबराहट, चंचलाहट, उतावली, बेसबरी, हड़बड़ी, चटपटी ।

सं० अधीश / अधीश्वर (अधि=ऊपर वा अधिक, ईश वा ईश्वर=स्वामी) पु० राजाधिराज, राजाओंका राजा, महाराज, शाहनशाह ।

सं० अधुना-क्रि०वि० अब, इसवक्त ।

प्रा० अधूरा (अधपूरा) गु० अधबना, अनबना, एगानदी, नामुकम्मिल ।

प्रा० अधूराजाना-क्रि० [illegible] ना, कमीके [illegible] ।

प्रा० अधेड़ (अर्द्ध=आधा) गु० [illegible] [illegible] [illegible] ।

[illegible]

प्रा० **अधेला** (सं० अर्द्ध=आधा) पु० आधा पैसा, पैसेका आधा।

प्रा० **अधेली** (सं० अर्द्ध=आधा) स्त्री० आधा रुपया, अठन्नी, आठ आना।

सं० **अधोमुख** गु० नीचे मुख किये हुये, शिर झुकाये हुये, उदास, सरनगूं।

प्रा० **अधौड़ी** (सं० अर्द्ध=आधा) स्त्री० आधी खाल, मोटा और गाढ़ा चमड़ा जिसके जूते के तले, डोल डोलची और घोड़े के साज़ आदि बनते हैं।

सं० **अध्यक्ष** (अधि=ऊपर, अक्ष्=फैलाना) पु० स्वामी, मालिक, प्रधान, मुखिया, मुख्य, अधिकारी।

सं० **अध्ययन** (अधि+इ=पढ़ना) पु० पढ़ना, पवित्र पोथियोंका पाठकरना, ब्राह्मणोंके षट्कर्ममें का एककर्म।

सं० **अध्यवसाय** (अधि+अव+सै =नाश होना) पु० उद्यम, उपाय रोज़गार।

सं० **अध्यापक** (अधि+इ=पढ़ना) पु० पाठक, गुरू उपाध्याय, आचार्य, शिक्षक, वेद शास्त्र पढ़ाने वाला।

सं० **अध्यापन** (अधि+इ=जाना) भा० पु० पढ़ाना, सबक़देना।

सं० **अध्याय** (अधि+इ=पढ़ना) पु० पाठ, पर्व, सर्ग, प्रकरण, बाब, परिच्छेद।

सं० **अध्यासीन** (अधि+आसीन-आस्=बैठना) क० पु० बैठाहुआ।

सं० **अध्वर** (अध्वन्=मार्ग, रा=देना अर्थात् जो सच्चा रस्ता बतलाता है) पु० यज्ञ, होम, बलिदान।

सं० **अध्वा** (अध्वन्=मार्ग) स्त्री० राह।

सं० **अन्**=निषेध वाचक अव्यय, संस्कृत में जिस शब्द का पहला अक्षर स्वर हो उस के पहले अ नहीं आता बल्कि ऐसी जगह पर अ को अन् होजाता है जैसे अनन्त, पर हिन्दी में व्यंजन के पहले भी अन आता है जैसे अन देखा।

अं० **अन्कवूनांट्यड**—वह नौकर जिन्हें सरकार नौकरी देनेकी जिम्मेदार नहीं।

प्रा० **अनख** (अनखाना) भा० स्त्री० रिस, कोप, क्रोध, गुस्सा, २ डाह, ईर्षा।

सं० **अनख** (अ+नख) नखहीन, जिस के नख न हो।

प्रा० **अनखाना**- क्रि० अ० कोप करना, खिसियाना, क्रोध करना, गुस्सा होना, चिढ़ना, खुनसाना, खफा होना।

प्रा० **अनगढ़**, **अनगढ़ा**, पु० **अनगढ़ी**, स्त्री० (अन्=नहीं, गढ़ना=बनाना) गु० अनबना, अड़बग, अनसीखा, नहीं गढ़ा हुआ।

प्रा० अनगढ़ीबात-बोल० बे ठिकाने बात, बे मेल बात, बे सिर पांव की बात, बिढंगी बात ।

प्रा० अनगणित
अनगिणत
अनगिणती } (सं० अगणित, अ = नहीं, गण् = गिनना) गु० अपार, बेशुमार, असंख्यात, बहुत, बेहिसाब।

प्रा० अनगिना (सं० अगणित) गु० नहीं गिना हुआ, बे गिना, २ अनगणित, अपार, बेशुमार, बेहिसाब ।

प्रा० अनगिना महीना—बोल० स्त्री को गर्भ का आठवां महीना, जब लुगाई पेट से होती है उस समय का आठवां महीना ॥

सं० अनघ (अ=नहीं, अघ=पाप) गु० निष्पापी, निर्दोष, सीधा सादा, शुद्ध बेगुनाह ।

प्रा० अनङ्ग (अ=नहीं, अङ्ग=देह) पु० कामदेव, एक बार महादेव ने अपनी तीसरी आंख की आग से कामदेव को जला दिया था उसी दिन से इसका नाम अनङ्ग हुआ यमराज और श्रद्धा का पुत्र ।

प्रा० अनचाहता (अ=नहीं, चाहना) गु० नहीं चाहा हुआ, अनिच्छित ।

प्रा० अनचित (सं० अ=नहीं, चित्-[illegible]) [illegible]

प्रा० अनजाना (सं० अज्ञान) गु० नहीं जाना हुआ, २ निर्बुद्धि ।

प्रा० अनजाने (सं० अज्ञान) क्रि० वि० बिनजाने, बे जाने बूझे, नहीं जानके, अजान ।

प्रा० अनजीवत (सं० अजीवित) क० पु० मृतक, मुर्दा ।

सं० अनडुह (अनः=छकड़ा+वह=लेजाना) पु० बैल ।

सं० अनड्वान् (सं० अनडुह) पु० बैल ।

प्रा० अनत (सं० अन्यत्र) क्रि० वि० और जगह ।

सं० अनन्त (अन्=नहीं, अन्त=पार) गु० अपार, जिस का अन्त नहीं, असीम, बेहद्द, पु० शेषजी, शेषनाग जिनके एक फनपर हिंदू लोग पृथ्वीको ठहरी बताते हैं, २ चौदह गांठका एक धागा जिसको भादों सुदी १४ अर्थात् अनन्त चौदसके दिन पूजा करके हिंदू लोग अपने दहिने हाथपर बांधते हैं, ३ विष्णु, धरणी, नक्षत्र, [illegible], [illegible], नाइ[illegible] ।

सं० अनन्य (अ=नहीं, अन्य=दूसरा) गु० एकही, जिसके दूसरा कोई ना नहीं ।

सं० अनपत्य (अ=नहीं [illegible]

प्रा० अनपावनी (सं०अप्रापणीय) गु० जिसको कोई न पावै, दुर्लभ, अप्राप्त।

प्रा० अनबनाव (अन=नहीं, बनाव=मेल) भा० पु० अनरस, बिगाड़, फूट, नाचाकी, ऐंठा पैंठी, नाइत्तिफ़ाक़ी।

प्रा० अनबेधा (सं० अविद्ध, अ=नहीं व्यध्=बींधना, कर्म०पु०अनछेदा, अबेधा, नहीं छेदा हुआ, नहीं बींधा हुआ।

प्रा० अनबोल (अन=नहीं=बोल=बोलना) गु० चुपचाप, अबाक, अबोल, अनबोला, चुपका, गूंगा।

प्रा० अनभल (अ=नहीं, भला=अच्छा) पु० बुरा, दुख।

सं० अनभिज्ञ (अन्+अभि+ज्ञा=जानना) गु० नादान, नावाकिफ।

प्रा० अनमना (सं० अन्यमनस्, अन्य=दूसरा, मनस्=मन वा उन्मनस्, उत्=ऊपर, मनस्=मन) गु० घबराया हुआ, उदास, चिंता में, चिंतित, फ़िक्रमंद, मुतफ़क्किर।

प्रा० अनमोल (अन्=नहीं, मोल=कीमत, वा, सं० अमूल्य, अ=नहीं, मूल्य=मोल) गु० अमोल, बढ़िया, उत्तम, जिसका मोल न होसके।

प्रा० अनरस (अन्=नहीं, रस=स्वाद) पु० अनबनाव, मित्रोंके आपसमें ऐंठा पैंठी, फूट, नाचाक़ी, बिगाड़।

प्रा० अनरीति (अन्=नहीं, रीत=चाल) स्त्री० कुचाल, कुढंग, बुरी रीत।

सं० अनर्थ (अ=नहीं, अर्थ=मतलब लाभ) गु० वृथा, बेफ़ायदा, अनुचित, निरर्थक, अकारथ, निष्फल, बेमतलब पु० हानि, नुक़सान।

सं० अनर्थकारी (अनर्थ+कारी) क० पु० हानिकारक, मुज़िर।

सं० अनल (अ=नहीं, अल्=पूरा होना, अर्थात् जिसमें चाहे जितना डालो पर पूर्ण नहीं होवे, वा, अन्=जीना, जिससे सब जीते हैं) पु० आग, आगी, अग्नि।

सं० अनवद्य (अ=नहीं अवद्य=दोष) गु० निर्दोष, बेचूक, बेगुनाह, बेखता।

सं० अनवस्थित (अन्+अव+स्था=ठहरना) गु० अचेत, बेख़बर, असावधान, ग़ाफ़िल।

प्रा० अनसिख, अनसीखा (सं० अशिक्षित, अ=नहीं, शिक्षित=सीखा) गु० अनपढ़ा, मूर्ख, अज्ञान, गैर तालीमयाफ़्ता।

प्रा० अनसुना (अन=नहीं, सुनना) गु० नहीं सुना, नहीं ध्यान दिया, अनाकानी।

प्रा० अनसुनी करना, सुनीअनसुनीकरना बोल० क्रि० साकारात

पर कुछ ध्यान नहीं देना, नहीं सुनने का बहाना करना।

प्रा० अनहित (सं० अहित, अ=नहीं हित=भला) क्रि० पु० बैरी, द्वेषी, बुरा करने वाला २ बुरा।

प्रा० अनहोना (अन=नहीं, होना) गु० नहीं होनेवाला, असंभव, गैर मुमकिन।

सं० अनाचार (अ=नहीं, आचार=चाल चलन) भा० पु० बुरा चाल चलन, कुचाल, कुरीत, बुरा व्यवहार बदचलनी, बदचलन।

प्रा० अनाज } नाज } (सं० अन्न) पु० अन्न, नाज, गल्ला।

प्रा० अनाड़ी (सं० अनार्य, अन्=नहीं, आर्य=सभ्य) गु० गंवार, मूर्ख, भोंदू, फूहड़, बेडौल, बेढंगा, सिखनौत, कच्चा।

सं० अनाथ (अ=नहीं, नाथ = स्वामी) गु० बिनमालिक, बिन मा बाप ले) गु० जिसका शुरु नहीं, अविनाशी, सदा रहने वाला।

सं० अनामय (अ=नहीं, आमय=रोग, अम्=बिमार होना) गु० निरोग, भला चंगा, बिन रोग, भा० पु० अरोग्यता, निरोगपन, निरोगता, सेहत।

सं० अनायास (अ=नहीं, आयास =मिहनत, आ=सब तरह में, यस्=मिहनत करना) गु० बिन मिहनत, सहज, सुगम, भा० पु० सुगमता, आसानी, चैन, सुख।

सं० अनाहार (अ=नहीं, आहार=खाना) पु० उपास, लंघन, भूखा रहना, फ़ाक़ा कशी।

सं० अनित्य (अ=नहीं, नित्य=सदा) गु० जो सदा नहीं रहे, नाशवान, नाश होनेवाला, झूठा।

सं० अनित्यता-भा० स्त्री० अस्थिरता, फ़ना, नापायदारी।

सं० अनिमग्न (अ=नहीं, निमग्न=

सं० अनिर्वचनीय
अनिर्वाच्य } (अ+निः+वचनीय=कहने योग्य) जो कहने योग्य न हो, अकथ्य ।

सं० अनिशम् -क्रि० वि० प्रतिदिन, रोजमर्रा ।

सं० अनिल (अन् = जीना) पु० पवन,हवा,वायु,वाव, बयार, बतास संख्या ४९ ।

सं० अनिष्ट (अन्+इष्ट,इष् = चाहना) अप्रिय,अनिच्छित, खराब, बेचाहा ।

प्रा० अनी (सं० अणी स्त्री० नोक-तीषी धार,२ सं०अनीक) स्त्री० फौज, सेना, दल, कटक ।

सं० अनीक (अन् = जीना अर्थात् जिससे रक्षा होती है) स्त्री० सेना, फौज, कटक ।

सं०अनीति (अ = नहीं+नीति = अच्छा चलन)स्त्री०अन्याय, कुचाल, बुरा चलन ।

सं०अनीप (अनी=सेना,पा = रक्षा करना) क०पु०-सेनापति,सरदार।

सं० अनीह (अ=नहीं+ईहा=सुध, इच्छा, चेष्टा) गु० जिसको कुछ चाह नहीं,चेष्टारहित २ निर्गुण, बेरूप ३ आलसी, ढीला, बोदा, अयोध्याके एकराजा का नाम ।

सं० अनीहा (अन्+ईहा) भा० स्त्री० उदासीनता, बेपरवाही ।

सं०अनु-उप०पीछे, साथ,अनुसार, बराबर,पास, अनुकरण, नक़ल, हरएक, कम, थोड़ा ।

सं०अनुकथन (अनु = पीछे+कथ् = कहना)भा०पु० कहे के पीछे कहना, बारंबार कहना, ताईदकरना ।

सं०अनुकम्पा (अनु + कप = कांपना) भा० स्त्री० दया, कृपा, मेहरबानी ।

सं०अनुकरण (अनु = नक़ल,कृ = करना) पु० नक़ल करना, अनुरूप।

सं०अनुकूल (अनु = साथ, कूल= घेरना) गु० सहाय करने वाला, मददगार, कृपालु, दयालु, मिहरबान, अनुसार, मुवाफिक ।

सं०अनुक्रम (अनु = पीछे क्रम = चलना) गु० क्रमानुसार-तर्तीबवार, क्रमशः भा० पु० प्रबंध, सूचीपत्र, फ़ेहरिस्त ।

सं० अनुग- (अनु = पीछे+गम् = जाना) क० पु० अनुचर, सेवक, ताबेदार ।

सं० अनुगति (अनु=पीछे,गति = चाल) भा० स्त्री० अनुमति, सम्पति, मर्जी, आज्ञा ।

सं० अनुगामी (अनु=पीछे, गामी = चलनेवाला, गम् चलना) क० पु० पीछे चलनेवाला, पु० साथी २ नौकर, पैरोकार ।

सं० अनुग्रह (अनु=पीछे, ग्रह=लेना) भा० पु० कृपा, मिहरबानी, प्रसन्नता, दया।

सं० अनुगृहीत (अनु=पीछे+गृहीत, गृह=लेना) कर्म०पु० दयाकियागया, निवाज़ागया, इहसानमंद।

सं० अनुचर (अनु=पीछे, चर=चलनेवाला, चर्=चलना) पु० नौकर, दास, सेवक, चाकर, पीछे चलने वाला, २ साथी।

सं० अनुचरी (अनुचर) स्त्री० दासी, लौंडी, बांदी।

सं० अनुचित (अ=नहीं, उचित=ठीक) गु० अयोग्य, ठीक नहीं, नामुनासिब।

सं० अनुज (अनु=पीछे, ज=पैदाहो, जन्=पैदाहोना) पु० छोटाभाई

सं० अनुजा (अनुज) स्त्री० छोटी बहन।

सं० अनुजीवी (अनु=पीछे, जीविन्=जीनेवाला, जीव्=जीना) क० पु० नौकर, दास, सेवक, चाकर, पराधीन।

सं० अनुज्ञा (अनु=पीछे, ज्ञा=जानना) भा० स्त्री० आज्ञा, अनुमति, हुक्म, [illegible], [illegible]।

सं० अनुतप्त (अनु=पीछे+तप्=तपना) [illegible]

अनुताप (अनु+तप=तपना) भा० पु० पश्चात्ताप, अफ़सोस।

सं० अनुदिन (अनु=हरएक, दिन) क्रि० वि० हरएक, दिन, दिन दिन, सदा, प्रतिदिन, रोज़मर्रा।

सं० अनुनय (अनु+नी=लेजाना) भा० पु० विनय, शिक्षा, अदब, नसीहत।

सं० अनुनासिक (अनु=पीछे, नासिका=नाक) गु० सानुनासिक, जो अक्षर मुंह और नाकसे बोलेजायं, जैसे ङ ञ ण न म और अनुस्वार।

सं० अनुपकारी (अन्+उप+कारी, कृ=करना) क० पु० उपकार रहित, बेफ़ैज़।

सं० अनुपम (अ=नहीं, उपमा=बराबरी) गु० अनूप, उत्तम, अपूर्व, जिस की बराबरी न होसके बेमिसाल, बेनज़ीर।

सं० अनुपयुक्त गु० पु० अयोग्य, नामुनासिब

सं० अनुपल (अनु=[illegible]) पु० [illegible]

सं० अनुपात [illegible]

सं० अनुपान (अनु+पा=पीना) गु० औषधिकासहकारी, सहयोगी, जरिया, बदर्का।

सं० अनुबंध (अनु+बन्धु=बांधना) बांधना, मिलाना, मेळ, मिलाप, धातुका गण सूचक पूर्वपर अक्षर।

सं० अनुभव(अनु = पीछे,भू=होना) भा०पु० ज्ञान, यथार्थज्ञान, विचार, अनुमान, सोचना, समझना, बूझना, तजरिबा।

सं० अनुमत (अनु+मत्, मन्=सोचना) र्म० पु० सलाह दियागया।

सं० अनुमति-भा० स्त्री० सलाह, सम्मति।

सं० अनुमान (अनु=पीछे, मा=मापना) भा० पु० अंदाजा, अटकल, विचार, क़यास, तख़मीना।

सं० अनुमानी-क० पु० विचारने वाला, अन्दाज़, करनेवाला।

सं० अनुमित (अनु + मित, मा=मापना) र्म० पु० अटकाला गया, क़यास किया गया।

सं० अनुमेय (अनु+मेय-मा=मापना) र्म० पु० अन्दाज़ के लायक।

सं० अनुमोदन (अनु+मुद=हर्षित होना) प्रशंसा, समर्थन, ताईदकरना।

सं० अनुमोदित (अनु+मुद) क० पु० आह्लादित, आनंदित, ख़ुश।

सं० अनुयायी (अनु=पीछे, यायी=जानेवाला, या=जाना) क०पु० पीछे जानेवाला, दास, नौकर, अनुचर, पैरोकार।

सं० अनुयोग (अनु +युज्=मिलना) भा० पु० तिरस्कार, निरादर, बेक़दरी।

सं० अनुयोजन-भा० पु० पूंछ पांछ, अपील।

सं० अनुयोक्ता अनुयोजक (अनु+युज=मिलना, मिलाना) पूंछ पांछ करनेवाला, अपीलांट, अर्थात् अपील दायर करनेवाला।

सं० अनुयोज्य-र्म० पु० निन्दायोग्य क़ाबिल, हिक़ारत, रिस्पांडेंट अर्थात् वह जिस पर अपील कीजाय।

सं० अनुरक्त (अनु=साथ+रञ्ज्=रंगना) क० पु० प्रेमी, अनुकूल, शायक, आशिक़।

सं० अनुराग (अनु=साथ, रञ्ज्=रंगना) भा० पु० प्यार, स्नेह, प्रीति, छोह, मोह, मुहब्बत।

सं० अनुरागी-क० पु० प्रेमी, स्नेही, मुहब्बती।

सं० अनुराधा (अनु=पीछे, राधा=विशाखा नक्षत्र, राध्=पूरा करना) स्त्री० सत्तरहवां नक्षत्र।

सं० अनुरुद्ध अनुरोधित (अनु+रुध्=रोकना) र्म०पु० रोका गया, क़ैद किया गया।

सं० अनुरूप (अनु=बराबर, रूप=

डौल) गु॰ बराबर, तुल्य, समान, एकसा, सदृश, अनुसार, अनुहार।

सं॰ **अनुशासक** (अनु+शास् सिखाना) क॰ पु॰ हाकिम।

सं॰ **अनुरोध** / **अनुरोधन** (अनु+रुध्) भा॰ पु॰ अपेक्षा, निवरन १ रोकना, २ आज्ञा पालन, आसय, सम्मति, तामील लिहाज।

अनुरोधक / **अनुरोधी** क॰ पु॰ रोकने वाला, आज्ञापालक, फर्माबरदार।

सं॰ **अनुलेप** / **अनुलेपन** (अनु+लिप्=लगाना) भा॰ पु॰ उबटन लगाना, तेल लगाना, सुगंधादिक लेप।

सं॰ **अनुलोम** (अनु=पीछे+लोम=बाल) गु॰ आनुनादिन, यथाक्रम, सिलसिला।

सं॰ **अनुवाद** (अनु+वद्=कहना) भा॰ पु॰ बार बार कहना, उल्था, तर्जुमा।

सं॰ **अनुशासन** (अनु=पास, शास्=सिखाना) भा॰ पु॰ आज्ञा, हुक्म, शिक्षा, सीख।

सं॰ **अनुशीलन** (अनु+शील=अभ्यास करना) भा॰ पु॰ आलोचन, अभ्यास करना, सेवन।

सं॰ **अनुशोचन** (अनु+शुच=रंज करना) भा॰ पु॰ पश्चात्ताप करना, अफसोस करना।

सं॰ **अनुष्ठान** (अनु+स्था=ठहरना) भा॰ पु॰ आरम्भ, आगाज अमल।

सं॰ **अनुसन्धान** (अनु=पीछे, सम्=अच्छी तरह से, धा=रखना) पु॰ खोज, पता, खोजना, तलाश, अन्वेषण, साजिश, तहकीकात, ढूंढ़ ढांढ़, करद मर्द मुल्जिम।

प्रा॰ **अनुसरना** / **अनुहरना** सं॰ (अनु+सरण, अनु=पीछे, सृ=जाना) क्रि॰ अ॰ पीछे चलना, २ साथ चलना।

उत्तम, श्रेष्ठ, सबसे अच्छा, बेमिस्ल, २ दलदल।

सं० अनृत(अन् = नहीं, ऋत=सांच, ऋ = जाना) गु० झूठा, स्त्री० झूठ।

सं० अनेक (अन=नहीं, एक) गु० बहुत,ढेर,अधिक,कईएक, एकनहीं।

प्रा० अनैसे-क्रि० वि०कुदृष्टिसे टेढ़े।

प्रा० अनोखा गु० अनूठा,अद्भुत।

सं० अन्त (अम्=जाना) पु० सीमा, आखिर, सिरा,खूंट,सींव, समाप्ति, पूराहोना, २ नाशहोना, मौत, गु० पिछला, शेष, निदान।

सं० अन्तःकरण (अन्तर = भीतर करण = इन्द्री)पु०मन,चित्त,हृदयजी।

सं० अन्तःपुर- पु० स्त्रियों के रहने काघर, जनानखाना, हरम।

सं०अन्तकाल(अन्त = पिछला,का ल = समय) पु० मरने का समय, मौत का समय, मौतकी घड़ी।

प्रा० अन्तड़ी (सं० अन्त्र, अति = बांधना) स्त्री० आंत, अन्तरी।

सं०अन्तर (अन्त = सीमा,रा=देना) पु० भीतर, बीच,बीचकी जगह, दूरी, २ मन, ३ भेद,फरक,गु० और क्रि० वि० भीतर, बीच में।

सं० अंतरकथा (अन्तर = बीचकी कथा = बात) स्त्री० बात में बात।

सं० अंतरंगमित्र पु० दिली दोस्त।

सं० अंतरंगसभा (अन्तर + ग + सभा) सभाके अंतरसभा, छोटीसभा।

प्रा० अंतरा (सं० अन्तर) पु० भजन अथवा गीत आदि का चरण पद, गु० बीचका, पास।

प्रा० अन्तरिया (सं० अन्तर) पु० तिजारी,जोतपएकदिनबीच में आकर तीसरे दिन फिरआवे,अन्तरा,तप।

सं०अन्तरिक-गु० भितरी, अन्दरूनी।

सं०अंतरिक्ष / **अन्तरीक्ष** (अन्तर् = स्वर्गऔर पृथ्वी के बीच, ईक्ष् = देखना, वा अन्तर्भीतर,ऋक्ष, तारा अर्थात् जिसमें तारे हैं) पु० आकाश, शून्य, अधर।

सं०अन्तरित (अन्तर + इत=गया हुआ) मध्यका, बीचका,दर्मियानी।

सं० अन्तरितकृषक (अन्तरित + कृषक,कृष् = जोतना) क० पु० शिकमी काश्तकार, वहकिसान जो मौरूसी काश्तकार से लेकर जमीन जोतताहै।

प्रा० अन्तरी (सं०अन्त्र,अति=बांधना) स्त्री० आंत, अन्तड़ी।

प्रा०अन्तरियांजलना बोल० बहुत भूख लगना, भूखों मरना।

प्रा०अन्तरीकाबलखोलनाबोल० भूख में पेट भरके खाना।

प्रा० अन्तरियोंमेंआगलगना-बोल० बहुत भूखा होना, बहुत भूख लगना, बहुत भूखों मरना।

सं०अन्तरीप(अन्तर = भीतर,आप= पानी) पु०धरतीका वह टुकड़ा जो समुद्र में दूर तक चला गया हो, जैसे कन्या कुमारी।

प्रा० **अन्तर्जामी** } (अन्तर=मन
सं० **अन्तर्यामी** } यम्=ठहरना, फैलना) गु० मन की बात जानने वाला, घट घट निवासी, पु० परमेश्वर, ईश्वर, परमात्मा।

प्रा० **अन्तर्धानहोना** } (सं० अ
अन्तर्ध्यानहोना } न्तर्द्धान,अन्तर,भीतर=धा=रखना,पकड़ना) क्रि०अ०अलख होना, छिपजाना, नहीं दीखना,बिलाजाना, गुप्तहोना, गायबहोना।

सं० **अन्तर्पट**(अन्तर=बीचमें,पट=कपड़ा) पु०परदा, ओट, आड़, क़नात, टट्टी।

सं० **अन्तर्वृत्ति**-भा०स्त्री०दिलीहाल।

सं० **अन्तर्हित**(अन्तर=भीतर,धा=रखना) गु० अन्तर्ध्यान,छिपा, अलख, अदृश्य।

सं० **अन्तिक**-पु०समीप, निज, [illegible] [illegible] बहिन।

सं० **अन्तिम**-गु० पिछला, आखिरी।

सं० **अन्त्रावलि** (अन्त्र=आंत,आति वांगा. अवलि=पांत। स्त्री० बहुत सी अन्तड़ियां,अंतड़ियों की पांत। [illegible]

सं० **अन्ध** (अन्ध=अंधा होना) गु० अंधा, सूरदास, बिन आंख का, पु० अंधेरा।

सं० **अन्धकार** ([illegible]) [illegible]

सं० **अन्धकूप** (अन्ध=अन्धा,कूप=कुआं) पु० अंधाकुआं, ऐसा कुआं जिस में घास पात जम जाताहै और पानी नहीं होता।

प्रा० **अन्धड़** (सं० अन्ध) पु०आंधी, तूफान।

सं० **अन्धपरम्पराग्रस्त**- रूप०पु० पुरानी रीतों में फंसाहुआ क़दीम रस्मों में मुब्तला।

प्रा० **अन्धला** } (सं० अन्ध)गु०
अन्धा } बिन आंख का, सूरदास,आंख फूटा, नेत्रहीन।

प्रा० **अन्धाधुंध** बोल० अंधेर, बेहिसाब,बेठिकाना, बहुतही बहुत अंधों की तरह, आंख मूंदे।

प्रा० **अन्धाधुन्धलुटाना**-बोल०उड़ाना, बे हिसाब खर्च करना, बेठिकाने, खर्च करना, बेफ़ायदह खर्च करना, आंख मूंदे खर्च करना।

सं० **अन्धसुत**(अन्ध=अन्धा,सुत=बेटा) पु० अन्धे का बेटा, अन्धे राजा धृतराष्ट्र का बेटा दुर्योधन।

प्रा० **अन्धियारा** (सं० अन्धकार) पु० अंधेरा, अन्धकार।

प्रा० **अंधेर** (सं० अन्धकार) पु० अंधेरा,अन्याय, बखेड़ा, ऊधम, अन्याधुन्ध, तूफान, अनीति, जुल्म, दंगा।

प्रा० **अंधेरकरना**- बोल० अन्याय करना, अनीतिकरना, ऊधम करना, [illegible] करना।

प्रा० **अंधेरा** (सं० अन्धकार) [illegible]

प्रा० अंधेरीकोठरी-बाल० ऐसी कोठरी जिसमें अंधेरा हो, २ पेट गर्भ स्थान, कोख, धरन।

सं० अन्न (अद् = खाना,वा, अन् = जीना) पु० नाज, अनाज, खाना।

सं० अन्नकूट (अन्न = खाना, कूट = ढेर) पु० दीवाली के दूसरे दिन का पर्व, जिस में हिंदू लोग बहुत सा खाना और तरकारियां बनाकर अपने देवताओं को भोग चढ़ातेहैं।

सं० अन्नजल } बोल० दानापानी
अन्नपानी } संयोग,पु० खाना पीना।

सं०अन्नदाता (अन्न=अनाज,दाता= देनेवाला,दा = देना) बोल०पालनेवाला, बचानेवाला, मालिक, दयावन्त, उपकारी, दाता।

सं०अन्नपूर्णा (अन्न=खाना,पूर्णा= भरने वाली) स्त्री० दुर्गाका नाम, योगमाया, देवी।

सं० अन्नप्राशन (अन्न = अनाज वा खाना,प्राशन = खिलाना,प्र=शुरूअ, अश = खाना)पु० जब बालक छः महीनेका होताहै तब पहली बार अनाज अथवा खीरआदिखिलाना।

सं० अन्य (अन्=जीना) गु० और, दूसरा, गैर।

सं० अन्यथा (अन्य और, था = प्रकारअर्थमें प्रत्यय) क्रि०वि० और प्रकारसे, और तरहसे, नहीं तो, गु० उलटा।

सं० अन्याय (अ=नहीं, न्याय = इन्साफ,धर्म) पु० बेइन्साफी, अधर्म, उपद्रव, जुल्म।

सं० अन्यायी (अन्याय) गु० अन्याय करनेवाला, अधर्मी, दुष्टात्मा, जालिम।

सं० अन्योन्य (अन्यः+अन्य) गु० आपसमें, एक दूसरे को, परस्पर, बाहम।

सं० अन्योन्याश्रित-गु० एक दूसरे के साथ संबंध रखनेवाला ,लाज़िम मल्ज़ूम।

सं०अन्वय (अनु = पीछे,इण = जाना)पु० वंश, कुल, २ पदच्छेद, श्लोक के पदों का संबंधमिलाना, तरकीबनहवी।

सं० अन्वित्-न्मं० पु० युक्त, शामिल, पूरा।

सं० अन्वेषण (अनु = पीछे, इष् = जाना)पु० खोजना, पतालगाना, हेरना, ढूंढ़ना, तलाशकरना।

प्रा० अन्हवाना (अन्हाना) क्रि० स० नहलाना, अंगधोना, स्नान कराना।

प्रा० अन्हान (सं० स्नान वा अवगाहन)पु०स्नान, अन्हाना।

प्रा० अन्हाना (सं० अवगाहन, वा स्नान) क्रि० अ० अन्हाना, स्नान करना, शरीर साफ करना।

सं० अप, उप० से, उलटा, हानि, नहीं, बुरा, भेद, छिपाव, बुरीतरह से, अलग, भिन्न।

सं० अपकर्ष (अप + कृष=खींचना) भा० पु० खींचना, न्यूनता, निरादर।

सं० अपकार (अप=उलटा, वा बुरा वा हानि, कृ=करना) भा० पु० बिगाड़, बुरा करना, हानि।

सं० अपकारी- क० पु० हानिकरनेवाला, नुकसान करनेवाला।

सं० अपकीर्त्ति (अप=बुरा, कीर्त्ति =यश) भा० स्त्री० बुराई, बदनामी, अपयश, कुयश।

सं० अपकृत-पु० करना, नाम।

सं० अपगति—भा० स्त्री० दुर्दशा, दुर्दशा।

सं० अपगा (अप-नीचे, गम्=जाना) [illegible] नदी, दरिया।

अपमान, मुसीबत, बेइज्जती, २ पति रहित, उपपति।

सं० अपत्य (अ=नहीं, पत्=गिरना) जिसके द्वारा पितरन गिरनेपावें, पुत्र, सन्तान, औलाद।

प्रा० अपना-सं० सर्वना० निजका, आपका।

प्रा० अपनीगाना, बोल० अपनी तारीफ करना, अपने तईं सराहना।

प्रा० अपनाना-क्रि० स० अपना करना।

प्रा० अपनायत- स्त्री० नाता, संबन्ध, भाईचारा, घराना।

सं० अपनीत (अप+नीत- नी=ले जाना) भा० पु० हटाया गया, दूर कियागया।

सं० अपभ्रंश (अप=से, भ्रंश् गिरना) भा० पु० गँवारी बोल चाल, व्याकरण की रीति से अशुद्ध शब्द, व्याकरण विरुद्ध शब्द, बिगड़ा हुआ शब्द।

सं० अपमान (अप=उलटा, मन=

दूसरा, एक और, दूसरा कोई।

सं० अपरमित (अ+पर+मित-मा=नापना,मापना) बेपरिमाण,बेहद, अनगिनत।

सं०अपरम्पार (अ=नहीं, पर=दूसरा,पार=अन्त)गु० अपार, अनंत, बेहद, जिसका पार नहीं।

सं० अपराध (अप=बुरी तरहसे, राध्=पूराकरना) पु० पाप, दोष, अधर्म, अन्याय, जुर्म, गुनाह।

सं० अपराधी (अपराध) क० पु० पापी, दोषी, अधर्मी, गुनाहगार, मुजरिम।

सं० अपराह्ण (अपर=पिछला, अह्न =दिन) पु० तीसरापहर, सेपहर।

सं० अपरिचित- गु० बेजान पहिचान, अनजान, अजनबी।

सं० अपरिष्कार- भा० पु० अपवित्रता, मैलापन।

सं० अपवर्ग (अप = भिन्न, अलग, वर्ग = पद, दर्जा अर्थात् सब दर्जों से अलग और बढ़कर है) पु० मुक्ति, मोक्ष, परमपद, परमगति, छुटकारा, निस्तारा, उद्धार, नजात।

सं०अपवाद (अप = बुरा,वद्=कहना)पु० गाली, निंदा, दोष, बुराई, बदनामी।

सं० अपवाहन- (अप + वह् लेजाना, फुसलाना, लोगोंको बहका लेजाना) एक राज से दूसरे राजमें लेजाकर बसाना।

सं० अपवित्र (अ=नहीं, पवित्र = शुद्ध) गु० अशुद्ध, मैला, अपावन, नापाक।

सं० अपशकुन (अप = बुरा, शकुन = सगुन) पु० बुरा सगुन,बुरा जतलानेवाला, अशुभ जतलानेवाला चिह्न।

सं० अपशब्द (अप = बुरा, शब्द) पु० बुरा शब्द, अशुद्ध शब्द, ऐसा शब्द जिसका कुछ अर्थ नहीं, मुहमिल २ पाद, गूज।

सं० अपहरण (अप=अलग, हृ=लेजाना) भा० पु० कुरकी।

सं०अपहरित—र्म० पु० छीन लियागया, हर लियागया।

सं० अपहारी- क० पु० हरनेवाला।

सं०अपहृत-र्म० पु०कुर्कतहसील।

सं० अपादान (अप=से, आदान= लेना) भा० पु० जुदाकरना, विभाग २ व्याकरण में पांचवां कारक।

सं० अपान (अप = नीचे+अन्= जीना) पु० शरीर के पांच पवनों में से एक जो गुदा से निकलती है, अधोवायु, गूज़, २ कहार ३ वरुण गु० अपना, २ पानरहित।

सं०अपाय (अप=बुरीतरहसे, इण्= जाना) पु० बिगाड़, नाश, हानि २ जुदा होना।

सं० अपार (अ=नहीं, पार=अन्त) गु० अनन्त, अपरम्पार, अनगिनत, बेहद ।

सं० अपावन (अ=नहीं, पावन=पवित्र) गु० अशुद्ध, अपवित्र, मैला ।

फा० अपाहज-गु० लूला, लंगड़ा, सुस्त ।

सं० अपि-उप० भी, निस्सार भी, इसके सिवाय, इसपर भी, वलिक, यहांतक, तोभी, तबभी, जोभी, यद्यपि, निश्चय, केवल, और भी, पास, मिला हुआ ।

ग्रा० अपूत (सं० अपुत्र, अ=नहीं, पुत्र=बेटा) गु० बिन लड़के वाला, निर्वंश, २ कुपूत ।

सं० अपूत (अ=नहीं, पूत=पवित्र कर-ना) सी० पु० अपवित्र, नापाक ।

सं० अपूर्ण (अ=नहीं, पूर्ण=पूरा)

सं० अपेय (अ+पेय, पा=पीना) सी० पु० नहीं पीने योग्य ।

ग्रा० अपेल (अ=नहीं, पेलना=टाल-ना) गु० अचल, अटल, अमिट ।

सं० अप्रकाशित-सी० पु० प्रकाशहीन, अंधेरा, तारीक ।

सं० अप्रचारित-सी० पु० चलन-बाहर, गैर मुरौवज ।

सं० अप्रतिष्ठा (अ=नहीं, प्रतिष्ठा=बड़ाई) भा० स्त्री० अनादर, अपमान, बुराई, बदनामी ।

सं० अप्रतिहत-सी० पु० बेरोक, नाशरहित, सावधान ।

सं० अप्रधान (न=नहीं, प्रधान=मुख्य) गु० जो मुख्य नहीं, अमुख्य, २ आधीन ।

सं० अप्रमाणिकोक्ति (न+प्रमाणिक+उक्ति) भा० स्त्री० अप्रमाणी बात ।

सं० अप्रीतिकर-क० पु० निठुर, बे मुहब्बत, बे तअल्लुक, बे उन्स।

सं० अप्सरा (अप्=पानी, सृ= चलना, अर्थात् जो समुद्र से पैदा हुई, वा जिस को न्हाने की बहुत रुचि हो) स्त्री० स्वर्ग की स्त्री, इंद्र की सभा में नाचने वाली, उर्वशी, रम्भा आदि।

प्रा० अफल(अ=नहीं,फल=लाभ) गु० वृथा, निष्फल, बे फ़ायदा।

प्रा० अब (सं० अद्य) क्रि० वि० इस घड़ी, इस समय, अभी, २ इस के पीछे।

प्रा० अबका- बोल० इस बार का।

प्रा० अबकी-बोल० इस बार, इस बरस।

प्रा० अबतक / अबतलक / अबतोड़ी — बोल० इस घड़ी तक, इस समय तक।

प्रा० अबतब होना-बोल० मौतका समय पास आना, मरनेपै होना।

सं० अबन्धित(अ=नहीं, बन्ध्=बांधना) भू० पु० बन्धन रहित, अयुक्त, स्वच्छन्द, मुक्त।

सं०अबल (अ=नहीं, बल=जोर) गु० पु० निबल, निर्बल, दुबला, कमजोर।

सं० अबला (अबल) गु० स्त्री० निबली, दुबली, कमजोर, स्त्री० लुगाई, नी, नारी

सं० अवाक् (अ=नहीं,वाक्=बोल, गु० अबोल, चुप, गूंगा, मौन।

सं० अबुध (अ=नहीं, बुध=पंडित) गु० अबूझ, मूर्ख, असमझ, अज्ञानी, बेवकूफ,जाहिल।

प्रा० अबूझ (सं० अबुध) गु० मूर्ख, असमझ,अनसमझ,अज्ञानी।

प्रा० अबेर (सं० अवेला,अ=नहीं, वेला=समय) स्त्री० देरी, देर, ढील, विलम्ब, कुवेला।

प्रा० अबोल (अ=नहीं, बोल=बोलना) गु०चुपचाप,अवाक्,खामोश।

सं० अब्ज(अप्=पानी, जन्=पैदा होना) पु० कमल, पद्म, २ चांद, चौदह रत्न जो समुद्र से निकले।

सं० अब्द (अप्=पानी, दा=देना) पु० बादल, मेघ, २ बरस, साल

सं० अब्धि (अप्=पानी,धा=रखना) पु० समुद्र, सागर, सातकी गिनती।

सं० अभय (अ=नहीं, भय=डर) गु० निडर, निर्भय, निधड़क।

सं० अभयदान-भा० पु० शरणदेना, जानबख्शी।

प्रा० अभाग (सं० अभाग्य) पु० बुराभाग, दुर्दशा, खोटी दशा, बद किस्मती।

प्रा० अभागा (सं० अभाग्य) गु० मंदभागी, भाग्यहीन, कमबख्त, अभागी।

सं० अभाग्य (अ = नहीं, भाग्य = भाग) पु० अभाग, बुराभाग, बुरी दशा, दुर्दशा, कुदशा, गु० अभागा, मंदभागी, कमबख़्त ।

सं० अभाव (अ = नहीं, भाव = होना, भू = होना) पु० नहीं होना, नाश, अदमपौजूदगी ।

सं० अभि-उप० पास, को, इच्छा, चाह, बार बार, चारोंओर से, बहुत, साम्हने, ऊपर, अधिक, पहिले ।

सं० अभिख्या-स्त्री० शोभा, सुंदरता, खूबसूरती ।

सं० अभिगमन-भा० पु० निकट जाना, पास जाना ।

सं० अभिजित-पु० नाम नक्षत्र जो उत्तराषाढ़ के चौथे चरण और श्रवण के प्रथम चरण से बनता है, योद्धा, जीतने वाला ।

सं० अभिधान-पु० कोष, शब्दसंग्रह, मानना वा जानना) स्म० पु० चाहाहुआ, मानाहुआ, पसंद कियाहुआ, सम्मत वाञ्छित ।

सं० अभिमर्षण (अभि + मृष् = छूना) भा० पु० सम्भोग, सुहबत परस्त्रीगमन, छूना ।

सं० अभिमान (अभि = ऊपर, आदि क, मन् = जानना) पु० घमंड, अहंकार, मद, दाप, दर्प, गरूर, शेख़ी, अकड़ ।

सं० अभिमानी (अभिमान) कर्० पु० घमंडी, अकड़बाज़, शेख़ीबाज़, अहंकारी ।

सं० अभियुक्त) (अभि = सामने, युज = जोड़ना) स्म० पु० अभियोग्य) प्रतिवादी, मुद्दआअलेह ।

अभियोग पु० नालिश, मुकद्दमा ।

सं० अभियोगी) अभियोक्ता, कर्० अभियोजक) पु० वादी, मुद्दई ।

फ़ा० हिशमन्द, आर्जूमन्द ।

सं० अभिवादन (अभि + वद् = कहना) स्तुति, नमस्कार, बंदगी ।

सं० अभिषिक्त (अभि = सामने, षिक्त, सिच् = सींचना) कर्म० पु० तिलक कियागया ।

सं० अभिषेक (अभि = ऊपर, सिच् = सींचना) भा० पु० राजतिलक देने केसमयका स्नान, २ मंत्र देते समय शिरपर पानीडालना, शान्ति स्नान ।

सं० अभिसन्धान-भा० पु० मिलाप, २ कपट ।

सं० अभिसन्धि-भा० स्त्री० खूबमेल, धोखा ।

सं० अभिसम्पात-पु० संग्राम, युद्ध नाश ।

प्रा० अभी (अब + ही) क्रि० वि० इसी घड़ी, इसी दम, इसी समय, तुरन्त ।

सं० अभीरु (अ = नहीं, भीरु = डरनेवाला) गु० निर्भय, निर्दोष, पु० महादेव, भैरव, शतावरि ।

सं० अभीष्ट (अभि = बहुत, इष्ट = चाहा हुआ, इष् = चाहना) कर्म० पु० चाहा हुआ, बहुत चाहा हुआ, मनमाना, प्यारा, चहीता, पसन्द ।

सं० अभूतपूर्व-कर्म० पु० जैसा कभी पहले नहीं हुआ, अद्भुत, अजीब ।

अभ्यन्तर-गु० भीतरी, अंदरूनी ।

सं० अभेद (अ = नहीं, भेद = छिपीबात) गु० जिसका भेद नहीं जाना जाय, २ जाना हुआ, ३ जो नहीं टूटसके, जिसमे कुछ नहीं घुस सके, पु० मेल ।

सं० अभ्यर्थना (अभि = सामने, अर्थ = मांगना) भा० स्त्री० निवेदन, दरख्वास्त ।

अभ्यस्त-कर्म० पु० आदी, खूगर ।

सं० अभ्यागत (अभि = साम्हने, पास, आगत = आयाहुआ, आ, गम् = आना) पु० पाहुना, अतिथि, मेहमान, गु० आया हुआ ।

सं० अभ्यास (अभि = बारबार, अस् फेंकना, और अभि उपसर्ग के साथ आने से इसका अर्थ दोहराना होता है) पु० साधन, चिंतन, बारबार करना, रव्त, मश्क़ ।

अभ्यासक } क० पु० अभ्यासकरनेवाला ।
अभ्यासी }

अभ्युदय-(अभि + उदय-उत् + इ = जाना) भा० पु० वृद्धि, ऐश्वर्य, हश्मत ।

सं० अभ्र (अभ्र = जाना)पु० बादल, मेघ, २ आकाश, अब्र ।

सं० अमङ्गल (अ = नहीं, मङ्गल = कुशल, कल्याण) गु० अशुभ, बुरा, पु० अकल्याण, अशुभ ।

प्रा० अमचूर (सं० आम्रचूर्ण, आ·

अ=आम, चूर्ण=चूर) पु०सुखाये आम के टुकड़े या फाँक।

सं० अमत-गु० मतरहित, धर्महीन, लामजहब।

सं०अमर (अ=नहीं, मृ=मरना) गु० जो कभी नहीं मरे, अविनाशी, सदा जीता रहने वाला, पु० देवता, २ अमरकोष का बनानेवाला।

सं०अमरपति (अमर=देवता, पति = स्वामी) पु०इन्द्र, देवताओंका राजा।

सं० अमरपुर } सं०अमरलोक } (अमर = देवता, पुर, लोक = जगह) पु०स्वर्ग, बहिश्त।

प्रा०अमराई (सं०आम्रराजि, आम्र=आम, राजि=कतार) स्त्री० आंबों का बाग।

सं० अमरावती (अमर=देवता, वत् =वाली, अर्थात् जिसमें देवता रहते हैं, स्त्री० स्वर्ग, इन्द्र की राजधानी, देव लोक।

प्रा० अमरूत (सं० अमृत) पु० एक भा० पु० क्रोध, असहा, गुस्सा।

सं०अमात्य-पु० भूमिकामंत्री, वजीर-आज़ाजी।

सं०अमल (अ=नहीं, मल=मैल) गु० निर्मल, शुद्ध, साफ़, पवित्र, स्वच्छ।

प्रा० अमलतास-पु० एक औषध का नाम।

सं० अमान (अ=नहीं, मान=गर्व) गु० मानरहित, निरहंकार, बेग़रूर।

प्रा०अमाना (सं० मान, मा=मापना) क्रि०अ० समाना, भरजाना।

सं०अमाय-गु० कपटरहित, बेमक्र।

सं० अमाया-भा० स्त्री० सचाई, दियानतदारी।

प्रा० अमावस } सं०अमावस्या } सं०अमावास्या } (अमा=साथ वस्=रहना, अर्थात् जिसदिन सूर्य और चांद एक राशिमें रहते हैं, अमा सह वसतोऽस्यांचन्द्रार्कौ अमावस्या, अमावास्या) स्त्री० अं

सं० अमुक (अदस्=यह) गु० वह, यह, कोई, अमकाढमका, फलाना, फुलां।

सं० अमूलक (अ=नहीं, मूल=जड़) बेजड़, बेबुनियाद, निर्मूल।

सं० अमृत (अ=नहीं, मृ=मरना) पु० अमी, सुधा, पीयूष, देवताओं का खाना अथवा रस जिसको पीने से अमर होजाते हैं) आबह्यात।

सं० अमोघ (अ=नहीं, मोघ=वृथा, मुह्=अचेतहोना) गु० सफल, सच्चा, फलदाता, जोखालीनजाय, बेखता।

प्रा० अमोल (सं० अमूल्य, अ=नहीं, मूल्य=मोल) गु० अनमोल, उत्तम, बहुतही बढ़िया, अनोखा, अपूर्व।

प्रा० अम्ब, आंब, आम (सं० आम्र, अम्=खाना, जाना) पु० आमकापेड़, आम का फल।

सं० अम्बक (अम्ब्=जाना) पु० आंख, लोचन, नेत्र, नयन।

सं० अम्बर (अवि=शब्दकरना) पु० आकाश, आस्मान २ कपड़ा, वस्त्र, नृपअम्बर=राजाओं के कपड़े, ३ सुगंधित चीज़, ४ अभ्रकधातु।

सं० अम्बा, अम्बिका (अम्ब्=जाना, जोप्यार के साथ अपने लड़के के पास जाती है) स्त्री० मा, माता, जननी, २ दुर्गा, देवी, भगवती, पार्वती, जगज्जननी।

सं० अम्बु (अम्ब्=शब्दकरना) पु० पानी।

सं० अम्बुकण—पु० ओस, शबनम।

सं० अम्बुज (अम्बु=पानी, ज=पैदा हुआ, जन्=पैदा होना) पु० कमल, पदम २ चांद।

सं० अम्बुद (अम्बु=पानी, द=देने वाला, दा=देना) पु० बादल, बद्दल, मेघ, घन, घटा, अभ्र।

सं० अम्बुधि (अम्बु=पानी, धा=रखना) पु० समुद्र, सागर, सिंधु।

सं० अम्बुनिधि (अम्बु=पानी, निधि=जगह वा खज़ाना) पु० समुद्र, सागर, सिन्धु।

सं० अम्बुनाथ (अम्बु=पानी, नाथ=मालिक) पु० समुद्र, सागर।

सं० अम्बुवाह (अम्बु=पानी, वह=ले जाना) बादल, मेघ, अभ्र।

सं० अम्भस (अभि=शब्द करना) पु० पानी, जल, नीर, तोय, वारि।

सं० अम्भोज (अम्भस्=पानी, जन्=पैदा होना) पु० जलज, कमल, पदम।

सं० अम्भोद (अम्भस्=पानी, द=देनेवाला, दा=देना) पु० बादल, मेघ।

सं० अम्भोधर (अम्भस्=पानी, धा=रखनेवाला, धृ=रखना) पु० बादल

सं० अम्भोधि (अम्भस्=पानी, धा=रखना) पु० समुद्र, सागर।

सं० **अम्भोनिधि** (अम्भस्=पानी, निधि=जगह, वा भंडार) पु० समुद्र ।

प्रा० **अम्मा** (सं० अम्बा) स्त्री० मा, माता ।

सं० **अम्ल** (अम्=जाना) गु० खट्टा ।

प्रा० **अम्लि** (सं० अम्ल=खट्टा) स्त्री० इमली, अमली, चिंचा ।

प्रा० **अय** (सं० अयस् इ=जाना) पु० लोहा, शोग, नेम से पुकारनेके लिये संबोधन, यह ।

सं० **अयन** (अय्=जाना) पु० मार्ग, रस्ता, २ चाल, ३ आधा बरस, विषुवत् रेखा के उत्तर वा दक्षिण की ओर सूर्य का रस्ता, ४ घर, स्थान ।

सं० **अयश** (अ=नहीं, यश=नामवरी) पु० अपयश, बुराई, बदनामी, अपकीर्ति ।

प्रा० **अयशी** (सं० अयशस्वी) गु० बदनाम ।

प्रा० **अयाना** (सं० अज्ञान) गु० मूर्ख, अबूझ, अनसमझ, भोला ।

सं० **अयुक्त** (अ=नहीं, युक्त=ठीक) गु० अनुचित, अयोग्य, अनरीत,

ना) स्त्री० अवध, सूर्यवंशियों की राजधानी जोसरयू नदीके तीरपरहै ।

प्रा० **अरई** / **अरवी** } स्त्री० बड़ा, कंदा, एक तरकारीकानाम घुइयाँ कचू ।

प्रा० **अरगजा**-पु० सुगंधित चीज ।

प्रा० **अरगा** (सं० अलग्न, अ=नहीं, लगि=मिलना) गु० अलग, अलगा, जुदा, न्यारा, भिन्न ।

प्रा० **अरगाई** / **अलगाई** } गु० अलग, चुप ।

प्रा० **अरगाना** (सं० अलग्न) क्रि० स० अलग करना, जुदा करना ।

प्रा० **अरझना**-क्रि० अ० उलझना, फंसना, बझना ।

प्रा० **अरणा** (सं० आरण्य=जंगली) पु० जंगली भैंसा ।

सं० **अरणि** (ऋ=जाना) स्त्री० एक तरह की लकड़ी जिसको घिसकर होम करने के लिये आग निकालते हैं आग पजनेकी लकड़ी ।

सं० **अरण्य** (ऋ=जाना) पु० बन, जंगल ।

रों ओर से, ढौकृ=जाना) पु० अहर, तूर, एक प्रकार का नाज जिस की दाल होती है।

सं० अराति (अ=नहीं, रा= देना, जो सुख नहीं देता) पु० वैरी, शत्रु, दुश्मन।

प्रा० अराधना (सं० आराधन) क्रि० स० पूजना, सेवा करना, मंत्र जपना।

सं० अरि (ऋ=जाना) पु० वैरी, शत्रु, दुश्मन, अराति।

सं० अरिष्ट (रिष्=हिंसा करना) गु० अशुभ, पु० विघ्न, कौआ, वृषभासुरदैत्य, नींबवृक्ष।

प्रा० अरहू (सं० भ्रू०) स्त्री० तिउरी, भृकुटी।

प्रा० अरु-समुच्चय, और, फिर।

सं० अरुचि-- भा० स्त्री० नफ़रत, घृणा, अनिच्छा।

सं० अरुण (ऋ=जाना) पु० सूर्य २ सूर्य का सारथी, ३ सूर्य का रथ, ४ सिंदूर, कुंकुम, गु० लाल।

अरुणचूड
अरुणशिखा } पु० मुर्गा, कुक्कुट।

प्रा० अरुणाई (सं० अरुणता, अरुण=लाल) स्त्री० ललाई, विहान की ललाई, सुर्खी।

सं० अरुणोदय (अरुण=सूर्य, उदय=निकलना) पु० भोर, तड़का, विहान।

सं० अरुणोपल (अरुण=लाल, उपल=पत्थर) पु० लाल, चुन्नी, पद्मराग २ लाल पत्थर।

सं० अरुन्तुद (अरु=मर्मस्थल, तुद=काटना) क्लेशकारक, मर्मछेदक।

सं० अरुन्धती- स्त्री० वशिष्ठ मुनि की स्त्री।

सं० अरूप (अ=नहीं, रूप=डौल) गु० निराकार, २ कुरूप, भोंड़ा, कुडौल।

सं० अरोग (अ=नहीं, रोग=बीमारी) गु० भलाचंगा, निरोग, अच्छा।

सं० अर्क (अर्च=पूजना, वा, अर्क=गर्म होना) पु० सूर्य, २ अकवन, आक, मदार।

सं० अर्गल-पु० बिलाई, जंजीर, बेलहन।

सं० अर्घ (अर्ह=पूजना, वा अर्घ=मोल होना) पु० आठ चीज मिलाकर ईश्वरको अथवा सूर्य चांद आदि देवता के लिये अर्पण करना, पूजा में सूर्य चांद आदि देवताओं को पानी देना, २ मोल, क़ीमत।

प्रा० अर्घा (सं० अर्घ) पु० अर्घ देने का बरतन जो नाव के आकार बनता है।

सं० अर्चक (अर्च=पूजना) पु० पूजनेवाला, पुजारी, सेवक।

प्रा० अर्चना (सं० अर्चन) क्रि० स० पूजना, पूजाकरना, स्त्री० पूजा।

सं० अर्चा (अर्च् = पूजना) भा० स्त्री० पूजा, सेवा, आराधना।

सं० अर्चित (अर्च् = पूजना) कर्म० पु० पूजाकिया हुआ, सेवा किया हुआ।

सं० अर्जन (अर्ज् = इकट्ठा करना) भा० पु० इकट्ठा, कमाई, संग्रह, संचय।

सं० अर्जुन (अर्ज् = इकट्ठा करना, या जीतना) पु० पाण्डु का तीसरा बेटा, युधिष्ठिर का भाई जो इन्द्र के अंश से पैदा हुआ, २ एक पेड़ का नाम, श्वेत, दिशा।

सं० अर्णव (अर्णस् = पानी, व = जाना) पु० समुद्र, सागर।

सं० अर्थ (अर्थ् = मांगना, वा ऋ = जाना) पु० अभिप्राय, मतलब, तात्पर्य, कारण, प्रयोजन, विचार, इरादा, मनोरथ, लिये, वास्ते, निमित्त, २ धन, मुनाफा।

सं० अर्थकारी (अर्थ + कृ = करना) कर्० पु० कार्यसाधक, उपयोगी, मुफ़ीद।

प्रा० अर्दावा - पु० मोटा आटा, दलिया।

सं० अर्दित (अर्द् = पीड़ित होना) कर्म० पु० दुःखित, कठिन, मुसीबतज़दा।

सं० अर्द्ध (ऋध् = बढ़ाना) गु० आधा।

सं० अर्द्धचन्द्र (अर्द्ध = आधा, चन्द्र = चांद) पु० आधाचांद, चंद्र, बिंदु।

सं० अर्द्धनिमेष - पु० आधापल, आधाक्षण।

सं० अर्द्धवन्य - गु० नीमवहशी।

सं० अर्द्धरात्र (अर्द्ध = आधी, रात्रि = रात) स्त्री० आधीरात।

सं० अर्द्धांग (अर्द्ध = आधा, अंग = शरीर) पु० आधा शरीर, २ पक्षाघात, शीतांग, एक बीमारी जिसमें आधा अंग रहजाता है।

सं० अर्द्धांगी (अर्द्धांग) स्त्री० लुगाई, स्त्री, नारी, पत्नी, गु० पक्षाघाती।

सं० अर्पण (ऋ = जाना) पु० देवता को भेंटदेना, भेंट, दान, समर्पण, नज़र।

प्रा० अर्पण करना / अर्पना (सं० अर्पण) क्रि० स० भेंट

सं० अर्भ } (ऋ=जाना) पु० लड़का
अर्भक } बालक, पुत्र, शिशु, गु०
छोटा ।

प्रा० अर्राटा-पु० बड़ाभारीशब्द,
मकान आदि के गिर पड़ने का
शब्द, अथवा बाण वा गोलेकाशब्द ।

सं० अर्वाचीन-गु० नया, जदीद ।

सं० अर्हन्त (अर्ह्=पूजना) पु० बौ
धमती, जैन, २ जैनियों के एक
मुनि का नाम ।

सं० अलक (अल्=संवारना) स्त्री०
घूंघरवाले बाल, जुल्फ़, लटूरी, लटें,
घूंघरेबाल, अंगूठिये बाल ।

सं० अलका-स्त्री० कुबेरपुरी, दश
वर्षकी कन्या ।

सं० अलकावलि (अलक=घूंघरवाले
बाल, आवलि=पांत) स्त्री० वेणी,
घूंघरवाले बाल, जुल्फ़, घूंघरे बाल,
अंगूठिये बाल ।

प्रा० अलक्षि (सं० अलक्ष्मी) गु०
धनहीन, दरिद्री, कंगाल, मुफलिस ।

सं० अलक्ष्य (अ=नहीं, लक्ष् देखना)
र्म० पु० अलख, अगोचर, जो देख-
ने में नहीं आवे ।

प्रा० अलख (सं० अलक्ष्य) गु०
न देखा, अगोचर, जो देखने में
नहीं आवे ।

प्रा० अलखित (सं० अ=नहीं, लक्षित
=देखा गया) र्म० पु० नहीं देखा,
नहीं जाना गया, बेपता, अबूझा ।

प्रा० अलग } (सं० अलग्न, अ=
अलगा } नहीं, लग्न=लगा हु
आ, लग्=मिलना) गु० जुदा, अर
गा, न्यारा, भिन्न, अलहदा ।

प्रा० अलगाना (सं० अलग्न) क्रि०
स० जुदा करना, अलग करना
न्यारा करना, भिन्न २ करना ।

सं० अलङ्कार (अलम्=शोभा, कार=
करना, कृ=करना) पु० गहना,
भूषण, शोभा, आभरण, २ साहित्य
शास्त्र का एक भाग कविताका गुण
दोष बताने वाला ग्रंथ, शब्दभूषण
सनअत ।

सं० अलंकृत (अलम्=शोभा, कृ=
करना) र्म० शोभायमान, शोभित,
भूषित, संवारा हुआ, सुधाराहुआ,
बनाया हुआ, मुज़ैयन ।

प्रा० अलङ्ग स्त्री० ओर, तर्फ, छोर,
पार—इसअलङ्ग=इसओर, इसपार ।

प्रा० अलता (सं० अलक्त, अ=नहीं,
रक्त=लाल अर्थात् जिससे अधिक
और कोई लाल नहीं यहां र को ल
होगया है) पु० लाखके रंगमें खूब
गहरी रंगी हुई रुई जिससे स्त्रियां
हाथ पैर रचाती हैं, महौरी ।

प्रा० अलबेला-गु० छैला, बांका,
छैल छबीला, छैल चिकनिया ।

सं० अलम् (अल्+अम्) अव्य०,

भूषण, योग्य, निषेध, निवारण, अवधारण, पूरा, सब, काफी, बेफायदा, बस, फकत ।

सं॰ **अलभ्य** (अ=नहीं, लभ्=मिलना) गु॰ पु॰ जो मिल न सके, दुर्लभ, अप्राप्य, नायाब ।

प्रा॰ **अलान** (सं॰ आलान) स्त्री॰ हाथी के बांधनेकी रस्सी, जंजीर आदि ।

प्रा॰ **अलाप** (सं॰ आलाप) भा॰ पु॰ राग, तान, स्वर, २ बातचीत, बोल चाल ।

प्रा॰ **अलापना** / **आलापनौ** (सं॰ आलाप) क्रि॰ अ॰ सुरपिलाना, राग छेड़ना, गाना, तान छेड़ना ।

प्रा॰ **अलापी** (अ=बहुत, लप=कहना) कहने वाला, बकने वाला, गुल मचाने वाला ।

प्रा॰ **अलाव**-पु॰ धूनी ।

सं॰ **अलि** / **अली** (अल=समर्थ होना, भ-वांन डंक मारनेमें और लना वा गलना) अयोग्य, हराम, नाजायज़ ।

प्रा॰ **अलीहा** (सं॰ अलीक) गु॰ झूट, मिथ्या, दरोग ।

प्रा॰ **अलैया बलैया** (सं॰ अलि=काग, बलि=बलिदेना) स्त्री॰ निछावर ।

प्रा॰ **अलोना** (सं॰ अलवण, अ=नहीं लवण=निमक) गु॰ बिन लोन का, बे सवाद, फीका ।

सं॰ **अलोभ** (अ=नहीं, लोभ=लुभ=चाहना) गु॰ निर्लोभ, संतुष्ट, बेतमअ ।

प्रा॰ **अलोला**-गु॰ नासमझ, बे अकल, स्थिर, बेहरकत ।

सं॰ **अलौकिक** (अ=नहीं, लौकिक=संसार का) गु॰ अनोखा, अद्भुत, जो इसलोक का नहीं परलोकका ।

सं॰ **अल्प** (अल्=समर्थ होना, पा=रोकना) गु॰ थोड़ा, तुच्छ, छोटा, कमीन ।

सं० अवकाश (अव=बीचमें,काश्=चमकना) पु० औसर, सुबीता,सावकाश, फुरसत, बीचका समय।

प्रा० अवगाहना (सं० अवगाहन, अव+गाह्=मथना) क्रि० स० मथना, थाहपाना, २ न्हाना।

सं० अवगुण (अव=बुरा, गुण) पु० दोष, खोट, औगुण।

सं० अवग्रह (अव=नीचे, ग्रह=पकड़ना) भा० पु० रुकावट, रोक, २ समास के पदों का विभाग ३ हाथियों का झुंड ४ आँकुश।

सं० अवज्ञा (अव्=बुरा, ज्ञा=जानना) स्त्री० अनादर, अपमान, २ घिन, नफ़रत।

सं० अवतंस (अव=निश्चय, तंस=शोभना) पु०गहना, भूषण,२ कान का गहना, झुमका, कर्णफूल।

प्रा० अवतरना (सं० अवतरण,अव=नीचे, तृ=पार होना) क्रि० अ० अवतार लेना, उतरना विष्णु का अवतार लेना।

सं० अवतार (अव=नीचे, तृ=पार होना) भा० पु० जन्म, प्रकट, उत्पन्न, विष्णुका जन्म लेना, विष्णु के चौबीस अवतार हैं उन में से दश अवतार बहुत प्रसिद्ध हैं, जैसे १ मत्स्य, २ कच्छप, ३ वराह, ४ नृसिंह, ५ वामन, ६ परशुराम, ७ रामचन्द्र, ८ श्रीकृष्ण, ९ बुध, १० कल्की।

सं० अवदान (अव्=नीचे, दा=काटना) भा० पु० वध, कत्ल, मारडालना, पराक्रम, उल्लंघन।

प्रा०अवदीच (सं० उदीचि=उत्तर दिशा, उत्=ऊपर, अञ्च्=जाना) पु०गुजराती ब्राह्मणो की एकजात।

सं० अवद्य (अ=नहीं, वद्य=कहने योग्य, वद्=कहना) पु० पाप, दोष, अपराध, गु०नीच, पापी, निंदा करने के योग्य, नहीं कहने योग्य।

प्रा० अवध (सं०अवधि, अव=दूर धा=रखना) स्त्री० वचन, सीमा सींव २ समय, मुद्दत ३ (सं० अयोध्या) पु० अवध देश, ४ (सं० अवध्य, अ=नहीं,वध्य=मारने योग्य वध्=मारना) गु० नहीं मारने योग्य

सं० अवधान (अव + धा=रखा) भा० पु० कृपा, दया, तवज्जुह।

प्रा०अवधारी-पु० निश्चय किया गया, सोचा गया।

सं० अवधीर्य-धा०अव्य०विचारकर सोचकर।

सं०अवधीरित-र्म०पु०अनादृत,अपमानित, गफलतकीगई,जायाकीगई।

सं०अवनति (अव=नीचे, नति-नम्=झुकना) भा० स्त्री० घटती, तनज्जुली, उतार।

सं० अवनि } (अव्=बचाना) स्त्री०
अवनी } धरती, पृथ्वी, ज़मीन, भूमि।

सं० अवनिकुमारी (अवनि=धरती, कुमारी=बेटी) स्त्री० सीता, जानकी, जनक राजा यज्ञके लिये धरती जोतते थे उस समय धरती में से एक घड़ा निकला उसमें से सीता जी निकलीं (इसका पूरा वर्णन रामचरित में देखो)।

सं० अवनिप (अवनि=पृथ्वी, पा=रक्षाकरना) क० पु० राजा, बादशाह।

सं० अवनिपरमणि— स्त्री० रानी, पत्निका।

सं० अवनीत (अव=नहीं, नी=लेजाना) क० पु० [illegible], बदचलन, बदसलीका, कुमार्गी।

सं० अवनीश } (अवनि=धरती,
अवनीश्वर } ईश वा ईश्वर=राजा) पु० राजा, महाराजा, राजाधिराज।

सं० अवन्ति (अव्=बचाना) स्त्री० मालवा देश।

सं० अवन्तिका (अव्=बचाना) स्त्री० मालवा देशकी राजधानी उज्जैन, सात पवित्र पुरियों में की एक पुरी, [illegible] अयोध्या, मथुरा, माया=हरद्वार, काशी, कांची, अवन्तिका, पुरी।

सं० अवयव [illegible]

सं० अवराधक (अव=निश्चयही, राध्=पूराकरना) क० पु० सेवक, सन्त, आराधना करनेवाला, आबिद।

प्रा० अवराधना (सं० अवराधन) भा० स्त्री० सेवा, खिदमत।

प्रा० अवरेख— स्त्री० लेख, लकीर, गिनती, शुमार।

सं० अवरोध (अव, रुध्=रोकना) पु० रोक, रुकाव, अटकाव, २ रनिवास।

प्रा० अवर्त (सं० आवर्त) पु० पानी का चक्कर, भंवर, गिर्दाब।

सं० अवलम्ब } (अव, लबि=ठहर-
अवलम्बन } ना) क० पु० सहारा, आसरा, आधार, आड़।

प्रा० अवली (सं० आवलि) स्त्री० पांत, पंक्ति, लकीर।

सं० अवलेह (अव+लिह=चाटना) पु० चाटना, चटनी।

सं० अवलोकन (अव, लोक=देखना) भा० पु० दृष्टि, दीठ, नज़र, देखना, दर्शन, मुलाहिज़ा करना।

प्रा० अवलोकना (सं० अवलोकन) क्रि० स० देखना।

सं० अवश (अ=नहीं, वश=[illegible]) [illegible]

सं० अवशिष्ट (अव+[illegible]) [illegible]

सं० अवशेष— [illegible]

सं० अवश्य (अव=निश्चयही, श्यै=जाना) क्रि० वि० निश्चय ही चाहिये, जरूर।

सं० अवश्यक (अवश्य) गु० जरूरी।

सं० अवश्यकता (अवश्य) स्त्री० जरूरत, प्रयोजन, निश्चय।

सं० अवसर (अव=निश्चय, सृ=जाना) पु० औसर, अवकाश, समय, मौका, विराम, ठहराव।

सं० अवसन्न (अव+सन्न, सद=बैठना) क० पु० थकाहुआ, गिरा हुआ, समाप्त, उदास, ग़मगीन, हारा हुआ।

सं० अवसान (अव, सों=नाश करना) पु० अन्त, समाप्ति, मौत, २ हद्द।

प्रा० अवसेरी—स्त्री, देर, प्रत्याशा, इन्तिज़ारी।

सं० अवस्था (अव, स्था=ठहरना) स्त्री० दशा, उमर, आयुर्दा, हालत।

सं० अवस्थित—क० पु० ठहराहुआ, मुक़ीम।

सं० अवहित (अव + हित, धा=रखना) मनोयोगी, सावधान, मुतवज्जेह, २ प्रख्यात, मशहूर।

प्रा० अवाई (आना) स्त्री० आने की खबर, आना, २ मेलखोरा वा ज़ीनपोश झालर समेत।

सं० अविकारी (अ=नहीं, विकार=दोष) क० पु० विकाररहित, बेऐब।

सं० अविगत (अ + वि + गत—गम्=जाना) क० पु० व्यापक, सब जगह मौजूद।

सं० अविचल (अ=नहीं, विचल=चलना) गु० अचल, अटल, जो चले नहीं, दृढ़, मज़बूत।

सं० अविद्या (अ=नहीं, विद्या=ज्ञान) स्त्री० अज्ञान, मूर्खपन, २ माया।

सं० अविनय (अ + वि + नी=ले जाना) भा० पु० ढिठाई, शोख़ी बे अदबी।

सं० अविनाशी (अ=नहीं, विनाशी=नाशहोनेवाला, नश्=नाशहोना) गु० जिसका कभी नाश नहो, सदा रहने वाला परमेश्वर।

सं० अविरल (अ=नहीं, विरल=महीन, विल्=ढकना, छिपाना) गु० गहरा, गाढ़ा, मोटा, निबिड़, निरन्तर, सदा, हमेशा।

सं० अविरोध (अ + वि + रोध, रूध=रोकना) भा० पु० मेल, इत्तिफ़ाक़, सम्मति।

सं० अविवेक (अ=नहीं, विवेक=विचार) पु० अज्ञान, अविचार, मूर्खपन, बे तमीज़ी।

सं० अविवेकता-भा० स्त्री० अज्ञानपन, बेतमीज़ी, जिहालत।

सं० अविवेकी (अविवेक) क० पु० अज्ञानी, मूर्ख, नहीं विचारने वाला, बेतमीज़।

सं० अव्यक्त (अ=नहीं, व्यक्त=प्रकट) सं० पु० अप्रकट, अदृश्य, छिपाहुआ, पु० विष्णु, परमेश्वर ।

सं० अव्यय (अ=नहीं, व्यय=नाश, वा खर्च) पु० व्याकरणमें ऐसा शब्द जो किसी तरहसे बदलता नहीं वैसाही बनारहता है, जैसे, और, अथवा, फिर, पुनि, आदि, २ विष्णु, परमेश्वर, गु० अविनाशी २ कृपण, कंजूस ।

सं० अव्यवस्थित (अ=नहीं, व्यवस्थित=अचल) गु० चंचल, उतावला, अचेत, बेहोश, २ अनुचित, तितर बितर ।

सं० अव्याहत (अ=नहीं, व्याहत=निराश, वि, आ, हन=मारना) सं० पु० जो नहीं रोकाजाय, आज्ञावान ।

सं० अशकुन (अ=नहीं, वा बुरा, शकुन=सगुन) पु० बुरे सगुन, अपसगुन ।

सं० अशक्त (अ=नहीं, शक्त=समर्थ) सं० पु० निर्बल, कमजोर, दुबला, असमर्थ ।

सं० अशक्य (अ=नहीं, शक=सकना) असमर्थ, [illegible] जो नहीं

सं० अशिक्षित (अ=नहीं, शिक्षित=सीखाहुआ, शिक्ष=सीखना, सिखाना) गु० अनसीखा, मूर्ख ।

सं० अशित (अश्=खाना) सं० पु० खायाहुआ, भुक्त, खुर्दा ।

सं० अशिव (अ=नहीं, शिव=शुभ) गु० अशुभ, अमंगल, बुरा ।

सं० अशुद्ध (अ=नहीं, शुद्ध=पवित्र) गु० अपवित्र, ठीक नहीं, गलत ।

सं० अशुद्धता—भा० स्त्री० भूल, गलती, गलत फहमी, नापाकी ।

सं० अशुभ (अ=नहीं, शुभ=अच्छा) गु० बुरा, अमंगल, पु० बुराई, आपदा, दुःख ।

सं० अशुभचिन्तकता भा० स्त्री० बुरा सोचना, बदअंदेशी ।

सं० अशोक (अ=नहीं, शोक=शोच) पु० सुख, चैन, आराम, २ एक वृक्ष का नाम, गु० मगन, चैनसे, [illegible] बेफिकर ।

सं० अश्म } पु० पत्थर ।
अश्मन् }

[illegible]

सं० अश्वमेध (अश्व=घोड़ा, मेध=यज्ञ) पु० घोड़े का यज्ञ, एक प्रकार का यज्ञ जिसमें घोड़ा होमा जाताहै।

सं० अश्ववार (अश्व=घोड़ा, वृ=पसंद करना वा ढकना) पु० सवार, घुड़चढ़ा।

सं० अश्वशाला (अश्व=घोड़ा, शाला=जगह)स्त्री० घुड़साल, घोड़ों का तबेला।

सं० अश्व शिक्षक-क० पु० चावुक सवार।

सं०अश्वसेवक-क० पु० साईस।

सं० अश्विनी (अश्व=घोड़ा,अर्थात् जिस का आकार घोड़े के शिरसाहै) स्त्री० एक नक्षत्र का नाम, पहला नक्षत्र।

सं० अश्विनीकुमार (अश्विनी=घोड़ी, कुमार=बेटा, अर्थात् सूर्य की स्त्री एक वार घोड़ी का रूप बन गई थी तब घोड़े का रूप सूर्य बना था उस समय के पैदा हुए दो लड़कों का नाम अश्विनी कुमार है) पु० देवताओं के वैद्य।

सं० अषाढ़ (अषाढ़ा, एक नक्षत्र का नाम जो इस महीने की पूर्णमासी को होता है और इस महीने में पूरा चांद इस नक्षत्र के पास रहता है) पु० बरस का तीसरा महीना।

सं० अष्टधातु (अष्ट=आठ, धातु=धात) स्त्री० आठ भांति की धातु जैसे १ सोना, २ रूपा, ३ तांबा, ४ पीतल, ५ रांगा, ६ कांसा, ७ सीसा, ८ लोहा

प्रा० अष्टधाती (सं० अष्टधातु) गु० आठ धात का बना हुआ।

सं० अष्टमी (अष्टम=आठवां,अष्ट=आठ) स्त्री० पक्षकी आठवीं तिथि।

सं० अष्टसिद्धि (अष्ट=आठ, सिद्धि मन का मनोरथ) स्त्री० आठ प्रकार की सिद्धि १ अणिमा बहुत छोटा बन जाने की शक्ति, २ महिमा बहुत बड़ा बन जाने की शक्ति, ३ लघिमा हलका बन जाने की शक्ति, ४ प्राप्ति चाहे जितनी दूर पर जो चीज़ हो उसको ले लेनेकी शक्ति, ५ प्राकाम्य चाहे जैसे मनोरथको पूराकरना ६ ईशित्व ऐश्वर्यरखना, ७ वशित्वसबके वशकरनेकीशक्ति, ८कामावसायिता सांसारिक सारी इच्छा को पूरा करना अर्थात् किसी बात की इच्छा नहीं रखना " अणिमा लघिमा प्राप्तिः प्राकाम्य महिमा तथा। ईशित्वंच वशित्वंच तथा कामावसायिता ॥ १ ॥

सं० अष्टांगप्रणाम (अष्टाङ्ग=आठ अंग, प्रणाम=नमस्कार) पु० आठ अंगों से दंडवत् करना अर्थात् १ हाथों २ पैरों ३ जांघ ४ हिरदा ५ आंखों ६ शिर ७ वचन ८ मन से प्रणाम करना।

चेत, बेसुध, बेसुरत, बेखबर, गाफिल।

सं० असावधानी-भा० स्त्री० बेचौकसाई, बेखबरी, गफलत।

सं० असि (अस् = फेंकना, वा चमकना) स्त्री० तलवार, खांड़ा, खड्ग, शमशीर।

सं० असित (अ=नहीं, सित = धौला) गु० काला, कृष्ण पक्ष।

सं० असिद्ध (अ=नहीं, सिद्ध=पूरा) गु० अधूरा, अनबना, २ बिनपका, ३ झूठ, झूठा।

सं० असिद्धता- भा० स्त्री० नाकामयाबी, झुठाई।

प्रा० असीस } (सं० आशिस) स्त्री०
आसीस } आशीर्वाद, दुआ।

सं० असु (अस्=फेंकना) भा० पु० प्राण, श्वास, रूह, जान।

सं० असुर (सं० अस्=फेंकना, जो देवताओं को फेंकते हैं) पु० दिति के बेटे, राक्षस, दैत्य, दानव।

सं० असुरसेन, गयातीर्थ।

सं० असूयक (असू+य्+ अक्, असू=निरादरकरना) क० पु० निन्दक, चुगुलखोर, बुराई बतलाने वाला।

सं० असूया-भा० स्त्री० गुण में दोष लगाना, ऐब जोई करना, निन्दा करना।

अं० असोसियेशन्=मेल, सभा, समाज, मजलिस।

सं० अस्खलित (अ=नहीं, स्खल्=गिरना) र्म० पु० अच्युत, अपतित।

सं० अस्त (अस्=फेंकना) पु० सूर्य का छिपना वा डूबना, गुरूबहोना।

प्रा० अस्तहोना- क्रि० अ० बोल० सूर्य का डूबना, सूर्य छिपना।

सं० अस्तव्यस्त (अस्=फेंकना) गु० तित्तर बित्तर, जुदा जुदा, उलटा पुलटा, तीन तेरह, इधरउधर, जहांतहां, छिन्नभिन्न, तहोबाला।

सं० अस्ताचल (अस्त=सूर्यडूबना, अचल=पहाड़) पु० पश्चिम की ओर एक पहाड़ जहां हिन्दूलोग मानतेहैं कि सूर्य डूबता है।

सं० अस्ति स्त्री० विद्यमान, मौजूद।

प्रा० अस्तुत } सं० (स्तुति) स्त्री० स-
अस्तुति } राह, तारीफ, प्रशंसा, भजन।

सं० अस्त्र (अस्=फेंकना) पु० ऐसा हथियार जिसको फेंकके मारें जैसा बाण तोपका गोला आदि, २ तलवार आदि सब हथियारों कोभी कभी कभी अस्त्र कहते हैं।

सं० अस्थि (अस्=फेंकना) पु० हाड़, हड्डी।

प्रा० अस्सी (सं० अशीति) पु० चारबीसी।

सं० अहमिति-स्त्री० अहंकार, अभिमान, गरूर, खुदी।

सं० अहंकार (अहम्=मैं, कार=करनेवाला, कृ=करना) पु० घमंड, अभिमान, अकड़पकड़, गर्व, मद, ऐंठ, मरोड़, शेखी।

सं० अहङ्कारी (अहंकार) पु० घमंडी, अकड़बाज, अकड़ैत, शेखीबाज, अभिमानी।

सं० अहन-पु० दिन, रोज, अहर।

सं० अहर्निशि-स्त्री० रातदिन, शबरोज।

सं० अहल्या (अहल्य, अ=नहीं, हल=हल जोतना) स्त्री० गौतम ऋषिकी स्त्री।

प्रा० अहार (सं० आहार) पु० खाना, भोजन।

प्रा० अहाहाहा (अहह, अहम्= सं० अहह। ह,हा=छोड़ना) वि० बो० घबराना, दुख, और खुशी आदिको जतलाने वाला शब्द, ओहो, आहहाह।

चलना, जाना) स्त्री० सांपकीचाल, टेढ़ीचाल, कजरफतारी।

प्रा० अहिछार (सं० अहिक्षार) पु० सांप का विष।

सं० अहित (अ=नहीं, हित=प्यार, भला) पु० बैरी, शत्रु, बैर, विरोध।

सं० अहितकारी (अ=नहीं, हित=भलाई, कारी=कृ=करना) क० पु० अप्रियकरनेवाला, बुराईकरनेवाला।

सं० अहिनी-स्त्री० सांपिन, सर्पिणी।

सं० अहिपति (अहि=सांप, पति=मालिक) पु० सांपोंकाराजा, शेषजी, २ वासुकि।

सं० अहिफेन-पु० अफीम।

प्रा० अहिवात (सं० अविधवा पति, पति=ई०,पति = धनी,स्वामिन्) पु० सुहाग,पति के जीने का चिह्न।

सं० अहीन (अहि=सांप,इन=मालिक) पु० सांपोंका राजा, शेषनाग, वासुकि।

भा, वड़ा, सराह आदि अर्थों में बोले जाते हैं।

प्रा० अहेर (सं० आखेट) स्त्री० शिकार, मृगया, आखेट।

प्रा० अहेरिया } अहेरी } (सं० आखेटकी) पु० शिकारी, बहेलिया, आखेटकी।

प्रा० अहो (सं० अहः वि० बो० आश्चर्य, तअज्जुब, कष्ट, हर्ष, दुःख।

सं० अहोरात्रि (अहन्=दिन, रात्रि =रात) क्रि० वि० रात दिन, दिन रात।

आ

सं० आ, वि० बो० हाय, आह, दुख अथवा दयाको जतलानेवाला शब्द।

सं० आ, उपस० से, (जैसे आकुमार म्=बालकपन से) २ तक, तलक, लग, लोंड़ी, (जैसेआ गोपाल=ग्वाल तक, अथवाआमरणम्=मरनेतक, ३ चारों ओर से, ४ कुछ, कुछेक, हा, (जैसे आपीत=कुछेक पीला, अथवा पीलासा) ५ पहले, ६ वाक्यके उलटे अर्थ से।

सं० आ-उ० शिव, महादेव, २ ब्रह्मा।

प्रा० आंक (सं० अङ्क) पु० अङ्क, संख्या, रकम, २ चिन्ह, निशान, ३ वस्तुके आनाका चिन्ह जिससे उस का मोल जाना जाता है, निश्चय।

प्रा० आंकना (सं०-अङ्कित करना) क्रि० स० जांचना, परखना, २ मोल करना, मोल ठहराना, ३ चिह्न करना।

प्रा० आंकुश (सं० अंकुश) पु० अंकुश, आंकड़ी, लोहेका कांटा जिससे हाथी को चलाते है।

प्रा० आंकुश मारना- बोल० वश करना।

प्रा० आंख (सं० अक्षि) स्त्री० नेत्र, नयन, चक्षु, चषु।

प्रा० आंखआना- बोल० आंख में जलन होना, आंख लाल होजाना।

प्रा० आंखखटकना- बोल० आंख दुखना, आंखमें दर्द होना।

प्रा० आंखचढ़ाना- बोल० क्रोधकरना, गुस्सा करना, २मस्तहोना, मतवालाहोना, नशेमें होना।

प्रा० आंख चीर चीर के देखना बोल० खूब ध्यान लगाके देखना, २ अथवा क्रोध से देखना।

प्रा० आंखचुराना-बोल० ध्यान नहीं देना, २शर्मसे आंख फेरलेना, ३ किसी से आंख बचाना।

प्रा० आंखछिपाना-बोल०किसी बुरे कामके करने से लजाना।

प्रा० आंख ठंढी करना-बोल० मित्रों के मिलने से प्रसन्न होना, प्रसन्नहोना।

प्रा० आंखडबडबाना-बोल० आंखों में आंसू भरआना।

प्रा० आंखदिखाना } बोल० धमकाना, घुरकना।
आंखदिखलाना }

प्रा० आंखपथराना-बोल० चकाचौंधा होना, चौंधियाना।

प्रा० आंखफड़कना-बोल० आंख फड़कना, आंखके पपोटों का हिलना (जब कि पुरुषकी दाहिनी और स्त्री की बाईं आंख फड़कती है तो हिन्दू लोग उसको अच्छा सगुन मानते हैं और सोचते हैं कि कुछ अच्छा होनेवाला है पर जब पुरुष की बाईं और स्त्री की दाहिनी आंख फड़कती है तब सोचते हैं कि कुछ बुरा होनेवाला है)।

मुंह मोड़ना, दूसरेकी खबर न लेना, २ मरना।

प्रा० आंखबचाना-बोल० आंखचुराना, आंख बराबर न कर सकना, शर्माना।

प्रा० आंखभरके देखना-बोल० किसी अनोखी चीजको खूबदेखना कि संतोष होजाय।

प्रा० आंखभरलाना बोल० आंखों में आंसू भरलाना, आंखडबडबाना, रोनी सूरत बनाना।

प्रा० आंखमारना-बोल० आंखमटकाना, सैनकरना, इशारा करना, अनाकानी करना।

प्रा० आंख मिचजाना-बोल० मरना, सरजाना।

प्रा० आंखमिचौवल } (आंख मिचौनी-
प्रा० आंखमिचौनी } [illegible]

के देखने से उसके प्रेमके वशहोना ।

प्रा० आंखलड़ाना- बोल० आंख मारना, सैन करना, इशाराकरना, २ छिपी बात को इशारों से जतलाना ।

प्रा० आंखलालकरना- बोल० क्रोध करना, खिसियाना, गुस्सा करना ।

प्रा० आंखसेंकना-बोल० किसी के रूपको अथवा सुन्दरताको देखना ।

प्रा० आंखसे गिरना-बोल० हलका होना, तुच्छ होजाना, बेकदर होना ।

प्रा० आंखें नीली पीलीकरना- बोल० बहुत गुस्से से मुंह का रंग बदलना ।

प्रा० आंखोंपरबैठना-बोल० प्यारा होना, ऊंचा बैठना, प्रतिष्ठित होना, आंखों में जगह पाना ।

प्रा० आंखों में आना- बोल० नशे में होना, मदिरा के नशे मे मस्त होना ।

प्रा० आंखोंमें घर करना- बोल० प्यारा होना, प्रतिष्ठित होना ।

प्रा० आंखोंमें चरबीछाना-बोल० धनके मदसे घमंड करके अपने पुराने मित्रों को नहीं पहँचानना, जानबूझके अन्धा होना ।

प्रा० आंखोंमें फिरना, आंखों में बसना } बोल० सदा यादरहना, मन में सदा किसी का ध्यान बँधा रहना ।

प्रा० आंखोंमेंरातकाटना, आंखोंमेंरातलेजाना } बोल० सब रात जागते बिताना ।

प्रा० आंग (सं० अङ्ग) पु० शरीर, देह, अंग, शरीर का एक भाग ।

प्रा० आंगन, आंगना } (सं० अङ्गन) पु० चौक, अंगनाई, सहन ।

प्रा० आंच-स्त्री० गरमी, आग का लूका, भभूका ।

प्रा० आंचर, आंचल } (सं० अंचल) पु० अंचला, कपड़े का किनारा २ लुगाईकी छाती ।

प्रा० आंजना (सं० अञ्जन) क्रि० स० अंजन डालना, सुरमा लगाना, काजल लगाना ।

प्रा० आंट (सं० आनद्ध, अ=चारों ओर से, नह=बांधना) स्त्री० गांठ, २ वैर, विरोध, डाह ।

प्रा० आंत (सं० अन्त्र) स्त्री० अंतड़ी ।

प्रा० आंधी (सं० अन्धकार) स्त्री० झक्कड़, तूफान, तेज हवा ।

प्रा० आंव (सं० आम्, अम्=बीमार

होना) स्त्री० पेट में एक तरह का रोग २ आमाशय, शूल ।

प्रा० आंसू (सं० अश्रु, अश=फैलना) पु० आंख का पानी ।

प्रा० आंसूभरलाना-बोल० आंख डबडबाना, रोनी सूरत बनाना ।

प्रा० आक (सं० अर्क) पु० एक पेड़ का नाम, अकवन, मदार ।

सं० आकर (आ = चारों ओर से, कृ=बिखरना अर्थात् जहां धातु बिखरी रहती है) स्त्री० खान, खानि ।

सं० आकर्णित- स्पा० पु० सुना गया, श्रुत ।

सं० आकर्ण्य अव्य० सुन कर ।

सं० आकर्ष (आ+कृष=खींचना) भा० पु० खींचना, ऐंचना, घसीटना ।

सं० आकर्षक (आ=से, कृष=खींचना) पु० चुम्बक पत्थर, खींचनेवाली चीज, गु० पु० खींचनेवाला ।

सं० आकर्षण (आ=से, कृष=खींचना) भा० पु० खिंचाव, खींचने की क्रिया ।

सं० आकांक्षक (आ=से, कांक्ष+ अक, कांक्ष=चाहनेवाला) गु० पु० इच्छक, वांछक, अभिलाषक ।

सं० आकांक्षी (आ=से, कांक्ष, + इ) गु० पु० तथा ।

सं० आकार (आ, कृ=करना) भा० पु० रूप, डौल, स्वरूप, सूरत, मूरत, २ चिह्न, निशान, ३ आ अक्षर ।

सं० आकाश (आ=चारों ओर से काश्=चमकना) पु० आसमान, गगन, शून्य ।

सं० आकाशवृत्ति (आकाश=आसमान, वृत्ति=जीविका) स्त्री० जो आजीविका नियत नहीं है, अस्थिर जीविका, [illegible] ।

सं० आकाशवाणी (आकाश=आसमान, वाणी=शब्द) स्त्री० आकाश में जो कुछ बात सुनी जाती है, वाणी जो आकाश से होती है ।

सं० आकीर्ण (आ=चारों ओर से, कृ=बिखरना या फैलना) गु० पु०

सं० आकुलित (आ=से, कुल+इत) कर्म० दुखित, क्लेशित, रंजीदा।

सं० आकृति (आ, कृ=करना) स्त्री० रूप, स्वरूप, मूरत, सूरत, डौल।

सं० आकृष्ट (आ=चारों ओर से कृष+त, कृष्=खींचना) कर्म० पु० खींचाहुआ, आकर्षित।

सं० आकृष्टि (आ=से, कृष्+ति) भा० पु० आकर्षण, खींचना, घसीटना।

सं० आक्रमक (आ=सब ओरसे, क्रम्+अक, क्रम्=जाना) क० पु० घेरनेवाला, हमला करनेवाला।

सं० आक्रमण (आ=से, क्रम्+अन, क्रम्=जाना वा हमलाकरना) भा० पु० व्यापन, घेरना, हमला करना, मुहासराकरना।

सं० आक्रम्य (आ=से क्रम्+य) धा० अव्य० घेरकर, हमला करके।

सं० आक्रान्त (आ=से, क्रम्+त) कर्म० पु० घेराहुआ, घेरागया, हमला कियागया, क० २ थकित, थकाहुआ।

सं० आक्रीड (आ=चारों ओर से, क्रीड्=खेलना)पु० राजाका उपवन, बादशाहीबाग।

सं० आक्रोश (आ=चारों ओर से, क्रुश रोना) भा० पु० क्रोध, रोना, गुस्सा, गिरिया वजारी।

सं० आक्षेप (आ, क्षिप्=फेंकना) पु० बुरीबात, निन्दा, दुर्वचन, २ फेंकना ३ एक अर्थालंकारका नाम।

प्रा० आखर (सं० अक्षर) पु० अक्षर, वर्ण, हर्फ़।

सं० आखु- मूषक, मूश, मूसा, चूहा।

सं० आखुभुक् (आखु+भुज्=भुज भक्षण करना)क० पु० बिलार, मारजार, गुर्बा।

सं० आखेट (आ=से, खिद्=डराना, सताना) स्त्री० शिकार, अहेर, मृगया।

सं० आख्य } आख्या } (आ=सबप्रकार से, ख्या=कहना, प्रसिद्ध होना)पु० नाम, संज्ञा, इस्म।

सं० आख्यात (आ=से, ख्या+त) कर्म० उक्त, मज़कूर, कहाहुआ।

सं० आख्यायिका- स्त्री० कहानी, कथा, रवायत, फिसाना।

सं० आख्यान (आ=से, ख्या=प्रसिद्धहोना) पु० बात, कथा, वृत्तान्त, वर्णन, इतिहास।

प्रा० आग (सं० अग्नि) स्त्री० आगी, अग्नि, अनल।

प्रा० आगउठाना- बोल० बखेड़ा मचाना, क्रोधित करना, गुस्सा बढ़ाना, खिजलाना।

प्रा० आगकरना- बोल० बहुतही बहुत गर्म करना, २ क्रोध अथवा डाह बढ़ाना।

प्रा० आगदेना-बोल०मुर्दा जलाना।

प्रा० आगपड़ना-बोल०गुस्सेहोना, खिसियाना,क्रोधकरना, भड़कना।

प्रा० आगबरसना- बोल०यह मुहावरा उससमय बोला जाताहै जब बहुत गर्मी पड़ती है,अथवा लड़ाईमें तोप के गोले चलतेहैं।

प्रा० आगबुझाना }
आगमें पानी डालना }
बोल०ठंडा करना, झगड़ा बंद करना, बखेड़ा मिटाना।

प्रा० आगभखना } बोल०निकम्मी
आग फांकना } बातेंकरना, वृथाबकवाद करना, डींगमारना, शेखी करना, अपनी बड़ाईकरना, घमंड करना।

जलाना, बखेड़ा मचाना, छो छो दंगा बखेड़ा उठाना।

प्रा० आगहोना-बोल०गुस्से होना, क्रोधित होना, खिसियाना।

सं० आगत (आ=चारों ओर से, ग+त,गम्=जाना) कृ० पु० आया हुआ, पहुंचा, उपस्थित, आयात।

सं०आगन्ता } कृ०पु०आनेवाला,
आगन्तुक } अजनबी।

सं० आगम (आ, गम्=जाना, और आ उपसर्ग के साथ आने से अर्थ हुआ आना) पु० शास्त्र, तंत्र शास्त्र जिसमें मन्त्रों का वर्णनहै, और उसको महादेव ने बनायाहै संस्कृत में आगमका यह लक्षण लिखाहै"आगतं शिव वक्त्रेभ्यो. गतञ्च गिरिजा

सं० **आगमन** (आ, गम्=जाना) भा० पु० आना, अवाई।

प्रा० **आगा** (सं० अग्र) पु० अगवाड़ा, साम्हना।

प्रा० **आगा पीछा करना**-बोल० दुबिधा में होना, संदेह रखना, हिचकना, ठिठकना, झझकना।

सं० **आगामी** (आ+गम्+ ई, गम्=जाना) कृ० पु० आनेवाला, भावी, जो आगेआनेवाला है।

सं० **आगार** (आ, गॄ=निगलना) धि० पु० घर, स्थान, जगह, मकान।

सं० **आगुल्फ** (आ=तक, गुल्फ=टिहुना) गु० टिहुनातक।

प्रा० **आगे** (सं० अग्रे) क्रि० वि० पहले, साम्हने, सन्मुख, इसके पीछे, बढ़ के २ तब, फिर।

प्रा० **आगेधरलेना**-बोल० आगे बढ़ना, आगे जाना, किसी को पीछे छोड़ना।

सं० **आग्रह** (आ=चारोंओरसे, ग्रह्=ग्रहण करना, वा लेना) भा० पु० पकड़ना, छीनना, लेना, कसना, छेड़ना, घेरना, हठकरना, कोशिश, ज़िद पकड़ना, मिहरबानी, मुरव्वीपन।

सं० **आघात** (आ=से, हन्=मारना) पु० चोट, धक्का, मारना, भिड़ना २ मारने की जगह।

सं० **आघातित** (आ=सब प्रकारसे, घात्+इत, हन्=मारना) र्म्म० पु० मारा हुआ, चोट खाया हुआ।

सं० **आघूर्णन** (आ=से, घूर्ण=घूमना वा ताकना) भा० पु० देखना, घूरना, ताकना।

सं० **आघूर्णित** (आ+घूर्ण+इत) र्म्म० पु० देखा गया, घूरा गया।

सं० **आघ्राण** (आ=से, घ्रा=सूंघना) भा० पु० सूंघना, गंधलेना।

सं० **आघ्रात** (आ+घ्रा+त) र्म्म० पु० सूंघाहुआ, गंधग्रहण।

सं० **आघ्रेय** र्म्म० पु० सूंघने योग्य।

सं० **आचमन** (आ, चम्=खाना) भा० पु० खानेके पीछे हाथ मुंह पानी से साफ़ करना, २ संध्या करने के समय चुल्लूसेतीनबारमुंहमेंपानीलेना।

सं० **आचरण** (आ, चर्=चलना) भा० पु० चाल चलन, व्यवहार, रीति भांति, चलन।

सं० **आचरित** (आ+चर्+इत) र्म्म० पु० मानलीजाय, तसलीम करलीजाय।

सं० **आचार** (आ, चर्=चलना) भा० पु० आचरण, व्यवहार, रीति, चलन, २ पवित्रता, सफाई, शुद्धता, तरीक़ा।

सं० **आचारी** (आचार) कृ० पु० आचाररखनेवाला, शास्त्रके अनुसार चलनेवाला।

सं० **आचार्य्य** (आ, चर्=चलना)

पु० गुरु, पढ़ानेवाला, शिक्षक, उपदेश करनेवाला, वेद शास्त्र पढ़ानेवाला।

सं० आच्छादक (आ + छद् + अक) क० पु० ढांकनेवाला, छिपानेवाला, मूंदनेवाला।

सं० आच्छादन (आ=से, छद्=ढकना) भा० पु० ढकनेका कपड़ा, चद्दर, २ ढकना।

सं० आच्छादित } आच्छिन्न } स्त्री० पु० मुंदा हुआ, ढकाहुआ, आवृत।

प्रा० आछे } आछै } (सं० अच्छ अच्छा) गु० अच्छा।

प्रा० आज (सं० अद्य) आजका दिन, वर्तमान दिन।

प्रा० आजकल-बोल० इन दिनों में कुछ दिनों में।

प्रा० आजकल करना } आजकल बताना } बोल० टालना.

सं० आज्ञाकारी (आज्ञा = हुकम, कारी=पूरा करनेवाला, कृ=करना) गु० आज्ञा माननेवाला, हुकम माननेवाला, सेवक, आधीन, तावेदार।

सं० आज्ञानुवर्त्ती (आज्ञा=हुकम, अनु=पीछे, वृत्=मानना) क० पु० आज्ञाकारी, फर्मांबरदार, वशीभूत, आधीन।

सं० आज्ञापक (आ=सब प्रकार से, ज्ञापक=हुकम करनेवाला) आदेश करनेवाला, हुकमकरनेवाला, हाकिम।

सं० आज्ञापन (आ=से, ज्ञापन=जताना) भा० पु० विज्ञापन, जिताना, इत्तलाअ देना, हुकम देना।

सं० आज्ञप्त (आ+ज्ञप्त) स्त्री० पु० आज्ञा पाया हुआ, मरहूम।

सं० आज्ञापत्र (आज्ञा=हुकम, पत्र=कागज) पु० हुकमनामा, लिखा हुआ

सं० **आगमन** (आ, गम्=जाना) भा० पु० आना, अवाई।

प्रा० **आगा** (सं० अग्र) पु० अगवाड़ा, साम्हना।

प्रा० **आगा पीछा करना**-बोल० दुविधा में होना, संदेह रखना, हिचकना, ठिठकना, झझकना।

सं० **आगामी** (आ+गम्+ई, गम् =जाना) क० पु० आनेवाला, भावी, जो आगेआनेवाला है।

सं० **आगार** (आ, गॄ=निगलना) धि० पु० घर, स्थान, जगह, मकान।

सं० **आगुल्फ** (आ=तक, गुल्फ=टिहुना) गु० टिहुनातक।

प्रा० **आगे** (सं० अग्रे) क्रि० वि० पहले, साम्हने, सन्मुख, इसके पीछे, बढ़ के २ तब, फिर।

प्रा० **आगेधरलेना**-बोल० आगे बढ़ना, आगे जाना, किसी को पीछे छोड़ना।

सं० **आग्रह** (आ=चारोंओरसे, ग्रह्= ग्रहण करना, वा लेना) भा० पु० पकड़ना, छीनना, लेना, कसना, छेड़ना, घेरना, हठकरना, कोशिश, जिद्द पकड़ना, जिद्दखानी, मुरव्वीपन।

सं० **आघात** (आ=से, हन्=मारना) पु० चोट, धक्का, मारना, भिड़ना २ मारने की जगह।

सं० **आघातित** (आ=भलीप्रकारसे, घात्+इत, हन्=मारना) र्म० पु० मारा हुआ, चोट खाया हुआ।

सं० **आघूर्णन** (आ=से, घूर्ण=घूमना वा ताकना) भा० पु० देखना, घूरना, ताकना।

सं० **आघूर्णित** (आ+घूर्ण+इत) र्म० पु० देखा गया, घूरा गया।

सं० **आघ्राण** (आ=से, घ्रा=सूंघना) भा० पु० सूंघना, गंधलेना।

सं० **आघ्रात** (आ+घ्रा+त) र्म० पु० सूंघाहुआ, गंधग्रहण।

सं० **आघ्रेय** र्म० पु० सूंघने योग्य।

सं० **आचमन** (आ, चम्=खाना) भा० पु० खानेके पीछे हाथ मुंह पानी से साफ करना, २संध्या करने के समयचुल्लूसेतीनबारमुंहमेंपानीलेना।

सं० **आचरण** (आ, चर्=चलना) भा० पु० चाल चलन, व्यवहार, रीति भांति, चलन।

सं० **आचरित** (आ+चर्+इत) र्म० पु० मानलीजाय, तसलीम करलीजाय।

सं० **आचार** (आ, चर्=चलना) भा० पु० आचरण, व्यवहार, रीति, चलन, २पवित्रता, सफाई, शुद्धता, तरीका।

सं० **आचारी** (आचार) क० पु० आचाररखनेवाला, शास्त्रके अनुसार चलनेवाला।

सं० **आचार्य** (आ, चर्=चलना)

पु० गुरु, पढ़ानेवाला, शिक्षक, उपदेश करनेवाला, वेद शास्त्र पढ़ानेवाला।

सं० आच्छादक (आ + छद् + अक) क० पु० ढांकनेवाला, छिपानेवाला, मूंदनेवाला।

सं० आच्छादन (आ=से, छद्=ढकना) भा० पु० ढकनेका कपड़ा, चद्दर, २ ढकना।

सं० आच्छादित } आच्छिन्न } र्म० पु० मुँदा हुआ, ढकाहुआ, आवृत।

प्रा० आछे } आछैं } (सं० अच्छ अच्छा) गु० अच्छा।

प्रा० आज (सं० अद्य) आजका दिन, वर्त्तमान दिन।

प्रा० आजकल-बोल० इन दिनों में कुछ दिनो से।

प्रा० आजकल करना } आजकल बताना } बोल० टालना, हां हूं करना।

प्रा० आजा (सं० आर्य्यक) पु० दादा, पितामह।

सं० आजीव (आ + जीव्=जीना) रोजगार, जीविका, पेशा।

सं० आजीविका (आ=से, जीव्=जीना) स्त्री० जीविका, निर्वाह, जीने का, उपाय, रोजी, रिज़क।

सं० आज्ञा (आ=से, ज्ञा=जानना) स्त्री० हुक्म, आदेश, आयसु।

सं० आज्ञाकारी (आज्ञा = हुक्म, कारी=पूरा करनेवाला, कृ=करना) गु० आज्ञा मानने वाला, हुक्म मानने वाला, सेवक, आधीन, ताबेदार।

सं० आज्ञानुवर्त्ती (आज्ञा=हुक्म, अनु=पीछे, वृत्=मानना) क० पु० आज्ञाकारी, फ़र्माबरदार, वशीभूत, आधीन।

सं० आज्ञापक (आ=सब प्रकार से, ज्ञापक=हुक्म करनेवाला) आदेश करनेवाला, हुक्मकरनेवाला, हाकिम।

सं० आज्ञापन (आ=से, ज्ञापन=जताना) भा० पु० विज्ञापन, चिताना, इत्तलाअ देना, हुक्म देना।

सं० आज्ञप्त (आ+ज्ञप्त) र्म० पु० आज्ञापाया हुआ, मह्कूम।

सं० आज्ञापत्र (आज्ञा= हुक्म, पत्र=कागज) पु० हुक्मनामा, लिखी हुई आज्ञा, फर्मान।

सं० आज्य (अञ्ज् + य, अञ्ज=लेप करना) पु० घृत, घी, घीव, सर्पिष्, रोगनजर्द।

सं० आटोप (आ=चारों ओर से, तुप्=ढकना, मारना) पु० घमण्ड, अभिमान, दर्प, अहंकार।

प्रा० आठ (सं० अष्ट) गु० आठ की गिन्ती का नाम।

प्रा० आठ आठ आंसू रोना - बो०

ल० बहुत रोना, फूट २ के रोना।

प्रा० आठ पहर-बोल० रात दिन, हर घड़ी, हर आन, सदा, नितउठ।

प्रा० आड-स्त्री० ओट, परदा, रोक।

सं० आडम्बर (आ=चारों ओर से, डम्ब+अरन्, डम्ब=फेंकना) पु० हर्ष, घमंड, गरूर, पाखंड, छत्र, मेघ, नक्कारा, तुरही का शब्द, खटला, उद्योग, बनावट, बनाव, आयोजन, आरम्भ, मेघका गरजना, संरम्भ, लिबास, भेष।

प्रा० आडा-गु० तिरछा, टेढ़ा, बांका।

प्रा० आडी- गु० रक्षक, मुहाफिज़, स्वर विशेष।

प्रा० आडे आना-बोल० बचावना, बीच में पड़ना।

सं० आढक-परिमाण विशेष, अढ़ैया, द्रोण का चौथा भाग।

सं० आढकी-स्त्री० अरहर।

प्रा० आढ़त-स्त्री० अड्डा, माल का चलान।

प्रा० आढ़तिया-पु० बैपारी, महाजन, दलाल।

सं० आतङ्क (आ=से, तकि=दुख से जीना) पु० डर, भय, खौफ, २ दुख, ३ पीड़ा, रोग, सन्ताप।

सं० आतप (आ=चारों ओरसे, तप्=तपाना) ण० पु० धूप, घाम, सूर्य्य की गर्मी।

सं० आतपत्र (आतप=धूप, त्रै=बचाना) पु० छतरी, छाता, छत्र।

सं० आतर (आ=से, तृ=जाना वा, तैरना) ण० पु० अन्तर, बीच, फर्क़, उतराई।

सं० आतिथेय-पु० अतिथि के निमित्त भोजनादि देनेवाला, आतिथि, सेवक, महँमानिवाज़, मेजबान।

सं० आतिथ्य-भा० पु० अतिथिसेवा, सन्मान, महिमानदारी, महँमानिवाजी।

सं० आतुर (आ, तुर्=जल्दी करना) गु० घबरायाहुआ, व्याकुल, बेचैन, दुखी, २ रोगी, क्रि० वि० शीघ्र, झटपट, जल्दी।

सं० आत्मघात (आत्मन्=अपने को, घात=नाश, मारना) पु० आत्महत्या, अपने तई मारडालना, खुदकुशी।

सं० आत्मज (आत्मन्=अपनी आत्मा से, जन्=पैदा होना) पु० पुत्र, बेटा, सन्तान।

सं० आत्महत्या (आत्मन् = अपने को हन्=मारना) स्त्री० आत्मघात, अपने तई मारडालना।

सं० आत्महन-क० पु० आत्मघाती, खुदकुश, आधमान, वायुरोग।

सं० आत्मा (आ, अत्=जाना) स्त्री० जीव, प्राण, आप, मन।

प्रा० आदिअंत (सं० आद्यन्त, आदि=पहले, अन्त=पीछे) गु० पहले

से पीछे तक, आरंभ से समाप्ति तक, अव्वल से आखिरतक।

सं० आदर (आ, दृ=आदर करना) पु० मान, सन्मान, प्रतिष्ठा, खातिर।

सं० आदरणीय (आदर्+अनीय) र्म० पु० सन्मानयोग्य, खातिर के लायक।

प्रा० आदा (आर्द्र वा आर्द्रक) पु० आर्द्रक, कच्ची और गीली सोंठ।

सं० आदान (आ+दा+न, दा=देना) भा० पु० ग्रहण, लेना, स्वीकार, मंजूर।

सं० आदानप्रदान-भा० पु० देनलेन, दादसितद।

सं० आदि (आ=पहले, दा=देना, लिया जाना) गु० पहला, प्रथम, आरम्भ, मूल, २ और, इत्यादि, वगैरह।

सं० आदिकवि (आदि=पहला, कवि=कविता बनानेवाला) पु० पहला कवि, ब्रह्मा, वाल्मीकि।

सं० आदित्य (अदिति=देवताओंकी मा, अर्थात् अदिति का बेटा) पु० सूर्य, रवि, भानु, २ देवता।

सं० आदित्यवार (आदित्य=सूर्य, वार=दिन) पु० एतवार।

सं० आदिपुरुष (आदि=पहला, पुरुष) पु० पहला पुरुष, विष्णु, परमेश्वर।

सं० आदिष्ट (आ+दिश्+त, दिश्=देना) र्म० पु० आज्ञप्त, अनुमत, हुक्मदियागया, आज्ञापाया हुआ, महकूम।

सं० आदेश (आ, दिश्=देना) पु० आज्ञा, हुक्म, २ योगियोंकाप्रणाम ३ व्याकरण में एक अक्षर को दूसरे अक्षर से बदलना।

सं० आदेशी } (आ+दिश्+इन्)(आ+दिश्+तृ) क० पु० आज्ञादायक, हाकिम।
आदेष्टा }

सं० आद्योपान्त (आद्य+उपान्त) गु० अव्वल से आखिरतक।

सं० आद्रित (आ+दृ+इत) र्म० पु० मानाकियागया, इज़्ज़तकियागया।

प्रा० आधा (सं० अर्द्ध) गु० अर्द्ध, दोबराबरहिस्सोंमेंकाएक, निस्फ, नीम।

सं० आधान (आ, धा=रखना) पु० गर्भ धारण, गर्भ, गाभ, हमल।

सं० आधार (आ, धृ=रखना) पु० आसरा, २पालनेवाला, ३ आहार, खाना, ४ पात्र, अधिकरण।

प्रा० आधासीसी (सं० अर्द्ध=आधा, शीर्ष=शिर) स्त्री० अधकपाली, आधे शिर में पीड़ा।

सं० आधि-स्त्री० मनकी पीड़ा, उदासी।

सं० आधिक्य } भा० स्त्री० बहुतायन, अधिकाई, ज़ियादती।
आधिक्यता }

सं० आधिपत्य-भा० पु० प्रधानता, अधिकार, स्वामित्व, वश, अख़्तियार।
प्रा० आधीन (सं० अधीन) गु० आज्ञाकारी, वश, ताबेदार।
सं० आधेय (आ + धा=धरना) र्म्म० धरनेयोग्य, जोवस्तुधरीजाय।
प्रा० आन-स्त्री० कान, मर्याद, लाज संकोच, २ यश।
प्रा० आन (सं० अन्य=और) गु० और, दूसरा।
प्रा० आन (सं० आज्ञा) स्त्री० आज्ञा, २ प्रतिज्ञा, सौगंद।
सं० आनक (आ, नी=लाना जो खुशी को लाता है) पु० नगारा, नक़ारा, दुंदुभी।
सं० आनन (आ=से, अन्=जीना) पु० मुंह, मुख।
सं० आनन्द (आ=चारों ओरसे, नन्द=प्रसन्न होना) पु० हर्ष, सुख, चैन, खुशी।
सं० आनन्ददायी (आनन्द+दायी, दा=देना) क० पु० आनन्ददाता खुशी देनेवाला।
सं० आनन्दपूर्वक (आनन्द=हर्ष, पूर्वक=सहित) शब्दयो=अव्य, हर्ष, सहित, खुशीके साथ।
सं० आनन्दित (आ + नन्द् + इत) र्म्म० पु० प्रसन्न, हर्षित, खुश वश्शाश।
सं० आनन्दी (आ + नन्द + इन) क० पु० आनन्दयुक्त, प्रसन्न।
प्रा० आनना (सं० आनयन, आ, नी=लाना) क्रि० स० लाना।
अं० आनरेबुल-प्रतिष्ठित, इज़्ज़तदार।
प्रा० आना / आवना (सं० आगमन) क्रि० अ० पहुंचना, आवना, पु० रुपयेका सोलहवांभाग।
प्रा० आनिहौं (आनना लाना) क्रि० स० लाऊंगा, लेआऊंगा।
सं० आनीत-र्म्म० पु० लाया हुआ।
सं० आनेता (आ+नी+तृ, नी=लाना) क० पु० लाने वाला।
सं० आन्दोलन (आन्दोल्+अन, दोल=फेंकना) भा० पु० चलन, खिसकाना हिलाना, हरकतदेना, ध्यान, झूलना, झूला, अनुसंधान।
प्रा० आप-सर्वना० अपने आप, स्व, अपना, खुद, २ बड़े आदमीको तुम की जगह आप बोलते हैं।
सं० आप (आप=फैलना) पु० पानी।
प्रा० आपकाजी (आप=अपना, कार्य्य=काम) गु० स्वार्थी, आप मतलबी।
सं० आपक्व-क० पु० थोड़ापकाहुआ।
सं० आपण (आ+पण=वाणिज्य) धि० दूकान हाट, हट्ट।
सं० आपणिक (आ, पण्+इक) क० पु० वणिक बनिया दूकानदार।

सं० आपत्ति, आपद्, आपदा (आ, पद्=जाना) स्त्री० विपत्ति, विपत, अभाग, बला बुरे दिन, दुख।

सं० आपन्न (आ, पद्=जाना) क० पु० अभागा, विपत में फंसा हुआ, दुखी, २ पाया हुआ, ३ शरण में आयाहुआ, शरणागत।

प्रा० आपस (आप) सर्वना० एक दूसरे को, परस्पर, भाई बन्द।

सं० आप्त (आप्=फैलना, लाभ) कर्म० पु० विश्वासित, लब्ध, सत्य यथार्थ, भ्रमरहित।

सं० आपाक (आ=चारोंओर से, पाक=पच् पकाना) धि०पु०आवा, पजावा, मिट्टी के बरतनों के पकाने की जगह।

सं० आपान (आ+पान, पा=पीना) धि० मद्यपानस्थान, शराब की दूकान पु०मद्यप मतवालोंका झुंड।

अं० आफ़िस-धि०पु० कार्य्यशाला, कचहरी।

प्रा० आफू (सं० अ=नहीं, फेन=झाग, स्फायी=फूलना) पु० अफीम, अमल।

सं० आफूक=अफीम।

सं० आभरण (आ=चारोंओर से भृ=धारण करना वा पहनना) पु० गहना, भूषण, अलंकार, जेवर, आभरण १२ बारह हैं १ नूपुर २ किंकिणी ३ चूरी ४ मुंदरी ५ कंकन ६ बाजूबंद ७ हार ८ कंठश्री ६ बेसर १० बिरिआ ११ टीका १२ शीशफूल।

सं० आभा (आ=चारोंओरसे,भा=चमकना रोशनी) भा० स्त्री० चमक, शोभा, भड़क।

सं० आभाष (आ=चारों ओर से) भाष=कहना) पु० भूमिका, मुखबन्ध तमहीद, पेशबंदी।

सं० आभाषण (आभाष्+अन) भा० पु० कथन, कहना, बोलना।

सं०आभूषण (आ=चारों ओर से भूष् शोभना) पु० गहना, आभरण, अलंकार।

सं०आभास (आ=स, भास=चमकना) भा० पु० प्रकाश, रोशनहोना, अभिप्राय, समाजाना।

सं० आभिज्ञ (आभि+ज्ञ=जानना) क० पु० ज्ञाता, जनुका, आगाह, वाक़िफ़।

सं० आभीर =अहीर, गोप, ग्वाल।

प्रा० आम (सं० आम्र) पु० एक फल का नाम।

सं० आम (अम=बीमार होना) पु० एक प्रकार का रोग, पेटका रोग अपच, अजीर्ण।

सं० आमय (आम रोग या जाना अथवा अम बीमार होना) पु० रोग बीमारी, पीड़ा।

सं० आमर्ष (अ=नहीं, मृष्=सहना) पु० क्रोध, गुस्सा, कोप, २ डाह।

प्रा० आमला } आंवला } (सं० आमलक, आ=चारों ओर से, मल्=धारन करना, पकड़ना) पु० एक पेड़ और उसके फल का नाम आंवरा।

सं० आमाशय (आम=आंव, आशय=जगह) पु० पेटमे एक थैली सी होती है जो खाना खाते हैं पहले उसमें पहुंचताहै, ओझरी, पचौनी।

सं० आमिष (अम्=खाना) पु० मांस, २ खानेकी चीज, भोजन।

सं० आमिषाशी (आमिष + अश्=भोजनकरना, खाना) क० पु० मांसभक्षी, मांसाहारी।

सं० आमोद (आ, मुद्=प्रसन्न होना) भा० पु० सुगन्ध, सुवास, २ आनंद, हर्ष, खुशबू, खुशी।

सं० आमोदित (आमोद् + इत) कर्म० पु० हर्षित, खुश, प्रसन्न।

सं० आमोदी (आमोद् + ई) क० हर्षयुक्त, खुश होनेवाला।

सं० आम्र (अम्=जाना, खाना) पु० आम, आंबका फल या पेड़।

प्रा० आम्राई (सं० आम्रराजि, आम्र=आम, राजि=पांत) स्त्री० आंबों का बाग़

सं० आमंत्रण-भा० पु० निमंत्रण, न्योता, दावत।

सं० आय (आ + इ=फैलना) लाभ, धनागम, आमदनी, फ़ाय[दा]

सं० आयत (आ, यम्=रोकना, आ के साथ आने से इसका फैलना होजाता है) गु० लं[बा] चौड़ा, फैला हुआ पु० ऐसा जिसकी आमने सामने की वराबर हों और सब कोने सम कोन हो।

सं० आयतन (आ, यत्=[यत्न] करना अथवारखना) धि० पु० जगह, स्थान।

प्रा० आयसु (सं० आदेश) आज्ञा, हुक्म।

सं० आयात (आ, यान, या=[जाना]) क० पु० आगत, आया, पहुंचा।

सं० आयास (आ, यस्=मिहन[त कर]ना) स्त्री० मिहनत, परिश्रम, य[त्न]

सं० आयु (इण्=जाना) उमर, आयुर्दा, जीवनकाल।

सं० आयुध (आ=से, युध्=ल[ड़ना]) पु० शस्त्र, हथियार।

प्रा० आर-पु० कांटा, पैना, २ [किनारा?] श ३ मंगल, शनिश्चर ४ ५ चमार, ताना, रीति।

सं०आरण्य (अरण्य=जंगल) गु० जंगली, वनका, वनैला।

प्रा०आरज (सं० आर्य्य) गु० बड़ा, श्रेष्ठ, पूज्य, महाराज पु० ससुर।

प्रा०आरत (सं० आर्त्त: आ, ऋ=जाना) गु० दुखी, घबराया हुआ, पीड़ित, व्याकुल।

प्रा०आरति (सं० आर्त्तिः आ, ऋ=जाना) स्त्री० दुख, पीड़ा, रोग, कष्ट।

प्रा०आरतीस्त्री० } (सं० आरात्रिक, अ=नहीं,
आरता पु० } रात्रि=रात, अर्थात् जो दिन में भी दिखाई जाती है) पूजा मे देवता के साम्हने दीपक दिखाना, दीपदर्शन, २ व्याह की एक रीति विशेष।

सं० आरब्ध- मं० पु० उपक्रांत, आरम्भित, शुरूअ किया गया।

सं० आरम्भ (आ, रभि=शुरूअ करना) पु० शुरूअ, आरम्भ, उपक्रम।

सं० आरा_स्त्री, क्रकच, करांत, छेदनी, सूजा।

सं० आरात_अव्य० दूर, समीप।

सं० आराति (आ=चारों ओरसे, रा=देना दुखको) पु० वैरी, शत्रु, दुश्मन।

सं० आराधक (आ, राध्=सिद्ध करना, पूराकरना) क०पु० आराधना करनेवाला, पूजनेवाला, सेवक, भक्त, आबिद।

सं०आराधन भा०पु० } (आ,
आराधना स्त्री० } राध्=पूराकरना) पूजा, सेवा, इबादत, भक्ति।

सं० आराम (आ=चारों ओर से, रम्=खुशी करना) पु० बाग़, बागीचा, फुलवाड़ी, उपवन।

सं० आरूढ (आ, रुह्=चढ़ना) गु० चढ़ाहुआ, सवार।

सं० आरोग्य (अरोग निरोग) पु० निरोगता, आराम, तंदुरुस्ती, कुशल।

सं०आरोप } (प्रा० रुह्=उगना,
आरोपन } चढ़ना) भा० पु० जमाना, स्थापन करना, कायम करना।

सं० आरोपित (आ, रुह्=उगना, चढ़ना) कर्म० पु० सौंपा हुआ, रक्खा हुआ, २ रोपा हुआ, बोया हुआ, ३ बदलाहुआ।

सं० आर्द्र (अर्द=जाना) गु०गीला, भीगा, ओदा, तर, सीला।

सं०आर्य्य (ऋ=जाना) गु० बड़ा, श्रेष्ठ, कुलीन, अच्छे घरानेका, पूज्य, पूजनीय, महाराज, पु० हिंदू।

सं० आर्य्यावर्त्त (आर्य=हिंदू वा उत्तम कुल के मनुष्य, आवर्त्त=रहना

हुआ, वृत्=होना) पु० हिंदुस्थान की वह पवित्र धरती जो पूर्व समुद्रसे पश्चिम समुद्र तक फैली हुई है और उत्तर और दक्खिन की ओर हिमालय और विंध्याचल से घिरी हुई है मनु ने इसी को आर्यावर्त लिखा है जैसे " आ समुद्रातुवैपूर्व्वा,दासमुद्रात्तुपश्चिमात्। हिमवद्विन्ध्ययोर्मध्ये आर्य्यावर्त्त प्रचक्षते ॥ १ ॥"आर्य्यावर्त्त पुण्यभूमि, मध्यं विन्ध्य हिमालयोः।

सं० आलम्ब | **आलम्बन** } (आ=से, लवि=ठहरना) पु० आसरा, सहारा, अवलंब।

सं० आलय (आ=चारोंओरसे,ली=लेना, मिलना) पु० घर, स्थान, जगह।

सं० आलवाल (आ=चारोंओरसे, ला=लेना)पु० थाला,घेरा, पेड़की जड़के आस पास का घेरा।

सं० आलस्य | **प्रा० आलस** } (अलस, अ=नहीं, लस्=शोभना,खेलना) पु० सुस्ती, आसकत, ढील।

प्रा०आलसी— गु०सुस्त, काहिल।

प्रा० आला (सं० आलय) पु०दीप रखने के लिये भीत मे वा खंभे में छोटा सा खोह, दीया का ताक़, ताक़, ताखा।

सं०आलान (आ=से, ला वा ली=लेना) पु० हाथी के बांधने का खूंटा अथवा रस्सा, बेड़ी, जंजीर आदि।

अ०आलान=इश्तिहार, विज्ञापन।

सं०आलाप (आ, लप्=बोलना) भा०पु०बात चीत, बोलचाल,कहना बोलना, २ स्वरका मिलान।

सं०आलापनीय (आलाप्+ अनीय) र्म्म० पु०भाषण योग्य, कहने लायक़।

सं०आलिंगन (आ=चारोंओर से, लिगि=छातीसेलगाना,मिलना)पु० प्यार से मिलना, गले लगाना, प्यार से स्त्री पुरुष का आपसमें मिलना।

प्रा० आली (सं० आलि, अल्=शोभना) स्त्री० सखी, सहेली, सहचारिणी।

सं० आलीढ़ (आ, लिह्=स्वाद लेना) र्म्म० पु० चारा, भुक्त, स्वाद लिया।

सं० आलेख्य (आ, लिख्=लिखना) र्म्म० पु० लिखा।

सं०आलोक (आ, लोक्=देखना) पु० दर्शन, दृष्टि, देखना, २ चमक, ज्योति, ३ बड़ाई, यश बखानना, विरद, झरोखा, रोशनदान।

सं०आलोकन-भा० पु० दर्शन, देखना।

सं० आलोचना (आ, लोच्=देखना) भा०पु० विचारना, शुद्धकरना, चर्चाकरना, नज़रसानी करना।

सं०आलोच्य, धातु, अव्य० विचरकर।

सं० आलोडन (आ, लुड्=मथना वा घोटना) भा० पु० मथना, तलाश करना, अन्वेषण।

सं० आलोल- गु० चंचल, अति चंचल।

प्रा० आल्हा- पु० एक हिंदू शूरवीर और कवि का नाम जिसके नाम से एक प्रकार की कविता का नाम भी आल्हा है।

सं० आवरण (आ=से, वृ=ढकना) पु० ढाल, २ ढकना, ढकनेकी कोई चीज़, पर्दा, आच्छादन।

प्रा० आवभक्ति, आवभगत, आवभगति (हिं० आना, सं० भक्ति = सेवा) स्त्री० आदर, मान, सत्कार।

सं० आवर्ज्जन (आ, वृज्=रोकना) मनाकरना, रोकना।

सं० आवर्त्त (आ=चारों ओर, वृत्=होना, घूमना) पु० भवँर, चक्र, फेर, घुमाव।

सं० आवलि (आ=चारों ओर से, वल्=घेरना, ढकना) स्त्री० पांत, पंक्ति, श्रेणी, अवली।

सं० आवश्यक (अवश्य) गु० निश्चय, जरूरी, कर्त्तव्य।

सं०आवश्यकता-भा०स्त्री०जरूरत।

प्रा०आवर्दा, आवद (सं० आयुर्दय, इण=जाना) स्त्री० उमर, अवस्था।

प्रा०आवागमन, आवागवन (हिं० आना, सं० गमन= जाना) पु० आना जाना, आमदरफ्त।

सं०आवाहन (आ, वह्=लेजाना, पासजाना) भा० पु०बुलाना, पूजा अथवा होम के समय देवता को मंत्रों से बुलाना।

सं० आविर्भाव—भा० पु० प्रकट होना, जाहिर होना।

सं० आविर्भूत (आविर=प्रकट, भू= होना) गु० प्रकट, जाहिर, प्रत्यक्ष।

सं०आविष्कार, आविष्कृत भा० पु० प्रकट होना, कर्म० निकला हुआ।

सं०आविष्ट (आ, विश्=प्रवेशकरना) क० पु० बैठा, घुसा।

सं०आवृत्त (आ, वृत्=होना, ढाकना) कर्म० पु० आच्छादित, वेष्टित, ढाकाहुआ, घेराहुआ।

सं०आवृत्ति (आ, वृत् = लौटना पौटना) भा० पु० अभ्यास, वार २ कहना, उचरना।

सं० आवेदन (आ, विद्=ज्ञान वा समझ) भा०पु०निवेदन, गुजारिश।

सं० आवेद्यसंग्रह— पु० वाजिबुल अर्ज़, वह पत्र जिस में ज़र्मींदार अपना स्वत्व अर्थात् हकूक म- दाखिल करते हैं।

सं० आवेश (आ, विश्=घुसना) पु० प्रवेश, घुसना, २ घमंड, ३ क्रोध, गु० पकड़ा हुआ, ग्रस्त।

सं० आवेशन=प्रवेश, २ शिल्पशाला।

सं० आशंसा (आ, शंस्=सराहना, पर आ उपसर्ग के साथ आने से इस का अर्थ चाहना होताहै) भा०स्त्री० इच्छा, चाह, चाहना, अभिलाष।

सं० आशक्त, आसक्त (आ=से, सञ्ज्=मिलना) क० पु० लगाहुआ, मोहित, लीन, आशिक।

सं० आशङ्का (आ=से, शकि=संदेह करना) स्त्री० डर, भय, २संदेह।

सं० आशय (आ, शी=सोना) पु०मतलब, अभिप्राय, तात्पर्य, २ स्थान, जगह, शरण।

सं० आशा (आ=चारोंओर, अश्=फैलना) स्त्री० आस, भरोसा, आसरा, उम्मेद, २ दिशा, ओर, तरफ।

सं० आशातीत (आशा+अतीत) गु० आशासे अधिक, उम्मैद से जियादा।

सं० आशिस् (आ, शास=सिखाना पर आ उपसर्ग के साथ आने से इसका अर्थ चाहना होताहै) स्त्री० आशीर्वाद, आसीस, वर, दुआ।

सं० आशीर्वचन, आशीर्वाद (आशिस्=असीस, वचन वा वाद कहना) पु० असीस, आशीस, दुआ।

सं० आशु (अश्=फैलना) क्रि० वि० शीघ्र, जल्द, तुरन्त, झटपट।

सं० आशुतोष (आशु=तुरंत, तोष=प्रसन्न होनेवाला, तुष्=प्रसन्न होना) पु० महादेव, शिव।

सं० आश्चर्य (आ, चर्=चलना) पु० अचंभा, अचरज, विस्मय, गु० अनोखा, अद्भुत।

सं० आश्रम (आ, श्रम्=तपकरना) धि० पु० ऋषियों के रहने की जगह, मठ, २धर्म के अनुसार अवस्था के चार भेद १ ब्रह्मचर्य्य २ गृहस्थ ३ वानप्रस्थ ४ संन्यास, कलियुग में केवल गृहस्थ और संन्यास ये दोही आश्रम हैं, जैसे "गृहस्थो भिक्षुकश्चैव, आश्रमौ द्वौ कलौयुगे।

सं० आश्रय-(आ=चारों ओरसे, श्रि=सेवा करना) भा० पु० आसरा, शरण, अवलम्ब, २ घर, जगह, ३ पास, समीपता।

सं० आश्रयभूत (आश्रय+भूत) गु० आसरागीर।

सं० आश्रयस्थान (आश्रय+स्थान, स्था=ठहरना) धि० पु० सहारा की जगह, उम्मेदगाह।

सं० आश्रित (आ, श्रि=सेवाकरना) र्म०पु० शरणागत, आधीन, तावेदार।

सं० आश्रितस्वत्वाधिकारी-क० पु० हकदार, मातहत।

सं० आश्लेष (आ, श्लिष्=मिलना) पु० आलिंगन, जुड़ना, मिलना।

सं० आश्वासन, आश्वास (आ, श्वासन, श्वस्=समझाना) भा० पु० प्रबोधकरना, भरोसा देना, शिक्षाकरना।

सं० आश्वास्य-धा० अव्य० समझाकर।

सं० आश्विन (अश्विनी एक नक्षत्र का नाम, इस महीने में पूरा चांद इस नक्षत्र के पास रहताहै और पूर्नो के दिन अश्विनी नक्षत्र होता है) पु० कुआर, आसोज, बरसका छठा महीना।

प्रा० आषर (सं० अक्षर) पु० हर्फ़, चिह्न।

सं० आषाढ़ (आषाढ़ा एक नक्षत्र का नाम इस महीने में पूरा चांद इस नक्षत्र के पास रहता है और पूर्नो के दिन आषाढ़ा नक्षत्र होता है) पु० बरस का तीसरा महीना असाढ़।

प्रा० आस, आसा (सं० आशा) स्त्री० आसा, भरोसा, आसरा, २ दिशा।

सं० आसन (आस्=बैठना) धि० पु० दाभ या ऊन की बनी हुई चीज़, जिसपर हिंदूलोग संध्या पूजा करने के समय बैठते हैं, २ बैठना, योगियों के बैठने का ढंग जैसे पद्मासनआदि योग का एक अंग, ३ जांघ के भीतर की ओर।

प्रा० आसनतलेआना-बोल० बस होना, आधीन होना, ताबे होना।

प्रा० आसनसे आसनजोड़ना-बोल० दूसरे आदमी के बहुत पास बैठना।

सं० आसन्न (आ, सद्=बैठना) गु० पास, नगीच, समीप, निकट।

सं० आसव (आ, सू=पैदा होना, मदिराबनाना) स्त्री० मदिरा, मद्य, दारू, शराब, मद, माण।

प्रा० आसावसन-भा० पु० नंगा, तृष्णाहीन, बेतमअ।

प्रा० आसिख (सं० आशिष्) स्त्री० असीस, आशीर्वाद, दुआ।

प्रा० आसिन (सं० आश्विन) पु० बरस का छठामहीना, कुआर, आश्विन, आसोज।

प्रा० आसीन (आस्=बैठना) गु० बैठा हुआ।

सं० आस्तिक (अस्=होना) क० पु० जो लोग ईश्वर का और परलोक का होना मानते हैं, ईश्वरवादी, परमेश्वर में विश्वास रखने वाला, विश्वासी।

सं० आस्पद-धि० पु० पद, स्थान,

उपाधि, उहदा, जीना, मर्तबा।

सं० आस्य (अस्=फेंकना, जिस में खाना फेंका जाताहै) पु० मुंह,मुख।

सं० आस्वाद } (आ, स्वद=स्वा-
आस्वादन } दलेना) भा०पु० रस, स्वाद, चाट।

सं० आस्वादक (आ, स्वद+अ-क) कृ० पु० स्वादग्राहक, स्वाद लेनेवाला।

प्रा० आहट–पु० खटका, शब्द, आवाज, पैरों का शब्द।

प्रा० आहर जाहर–बोल० आना जाना।

सं० आहार (आ, हृ=लेना, आ उपसर्ग के साथ आने से इसका अर्थ खाना होता है) पु० खाना, भोजन।

प्रा० आहि (सं० अस्ति,अस् होना) क्रि० अ० है।

सं० आहुति (आ, हु=होम करना) स्त्री० मंत्र से देवताओं के लिये होम की सामग्री को आग में होमना, देवताओंके लिये होमनेकी सामग्री।

सं० आह्निक (अहन्=दिन) पु० हरएक दिनका धर्म का काम स्नान संध्यातर्पणआदि, २ हरएकदिन का, दिनसंबंधी, रोजमर्रा।

सं० आल्हाद (आ, ल्हाद्=प्रसन्न होना) पु० आनन्द, हर्ष, हुल्लास, खुशी।

सं० आह्वान (आ, ह्वे=बुलाना) आवाहन, बुलाना।

—०—

इ

सं० इ–पु० कामदेव का नाम वि-स्मय, निन्दा, सम्बोधन, खेद वि० बो० आह।

प्रा० इंदारा (सं० अन्धकुआं, अन्धा होना, नहीं दीखना वा आ=जाना वा शब्द करना) पु० कुआं, पक्का बँधा हुआ कुआं।

प्रा० इक (सं० एक) गु० एक।

प्रा० इकछतराज (सं०एक छत्रराज्य) पु० चक्रवर्ती राज, सारे संसार का राज।

प्रा० इकटक (इक=एक, टकना वा तकना, देखना) पु० एकताक टकटकी।

प्रा० इकट्ठा }
इकठौर } (सं० एकत्र वा एक स्थान) गु० संग्रह
इकठौरा } सचय, एक जगह।

प्रा० इकलौता (सं०एक) गु० एक ही, केवल।

प्रा० इकसार (सं० एकसार, एक सृ=जाना) गु० बराबर, सारीखा सरीखा, समान, सदृश।

प्रा० इकसंग (सं० एकसंग) एकसाथ।

प्रा० इक्का (सं० एक) गु० अनूठा, अनूप, उत्तम, पु० एक

ड़े की हलकी गाड़ी, इक्का, बग्घी और पालकी गाड़ी आदि सवारियों से बहुत ही हलके दर्जे की सवारी है और पटना में इस की सवारी का बहुत चलन है।

सं० इक्षु (इष्=चाहना) स्त्री० ऊख, ईख, केतारी, गन्ना।

सं० इक्षुरस (इक्षु=ऊख, रस) पु० ऊख का रस, राव।

सं० इक्ष्वाकुवंशी (इक्ष्वाकु=सूर्यवंशियों का पहलाराजा, वंशी=घराने के) गु० इक्ष्वाकु राजा के घराने के, सूर्यवंशी, अयोध्या के राजा।

प्रा० इछन }
इच्छन } (सं० ईक्षण, ईक्ष्=देखना) पु० आंख, नेत्र, २ दृष्टि, देखना।

सं० इच्छा (इष्=चाहना) स्त्री० चाह, वांछा, आकांक्षा, चाहना, अभिलाष, कामना, ख़्वाहिश, चाह।

सं० इच्छुक (इष्+उक) क० पु० चाहनेवाला, आकांक्षी, अभिलाषी, ख़्वाहिशमन्द।

सं० इज्या (यज्=पूजना) स्त्री० पूजा, सेवा, यज्ञ।

सं० इड़ा (इल्=जाना) स्त्री० गौ० पृथ्वी, वाणी, नाड़ी, स्वर्ग, वामनासिका।

प्रा० इत (सं=अत्र=यहां) क्रि० वि० यहां, इधर।

सं० इतर—अव्य० अन्य, भिन्न, नीच।

सं० इति (इण्=जाना) क्रि० वि० इस प्रकार, ऐसे, २ यहां तक, पूरा, संपूर्ण, समाप्त, यह शब्द अध्याय और पुस्तक और चिट्ठी पत्री के अन्त में लिखा जाता है और इस का अर्थ यह है कि यह अध्याय अथवा बात पूरी होगई, ख़तम।

सं० इतिहास (इतिह=परंपरा की बात, इति=ऐसा, ह=निश्चय, अस्=होना वा आस्=रहना) पु० पुरानी कथा जैसे महाभारतआदि, वृत्तान्त, तवारीख।

सं० इत्थम् (इदम्=यह) क्रि० वि० इस प्रकार, इस तरह।

सं० इत्यादि (इति=ऐसा, आदि=और भी) क्रि० वि० इससे लेके और सब, वगैरह।

सं० इदानीं—क्रि० वि० अबहीं, अभी, इसी वक्त।

सं० इन (इण्=जाना) क० पु० सूर्य, समर्थ, राजा, पति, ईश, हस्तनक्षत्र, १२ गिनती।

अं० इनकम् टैक्स=आयपरकर, आमदनी पर महसूल।

सं० इङ्ग (इग्=जाना वा चिह्नकरना) चराचर, अभिप्रायानुसार, चेष्टा, अद्भुत, ज्ञान।

सं०इङ्गित (इग्+इत) भा०पु०सैन, इशारा, चिह्न।

सं०इन्दिरा (इदि=ऐश्वर्य रखना) स्त्री० लक्ष्मी।

सं० इन्दीवर (इन्दी=लक्ष्मी, वर=चाहा हुआ) पु० नीलकमल, नीलोत्पल।

सं० इंदु (उन्द्=भिगोना, जो अपनी किरणों से धरती को ठंढा करताहै) पु० चांद, चंद्रमा, २ कपूर।

सं०इन्दुर—पु० मूस, चूहा।

सं०इन्द्र (इदि=ऐश्वर्य रखना) पु० देवताओं का राजा, स्वर्ग का राजा, शक्र, २परमेश्वर, ३ राजा, सबसेबड़ा अथवा श्रेष्ठ, ऐश्वर्य।

सं०इन्द्रजाल (इन्द्र=ऐश्वर्य अर्थात चतुराई, जालआंखोंकोढकना, जल्=ढकना) पु० मंत्र अथवा औषधी से चीजे औरतरहसेदीखना, बाजीगरी, छल कपट, फरफंद, धोखा।

सं० इन्द्रजित् (इन्द्र=देवताओं का राजा, जित्=जीतनेवाला, जि=जीतना) पु० रावणका बेटा, मेघनाद।

सं०इन्द्रधनुष (इन्द्र=देवताओं का राजा, धनुष=धनुष, कमान) पु० धनुष, पनगुखा, बरसात के दिनों में मेह के कणोंपर सूर्य की किरण पड़ने से जो आकाश में धनुषके आकार रंग दिखाई देता है, धौम कुत्ता।

सं०इन्द्रप्रस्थ (इंद्र=देवताओं का राजा, प्रस्थ=पहाड़ पर रहनेकेयोग्य जगह, अर्थात् इंद्र का स्थान जो सुमेरु पहाड़ पर है उसके बराबर) पु० दिल्ली।

सं०इन्द्रवधू (इन्द्र=देवताओं का राजा, वधू=स्त्री) स्त्री० इंद्राणी, २ लाल कीड़ा, वीरबहूटी।

सं०इन्द्राणी (इंद्र) स्त्री०इंद्र की स्त्री, शची, २ एकप्रकारकी औषधि।

सं०इन्द्रासन (इंद्र=देवताओं का राजा, आसन=सिंहासन) पु० इंद्र का सिंहासन, राजा इंद्रकातख़्त।

सं०इन्द्रिय } प्रा० इन्द्री } (इंद्रपरमेश्वर अर्थात् जिन के द्वारा परमेश्वर का ज्ञानहोता है, या परमेश्वरकी बनाई हुई) स्त्री० जिन से रूप रस अथवा करना चलना आदि का ज्ञान होता है अर्थात् १ हाथ २ पांव ३ वाक् ४ लिङ्ग ५ गुदा ये पांच कर्मेंद्रिय कहलाती हैं और १आंख२नाक ३कान ४ जीभ और ५ शरीर परका चमड़ा ये पाच ज्ञानेंद्रिय कहलाती हैं।

सं०इन्धन } प्रा०ईंधन } (इन्ध्=जलाना) पु० जलावन, लकड़ी।

प्रा० इम्ली (सं० अम्लीका, अम्ल=खट्टा) स्त्री० अम्ली, एक पेड़ का नाम।

प्रा० इमि- क्रि० वि० ऐसे, इसप्रकार से, इसतरह से ।

प्रा० इम्रती } **इमरती** } (सं० अमृत) स्त्री० एक भांतिकी मिठाई ।

प्रा० इलायची (सं० एला, इल्=जाना, फेंकना) स्त्री० एलाची, एला, एक भांति का गरम मसाला ।

सं० इव (इव=फैलना) क्रि० वि० बराबर, जैसे, सदृश, समान, बराबरी को जतलानेवाला शब्द ।

सं० इषु-पु० बाण, शर ।

सं० इषुधि (इषु=बाण, धा=रखना) धि० पु० तूण, तरकश, बाणाधार ।

सं० इष्ट (इष्=चाहना) कर्म० पु० चाहा हुआ, पूजने योग्य, माना हुआ, प्यारा, पु० अपना देवता, २ अपना प्यारा आदमी, ३ चाहीहुई चीज ।

सं० इष्टदेव (इष्ट=चाहाहुआ, देव=देवता) पु० माना हुआ देवता, अपना देवता, पूज्य देवता, पूजनीय ।

प्रा० इहि (सं० इह=यहां) क्रि० वि० इहां, इसमें, इसजगह, २ इसतरह ।

—:०:—

ई

सं० ई—पु० कामदेव, स्त्री० लक्ष्मी, वि० दो० आह ।

प्रा० ईंट (सं० इष्टका, इष्=चाहना) स्त्री० ईंटा मिट्टी की बनाई हुई चीज जिससे मकान बनाये जाते हैं ।

प्रा० ईंडुआ—पु० सिरपर बोझा रखने के लिये टेकन जो कपड़े वा सन का बनाया जाताहै, उढ़कन, टेकन ।

सं० ईक्षक (ईक्ष्+अक) क० पु० दिखैया, देखनेवाला, नाजिर ।

सं० ईक्षण (ईक्ष्=देखना) पु० आंख, नेत्र, २ देखना, दर्शन, दृष्टि ।

सं० ईक्षित (ईक्ष्+इत) कर्म० दर्शित, देखाहुआ ।

प्रा० ईख (सं० इक्षु) स्त्री० ऊख, गन्ना ।

प्रा० ईठ (सं० इष्ट) कर्म० पु० वाञ्छित इष्ट, चाहा हुआ ।

सं० ईडा (ईड्=स्तुति करना) भा० स्त्री० स्तुति करना, बड़ाई करना, तारीफ करना ।

सं० ईति (ई=जाना) स्त्री० उपद्रव, आपदा, "अतिवृष्टिरनावृष्टिःशलभाः मूषिकाःखगाः । अत्यासन्नाश्चराजानः षडेताईतयःस्मृताः" । अर्थ—१ बहुत पानी बरसना, २ पानी नहीं बरसना, ३ टिड्डी आना, ४ चूहों के बहुत होने से अथवा, ५ पखेरुओं की बहुतायतसे खेतीका बिगाड़, ६ अपने देशके राजापर दूसरे देशके राजा का चढ़ आना, इन छः भांति की विपत्को ईति कहते हैं ।

सं० ईदृश } **ईदृक्** } (इदम्=यह, दृश=देखना) पु० ऐसा, २ भांतिका, इस प्रकार का ।

सं० ईप्सा (आप्=चाहना) स्त्री० पाने की इच्छा, चाह, वाञ्छा।

सं० ईप्सित (ईप्स्+इत) र्म० पु० चाहाहुआ, आपेक्षित, वाञ्छित।

सं० ईर्ष्या } (ईर्ष्य्= डाहकरना)
प्रा० ईर्षा } स्त्री० डाह, द्रोह, द्वेष, किसीकीबढ़तीदेखकरजलना, हसद।

सं० ईर्षी (ईर्ष्य+ई) क० पु० द्रोही, द्वेषी, हासिद।

सं० ईश (ईश्=ऐश्वर्यरखना)पु०ईश्वर, परमेश्वर, २शिव, महादेव, ३ राजा, स्वामी, प्रभु, धनी, मालिक।

सं० ईशान(ईश=महादेव) पु० शिव, महादेव, २ पूर्व उत्तर के बीचका कोन, जिसका दिक्पालमहादेवहै।

सं० ईशिता, स्त्री० } (ईश्=ऐश्वर्य रखना)
ईशित्व पु० } वड़प्पन, बड़ाई, आठ सिद्धि में की एक सिद्धि।

सं० ईश्वर (ईश्=ऐश्वर्य रखना) पु० परमेश्वर, सृष्टिकर्ता, प्रभु, २ महादेव, ३ मालिक, धनी।

सं० ईश्वरता (ईश्वर)स्त्री० प्रभुता।

सं० ईश्वरकृत-र्म० पु० ईश्वररचित, ईश्वरनिर्मित।

सं० ईश्वरोक्त (ईश्वर+उक्त)र्म० पु० ईश्वरकथित, ईश्वर का कहा हुआ, वेद, कुराअनइलाही।

प्रा० ईस (सं०ईश)पु० परमेश्वर, २ महादेव, ३ राजा, स्वामी।

सं०ईषत्-क्रि०वि० थोड़ा, किंचित्।

सं०ईहा (ईह्=यतन करना) स्त्री० यतन, चेष्टा, उपाय, २ इच्छा।

—:o:—

उ

सं० उ (उ=शब्दकरना) पु० महादेव, डालना, नियोग, कोपबचन, २ वि० बो० संबोधक का सूचक है, २ तर्क अर्थ में बोला जाता है।

प्रा०उकटना(सं०उत्=ऊपर, कट्=तोड़ना)क्रि० स० गड़ी हुई चीज़ को खोदना, २ उखाड़ना, ३ भेद लेना, ४ छिपीबातको खोलदेना।

प्रा०उकसना (उत्=ऊपर, कस=जाना) क्रि० अ० ऊंचाहोना, उठना, चलना।

सं०उक्त (वच्=बोलना)र्म० पु० कहा हुआ, बोलाहुआ, कथित।

सं० उक्ति (वच्=बोलना) भा० स्त्री० कहना, बोलना, बोलने की शक्ति, भाषण, बोलचाल, वचन, कलाम, दलील।

प्रा०उकताना (सं०उत्=ऊपर, कद्=दुखसे जीना, शोच करना) क्रि० अ०घबराना, उदासहोना, थकना।

प्रा०उखडाना } (सं० उत्=ऊपर,
उखाड़ना } खट्=तोड़ना) क्रि० स० जड़से तोड़ डालना, २ उजाड़ना, नाशकरना।

प्रा० उखल, पु०
उखली, स्त्री० } (सं० उदूखल, वा उलूखल, उत्=ऊपर, ख=शून्य, ला=लेना) ऊखली, ओखली, जिसमें चांवल आदि कूटते हैं।

प्रा० उगना (सं० उत्=ऊपर, गम्=जाना) क्रि० अ० पैदा होना, बढ़ना, २ निकलना।

प्रा० उगतेही जलजाना-बोल० यह मुहावरा उस जगह बोला जाताहै कि जब किसी की आश शुरूग्रही में टूट जाय।

प्रा० उगलना (सं० उत्=ऊपर, गृ=निगलना) क्रि० स० मुंहमें कोई चीज लेके पीछे निकाल देना, वमन करना, उलटी करना, क्रय करना।

प्रा० उगाहना (सं० उत्, ग्रह्=लेना) क्रि० स० इकट्ठा करना, बटोरना, जमा करना, तहसील करना।

सं० उग्र (उच्=इकट्ठा होना, वा वज्=कठोर होना) गु० कठोर, डरावना, भयंकर, क्रोधित, कड़ा, पु० महादेव का नाम।

सं० उग्रता-भा० स्त्री० कठोरता, तेजी, सख्ती।

सं० उग्रस्वभाव (उग्र+स्वभाव) कठोर चित्त, तेज मिजाज।

सं० उग्रसेन (उग्र=डरावनी, सेना=फौज) पु० मथुराका राजा, आहुक राजा का बेटा देवक का भाई और पवन रेखाका पति जिसके द्रमलिक नाम राक्षस से कंस पैदा हुआ।

प्रा० उघड़ना
उघरना } क्रि० अ० खुलजाना, प्रकट होना, २ नंगा होना।

प्रा० उघाड़ना
उघारना } क्रि० स० खोलना, प्रकट करना, २ नङ्गा करना।

प्रा० उचकना- क्रि० अ० कूदउठना कूदना, उछलना।

प्रा० उचक्का—पु० ठग, उठाईगीरा, गांठकट्टा, जेबकतरा, चोर, छली, पाखंडी।

प्रा० उचटना (सं० उत्, चट्=तोड़ना) क्रि० अ० अलग अलग होना, उखड़ना, बिखरना, पिछलना, उदास होना, मन नहीं लगना, २ नींद का टूटना।

प्रा० उचरना
उच्चरना } (सं० उच्चरण, उत्=ऊपर, चर्=चलना, पर उत् उपसर्ग के साथ आने से अर्थ बोलना होता है) क्रि० स० बोलना, कहना, शब्दों का उच्चारण करना।

प्रा० उचाटना (सं० उच्चाटन, उत्=ऊपर, चट्=तोड़ना) क्रि० स० जुदा २ करना, अलग २ करना।

प्रा० उचाटहोना-बोल० उदास होना, जी नहीं लगना, उचाटी लगना।

सं० उचित (उच्=इकट्ठा होना, वा

वच्=बोलना) क० पु० योग्य, ठीक, चाहिये, मुनासिब।

सं० उच्च (उत्=ऊपर, चि=इकट्ठा करना) गु० ऊंचा, लंबा, उन्नत, प्रांशु, उदग्र, तुंग, उच्छ्रित।

प्रा० उच्चशिक्षाकीशिक्षा—स्त्री० आलादर्जा की तअलीम।

सं० उच्चस्वर— पु० बड़ा शब्द, बुलंद आवाज़।

सं० उच्चार (उत्=ऊपर, चर्=चलना) पु० उच्चारण, कथन, वर्णन, मल, विष्ठा।

सं० उच्चारण (उत्=ऊपर, चर्=चलना, उत् उपसर्ग के साथ आने से अर्थ, बोलना होता है) भा० पु० बोलना, तलफ़्फ़ुज़।

सं० उच्चरित (उत्+चर्+इत) र्म्म० पु० कथित, कहा हुआ।

सं० उच्छिन्न (उत्=ऊपर, छिद्=काटना) र्म्म० पु० कटाहुआ, उखड़ा हुआ, निर्मूल।

सं० उच्छिन्नता—भा० स्त्री०नाश, खराबी, बरबादी।

सं० उच्छिष्ट (उत्, शिष्=बाक़ी रहना) र्म्म०पु० जूठा, खानेके पीछे बचा हुआ खाना, भुक्तावशिष्ट।

सं० उच्छेद (उत्+छिद्=काटना) भा० पु० विनाश, खराबी, काटना, [illegible]।

सं० उच्छेदी (उच्छेद्+ई) क० पु० नाशक, काटनेवाला।

प्रा० उछंग (सं०उत्सङ्ग, उद्=ऊपर, षञ्ज्=मिलना) स्त्री०गोदी, गोद।

प्रा० उछरना }
उछलना } (सं० उत्=ऊपर, चल्=चलना) क्रि०अ०कूदना, कूद उठना, ऊपर उठना, कुदकना।

प्रा० उछाह (सं०उत्साह, उद्, सह्=सहना) पु० आनंद, हर्ष, खुशी।

प्रा० उजागर—गु० नामवर, नामी, प्रतापी, प्रसिद्ध, विख्यात, यशस्वी।

प्रा० उजाड़ना (सं० उत्पाटन, उत्=ऊपर, पट्=जाना, अथवा, उत्=ऊपर, जट्=इकट्ठाहोना) क्रि०स० नाश करना, चौपटकरना, बरबाद करना।

प्रा० उजाला }
उजियारा } (सं०उज्ज्वल, उत्=ऊपर, ज्वल्=चमकना) भा० पु० प्रकाश, तेज, चमक।

प्रा० उज्जल }
सं० उज्ज्वल } (उद्, ज्वल्=चमकना) क० पु० साफ़, स्वच्छ, निर्मल, चमकीला, प्रकाशित, दीप्तिमान्।

सं० उज्ज्वलन—भा० पु० उद्दीपन, प्रकाश करना, चमकना।

प्रा० उझकना— क्रि० स० ताकना, झांकना।

प्रा० उझाड }
उझाड़ } गु० गँवार, अनगढ़ अक्खड़, मूर्ख।

प्रा० **उझलना** (सं० उज्झलन, उद्झ=छोड़ना) क्रि० स० एक बरतन से दूसरे बरतन में डालना।

सं० **उज्झलित**—र्म० छोड़ाहुआ, डाला हुआ।

सं० **उट**—पु० तृण, तिनका, ऊर्ण, पत्ता।

सं० **उटज** (उट + जन्=पैदाहोना वा बनाना) पु० पर्णशाला, पत्तों का घर, मुनिगृह।

प्रा० **उठना** (सं० उत्थान, उद्=ऊपर, स्था=ठहरना) क्रि० अ० खड़ा होना, २ उगना, ३ दूर होना, मौकूफ़ होना, अवालिश होना ४ खर्च होना, बरखास्त करना।

प्रा० **उठबैठ**—बोल० बेचैनी, उठना बैठना, कसरत।

प्रा० **उठाईगीरा**—गु० चोट्टा, ठग, उचक्का, हथमार।

प्रा० **उठाना** (सं० उत्थापन, उद्=ऊपर, स्था=ठहरना) क्रि० स० खड़ा करना, ऊंचा करना, २ उगाना, ३ दूर करना, ४ खर्च करना, ५ सहना, ६ उभारना, भड़काना।

प्रा० **उठादेना**—बोल० दूर करना, २ उभारना, भड़काना।

प्रा० **उड़ना** (सं० उत्=ऊपर, डी=उड़ना) क्रि० अ० पखेरू का आकाश में चलना।

प्रा० **उड़ाऊ** (उड़ना) गु० [illegible] बहुत खर्च करने वाला, वृथा खर्च करने वाला।

प्रा० **उड़ाना** (सं० उत्=ऊपर, डी=उड़ना) क्रि० स० पखेरू को उड़ने के लिये छोड़ना, २ लुटाना, गंवाना, फेंकना, नशाना, वृथा खर्च करना, ३ चुराना, ले लेना, ४ किसी चीज़ को हवा में छोड़ना।

प्रा० **उड़ाना पुड़ाना**—बोल० लुटाना, गँवाना, नशाना, वृथाखर्चक०

सं० **उड्डीन**—भा० पु० उड़ना, परवाज़ होना।

सं० **उड्डीयमान** (उत्=ऊपर, डी=उड़ना) क० पु० उड़नेवाला, आकाशगामी, नभचर।

सं० **उडु** (उड्=मिलना, वा उत्=ऊपर डी=उड़ना) पु० तारा, नक्षत्र।

सं० **उडुगण** (उडु=तारा, गण=समूह) पु० तारों का समूह।

सं० **उडुप** (उडु=नक्षत्र, जल, पा=पीना वा पालना) क० पु० चन्द्र, चांद, २ डोंगा, प्लव, कोल।

प्रा० **उढ़ाना** (सं० ऊर्णु, ढकना) क्रि० स० ढकना, कपड़ा पहनाना।

प्रा० **उढ़ैया** (सं० ऊर्णु, ढकना) क० पु० ओढ़ने वाला, पहनने वाला।

प्रा० **उतंग** (सं० उत्तुङ्ग, उद्=ऊपर, तुङ्ग ऊंचा) गु० बहुत ऊंचा।

प्रा० **उत**—क्रि० वि० उधर, वहां।

प्रा० **उतरनहोना** (सं० उत्तीर्ण, उद्=ऊपर, तॄ=पार होना) क्रि० अ० उऋण होना, ऋण से छूटना, क़र्ज़ से रिहा होना।

प्रा० **उतरना** (सं० उत्तरण, उद्=ऊपर, तॄ=पार होना) क्रि० अ० नीचे आना, २ ठहरना, टिकना, डेरा करना, वास लेना, विश्राम करना, ३ किनारे पहुंचना, पार होना, लांघना, ४ घटना, कम होना मंदाहोना, ५उदास होजाना, फीका पड़ना, (जैसे "उसका रंग उतरगया") ६ उऋण होना, क़र्ज़ से छुटना, ७ नशा कम होजाना, ८ किसी पद अर्थात् ओहदे से मौक़ूफ होजाना।

सं० **उत्कट**–गु० मत्त, अधिक, तीव्र, क्रोधी, गर्वी, भयानक, पु० क्रोध, गर्व, कठोर, उग्र, दुःसह।

सं०**उत्कण्ठा** (उद्=ऊपर, कठ=सोचना, वा चाह से याद करना) भा० स्त्री० लालच, चाह, चाहना, इच्छा, अभिलाषा।

सं० **उत्कण्ठित**–क० पु० उत्सुक, अभिलाषी, ख़्वाहिशमन्द।

सं० **उत्कर्ष** (उद्=ऊपर, कृष्=खेंचना) भा० पु० बड़ाई, सराह, प्रशंसा, उत्तमता, श्रेष्ठपन।

सं० **उत्कर्षता**–भा० स्त्री० श्रेष्ठता, प्रसन्नता, उत्तमता।

सं०**उत्कृष्ट** (उद्=ऊपर, कृष्=खैंचना) गु० उत्तम, सब से अच्छा वा बड़ा, श्रेष्ठ, प्रधान।

सं० **उत्खात** (उत्=ऊपर, खन्=खोदना) कर्म० पु० उन्मूलित, उखड़े हुये।

सं० **उत्तम** (उद्=ऊपर, तम=बहुतही बहुत) गु०श्रेष्ठ, सबसे अच्छा, मुख्य, पहला, प्रधान, मुखिया।

सं० **उत्तमर्ण**–पु० ऋणदाता, ब्योहरा, कर्ज़ देनेवाला।

सं० **उत्तमांग** (उत्तम=सबसे अच्छा वा मुख्य, अङ्ग=शरीर का एकभाग) पु० शिर, माथा, मस्तक।

सं० **उत्तर** (उद्=ऊपर, तॄ=पारहोना) पु० जवाब, उत्तर दिशा, प्रतिवाक्य, दिक्, सिम्त, गु० पिछला, पीछे।

सं० **उत्तराधिकारी** (उत्तर=पीछे, अधिकारी=वारिसअथवामालिक) पु० वारिस, जानशीन।

सं० **उत्तानपात्र**–पु० तवा, तावा।

सं० **उत्तरायण** (उत्तर=उत्तर दिशा, अयन=चाल) पु० आधावरस जब कि सूर्य विषुवत् रेखा के उत्तर की ओर रहता है, माघ से असाढ़ तक के छः महीने।

सं० **उत्तरार्द्ध** (उत्तर=पिछला, अर्द्ध=आधा) पु० पिछला आधा।

सं० उत्तीर्ण (उत्=ऊपर, तृ=पार जाना) कृ० पु० उल्लंघन, पारगत, पारपहुंचा, कामयाब।

प्रा० उत्तू–पु० परत, तह, चुनत घड़ी।

प्रा० उत्तूकरना–बोल० तह जमाना, चुनना।

सं० उत्तेजक–कृ० पु० धमकानेवाला, प्रेरणा करनेवाला।

सं० उत्तेजना (उत्=ऊपर, तिज्=तीक्ष्णकरना, भा० स्त्री० प्रेरणा करना, व्यग्रता करना, तीक्ष्णकरना, धमकाना, भड़काना, तेजकरना।

सं० उत्तेजित–पु० प्रेरित, धमकाया गया, भड़कायागया।

सं० उत्तोलन (उद्=ऊपर, तुल्=तोलना) पु० तोलना, ऊपर को उठाना।

सं० उत्थान (उद्=ऊपर, स्था=ठहरना) भा० पु० उठाना, उठाव, उद्योग।

सं० उत्थान एकादशी (सं० उत्थान उठना, एकादशी ग्यारहवीं तिथि) स्त्री० कातिक सुदी ११ जिस दिन विष्णु नींद से उठते हैं।

सं० उत्थापन (उद्=ऊपर, स्था=ठहरना) भा० पु० उठाना, उठाकर रखना।

सं० उत्पतन (उत्=ऊपर, पत्=गिरना) भा० पु० ऊपरसे गिरना।

सं० उत्पत्ति (उद्=ऊपर, पद्=जाना) स्त्री० जन्मना, पैदा होना पैदावारी, उगना।

सं० उत्पन्न (उद्=ऊपर, पद्=जाना) गु० पैदा हुआ, जन्माहुआ २ लाभ पाया हुआ।

सं० उत्पल (उद्=ऊपर, पल=जाना) पु० कमल, कँवल, नीलाकमल।

सं० उत्पाटन (उत्, पट=लपेटना वा उखाड़ना) भा० पु० उखाड़ना।

सं० उत्पात (उद्=ऊपर, पत् = गिरना) पु० उपद्रव, बखेड़ा, बिगाड़, हानि, अन्धेर।

सं० उत्पादक–कृ० पु० जनक, उत्पन्नक०

सं० उत्पादन–भा० पु० जनना, पैदा करना।

सं० उत्प्रेक्षा (उद्=ऊपर, प्र=बहुत, ईक्ष्=देखना भावना करना), भा० स्त्री० बराबरी, उपमा, तुल्यता, एक अलंकार का नाम, ढील, देर।

सं० उत्प्लुत (उत्+प्लु=कूदजाना) कृ० पु० तरऊपरहोजाना, लौटपौटजाना।

सं० उत्सव (उद्=ऊपर, सू=पैदा होना) पु० आनंद का काम, जैसे ब्याह, नाच, राग, रंग, आदि, पर्व, त्योहार, बड़ादिन।

सं० उत्सर्ग (उत् + सृज्=छोड़ना वा पैदाकरना) भा० पु० न्याय, त्याग, दान, रोकना, अर्पण करना।

सं० उत्साह (उद्=ऊपर, सह्=सहना) पु० आनंद, उछाह, खुशी, २ यत्न, उद्योग।

सं० उत्सुक (उद्+सू=पैदाहोना) गु० चाहने वाला।

प्रा० उथलना—क्रि० स० उलटना, औंधाना, तलेऊपर करना।

प्रा० उथलपुथल—वो० उलटपुलट, उलटा पुलटा, ऊपर नीचे, तले ऊपर, गटपट, गडबड, इधर का उधर, उधर का इधर।

सं० उद / उत (उ=शब्द करना) उप० ऊपर, ऊंचा, ऊपर की ओर, ऊंचाकिया हुआ, प्रकट, बड़ाई बल आदि अर्थोंमेंभी आताहै और जगह बल और पद अर्थात् दर्जे की अधिकाई में भी बोला जाता है और अधःकाउलटा है।

सं० उद / उदक (उन्द्=भिगोना) पु० पानी, जल।

सं० उदग्र (उद्=ऊपर, अग्र=सिरा वा नोक) गु० ऊंचा, तीखा, डरावना।

सं० उदधि (उद=पानी, धा=रखना) पु० समुद्र, सागर, जलनिधि।

सं० उदय (उद्=ऊपर, इ=जाना) पु० एक पहाड़ का नाम जहां से हिंदू मानते हैं कि सूर्य निकलता है, २ उगना, निकलना, ३ जोत, प्रकाश, ४ बढ़ना, बढ़ती, वृद्धि, उन्नति, भागमानी।

सं० उदयास्तावधि (उदय+अस्त+अवधि) स्त्री० निकलने और डूबने की सीमा।

प्रा० उदयहोना—क्रि० अ० सूर्यका निकलना, २ वृद्धि होना, उन्नति होना, भाग जागना, फूलना फलना।

सं० उदर(उद्=ऊपर, ऋ=जाना, वा उद, दृ=फाड़ना) पु० पेट।

सं०उदरम्भरि—पु० पेटार्थी पेटू।

सं० उदर्चि—पु० अग्नि, अग्निकी चिनगारी।

सं०उदात्त (उत्=ऊपर,आ=से, दा=देना)पु० ऊंचा स्वर, ऊंचेस्वर से बोलना, २ दान, ३ एक प्रकार का अलंकार।

सं०उदार (उद्=ऊपर, आ=से,रा=देना) गु० दातार, दाता, दानी देनेवाला,बड़ा,सीधा,सरल,गंभीर।

सं० उदारता (उदार) भा० स्त्री० दातारी, सखावत।

सं० उदास (उद्=ऊपर, आस्=बैठना) पु० वैराग्य, एकान्त में बैठना, गु० मलिन, अनमना, चिंता करताहुआ, दुःखित,दुःखी, संतापी, २ बेपरवाह।

सं० उदासी (उदास) गु० वैरागी, एकांत में रहने वाला, मित्र और

वैरी को बराबर देखने वाला, २ मलिन, स्त्री० शोच, मलिनता, चिंता, फ़िक्र, दुःख, संताप ।

सं० **उदासीन** (उद्=ऊपर, आस्=बैठना) पु० संन्यासी, वैरागी, योगी, अतिथि, वनवासी, तपसी, जिसने संसार छोड़ दिया और जिस के मित्र और वैरी बराबर हों, त्यागी, वानप्रस्थ ।

सं० **उदाहरण** (उद्=ऊपर, आ=से, हृ=लेना) पु० दृष्टांत, मिसाल ।

सं० **उदित** (उद्=ऊपर, इ=जाना) क० पु० कहाहुआ, निकलाहुआ, प्रकाशित, प्रकट, बढ़ा हुआ ।

सं० **उदीची**=उत्तरदिशा ।

सं० **उदीरण** (उत्, ईर्=प्रेरणा क०) भा० पु० कथन, कहना ।

सं० **उदीरित**—कर्म० पु० कथित, कहा गया ।

सं० **उद्गार** (उद्=ऊपर, गृ=निगलना) पु० वमन, डकार, सुख, दुःख, विस्मय ।

प्रा० **उघारना** (सं० उद्घाटन, उत्=ऊपर, घट्=खोलना) क्रि० स० खोलना, उघारना ।

सं० **उद्दाल** (उद्=ऊपर, दल्=दो टुकड़े करना) पु० एक ऋषि का नाम जो छः महीनेमें एकबार खाताथा ।

सं० **उद्दिष्ट**—कर्म० पु० लक्षित, दिखाया गया ।

सं० **उद्देश** (उद्=ऊपर, दिश्=देना) पु० चाह, २ अनुसंधान, खोज, पता, प्रयोजन, मतलब, जिस के विषय में कुछ कहा जाय ।

सं० **उद्धरण** (उत्=ऊपर, हृ=लेना) भा० पु० उद्धार करना, मुक्ति देना ।

सं० **उद्धार** (उद्=ऊपर, हृ=लेना) पु० बचाव, छुटकारा, मुक्ति, निस्तारा ।

सं० **उद्धृत**-कर्म० पु० ऊंचाकियागया, उठाया गया ।

सं० **उद्भव** (उद्=प्रकट, भू=होना) पु० पैदा होना, जन्म, उत्पत्ति ।

सं० **उद्यत** (उद्=ऊपर, यम्=रोकना) गु० तैयार, लगाहुआ, प्रवृत्त, पु० अध्याय ।

सं० **उद्यम** (उद्=ऊपर, यम्=रोकना, पर उद् उपसर्ग के साथ आने से यत्न करना होता है) भा० पु० यत्न, उपाय, परिश्रम, मिहनत, कोशिश, उद्योग, पेशा ।

सं० **उद्यान** (उद्=ऊपर, या=जाना) भा० पु० बाग, बगीचा, उपवन, २ मतलब, प्रयोजन ।

सं० **उद्यानपाल** (उद्यान=फुलवाड़ी, पाल=पालना) क० पु० माली, बाग़बान ।

सं० **उद्योग** (उद्=ऊपर, युज्=मिलना) पु० उपाय, उद्यम, यत्न, परिश्रम, पेशा

सं० उद्योत (उद्=ऊपर, द्युत्=चमकना) पु० चमक, उजाला, प्रकाश।

सं० उद्वाह—पु० विवाह, ब्याह।

सं० उद्विग्न (उद्=ऊपर, विज्=डरना, कांपना) गु० व्याकुल, उदास, शोच में।

सं० उद्वेग (उद्=ऊपर, विज्=डरना, कांपना) पु० घबराहट, व्याकुलता, चिंता, शोच, डर।

प्रा० उधारना (सं० उद्धारण, उद्=ऊपर, हृ=लेना) क्रि० स० मुक्ति देना, छुटकारा करना, पार करना, बचाना, तारना।

प्रा० उधेड़ना—क्रि० स० खोलना, सुलझाना।

प्रा० उधेड़बुन (उधेड़ना + बुनना) बोल० मिहनत, झंझट, काम, धंधा।

सं० उन्नत (उद्=ऊपर, नम्=झुकना) गु० ऊंचा, लंबा, वर्द्धित।

सं० उन्नति (उद्=ऊपर, नम्=झुकना) स्त्री० ऊँचाई, २ बढ़ती, बढ़ंति, वृद्धि, उदय, तरक़ी।

सं० उन्नमित (उत्=ऊपर, नम्+इत) कर्म० पु० झुकायागया, लचायागया।

सं० उन्मत्त } उन्मद } (उद्=ऊपर, मद्=मस्त होना) क० पु० मतवाला, पागल, सिड़ी, बौराहा, नशेबाज, प्रमादी।

सं० उन्माद (उद्=ऊपर, मद्=मस्त होना) क० पु० सिड़ीपन, बौराहापन, पागलपन, अचेतता।

सं० उन्मान=तुलादिकीतौल, तराजू की तौल।

सं० उन्मीलन (उत्, मील=मींचना) भा० पु० खिलना, फूलना, विकसना।

सं० उन्मुख= अभिमुख, सन्मुख, सामने, उत्सुक, उत्कंठित।

सं० उन्मूलन (उत्=ऊपर, मूल=जमाना, रोपना, उत् उपसर्ग से उखाड़ना अर्थ होगया) भा० पु० उत्पाटन, उखाड़ना, ऊपर खींचना।

सं० उप-उपस० समीप, पास, बराबर, छोटा, कम, न्यून, अधिक, आरंभ, पूजा, शुरूअ, नाश, यह उपसर्ग दुर का उलटा है।

सं० उपकार (उप=पास, कृ=करना) पु० कृपा, भला, सहायता।

सं० उपकारी (उपकार) क० पु० उपकार करनेवाला, भला करनेवाला, सहायक, कृपाल।

सं० उपकारिणी-स्त्री० उपकार करनेवाली।

सं० उपक्रम (उप=आरंभ, क्रम्=जाना अर्थात् शुरूअ होना) भा० पु० प्रारंभ, आरंभ, शुरूअ, तितिम्मा, ज़मीमा, सूचना, भूमिका, उपधा।

प्रा० उपखान (सं० उपाख्यान, ख्या=कहना) पु० कथा, इतिहास।

सं० **उपगम** (उप=समीप, गम्=जाना) पु० यात्रा, प्राप्ति, स्वीकार, पासजाना, उदय।

सं० **उपगुरु**=छोटा पाठक, छोटा मास्टर, मानीटर।

सं० **उपचार** (उप=पास, चर=चलना) पु० सेवा, मन्त्र का जपना, २ वैद्य का काम, इलाज, चिकित्सा, उपाय, यत्न, ३ घूस, रिशवत।

प्रा० **उपज** (सं० उप=पास, जन्=पैदा होना) स्त्री० बिन सोचने के जो कुछ बात उसी दम कही जाय वा-कुछ गाया जाय, गान, तान, अन्तरा।

प्रा० **उपजना** (सं० उप=पास, जन्=पैदा होना वा उत्पन्न होना) क्रि० स० उगना, बढ़ना, पैदा होना, अंकुर निकलना।

प्रा० **उपजाऊ** (उपजना) गु० उर्वरा।

सं० **उपजाप** (उप=पास, जप्=जपना) भा० पु० मक्र, फरेब, कपट।

सं० **उपजीवी** (उप+जीव=जीना) क० पु० आश्रयी, आसरागीर, अवलम्बी।

प्रा० **उपड़ना** (सं० उत्पाटन, उद्=ऊपर, पट्=जाना) क्रि० अ० उखड़ना।

सं० **उपदंश** (उप+दंश=काटना) पु० गर्मी का रोग, नासका काटना।

सं० **उपदा** (उप, दा=देना) स्त्री० भेंट।

सं० **उपदेश** (उप=पास, दिश्=देना) भा० पु० शिक्षा, सीख, सिखावन, नसीहत, सम्मति, सलाह, २ मंत्रदेना।

सं० **उपदेशक** / **उपदेशी** / **उपदेष्टा** (उपदेश) क० पु० उपदेशदेनेवाला, शिक्षक, गुरु, आचार्य्य।

सं० **उपद्रव** (उप=नाश, द्रु=जाना) पु० बखेड़ा, उत्पात, उपाध, बिगाड़, अन्याय, अन्धेर।

सं० **उपद्वीप** (उप=छोटा, द्वीप=धरती का टुकड़ा) पु० टापू, छोटाद्वीप।

सं० **उपधान** (उप=पास, वा ऊपर, धा=रखना) पु० तकिया।

सं० **उपनयन**-पु० यज्ञोपवीत (उपनीत, जनेऊ।

सं० **उपनिषद्** (उप=पास, नि=अच्छी तरहसे, सद्=जाना) पु० वेद का उत्तम भाग, वेद का अंग, वेदान्त शास्त्र।

सं० **उपनेत्र** (उप=पास, नेत्र=आंख) पु० चश्मा, आंखोंका सहायक काँच।

सं० **उपन्यास** (उप=ऊपर, न्यास=रखना) भा० पु० न्यास, हाथ, कथन, करना, रखना, स्थापन।

सं० **उपपत्ति** (उप=पास, पद्=जाना) स्त्री० युक्ति, योजना, २ सबूत, शोधन, समाधान, प्रमाण।

सं० **उपपातक** (उप=छोटा, पातक=पाप) पु० छोटा पाप, [illegible]

गोहत्या, लड़कीको बेचना आदि।

सं० उभयपक्षीय-गु० तर्फ़ैन, दोनों ओर के।

सं०उपमा (उप=बराबर, मा=नापना) भा० स्त्री०बराबरी, समानता, सादृश्य, तुल्यता, दृष्टांत, मिसाल, एक अलंकार का नाम।

सं० उपमान (उप=बराबर+मान, माप) पु० पूर्णगुणवाला, मुशब्बा बिही, अवर्ण्य।

सं० उपमेय (उप=बराबर+मेय=कियाजाय) न्यून गुणवाला, मुशब्बा, वर्ण्य।

सं० उपयुक्त (उप=बराबर,युज्=मिलना) गु० योग्य, ठीक, उचित, शामिल।

सं० उपयोग- पु० इस्तअमाल, युक्त करना।

सं० उपयोगी (उप=बराबर,युज्=मिलना) गु० अनुकूल, सहायक, योग्य, ठीक, इस्तअमालके लायक।

प्रा०उपरना- पु० दुपट्टा, एकपट्टा, २ ओढ़नी, अचला।

सं० उपराग(उप=पास,रञ्ज्=रँगना) पु० ग्रहण, गहन।

प्रा० उपरांत (सं० उपरि=ऊपर, अन्त=सिरा) क्रि० वि० पीछे, फिर, इसके पीछे।

सं० उपरोक्त (ऊपर+उक्त,वच=कहना) म्मं० ऊपर कहाहुआ मज़कूरावाला।

प्रा०उपरोहित (सं०पुरोहित) पु० कुलगुरु, पुरोधा, पुरोहित।

सं० उपल (उप=पास, नी=लेजाना उप उपसर्ग के साथ आने से अ फैलाना हुआ अर्थात् जिस पहाड़ फैल जाता है) पु० पत्थ पाषाण।

सं० उपलब्धि (उप=ऊपर, लभ् लाभ) भा० स्त्री० प्राप्ति, हासिल मिलना।

सं० उपलसित (उपल=पत्थर,सि त=सफ़ेद) पु० संगमर्मर।

सं० उपवन (उप=बराबर, वन जंगल) पु०बाग, बग़ीचा, फुलवाई बाड़ी, वाटिका।

सं० उपवास (उप,वस्=रहना, उप उपसर्ग के साथ आने से इसक अर्थ उपास करना होता है) भा पु० व्रत, लंघन, उपास, अनाहा भूखों रहना।

सं०उपवीत (उप=पास, अञ्=ज ना) पु० जनेऊ, यज्ञसूत्र।

सं० उपवेद (उप=बराबर,वेद)पु १ आयुस् २ गन्धर्व ३ धनुष ४ स्थ पत्य इन्हीं चार विद्याओं को उपवे कहते हैं जो वेद से निकली हैं। मैं से आयुस् विद्या, ब्रह्मा, इन्द्र औ

धन्वन्तरी आदि से फैली है। उसमे रोगों की पहचान और औषधी आदि का वर्णन है। दूसरी गन्धर्व विद्या को भरत ने निकाली और फैलाई। और तीसरी धनुष विद्या को विश्वामित्र ने राजपूतोंको शस्त्रों के काम में लाने के लिये निकाली। और चौथी स्थापत्य विद्या को ६४ कलों के काम मे लाने के लिये विश्वकर्म्मा ने निकाली।

सं० उपवेष्टन (उप=ऊपर,विश्=लपेटना) भा० पु० लपेटना, बसना, जामा।

सं० उपशम (उप+शम्=रोकना, वा दबाना) भा०पु०शान्ति,समता, समाई, इन्द्रियनिग्रह।

सं० उपसर्ग (उप=पास, सृज्=पैदा होना) पु० अव्यय जो क्रियाके साथ लगाये जातेहैं, जैसे प्र, परा, अप, सम, अनु, अव, आदि, २ उपद्रव, पीड़ा, प्रेत, ग्रह, उत्पात, अमंगल, उत्पत्ति।

सं०उपस्थान (उप=पास,स्था=ठहरना) भा०पु० उपस्थित, मौजूदगी, सेवा, नज़दीकी, हाजिरी, स्तुति, पूजा।

सं०उपस्थित (उप=पास, स्था=ठहरना) गु० तैयार, हाजिर, सामने, पास ठहरा हुआ, पास आया हुआ।

सं०उपस्थितिपत्र पु० नक़शाहाजिरी

सं० उपहार (उप=पास,हृ=लेना) पु० भेट, पूजा।

सं० उपहास (उप=दोषकहना,हास=हँसी, हस्=हँसना) भा० पु० ठट्ठा, हँसी, निंदा के साथ हँसी करना, बोली ठोली बोलना, परिहास, ठट्ठा।

सं० उपहासक (उप+हास+अक) क०पु० हँसनेवाला,मसखरा।

सं० उपहास्य (उप+हास्+य) र्म्म० पु० हँसनेयोग्य, निन्दायोग्य, निन्दनीय।

सं० उपाख्यान (उप, आ, ख्या=प्रकट करना) पु० पुरानी कहानी इतिहास, बात, कहानी, कथा।

प्रा० उपाड़ना (सं०उत्पाटन,उद्=ऊपर,पट्=जाना) क्रि०सं०उखाड़ना।

प्रा० उपाध (सं० उप, आ, धा=रखना) स्त्री० बखेड़ा, बिगाड़,उपद्रव, अन्याय।

सं० उपाधान (उप+आधान) धि० तकिया, बालीन।

सं० उपाधि (उप=पास, आ=से, धा=रखना) स्त्री० धर्मकी चिन्ता, २विशेषण,नाम,पदवी,३छल,कपट।

सं० उपाधिकारक (उपाधि+कारक, कृ=करना) क०पु० झगड़ालू, मुफ़सिद, फ़सादी।

सं० उपाध्याय (उप=पास, आ=से, अधि+इ=पढ़ना) पु० आध्यापक, पढ़ानेवाला, पाठक, शिक्षक, मुदर्रिस, गुरु ।

सं० उपानह् (उप, आ, नह=बांधना) पु० जूता, पगरखी, पनही, पापोश ।

प्रा० उपाना (सं० उत्पन्न) क्रि० स० पैदा करना, इकट्ठा करना, कमाना ।

सं० उपाय (उप=पास, अय्=जाना वा, उप, आ, इण्=जाना) पु० यत्न, तदबीर, उद्यम, उद्योग, मिहनत, साधन, २ इलाज ।

सं० उपायी-क० साधक, यत्नी, तदबीरी ।

सं० उपायन-पु० भेंट, नज़र, उपहार, पास जाना ।

सं० उपार्ज्जन (उप=पास, अर्ज्=इकट्ठाकरना) भा० पु० इकट्ठाकरना, संग्रह, संचय, कमाई ।

सं० उपार्ज्जित—र्म० संचित, जोड़ा हुआ ।

सं० उपार्ज्जनीय (उपार्ज्जन+अनीय) र्म० पु० संग्रह योग्य, जोड़ने लायक़ ।

सं० उपालम्भ (उप+आ, लभ्=कठोर वचन क०) भा० पु० शिकायत, गिला, उरहना, वार्ता, वार्तें ।

सं० उपालम्भन-भा० पु० छज्जन-न, गवाक्ष, खिड़की ।

सं० उपासक (उप=पास, आस्=बैठना) क० पु० उपासनाकरनेवाला, पूजनेवाला, सेवक, दास, भक्त ।

सं० उपासना (उप=पास, आस्=बैठना) स्त्री० सेवा, पूजा, टहल, भक्ति, देवता की पूजा, आराधना ।

प्रा० उपास (सं० उपवास) पु० व्रत, लंघन, अनाहार, उपवास, भूखा रहना ।

सं० उपासनीय (उप+आस्+अनीय) र्म० सेवा योग्य, आराध्य, सेव्य, खिदमत के लायक़ ।

सं० उपास्य (उप=पास, आस्=बैठना) र्म० उपासना करने योग्य, पूजन योग्य, आराधना करने योग्य ।

सं० उपेक्षा (उप=पास + ईक्ष्=देखना, उपके लगने से छोड़ना अर्थ होगया) भा० स्त्री० त्याग, ढील, ग़फ़लत ।

सं० उपेक्षित (उप+ईक्षित) र्म० पु० छोड़ागया, त्यक्त ।

सं० उपेत (उप+इ+त, इ=जाना) क० शामिल, युक्त ।

सं० उपेन्द्र (उप=छोटा, इन्द्र=देवताओं का राजा) पु० वामन, इन्द्र का छोटा भाई, विष्णु जब वामन अवतार लिया तब इन्द्रके छोटे भाई हुये थे ।

प्रा० उफनना (सं० उद्=ऊपर,

फगु=जाना) क्रि० अ० बहुत आंच लगने से दूध अथवा और किसी चीज़ का हांड़ी अथवा बट-लोही से बाहर निकल आना।

सं० उबकना—क्रि०अ०वमनहोना, कै होना, उलटी होना, रद्दकरना।

प्रा० उबटन } (सं० उद्वर्त्तन: उद्, उबटना } वृत्=होना) पु० शरीर का मैल उतारने के लिये आटा सरसों बेसन आदि की बनी हुई चीज।

प्रा० उबलना (सं०उद्=ऊपर,वल्=जाना) क्रि० अ० उफलना, खौलना, ओटना, मीलना, खलबलाना, उसीजना।

प्रा० उबसना—क्रि० अ० सड़ना, गलना, पचना, बिगड़ना।

प्रा० उबारना (सं०उद्धारण) क्रि० सं० बचाना, छुड़ाना, रखना।

सं० उभय } गु० दो, दोनों, आप प्रा० उभौ } स में।

प्रा० उभरना (सं०उद्=ऊपर, भृ=भरना) क्रि० अ० उमड़ना, बढ़ना, बहुत भरना, निकलना, निकल आना, २ उठना, उठआना।

प्रा० उभारना—क्रि० स० फुलाना, उकसाना, खड़ा करना, भड़काना।

प्रा० उमंग—स्त्री० बहुत खुशी, आनंद, मग्नता, २ चाह, इच्छा, अभिलाष, ३ धुन, तरंग, लहर।

प्रा०उमंडना } क्रि० अ० छलकउमड़ना } ना, बहुत भरनेसे फूट निकलना, झलकना, बहना, जल थल होना।

प्रा० उमंड उमंड कर रोना—बोल० फूट फूट के रोना।

सं०उमा (उ=शिव, मा=मानना, वा "ओ शिवस्य मा=लक्ष्मी:" शिव की लक्ष्मी, या उ=हे, मा=मत "हे वत्स मा कुरु" जैसे कुमारसंभवकाव्य मे लिखा है "उमेति मात्रातपसो निषिद्धा पश्चादुमाख्यां सुमुखी जगाम" अर्थात् जब पार्वती तप करने को जाती थी तब उसकी मा ने कहा कि हे बेटी तप मतकर) स्त्री० पार्वती, दुर्गा, शिवा, शिवराणी, गिरिजा, भवानी, रुद्राणी।

सं०उमापति (उमा=पार्वती, पति =भर्त्ता) पु०महादेव, शिव।

सं० उमासुत (उमा=पार्वती, सुत =बेटा) पु० कार्त्तिकेय, देवताओं का सेनापति।

सं०उमेश (उमा=पार्वती,ईश=पति) पु० महादेव, शिव।

प्रा० उर (सं०उरस्, ऋ=जाना) पु० छाती, हिरदा, हृदय, वक्षस्थल

सं० उरग (उरस्=छाती, गम्=चलना जो छाती से चले) पु० सांप, नाग, सर्प, भुजंग।

सं० उरगाद (उरग=सांप, अद्=खाना) पु० गरुड़, विष्णुकावाहन।

सं० उरगारि (उरग=सांप, अरि=वैरी) पु० गरुड़, विष्णुकावाहन।

सं० उरु (ऊर्णु=ढकना) स्त्री० जांघ, जंघा, रान, गु० चौड़ा, विशाल, बड़ा, बहुत, अधिक।

प्रा० उरिण (सं० अनृण, अन=नहीं, ऋण=क़र्ज़) गु० बिन क़र्ज़, ऋण से छूटना, उतरना।

सं० उर्व्वरा (उरु=बड़ा, चौड़ा, ऋ=जाना) स्त्री० उपजाऊ धरती।

सं० उर्वशी उरु=बहुत, अश्=वश करना, जो अपने रूप से बहुतों को वश कर लेती है, स्त्री० एक अप्सरा का नाम, स्वर्ग की वेश्या।

सं० उर्व्वी उरु=बड़ा, चौड़ा) स्त्री० धरती, पृथ्वी, जमीन।

सं० उर्व्विजा (उर्व्वी=धरती, जन्=पैदा होना) स्त्री० सीता, जानकी, कहते हैं कि जब राजा जनक यज्ञ के लिये धरती जोतते थे तब जमीन में मे सीता जी निकली थीं।

प्रा० उलझना— क्रि०अ० फँसना, लिपटना, २ झगड़ना।

प्रा० उलटना- क्रि० स० फेरना, पलटना, दोहराना, मोड़ना, तले ऊपर करना, नीचे ऊपर करना, औंधाना।

प्रा०उलट पुलट- बो० उथल पुथल, ऊपर नीचे, तले ऊपर, गटपट, गड़बड़, इधर का उधर, उधर का इधर।

प्रा० उलथा- पु० तर्जुमा, अनुवाद।

प्रा०उलहना (सं० उपालम्भ,उप,आ, लभ्=पाना) पु० शिकायत, पुकार निंदा, दोष।

प्रा०उलहनादेना-बो० शिकायत करना,पुकारना।

प्रा०उलीचना- क्रि० स० उँड़ेलना, जल सींचना, पानी लेना।

सं० उलूक(वल्=घेरना) पु० उल्लू, घुघुआ।

सं० उल्का (उष्=जलाना) स्त्री० लूका आग वा तारा जो आकाश से गिरता है।

सं० उल्लङ्घन (उद्=ऊपर, लाघि=पार होना) पु० उलटा करना,रीति तोड़ना, २ लांघना।

सं० उल्लास (उद्=ऊपर,लस्=खेलना, खुशी करना) पु० हर्ष, आनंद, हुलास, खुशी,प्रसन्नता, २ अध्याय, परिच्छेद।

सं० उल्लङ्घन (उद=ऊपर,लघ्+अ न,लघ=जाना) भा० पु० पार होना,

पार उतरना, लांघजाना, फांद जाना।

प्रा० उल्लू (सं० उलूक) पु० घुघुआ, पेचा, उलूक, एक जानवर का नाम, २ गँवार, मूर्ख, उज्जड़।

सं० उल्लेख (उद्, लिख्=लिखना) भा० पु० वर्णन, वखान, २ एक अलंकार का नाम।

सं० उशना (वश्+उशन, वश्=रहना) पु० शुक्राचार्य्य, दैत्यगुरु।

सं० उषा (उष्=चमकना) पु० भोर, तड़का, पोह, प्रभात, स्त्री० वाणासुर की बेटी और अनिरुद्ध की स्त्री।

सं० उष्ट्र (उष्=मारना) पु० ऊंट।

सं० उष्ण (उष्=जलाना) गु० गरम।

सं० उष्णिक=पगड़ी, सिरवन्द।

सं० उष्णता (उष्ण=गरम) स्त्री० गरमी।

सं० उष्मा (उष्=जलाना, वा गरम होना) स्त्री० गरमी, घूर, ताप।

प्रा० उसरना (सं० अपसरण, अप=पीछे, सृ=जाना) क्रि० अ० टलना, पीठदेना, हटना।

प्रा० उसारा—पु० ओसारा, डिहुड़ी, बरामदा।

प्रा० उसास (सं० उच्छ्वास, उद्=ऊंचा, श्वास=सांस) पु० सांस, ऊंचा सांस।

प्रा० उसीसा (सं० उच्छीर्षक, उद्=ऊपर, शीर्ष=सिर) पु० सिरहाना, तकिया।

ऊ

सं० ऊ (अव्=बचाना) पु० महादेव, ब्रह्मा, प्रश्नवाक्य) बन्धन, मोक्ष प्रधान, २ चांद, वि० बो० है।

प्रा० ऊंघना—क्रि० अ० निद्रालु होना, झपकी लेना, आंख लगाना।

प्रा० ऊंच, ऊंचा (सं० उच्च) गु० लंबा, ऊपर।

प्रा० ऊंचा बोलबोलना—बोल० घमंड से बोलना, अभिमान से बोलना।

प्रा० ऊंचासुनना—बोल० कमसुनना।

प्रा० ऊंचाकानी—बो० बहरापन।

प्रा० ऊंचेबोलका बोलनीचा—बोल० जो कोई किसी को घमंडका बोल बोलता है वह अन्त में आप हलका और नीचा होता है।

प्रा० ऊंट (सं० उष्ट्र, उष्=मारना) पु० एक जानवर का नाम।

प्रा० ऊंटकटारा—पु० एक तरह के कँटीले पेड़ का नाम जिसको ऊंट चरते हैं, भरभांड, ऊंटकटाई।

प्रा० ऊख (सं० इक्षु) स्त्री० ईख, केतारी, गन्ना।

प्रा० ऊद, ऊदविलाव (सं० उद्र, उन्द्=भिगोना) पु० एक पानी के जानवर का नाम।

प्रा० ऊदा (सं० अवदात, अव, दै=शुद्ध करना) गु० भूरा, धुंरजा

ॠ

सं० ॠ- स्त्री० देवताओं की मा, २ दानवों की मा, पु० शिव, भैरव, राक्षस, वि० बो० भय और निंदा को जतलानेवाला, अव्यय।

—०—

ए

सं० ए (इण्=जाना) पु० विष्णु, वि०बो० हे, संबोधन का सूचक।

सं० एक (इण्=जाना) पु० गिन्ती का पहला अंक, २ मुख्य, प्रथम, पहला, प्रधान, केवल, सिर्फ।

प्रा० एकआध—बोल० कुछ, थोड़ा, एक या आधा।

प्रा० एककी दशसुनाना—बोल० यह बोल चाल वहां बोला जाता है जब कि कोई आदमी किसी को एक बुरी बात कहे अथवा एक गाली दे तो उस के बदले में बहुत सी बुरी बातें कहें और बहुतेरी गालियां दें।

सं० एकचित्त (एक, चित्त=मन) गु० एक मन, जिसका ध्यान किसी एकही चीज पर हो।

सं० एकत्र (एक+त्र, जगह अर्थ में प्रत्यय) क्रि० वि० एक बार, एक समय।

सं० एकधा (एक+धा, प्रकार अर्थ में प्रत्यय) क्रि० वि० एक भांति, एक प्रकार।

प्रा० एकनएक—बोल० एक या दूसरा।

प्रा० एकरत्ती—बोल० बहुत थोड़ा।

सं० एकरस—पु० जो एकसा रहै, जन्म मरण रहित।

सं० एकरूप (एक, रूप=डौल) पु० बराबर, एकसा, सरीखा, सदृश।

प्रा० एकला } एकेला } (सं० एकुल, एक, ला=लेना) गु० अकेला, केवल, निराला, सिर्फ, तनहा। [एकही (बेटा)।

प्रा० एकलौता (सं० एकल) गु०

सं० एकसर (एक, सृ=जाना) क्रि० वि० एक साथ।

प्रा० एकसे दिन न रहना—बोल० सदा कोई धनवान् रहता है न ग़रीब, दशा का फेरफार होना।

प्रा० एका (सं० ऐक्य=एकपन) पु० मेल, मिलाप, किसी काम के

पु० काना, एक आंख वाला, एक चश्म, कोर, २ कागा, कौआ।

सं०एकाग्र (एक, अग्र=आगे) गु० एकचित्त, एकमन, एकदिल, किसी काम में लगाहुआ।

सं० एकादशी (एक+दशन्=दश) स्त्री०ग्यारहवीं तिथि, हिंदी महीने के पख में ग्यारहवां दिन।

सं०एकाधिपति (एक, अधिपति, राजाधिराज) पु० चक्रवर्तीराजा।

सं० एकान्त (एक, अन्त=हद) गु० एक ओर, एकतरफ़,अलग, निराला, किनारे, जुदा, आपही आप, भिन्न, निर्जन।

अं०एग्रीकलचरलकान्फ्रैंस=कृषी विषयकसभा,खेतोंके बारेमें कमेटी।

अं०एञ्जिनियर=यंत्रज्ञ, इमारत बनानेवाला।

अं०एज्यूकेशनल्=शिक्षा,तअलीम।

प्रा०एड-स्त्री०एड़ी, २ एड़ीकी मार, घोड़े के चलाने के लिये एड़ी की ठोकर।

प्रा०एड़मारना-बोल० ठोकर मारना, एड़ी की ठोकर मारके घोड़े को चलाना।

प्रा०एड़ी-स्त्री० पैरका पिछला भाग।

अं०एड्रेस=अभिवादनपत्र, सिरानामा, पता, सिरनामा, लिफ़ाफ़ा, बयान करना, अर्जकरना।

सं०एतत्-सर्वना० यह।

सं०एतदर्थ=इसवास्ते।

प्रा०एतवार(सं० आदित्यवार) पु० इतवार, रविवार, आदित्यवार।

सं०एतादृश-गु०इसीतरहसे,ऐसाही।

सं०एतावत् गु० इतना, इतनी।

सं०एरण्ड (ईर्=जाना) पु० अरंड, रेंड, एक पेड़ का नाम।

सं०एला (इल्=जाना, भेजना) स्त्री० इलायची, एलाची।

सं०एवम् (इण्=जाना) समुच्च० इसप्रकार, इसभांति, इसतरह।

—:०:—

ऐ

सं०ऐ पु०शिव, बुलाना, संबोधन।

अं०ऐक्ट=नियम, क़ायदा।

सं०ऐक्यता-भा० पु० मेल, इत्तिफ़ाक़, एकमत। [उर्दू।

अं० ऐंग्लोवर्नाक्युलर= अंगरेजी-

प्रा०ऐंचना-क्रि०स०खैंचना,तानना।

प्रा०ऐंठ (ऐंठना) स्त्री० बल, वट, मरोड़,अकड़, २ गांठ।

प्रा०ऐंठना-क्रि० स० कतना, तानना, खींचना, जकड़ना, क्रि० अ० अकड़ना,मरोड़खाना,बलखाना,२इतराना, फूलना, ऐंठ के चलना, अकड़के चलना।

सं०ऐरावण } (इरावत् समुद्र, ऐरावत } इरा=पानी, इर्=

ऋ

सं० ऋ- स्त्री० देवताओं की मा, २ दानवों की मा, पु० शिव, भैरव, राक्षस, वि० बो० भय और निंदा को जतलानेवाला, अव्यय।

—०—

ए

सं० ए (इण्=जाना) पु० विष्णु, वि०बो० हे, संबोधन का सूचक।

सं० एक (इण्=जाना) पु० गिन्ती का पहला अंक, २ मुख्य, प्रथम, पहला, प्रधान, केवल, सिर्फ।

प्रा०एकआध—बोल० कुछ, थोड़ा, एक या आधा।

प्रा० एककी दशसुनाना—बोल० यह बोल चाल वहां बोला जाता है जब कि कोई आदमी किसी को एक बुरी बात कहे अथवा एक गाली दे तो उस के बदले में बहुत सी बुरी बातें कहे और बहुतेरी गालियां दें।

सं० एकचित्त (एक, चित्त=मन) गु० एक मन, जिसका ध्यान किसी एकही चीज पर हो।

सं०एकत्र (एक+त्र, जगह अर्थ में प्रत्यय) क्रि० वि० इकट्ठा, एकठौरा, एक जगह। [हुआ।

सं०एकत्रित—स्त्री० गु० इकट्ठाकिया

सं० एकदा (एक+दा, समय अर्थ में प्रत्यय) क्रि० वि० एक बार, एक समय।

सं० एकधा (एक+धा, प्रकार अर्थ में प्रत्यय) क्रि० वि० एक भांति, एक प्रकार।

प्रा०एकनएक—बोल०एक या दूसरा।

प्रा०एकरत्ती—बोल० बहुत थोड़ा।

सं० एकरस—पु० जो एकसा रहै, जन्म मरण रहित।

सं० एकरूप (एक,रूप=डौल) पु० बराबर, एकसा, सरीखा, सदृश।

प्रा० एकला } (सं० एकल, एक,
एकेला } ला=लेना) गु० अकेला, केवल, निराला, सिर्फ, तनहा। [एकही (बंटा)।

प्रा०एकलौता (सं० एकल) गु०

सं० एकसर (एक,सृ=जाना) क्रि० वि० एक साथ।

प्रा०एकसे दिन न रहना—बोल० सदा कोई धनवान् रहता है न गरीब, दशा का फेरफार होना।

प्रा० एका (सं० ऐक्य=एकपन) पु० मेल, मिलाप, किसी काम के करने के लिये आपस में एक सलाह करना, साजिश।

प्रा० एकाएकी (सं० एक) क्रि० वि० अचानक,एकबारमें,दफाअतन्।

सं० एकाक्ष (एक, अक्षि=आंख)

पु० काना, एक आंख वाला, एक चश्म, कोर, २ कागा, कौआ।

सं०एकाग्र (एक, अग्र=आगे) गु० एकचित्त,एकमन, एकदिल, किसी काम में लगाहुआ।

सं० एकादशी (एक+दशन्=दश) स्त्री०ग्यारहवीं तिथि, हिंदी महीने के पख में ग्यारहवां दिन।

सं०एकाधिपति (एक, अधिपति, राजाधिराज) पु० चक्रवर्तीराजा।

सं० एकान्त (एक, अन्त=हद) गु० एक ओर, एकतरफ़,अलग, निराला, किनारे, जुदा, आपही आप, भिन्न, निर्जन।

अं०एग्रीकलचरलकान्फ्रैंस=कृषी विषयकसभा,खेतोंके बारेमें कमेटी।

अं०एञ्जिनियर=यंत्रज्ञ, इमारत बनानेवाला।

अं०एज्यूकेशनल्=शिक्षा,तअलीम।

प्रा०एड़—स्त्री०एड़ी, २ एड़ीकी मार, घोड़े के चलाने के लिये एड़ी की ठोकर।

प्रा०एड़मारना—बोल० ठोकर मारना, एड़ी की ठोकर मारके घोड़े को चलाना।

प्रा०एड़ी—स्त्री० पैरका पिछला भाग।

अं०एड्रस=अभिवादनपत्र, सिपासनामा, पता, सिरनामा, लिफ़ाफ़ा, बयान करना, पर्सकरना।

सं०एतत्—सर्वना० यह।

सं०एतदर्थ=इसवास्ते।

प्रा०एतवार(सं० आदित्यवार) पु० इतवार, रविवार, आदित्यवार।

सं०एतादृश.गु०इसीतरहसे,ऐसाही।

सं०एतावत् गु० इतना, इतनी।

सं०एरण्ड (ईर्=जाना) पु० अरंड, रेंड, एक पेड़ का नाम।

सं०एला (इल्=जाना, भेजना) स्त्री० इलायची, एलाची।

सं०एवम् (इण्=जाना) समुच्च० इसप्रकार, इसभांति, इसतरह।

—:०:—

ऐ

सं०ऐ.पु०शिव, बुलाना, संबोधन।

अं०ऐक्ट=नियम, क़ायदा।

सं०ऐक्यता-भा० पु० मेल, इत्तिफ़ाक़, एकमत। [उर्दू।

अं० ऐंग्लोवर्नाक्युलर= अंगरेज़ी-

प्रा०ऐंचना-क्रि०स०खैंचना,तानना।

प्रा०ऐंठ (ऐंठना) स्त्री० वल, वट, मरोड़,अकड़, २ गांठ।

प्रा०ऐंठना-क्रि० स० कसना, तानना, खींचना, जकड़ना, क्रि० अ० अकड़ना,मरोड़खाना,बलखाना,२इतराना, फूलना, ऐंट के चलना, अकड़के चलना।

सं०ऐरावण } (इरावत् समुद्र,
ऐरावत } इरा=पानी, इर्=

जाना अर्थात् जो समुद्र से पैदा हुआ) पु० इन्द्र का हाथी ।

सं०ऐरावती (इरा= पानी) स्त्री० एक नदी का नाम, रावी नदी का नाम २ एक नदी जो ब्रह्मा देशमें है ।

सं० ऐरेय=बुद्धिवर्द्धक मदिरा जो कम नशा करती है अंगूर आदि से बनती है ।

सं० ऐश्वर्य्य (ईश्वर) पु० प्रताप, बड़ाई, सम्पदा, सम्पत्ति, विभव, हशमत जाह व मनाल ।

प्रा० ऐसा (इस + सा, स=ईदृश) गु० इसप्रकार का, इसके बराबर ।

प्रा० ऐसातैसा } बोल० कुछ यों
ऐसावैसा } हीं, न भला न बुरा, न वाहवाह, न छीछी ।

प्रा० ऐहैं (ब्रजभाषा) क्रि० अ० आवेंगे ।

—:०:—

ओ

सं० ओ-पु० ब्रह्मा, विष्णु, शिव, वि० बो० आह, आहा, संबोधन का सूचक, मंत्रराज ।

सं०ओं- पु० प्रणव, ओंकार जो अ + उ + म्, से बना है, अ=विष्णु का वाचक, उ=महेश्वर का वाचक, म्=ब्रह्मा का वाचक है ।

प्रा०ओंठ } (सं० ओष्ठ) पु० होंठ,
ओठ } अधर, लब ।

प्रा०ओंडा } गु० गहरा, गंभीर,
औंडा } अमीक़ ।

प्रा०ओंधा } गु० उलटा, तले ऊपर ।
औंधा }

प्रा०ओखली—(सं० उलूखल) स्त्री० ऊखली ।

सं०ओघ (उच्=इकट्ठा करना) पु० समूह, इकट्ठा, २ जल का वेग ।

प्रा०ओछा=गु० हलका, नीच ।

सं०ओज } पु० बल, दीप्ति, तेज,
ओजस } प्रकाश, २ विषम, प्रथम, तृतीय, पांचवाँ, सातवाँ आदि ।

सं०ओङ्कार (ओम् तीनों देवताओं का मंत्र, अव्=बचाना, कार, कृ= करना) पु० बीजमंत्र, ब्रह्मा, विष्णु, शिव इन तीनों देवताओं का नाम ।

प्रा०ओझल—स्त्री० ओट, आड़, परदा, टट्टी, छिपाव, एकान्त ।

प्रा०ओझलकरना—बो० छिपाना, ओट करना, परदा करना, आड़ करना ।

प्रा०ओझलहोना— बो० छिपना ।

प्रा०ओट (सं० वट्=घेरना) स्त्री० बचाव, छांव, आड़, परदा, ओझल, टट्टी, छिपाव, २ पक्ष ।

प्रा०ओटकरना—— बो० छिपाना, ओझल करना, आड़ करना, परदा करना ।

प्रा० ओटहोना-बोल० छिपना ।

प्रा० ओड़न-स्त्री० ढाल, फरी ।

प्रा० ओड़ा-पु० टोकरा, खांचा ।

प्रा० ओढ़ना (सं० ऊर्णु=ढकना) क्रि० स० पहनना, पहरना, पु० चद्दर, पट्टू, लोई आदि ओढ़ने की चीज़ ।

प्रा० ओढ़नी (सं० ऊर्णु=ढकना) स्त्री० स्त्रियों के ओढ़ने का कपड़ा, साड़ी ।

सं० ओदन (उद्=भिगोना) पु० भात, रींधे हुए चांवल । [गीला ।

प्रा० ओदा (सं० आर्द्र) गु० भीगा,

प्रा० ओप-स्त्री० चमक, झलक, दमक, चमचमाहट, सुन्दरता, घोट, चिकनाहट ।

प्रा० ओपदेना-बो० साफ करना, चिकना करना, ओपना, घोटना ।

सं० ओम् (अव्=बचना, या अ विष्णु, उ शिव, म् ब्रह्मा) पु० तीनों देवताओंका मंत्र, ओंकार का बीज मंत्र, प्रणव ।

प्रा० ओर-स्त्री० तरफ, अलग, पार, २ रस्ता, ३ हद्द, सीमा ।

फ़ा० ओल=बदला, एवज़, बदले में किसी आदमी को देना ।

अं० ओरीयंटलकम्पनी पूर्वीसमूह, पूर्वी गिरोह ।

प्रा० ओला (सं० शीत=भीगा, अ, उन्द्=भिगोना) पु० पानी के बने हुए पत्थर जैसे टुकड़े जो कभी कभी बरस्ते हैं, २ चीनीकी बनीहुई मिठाई जिसको गर्मियों में ठंढाई के लिये पानी में घोल कर पीते हैं ।

प्रा० ओलाहोजाना-बोल० खूब ठंढा होजाना ।

प्रा० जोंसिरमुडायातोंओलेपड़े-बो० यह मुहावरा उस समय बोला जाता है जब कोई आदमी किसी काम को शुरूअ करे और शुरूअ करतेही बिगड़ जाय ।

सं० ओषधि } औषधि } (ओष=गरमी, उष्=गर्म करना, धा=रखना) स्त्री० औषद, दवा, दारू, रोग दूर करने की चीज़ ।

सं० ओषधालय } औषधालय } वि० पु० दवाखाना, हास्पिटल ।

सं० ओष्ठ (उष्=गर्म करना) पु० होंठ, ओंठ, ओठ, लब ।

प्रा० ओस-पु० शीत, जो रात को छोटी २ फुहार पड़ती है, शबनम् ।

प्रा० ओसरा (सं० अवसर) पु० बारी, पारी ।

प्रा० ओसीसा-पु० तकिया ।

प्रा० ओहो-वि० बो० वाहवाह, आहा ।

औ

सं० औ-पु० अनन्त, वि० बो० ओह, आहा ।

प्रा० औंगी-चुप, गूंगापन, मौन ।

प्रा० औगुण (सं०अवगुण) पु० दोष, कलंक, खोट, चूक, बुराई ।

प्रा० औघट (सं०अवघट्ट, अव=बुरा वा कठिन, घट्ट=रस्ता, घट्=जाना) गु० ऊबट, खराबरस्ता, अगम्यरस्ता ।

प्रा० औतार (सं० अवतार) पु० जन्म, प्रकट, अवतार, (अवतारशब्दकोदेखो)

प्रा० औदात (सं० अवदात) गु० धौला, सफेद, श्वेत, शुक्ल ।

प्रा० औनेपौने–बोल० कमतीबढ़ती ।

प्रा० औबट (सं०अववाट, अव=बुरा वा कठिन, वाट=रस्ता) गु० ऊबट, औघट- बुरारस्ता, दुर्गम ।

प्रा० और–समुच्चा० फिर, पुनि, भी गु० अधिक, २ दूसरा ।

प्रा० औरएक–बोल० दूसरा कोई, और कोई, और भी ।

प्रा० औरही बोल० बिलकुलदूसरा, अनूठा, जुदा, बिलकुल, फरक ।

सं० औरस (उरस्=हृदय) पु० ब्याही हुई स्त्री से पैदा हुआ लड़का ।

सं० और्ध्वदैहिकक्रिया–स्त्री० दशगात्र, सपिंडी, तेरही ।

सं० और्व–गु० वड़वानल, दावानल ।

प्रा० औसर (सं०अवसर) पु० समय, मौका, अवकाश, फुरसत ।

प्रा० औसान–पु० चेतना, चेत, हौसिला, सुरत, साहस, हिम्मत, होशियारी ।

प्रा० औसेर–स्त्री० चिन्ता, खटका ।

क

सं० क–पु० ब्रह्मा, २पवन, हवा, ३सूर्य, ४ आत्मा, ५ यम, ६ आग, ७विष्णु, ८ शिर, ९ पानी, १० सुख, ११ शुभ, सुन्दर, १२ दंभ, १३ मयूर, १४ कामदेव, १५ दक्ष १६ गरुड़ ।

सं० कङ्क (कक्=जाना) पु० कौआ, २केकड़ा, ३कपट, ४ब्राह्मण, ५ युधिष्ठिर, ६देशविशेष, म्लेच्छजाति, ८ बूतीमार, बंगला ।

प्रा० कंकर (सं० कर्कर, कृ=हानि पहुँचाना)पु० छोटे छोटे पत्थर के टुकड़े, कांकर, रोड़ा ।

प्रा० कंकेला (कङ्कर) गु० पथरेल, पथरीला, किरकिरा, कंकीला, बलुवा ।

प्रा० कङ्कन (सं० कङ्कण) पु० स्त्रियों के पहुँचे में पहनने का गहना, बाला, कड़ा ।

प्रा० कङ्कनी–स्त्री० एकप्रकारका अनाज, २ चूड़ी, कङ्कन, कङ्कना, ककनी ।

प्रा० कङ्कार (स्कन्धाधार) क० कहार ।

प्रा० कङ्काल–गु० दरिद्री, दीन, दुखी, गरीब । [और घमंडी ।

प्रा० कङ्कालबांका–बोल० गरीब

प्रा० कङ्कालता–भा० स्त्री० दरिद्रता, गरीबी, दीनता ।

प्रा० कंघी (सं० कंकती, कङ्कि-

जाना)स्त्री० वालझाड़नेकी चीज़, कंघा, केश, मार्जनी। [वारना।

प्रा० कंघीकरना—बोल० वालसं-

प्रा० कंजर—पु०एक जाति के मनुष्य जिनका धंधा डोरी वेचने का है और वे सांप को भी पकड़ते हैं और खाते हैं। [कृपण।

प्रा० कंजूस—पु० सूम, मक्खीचूस,

प्रा० कंठला } (सं० कण्ठमाला)
कठला } पु० माला, कंठी,
कंठा } सोने चांदी आदि की माला जो गले मे पहनते हैं, २ गण्डा। (छोटी माला।

प्रा० कंठी (सं०कण्ठीय,कण्ठ)स्त्री०

प्रा०कँवल(सं०कमल)पु०कमल,पद्म।

सं० कंस (कम्=चाहना, वा कस=दुख देना) पु० मथुरा के राजा उग्रसेन का बेटा, और श्री कृष्ण का मामा और वैरी, जिस को श्री कृष्ण ने मारा,२कांसा, ३ पानपात्र, सुरापात्र, ४ मंजीरा, झांझ।

सं० कंसकार (कंस=काँसा, कृ=करना) क० पु० काँसे की वस्तु बनानेवाला।

प्रा० ककड़ी-एक प्रकार का फल।

प्रा० ककनी (सं० कङ्कण) स्त्री० पहुंची, कंगनी, स्त्रियों के हाथ में पहनने का गहना। [रोग।

प्रा० ककरेजा—पु०बैंगनी रंग,बैंगनी

प्रा० ककहरा-पु० क ख ग आदि, वर्णमाला। [का फोड़ा।

प्रा० कखौरी (सं० कक्ष)स्त्री० कांख

सं० कक्षा(कष्=मारना, कश्=जाना) स्त्री०कटिबंध,२ज्योतिषचक्र, ३फन्द।

सं० कङ्कण (क=सुन्दर, कण्=शब्द करना, व कम्=चाहना) पु० कङ्गन, वाला, कड़ा। [वाल, रोम।

सं० कच (कच्=बांधना) पु० केश,

प्रा० कचनार (सं० काञ्चनार, वा कांचनाल, कांचन=चमक, ऋ=जाना, वा कांचन सोने सी चमक, अल्=पाना)स्त्री० एक वृक्ष का नाम।

प्रा० कचूमर-पु०एक तरहकाअचार

प्रा० कचूमरकरडालना—बोल० टुकड़े टुकड़े कर डालना, गड वड कर डालना।

प्रा० कच्चा सञ्चय=खाम तहसील।

सं०कच्छप(कच्छ=किनारा,पा=पीना) पु० कछुआ, कमठ, कूर्म।

प्रा०कछ } (सं० कच्छप)पु० कछु-
कच्छ } आ, कछा।

प्रा०कछनी—स्त्री० जाँघिया।

प्रा० कछलम्पट (सं०कक्ष=कांख, लम्प=झूठा)पु०व्यभिचारी, लुच्चा, बदमस्त, रंडीबाज़।

प्रा० कछवाहा-पु० राजपूतों की एक जाति जो अपने को रामचन्द्र

सं० **कण्ठाग्र** (कण्ठ=गला, अग्र=आगे) गु० मुखाग्र, कंठस्थ, जबानी याद।

सं० **कण्ठ्य**(कण्ठ)गु० जोअक्षरकंठ से बोलाजाय, कंठका।

सं० **कण्डन** (कड=कांड़ना,कूटना) भा० पु० कूटना, कांड़ना।

सं० **कण्डनी** } स्त्री० उखली, ओ-
कण्डार } खली, कांड़ी।

सं० **कण्डु**(कडि=भेदना) स्त्री० खुजली, खाज।

प्रा० **कत**(सं०कुत्र) क्रि० वि० कहां, किधर, २ (कथम्) क्यों, क्योंकर, कैसे, ३ कितना।

सं० **कतम**- गु० कौन, कौनसा ।

प्रा० **कतरना**(सं०कर्त्तन, कृत्=काटना)क्रि०स०कैंची से काटना, छांटना, छांट छूट करना, तराशना।

प्रा० **कतरनी** (सं० कर्त्तरी, कृत=काटना) स्त्री० कैंची।

सं० **कतिपय**- गु० चंद, थोड़े,

प्रा० **कतीरा**-पु०एकप्रकारका

प्रा० **कतेक** } (सं०कतिकिम्
कति } कितना।

प्रा० **कत्था**(सं० खदिर, ख
होना) पु० कत्था जो पान के

पु० एक प्रकार के गानेवालों की जाति,पंवारिया, यशवखाननेवाला।

सं० **कथक**(कथ्=कहना) क०पु०कथा बांचनेवाला, पौराणिक, कहनेवाला।

सं० **कथन** (कथ्=कहना) भा० पु० कहना, वर्णन, कथा वार्त्ता कहना।

सं० **कथा**(कथ्=कहना) स्त्री० बात, कहानी, वृत्तान्त, इतिहास।

सं० **कथित** (कथ्=कहना) र्म०पु० कहा हुआ।

सं० **कथनीय**(कथ्+अनीय, कथ्=कहना) र्म० पु० कहने योग्य।

सं० **कथोपकथन**- भा० पु० कहे हुये का कहना, दोबारा कहना।

प्रा० **कद** (सं०कदा,किम्,क्या) क्रि० वि० कब, किस समय।

सं० **कदन** (कद्=मारना) क० पु० मारने मारना, १ ...

प्रा- =

सं० **कद्रू** (कद्=मारना, वा कम्=चाहना) स्त्री० कश्यपमुनि की स्त्री० और नागों की माता।

प्रा० **कदराई** (सं० कातरता) भा० स्त्री० कायरपन।

प्रा० **कदराना** (सं० कातर) क्रि० अ० कायर होना, डरपोक होना, डरना, हिम्मत हारना।

सं० **कदर्य्य**-गु० कायर, डरपोक, बुजदिल, निन्दित, बदनाम, धूर्त्त।

सं० **कनक** (कन्=चाहना वा चमकाना) पु० सोना, कंचन, सुवर्ण, स्वर्ण, २ धतूरा।

सं० **कनककशिपु** (कनक=सोना, कशिपु=कपड़ा) पु० हिरण्यकश्यप, एकदैत्य का नाम, प्रह्लाद का पिता।

सं० **कनकलोचन** (कनक=सोना, लोचन=आंख) पु० हिरण्याक्ष, एक दैत्यका नाम।

सं० **कनकाचल** (कनक=सोना, अचल=पहाड़) पु० सुमेरु पहाड़, सुमेरुगिरि।

प्रा० **कनखजूरा**-पु० कनशलाई, एक जानवर का नाम।

प्रा० **कनपटी** (सं० कर्णपट्टिका, कर्ण=कान, पट्टिका=पटी) स्त्री० पटाखी, कान के पास की जगह।

प्रा० **कनफटा**- पु० एक प्रकार के योगी जिनके कान फटे होते हैं।

प्रा० **कनागत** (सं० कन्यागत, कन्या=बेटी, आगत आना, जिस में बहुत वार अपनी बेटी को खिलाते हैं) पु० श्राद्धपक्ष, पितृपक्ष, आश्विन का पहला पख।

सं० **कनिष्ठ** (कन्=चाहना) गु० छोटा, लहुरा, अनुज, पु० छोटा भाई, युवन शब्द को बहुत अर्थ, कनिष्ठ हो जाता है।

सं० **कनिष्ठा** / **कनिष्ठिका** } (कनिष्ठ) स्त्री० छोटी अंगुली, छिंगुली।

प्रा० **कने**=पास, समीप, साथ।

प्रा० **कनेटी** (कान ऐंठना) स्त्री० कान ऐंठना, कान खैंचना।

प्रा० **कनेर** (सं० करवीर) पु० कनल, एक प्रकार का फूल।

प्रा० **कनौजिया** (सं० कान्यकुब्ज) पु० कनौज देश का रहने वाला, २ ब्राह्मणोंकी एकजाति जो कनौज से निकले हैं।

प्रा० **कन्त** (सं० कान्त, कम्=चाहना) पु० पति, स्वामी, भर्त्ता, प्यारा, प्रियतम, शौहर।

सं० **कन्था** (कम्=चाहना) स्त्री० गुदड़ी, कथड़ी, कमरी।

सं० **कन्द** (कदि=भिगोना, वा कं=पानी, दा=देना) पु० मूल, जड़

सं० **कण्ठाग्र** (कण्ठ=गला, अग्र=आगे) गु० मुखाग्र, कंठस्थ, जबानी याद।

सं० **कण्ठ्य**(कण्ठ)गु० जोअक्षरकंठ से बोलाजाय, कंठका।

सं० **कण्डन** (कड़=कांड़ना,कूटना) भा० पु० छरना, कांड़ना।

सं० **कण्डनी** } स्त्री० उखली, ओखली, कांड़ी।
कण्डार }

सं० **कण्डु**(कड़ि=भेदना) स्त्री० खुजली, खाज।

प्रा० **कत**(सं०कुत्र) क्रि० वि० कहां, किधर, २ (कथम्) क्यों, क्योंकर, कैसे, ३ कितना।

सं० **कतम**- गु० कौन, कौनसा।

प्रा० **कतरना**(सं०कर्त्तन, कृत्=काटना)क्रि०स०कैंची से काटना, छांटना, छांट छूट करना, तराशना।

प्रा० **कतरनी** (सं० कर्त्तरी, कृत=काटना) स्त्री० कैंची।

सं० **कतिपय**- गु० चंद, थोड़े,कम।

प्रा० **कतीरा**-पु०एकप्रकारकागोंद।

प्रा० **कतेक** } (सं०कतिकिम्) गु० कितना।
कति }

प्रा० **कत्था**(सं० खदिर, खद्=दृढ़ होना) पु० कत्था जो पान के साथ खाया जाता है।

सं० **कत्थक** (कत्थ्=सराहना) क० पु० एक प्रकार के गानेवालों की जाति,पंवारिया, यशवखाननेवाला।

सं० **कथक**(कथ्=कहना) क०पु०कथा बांचनेवाला, पौराणिक, कहने वाला।

सं० **कथन** (कथ्=कहना) भा० पु० कहना, वर्णन, कथा वार्त्ता कहना।

सं० **कथा**(कथ्=कहना) स्त्री० बात, कहानी, वृत्तान्त, इतिहास।

सं० **कथित** (कथ्=कहना) र्म्म०पु० कहा हुआ।

सं० **कथनीय**(कथ्+अनीय, कथ्=कहना) र्म्म० पु० कहने योग्य।

सं० **कथोपकथन**- भा० पु० कहे हुये का कहना, दोबारा कहना।

प्रा० **कद** (सं०कदा,किम्,क्या) क्रि० वि० कब, किस समय।

सं० **कदन** (कद्=मारना)क० पु० मारनेवाला, २ मारना, ३ पाप।

प्रा० **कदम** } (सं० कद्=मारना वा काटना) पु० एक वृक्ष का नाम, २ समूह।
सं० **कदम्ब** }

सं० **कदली**(क=हवा, दल्=फटना, जो हवासेफटताहै) स्त्री० केलेकावृक्ष

सं० **कदलीफल**-पु० केलेका फल।

सं० **कदाचित्** } (कदा=कब,चित् वाअपि=भी)क्रि० वि० कभी, कभी कभी, शायद।
कदापि }

सं० कद्रू (कद्=मारना, वा कम्=चाहना) स्त्री० कश्यप मुनि की स्त्री० और नागों की माता।

प्रा० कदराई (सं० कातरता) भा० स्त्री० कायरपन।

प्रा० कदराना (सं० कातर) क्रि० अ० कायर होना, डरपोक होना, डरना, हिम्मत हारना।

सं० कदर्य्य—गु० कायर, डरपोक, बुजदिल, निन्दित, बदनाम, धूर्त्त।

सं० कनक (कन्=चाहना वा चमकाना) पु० सोना, कंचन, सुवर्ण, स्वर्ण, २ धतूरा।

सं० कनककशिपु (कनक=सोना, कशिपु=कपड़ा) पु० हिरण्यकश्यप, एक दैत्य का नाम, प्रह्लाद का पिता।

सं० कनकलोचन (कनक=सोना, लोचन=आंख) पु० हिरण्याक्ष, एक दैत्यका नाम।

सं० कनकाचल (कनक=सोना, अचल=पहाड़) पु० सुमेरु पहाड़, सुमेरुगिरि।

प्रा० कनखजूरा-पु० कनशलाई, एक जानवर का नाम।

प्रा० कनपटी (सं० कर्णपट्टिका, कर्ण=कान, पट्टिका=पटी) स्त्री० पटपड़ी, कान के पास की जगह।

प्रा० कनफटा- पु० एक प्रकार के योगी जिनके कान फटे होते हैं।

प्रा० कनागत (सं० कन्यागत, कन्या=बेटी, आगत आना, जिस में बहुत बार अपनी बेटी को खिलाते हैं) पु० श्राद्धपक्ष, पितृपक्ष, आश्विन का पहला पख।

सं० कनिष्ठ (कन्=चाहना) गु० छोटा, लहुरा, अनुज, पु० छोटा भाई, युवन शब्द को बहुत अर्थ, कनिष्ठ हो जाता है।

सं० कनिष्ठा, कनिष्ठिका (कनिष्ठ) स्त्री० छोटी अंगुली, छिंगुली।

प्रा० कने=पास, समीप, साथ।

प्रा० कनेठी (कान ऐंठना) स्त्री० कान ऐंठना, कान खैंचना।

प्रा० कनेर (सं० करवीर) पु० कनल, एक प्रकार का फूल।

प्रा० कनौजिया (सं० कान्यकुब्ज) पु० कनौज देश का रहने वाला, २ ब्राह्मणोंकी एकजाति जो कनौज से निकले है।

प्रा० कन्त (सं० कान्त, कम्=चाहना) पु० पति, स्वामी, भर्त्ता, प्यारा, प्रियतम, शौहर।

सं० कन्था (कम्=चाहना) स्त्री० गुदड़ी, कथड़ी, कामरी।

सं० कन्द (कदि=भिगोना, वा कं=पानी, दा=देना) पु० मूल, जड़

२ गंठीली जड़,जैसे प्याज़ और लह-सुन आदि ।

सं० कन्दरा (कं=पानी,दृ=फाड़ना, जो जलसे फटती है) स्त्री० खोह, गुफा, गुहा ।

सं० कन्दर्प (कन्द्=व्याकुल होना, वा कम्=बुरा, दर्प=घमंड अर्थात् जिसके होने से बुरा घमंड होताहै) पु० कामदेव, काम, मदन ।

सं० कन्दु—पु०कड़ाही,गु०रसोईदार।

सं० कन्दुक (कन्द्=मारना) पु०गेंद

सं० कन्ध } (कं=शिर,धा,वा धृ=
कन्धर } रखना) कांधा,गला, कंधा, ग्रीवा, गर्दन, २ मेघ ।

सं० कन्धि (कं=जल, धि=धरना) पु० समुद्र, मेघ, स्त्री० ग्रीवा, गला।

सं० कन्याका (कन्=चहना) स्त्री० छोटी लड़की, दशबरस तक की लड़की।

सं० कन्या (कन्=चाहना) स्त्री०लड़की, २ वेटी, ३ कुमारी, ४ बारह राशि में की छठी राशि, ५ जीर्ण वस्त्र, ६ घिकुआर कन्यादान(कन्या=वेटी, दान=देना) लड़की को व्याहदेना ।

प्रा० कन्हैया (सं० कृष्ण) पु० श्री कृष्ण का नाम ।

सं० कपट (क=शिर, पट्=ढकना) पु० छल, धोखा, खोटाई, फरेब, ठगाई, दगा ।

सं०कपटी (कपट) गु० छली, धोखा देने वाला, फ़रेबी, ठग, दग़ाबाज़, पाखंडी ।

प्रा० कपड़ा (सं०कर्पट,कृ=विखेरना, फैलाना)पु० लूगा, लत्ता, वस्त्र।

प्रा० कपड़ोंसे होना—बोल० रजस्वलाहोना,स्त्रीधर्म होना,हैज़होना।

सं० कपर्द (क=जल, पर्व=पूर्ण होना) पु० हरजटा, महादेव की जटा जिस में गंगाजीने वास किया ।

सं० कपर्दिन् } (क+पर्द+इन्)
कपर्दी } पु० महादेव ।

सं० कपर्दिका—स्त्री० बराटिका, कौड़ी ।

सं० कपाट (क=हवा, पट्=जाना, वा बाहर निकलना अर्थात् किवाड़ बन्द करनेसे हवा भीतरनहीं जाती) पु० किवाड़, किवाड़ी, २ द्वार ।

सं० कपाल(क=शिर,पाल्=बचाना) पु० खोपरी, कपार, २ शिर, ३ ललाट, ४ भाग, भाग्य, क़िस्मत, कपाल क्रिया करना=कपाल फोड़ना, हिंदुओं में एक रीतिहै कि जब मुर्दे को जलाते हैं और जब मुर्दा जल चुकता है तब उसका वेटा अथवा और कोई उसका संबंधी उसकी खोपरी फोड़ता है और उस में घी डालता है ।

सं० कपाली- क० पु० महादेव।

प्रा० कपास (सं० कर्पास, कृ=करना) पु० रुई, रुई का पेड़।

सं० कपि (कप्=कपाना) पु० बन्दर, वानर।

सं० कपिकुञ्जर (कपि=बन्दर, कुंजर =हाथी) पु० बन्दरों का राजा, बन्दरों का प्रधान।

प्रा० कपिन्दा (सं० कपींद्र, कपि=बन्दर, इन्द्र=राजा) पु० वानरोंका राजा, सुग्रीव, हनुमान्, अंगद।

सं० कपिपति (कपि=बन्दर, पति=राजा) पु० वानरोंका राजा, सुग्रीव।

सं० कपिध्वज (कपि=बन्दर, ध्वजा= झंडा, अर्थात् जिसके झंडे में बंदर का निशान है) पु० अर्जुन।

सं० कपिपोत (सं० कपि+पुत्र) पु० वानर का बच्चा।

सं० कपिल (कव्=सराहना पु० एक मुनिका नाम जिसने सांख्यशास्त्र बनाया।

सं० कपिला (कव्=सराहना) स्त्री० पीली गाय, कपिलगाय।

सं० कपीश, कपीश्वर (कपि=बन्दर, ईश वा ईश्वर, राजा पु० सुग्रीव हनुमान्, वानरों का राजा।

प्रा० कपुत्र, कपूत (सं० कुपुत्र, कु=बुरा, पुत्र=बेटा) पु० बुरा लड़का, कुबुद्धि लड़का

प्रा० कपूर (सं० कर्पूर, कृप्=सामर्थ्य रखना, वा कर्पूर सुगंधित होना) पु० एक सुगंधित चीज़, काफ़ूर।

सं० कपूर तिलक= नाम हाथी का जो ब्रह्मावर्त अर्थात् बिठूर में था।

सं० कपोत (क=हवा, पोत=जहाज़। जिसके लिये हवा जहाजके तुल्य है, वा कब्=रंग रंग का होना) पु० कबूतर, परेवा।

सं० कपोल (कंप्=कांपना, वा क=पानी, पुल्=बढ़ना) पु० गाल, रुखसारा।

सं० कफ (क=पानी, फल्=बढ़ना, जो पानी से बढ़ता है) पु० खँखार थूक, बलग़म।

प्रा० कब (सं० कदा) क्रि० वि० कद किस समय

प्रा० कबतक, कबतलक, कबलों — क्रि० वि० किस समय तक, कहांतक, कितनी देर तक।

प्रा० कबकब-बोल० किसकिससमय।

प्रा० कबड्डी— स्त्री० लड़कों के एक खेल का नाम जिसमें सब लड़के अपने दो झुण्ड बनाते हैं और जमीन पर खेलते हैं।

सं० कबन्ध (क=शिर, बन्ध=काटना, वा मारना) पु० बिन शिर का धड़, २. एक राक्षस का नाम।

प्रा० कबरा (सं०कर्बूर, कब्=रंगना वा कर्ब्=जाना) गु० चितकबरा, रंग रंग का, रंग बरंग। [काम।

प्रा० कबारू- पु०गुन, हुनर, धंधा,

सं कमठ (क=जल, अठ्=जाना, वा कम्=चाहना) पु० कछुवा, कच्छप, कूर्म ।

प्रा० कमठा-पु०एकप्रकारका धनुष।

प्रा० कमण्डल (सं० कमण्डलु,का =पानी, मण्ड=शोभा, ला=लेना) पु० दंडी और संन्यासी लोगों के पानी रखने का काठ का अथवा मिट्टी का बरतन खप्पर २ कासा, प्याला ।

सं० कमनीय(कम्=चाहना र्म० पु० सुन्दर, सुथरा, सुघड़,सुहावना, मनोहर, मनभावन, दिलचस्प, दिलगीर।

प्रा० कमरख (सं० कर्मरङ्ग, कर्म= काम (भोजनआदि)रङ्ग=प्यार) पु० एक प्रकार का फल ।

सं० कमल (कं=पानी को, अल्= शोभा देना, वा कम्=चाहना, शोभना)पु० कमल, पद्म, जलज ।

सं० कमला (कमल, अर्थात् जिसके हाथ में कमल है) स्त्री० लक्ष्मी, विष्णुपत्नी, विष्णु की औरत ।

सं० कमलापति (कमला=लक्ष्मी, पति=भर्त्ता) पु० विष्णु, भगवान, नारायण ।

सं० कमलिनी (कमल) स्त्री० कुमोदनी, २ कमलों का समूह ।

प्रा०कमाई(कमाना) भा०स्त्री०प्राप्ति, लाभ, उपार्जन, २ काम ।

प्रा० कमाऊ (कमाना) गु० कमाने वाला,मिहिन्ती,उद्यमी,परिश्रमी ।

अं० कमाण्डरनचीफ=प्रधान,सेनाध्यक्ष फ़ौजका आलाहाकिम ।

प्रा० कमाना (काम, सं० कर्म, कृ=करना) क्रि० स०कमाई करना, पाना, प्राप्ति करना, पैदा करना, उपार्जन करना, २ काम करना, ३ साफ करना (चमड़ा या पाख़ाना) ४ (कम) कम करना, घटाना ।

अं० कमीशन=नियुक्तगण, किसी मुख्य बात के हेतु चुने मनुष्य अन्य देश में भेजे जाते हैं २ मुख्तियारनामा ३ मेहनताना ।

अं० कमनांटयडसिविलसर्विस =वह पास या सनद जिसमे सरकार नौकरी देनेकी जिम्मेदारहै।

प्रा० कमेरा(काम) पु०काम करने वाला, मज़दूर, २ सहायक, मददगार।

प्रा० कमोदनी (सं०कुमुदिनी,कु= धरती, मुद्=हर्षित करना) स्त्री०

कमलिनी जो रात को खुलती है और दिन को बंद हो जाती है।

प्रा० कमोरी—स्त्री० मटकी, गगरी।

सं० कम्प, कम्पन (कम्प्=कॉपना) भा० पु० थरथराहट, कम्प कम्पी, लर्जा।

प्रा० कम्पना (सं० कम्पन, कम्प्=कांपना) क्रि० अ० थरथराना, कॉपना।

सं० कम्पित (कम्प्=कांपना) कर्म० कांपता हुआ, थरथराता हुआ, कम्पायमान।

सं० कम्बल (कम्ब्=जाना वा कम्=चाहना) पु० कामरी, लोई, ऊनी कपड़ा, दोशाला।

सं० कम्बु (कम्=चाहना) पु० शंख, हस्ती, शम्बूक, घोंघा, सूती चूड़ी गु० चित्रवर्ण अर्थात् चितकबड़ा।

सं० कम्बुग्रीवा (कम्बु=शंख, ग्रीवा=गरदन) गु० जिसकी गरदन शंख ऐसी हो।

सं० कर (कृ=करना) पु० हाथ, २ हाथी की सूंड़, ३ (कृ=बिखेरना, फैलाना) किरन, ४ महसूल, मालगुजारी, ५ नक्ष० हस्तनक्षत्र।

प्रा० करौंदा (सं० करीर, कृ=करना) [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] कठोर, [illegible]।

प्रा० करगहना (सं० कर=ग्रहण, कर=हाथ, ग्रह=लेना, पकड़ना) क्रि० स० ब्याह करना, ब्याह में दुलहन का हाथ पकड़ना।

सं० करटक-पु० नाम शृगाल, सियार, कलेला।

सं० करघर्षण (कर=हाथ, घर्षण=मलना, घृष्=घिसना, मलना) भा० पु० हाथमलना, हाथमींजना।

सं० करज (कर+जन्=पैदा होना) पु० नख, नाखून।

सं० करण (कृ=करना) पु० साधन, काम सिद्ध करने का उपाय, हथियार, औजार, २ व्याकरणमें तीसरा कारक, ३ इंद्रिय, ४ काम, ५ काया, शरीर, ६ कारण, ७ क्षेत्र, ८ करण, कायस्थ, ९ ज्योतिषमें एक नरह के समयके विभागों को करण कहते हैं वे ११ हैं, उनमें से ७ चर हैं और ४ स्थिर हैं और दो करण मिल के एक चन्द्र दिनके बराबर होते हैं।

प्रा० करणी (सं० करणीय, करने योग्य, कृ=करना) स्त्री० काम, धंधा, २ पानी।

सं० करणी (कृ=करना) स्त्री० गणित विद्या में ऐसी राशि को कहते हैं जिसका ठीक मूल नहीं मिले।

सं० करण्ड ([illegible]) [illegible] [illegible], [illegible], २ [illegible] [illegible]

प्रा० कबरा (सं० कर्बूर, कब्=रंगना वा कर्बू=जाना) गु० चितकबरा, रंग रंग का, रंग बरंग। [काम।

प्रा० कबारू- पु० गुन, हुनर, धंधा,

सं कमठ (क=जल, अट्=जाना, वा कम्=चाहना) पु० कछुवा, कच्छप, कूर्म।

प्रा० कमठा- पु० एकप्रकारका धनुष।

प्रा० कमण्डल (सं० कमण्डलु,क=पानी, मण्ड=शोभा, ला=लेना) पु० दंडी और संन्यासी लोगों के पानी रखने का काठ का अथवा मिट्टी का बरतन खप्पर २ कासा, प्याला।

सं० कमनीय(कम्=चाहना कर्म० पु० सुन्दर, सुथरा, सुघड़,सुहावना, मनोहर, मनभावन, दिलचस्प, दिलगीर।

प्रा० कमरख (सं० कर्मरङ्ग, कर्म=काम (भोजनआदि)रङ्ग=प्यार) पु० एक प्रकार का फल।

सं० कमल (कं=पानी को, अल्=शोभा देना, वा कम्=चाहना, शोभना)पु० कमल, पद्म, जलज।

सं० कमला (कमल, अर्थात् जिसके हाथ में कमल है) स्त्री० लक्ष्मी, विष्णुपत्नी, विष्णु की औरत।

सं० कमलापति (कमला=लक्ष्मी, पति=भर्त्ता) पु० विष्णु, भगवान, नारायण।

सं० कमलिनी (कमल) स्त्री० कुमोदनी, २ कमलों का समूह।

प्रा० कमाई(कमाना) भा० स्त्री० प्राप्ति लाभ, उपार्जन, २ काम।

प्रा० कमाऊ (कमाना) गु० कमाने वाला,मिहिन्ती,उद्यमी,परिश्रमी।

अं० कमाण्डरनचीफ=प्रधान,सेनाध्यक्ष फ़ौजका आलाहाकिम।

प्रा० कमाना (काम, सं० कर्म, कृ=करना) क्रि० स० कमाई करना, पाना, प्राप्ति करना, पैदा करना, उपार्जन करना, २ काम करना, ३ साफ़ करना (चमड़ा या पाख़ाना) ४ (कम) कम करना, घटाना।

अं० कमीशन=नियुक्तगण, किसी मुख्य बात के हेतु चुने मनुष्य अन्य देश में भेजे जाते हैं २ मुख्तियारनामा ३ मेहनताना।

अं० कमनांटयडसिविलसर्विस=वह पास या सनद जिसमें सरकार नौकरी देनेकी जिम्मेदारहै।

प्रा० कमेरा(काम) पु०काम करने वाला, मजदूर, २ सहायक, मददगार।

प्रा० कमोदनी (सं०कुमुदिनी,कु=धरती, मुद्=हर्षित करना) स्त्री०

पीड़ा अथवा दुःख के कारण आह मारना, कहरना।

सं० करिण (कर=सूंड अर्थात् सूंड वाला) पु० हाथी, गज, मतंग।

सं० करीर (कृ=फैलाना, वा मारना) पु० बांसका अंकुर, २ करील, एक प्रकारका कँटीला वृक्ष जो मरुस्थल में उगता है और उसकोऊंटखातेहैं।

सं० करुणा (कृ=करना, वा कृ=फेंकना) स्त्री० दया, कृपा, अनुग्रह, २ नाम वृक्षका ३ नव रसमे एकरस।

सं० करुणानिधान (करुणा=दया, निधान=खजाना) गु० करुणा के खजाना, कृपालु, दयालु।

सं० करुणामय (करुणा=दया, मय=रूप) गु० दयाके रूप, दयामय, दया करनेवाला, दयालु, कृपालु।

सं० करुणायतन (करुणा+आयतन) पु० दया के स्थान।

सं० करुणार्द्र (करुणा=दया, आर्द्र=गीला) पु० करुणानिधान, करुणामय, दयालु।

प्रा० करुवा (सं० करक, कृ=करना) पु० कमंडलु, करवा, कटोरी, मिट्टी का कोरा बरतन—करवाचौथ=एक पर्व अथवा त्योहार जो कातिक के महीने में होता है।

सं० करेणु—पु० हाथी, हस्ती।

प्रा० करेला (सं० कारवेल्ल, कर=रेंग-ना) पु० एक तरकारी का नाम जो कुछ कड़वी होती है।

प्रा० करोनी—स्त्री० दूधकी खुर्चन।

प्रा० करौंदा (सं० करमर्दक, कर=हाथ, मृद्=मलना) पु० एक फल का नाम।

सं० कर्क (कृ=करना, वा कॄ=फैलना) पु० केंकड़ा, २ चौथीराशि।

सं० कर्कट (कृ=करना) पु० केंकड़ा, गिंगटा, २ चौथी राशि, सर्ता।

सं० कर्कश (कर्क=कठिनता, वा कृ=फेंकना, कश्=मारना) गु० कठोर, कठिन, कड़ा, निर्दय, लड़ाका।

सं० कर्कशा—स्त्री० लड़ाका, झगड़ा करनेवाली, कलही। [का पेड़।

सं० कर्कन्धु—स्त्री० बदरीवृक्ष, बेर

सं० कर्ण (कृ=करना, अर्थात् शब्द का ज्ञान करना) पु० कान, २ (कर्ण्=भेदना, वा कृ=फैलाना) पतवार, ३ त्रिभुज खेत में भुज और कोटि को छोड़के तीसरी भुजाका नाम, ४ चौकोने खेत में उस लकीर का नाम जो सामने के कोनों से खींची जाती है, आयकाट, ५ कुंती का बेटा जो सूर्य के अंश से पैदा हुआ।

सं० कर्णधार (कर्ण=पतवार, धृ=रखना) पु० मांझी, पतवार, जहाज चलानेवाला, नाविक, केवट, मल्लाह।

सं० कर्णफूल (कर्ण=कान, फूल,

पात्र, मधुचक्र, शहदका छत्ता, पान-पात्र, पुष्पपात्र ।

प्रा० करतब (सं० कर्त्तव्य, कृ=करना) पु० काम, करनेयोग्य काम, २ चाल, ३ गुण, हुनर, ४ परख, तजरूबा ।

सं० करतल (कर=हाथ, तल=नीचा) पु० हथेली, हाथ का तल ।

सं० करताल (कर=हाथ, ताल=एक बाजे का नाम) पु० एक बाजे का नाम, कठताल ।

सं० करताली (कर=हाथ, तड्=पीटना, बजाना) स्त्री० हाथबजाना, हाथ बजाने का शब्द ।

प्रा० करतूति (सं० कर्त्तव्यता) स्त्री० काम, धंधा, करतब ।

सं० करदपत्र=खिराजनामा ।

प्रा० करना (सं० करण, कृ=करना) क्रि० स० बनाना, रचना, सुधारना, २ पु० एक खट्टे फल का नाम ।

सं० करनिकर-पु० करसमूह, हस्तसमूह ।

सं० करपाल (कर=हाथ, पाल्=बचाना) पु० तलवार, खड्ग, मोज़ा, दस्ताना।

सं० करपुट=हाथजोड़ना, दोनोंहाथ मिलाना ।

सं० करवाल (कर=हाथ, वल्=जाना वा ढकना) पु० तलवार ।

सं० करवालिका-स्त्री० छुरी, कटारी।

प्रा० करबी, स्त्री०, जुआर, अथवा बाजरे के पुवाल ।

सं० करभ-पु० ऊंट, हाथीका बच्चा ।

सं० करभूषण-पु० कंकण, विजायठ ।

प्रा० करम (सं० कर्म्म, कृ=करना) पु० काम, धंधा, २ भाग, भाग्य, क़िस्मत । [तरफ़ ।

प्रा० करवट-स्त्री० पसवाड़ा, पांजर,

सं० करवीर (कर=जड़, वीर=प्रकाश होना, वा कर=हाथ, वीर=पराक्रम करना) पु० कंडीर का फूल अथवा पेड़, कनेल, २ तलवार ।

सं० करशाला-धि० स्त्री० चुंगीघर, महसूलघर ।

प्रा० करांत } (सं० करपत्र, कर=हाथ, पत्=गिरना,
करोत } जो हाथ से लकड़ी पर गिरता है) पु० आरा, अर्रा, क्रकच, लकड़ी चीरने का एक औज़ार ।

प्रा० करारा-पु० नदी का ऊंचा किनारा, २ (सं० कर्कर) गु० कठिन, कड़ा, सख़्त, भयंकर ।

सं० कराल (कृ=हिंसा करना, मारना) गु० भयानक, भयंकर, डरावना, २ बड़ा लंबा ।

सं० करालाकृति (कराल+आकृति) स्त्री० भयंकरस्वरूप, खौफ़नाकमूरत ।

प्रा० कराहना—क्रि० अ० किसी

पीड़ा अथवा दुःख के कारण आह मारना, कहरना।

सं० करिण (कर=सूंड अर्थात् सूंड वाला) पु० हाथी, गज, मतंग।

सं० करीर (कृ=फैलाना, वा मारना) पु० बांसका अंकुर, २ करील, एक प्रकारका कँटीला वृक्ष जो मरुस्थल में उगता है और उसकोऊंटखातेहैं।

सं० करुणा (कृ=करना, वा कृ=फेंकना) स्त्री० दया, कृपा, अनुग्रह, २ नाम वृक्षका ३ नव रसमें एकरस।

सं० करुणानिधान (करुणा=दया, निधान=खजाना) गु० करुणा के खजाना, कृपालु, दयालु।

सं० करुणामय (करुणा=दया, मय =रूप) गु० दयाके रूप, दयामय, दया करनेवाला, दयालु, कृपालु।

सं० करुणायतन (करुणा+आयतन) पु० दया के स्थान।

सं० करुणार्द्र (करुणा=दया, आर्द्र=गीला) पु० करुणानिधान, करुणामय, दयालु।

प्रा० करुवा (सं० करक, कृ=करना) पु० कमंडलु, करवा, कटारी, मिट्टी का कोरा बरतन—करवाचौथ=एक पर्व अथवा त्योहार जो कातिक के महीने में होता है।

सं० करेणु—पु० हाथी, हस्ती।

प्रा० करेला (सं० कारवेल्ल, कट्=ढंकना) पु० एक तरकारी का नाम जो कुछ कड़वी होती है।

प्रा० करोनी—स्त्री० दूधकी खुर्चन।

प्रा० करौंदा (सं० करमर्दक, कर =हाथ, मृद्=मलना) पु० एक फल का नाम।

सं० कर्क (कृ=करना, वा कृ=फैलना) पु० केंकड़ा, २ चौथी राशि।

सं० कर्कट (कृ=करना) पु० केंकड़ा, गिरगट, २ चौथी राशि, लता।

सं० कर्कश (कर्क=कठिनता, वा कृ=फेंकना, कश्=मारना) गु० कठोर, कठिन, कड़ा, निर्दय, लड़ाका।

सं० कर्कशा—स्त्री० लड़ाका, झगड़ा करनेवाली, कलही। [का पेड़।

सं० कर्कन्धु—स्त्री० बदरीवृक्ष, बेर

सं० कर्ण (कृ=करना, अर्थात् शब्द का ज्ञान करना) पु० कान, २ (कर्ण्=भेदना, वा कृ=फैलाना) पतवार, ३ त्रिभुज खेत में भुज और कोटि को छोड़के तीसरी भुजाका नाम, ४ चौकोने खेत में उस लकीर का नाम जो सामने के कोनों से खींची जाती है, आयकार, ५ कुंती का बेटा, जो सूर्य के अंश से पैदा हुआ।

सं० कर्णधार (कर्ण=पतवार, धृ=रखना) पु० मांझी, पतवार, जहाज चलानेवाला, नाविक, केवट, मल्लाह।

सं० कर्णफूल (कर्ण=कान, फूल

अर्थात् कानकाफूल) पु० कान में पहनने का गहना, कर्णभूषण ।

सं० कर्णवेध } (कर्ण=कान, विध्=
कर्णवेधन } छेदना) पु० कान बिन्धाना, कान छिदाना ।

सं० कर्णमण्डक (मण्ड्=शोभा देना) क० पु० कर्णफूल, बिरिया, २ मधुरशब्द ।

सं० कर्णाट-पु० कर्णाटकदेश ।

सं० कर्णिका (कर्ण + इक, कर्ण छेदना) स्त्री० हाथी की सूँड़ की नोक, हाथ की बीच की अंगुली, मध्यमा, क़लम, लेखनी, कुट्टिनी, कर्णभूषण, कर्णफूल ।

सं० कर्त्तन (कृत्=काटना) पु० कतरन, काटना, छांटना ।

सं० कर्त्तरिका } (कृत्=काटना) स्त्री०
कर्त्तरी } कतरनी, कैंची ।

सं० कर्त्तव्य (कृ=करना) कर्म० पु० करने योग्य, जो कुछकरनाचाहिये, अवश्य उचित, योग्य, वाजिब ।

सं० कर्त्ता (कृ=करना) पु० करने वाला, बनानेवाला, २ सृष्टि पैदा करनेवाला, ईश्वर, ३ व्याकरण में पहला कारक, ४ ग्रन्थ बनाने वाला, ५ पति, मालिक, स्वामी, अधिकारी ।

प्रा० कर्त्तार (सं० कर्त्ता) पु० करने वाला, २ पैदा करनेवाला, ईश्वर, निरञ्जनहार, सृष्टिकर्त्ता ।

सं० कर्द } (कर्द्=बुरा, शब्दकरना)
कर्दम } पु० कीचड़, कादों, चहला ।

प्रा० कर्धनी (सं० कटि=धारणीय, कटि=कमर, धारणीय=पहनने योग्य, धृ=धारणकरना वा कटिबन्धन, कटि=कमर, बन्धन=बांधना) स्त्री० कंधनी, कमर में पहननेका गहना ।

सं० कर्पूर (कृप्=समर्थ होना) पु० कपूर, बाहुभूषण ।

सं० कर्बूर (कर्ब्=जाना) पु० स्वर्ण, हरिताल, राक्षस ।

सं० कर्म्म (कृ=करना) पु० काम, धंधा, २ धर्मसंबंधी काम, जैसे यज्ञ, होम, दान आदि, ३ पहले जन्म में किया हुआ, ४ कर्मकारक, दूसरा कारक (व्याकरण में) ५ भाग, क़िस्मत ।

सं० कर्म्मकाण्ड (कर्म=काम, कांड =समूह) पु० कर्मों का समूह, १ जप होम यज्ञ आदि, २ वेद का एक भाग ॥

सं० कर्म्मकार (कर्म=काम, कार =करने वाला, कृ=करना) पु० काम करने वाला, २ लुहार ।

सं० कर्म्मनाशा (कर्म्म=अच्छे काम, वा पुण्य, नाश्=नष्ट करना) स्त्री० एक नदी जो बनारस और बिहार के बीच में है ॥

सं० कर्म्मनिपुणाई- भा० स्त्री० कर्मकुशलता, काम की चतुराई, कारीगरी।

सं० कर्म्मपथ-स्त्री० कर्म्ममार्ग, वेद की रीति, तरीकय शरई।

सं० कर्म्मभोग (कर्म्म=पहले जन्म में किये हुये काम का फल, भोग=भोगना) पु० भले बुरे का फल, प्रारब्ध के फल का भोग।

सं० कर्म्मेन्द्रिय (कर्म=काम, इंद्रिय=इंद्री) स्त्री० काम करने की इंद्री जैसे हाथ पांव आदि (इंद्रिय शब्द को देखो)।

सं० कर्ष (कृष्=खींचना) पु० वैर विरोध, रोष, ईर्षा, जैसे "बातहि बात कर्ष बढ़ि आई" (रामायण) २ सोलह माशे का तोल।

सं० कर्षक (कृष्=खींचना, हल जोतना) पु० किसान, जोता, जोतने वाला।

सं० कर्षण (कृष्=खींचना, हल जोतना) पु० खेंच, तान, २ जोतना, खेती करना।

प्रा० कल } काल } (सं० कल्य, कल्=गिनना) पु० आजका पहला या पिछला दिन।

प्रा० कलकीबात- बोल० थोड़े दिनों की बात, जो कुछ थोड़े दिन पहले हुआ है।

प्रा० कल-स्त्री० चैन, आराम, सुख, राहत।

प्रा० कलमकल-बोल० बेचैनी, बेआरामी, बेकली, दुःख, तकलीफ।

प्रा० कल (सं० कला, कल्=शब्द करना) स्त्री० जंत्र, यंत्र, २ बंदूक की कल, चाप, ३ दांव, पेंच।

प्रा० कलकाआदमी-बोल० बहुत दुबला आदमी, २ पुतला।

प्रा० कलकाघोड़ा-बोल० बहुत अच्छा सिखाया हुआ और आधीन घोड़ा।

सं० कल (कल्=शब्द करना) पु० मीठा शब्द, २ (कड्=प्रसन्नहोना) वीर्य, बीज, गु० मीठा, सुन्दर।

सं० कलकण्ठ (कल=मीठा, वा सुन्दर, कंठ=गला) स्त्री० कोयल, कोकिला, गु० सुन्दर वा मीठे कंठवाली।

सं० कलकल (कल्=शब्द करना) पु० कोलाहल, कलकल, ऐसा शब्द, कचकच, झकझक, बकबक।

सं० कलङ्क (क=सुख, वा आत्मा, लकि=बिगाड़ना, वा कल्=जाना) पु० दाग, दोष, चिह्न, लक्षन, लांछन।

प्रा० कलजिभा (सं० कालजिह्व, काल=काली, जिह्वा=जीभ) पु०

बुरा चीतनेवाला, दुर्जन, बुरा चाहनेवाला।

सं० कलत्र (कल=वीर्य्य, त्रा=बचाना वा गड्=सींचना, यहां ग को क और ड को ल हो जाता है) स्त्री० पत्नी, भार्या, लुगाई, स्त्री।

सं० कलधौत (कल=मैल, धौत=धोगया) गु० मलरहित २ सोना।

सं० कलन (कल्=गिनना) भा० पु० गिनना, चिह्न।

प्रा० कलप-पु० बालों के रंगने का रंग, खिज़ाब, माँड़, लेई।

प्रा० कलपना (सं० कल्पन, कृप्=दुबला होना) क्रि० अ० कुढ़ना, पछताना, बिलखाना, दुःखी होना, दुःख पाना।

प्रा० कलपाना (कलपना) क्रि० स० कुढ़ाना, सताना, दुःख देना।

सं० कलभ (कल्=शब्द करना) पु० हाथी का बच्चा।

अ० क़लम=लेखनी।

प्रा० कलमकल-स्त्री० घबराहट, दुःख।

प्रा० कलमलाना-क्रि० अ० चुलबुलाना, छटपटाना, कुलबुलाना, हिलना।

प्रा० कलवार-पु० कलाल, कलार, शुंडी, मदिरा खींचने वाला और बेचनेवाला।

सं० कलश (कल=शब्द, श=जाना) पु० घड़ा, गगरा, पानी रखने का बरतन, २ मंदिरों के ऊपर का शिखर।

प्रा० कलशिरा, कलसिरा (सं० काल=काला, शीर्ष=शिर) गु० काले शिर वाला, काले शिर का, पु० मनुष्य, आदमी।

सं० कलस (क=पानी, लस्=शोभना) पु० घड़ा, कलश, २ मंदिर का शिखर।

सं० कलहंस (कल=सुन्दर, हंस) पु० राजहंस।

सं० कलह (कल=मीठा, शब्द, हन्=मारना) पु० लड़ाई, झगड़ा, विरोध, गु० कलहकार=झगड़ालू, लड़ाई करने वाला २ कलहकारिणी=झगड़ालू स्त्री० लड़ाईकरनेवाली।

सं० कला (कल्=गिनना, जाना) स्त्री० बहुत छोटा, भाग, अंश का साठवां हिस्सा, २ चंद्रमंडल का सोलहवां भाग, ३ समय का हिस्सा, साठ सेकंड, ४ छल, कपट, बहाना, फ़रेब, ५ गुण, हुनर, गाना बजाना आदि ६४ कला।

कला चौंसठहैं॥

१—गीत=गाना अर्थात् स्वरों रागों और रागिनियोंको जानना और उन को अभ्यास करना।

२—वाद्य=बाजा बजाना।

३—नृत्य=नाचना।

४—नाट्य=नक़ल करना, नाटक खेलना।

५—आलेख्य=लिखना और चित्रकारी यानी मुसव्वरी करना।

६—विशेषक छेद्य=अनेक प्रकार के खौर और तिलक लगाने के साँचे बनाना।

७—तण्डुलकुसुमबलिविकार क्रिया=बिना टूटे चावल और फूलों के चौक देवमन्दिरों में पूरना।

८—पुष्पास्तरण=फूलों की सेज बनाना।

९—दशनवसनांगराग=दांतों के मंजन मिस्सी आदि और वस्त्र और अंगराग बनाना और लगाना।

१०—मणिभूमिकाकर्म=गर्मी के दिनों में रहने के लिये गृहविशेष बनाना।

११—शयनरचन=पलंग बिछाना।

१२—उदकवाद्य=पानी में बाजा बजाना या जलतरंग।

१३—उदकघात=पानी के खेल, छींटा देना या पानी हाथों से दबाकर ऊपर उठाना।

१४—चित्रयोग= १ नपुंसक करना, २ जवान को बूढ़ा और ३ बूढ़ा को जवान करना।

१५—माल्यग्रन्थनविकल्प=देव पूजा के लिये अनेक प्रकार के माला और वस्त्र बनाना।

१६—शेखरापीडयोजन=शिर में अनेक प्रकारके फूलोंकी रचना।

१७—नेपथ्यप्रयोग = देशकालानुसार वस्त्र पहिनना।

१८—कर्णपत्रभंग=हाथीदांत और शंखादि के कर्णफूल बनाना।

१९—गन्धियुक्ति=अनेक प्रकार के सुगन्धित पदार्थ बनाना और लगाना।

२०—भूषणयोजना=गहनेपहनना।

२१—ऐन्द्रजाल=बाजीगरोंकी तरह शोबिदे अर्थात् लीला दिखलाना।

२२—कौचुमारयोग=कुरूपको सुन्दर करना।

२३—हस्तलाघव=हाथ को फुरती और हलकेपने से काम में लाना।

२४—चित्रशाका पूप भक्ष्य विकार क्रिया=अनेक प्रकार की तरकारियां और भोजन के व्यंजन बनाना।

२५—पानकरसरागासवयोजन= अनेक प्रकार के पीने के शर्बत या पके और शराब बनाना।

२६—सूचीकर्म=सीना और बुनना।

२७—सूत्रक्रीडा=रंग बरंग के डोरे

दिखलाना साबितको टूटा और टूटे को साबित दिखाना। [कहना।

२८—प्रहेलिका=पहेली सीखना और

२६—प्रतिमाला=बैतबाजी या श्लोकके अन्तिम अक्षरसे दूसरा श्लोक का पढ़ना।

३०—दुर्वाचकयोग=कठिन शब्दों कहना।

३१—पुस्तकवाचन=शृंगारादि अलंकार और गान के साथ पुस्तक पढ़ना।

३२—नाटकाख्यायिका दर्शन=छोटे बड़े नाटक देखना और दिखलाना।

३३—काव्यसमस्यापूर्ण= दी हुई समस्या से श्लोक को पूराकरना।

३४—पट्टिकावेत्रवाणविकल्प=तरह २ की खाट चुनना।

३५—तर्कवातक्षकर्म=रलीलें करना वा शिल्पकारी वा शान चढ़ाना।

३६—तक्षण=बढ़ईका काम करना।

३७—वास्तुविद्या=घरवगैरहबनाना, सामान रखना।

३८—रूप्य रत्नपरीक्षा=सोना, चांदी और रत्नों का पहिचानना।

३९—धातुवाद=कची धातु का साफ करना।

४०—मणिरागाकरज्ञान=मणियों के रंग और उन की खानि जानना और पहिचानना।

४१—वृक्षायुर्वेदयोग=वृक्षों का तरतीबवार जमाना और पालन पोषण करना।

४२—मेष कुक्कुट लावक युद्ध विधि=मेढ़े मुर्गे लावक के युद्ध की रीति।

४३—शुक सारिका प्रलापन=सुआ और मैना को पढ़ाना।

४४—उत्सादन=उपटन बनाना और लगाना और शरीर का दाबना।

४५—केश मार्जन कौशल=बालों का मलना और तेल लगाना।

४६—अक्षरमुष्टिकाकथन=संक्षेप लिखा हुआ पढ़ना।

४७—म्लेक्षितविकल्प=शब्दों का गूढ़ अर्थ समझना जैसे अग्निसे ३ की संख्या और वेद से ४ की संख्या आदि।

४८—देशभाषाविज्ञान=देश देश की भाषा जानना।

४९—पुष्पशकटिका=बालकों के लिये फूलों की गाड़ी बनाना।

५०—निमित्तज्ञान=शुभाशुभ देख परिज्ञान फल—गुप्त बात का वर्त्तमान दशा देखकर बतलाना।

५१—यंत्रमात्रिका=लड़ाई के लिये यंत्रों की घटना जानना।

५२—धारणमात्रिका=स्मरणशक्ति का बढ़ाना जिस से सुनतेही याद होजावे।

५३—समवाच्यसमपाठ्य=विना पढ़े हुये को दूसरे का पढ़ना सुन कर उसके समानही पढ़ते या बांचते जाना।

५४—मानसीकाव्य क्रिया=उसी क्षण काव्य बनाना दूसरे के मन की बात जानना। [ना।

५५—अभिधान—कोष=कोष बना-

५६—छन्दोज्ञान=तरह तरह के छन्दों का पहिंचानना।

५७—क्रियाविकल्प=काव्यों के अलङ्कार जानना।

५८—छलितक योग=वंचन करने या मोहने के हेतु वेष बदलना अर्थात् ऐयारी।

५९—वस्त्र गोपन=फटे कपड़ों का ऐसा पहिनना कि मालूम न पड़े या इच्छित प्रकार से पहिनना।

६०—द्यूतविशेष=जुआ खेलना।

६१—आकर्षक्रीड़ा=पाँसा खेलना।

६२—बाल क्रीड़न कर्म्म=बालकों के लिये खिलौने बनाना।

६३—वैनायिकी वैजयिकी विद्या=विनय और विजय के उपाय।

६४—वैतालिकी व्यायामिकी विद्या=भूत प्रेत और दांव पेंच आदि।

प्रा० कलाई—स्त्री० पहुँचा।

सं० कलाधर (कला+धृ=धरना) क० पु० चंद्रमा, महताब।

सं० कलाप (कला=भाग, आप्=पाना) पु० समूह, २ संस्कृत भाषा का व्याकरण, ३ मोरकी पूंछ।

सं० कलापक (कलाप्+अक) क० मोर, मयूर, ताऊस।

सं० कलापी (कला=मोर की पूंछ) पु० मोर, मयूर। [का तार।

प्रा० कलाबत्तून—पु० सोना चांदी

प्रा० कलार } पु० कलवार, मदिरा
कलाल } खेंचनेवाला और बेंचनेवाला। [स्त्री।

प्रा० कलारिन—स्त्री० कलार की

प्रा० कलावंत—पु० गानेवाला, गवैया, ढाढ़ी।

सं० कलि (कल्=गिनना) पु० चौथा युग, कलियुग, कलयुग, (युगशब्द को देखो) २ लड़ाई, झगड़ा।

सं० कलिका } (कल्=जाना, वा
कली } गिनना) स्त्री० कोंपल, बिन खिला हुआ फूल।

सं० कलिङ्ग (कलि=झगड़ा, गम्=जाना) पु० कटक से मंदराज तक का देश।

सं० कलियुग (कलि, युग=समय, २=।

चौथायुग, कलयुग (युगशब्ददेखो)

सं० कलुष (क=सुख, वा आत्मा, लुष्=नाश करना) पु० पाप, गंदला, नाराज़।

प्रा० कलेऊ } (सं० कल्याहार, क-
कलेवा } ल्प=कल, आहार= खाना) पु० कल का बचा खाना, ठंढा खाना, बासी खाना, भोर का खाना, नाश्ता।

प्रा० कलेजा–पु० कलेजा, जिगर, २ साहस, हिम्मत।

प्रा०कलेजाउलटना–बोल०बहुत क़ै करने से थक जाना।

प्रा० कलेजाफटना–बोल० दुख अथवा डाह से बेकल होना।

प्रा० कलेजाठंढाकरना–बोल० अपनी चाह पूरी करना, आराम पाना, चैन करना।

प्रा० कलेजाजलना–बोल० दुख पाना, कुढ़ना, पछताना, सोचकरना।

प्रा०कलेजाकांपना–बोल०डरना, सहमना, थरथराना।

प्रा०कलेजेपरसांपफिरना–बोल० डाह से जलना।

प्रा० कलेजेसेलगारखना } बोल०
कलेजे से लगालेना } प्यार करना, गलेलगाना, बहुतही बहुत प्यार करना।

प्रा० कलेजेमेंडालरखना–बोल० बहुत प्यार करना, बहुतही बहुत चाहना।

सं० कलेवर (कल=वीर्य्य, वर=श्रेष्ठ, वा, कल्=जाना) पु० देह, शरीर।

प्रा० कलेश } (सं० क्लेश, क्लिश्=दुख
कलेस } पाना) पु० दुख, कष्ट पीड़ा, २ झगड़ा, दंगा।

प्रा०कलोल (सं० कल्लोल, कल्= शब्द करना) स्त्री० खेलकूद, क्रीड़ा, चञ्चलाहट, आनन्द।

प्रा० कलौंजी–स्त्री० मगरेला, एक तरह का बीज जो दवाई में काम आता है। [अवतार।

सं० कल्की–पु० विष्णु का दशवां

सं०कल्प (कृप्=समर्थ होना, वा नाश होना) पु० वेद के छः अंगों में का एक अंग, २ ब्रह्माका एक दिन रात जो मनुष्यों के हज़ार चौयुगी अथवा ४३२०००००० का होता है, ३ प्रलय, ४ विकल्प, संदेह, ५ अभिप्राय, मतलब, कामना, मनोरथ, ५ योग्यता, उचितता।

सं० कल्पतरु } (कल्प=मनोरथ, वा
कल्पद्रुम } कामना, तरु, वा द्रुम
कल्पवृक्ष } वा वृक्षका अर्थ पेड़) पु० मनोकामना देनेवाला वृक्ष जो इन्द्र के बाग में है।

सं० कल्पना (कृप्=विचारना) स्त्री०

विचार, बनावट, मानना, युगत, जालसाजी, नक़ल।

सं० कल्पांत (कल्प=ब्रह्माका दिन रात, अन्त=पूरा होना) पु० प्रलय, युगान्त, कल्प का अन्त।

सं० कल्पित (कृप्=विचारना) म्र्म० बनाया हुआ, माना हुआ, कृत्रिम, २ झूठा, असत्य।

सं० कल्मष (कर्म्म=अच्छा काम, वा पुण्य, सो=नाश करना यहां रको ल, और स को ष होगया) पु० पाप, नरक, मल।

सं० कल्याण (कल्य=निरोग, अण= जीना, वा कल्य=प्रभात, अण्=शब्द करना) पु० कुशल, मंगल, शुभ, २ एक रागनी का नाम।

सं० कल्ल-पु० बधिर, बहरा।

प्रा० कल्लर-पु० ऊपर, खारी।

प्रा० कल्ला-पु० जबाड़ा, जबड़ा।

सं० कवच (क=देवा, वंच्=ठगना, वा कु=शब्द करना) पु० झिलम, बख़्तर, वर्म।

सं० कवल (क=पानी, वल्=रुकना) पु० ग्रास, कवर, कवा, कौर, लुकमा।

सं० कवि (कु=शब्दकरना) पु० काव्य बनाने वाला, जैसे वाल्मीकि, कालीदास आदि, शायर, पंडित, बुद्धिमान, २ भाट, चारण।

प्रा० कवित्त (सं० कवित्व, कवि) पु० कविता, काव्य, [illegible]।

सं० कविता (कवि) स्त्री० कविकी बनाईहुई रचना, काव्य, पद्य, श्लोक, छन्द आदि, शायरी।

प्रा० कविताई (कविता) स्त्री० पद्य रचना, तसनीफ़।

सं० कवीश्वर (कवि, ईश्वर=स्वामी) पु० बड़ा कवि, वाल्मीकि।

सं० कव्य (कु=शब्दकरना) पु० पितरों के लिये जो अन्न आदि पदार्थ।

सं० कश्य-पु० मदिरा, घोड़ेकातंग।

सं० कश्यप (कश्य=सोमलता, सोमवल्ली, पा=पीना) पु० एक मुनि का नाम, मरीच ऋषि का बेटा और देवता राक्षस और मनुष्यों का पुरुषा, प्रजापति, कश्यप शब्द यथार्थ में पश्यक था आदि अंत अक्षरों के विपर्य्यय अर्थात् बदलने से कश्यपबना इसका अर्थहुआ सर्वज्ञ, २ अज्ञान नाशक, ३ विशेषज्ञानवान् ४ आत्मज्ञानी; ५ परब्रह्म ६ सृष्टिकर्त्ता।

सं० कष्ट (कष्=मारना, हानिपहुंचाना) पु० दुख, कलेश, पीड़ा, तकलीफ़, संकट।

प्रा० कस— गु० कैसा, पु० परख, ताव, २ ज़ोर, बल। [टीस।

प्रा० कसक-स्त्री० पीड़ा, दुख, टसक,

प्रा० कसना (सं० कृष्=खींचना, वा कष्=जांचना) क्रि० स० खींचना, तानना, जकड़ना, २ सोने की कसौटी पर घिसके परखना, जांचना, परखना, ३ [illegible], [illegible] भरना।

प्रा० कसमसाना-क्रि० अ० हिलना,

अंग मरोड़ना, कुम्हलाना।

प्रा० कसार—पु० एक तरह की मिठाई जो चावल और शक्कर से बनाई जाती है।

प्रा० कसेरा (सं० कांस्य कार, कांस्य=कांसा, कार=करने वाला, कृ=करना) पु० ठठेरा, भरतिया।

प्रा० कसौटी (सं० कष्=कसना, जांचना) स्त्री० एक पत्थर जिस पर सोना चांदी कसा जाता है, धातु परखने का पत्थर।

सं० कस्तूरी (कस्=जाना, अर्थात् जिस से सुगंध निकलती है) स्त्री० सुगंधित चीज जो हरिण की नाभ में मिलती है, मृगमद, मुश्क।

प्रा० कहना (सं० कथन, कथ्=कहना) क्रि० स० बोलना, जताना आज्ञा करना।

प्रा० कहदेना— बोल० जतादेना, आज्ञा देना।

प्रा० कहनावत / कहावत (सं० कथावत्, कथा, बात, वत्=बराबर, तुल्य) स्त्री० बात, दृष्टांत, मिसाल, मसल।

प्रा० कहरना / कहराना क्रि० अ० कराहना, किसी दुख अर्थात् पीड़ा के कारण आह मारना। [किस जगह।

प्रा० कहां (सं० क) क्रि० वि०

प्रा० कहांतक—क्रि० वि० कितनी दूर तक, २ कितनी देर तक, ३ कितना।

प्रा० कहांसे— क्रि० वि० किसजगह से, किस तरफ से, किधर से।

प्रा० कहांकाकहां— बोल० कितना, २ हद्द से बाहर, बहुतही बहुत।

प्रा० कहानी (सं० कथन, कथ्=कहना) स्त्री० बात, कथा, क़िस्सा।

प्रा० कहार (सं० कर्म्मकार, कर्म्म=काम, कार=करने वाला) पु० महरा, भोई, पालकी उठाने वाला।

प्रा० कहीं (सं० क्वापि, क्व=कहां, अपि=भी) क्रि० वि० किसी जगह, जहां कहीं, कहुं।

प्रा० कहींनकहीं— बोल० इसजगह या उस जगह, यहां अथवा वहां, किसी न किसी जगह। [जगह।

प्रा० कहुं—क्रि० वि० कहीं, किसी

प्रा० कांकर—पु० कंकर, रोड़ा, पत्थर के छोटे २ टुकड़े। [कक्ष, पार्श्व।

प्रा० कांख (सं० कक्ष) स्त्री० बगल,

प्रा० कांचुली (सं० कञ्चुक, कचि=बांधना) स्त्री० अंगिया, चोली, कंचुकी।

प्रा० कांजी (सं० काञ्जिक) पु० खट्टा मांड, तुरानी, पीछ।

प्रा० कांटा (सं० कण्टक) पु० शूल, शाल, कण्टक, २ सोना अथवा दवाई आदि तोलने की छोटी तराजू, परयानी, ३ मछली पकड़ने की वंशी, ४ मछली की हड्डी।

प्रा०कांटासानिकलजाना-बोल० दुख अथवा हानि से छुटजाना।

प्रा० कांटोंपरघसीटना—बोल० बहुत सराहना, किसी की योग्यता से अधिक बड़ाई करना, (जबकोई किसी आदमी की बहुत सराहना करता है तब वह आदमी नम्रतासे ऐसा कहता है)

प्रा० कांटेबोने—बोल०अपने लिये आपही दुख पैदा करना, अपनी बुराई आप करना, किसी को दुख देना। [नगीच, निकट।

प्रा० कांठा (सं० कण्ठ) पु० पास,

प्रा० कांदा (सं० कन्द) पु० प्याज।

प्रा० कांदू (सं० कान्दविक) पु० भड़भूजा २ चीनी का हंडा।

प्रा० कांधा (सं०स्कन्ध) पु० कंधा, कांध, कंध।

प्रा० कांधादेना—बोल० सहायता देना, २ मुर्दे को लेजाना।

प्रा० कांपना (सं० कंपन, कंप्= कांपना) क्रि० अ० हिलना, थरथराना, डुलना, कँपना, धड़धड़ाना।

प्रा० कांस (सं० काश, काश्=चमकना) पु० एक प्रकार की घास।

प्रा० कांसा (सं० कांस्य) पु० एक प्रकार की धातु।

सं० काक ([illegible]) पु० [illegible], वायस।

सं० काकतालन्याय=कौवा श्रम कर ताड़के वृक्षपर जाकर फलको खाता है तात्पर्य्य यहहै कि श्रम से सब पदार्थ प्राप्त होते हैं।

सं०काकपक्ष (काक=कौवा, पक्ष= पंख, अर्थात् कौवे का पंख जैसे) पु० पट्टा, जुलफी।

प्रा०काका } पु० चचा, बाप का
प्रा० कका } छोटा भाई पितृव्य।

सं०काकिणी- स्त्री० छदाम, कच्ची दो दमड़ी।

प्रा० काकी-स्त्री०चची,चचाकीस्त्री।

प्रा०काकातूआ— पु० सूये की जात का पक्षी।

प्रा०काकबधू—कवयी।

प्रा० काग } (सं०काक)पु०कौवा।
काग़ा }

प्रा०कागर—पु० किनारा,कोर, औंठ, २ केंचली सर्पकी।

सं० कांक्षा (कांक्ष=चाहना) स्त्री० चाह, इच्छा, चाहना, अभिलाष, ख़्वाहिश।

अं०कांग्रेस=मेल, मिलाप।

सं० काच (कच्=चमकना) पु० शीशा, आईना, २ एक तरह की आंखों की बीमारी। [कहानी।

प्रा० काचा—पु० कच्चा, २ अधूरा,

प्रा० काछ (सं० [illegible]

धना) स्त्री० धोती का पल्ला जो पीछे खेंचकर बांधा जाताहै, लांग, २ जांघ के ऊपर का भाग।

प्रा० काछन-स्त्री० काछी की स्त्री।

प्रा० काछनी-स्त्री० लंगोटी, कोपीन, जांघिया।

प्रा० काछी पु० कुंजरा, माली।

प्रा० काज / प्रा० काजा (सं० कार्य्य) पु० काम, धंधा, कारज।

प्रा० काजल (सं० कज्जल) पु० सुरमा, अंजन।

सं० काञ्चन (काचि=चमकना) पु० सोना, सुवर्ण, स्वर्ण, तिला।

प्रा० काट (काटना) पु० चीरा, जखम, घाव, २ मैल, छांटन, तलछट, ३ कड़वाहट, तेजी, ४ धार।

प्रा० काटकरना-बोल० घायलकरना, जखमी करना, काटना।

प्रा० काटकूट-बोल० छांट छूंट, कतरन, छांटन, छीलन, टुकड़ा।

प्रा० काटकूटकरना-बोल० कतरना, काटना, तराशना, काट डालना, २ काट लेना, लेलेना, मुजरा लेना।

प्रा० काटखाना-बोल० दांतमारना, दांत काटना, भंभोड़ना, पकड़ना, काटना, डसना, मुँह डालना।

प्रा० काटना (सं० कर्त्तन, कृत् =काटना) क्रि० स० छेदना, तोड़ना, कतरना, चीरना, टुकड़े टुकड़े करना, २ काटखाना, खाना, खाजाना, खालेना, ३ लौना, कटनी करना, ४ आरे से चीरना, आरा चलाना, ५ बिताना (समय) चलना, जाना, तै करना (रस्ता)।

प्रा० काटडालना-बोल० काटकाढ़ना, साफ करना, उतार डालना, छांट डालना।

प्रा० काठ (सं० काष्ठ) पु० लकड़ी।

प्रा० काठकबाड़-बोल० लकड़ीकी चीजें।

प्रा० काठकाउल्लू-बोल० मूर्ख बेवकूफ, घामड़, बिलल्ला, भुच्च, मियांमिट्ठू, मसखरा, गावदी।

प्रा० काठकीभंवो-- बोल० मूर्ख, बिलल्ली, भुच्च स्त्री, बेवकूफ लुगाई।

प्रा० काठचबाना-बोल० दुख से निवाह करना, दुखसे जीना, कठिनता से गुज़रान करना।

प्रा० काठमेंपांवदेना-बोल० क़ैद होना, क़ैदी होना।

प्रा० काठहोना--बोल० कड़ा होना, सूखजाना, पथराना, पत्थरहोजाना।

प्रा० काठपुतली / कठपुतली (सं० काष्ठपुत्तली) स्त्री० लकड़ी की बनी हुई मूरत।

प्रा० काठकीड़ा (सं० काष्ठकीट) पु० खटमल, उड़ीस, खाट कीड़ा,

२ घुन, एक कीड़ा जो लकड़ी को काटता है और खाता है।

प्रा० काठड़ा / कठड़ा (सं० काष्ठ) पु० लकड़ी का बरतन।

प्रा० काठी (सं० काय, वा काष्ठ) स्त्री० जीन, २ शरीर, ३ डीलडौल।

प्रा० काढ़ना—क्रि० अ० निकालना, खेंचना, बाहर लेना, उधेड़ना, बाहर निकालना, कपड़े पर सूई से फूल बनाना, कसीदा निकालना।

प्रा० काढ़ा—पु० जोश दिया हुआ दवाई का पानी, काथ, कसैलारस।

प्रा० काणा (सं० काण, कण्=आंख ढकना) गु० एक आंखवाला, एकाक्ष, २ (फल) जिसका गूदा सड़ गयाहो, अथवा जिसमें कुछ गूदा न हो, ३ मूर्ख, बेवकूफ, पु० काग, कौआ।

सं० काण्ड (कण्=शब्दकरना, वा जाना, वा कई विभाग करना) पु० सर्ग, खंड, प्रकरण, अध्याय, भाग, बार, विभाग, २ समूह, ३ डंठल, ४ समय, ५ बाण, ६ सेन, ७ घोड़ा, ८ गन्ना।

प्रा० कातना (सं० कर्तन, कृत्=लपेटना) क्रि० स० सूत कातना, चरखे पर रूई से सूत बनाना।

सं० कातर (का=थोड़ा, तॄ=पार होना, अर्थात् जो जल्द घबराता है) गु० कायर, डरपोक, व्याकुल, घबराया हुआ।

प्रा० कातिक (सं० कार्त्तिक) पु० सातवां हिंदी महीना, कार्त्तिक।

प्रा० कादर (सं० कातर) गु० कायर, डरपोक।

प्रा० कादा / कांदौं (सं० कर्दम) पु० कीचड़, चहला, पंक।

प्रा० कान (सं० कर्ण, कृ=करना, शब्द ज्ञान को) पु० सुनने की इंद्री, श्रवण, सुनने की राह।

प्रा० कानऐंठना / कानअमेठना बोल० कान खींचना, ताड़ना करना, सजादेना।

प्रा० कानभरना—बोल० विरोध डालना, चुगली खाकर झगड़ा खड़ा करना, बखेड़ा डालना, तोड़ फोड़ करना।

प्रा० कानपरजूंनचलना बोल० बहुत असावधान होना, बहुत ढीला होना।

प्रा० कानपररखना—बोल० याद रखना।

प्रा० कानपरहाथधरना—बोल० मुकरना, नहीं करना, न मानना, इंकार करना, न करना।

प्रा० कानपकड़ना—बोल० अपनी हेठा मान लेना, अपनी छोटाई अथवा ढिठाई को मान लेना।

प्रा० कानफूटना—बोल० बहराहोना।

प्रा० कानफोड़ना—बोल० शोरकरना, गुल्ल करना, गुहार करना, हल्ला करना, हा हू करना।

प्रा० कानफूंकना—बोल० चुगली खाना, भेद कहना, झगड़ा उठाना, २ मंत्र देना, सिखाना, शिक्षा देना।

प्रा० कानझुकाना—बोल० सुननेको चाहना, सुनाचाहना।

प्रा० कानदबाकरचलेजाना—बोल० भागजाना, पलाना, रमजाना।

प्रा० कानधरना—बोल० सुनना, ध्यान देना। [देकर सुनना।

प्रा० कानदेसुनना—बोल० ध्यान

प्रा० कानदेना—बोल० सुनना, ध्यान देना।

प्रा० कानकाटना—बोल० बढ़ निकलना, बढ़ चलना, थकाना, हराना, पीछे देना।

प्रा० कानखड़ेहोना—बोल० चौंकना, डरना, भड़कना।

प्रा० कानखोलदेना-बोल० जताना, चिताना, सावधानकरना, सुचेतकरना।

प्रा० कानलगना—बोल० भरोसे वाला होना, विश्वासी होना।

प्रा० कानमलना—बोल० ताड़ना करना, सज़ा देना, डाटना, कान एंठना, कान अमेटना।

प्रा० कान में उँगली दे रहना—बोल० कान बंद करना, बहरा बनना, सुनी अनसुनी करना।

प्रा० कानमें बात मारना—बोल० नहीं सुननेका बहाना करना, कान में तेल डालना।

प्रा० कानमेंतेलडालना—बोल० नहीं सुननेका बहाना करना, कान में बात मारना।

प्रा० कानमेंतेलडालकेसोरहना-बोल० असावधान होना, अचेत होना, वे परवाह होना, गाफिल होना।

प्रा० कानमेंकहना / कानमें डालना }बोल० काना फूसी करना काना कानी करना, कानाबाती करना, कहदेना।

प्रा० काननहिलाना—बोल० चुप रहना।

प्रा० कानहिलाना—बोल० राज़ी होना, प्रसन्न होना, हां हूं करना।

प्रा० कानहोने—बोल० समझना, बूझना, पहुंचना।

प्रा० कानाबातीकरना—बोल० कान में बात कहना, काना फूसी करना, काना कानी करना, खुस फुस करना, २ सलाह करना।

प्रा० कानाफूसी—बोल० काना बाती, कानाकानी, फुस फुसाहट, खुसर फुसर।

प्रा० कानाकानीकरना—काना

वार्ता करना, कानाफूसी करना, खसफस करना ।

प्रा० कानोंकानकहना— बोल० काना वार्ता करना, कानाफूसी करना ।

प्रा० कान—स्त्री० लाज, संकोच, मर्यादा, मान, परदा, अदब । [लजाना ।

प्रा० कानकरना—बोल० शरमाना,

प्रा० कानछोड़ना—बोल० बेशरम होना, निर्लज्ज होना, ढीठ होना, गुस्ताख होना ।

प्रा० काननकरना } बोल० ढिठाई करना, गुस्ताखी करना, अदब नहीं मानना ।
काननमानना }

सं० कानन (कन्=चमकना, शोभना, वा क=पानी, अन=जीना, अर्थात् जो पानी से फलता फूलता है) पु० जंगल, वन, विपिन, २ (क=ब्रह्मा, आनन=मुँह) ब्रह्मा का मुँह ।

प्रा० कानी (सं० काणी) स्त्री० गु० एक आंखवाली स्त्री ।

प्रा० कानीकौड़ी (सं०काणी=कानी, कपर्द=कौड़ी) स्त्री० बोल० ऐसी कौड़ी जिसमें छेद हो, फूटी कौड़ी ।

प्रा० कानी—स्त्री० बैर, द्वेष, डाह ।

सं० कान्त (कन्=चमकना, वा कम्=चाहना) पु० स्वामी, भर्ता, पति, [illegible], गु० सुन्दर, मनोहर, प्यारा, प्रिय, [illegible] ।

सं० कान्ता (कन्=चमकना, वा कम्=चाहना) स्त्री० पत्नी, लुगाई, स्त्री, भार्य्या, घरवाली, प्यारी, प्रिया, सुन्दरी, २ कान्ति, सुन्दरता ।

सं० कान्ति (कम्=चाहना) स्त्री० शोभा, सुन्दरताई, चमक, दमक, खूब सूरती, दीप्ति, प्रकाश, २ चाह, इच्छा ।

सं० कान्यकुब्ज (कन्या=लड़की, कुब्जा=कुबड़ी) पु० कनौजदेश, २ ब्राह्मणोंकी एकजाति, कनौजिया ।

प्रा० कान्ह } (सं०कृष्ण) पु० श्रीकृष्ण का नाम । [नाम ।
कान्हर }

प्रा० कान्हड़ा—पु० एक रागिणीका

सं० कापुरुष (का=बुरा, पुरुष=मनुष्य) पु० खोटा मनुष्य, बुरा मनुष्य, २ डरपोक ।

सं० काम (कम्=चाहना) पु० चाह, मकसद, इच्छा, कामना, मनोरथ, चाही हुई चीज, चाहा हुआ विषय, २ कामदेव, प्यार का देवता, ३ सुख, ४ शहवत ।

प्रा० काम (सं० कर्म) पु० काज, कार्य, धंधा ।

प्रा० कामआना—बोल० काम में आना, [illegible] २ [illegible] लड़ाई में मारा जाना ।

प्रा० कामपूराकरना [illegible] सिद्ध करना, काम [illegible] करना, [illegible]

बेड़ना, निपटाना, भुगताना, २ मार डालना, जान से मार डालना, खपाना ।

प्रा० काम पूरा होना—बोल० काम सिद्ध होना, काम पार होना, निबड़ना, निपटना, काम होचुकना, २ मरना, मारा जाना, मर जाना, खपना ।

प्रा० काम चलाना—बोल० काम निकालना, काम जारी रखना ।

प्रा० काममेंलाना—बोल० बरतना, इस्तअमाल करना ।

प्रा० कामनिकालना—बोल० काम चलाना, २ किसी की चाह पूरी करना ।

प्रा० कामकाज (सं० कर्म्म+कार्य्य) बोल० काम, धंधा, कारबार ।

सं० कामकेलि (काम=कामदेव, वा स्त्रीसंग, केलि=खेल, किल्=खेलना) स्त्री० रंगरस, दुलार, प्यार, स्त्रीसंग, रति, मैथुन, सुरत, स्त्री पुरुष का मिलाप, केल करना ।

सं० कामद (काम=इच्छा, कामना, दा=देना) गु० मनवांछित फल कादेनेवाला, चाहहुएकादेनेवाला ।

प्रा० कामदगाई (सं० कामदगो, कामद=चाहे हुए को देनेवाली, गो=गाय) स्त्री० कामधेनु ।

सं० कामदेव (काम=इच्छा, वा प्यार, देव=देवता) पु० प्यार का देवता, मदन ।

सं० कामधेनु (काम=मनोरथ, धेनु=गाय) स्त्री० इंद्र की गाय जिससे जो कुछ मांगो सो देती है—२गाय जो बहुत दूध देती हो ।

सं० कामना (कम्=चाहना) स्त्री० चाहना, चाह, इच्छा, अभिलाष, वासना, ख़्वाहिश ।

प्रा० कामरि / **कामरी** (सं० कम्बल) स्त्री० लोई, कम्बल,

सं० कामरूप (काम=इच्छा, रूप=आकार) गु० चाहे जैसा रूप बना लेनेवाला, २ सुन्दर, सुहावना, मनोहर, पु० एक देश का नाम जो आसाम का एक भागहै ।

सं० कामरूपी (काम+रूप) गु० सुन्दर, सुहावना, २ स्वेच्छाचारी, बहुरूपिया ।

सं० कामातुर / **कामार्त्त** (काम=प्यार, इश्क़ आतुर वा आर्त्त=घबराया हुआ) गु० कामी, मस्त, कामसे पीड़ित ।

सं० कामारि (काम=कामदेव, अरि=वैरी) पु० महादेव, शिव, २ काम को नाश करनेवाली धातु ।

सं० कामिनी (कामी, कम्=चाहना) स्त्री० परमसुन्दरी, रमणीक स्त्री, प्यारी, प्रिया ।

सं० कामी (काम) पु० कामातुर, कामके वश, शहवतपरस्त। [मस्त।

सं० कामुक—क० कामी, ऐय्याश,

सं० काम्य—म्म० कमनीय, सुन्दर।

सं० काय पु० } (चि=इकट्ठाकरना)
कायास्त्री० } शरीर, देह, तन।

प्रा० कायफल (सं० कटु=फल, पु० एक दवाई का नाम। [पोक, डेटा।

प्रा० कायर (सं० कातर) गु० डर-

सं० कायस्थ (काय=शरीर, स्था= ठहरना अर्थात् जो ब्रह्मा के शरीर से पैदा हुये) पु० कायथ, एक जाति के मनुष्य जिनका धंधा लिखने पढ़नेका है २ (काय=शरीरमें, स्था=ठहरना) ब्रह्म, परमात्मा।

सं० कायिक (काय) गु० शरीर का, शारीरिक, काया का, देह का, देही, शरीरी।

सं० कारक (कृ=करना) क० पु० करनेवाला, २ (व्याकरण में) क्रिया से संबंध करने वाला जैसे कर्त्ता कर्म आदि।

प्रा० कारज (सं० कार्य) पु० काम, काज।

सं० कारण (कृ=करना) पु० सबब, हेतु, निमित्त, निर्ण।

सं० कारणकरण—क० पु० महत्तत्वा- दिक, कर्त्ता, [illegible] सृष्टि का [illegible]।

सं० कारागार ([illegible], कृ =मारना, आगार=स्थान) पु० कैदखाना, जेलखाना, बंदीखाना, बंदिगृह। [नेवाला, कर्त्ता।

सं० कारि (कृ=करना) क० पु० कर-

सं० कारुणिक (करुणा=दया) क० पु० दयालु, कृपालु, करुणानिधान, दयावान्।

सं० कार्तिक (कृत्तिका एक नक्षत्र का नाम, इस महीने की पूर्णमासीके दिन कृत्तिका नक्षत्र होता है और इस महीने में पूरा चांद इस नक्षत्र के पास रहता है) पु० कातिक।

सं० कार्पण्य } भा० स्त्री० कृपणता,
कार्पण्यता } बखीली।

सं० कार्याधिकारी—क० पु० का- रिन्दा, कारकुन। [धनुष, इषुधि।

सं० कार्मुक (कृ=करना) पु०

सं० कार्य (कृ=करना) पु० काम, काज, कारज, २प्रयोजन, ३कारण, हेतु।

सं० कार्यकलाप } कारवाई,
कार्यप्रवृत्ति } कारगुजारी।
कार्यवाही }

सं० कार्यदक्ष—गु० कारगुजार।

सं० कार्यदक्षता—भा० स्त्री० कारगु- जारी।

सं० कार्यनिष्ठ (कार्य=क.म. निष्ठ= [illegible], स्था=ठहरना) [illegible] काम में लगा हुआ, काम में मशगूल।

सं० काल ([illegible]) [illegible]

पाना) गु० काला, कृष्णवर्ण, असित (कल्=गिनना, बिताना, वा प्रेरणा करना, चलाना) यमराज, २ मौत, मृत्यु ३ समय, ऋतु।

प्रा० कालबिताना, कालकाटना, कालगँवाना — बोल० समय बिताना, दिन काटना, वक्त काटना।

प्रा० काल (सं० अकाल) पु० महँगी अकाल, कुसमय, दुर्भिक्ष, कहत।

प्रा० काल (सं० काल, काला) पु० सांप।

प्रा० काल (सं० कल्य) पु० कल, कल कादिन—(व्रजभाषामें)

सं० कालकूट (काल=मौत, कूट्=ढेर, कूट्=ढकना, अर्थात् मौतका ढेर वा काल=यमराज, कूट्=जलाना, जो यम को भी जला सके) पु० विष, जहर, हलाहल, २ सांप का विष।

सं० कालक्षेप (काल=समय, क्षिप्=फेंकना) पु० समय बिताना, दिन काटना, वक्त काटना।

सं० कालनेमि (काल=मौत, नेमि=पहिये का घेरा) पु० एक राक्षस का नाम।

सं० कालरात्रि (काल=मौत, वा अंधेरी, रात्रि=रात) स्त्री० मौत की रात, प्रलय की रात, कल्पान्तरात्रि, २ दुर्गा का एक नाम, ३ दिवाली, दीपमालिका की रात्रि।

प्रा० काला (सं० काल) गु० काला रंग, कृष्णवर्ण, कलौटा, कलछौंहा, पु० सांप, २ समय, ३ श्रीकृष्णकानाम।

प्रा० कालाचोर—बोल० नहीं जाना हुआ मनुष्य, बेजान पहचान का आदमी, चाहे जैसा आदमी।

प्रा० काला मुहँ करना—बोल० फिटकारना, निकाल देना, हांकना, खदेड़ना, २ बे इज्जत करना।

प्रा० कालेकोस—बोल० बहुत दूर।

सं० कालिका, काली (काल काला) स्त्री० काली देवी, काली माई, दुर्गा, देवी, शक्ति।

सं० कालिदास (काली=दुर्गा, दास=सेवक) पु० एक कवि का नाम जिस के रघुवंश, कुमारसंभव, नलोदय और शकुन्तलानाटक आदि बहुत से काव्य प्रसिद्ध हैं।

सं० कालिन्दी (कलिन्द एक पहाड़ का नाम जहांसे यमुना नदी निकली, अथवा कलिन्द सूर्य, अर्थात् सूर्य की बेटी) स्त्री० यमुना नदी, २ सूर्यकीबेटीजोश्रीकृष्णकोब्याहीथी।

सं० कालिन्दीभेदन (कालिन्दी=यमुना, भेदन=तोड़ना, मोड़ना) पु० श्रीकृष्ण के बड़े भाई बलदेव जी जिन्हों ने अपने हल से यमुना को मोड़लीथी।

प्रा० कालिमन, कालिमा — गु० कारिख, स्याही, कालापन।

प्रा० कालिया } (सं० कालिय, काल=
काली } काला) पु० एक सांप का नाम जिसके एक सौ दश फन थे जिसको श्रीकृष्ण ने कालीदह से बाहर निकाला।

प्रा० कालीदह (सं० कालिय, काली=सांप, ह्रद=गहरापानी) पु० यमुना नदी में एक भँवर जिसमें काली सांप रहता था।

प्रा० कावादेना—क्रि० घोड़े को चक्कर देना, घोड़े को गोल २ घुमाना।

सं० कावेरी (क=पानी, वेर=शरीर) स्त्री० एक नदी का नाम।

सं० काव्य (कवि, अर्थात् कवि का) पु० कविता, रचना, छन्द, पद्य, कवि का बनाया हुआ ग्रन्थ।

सं० काश (काश=चमकना) पु० कांस, एक प्रकार की घास, रजांसी, गोली।

सं० काशि—क० पु० सूर्य।

सं० काशी (काश=चमकना) स्त्री० बनारस, जो वरुणा और असी नदी के मध्य में बसी।

सं० काशीराज } (काशी=बनारस,
काशीनाथ } राजा वा नाथ=स्वामी) पु० महादेव, शिव, २ काशी का राजा।

सं० काश्मीर (कश्मीर अर्थात् जो कश्मीर में पैदा हो) पु० केशर।

सं० काष्ठ (काश=चमकना) पु० काठ, लकड़ी, [illegible]।

प्रा० काहू—गु० सर्वना० किसी को कोई, कौन, कुछ।

प्रा० काहे—सर्वना० किसलिये, क्यों।

प्रा० कि—समुच्चयक अव्यय, पूर्वोक्त वर्णन, काफ बयानिया।

सं० किंवदन्ती (किम्=कुछ, वद=कहना) स्त्री० लोगों का कहना, गप, अफवाह।

सं० किंशुक (किम्=कुछ, शुक=जाना) पु० पलाश, टेसू, छिउल।

प्रा० किकियाना—क्रि० अ० चिल्लाना, चिचियाना।

सं० किङ्कर (किम्=कुछ, कर=करने वाला, कृ=करना) पु० दास, नौकर, चाकर, सेवक, ताबेदार।

सं० किङ्किणी (किम्=कुछ, किण=शब्द) स्त्री० कंदोरा, कंधनी, कटिबंधन, क्षुद्रघंटिका, करधनी।

प्रा० किचकिचाना—क्रि० अ० दांत पीसना। [पंक।

प्रा० किचपिच—पु० कांदा, कीचड़,

सं० किञ्चित् (किम्=क्या, कुछ) गु० थोड़ा, कुछ, कुछेक, अल्प, कम।

प्रा० किटकिटाना—क्रि० [illegible] क्रोध से दांत पीसना।

प्रा० कित (सं० कुत्र, कहां) क्रि० वि० कहां, [illegible]।

प्रा० [illegible]—[illegible]

प्रा० कितनाही-बोल० चाहेजितना।

प्रा० किदारा (सं० केदार) पु० एक रागिणी का नाम जो गर्मी में आधीरात के समय गाई जाती।

प्रा० किधर-क्रि० वि० किसतरफ़, कहां।

प्रा० किनारी—स्त्री० गोटा, कोर।

सं० किन्तु (किम्=क्या, तु=फिर) समुच्च० पर, परन्तु, लेकिन।

सं० किन्नर (किम्=कुछ अथवा बुरा, नर=मनुष्य) पु० गंधर्व, देवताओं का गवैया, कुबेर के सेवक जिनके घोड़ेका मुँह और आदमी की धड़है।

सं० किम्—सर्वना० क्या, कौन, कैसा।

सं० किम्पुरुष (किम्=कुछ, पुरुष=मनुष्य) पु० किन्नर, गंधर्व, देवताओं का गवैया।

सं० किंवा (किम्=क्या, वा अथवा) समुच्च० अथवा।

प्रा० कियारी } **क्यारी** } (सं० केदार, क=पानी, द=फटना) स्त्री० फूलों का तख़ता, मेंड़।

सं० किरण (कृ=फैलनाप्रकाशको) स्त्री० सूर्य का तेज, चांदकाप्रकाश, रश्मि, शुआ।

सं० किरात (कृ=मारना, हिंसा करना) पु० भील, निषाद, जंगली मनुष्यों की एक जाति।

प्रा० किराना (सं० क्रयण, क्री=मोल लेन करना) पु० चीज़ जो पसारी बेचते हैं, मसाला।

प्रा० किरिया (सं० क्रिया, कृ=करना) स्त्री० सौंह, सौगंद, शपथ, क़सम।

सं० किरीट (कृ=बिखेरना प्रकाश को) पु० मुकुट, शिरका गहना, ताज।

प्रा० किर्च—स्त्री० फांस, खपाच, २ तलवार।

सं० किल—क्रि० वि० निश्चयही।

प्रा० किलकिलाना (सं० किलकिला, किल्=खेलना) क्रि० अ० चिड़चिड़ाना, चिड़चिड़ा होना, गर्जना, गुर्राना।

प्रा० किलकारी (सं० किलकिला) स्त्री० चिल्ली मारना, बहुत जोर से पुकारना, वानर का शब्द।

सं० किसलय(किम्=कुछ, षल्=जाना) पु० नयेपत्ते, नई डाली, नवपल्लव।

सं० किल्बिष—पु० अपराध, पाप, रोग, अनिष्ट।

सं० किशोर (किम्=कुछ, शूरवीर, अर्थात् इस अवस्था में कुछ २ वीरता देखी जाती है) पु० दश बरस से पंद्रह बरस तक की उमर का लड़का, २ जवानी की शुरूअ अवस्था, तरुणावस्था।

सं० किष्किन्धा (किष्क्=मारना) स्त्री० एक पुरी का नाम जिन का

राजा बालि वानर था फिर उस को मार के श्रीरामचंद्र ने उस पुरी का राज्य सुग्रीव को दिया।

प्रा०किसनई (सं० कृषि=खेती) स्त्री० किसान का काम, खेती।

प्रा० किसान (सं०, कृपाण वा कृषिमान्) पु० खेती करनेवाला, जोतहार।

प्रा०किसानमात्र=महजकाश्तकार।

प्रा० किसारी—स्त्री० एक प्रकार का नाज जिसकी दाल बनती है, चटरी।

प्रा० कीकड़—पु० बबूल, कटीला पेड़।

सं० कीचक—पु० नाम दैत्यका, २ वेणु रन्ध्र, अंकुररहित वांस जो वायु लगने से बोलते हैं, वांस छिद्र।

प्रा० कीच / कीचड़ } पु० कांदो, पांका, (सं० कच्छर) मैला।

सं० कीट (कीट्=रंग रंग का होना) पु० कीड़ा, पतंग, लखेरी।

प्रा०कीड़ा (सं०कीट) पु० कीटपिल्लुआ।

सं०कीदृक् / कीदृक्ष } गु० कैसा, किसप्रकार।

प्रा० कीना / कीन्हा } (करना) क्रि०स० किया।

सं०कीर (की=ऐसाशब्द, ईर=भेजना) पु० तोता, सुआ, सुग्गा।

प्रा० कीरत / सं० कीर्ति } (कृत्=सराहना) स्त्री० यश, नामवरी, सराह, सुयश।

सं०कीर्त्तन (कृत्=सराहना) भा० पु० गुणवर्णन, यश बखानना, सराह, २ गाना, ३ कहना।

सं०कील (कील्=बांधना) स्त्री० कीला, खूँटी, कांटा, मेख, खूंटा।

सं० कीलक (कील्+अक) क०पु० खूंटा, बन्धक, गौओं के बांधने का खंभा।

सं० कीलकाँटा—बोल० औजार, साज सामान, कल कांटा।

प्रा० कीलना (सं० कीलन, कील्=बांधना) क्रि०स० मंत्र फूंकना, बंध करना, सांपको मंत्र से वश करलेना।

सं० कीश (कि=हनुमान, क=हवा अर्थात् हवा का बेटा, और ईश=मालिक, अर्थात् जिनका मालिक हनुमान् है) पु० बन्दर, वानर।

सं० कु—उपस० बुरा, अधम, नीच, निंदित, २ कम, थोड़ा, ३ झूठा, (जैसे कुतर्क, झूठी तर्क)

सं०कु—स्त्री० धरती, पृथ्वी, जमीन।

प्रा०कुंगड़ा—पु० बलवान्, संड मुसंड, पहलवान।

प्रा० कुंचकी (सं० कंचुक, कचि बांधना) स्त्री० चोली, अंगिया, कांचली।

प्रा०कुंजड़ा—पु० एक जाति, सि-

सका काम तरकारी और फलफला-री बेचने का है।

प्रा० कुंजी (सं०कुंचिका, कुञ्च=टेढ़ा होना, वा खींचना, कसना) स्त्री० चाभी, ताली।

प्रा० कुंदी—स्त्री०कपड़ों का घोटना।

प्रा० कुंदीकरना—बोल० कपड़ों का घोटना, पीटना।

प्रा० कुंवर (सं० कुमार) पु० बेटा, लड़का, २ राजा का बेटा, राजकुमार, राजपुत्र।

प्रा० कुंवरी (सं० कुमारी) स्त्री० बेटी, लड़की, २ राजा की बेटी, राजकन्या, राजपुत्री।

प्रा० कुंवारा (सं०कुमार) पु०अनब्याहा लड़का, गु०अनब्याहा।

प्रा० कुंवारी (सं० कुमारी) स्त्री० अनब्याही लड़की, गु०अनब्याही।

सं० कुकर्म (कु=बुरा, कर्म=काम) पु०बुरा, काम,अन्याय,पाप,दुष्कर्म।

सं० कुक्कुट (कु=शब्द करना, वा कुक्=लेना) पु०मुर्गा, कुकड़ा।

सं० कुक्कुर (कुक्=लेना, वा कुर्=शब्द करना) पु० कुत्ता, श्वान।

सं० कुक्षि (कुष्=निकालना) स्त्री० पेट, कोख।

सं० कुंकुम (कुक्=लेना अथवा लिया जाना) पु० केशर, सुगन्धितद्रव्य-विशेष—२ रोरी।

प्रा० कुंकुमा (सं०कुंकुम) पु० गुलाल रखने का बरतन।

सं०कुच (कुच्=बांधना, वा मिलाना) पु० छाती, चूंची, थन,स्तन, पिस्तां।

सं० कुचन्दन (कु=कम अर्थात्बिन सुगन्ध, चन्दन) पु० लालचन्दन, रक्तचन्दन।

सं०कुचकुड्मल—पु०कुचकली,चूंची की घुंडी।

प्रा०कुचर-गु०निंदक,दोषढूंढनेवाला।

प्रा०कुचलना—क्रि० स० चूरकरना, मसलना।

प्रा० कुचला—पु० मैनफल,एक औषध का नाम।

प्रा० कुचाल (कु=बुरी,चाल=रीति) स्त्री० कुरीति, बुरा चलन, कुटेव, बुरा चालचलन।

प्रा०कुचाह—स्त्री० बुरी खबर, बद खबर, २ नचहना, स्नेह।

प्रा० कुचेला—गु० मैला, मैले कपड़े पहने हुए।

प्रा० कुछ (सं० किञ्चित्=थोड़ा) गु० थोड़ा, कम, कुछ, एक आध, जो कुछ, थोड़ा बहुत।

प्रा० कुछऔरगाना—बोल० झूठी बात बनाना,२ औरही बात कहना।

प्रा० कुछेक—बोल०थोड़ाबहुत,कुछ कुछ, कुछ।

प्रा०कुछसेकुछहोना } बोल० वि-
कुछकाकुछहोना } लकुलबद-
लजाना, सबकासब बदलजाना।

प्रा० कुछकुछ- बोल० थोड़ासा, कुछेक, थोड़ाएक, थोड़ा बहुत, कुछ।

प्रा० कुछनकुछ- बोल० थोड़ाबहुत, थोड़ासा।

प्रा० कुछनहीं- बोल० कोई और चीज़ नहीं, कुछ और नहीं, २ निकम्मा, कामका नहीं।

प्रा० कुछहो- बोल० चाहे सो हो, जो कुछ हो।

सं० कुज(कु=पृथ्वी, जन्=पैदा होना) क० पु० पृथ्वीपुत्र, मंगल, भौम, सेशम्बा।

प्रा० कुजलीवन } (सं०कुञ्जरवन,
कजलीवन } कुञ्जर=हाथी, वन=जंगल) पु० हाथियों का वन, जिस जंगल में हाथी बहुत हों।

सं० कुजाति(कु=बुरी, जाति=जात) पु० नीचजातिका, कमीना, नीच, अधम।

सं० कुञ्चित (कुञ्च=टेढ़ा होना) वि० टेढ़ा, सिकुड़ा हुआ, घुंघराला।

सं० कुञ्ज(कु=पृथ्वी, जन्=पैदा होना) पु० वह जगह जहां सघन पेड़ और बेलें आदि हों, २ हाथी की ठुड्डी।

सं० कुञ्जर(कुञ्ज=हाथी की ठुड्डी वा कुञ्ज=सघन वृक्षों की जगह, रा=लेना, अर्थात् जो कुञ्जमें रहता है) पु० हाथी, हस्ती, मतंग।

प्रा० कुटकी (सं० कटुका, कटु=कडुवा) स्त्री० एक दवाई का नाम।

प्रा० कुटकी- स्त्री० एक प्रकार का मच्छर, एक जानवर का नाम।

सं० कुटज(कुट=पहाड़ जन्=पैदा होना) पु० एक दवाई का नाम।

प्रा० कुटनी(सं० कुट्टनी, कुट्ट=काटना, निंदा करना) स्त्री० दूती, पराई स्त्री को पराये पुरुष से मिलाने वाली, दल्लाला।

सं० कुटिल(कुट्=टेढ़ाहोना)क० पु० टेढ़ा, कपटी, खोटा, कड़ा, क्रूर, नगरा।

सं०कुटी } (कुट्=टेढ़ा होना) स्त्री०
कुटीर } झोपड़ी, मढ़ी।

प्रा० कुटुम (सं०कुटुम्ब, कुटुम्ब=कुनबा का पालनकरना) पु० कुनबा, परिवार, घराना, कुल, खानदान।

सं० कुटुम्बी (कुटुम्ब) पु० घरवाला, परवारी, कुटुम्ब, नातेदारी।

प्रा०कुटेव (सं० कु=बुरी, हिं०टेव=स्वभाव) स्त्री० कुचाल, दुराचरण।

सं०कुट्टार [illegible] अर्थात् [illegible]

पर काटने के लिये चलाया जाता है) पु० कुल्हाड़ी, वसूला, टांगी।

प्रा० कुठाहर(सं० कुस्थान, कु=बुरी, स्थान=जगह)स्त्री० बुरी जगह।

प्रा० कुड़कना-क्रि० अ० कुड़कुड़ाना, कुटकुटाना, कड़कड़ाना, २ क्रोधसे बोलना।

सं० कुडव-पु० प्रस्थ का चौथाभाग, चारपल, आधपाव।

प्रा०कुढ़ना (सं०क्रुध्=क्रोध करना) क्रि० अ० कल्पना, दुख करना, शोच करना २ गुस्सा करना, क्रोध करना, ३ जलना, दूसरे की बढ़ती देखकर मनमें दुख करना।

सं० कुण्ठक (कुण्ठ्+अक)क०पु० मूर्ख, मन्द, जाहिल, रूठनेवाला।

सं० कुण्ठित (कुण्ठ्=भोथा होना, वा सुस्त होना)क० पु०भोथा, २आलसी,३लज्जित,ख़फाहुआ।

सं० कुण्ड (कुडि=जलाना, वा बचाना)पु० जल के रहने की जगह, हौज,चश्मा, २ होम की आग रखने का गड़हा, होम का कुण्ड।

सं० कुण्डल (कुडि=बचाना वा जलाना)पु० कानमें पहनने का गहना, कर्णभूषण,२ घेरा,मंडल।

प्रा० कुंडलिया (सं० कुण्डलिका) पु० एक छंद का नाम, १४४ मात्रा का छन्द।

सं० कुण्डली (कुण्डल घेरा) स्त्री० घेरा, २सांप, ३जन्मपत्री, ज़ायचह।

प्रा०कुण्डी(सं०कुण्ड्=बचाना)स्त्री० दरवाजे की सिकली या ज़ंजीर।

प्रा० कुतरना (सं० कर्त्तन,कृत्=काटना)क्रि०स०दाँतो से काटना।

सं० कुतर्क (कु=बुरी, वा झूठी, तर्क=दलील) स्त्री० बुरी तर्क, झूठी तर्क, हुज्जत।

सं० कुतूहल (कुतू=कुप्पा, हल=लिखना, अर्थात् कुछ खेलकरना) पु० खेल, कौतुक।

प्रा० कुत्ता (सं० कुक्कुर) पु० एक जानवरकानाम, श्वान।

सं० कुत्सा(कुत्स=निंदा करना) भा० स्त्री० निंदा, बुराई, अवज्ञा, अपमान।

सं० कुत्सित (कुत्स्=निंदा करना) र्म्म० निंदित, नीच, बुराई करने योग्य, नीचा, कमीना।

प्रा० कुदार, कुदाल (सं० कुद्दाल,कु=धरती, उद्=दल, टुकड़ा करना) स्त्री० मिट्टी खोदने का औज़ार,कुदाली,बेल, बेलचा।

सं० कुदृष्टि (कु=बुरी, पापकी, दृष्टि=दीठ) स्त्री० बुरी दीठ, पापदृष्टि, पाप से देखना, बदनज़र, बुरी निगाह।

सं० कुधर } (कु=धरती, धृ=रखना)
कुध्र } पु० पहाड़, पर्वत, शैल।

प्रा० कुधातु (कु=बुरी, अथवा सब से नीच, धातु=धात) स्त्री० लोहा, लोह।

सं० कुनबा (सं० कुटुम्ब) पु० घराना, कुटुम्ब, कुल, खानदान।

सं० कुनारी (कु=बुरी, नारी=स्त्री) स्त्री० दुष्टनारी, खराब औरत।

सं० कुनीति (कु=बुरी, नीति=चाल) स्त्री० कुचाल, बुरी चाल, कुरीति।

सं० कुन्त (कु=बुरा, अन्त=आखिर) पु० बरछी, भाला।

सं० कुन्ती (कम्=चाहना) स्त्री० शूरसेन की बड़ी बेटी, श्रीकृष्ण की फूफी, पांडु की स्त्री और युधिष्ठिर अर्जुन और भीमसेन की मा।

सं० कुन्द (कु=धरती, दो=काटना, वा ई=युद्ध करना, वा क=पानी, उन्द्=भिगोना अर्थात् जो पानी से सींचा जाता है) पु० मोगरा, एक तरह का सफेद फूल।

प्रा० कुन्दन- पु० अच्छा सोना, खालिस सोना, उत्तम सोना।

सं० कुपथ (कु=बुरा, पथ=रास्ता) पु० कुमार्ग, बुरा रास्ता, कुराह, [illegible]

सं० कुपात्र (कु=बुरा, [illegible]

योग्य ब्राह्मण, वा बरतन) गु० अयोग्य, नालायक।

सं० कुपित (कुप्=कोपना) गु० क्रोधित, कोपित।

सं० कुपुरुष (कु=बुरा, पुरुष=मनुष्य) गु० बद आदमी, निषिद्ध मनुष्य।

प्रा० कुप्पा (सं० कुतू, कु=बुरी तरह से, तन्=फैलाना) पु० घी अथवा तेल रखने का चमड़े का बरतन। [होना.

प्रा० कुप्पा होना- बोल० बहुत मोटा

सं० कुफल (कु=खराब, फल=नतीजा) गु० खराब नतीजा, बुरा फल।

प्रा० कुब्ब } (सं० कौब्ज्य, कुब्ज) पु०
कूब } कूबड़, पीठ का झुकाव।

प्रा० कुब्जा (सं० कुब्ज, कु=बुरी तरह से अथवा थोड़ा, उब्ज्=सीधा होना) स्त्री० कुबड़ी कुबड़ा, टेढ़ी पीठ का, जिसकी पीठ झुकी हुई हो, स्त्री० कंस की एक दासी का नाम जिसको श्रीकृष्ण ने सीधी की थी।

सं० कुभार्य्या (कु=बुरी, भार्य्या=स्त्री) स्त्री० बुरी [illegible], लड़ाका स्त्री, कुलटा।

सं० कुमति (कु=बुरी, मति=बुद्धि) स्त्री० बुरी समझ, [illegible] बुद्धि, कुबुद्धि।

सं० कुमार [illegible]

पु० कुंवर, कुमार, बालक, विनब्याहा, कुंवारा।

सं० कुमार्ग (कु=बुरा, मार्ग=रस्ता) पु० कुपथ, बुरी राह, कुचाल।

सं० कुमार्गगामी (कुमार्ग=बुरीमार्ग, गम्+ई, गम्=जाना) त्रि० पु० बुरीराह चलनेवाला, बदराहचलनेवाला।

सं० कुमुद (कु=धरती, मुद्=प्रसन्न होना या करना) पु० कुमोदनी, कोई धौला कमल जो रात को खिलता है और दिन को मुंद जाता है—२ एक वानर का नाम।

सं० कुमुदबन्धु- पु० चन्द्र, चांद।

सं० कुमुदिनी (कुमुद) स्त्री० कमलिनी, २ कमलों का समूह, ३ वह जगह जहाँ कमल पैदा हो।

सं० कुम्भ (कु=पृथ्वी, उम्भ्=भरना, वा क=पानी, उम्भ्=भरना, वा कुंभ्=ढकना) पु० घड़ा, कलश, कलसा, २ हाथी का शिर, ३ ज्योतिष में ग्यारहवी राशि—कुम्भ का मेला=मेला जो हरिद्वार में बारहवे वरस होता है, कुम्भी=मेला जो छठे वरस होता है।

सं० कुम्भकर्ण (कुम्भ=हाथी का शिर वा घड़ा, कर्ण=कान, जिसके कान हाथी के शिर के बराबर हों) पु० रावण का भाई।

सं० कुम्भकार (कुम्भ=घड़ा, कार=करनेवाला) पु० कुम्हार, कुलाल।

सं० कुम्भज- (कुंभ=घड़ा, जन्=पैदा होना) पु० अगस्ति ऋषि का नाम।

सं० कुम्भशाला- स्त्री० घड़ा रखने की जगह, घनौची।

सं० कुम्भसंभव (भू=होना) पु० अगस्ति ऋषि, वशिष्ठऋषि, द्रोणाचार्य्य, ये मित्रावरुण के पुत्र हैं।

सं० कुम्भिका } (कुम्भ्=ढकना) स्त्री०
कुम्भी } एकवृक्षकानाम।

सं० कुम्भीपाक (कुम्भी=तेल का कड़ाह, पाक=पचाना) पु० एक नरक का नाम, जहां पापी गर्म तेल के कड़ाहों में डाले जाते हैं।

सं० कुम्भीर (कुम्भिन्=हाथी, ईर्=पीड़ा देना) पु० मगरमच्छ, घड़ियाल, ग्राह।

प्रा० कुम्हार (सं० कुम्भकार) पु० मिट्टीकेबरतनबनानेवाला, कुलाल।

सं० कुयोग (कु=बुरा, योग=मेल) पु० कुसंगत, बुरी संगत, बुरासंयोग।

सं० कुर्-पु० शब्द, आवाज़, शब्द कर्त्ता, राजा, जमींदार, किसान।

सं० कुररी—स्त्री० चीलह, भेड़ी।

सं० कुरंग (कु=पृथ्वी, रञ्ज्=खुशी करना) पु० हरिन, मृग।

प्रा० कुरी—पु० सबलोग, सबजाति, जाति, कुल। [ज़िम्मा, मारफत।

सं० कुरीर (कुर्+ईर, कुर्=बोलना)

सं० कुरीति (कु=बुरी, रीति=चाल) पु० कुचाल, कुटेव, बुरीचाल ।

सं० कुरु (कृ=करना) पु० दिल्लीके एक पुराने राजा का नाम ।

सं० कुरुक्षेत्र (कुरु=एक राजा का नाम, क्षेत्र=जगह, वा कुरु=पाप, कु=बुरी तरह से, रु=रोना, क्षेत्र, जगह, अर्थात् पाप को दूर करने वाली जगह) पु० दिल्ली के पास एक जगह है जहां कौरवों और पाण्डवों में लड़ाई हुई थी ।

सं० कुरूप (कु=बुरा, रूप=स्वरूप) गु० भोंड़ा, कुडौल, भदेसा, बुरी सूरत का ।

प्रा० कुर्मी- पु० एकजातिका नाम जो खेती का धन्धा करते हैं ।

प्रा० कुर्याल- स्त्री० पखेरूके चैन और बचाव से बैठने की दशा, कि जब वह चोंचसे अपने पंखों को सवाँरता है, (इसीसे) २ चैन, सुख, आराम, बचाव ।

प्रा० कुर्यालमें गुलेला लगना- बोल० निराश होना, अथवा चैन के समय दुख में गिरना ।

प्रा० कुर्री- स्त्री० चादरी, नरमदली ।

सं० कुल (कुल्=इकट्ठा होना, वा बांधना) पु० वंश, घराना, कुनबा, जाति, [illegible] ।

सं० कुलघाती (कुल=वंश, हन्=नाश करना, ह का घ होजाता है) क० पु० कुलनाशक ।

सं० कुलतारण (कुल=वंश, तारण=पार करनेवाला) पु० कुल को बचानेवाला लड़का, सपूत लड़का, गुणवानलड़काजिससेकुल शोभताहै ।

सं० कुलद्रोही (कुल=वंश, द्रोही=विरोधी) गु० कुलका नाश करने वाला, बुरे काम करने से अपने कुलकी निन्दा कराने वाला ।

सं० कुलधर्म्म (कुल=वंश, धर्म=मत) पु० अपने वंश का धर्म, कुलव्यवहार, कुलकी चाल ।

सं० कुलपालक (कुल=वंश, पाल्=पालना) क० पु० कुटुम्बपोषक, खानदान परवर ।

सं० कुलपूज्य (कुल=वंश, पूज्य=पूजने योग्य) गु० सब घराने के पूजनीक, २ कुल देवता, ३ अपने घराने का पुरोहित ।

प्रा० कुलबुलाना- क्रि० अ० खुजलाना, २ कलमलाना ।

सं० कुलवन्ती- (कुल=घराना, वन्ती=वाली) स्त्री० अच्छे घराने की स्त्री, पतिव्रता, सती, सुशीला ।

सं० कुलवान् (कुल=घराना, वान्=वाला) गु० अच्छे घराने का, कुलीन, श्रेष्ठ ।

सं० कुलक्षण (कु=बुरा, लक्षण=चिह्न) पु० बुरा चलन, कुस्वभाव, कुचाल।

प्रा० कुलांच–स्त्री० कूद, फांद, उछाल, लपक, छलांग।

प्रा० कुलांचमारना–बोल० छलांग मारना, फांदना।

प्रा० कुम्हलाना- क्रि० अ० मुरझाना, सूखना।

फ़ा० कुलह }
कुलाह } टोपी, ऊंचीटोपी।

सं० कुलाचार(कुल=घराना, आचार=चलन, वा धर्म) पु० कुलधर्म्म, कुलव्यवहार, ख़ानदानी रस्म।

सं० कुलाल (कुल्=इकट्ठा करना) पु० कुम्हार, मिट्टी के बरतन बनाने वाला, कुम्भकार।

प्रा० कुल्हिया-स्त्री० कुलहड़ी, मिट्टी का एक छोटा गोलबरतन।

प्रा० कुल्हिया में गुड़ फोड़ना-बोल० किसी कामको छुपे २ करना, जो काम बहुतों से होता है उसको थोड़े आदमियों के साथ करने के लिये परिश्रम करना।

प्रा० कुल्हाड़ी (सं० कुठारी) स्त्री० बसूला, कुल्हाड़ी।

सं० कुलिश (कु=बुरी तरहसे, लिश्=थोड़ा करना, वा कुलिन=पहाड़, शी=नाशकरना, वा कुलि=हाथ, शी=सोना) पु० वज्र, इन्द्रका शस्त्र।

सं० कुलीन (कुल) गु० कुलवान, अच्छे घराने का, श्रेष्ठ, शरीफ़।

सं० कुवलय (कु=धरती, वलय=कंकण) पु० कमल, कोई सफेद या नीला कमल।

सं० कुवलिया (कु=बुरा, वल=ज़ोर) पु० कंस के हाथी का नाम जिसमें १०००० हाथियोंका बल था जिसको श्रीकृष्ण ने मारा।

सं० कुविहङ्ग (कु=बुरा, विहस्=आकाश, गम्=जाना) पु० बाज़, जुर्रा, शाहीन।

सं० कुबेर (कुब्=फैलाना अपने धन को, वा कु=पृथ्वी, बृ=ढकना, अपने धन से, वा कु=बुरा, वेर=शरीर) पु० धन का देवता, यक्षोंका राजा, उत्तर दिशाका दिक्पाल।

सं० कुश (कु=पृथ्वी, शी=सोना, वा कु=पाप, शो=नाशकरना, वा कुश्=मिलना) पु० एक प्रकार की घास, दर्भ, डाभ, कुशा, २ रामचन्द्र का बेटा।

सं० कुशल (कुश्=मिलना, वा कु=पृथ्वी, शल्=जाना) पु० कल्याण, मंगल, चैन चान, गु० चतुर।

सं० कुशल क्षेम (कुशल+क्षेम) पु० कुशल मंगल, चैनचान।

प्रा०कुशलात } (सं०कुशल) स्त्री०
कुसरात } कुशल क्षेम, चैन चान, अमन अमान ।

सं० कुशाग्रबुद्धि (कुश + अग्र + बुद्धि) स्त्री० तेज़ अक्ल, पैनी बुद्धि, तीव्र बुद्धि ।

सं० कशूला- पु० डिहरी, कुठिली ।

सं० कुष्ठ (कुष्=निकालना) पु० कोढ़, एक प्रकार का रोग जो अठारह प्रकार का है, उन में से सात तरह का तो बड़ा कठोर और दुःखदायी होताहै, और ११ तरह का हलका और थोड़ा दुःख देता है ।

सं० कुष्ठनाशिनी (कुष्ठ=कोढ़, नाशिनी=नाश करने वाली) स्त्री० एक बेली का नाम, सोमराज बेली ।

सं० कुष्ठी (कुष्ठ) गु० कोढ़ी ।

सं० कुष्माण्ड } (कु=थोड़ी, उष्मा
कूष्माण्ड } =गरमी, अण्ड=बीज, अर्थात् जिसके बीज में थोड़ी गरमी है) पु० कोहड़े का फल ।

सं० कुसंग (कु=बुरा, सङ्=साथ) पु० बुरी संगति, बुरों का साथ, बद सोहबत ।

सं० कुसुम्भ (कुस्=मिलना, वा कु= पृथ्वी, शुभ्=चमकना) पु० कुसु- म, लाल फूल जिससे कपड़े लाल रंगे जाते हैं ।

सं० कुसुमशर (कुसुम=फूल, शर= बाण) पु० कामदेव ।

सं० कुसुमित (कुसुम) गु० खिला हुआ, फूला हुआ, प्रफुल्लित ।

सं० कुसुम्भ (कुस्=मिलना, वा कु= पृथ्वी, शुम्भ्=चमकना) पु० कुसुम, लाल फूल जिससे कपड़े लाल रँग जाते हैं, स्वर्ण, सोन ।

प्रा० कुसुम्भा (सं० कुसुम्भ) पु० कुसुम का रंग, २ छानी हुई भंग ।

सं० कुस्वप्न (कु=बुरा, स्वप्न=सपना) पु० बुरा सपना ।

सं० कुहक (कुह्+अक, कुह्=आश्चर्य) क० पु० कुटिल, फ़रेबी, छली, मायावी, इन्द्रजाली, बाजीगर ।

प्रा० कुहड़ } (सं० कुष्पांड) पु०
कुम्हड़ } कोहड़े का फल ।

प्रा० कुहराम- पु० विलाप, रोना, कलपना । (जाना ।

प्रा०कुहाव- भा० स्त्री० फटना, टूट

प्रा० कुहासा (सं० कुहेलिका, कु= धरती, हेल्=घेरना) पु० कुहर, कोहर, धुंध ।

प्रा० कुहुक } (कुह्=अचंभा करना)
सं० कुहू } स्त्री० कोयल की बोली ।

प्रा० कुआं } (सं० कूप) पु० कूवां,
कुवा } इन्दारा ।

प्रा० कूंची (सं० कूर्ची, [illegible]

करना) स्त्री० झाड़ने की चीज़, पोचारा देने की बढ़नी।

प्रा० **कूंडी**-स्त्री० भांग आदि पीसने का बरतन, लोहे की टोपी।

प्रा० **कूंतना** } **कूतना** } क्रि० स० मोल ठहरना, मोल जांचना, मोल अटकलना।

प्रा० **कूकना** (सं० कू=शब्द करना) क्रि० अ० चिल्लाना, बोलना, कुहू-कुहू करना।

प्रा० **कूकर** (सं० कुकुर) पु० कुत्ता।

प्रा० **कूजना** (सं० कूजन, कूज्=शब्द करना) क्रि० अ० शब्द करना, बोलना।

सं० **कूट** (कूट्=जलना, वा ढकना) पु० पहाड़ की चोटी, २ ढेर, ३ छल, कपट, झूंठ।

प्रा० **कूट**- पु० गला हुआ कागज़ जो दफ्ती बनाने के काम मे आता है, २ स्त्री० नक़ल, भड़ेती, बंदरबाज़ी।

प्रा० **कूटना** (स० कुट्टन, कुट्ट=काटना) क्रि० स० टुकड़े २ करना, चूरना, कुचलना, तोड़ना, २ पीटना, मारना, लठियाना।

प्रा० **कूड़ा**- पु० झाड़न, बुहारन, कुर्कुट, घास पात, अगड़ बगड़, घास फूस, कचरा।

प्रा० **कूढ़ि**-स्त्री० लोहे की टोपी।

प्रा० **कूढ़**-गु० मूर्ख, मूढ़, भोंदू, गँवार।

प्रा० **कूदना** } **कुदकना** } (सं० कूर्दन, कूर्द्=खेलना) क्रि० अ० उछलना, फांदना, २ प्रसन्न होना, खुश होना।

सं० **कूप** कू=शब्द करना, जिसमें मेढ़क शब्द करते हैं, वा कु=थोड़ा, आप=पानी (जिसमें) पु० कुवा, कूंआ, इंदारा।

प्रा० **कूर** (सं० क्रूर) गु० निठुर, निर्दयी, कठोर, २ मूर्ख, भोंदू, गँवार, कूढ़।

सं० **कूर्म्म** (कु=बुरा वा थोड़ा, ऊर्मि बेग जिसका) पु० कछुवा, कच्छप, कमठ।

सं० **कूल** (कुल्=घेरना, ढकना वा रोकना) पु० तीर, तट, किनारा।

सं० **कूलद्रुम**, पु० तटस्थवृक्ष, नदी के किनारे के वृक्ष।

प्रा० **कूल्हा**, पु० पूठ, चूतड़, नितम्ब।

अ० **कूली** } **कुली** } पु० मज़दूर, बोझा ढोने वाला, पोटिया, मोटिया।

सं० **कृच्छ्र**-भा० पु० कठिनता, सख्ती।

सं० **कृत** (कृ=करना) र्म्म० कियाहुआ, बनाया हुआ, रचित, पु० सतयुग, २ फल।

सं० **कृतकार्य्य** (कृत=किया, कार्य्य =काम) र्म्म० पु० फलीभूत, कामयाब, कामपूराहुआ।

सं० **कृतकार्य्यता**-भा० स्त्री० कामयाबी, काम की पूर्णता।

सं० कृतकृत्य (कृत=किया, कृत्य=करने योग्य, कृ=करना) स्मै० पु० योग्य काम को जिसने किया हो, कृतार्थ, कृतकार्य्य, धन्य ।

सं० कृतघ्न } (कृत=किया हुआ,
प्रा० कृतघ्नी } हन्=मारना) क० पु० जो उपकार को नहीं माने, गुण नहीं माननेवाला, नमकहराम, नाशुकरा, इहसान फ़रामोश ।

सं० कृतघ्नता--भा० स्त्री० इहसान फ़रामोशी, उपकारहन ।

सं० कृतज्ञ (कृत=कियाहुआ, ज्ञा=जानना) क० पु० जो उपकार को माने, गुण माननेवाला, उपकार माननेवाला, नमकहलाल ।

सं० कृतविद्य (कृत=किया हुआ, विद्=जानना) स्मै० पु० मशहूर, धन्यवादित, शास्त्रज्ञ, अधीतविद्या ।

सं० कृतवीर्य्य-पु० पिता, नृपविशेष ।

सं० कृतान्त (कृत=किया, अन्त अर्थात् नाश करनेवाला) पु० यम, काल, मौत ।

सं० कृतार्थ (कृत=किया, अर्थ=प्रयोजन) स्मै० पु० जिसने अपना प्रयोजन पूरा किया हो, जिसकी इच्छा पूरी होगई है, कामयाब, संतुष्ट ।

सं० कृति (कृ=करना) स्त्री० करनी, काम, क्रिया, आचरण, व्यापार, कारज ।

सं० कृत्ति-स्त्री० चर्म्म, चमड़ा, भोजपत्र, कृत्तिका नक्षत्र, चमड़े की रस्सी ।

सं० कृत्तिकर (कृत्ति=काम, कृ=करना) क० पु० सेवक, किंकर, उपकारी ।

सं० कृत्तिका (कृत्=काटना) स्त्री० तीसरे नक्षत्र का नाम ।

सं० कृतिन् } क० स्त्री० पण्डित
कृती } योग्य, लायक़, पुण्यवान्, निपुण, साधु, कृतार्थ ।

सं० कृत्य (कृ=करना) पु० काम, करने योग्य काम, कर्त्तव्य कार्य्य स्मै० करने योग्य, कर्त्तव्य ।

सं० कृत्रिम (कृ=करना) स्मै० पु० किया हुआ, बनाया हुआ, बनावट का, कल्पित, जो असली न हो, मसनूई ।

सं० कृत्रिमपुत्र (कृत्रिम=किया हुआ, पुत्र=बेटा) पु० गोद लिया हुआ लड़का, धर्मशास्त्र में बारह प्रकार के पुत्र गिनाये हैं उनमें से एक प्रकार का बेटा ।

सं० कृत्त- पु० [illegible], [illegible] हुआ, [illegible], [illegible] हुआ पु० संपूर्ण, जल, [illegible] अर्थात् कुल ।

सं० कृत्स्न-पु० सम्पूर्ण, सब, समस्त, [illegible], पूरा, [illegible], समग्र ।

सं० कृपाणु ([illegible]) पु० [illegible], [illegible], [illegible] ।

सं० कृपणता—भा० स्त्री० चुद्रता, कंजूसी, बखीली ।

सं० कृपा (कृप्=कृपा करना) स्त्री० दया, अनुग्रह, मिहरबानी ।

सं० कृपाण (कृप्=समर्थ होना, वा कृपा=दया, नुद्=जाना) स्त्री० तलवार, खड्ग, खांड़ा, शमशेर ।

सं० कृपानिधान (कृपा=दया, निधान=जगह) धि० पु० कृपा के घर, दयालु, कृपालु, कृपा करने वाला, जायमिहरबानी ।

सं० कृमि / क्रिमि (क्रम्=जाना) पु० कीड़ा, पतंगा, मकोड़ा, परवाना ।

अं० क्रिमिनल=फ़ौजदारी ।

सं० कृश (कृश्=पतला होना) गु० दुबला, पतला, दुर्बल, क्षीण, लाग़र, नक़ीह ।

सं० कृशाक्षी (कृश्=मन्द, अक्षि=आंख)गु० मन्ददृष्टि, कोताहनज़र ।

सं० कृशानु(कृश्=पतलाकरना) पु० आग, अग्नि, आगी, अनल ।

सं० कृषक / कृषाण (कृष्=हलजोतना)पु० किसान, हल जोतने वाला ।

सं० कृषि (कृष्=हलजोतना) स्त्री० खेती २ धरती ।

सं० कृषिकर्म-पु० खेती, काश्तकारी ।

सं० कृषिकारक (कृषि+कारक) क० पु० किसान, काश्तकार ।

सं० कृष्ण (कृष्=खेंचना, वा काला रंग होना) गु० काला, अंधेरा, पु० विष्णुका आठवां अवतार, वासुदेव, देवकीनंदन। "कृषिर्भूवाचकःशब्दः णश्चनिर्वृत्तिवाचकः । तयोरैक्यंपरब्रह्म, कृष्णइत्यभिधीयते" वायस, कौवा, कलियुग, कोकिल ।

सं० कृष्णपक्ष (कृष्ण=अँधेरा वा काला, पक्ष=पख) पु० अन्धेरा पख, बदी ।

सं० कृष्णमय (कृष्ण=श्रीकृष्ण, मय=रूप वा मिलाहुआ) गु० कृष्ण के ध्यानमेंलगाहुआ, श्रीकृष्णरूप ।

सं० क्लृप्त (कृप्=कल्पना करना) पु० नियमित, बाक़ायदा !

सं० कृष्णसार-पु० कालामृग ।

प्रा० केंचुवा (सं० किंचुलुक, किम्=कुछ, चुलुम्प्=हिलाना, वा काटना) पु० ज़मीन का कीड़ा, एक प्रकार का कीड़ा ।

प्रा० केकड़ा(सं० कर्कट) पु० गेंगटा, एक जानवर का नाम ।

सं० केकयी / कैकयी / कैकेयी (केकय एकराजा का नाम) स्त्री० केकयराजा की बेटी, राजादशरथ की स्त्री, और भरत की मा ।

सं० केकी (केका=मोर की बोली) पु० मोर, मयूर ।

प्रा० केतकी (सं० केतक, कित्=

रहना) स्त्री० एक फूल का नाम।

प्रा० केता (सं० कति) क्रि० वि० कितना, कित्ता।

प्रा० केतिक (सं० कति) गु० थोड़े, दोचार, अल्प, कितना, कितनाही।

सं० केतन—वि० पु० गृह, २ ध्वजा, ३ निमंत्रण, ४ आलस, ५ क्रीड़ा, ६ कोड़ा, ७ काम, ८ चिह्न।

सं० केतु (चाय्=पूजना, वा कित्=जानना) पु० नवां ग्रह, २ झंडा, ध्वजा, पताका, ३ पूंछल तारा, धूमकेतु।

सं० केन्द्र—पु० जहां से पृथ्वी का नाप होताहै और वे दो हैं १ उत्तर केन्द्र, दक्षिण केंद्र, २ वृत्त का बीच, मर्कज़। [जायठ।

सं० केयूर--पु० अंगद, बहूंटा, बि-

सं० केरल--पु० मालवादेश, २ ग्रंथ, स्त्री० ३ नवीनविद्या, देशविद्या, देश का इल्म।

प्रा० केला (सं० कदली) पु० एकपेड़ का अथवा उसके फल का नाम।

सं० केलि (केल्=हिलना, वा किल्=खेलना) स्त्री० खेल, क्रीड़ा, विहार।

प्रा० केवड़ा } (सं० केतक) पु० एक
केवड़ा } फूल का नाम।

प्रा० केवट (सं० कैवर्त) पु० धीवर, मल्लाह, [illegible]

सं० केवल (केव्=सेवाकरना) गु० एकही, निराला, अकेला, मुख्य, खास।

प्रा० केवाड़ } (सं० कपाट) पु०
किंवाड़ } किंवाड़ी, दरवाज़ा।

प्रा० केवान—पु० कँवल, कमल।

सं० केश-(क्लिश=दुःखदेना वा रोकना, वा का=शिर, ईश=मालिक, वा क=शिर, शी=सोना) पु० बाल, रोम, लोम, कच।

सं० केशर (के=पानीमें, अथवा शिर पर, शृ=फूटना, वा विकसना, वा फैलना) पु० कुंकुम, ज़ाफरान, एक सुगंधित चीज़ २ सिंह की गरदन पर के बाल।

सं० केशरी (केशर) पु० सिंह, मृगराज, शेर, हनुमान् के बापका नाम।

केशव (के=पानी में, शी=सोना, वा केश, बाल, वन्त=वाला) पु० श्रीकृष्ण, विष्णु।

सं० केशी (केश) पु० एकराक्षस का नाम जिसको कंसने श्रीकृष्ण के मारने के लिये भेजा था उसको श्रीकृष्ण ने मारा, गु० अच्छे बालों वाला, जिसके अच्छे और बहुत बाल हों।

सं० केसर (के=पानी, [illegible]) स्त्री० केशर, कुंकुम, नागकेसर, [illegible]

प्रा० केसरिया (सं० केसर) गु० केसर में रँगाहुआ, पीला ।

प्रा० केहरी (सं०केशरी) पु० सिंह, मृगराज, शेर ।

प्रा० केंचली (सं० कंचुक, कचि= बांधना, वा चमकना) स्त्री० सांप की खाल, सांप की खोल ।

सं० कैटभ (कीट=कीड़ा, भा=चमकना जो कीड़े के बराबर चमकता हो) पु० एक राक्षस का नाम।

सं० कैतव-पु० कपट, २ द्यूत, जुआं, ३ वैदूर्य मणि, ४ धतूर का फूल ।

प्रा० कैथी (सं० कायस्थ) स्त्री० हिंदी अक्षर जो कायथ लोग लिखते हैं, कायथी हिंदी अक्षर जो सूबे बिहार के पटना, गया आदि ज़िलों में लिखे जाते हैं ।

सं० कैरव (के=पानी में, रु=शब्द करना) पु० कुमुदिनी, कँवलनी, कमोदनी, सफ़ेद कँवल । [भास ।

प्रा० कैरी-स्त्री० बिन पकाहुआ छोटा

सं० कैलास (कैल=खेल, वा आनंद, आस्=रहना, या बैठना, अर्थात् जहां आनंद से रहते हैं) पु०एक पहाड़ हिमालयकी श्रेणीमें है जो महादेव और कुबेर के रहने की जगह है ।

सं० कैवर्त } कैवर्तक } (के=पानीमें, वृत्=रहना) पु०केवट,धीवर, मछवा, मल्लाह, नाव चलानेवाला ।

सं० कैवल्य (केवल एकही) पु० मुक्ति, मोक्ष, परमगति, निर्वाण ।

प्रा० कैसा (किस+सा, सं०कीदृश) क्रि० वि० किस प्रकार का, किस तरह का ।

प्रा० कैसाही-बोल०चाहे, जैसाही, कितनाही, किसी ही तरह का ।

प्रा० को(सं०कः,कौन) सर्वना०कौन, २ कर्म और संप्रदानकारकका चिह्न ।

प्रा० कोई } कोऊ } (सं०कोपि, कः=कौन, अपि=भी) सर्वना० अनिश्चयवाचक । [कोई चीज ।

प्रा० कोईसा-बोल०कोई आदमी,

प्रा० कोईनकोई-बोल० यह अथवा वह, कोई एक ।

प्रा०कोईदममें-बोल० तुरन्त, अभी, थोड़ी देरमें, बहुत जल्द ।

प्रा० कोएड़ी } कोएरी } पु०एकजाति जिसका धंधा खेती करनेकाहै।

प्रा० कोंपल (सं०कोरक, कुर=शब्द करना) स्त्री० अंकुर, मंजरी, कली ।

सं० कोक (कुक्=लेना) पु०चकवा, चक्रवाक,—कोकी=चकवी ।

प्रा० कोका-पु० दूधभाई, धायभाई, कटिया, कमल । [कोयल ।

सं० कोकिल (कुक्=लेना) स्त्री०

प्रा० कोख (सं० कुक्षि) स्त्री० गर्भ, पेट।

प्रा० कोखबंध (सं० कुक्षि=वन्ध्या) गु० बांझ, वंध्या, जिस स्त्री के लड़का बाला न हो।

प्रा० कोट (सं० कोट्ट, कुट्=काटना) पु० गढ़, किला, दुर्ग।

सं० कोटर (कोट=टेढ़ापन, कुट्=टेढ़ा होना, और रा=लेना) स्त्री० पेड़में खोखली जगह, खोड़कल, खोड़रा।

सं० कोटि (कुट्=टेढ़ा होना, वा हिस्सा करना) स्त्री० त्रिभुज की एक भुजा, २ धनुष का अगला भाग, गु० करोड़, सौलाख।

प्रा० कोठरी (सं० कोष्ठ, कुष्=निकालना) स्त्री० छोटाघर, कमरा।

प्रा० कोठा (सं० कोष्ठ) पु० घर, पक्का बना घर, पक्काघर, छतका मकान।

प्रा० कोठी (सं० कोष्ठ) स्त्री० छोटा, पक्कागर, २ भंडार, अम्बार, गोदाम, चीज वस्तु रखने की जगह, गोला, अनाज रखने की जगह, ३ हुंडीवाल की दुकान, महाजनी घर, ४ बड़ा मकान, बंगला, ५ कारखाना, ६ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।

प्रा० कोड़ना- [illegible] खोदना, खु- खोरना, खोखलाकरना, गढ़ाकरना, खुरचना।

प्रा० कोड़ा- पु० चाबुक।

प्रा० कोड़ाकरना- बोल० कोड़ा मारना, चाबुक लगाना, २ वश में करना, ३ कोड़ा मार के घोड़े को तेज करना।

प्रा० कोड़ामारना=चाबुकलगाना।

प्रा० कोड़ी-स्त्री० बीसी, बीस २०।

प्रा० कोढ़ (सं० कुष्ठ) पु० एकप्रकार का रोग, महारोग।

प्रा० कोढ़ में खाज निकलाना- बोल० एक दुख में दूसरे दुख का आना, दुख पर दुख गिरना।

प्रा० कोढ़ी (सं० कुष्ठी) गु० जिसके कोढ़ निकला हो, कुष्ठी, महारोगी।

सं० कोण (कुण्=टुनाना) पु० कोना, दो लकीरों का झुकाव।

प्रा० कोतल- पु० खाली घोड़ा।

प्रा० कोथमीर- पु० कच्ची धनियां, धनियां की हरीपत्ती।

प्रा० कोतली- स्त्री० थैली, बटुआ।

प्रा० कोदो / कोदों (सं० कोद्रव, कु=बुरा, और द्रु=जाना) स्त्री० एक नाज का नाम।

सं० कोदण्ड ([illegible]) पु० [illegible], कमान।

प्रा० कोना (सं० कोण, [illegible]

कोन, दो लकीरों का झुकाव।

प्रा० **कोनाकुथरा**-बोल० कोई कोना किधरहो, किसी जगह, कहीं।

सं० **कोप** (कुप्=क्रोध करना) पु० क्रोध, गुस्सा, रोस, खिसियाहट।

प्रा० **कोपना** (सं०कुप्=कोपकरना) क्रि०अ० क्रोध करना, गुस्साहोना।

प्रा० **कोपर**- पु० कटोरा, कटोरी, पियाला।

सं० **कोपि**(कः+अपि)सर्वना० कौन।

सं० **कोपित** (कोप्+इत) क० पु० क्रुद्ध, कोपयुक्त।

सं० **कोपी**(कोप)गु०क्रोधी, तामसी।

प्रा० **कोपीन** (सं० कौपीन) स्त्री० लंगोटी।

प्रा० **कोबी** } **गोबी** } स्त्री० एक तरकारी का नाम।

सं० **कोमल** (कम्=चाहना, वा कु=शब्दकरना) गु० नर्म, नम्र, मृदु, मुलायम, मृदुल, मनोहर, पु० पानी, जल।

सं० **कोमलता** (कोमल) भा० स्त्री० नरमाई, मृदुलता, कोमलताई।

प्रा० **कोयरा** } **कोये** } (सं० कोन) पु० आंखका सपेदढेला, आंखका कोना।

प्रा० **कोयल** (सं० कोकिला) स्त्री० एक पखेरूका नाम, कोकिला, पिक, २ एक फूल का नाम।

प्रा० **कोर**-स्त्री० किनारा, छोर, कगर।

प्रा० **कोरा**--गु० नया, टटका, नहीं बरता हुआ, जो काम में नहीं आया हो (यह शब्द मिट्टी के बरतन, और कपड़ा और काग़ज के लिये बहुत बार बोला जाता है)।

प्रा० **कोरेरहना**-बोल० निरासहोना, योंही रहजाना, कुछ नहींमिलना।

अं० **कोर्ट आफ़इन्क्काइरी**=पूंछजांचकीसभा, तहक़ीक़ात का दरबार।

प्रा० **कोल**--पु० खाड़ी, खाल, २ सकड़ी गली, ३ जंगली मनुष्यों की ज़ाति, पर्वतनिवासी, म्लेच्छ भेद।

सं० **कोलाहल** (कोल्=ढेर, हल=करना) पु० कलकल, कुलाहल, बहुत मनुष्यों का शब्द, रौला, कलमल, धूमधाम, गुलगपाड़।

प्रा० **कोल्हू**- पु० तेल निकालने की कल, घानी।

सं० **कोविद** (क=ब्रह्म, अथवा वेद, विद्=जानना) पु० पण्डित, बुद्धिमान्।

प्रा० **कोशना** } **कोसना** } (सं०क्रोशन, क्रुश=रोना) क्रि० स० सरापना।

सं० **कोशला** } **कोषला** } (कोशवाकोष=भंडार ला=लेना) पु० स्त्री० अयोध्यापुरी, अवध।

सं० **कोष** (कुष्=निकालना) पु० भंडार, खज़ाना २ डिक्शनरी, अने·

कार्थ, अभिधान, ऐसी पुस्तक जिसमें शब्दों के अर्थ मिलें, २ अंडकोष, ३ मियान, नियाम, खाप, तलवार का घर।

सं० कोषलाधीश } (कोषला वा कोशलाधीश } कोशला=अयोध्या, अधीश=राजा) पु० श्रीरामचन्द्र,२अयोध्याके राजा।

सं० कोषाध्यक्ष (कोष=खज़ाना,अध्यक्ष=मालिक)पु०खज़ांची,भंडारी।

सं० कोष्ठ (कुष्=निकालना)पु० कोठा, खत्ता, कोठरी, जगह।

प्रा०कोस (सं०क्रोश,क्रुश=बुलाना) पु० आठ हजार हाथ का रस्ता,दो मील,कोई कोई चार हजार हाथका भी कोस मानते हैं।

प्रा० कोह (सं०कोप)पु०क्रोध,गुस्सा।

प्रा० कोहबर--पु० ब्याह का घर, कौतुक घर।

प्रा० कोहाना (सं० कोप)क्रि०अ० रूठना, कोप करना, क्रोध करना, रिसियाना।

प्रा० कोही (सं० कोपी)गु०क्रोधी।

प्रा० कौंधना-- क्रि० अ० चमकना, प्रकाश होना।

प्रा० कौंधा (कौंधना)स्त्री०बिजली।

प्रा० कौंला--पु० [illegible]

प्रा० कौडा (सं० कपर्द) पु० बड़ी कौड़ी, नारंगी।

प्रा० कौड़ियाला-पु० एक प्रकार का सांप।

प्रा० कौडी (सं० कपर्दिका, क=पानी, वा सुख, परा=पूर्णता, दा=देना) स्त्री०छोटा शंख जो व्यवहार में लेन देन में चलताहै, २ धन, दौलत, ३ कमाई।

प्रा० फूटीकौडी } बोल० कुछनहीं, कानीकौडी } कौड़ी नहीं।

सं० कौतुक (कुतुक)पु० कुतूहल, हँसी खुशी, आनंद, हर्ष,खेल, मन बहलाना।

सं० कौतुकी (कौतुक) गु० खेल खिलाड़ी,हँसमुख,कौतुककरनेवाला।

सं० कौतुकशाला-स्त्री०तमाशाघर।

प्रा० कौन (सं० कः) प्रश्नवाचक सर्वनाम।

प्रा० कौनसा--बोल० कैसा, किस तरह का।

अं० कौंसिल=सभा, दरबार।

सं०कौमार (कुमार=बालक)पु० बालकपन, लड़कपन, युवावस्था, जवानी।

सं० कौमुदी (कुमुद=चांद, अथवा कुमुद=कमोदनी अर्थात् जिसमें कमोदनी खिलती है, कु=पृथ्वी, मुद=आनन्द करना) स्त्री० चांदनी चन्द्रिका २ एक व्याकरण का ग्रंथ।

प्रा० कौर (सं० कवल) पु० ग्रास, कवा, लुक़मा, नवाला।

सं० कौरव (कुरु=एक राजा का नाम) पु० कुरुवंशी, धृतराष्ट्र और पांडु दोनों के बेटेपोतों को कुरुवंशी कहसक्ते हैं पर-विशेष करके धृतराष्ट्र के बेटों को कौरव, और पांडुकेबेटों को पांडव कहते हैं।

सं० कौलिक (कुल) गु० कुलका, अपने कुल के धर्म में चलानेवाला, २ शाक्तिक, ३ वाममार्गी।

प्रा० कौवा (सं० काक) पु० काग, कागा, वायस।

सं० कौशल्या (कोशल) स्त्री० कोशल देश के राजाकी बेटी, और राजा दशरथ की पत्नी और श्री रामचन्द्र की मा।

सं० कौशिक (कुशिक=विश्वामित्र का बाप, गाधि) पु० विश्वामित्र मुनि का नाम।

सं० कौशिकी (कुशिक) स्त्री० एक नदी का नाम जो विश्वामित्र की बहिन कौशिकीके नामसे प्रसिद्धहै।

सं० कौस्तुभ (कुस्तुभ=विष्णु, वा समन्दर, कु=पृथ्वी, स्तु वा स्तुभ्=सराहना, वा स्तुम्भ्=रोकना) पु० विष्णु की मणि जो=समन्दरमेंसे निकली।

प्रा० क्या (सं० किम्) प्रश्नवाचक अव्यय।

प्रा० क्यों (सं० किम्) क्रि० वि० किस लिये, काहेको।

प्रा० क्योंकर-क्रि० वि० किसप्रकारसे, कैसे।

प्रा० क्योंकि-क्रि० वि० किसलियेकि।

प्रा० क्योंनहीं--बोल० किसलिये नहीं, निश्चयही।

सं० क्रतु (कृ=करना) पु० यज्ञ, याग।

सं० क्रम (क्रम्=जाना) पु० रीति, परिपाटी, राह, सिलसिला।

सं० क्रमशः-क्रि० वि० क्रमसे, सिलसिलेवार, तरतीब से।

सं० क्रमुकी-स्त्री० सुपारी, डली, पूंगीफल।

सं० क्रय (क्री=मोल लेना) पु० मोल लेना, खरीदना, वस्तु।

सं० क्रयविक्रय (क्रय + विक्रय, क्री=मोल लेना) भा० पु० लेन देन, वाणिज्, व्यौपार, खरीद फरोख्त, जिन्स।

सं० क्रयणीय (क्री+अनीय) गु० खरीदने लायक़।

सं० क्रयिक }
क्रयी } (क्री+इक) क० पु० क्रेता, खरीददार।

सं० क्रय्य-भा० वस्तु, जिन्स बाजारी वस्तु जो दूकान में धरीहै।

सं० क्रव्य-पु० मांस, गोश्त।

सं० क्रव्याद-क० पु० राक्षस, मांसभक्षक।

(१) अन्त.मान्ता.चरि शैना.समाम येतुर्वगरा.। नानारूपध रा.कोडाविचरन्तिमहीतले॥

प्रा० क्रान्ति (सं० कान्ति) स्त्री० चमक, प्रकाश, दीप्ति ।

सं० क्रान्ति (क्रम्=जाना) स्त्री० जाना, चढ़ना, २ खगोल में सूर्य का रस्ता, खगोल के गोले में टेढ़ी गोल रेखा ।

सं० क्रान्तिमण्डल (क्रांति+मंडल) पु० खगोल में उस वृत्त का नाम जो सूर्य का मार्ग जतलाता है ।

सं० क्रामक } क्राम्यक } क० केता, खरीददार।

सं० क्रियमाण—कर्म० करने योग्य ।

सं० क्रिया (कृ=करना) स्त्री० काम, काज, व्यवहार, २ क्रिया कर्म, ३ धर्मसंबंधी काम, ४ व्याकरण में ऐसा शब्द जो धातु से बना हो और उस में कोई समय पाया जाय, ५ सौगन्द, शपथ ।

सं० क्रियादक्ष—पु० काम में निपुण।

सं० क्रीडा } क्रीडन } (क्रीड्=खेलना) भा० स्त्री० खेल, हँसीखुशी, मन बहलाना, कौतुक ।

सं० क्रीडक } क्रीडित } गु० पु० खिलाड़ी ।

सं० क्रुद्ध (क्रुध्=क्रोध करना) गु० पु० क्रोध किये हुए, क्रोधित ।

सं० क्रूर ([illegible]) गु० निठुर, निर्दई, [illegible], [illegible] ।

सं० क्रूरता—भा० निठुराई, कठोरपना ।

सं० क्रोडपत्र (क्रुड्=जोड़ना) चपकाना, जम करना) पु० संयोजित, जमीमा, पीछे से लगाया गया ।

सं० क्रोध (क्रुध्=क्रोध करना) पु० कोप, रिस, गुस्सा ।

सं० क्रोधवान् } क्रोधवन्त } (क्रोध=कोप, वान् =वाला) गु० क्रोधी, कोप करनेवाला ।

सं० क्रोधावेश (क्रोध=कोप, आविश =घुसना, आ, विश्=घुसना) गु० क्रोधयुक्त, क्रोधके वश ।

सं० क्रोधी (क्रोध) गु० कोप करनेवाला, गुस्सा करनेवाला, रिसहा ।

सं० क्रोधना—क० स्त्री० कोपवती, कोप करनेवाली ।

सं० क्रोश (क्रुश्=बुलाना) पु० कोस, कोई ८००० हाथ और कोई ४००० हाथ का कोस मानते हैं ।

सं० क्रोष्टा (क्रुश्=बोलना, चिल्लाना) क० पु० शृगाल, सियार, २ गधा ।

सं० क्रौञ्च (क्रुञ्च्=जाना) पु० बगुला, २ एक द्वीपका नाम ।

सं० क्लान्त (क्लम्=थकना) क० पु० थका, मांदा, श्रमित, थका हुआ ।

सं० क्लान्ति (क्लम्=थकना) भा० स्त्री० [illegible], [illegible], [illegible] ।

सं० क्लिन्न ([illegible]) गु० पु० [illegible], [illegible], [illegible], [illegible] ।

सं० क्लिष्ट (क्लिश्=दुखपाना) क०पु० कड़ा, सख्त, कठिन।

सं० क्लीब (क्लीब्=नपुंसक होना) पु० नपुंसक, नामर्द, खोजा, हिजड़ा, गु० डरपोक, कायर।

सं० क्लेद (क्लिद्=बसाना) ण० पु० पूय, पीब, मवाद।

सं० क्लेश (क्लिश्=दुख पाना) पु० दुख, कष्ट, पीड़ा।

सं० क्लेशक–क० पु० क्लेशयुक्त, क्लेशदाता, दुःखदाता।

सं० क्लेशन–भा० पीड़ा, दुःख।

सं० क्लेशित–र्म० पु० दुखी, पीड़ित, कष्टित

[कहीं, कही २।

सं० क्वचित् (क्व=कहां) क्रि० वि०

सं० क्वणन (क्वण्=बोलना) भा० पु० शब्द, आवाज।

सं० क्वाथ–पु० निर्यास, गोंद, काढ़ा।

सं० क्वाथित (क्वथ्=पचाना) र्म० पु० पचाया हुआ।

प्रा० क्षई (सं० क्षय) स्त्री० क्षयरोग, राजरोग, दम की बीमारी।

सं० क्षण (क्षण्=नाश करना) स्त्री० पल, दम, दश पल का समय, चार मिनट का समय।

सं० क्षणिक–क० पु० थोड़ी देर का।

सं० क्षत (क्षण्=नाश करना) पु० घाव, चोट, चीरा, जख़म, व्रण।

सं० क्षत–पु० व्रण, घाव, जखम, चोट, र्म० नष्ट, घातित, विदीर्ण, भग्न।

सं० क्षति (क्षण्=नाशकरना) स्त्री० हानि, घटी, नुक़सान, बिगाड़, अपकार।

सं० क्षत्र पु० शरीर, जिस्म।

सं० क्षत्रिय / क्षत्री (क्षत=घाव, त्रै=बचाना) पु० राजपूत, दूसरा वर्ण, राजन्य।

सं० क्षत्रीकुलद्रोही–क० पु० क्षत्रीकुल का वैरी, परशुराम।

सं० क्षपण (क्षप्+अण, क्षप=फेंकना) क० पु० निर्लज्ज, बेशरम, बेहया, मेरण, गैंड़ा, गिरगिट।

सं० क्षमता (क्षम्=सहना) स्त्री० सहनशीलता, सहना, योग्यता, सामर्थ्य।

प्रा० क्षमना / क्षमाकरना (सं० क्षम्=सहना) क्रि० स० माफ करना, सहना, छोड़ना।

सं० क्षमा (क्षम्=सहना) भा० स्त्री० माफी, माफ करना, संतोष, मार्फ, शान्ति, २ रहम, ग़म, बरदाश्त।

सं० क्षमित / क्षमी क० पु० शान्त, क्षमाशील, ग़मख़्वार।

सं० क्षय (क्षि=नाश करना) भा० पु० नाश, २ हानि, ... घटी, ३ क्षयरोग, क्षयी।

सं० क्षरण (क्षर्+अण, क्षर्=र-हना, टपकना) भा० पु० च्युत होना, गिरना।

सं० क्षान्त (क्षम्=सहना) गु० सहने वाला, धीरजवान्, क्षमा-वान्, संतोषी।

सं० क्षान्ति (क्षम्=सहना) स्त्री० क्षमा, धीरज, संतोष।

सं० क्षाम—पु० क्षीण, दुर्बल, भूरा।

सं० क्षार (क्षर्=गिरना, नाशहोना) स्त्री० खार, २ राख, भस्म।

सं० क्षालन (क्षल=शुद्ध करना) पु० धोना, पोंछना, साफ करना, खँगालना।

सं० क्षालक (क्षल्+अक) क० पु० धोनेवाला।

सं० क्षालित (क्षल+इत) र्म० पु० धोया हुआ, धौत।

सं० क्षिति (क्षि=रहना, बसना) स्त्री० धरती, पृथ्वी, जमीन, धरणी।

सं० क्षितिधर (क्षिति=धरती, धर=रखनेवाला, धृ=रखना) पु० पहाड़, पर्वत।

सं० क्षितीश } (क्षिति=धरती, पा
क्षितिपति } =रखना) पु० राजा।

सं० क्षितिपाल (क्षिति=पृथ्वी, पा =रखना) पु० राजा, महाराज।

सं० क्षिपक (क्षिप्+अक) क० पु०

योद्धा, बहादुर। [तुरंत, शीघ्र।

सं० क्षिप्र (क्षिप्=फेंकना) गु० जल्द,

सं० क्षीण (क्षि=नाश करना) गु० दुबला, निर्बल, दुर्बल, गरीब।

सं० क्षीर (घस्=खाना) पु० दूध, २ पानी।

सं० क्षुण्ण (क्षुद्+त, क्षुद्=पीसना) र्म० पु० पीसा हुआ, चूर्णीकृत।

सं० क्षुद्र (क्षुद्=चूर, चूर=होना) गु० छोटा, नीच, अल्प, सूक्ष्म।

सं० क्षुद्रा— स्त्री० वेश्या, नटी, मधु-मक्षिका, भटकटैया।

सं० क्षुधा (क्षुध्=भूखा होना) भा० स्त्री० भूख, खाने की चाह।

सं० क्षुधातुर—क० पु० भूख से व्याकुल, भूखा।

सं० क्षुधार्त्त (क्षुधा=भूख, आर्त्त=घबराया हुआ), गु० भूखा, बहुत ही भूखा।

सं० क्षुधावन्त (क्षुधा=भूख, वत्=वाला) गु० भूखा।

सं० क्षुधित (क्षुधा=भूख) क० पु० भूखा।

सं० क्षुभित } (क्षुभ्=कोपना) क०
क्षुब्ध } पु० डरा हुआ, घब-राया हुआ, व्याकुल।

सं० क्षुर (क्षुर=काटना) भा० पु० [illegible] [illegible], खुर, २ [illegible]।

सं० क्षुरभाण्ड (क्षुर=[illegible], भ

=पिटारी) वि० पु० किस्वत, नाइयों की किस्वत।

सं० क्षेत्र (क्षि=बसना, रहना) पु० खेत, २ पवित्रधरती, पुण्यभूमि, ३ देह, शरीर, ४ स्त्री, पत्नी, भार्या।

सं० क्षेत्रज (क्षेत्र=स्त्रीउदर, जन्=पैदा करना) क० पु० अपनी स्त्री में दूसरे से पुत्र जन्माना, जारपुत्र, पाण्डवा।

सं० क्षेपक (क्षिप्=फेंकना) क० पु० फेंका हुआ, २ फेंकनेवाला।

सं० क्षेपण (क्षिप् फेंकना) भा० पु० फेंकना, प्रेरण।

सं० क्षेपणी (क्षिप्+अन+ई) क० स्त्री० गुफनी, ढिलवासी।

सं० क्षेम (क्षि=रहना) पु० कुशल, कल्याण, चैन, बचाव, चैनचान।

सं० क्षोणि } (क्षु=शब्दकरना) स्त्री०
क्षौणि } पृथ्वी, धरती, जमीन।

सं० क्षोभक (क्षुभ्+अक) क० पु० भयकर्ता, डरवानेवाला।

सं० क्षोभ (क्षुभ्=कांपना, डरना) पु० डर, मोह, छोह, घबराहट, हड़बड़ाहट, हिलाव डुलाव।

सं० क्षोभित–र्म० पु० डराहुआ, खौफ खायाहुआ।

सं० क्षौर (क्षुर=उस्तरा) स्त्री० हजामत, मुण्डन, नाई का काम।

सं० क्ष्मा (क्षम्=सहना) स्त्री० पृथ्वी, धरनी, जमीन।

ख

सं० ख–पु० आकाश, आस्मान, स्वर्ग, शून्य, २ इन्द्रिय, ३ गृह, खेट।

प्रा० खंगालना (सं० प्रक्षालन) क्रि० स० धोना, साफ़ करना।

प्रा० खंगार } स्त्री०; थूक, कफ,
खखार } श्लेष्मा, जुकाम।

प्रा० खांगे–गु० कमपड़े, कमहुये।

प्रा० खंजर–पु० कटार, कटारी।

प्रा० खंजरी–स्त्री० एकबाजेकानाम।

प्रा० खंडर } (सं० खंड=टुकड़ा) पु०
खंडहर } टूटे फूटे मकान।

प्रा० खखोरना–क्रि० स० कोड़ना, खुरचना।

सं० खग (ख=आकाश, गम्=जाना) पु० पक्षी, पखेरू, २ गृह, ३ हवा, ४ तीर, ५ मन।

सं० खगपति (खग=पखेरू, पति=राजा) पु० गरुड़।

सं० खगान्तक (खग=पखेरू, अंतक=नाश करनेवाला) पु० बाज़ पक्षी।

सं० खगेन्द्र (खग=पखेरू, इंद्र=राजा) पु० गरुड़।

सं० खगेश (खग=पखेरू, ईश=राजा) [पु० गरुड़।

सं० खगोल ख=आकाश, गोल=गोला) पु० आकाशमण्डल।

सं० खगोलविद्या (खगोल+विद्या) स्त्री० तारा नक्षत्र आदि की चाल जानने की विद्या।

प्रा० खग्ग (सं० खड्ग) पु० तलवार, खड्ग।

प्रा० खचना (सं० खच्=बांधना, दृढ़ करना) क्रि० स० जड़ना, मिलाना, साटना।

प्रा० खचित (खच्=बांधना, दृढ़ करना) म० पु० जड़ित, जड़ाहुआ।

प्रा० खच्चर—पु० घोड़े और गधे की जात का जानवर।

प्रा० खजूर (सं० खर्ज्जूर) पु० छुहारा, छुहारे या खजूर का वृक्ष।

सं० खञ्ज—पु० लँगड़ा, लूला, पंगु।

सं० खञ्जन (खञ्ज्=लँगड़ाके चलना) पु० एक पखेरू का नाम।

सं० खञ्जरी—स्त्री० वाद्यविशेष, खञ्जरी, डफुली।

प्रा० खटकना—क्रि० अ० लगना, चुभना, गड़ना, खुभना, सालना, २ बाजना, आहट होना।

प्रा० खटका, पु० / खटक, स्त्री० } (खटकना) संदेह, डर, शंका, धोखा, दुबिधा, मीन मेख, २ पैरका आहट, खड़का।

प्रा० खटखटाना—क्रि० स० ठक ठकाना, ठोंकना, खट खट करना, खड़काना।

प्रा० खटछप्पर (सं० खट्वा=खाट, [illegible]) पु० [illegible], [illegible], [illegible]

प्रा० खटना / खटाना } क्रि० अ० टिकना, रहना, ठहरना।

प्रा० खटपट—स्त्री० झगड़ा, लड़ाई, तकरार, झंझट, बिगाड़, रगड़ा, झगड़ा, अनरस, खेंचा तानी, खटराग, खटापटी।

प्रा० खटमल (सं० खट्वामल्ल, खट्वा=खाट, मल्ल=पहलवान) माकड़, खटकीड़ा, उड़ीस।

प्रा० खटमीठा—पु० खट्टा और मीठा मिला हुआ स्वाद, गु० खट्टा और मीठा, मनभावन, मन मान्ता, सुस्वाद, मजेदार।

प्रा० खटराग (सं० षड्राग, षट्=छः, राग=काम क्रोध आदि) पु० फूट, अनबनन, अनमेल, झगड़ा, रगड़ा, झंझट, जंजाल।

प्रा० खटापटी—स्त्री० लड़ाई, झगड़ा, तकरार, झंझट, बिगाड़, खटपट।

प्रा० खटास—भा० स्त्री० खट्टापन, खटाई, तुर्शी।

प्रा० खटिया (सं० खट्वा) स्त्री० खाट, चारपाई, २ रथी।

प्रा० खटीक (सं० खट्टिक, खट्=[illegible]) पु० [illegible] जिसका काम जानवरों के मारने और [illegible] का है।

प्रा० खटोला (सं० खट्वा) पु० [illegible] खाट, २ [illegible], [illegible]।

प्रा० खट्टा—गु० तुर्श, चूक, अम्ल, जैसे इम्ली आदि ।

सं० खट्वा (खट्= चाहना, वा खट्ट =ढकना) खाट, पलँग, चारपाई ।

प्रा० खड़ंख—गु० सूखा, सूखाहुआ ।

प्रा० खड़क—स्त्री० गोशाला, गौखाना, २ आहट ।

प्रा० खड़कना-क्रि० अ० खड़खड़ाना । झंझनाना, बाजना ।

प्रा० खड़कजाना--बोल० सावधान होजाना, खबर पाना, संदेशापाना ।

प्रा० खड़खड़ाना—क्रि० अ० ठक ठकाना, झंझनाना, बाजना, २ दांत पीसना, ३ खर्राटा मारना, घुरघुराना ।

प्रा० खड़ा—गु० सीधा, उठा, ऊंचा ।

प्रा० खड़ाकरना—बोल० उठाना, ठहराना, ऊंचा करना ।

प्रा० खड़ाहोना— बोल० उठना, सीधा होना ।

प्रा० खड़ेखड़े—बोल० अभी, तुरन्त, झटपट, इसीदम ।

प्रा० खड़ाऊं—स्त्री० पादुका ।

प्रा० खड़िया (सं० खटिका, खट् =चाहना, वा खड़िका, खड्=टुकड़े २ करना) स्त्री० खड़ी, खल्ली, चाक ।

सं० खड़ी (खड्=टुकड़े २ करना). स्त्री० खड़िया, खड़ीमिट्टी, खल्ली, चाक ।

सं० खड्ग (खड्=फाड़ना, चीरना) स्त्री० तलवार, तरवार ।

सं० खण्ड (खड्=तोड़ना) पु० टुकड़ा, भाग, हिस्सा, २ खन, मकान का कोई हिस्सा, ३ जमीन का कोई टुकड़ा, देश, ४ पुस्तक का एक भाग, ५ खांड़ ।

सं० खण्ड खण्ड—पु० टुकड़ाटुकड़ा ।

सं० खण्डक (खड्+अक) क० पु० तोड़नेवाला ।

सं० खण्डन (खड्=तोड़ना) भा० पु० तोड़ना, टुकड़ेकरन, छिन्न भिन्न करना, २ किसीकी बातको रद्द करना, झुठलाना, बात में हराना, मात करना, भजन करना, तरदीद करना ।

प्रा० खण्डन करना (सं० खण्डन) क्रि० स० तोड़ना, टुकड़े २ करना, २ मात करना, झुठलाना ।

सं० खण्डना—भा० स्त्री० आपत्ति, आफत ।

सं० खण्डित (खड्=टुकड़े २ करना) कर्म० पु० टूटा हुआ, टुकड़े २ किया हुआ, कटा हुआ, छिन्न भिन्न, तित्तर वित्तर, बिखरा हुआ, २ मात किया हुआ, शिकस्त ।

प्रा० खत्ता (सं० खात, खन्=खोदना) पु० कोठा, नाज रखनेका खड्डा, गड्ढा ।

प्रा० खत्री (सं० क्षत्रिय) पु० राजत, २ एक जाति ।

प्रा० खदखदाना—क्रि० अ० सनसनाना, सीजना, छनछनाना।

प्रा० खदेड़ना—क्रि० स० पीछाकरना, रगेदना।

सं० खद्योत (ख=आकाश, द्युत्=चमकना) पु० जुगनू, अगिया, चमकनेवाला कीड़ा।

प्रा० खन (सं० खण्ड) पु० घर का हिस्सा, कोठडी, कमरा, महला।

सं० खनक (खन्+अक, खन्=खोदना) क० पु० मूषक, मूश, चूहा।

प्रा० खनकना-क्रि० अ० ठनठनाना, शब्द करना, बाजना।

सं० खनन (खन्+अन, खन्=खोदना) भा० पु० खोदना।

सं० खनि (खन्=खोदना) स्त्री० स्त्री० खानि, आकर।

सं० खनित्र (खन्=खोदना) पु० कुदाल, कुदाली, खोदनेकाऔज़ार।

सं० खनित्री (खन्=खोदना) स्त्री० कुदाली, कसी, फावड़ा, फडुहा, खंती।

प्रा० खपत (खपना) स्त्री० बिक्री, निकास, खर्च, उठान।

सं० खपना—क्रि० अ० खोया जाना, [illegible], २ मरना, ३ बिकना, खर्च होना, उठना।

प्रा० खपरा—पु० [illegible], खपड़ा, जिस से मकान छाया जाता है।

प्रा० खपरैल (खपरा) स्त्री० खपरे का घर।

प्रा० खपाच—स्त्री० फांस, किच, बांस का टुकड़ा।

प्रा० खपाना—क्रि० स० नाशकरना, पूरा करना, मार डालना।

प्रा० खप्पर (सं० खर्प्पर, कृप्=सामर्थ्य रखना) पु० खोपरी, २ योगी लोगों का मिट्टी का बरतन, योगियों का पात्र।

प्रा० खम (सं० स्तम्भ) पु० ताल, भुजा, खम्भ।

प्रा० खमठोकना—बोल० तालठोकना, कुश्ती करनेके समय अपने हाथों से बाहु को ठोकना।

सं० खमणि (ख=आकाश, मणि=रत्न) पु० सूर्य।

प्रा० खम्बा, खम्भ } सं० स्तम्भ पु० थंभा, थूनी, खंभा, लाट मीनार।

सं० खर (खड्=तोड़ना) पु० तीव्र, [कठोर।

सं० खर (ख=शून्य, रा=देना) पु० गधा, खच्चर, २ एक राक्षस का नाम ३ तीक्ष्ण, चतुर, ४ तृण।

प्रा० खर, खड़ } सं० खट=ढकना पु० तिनका, तृण, घास।

सं० खरतर, खरतम } पु० अतितीक्ष्ण, बहुत तेज़, बड़ा [illegible]।

सं० खरधार, खरधारा } पु० तेज़धार, धार।

प्रा० खरबर, स्त्री० | खरभर, स्त्री० | खलबल, स्त्री० | खभार, पु० } हलचल, खड़बड़, खलबली, हलचल, खड़बड़ी।

प्रा० खरल (सं० खल्ल, खल्=गिरना) स्त्री० औषध पीसने के लिये पत्थर का बरतन।

प्रा० खरहा-पु० खरगोश, शशा।

प्रा० खरा-गु० सच्चा, सीधा, सरल, उत्तम, श्रेष्ठ, चोखा, प्रमाणिक।

सं० खरी—स्त्री०=गधी, खली।

प्रा० खर्ज्जुर-पु० खजूर, छुहारा, २ जुकाम, श्लेष्मा।

सं० खर्व (खर्व्=जाना) पु० सौ अरब, गु० बामना, नाटा, छोटा, २ नीच।

सं० खर्वित-कर्म० अल्पीकृत, संक्षिप्त, मुख़्तसर।

सं० खल (ख=शून्य, ला=लेना, वा, खल्=चलना, वा गिरना) गु० दुष्ट, नीच, कठोर, निर्दयी, क्रूर, बेरहम।

प्रा० खल (सं० खलि, खल्=जाना वा गिरना) स्त्री० खरी, तिल की सीठी।

सं० खल—गु० दुष्ट, अधम, नीच, निंदक, क्रूर, पु० कल्क, खली।

सं० खलन (खल्+अन) भा० पु० खाली करना, रीता करना।

प्रा० खलबलाना—क्रि० अ० उबलना, खौलना।

सं० खलित (खल्+इत) क० पु० पतित, गिरा, खाली हुआ।

प्रा० खलियान (सं० खल्या, खल=जाना, वा गिरना) पु० उस जगह का नाम जहां भूसे में से अनाज निकाल कर ढेर लगाते हैं, खलिहान।

सं० खलु—अव्य० निश्चय, हेतु, यक़ीन, विश्वास, वीप्सामान, निषेध, प्रश्न।

सं० खल्वाट—गु० गंजा, चंदुला, जिस के शिर में बाल न हों।

प्रा० खवा | खंबा } पु० कंधा।

प्रा० खसकाना—क्रि० स० दूर करना, सरकाना, हटाना, पीछे खेंचना, २ ले भागना।

प्रा० खसखस (सं० खस्=खस) पु० पोस्त का दाना, खशखाश।

प्रा० खसना—क्रि० अ० गिरना गिरपड़ना।

प्रा० खसरा—पु० वही, खेतके हिसाब की किताब, खर्रा, किसी हिसाब का खर्रा, २ खुजली।

प्रा० खांड़ (सं० खण्ड) स्त्री० शक्कर।

सं० खाण्डव— पु० इन्द्रप्रस्थनगर के निकट का वन।

प्रा० खांडा (सं० खड्ग) पु० एक तरह की तलवार, तेगा।

प्रा० खांडे की धार पर चलना-बोल० न्यायपर चलना, न्याय करना।

प्रा० खांसी (सं० काश, कश्=शब्द करना) स्त्री० खोखी, धांसी।

प्रा० खाई (सं० खान, खन्=खोदना) स्त्री० खंदक, नाला, गड्ढा, गढ़ के बाहर का नाला।

प्रा० खाऊ (खाना) गु० पेटू, पेटार्थी, बहुत खानेवाला।

प्रा० खाग (सं० खड्ग) पु० गैंडेका सींग।

प्रा० खाज (सं० खर्जू, खर्ज्=दुख देना) स्त्री० खुजली।

प्रा० खाजा (सं० खाद्य=खानेयोग्य) पु० एक तरह की मिठाई।

प्रा० खाट (सं० खट्वा) स्त्री० चारपाई, खटिया।

सं० खात (खन्=खोदना) भा० पु० खाई, खंध, परिखा, दुर्गवेष्टन, खन्दक।

प्रा० खाता-पु० [illegible], रोज़के हिसाब की बही, नक्शा, हिसाब।

प्रा० खाती-पु० बढ़ई, मिस्त्री।

सं० खादक (खाद्+अक) क० पु० खाऊ, कर्जदार, खवैया।

सं० खादन (खाद्+अन) भा० पु० भक्षण, भोजन, खुराक।

सं० खाद्य (खाद्+य) [illegible]

प्रा० खान } (सं० खानि, वा खानि, खानी } खन्=खोदना) स्त्री० खानि, आकर, मादन, २ ढेर, ३ घर।

प्रा० खाना (सं० खादन, खाद्=खाना) क्रि० स० भोजन करना, २ खाजाना, उड़ाना, चोरीकरना, मारखाना, चाटजाना, निगलना, डकार जाना, हज़म करजाना, चट करना, हाथ मारना, पु० खाने की चीज़, भोजन, आहार।

प्रा० खाजाना-बोल० खालेना, डकारना, चट करना, हज़म करना, मारखाना, निगलना, उड़ाना।

प्रा० खानापीना-बोल० भोजन, खुराक, खाना।

सं० खानिक (खन्=खोदना) क० जो खानि में पैदा हो, स्त्री० खानि।

प्रा० खार (सं० क्षार) पु० लोना, एक सफ़ेद खारी चीज़ जिससे बहुधा धोबी कपड़े साफ़ करते हैं।

प्रा० खारा (सं० क्षार) गु० लोना, नमकीन।

प्रा० खारुआ } पु० एक तरहका मोटा, खारुवा } लाल कपड़ा।

प्रा० खाल (सं० [illegible]) स्त्री० चमड़ा, २ [illegible], ३ [illegible]।

प्रा० [illegible]-बोल० [illegible]

दुख देकर मारडालना, चमड़ालेना, चमड़ा उधेड़ना, खलियाना।

प्रा० खिंचना-क्रि०अ०तनना,ऐंठना।

प्रा० खिजलाना } (सं०खिद्=दुख
खिझाना } देना) क्रि०स० सताना, चिढ़ाना, छेड़ना, दुखदेना, तकलीफ़देना, क्रोधितकरना।

प्रा० खिड़की-स्त्री०झरोखा,दरीची।

सं० खिन्न (खिद्=दुखदेना वा दुख पाना) मर्म०पु० दुखी,दुखित,थका हुआ, थकित, सतायाहुआ।

प्रा० खिरनी (सं० क्षीरिणी, क्षीर =दूध) स्त्री० एक फल और उसके पेड़ का नाम।

प्रा० खिलखिलाना (सं० किलकिला) क्रि०अ०बहुतजोरसेहँसना।

प्रा० खिलना-क्रि० अ० फूलना, २ हर्षित होना,प्रसन्न होना,हँसना।

प्रा० खिलाड़ } (खेल) गु०चं-
खिलाड़ी } चल, चपल।

प्रा० खिलौना (खेल) पु० खेलने की चीज।

प्रा०खिसलना-क्रि०अ०फिसलना, खिसकना, सरकजाना।

प्रा० खिसियाना (सं० क्लिश्,दुख =पाना) क्रि० अ० चिड़चिड़ाना, क्रोध करना, खीसना।

प्रा० खीजना (सं०खिद्=दुखदेना, वा दुखपाना) क्रि० अ० क्रोधित होना,क्रोध करना, दुखित होना, दुखी होना।

प्रा० खीर (सं० क्षीर) पु० दूध और चांवल से बनी हुई एक खाने की चीज़, जाउर, पायस।

प्रा० खीरा--स्त्री० एक प्रकार की ककड़ी।

प्रा० खील- स्त्री० भूनाहुआचांवल, लावा।

प्रा०खीली--स्त्री० पान की बीड़ी।

प्रा० खीसना--क्री०स०नाशकरना, उजाड़ना,बिगाड़ना, २ खिसियाना।

प्रा० खीस-भा० स्त्री० खराब हुई, २ दांत निकालना।

प्रा० खीसा (फ़ा० खीसह) पु० जेब, खलीता।

प्रा०खुजलाना(सं०खर्ज्=दुखदेना) क्रि० अ० कलकलाना, चुलचुलाना,सहलाना,खरोटना,खरोंचना।

प्रा०खुजलाहट } (स०खर्जू, खर्ज्
खजलाहट } =दुख देना) स्त्री० खुजलाना, खुजली, सुरसुरी, गुदगुदी।

प्रा० खुजली (सं० खर्जू,खर्ज्=दुख देना) स्त्री० खाज, पामा,खारिश।

प्रा० खुटाना-क्रि०अ० कम होना, घटजाना।

प्रा० खुटानी-स्त्री० क्षीण हुई, कम हुई, नाश हुई।

प्रा० खुदवाना (सं० खन्=खोदना

वा क्षुद्=चूर २ करना) क्रि०स० खुदाना ।

प्रा० खुनस-स्त्री० रोस, बैर, क्रोध, कोप, लाग, रिस ।

प्रा० खुनसाना- क्रि० अ० क्रोधित होना, खिसियाना, क्रोध करना, कोप करना, रिसाना ।

प्रा० खुबना } खुभना } क्रि० अ० चुभना, बिंधना, पैठना, असर करना, मन में खिच जाना ।

सं० खुर (खुर्=काटना) पु० सुम, घोड़े गाय आदि के पैर का नख ।

प्रा० खुरपा (सं० खुर्=काटना) पु० घास खोदने का औजार ।

प्रा० खुरमा (फा० खुर्मा) पु० एक तरह की मिठाई ।

प्रा० खुलना- क्रि० अ० खुलजाना, प्रगट होना, नहीं ढकना, बिखरना, (जैसे बादल) साफ़ हो जाना, स्वच्छ होजाना (जैसे आकाश) टूटना, छूटजाना (जैसे ध्यान)

प्रा० खूंट-पु० कोना, कोन, २ कान का मैल ।

प्रा० खूंदना (सं० क्षुद्=चूर करना) क्रि० स० पैरों से धरती को खोदना, हाथ मारना ।

सं० खेचर (खे=आकाश में, चर= [illegible]) [illegible]

धर देवता, गु० आकाश में चलनेवाला ।

सं० खेट (खिद्=सताना) पु० ग्रह २पक्षी ३अधम ४भय ५खेत ६शिकार ।

सं० खेटक (खिद्=डराना, सताना) क० पु० शिकार, अहेर, २ढाल, ३भय, ४कुत्सित, ५ग्राम, ६ कफ़, ७ अधम ।

प्रा० खेड़ा (सं० खेट, खेट=खाना) पु० पुरवा गाँव ।

प्रा० खेड़ी--स्त्री० अच्छा लोहा, फ़ौलाद, इस्पात ।

प्रा० खेत (सं० क्षेत्र) पु० जगह जहां अनाज तरकारी आदि बोते हैं, २ पवित्रधरती, ३ धरती, जमीन, ४ लड़ाई का मैदान ।

प्रा० खेतछोड़ना--बोल० लड़ाई से भाग जाना ।

प्रा० खेतरहना--बोल० लड़ाई में रहजाना, माराजाना ।

प्रा० खेती (खेत) स्त्री० किसनई, काश्तकारी, जिराअत, फ़सल ।

प्रा० खेतीबाड़ी-बोल० खेती का [illegible] किसनई, काश्तकारी, जिराअत ।

सं० खेद (खिद्=दुःख पाना) पु० दुःख, शोक, [illegible], पछतावा, कष्ट, [illegible] पीड़ा, दर्द ।

सं० खेदित (खिद्=दुःख पाना) गु० दुःखित, दुःखी, पीड़ित ।

प्रा० खेप [illegible]

भेजना) स्त्री० सफ़र, समंदरकीयात्रा, २ जहाज़ का बोझा।

प्रा० खेपहारना--बोल० नुक़सान उठाना, हानि होना।

प्रा० खेल (सं० खेला, खेल्=हिलना चलना) पु० क्रीड़ा, विहार।

प्रा० खेवट } खेवटिया } (सं० कैवर्त्त) पु० नाव चलानेवाला, मांझी, मल्लाह, डांडी, खेवक।

प्रा० खेवना (सं० क्षेपण) क्रि० स० डांड मारना, नाव चलाना।

प्रा० खेवा (सं० क्षेप्य) पु० उतराई, नाव की उतराई का भाड़ा, २ नदी पार होना।

प्रा० खेस--पु० एक कपड़ेका नाम।

प्रा० खैंचना--क्रि० स० तानना, कसना, ऐंचना, २तसवीरमें रंगभरना, तसवीर उतारना, तसवीर बनाना।

प्रा० खैंचाखैंची-बोल० खैंचातानी, लड़ाई, मारामारी।

प्रा० खैर (सं० खदिर) पु० एक वृक्ष का नाम, खदिर पेड़ का गूदा।

प्रा० खोंता-पु० घोंसला, पखेरूकाघर।

प्रा० खोंसना--क्रि० स० टांसना, ठोंसना, भरना।

प्रा० खोंखला (सं० कोटर) गु० खाली, छूछा, थोथा, पोला।

प्रा० खोखा-पु० वह हुंडी जिसके रुपये दिये जा चुके हों।

प्रा० खोज- पु० पता, निशान, ठिकाना, चिह्न। [अवगुण।

प्रा० खोट-स्त्री० चूक, भूल, दोष,

प्रा० खोटा- गु० झूठा, नमकहराम, खराब।

प्रा० खोदना (सं० खन्=खोदना वा क्षुद्=चूर चूर करना) क्रि० स० खनना, गोड़ना, कुरेदना।

प्रा० खोना (सं० क्षय) क्रि० स० गँवाना, उड़ाना, नाशकरना, हारना।

प्रा० खोपरा (सं० खर्पर) पु० नारियल की गरी।

प्रा० खोपरी (सं० खर्पर) स्त्री० कपाल की हड्डी, शिर की हड्डी, खोपड़ी।

प्रा० खोह-स्त्री० गुफा, गुहा, गढ़हा।

प्रा० खोरि } खोरी } (सं० खोट्=टेढी चाल) भा० स्त्री० खुटाई, दोष, क़सूर।

प्रा० खोल-स्त्री० खोखला, २मियान।

प्रा० खोह- स्त्री० गुफा, कंदला।

प्रा०खौड़-स्त्री० तिलक, त्रिपुंड्र।

प्रा० खौलना- क्रि०अ० उबालना, उकलना, वहुत गर्म होना।

सं० ख्यात (ख्या=प्रसिद्धहोना) कर्म० नामवर, प्रसिद्ध, प्रतिष्ठित, विदित, मशहूर, उजागर।

सं० ख्याति (ख्या=प्रसिद्धहोना)

भा० स्त्री० यश,नाम,कीर्ति, सराह, नामवरी ।

अं० ख्रीष्ट=ईसवी ।

प्रा० ख्याल (खेल) पु० तमाशा, कौतुक, नक़ल, स्वांग, खेल ।

—:o:—

ग

सं० ग (गै=गाना) पु० गंधर्व, २ गणेशजी, ३ यात्री, ४ गीत ।

प्रा० गंग (सं० गङ्गा) स्त्री० गंगानदी ।

प्रा० गंज-स्त्री० चाईचूई, पादखोरा ।

प्रा० गंजा (गंज) पु० जिस के शिर में गंज हो, चंदला ।

प्रा० गंजना- क्रि० स० नाशकरना ।

प्रा० गँठजोरा (सं० ग्रन्थिजोड़, ग्रंथि=गांठ, जुड़्=बांधना) पु० गांठ बांधना ।

प्रा० गंठजोड़ाबांधना- बोल० ब्याह में दुलहा दुलहिन के आंचल में गांठ बांधना ।

प्रा० गंठकटा / गठकटा (सं० ग्रंथि=गांठ, कृत्=काटना) पु० गिरहकटा ।

प्रा० गंडा (सं० गण्डक) पु० घेरा, २ चार कौड़ी, चार, ३ [illegible] पशु या बालकों के गले में डोरा [illegible] ।

प्रा० गंडासा-पु० [illegible] ।

प्रा० [illegible] ।

प्रा० गंधी (सं० गान्धिक) पु० अतर गुलाबजल आदि बेचनेवाला ।

प्रा० गँव / गौं पु० अवसर, दांव, सुभीता, अवकाश, मौक़ा ।

प्रा० गंवाना (सं० गम्=जाना) क्रि० स० खोना, उड़ाना, फेंकना, खर्च करना ।

प्रा० गवांर (सं० ग्राम्य) पु० गांव में रहनेवाला, २ अनपढ़, मूर्ख ।

प्रा० गंवी / गँवई (ग्राम्य) पु० गांव का गंवेला, दिहाती, पु० गांव, दिहात ।

सं० गगण / गगन (गम्=जाना) पु० आकाश, आस्मान ।

प्रा० गगरी / गागरी (सं० गर्गरी, गर्ग ऐसा शब्द, रा=लेना) स्त्री० मटकी, कलसी, छोटाघड़ा, डिलिया ।

सं० गङ्गा (गम्=जाना) स्त्री० एक नदी का नाम, भागीरथी, जाह्नवी, सुरसरी ।

प्रा० गङ्गाजमुनी (सं० गङ्गा+यमुना) स्त्री० कानका गहना, बाली, २ सोने अथवा पीतल की चांदी और [illegible], ३ [illegible] और नाना मिला हुआ रंग ।

सं० गङ्गाजल (गङ्गा=नदी का नाम, जल=पानी) पु० गङ्गा का पानी ।

सं० गङ्गाद्वार (गङ्गा=नदी का नाम, [illegible]) पु० [illegible] ।

द्वार वह जगह जहां गंगा निकल कर बहती हैं।

सं० गङ्गाधर (गङ्गा=नदी का नाम, धर=रखनेवाला, धृ=रखना) पु० शिव, महादेव जिन्होंने पहले गङ्गा को अपनी जटा में रखलियाथा ।

सं० गङ्गासागर (गङ्गा, सागर=समुद्र) पु० वह जगह जहां गङ्गा समुद्र से मिलती हैं ।

प्रा० गचपच-बोल० भीड़भाड़, घना, गहरा, कशमकश ।

सं० गज (गज्=मस्त होना, शब्द करना) पु० हाथी ।

फ़ा० गज़-पु० दो हाथका नाप, ३३ इंच वा ३६ इंच का नाप ।

सं०गजगामिनी (गज=हाथी, गम्=जाना) स्त्री० जिस स्त्री की चाल हाथी कैसी हो ।

प्रा० गजगाह (सं० गज=हाथी, गाह=गहना) पु० हाथी घोड़ों का गहना ।

सं० गजपति (गज=हाथी, पति =मालिक) पु० राजा, २ हाथी का मालिक अथवा हाथीपर चढ़नेवाला, ३ बड़ा हाथी ।

सं० गजपाल (गज=हाथी, पाल=पालनेवाला, पाल्=पालना) पु० महावत, हाथीवान ।

प्रा०गजमोती (सं० गजमुक्ता) पु० हाथी के शिर का मोती, गजमणि ।

सं०गजयूथ (गज=हाथी, यूथ=टोला, झुण्ड) पु० हाथियों का टोला, हाथियों का झुण्ड ।

प्रा० गजरा (सं० गर्जर) पु०गाजर का पत्ता, २ हाथमें पहननेकागहना।

सं० गजराज (गज=हाथी, राजन्=राजा) पु० बड़ा हाथी, गजेंद्र ।

सं० गजवदन (गज=हाथी, वदन=मुंह) पु० गणेशजी ।

सं० गजानन (गज=हाथी, आनन=मुंह) पु० गणेशजी ।

सं० गजारि (गज=हाथी, अरि=वैरी) सिंह, शेर ।

सं० गजेन्द्र (गज=हाथी, इन्द्र=राजा) पु० हाथियों का राजा, गजराज, २ इन्द्र का हाथी ।

सं० गञ्ज (गज्=मस्त होना, व शब्द=करना) पु० ढेर, खजाना भंडार, २ हाट, बाजार।

सं० गञ्जना- भा० स्त्री० यातना पीड़ा, तकलीफ, जाँकन्दनी ।

सं० गञ्जित (गञ्ज्+इत) मर्दित लांछित, दूषित । [गड़बड़

प्रा० गटपट-क्रि० वि० उलटपुलट

सं० गठक (गठ्+अक, गठ=निर्माणकरना, बनाना) कृ० पु० बनानेवाला, मुसन्निफ ।

सं० गठन (गठ्+अन) भा० पु० निर्माण करना, तरतीफ करना ।

सं० गठित (गठ्+इत) म्पं० निर्मित, बनी हुई ।

प्रा० गट्ठा (सं० ग्रन्थि) पु० गठड़ी, बस्ता, २ लहसुन प्याज़ आदि की गांठ अथवा जड़, ३ जरीब का बीसवां हिस्सा, गट्ठा ।

प्रा० गठड़ी } (सं० ग्रन्थि) स्त्री०
गठरी } गांठ, पोट, पोटरी ।

प्रा० गठिया (सं० ग्रन्थि) स्त्री० गठड़ी, गांठ, एक प्रकार का वातरोग, फुलाव ।

प्रा० गठीला (गांठ) क० गांठदार, गांठवाला, २ हृष्टपुष्ट, संडमुसंड ।

प्रा० गड़गड़ाना-क्रि० अ० गर्जना, गुड़गुड़ाना ।

प्रा० गड़गूदड़-पु० चिथड़ा, फटा पुराना कपड़ा । [२ [illegible] ।

प्रा० गड़पड़-क्रि० वि० गड़बड़, उल-

प्रा० गड़रिया (गाडर=भेड़ी) पु० भेड़ी बकरी को चरानेवाला, [illegible]

प्रा० गड़हा } (सं० गर्त) पु० ग-
गढ़ा } [illegible]

[illegible]

प्रा० गढ़ना-क्रि० स० ठोंकना, बनाना, सुधारना । [गाढ़ा ।

प्रा० गढ़वार (सं० गाढ़) गु० मोटा,

सं० गण (गण्=गिनना) पु० समूह, थोक, झुंड, २ शिव के दूत, ३ सेना जिसमें २९ रथ ८१ घोड़े और १३५ पैदल हों ४ गण आठ हैं जिनका काम वर्णरूप छंद में पड़ता है भगण २ जगण ३ सगण ४ यगण ५ रगण ६ तगण ७ मगण ८ नगण इनके जानने के वास्ते, दोहा-आदिमध्य अवसानमें, भजसहोहिं गुरुजान । यरतहोहिं लघुरूपाहिं सो, मन गुरु लघु सबजान ।

सं० गणक (गण्=गिनना) क० पु० गिननेवाला, गणितज्ञ, ज्योतिषी, नजूमी ।

सं० गणता-भा० समूहत्व, जमा ।

सं० गणना (गण्=गिनना) स्त्री० गिन्ती, संख्या ।

सं० गणनाथ (गण=शिव के दूत, नाथ=स्वामी) पु० गणेशजी ।

सं० गणनायक (गण,नायक=मा-लिक) पु० गणेशजी ।

सं० गणपति (गण,पति=मालिक) पु० गणेशजी, महादेव ।

प्रा० [illegible] (सं० [illegible]) पु० [illegible] ।

सं० [illegible]

लिक)पु० गणेशजी, गणराज।

सं० गणिका (गण=समूह, अर्थात् जिसके बहुत से पति हों) स्त्री० वेश्या, पतुरिया, कंचनी।

सं० गणित (गण्=गिनना) पु० हिसाब, अंकविद्या।

सं० गणितज्ञ (गणित=हिसाब, ज्ञा= जानना) पु० हिसाब जाननेवाला।

सं० गणेश (गण=महादेवके दूत, ईश=स्वामी) पु०गजानन, गणपति, महादेव का बेटा।

सं० गण्ड (गडि,मुंह का एक भाग होना) पु० गाल, २ हाथीका गाल।

सं० गण्डकी (गडि=सींचना) स्त्री० एक नदी का नाम।

सं० गण्य (गण्=गिनना) म्र्म०गिनने योग्य।

सं० गत (गमु=जाना) क०गयाहुआ, २ पायाहुआ,प्राप्त, ३ जानाहुआ।

प्रा० गत } सं० गति } (गमू=जाना) स्त्री० चाल चलन, २ दशा, हाल, ३ रीति, राह,रस्ना, ४ ज्ञान, ५ उपाय, ६ क्रिया कर्म, ७ मोक्ष, मुक्ति।

सं० गतागत (गत+आगत) भा० पु० जाना आना, आमदरफ्त।

सं० गताक्ष (गत=गई अक्ष=आंख) गु० वह मनुष्य जिसकी आंख की रोशनी जाती रही, अंधा।

सं० गतानुगतिक (गत=गया, अनुगतिक=पीछे चलनेवाला) क० एक के पीछे चलने वाला, अनुयायी, अनुगामी, उमर खतमहोगई।

सं० गतायुः (गत=गई, आयुस्=उमर)गु० वह मनुष्य जिसकी उमर पूरी होगई। [कवायद।

सं० गतिपरिपाटी- स्त्री० फ़ौजी

सं० गद्-पु० रोग, बीमारी, मर्ज़।

प्रा० गदका (सं० गदा) पु० पटा।

प्रा० गदहा } गधा } (सं० गर्दभ, गर्द= शब्द करना) पु० एक जानवर का नाम, खर।

सं० गदहा (गद=रोग, हन्=नाश करना) क० पु० वैद्य,हकीम,डाक्टर।

सं० गदा (गद्=शब्द करना) स्त्री० सोंटा, लाठी, चोब।

सं० गदाधर (गदा=सोंटा,धर=रखने वाला,धृ=रखना) पु० विष्णुकानाम।

सं०गदित (गद्+इत, गद्=कहना) म्र्म० कहाहुआ।

सं०गदी (गद्+इ) क०पु० विष्णु २ रोगी, मरीज़।

प्रा० गदेला-पु० मोटा बिछौना, बिछौना जिसमें रूई बहुतभरी हुईहो।

सं० गद्गद (गद्=स्पष्ट, और गद= बोलना, वा, गद्गद पूराबोल नहीं निकलना) पु०मारेखुशी के पूराबोल नहीं निकलना, गु० आनन्दित, प्रसन्न, प्रफुल्ल, बागबाग, खुश।

प्रा० गद्दी } गादी } स्त्री० बिछौना, २ आसन, ३ राजा का सिंहासन, तख्त।

सं० गद्य (गद्=बोलना) पु० छन्द रहित वाक्य, बिना छंद का वाक्य, वार्त्तिक, नसर।

प्रा० गनना (सं० गणना, गण्=गिनना) क्रि० स० गिनना, शुमार करना, गिनती करना।

सं० गन्ता (गम्+ता, गम्=जाना) क० पु० गमनकर्त्ता, जानेवाला।

सं० गन्तु—क० पु० पथिक, मुसाफिर।

सं० गन्ध (गन्ध्=पूरना) स्त्री० बास, महक, सुगन्ध, सौरभ।

सं० गन्धक (गन्ध) पु० एक पीले रंग की धातु।

सं० गन्धमादन (गन्ध=महक, मादन=मस्त करने वाला, मद्=मस्त करना) पु० एक पहाड़ का नाम, २ बंदरों के एक सरदार का नाम, ३ गन्धक।

सं० गन्धराज (गन्ध=महक, राज=शोभना) पु० चन्दन, [illegible]।

सं० गन्धर्व (गन्ध=सुगन्ध, अर्व=जाना) पु० स्वर्ग का गवैया।

सं० गन्धवाह } गन्धवाहक } (गन्ध=सुगंध, वह=ढोना) पु० पवन, वायु, २ कस्तूरिया हिरन, [illegible]।

सं० गन्धसार (गन्ध=सुगंध, सार=तत्त्व) पु० चन्दन, श्रीखण्ड।

सं० गन्धार (गन्ध=सुगंध, ऋ=जाना) पु० एक राग का नाम, २ कन्धार देश।

प्रा० गन्धारी (सं० गान्धारी, गान्धार, कंधारदेश) स्त्री० कंधार देश के राजा की बेटी, धृतराष्ट्र की पत्नी और दुर्योधन की मा।

प्रा० गप—स्त्री० इधर उधर की झूठ सच बात, बक बक, झक २।

प्रा० गपमारना—बोल० झूठी सच्ची बातें करना।   [गाम, गप।

प्रा० गपशप—बोल० झूठी सच्ची

सं० गभीर } गम्भीर } (गम्=जाना) गु० गहरा, अथाह, अवगाह, २ धीर, धीमा, सोची, भारी, गरुवा, निगूढ़, अमीक, हलीम।

सं० गमन (गम्=जाना) भा० पु० चलना, जाना, चलन, पाना।

सं० गमनागमन (गमन+आगमन) भा० पु० आना जाना, आमदरफ्त।

सं० गमी—क० पु० जानेवाला।

सं० गामी—क० पु० गमन करने वाला, रति करने वाला।

सं० गम्य (गम्=जाना) [illegible] [illegible]।

प्रा० गयन्द } (सं० गजेन्द्र) पु० [illegible] हाथी, [illegible]।

सं० गया (गै=गाना वा, गय एक राक्षस का नाम) स्त्री० सूबे बिहार में एक नगर है जो हिंदुओं का बड़ा तीर्थस्थान है।

प्रा० गयाली } गयावाल } (सं० गयालय, गया नगरकानाम, आलय=घर) पु० गयाके ब्राह्मण जो यात्रियों को पिंड श्राद्ध आदि कराते हैं।

सं० गर (गॄ=निगलना, वा निकाल देना) पु० विष, ज़हर, २ रोग, गला।

प्रा० गरजना (सं०गर्जन) क्रि०अ० गूंजना, घड़घड़ाना, बादलों का अथवा सिंह का शब्द करना।

सं० गरल (गॄ=निगलना वा निकाल देना) पु० विष, ज़हर, माहुर, हलाहल।

प्रा० गरवा (सं०गौरव) गु० भारी, गंभीर, धीर, मुतहम्मिल, बुर्दबार, २ बड़ा, प्रतिष्ठित।

सं० गरिमा (गुरु बड़ा) स्त्री० गुरुता, बड़ाई, गरुआई, बोझ, अहंकार।

सं० गरिष्ठ } गरीयान् } गु० भारी, गरुआ।

प्रा० गरी—स्त्री० नारियल का गूदा, खोपरा।

प्रा० गरुआई } गुरुआई } (सं० गुरुता) भा० स्त्री० भार, बोझ।

सं० गरुड़ (गरुत्=पंख, डी=उड़ना) पु० पक्षियोंका राजा, विष्णु का वाहन—एक तरह के पखेरू का नाम।

सं० गरुड़ध्वज (गरुड़=पखेरुओं का राजा, ध्वजा, पताका, अर्थात् जिसकी ध्वजामें गरुड़ का चिह्न है) पु० विष्णु, भगवान्।

सं० गरुत् (गॄ=सींचना, वा गॄ=निकालना) पु० पंख, पाख, पर।

सं० गर्ग (गॄ=सींचना, वा गॄ=जानना वा जतलाना) पु० एक मुनि का नाम जो ब्रह्मा का बेटा और वसुदेव जीका कुलगुरु था।

सं० गर्ज } गर्जन } (गर्ज=गर्जना) पु० बादलों का शब्द, सिंहका शब्द, गाजना।

सं० गर्त्त (गॄ=निकालना, वा निगलना) पु० गढ़ा, गड्हा, खड्डा।

सं० गर्दभ (गर्द्=शब्द करना) पु० गधा।

सं० गर्ब } गर्व } (गर्ब् वा गर्व्, घमंड करना) पु० घमंड, अहंकार, दर्प, अभिमान, ग़रूर।

सं० गर्भ (गॄ=सींचना) पु० गाभ, पेट, कोख, हमल।

सं० गर्भवती } गर्भिणी } (गर्भ) स्त्री० पेट से, गाभिन, दो जीवां, दो जीव से।

सं० गर्भश्राव } गर्भस्राव } (गर्भ=गाभ, श्रु, वा स्रु=गिरना) पु० गर्भ का गिरना, गाभ गिरना, गर्भपात।

सं० गर्व—भा० घमंड, गरूर।

सं० गर्वित (गर्व्=घमंड करना) गु० घमंडी, अहंकारी, अभिमानी, मग़रूर।

सं० गर्हक (गर्ह्+अक, गर्ह=निन्दा करना) क० पु० निन्दक, चुगुल।

सं० गर्हण (गर्ह्+अण) भा० पु० निन्दा, मज़म्मत। [मज़मूम।

सं० गर्हित (गर्ह्+इत) कर्म० निन्दित,

सं० गल (गल्=खाना, वा गृ=निगलना) पु० गला, गरदन।

प्रा० गलदेना—बोल० फांसी देना।

प्रा० गलबहियां (सं० गलबाहु, गल=गला, बाहु=भुजा) स्त्री० गलबांह, गले में हाथ डालना।

प्रा० गलबहियां डालना—बोल० किसी के गले में हाथ डालना।

प्रा० गलना (सं० गलन, गल=गिरना) क्रि० अ० पिघलना, नर्म होना—२ सड़ना, बिगड़ना।

प्रा० गला (सं० गल) पु० कण्ठ, गरदन, ग्रीवा, नरेटी, २ स्वर, आवाज़, गु० सड़ा हुआ, पिघला हुआ।

प्रा० गलाबैठना } बोल० आवाज़
गलापड़ना } बैठना, भारी
[illegible]

प्रा० गला[illegible]—बोल० [illegible]

देना, गल देना, गला दबाना, दम बंद करना।

प्रा० गलादबाना—बोल० गला घोंटना, नरेटी दबाना, फांसी देना।

प्रा० गलाघोंटना—बोल० नरेटी दबाना, गला दबाना, दम बंद करना।

प्रा० गलेपड़ना—बोल० ख़ुशामद करना, जो मनुष्य प्रीति नहीं करना चाहता उससे प्रीति किया चाहना।

प्रा० गलेपड़ीबजायेसिद्ध—बोल० जो काम आपड़े उस को करना ही चाहिये।

प्रा० गले का हार होना—बोल० किसी से बड़ी लगन के साथ प्यार करना, मन हर लेना, सदा मन में बसना।

प्रा० गलेलगना—बोल० मिलना, छाती से लगाना।

प्रा० गलाना (गलना) क्रि० स० पिघलाना, २ सड़ाना।

सं० गलित (गल्=गिरना) क० गला हुआ, पड़ा हुआ, सड़ा हुआ, गिरा हुआ, जो गिर पड़ा हो।

प्रा० गली—स्त्री० छोटारस्ता, तंगरस्ता।

प्रा० गलीगली—बोल० दूकानों में [illegible]

प्रा० गवार (सं० [illegible]) [illegible]
[illegible]

सं० [illegible]

जैसा जानवर, वन की गाय, २ एक वानर का नाम ।

अं० गवर्नमेण्ट=राजकीय नियम जो पार्लीमेण्ट और लेजिलेटिव कौंसिल या सभा में बनते हैं उन्हीं नियमों के अनुसार राज काज किये जाते हैं ।

प्रा० गवहि (सं० गमन) भा० मांको से जाना, गौं से जाना ।

सं० गवाक्ष (गो=गाय, वा किरण, अक्षि=आंख,वा छेद) पु० झरोखा, मोखा, झंझरी, जाली, २ गाय की आंख, ३ एक वानर का नाम ।

प्रा० गवासा (सं० गवाश, गो=गाय, अश्=खाना) पु० गाय को खाने वाला, कसाई । [गानेवाला ।

प्रा० गवैया (सं० गायक) क० पु०

सं० गव्य (गो=गाय) पु० दूध आदि गु० गाय का ।

प्रा० गहगहाना (सं० गह्=गहरा होना) क्रि० अ० बाजना, नक्कारों का बाजना, २ हिलोरना, लहकना ।

प्रा० गहण (सं० ग्रहण) भा० पु० ग्रहण, लेना ।

सं० गहन (गह्=घना होना वा गाह् =मथना) पु० वन, कुंज, झाड़ी, गु० गहरा, सघन, विकट ।

प्रा० गहना (सं० ग्रहण, ग्रह्=लेना) क्रि० स० पकड़ना, लेना, ग्रहण करना ।

प्रा० गहना-पु० जेवर, भूषण, २ गिरो, गिरवी, बंधक ।

प्रा० गहनेधरना, गहनीधरना } बोल० गिरो रखना, गिरवी रखना, बंधक रखना ।

प्रा० गहरा (सं० गम्भीर) गु० गंभीर, अथाह ।

प्रा० गहरु—स्त्री० देरी, देर, विलम्ब ।

प्रा० गहवा (गहना पकड़ना) पु० सँडसी, चिमटा ।

प्रा० गहवर (सं० गह्वर, गाह्=मथना वा पैठना) स्त्री० गुफा, गुहा, कंदरा, गु० सघन, कुंज ।

प्रा० गांजा (सं० गञ्जिका, गञ्ज्=मस्त होना) पु० एक नशे की चीज़ ।

प्रा० गांठ (सं० ग्रन्थि) स्त्री० गिरह, जोड़, बंध, २ गिलटी, फुसड़ी, फुनसी, ३ गठड़ी, मोटरी ।

प्रा० गाँठउखड़ना—बोल० जोड़का सरकजाना, जोड़का उतरना, जोड़का खुलजाना, गांठ या हड्डी या नस का बिचलना ।

प्रा० गांठ पड़ना—बोल० किसी के मन में किसी के साथ दुशमनी अथवा वैर अथवा विरोध का जमना ।

प्रा० गांठ का पूरा—बोल० धनवान, दौलतमन्द, धनवन्त, धनी, मालदार ।

प्रा० गांठकाखोना—बोल० अपनी हानि करना, अपना नुकसान आप करना ।

प्रा० गांठखोलना—बोल० बहुत खर्च करना, थैलीखोलना, २ पक्षपात का छोड़ना ।

प्रा० गांठगँठीला—बोल० गांठदार, (जैसे लकड़ी) ठोस, गाढ़ा ।

प्रा० गांठना (सं० ग्रन्थन, ग्रन्थ्=जोड़ना) क्रि० स० बांधना, जकड़ना, मिलाना, जोड़ना, जुटाना, लगाना, साटना, २ वशमें करना, वश में लाना, अपना करना, लुभाना, मोह लेना ।

प्रा० गांडर-पु० कांस, एकतरहकाघास ।

प्रा० गांडा—पु० गन्ना, ईख, ऊख ।

प्रा० गांव / गाम (सं० ग्राम) पु० बस्ती, खेड़ा ।

प्रा० गाई (सं० गौ) स्त्री० गाय, गैया ।

प्रा० गागर / गागरी (सं० गर्गरी) स्त्री० गगरी, मटकी, कलशी ।

प्रा० गाछ (सं० गच्छ, गम्=जाना) पु० पेड़, वृक्ष ।

प्रा० गाजना (सं० गर्जन) क्रि० अ० गर्जना, बादलों का अथवा सिंह का शब्द करना, २ प्रसन्न होना, हर्षित होना ।

प्रा० गाजर (सं० गर्जर) स्त्री० एक प्रकार का कन्द अथवा मूल जिसकी तरकारी होती है और ऐसे भी खाते हैं ।

प्रा० गाजरघास [illegible] पु० [illegible]

प्रा० गाड़ना (सं० गर्त्तन, गृ=निकालना, या निगलना) क्रि० स० तोपना, मिट्टी देना, समाध देना, २ जमाना, खड़ाकरना, पक्काकरना, दृढ़ करना, लगाना ।

प्रा० गाड़ (सं० गर्त) गड्ढा, खत्ता, गौं ।

प्रा० गाडर—स्त्री० भेड़ी, भेड़ ।

प्रा० गारुड (गारुड़, गरुड़ अर्थात् जिसका देवता गरुड़ है) पु० सांप के विष उतारने का मंत्र, विष झाड़ने का मंत्र ।

प्रा० गाड़ा (सं० गन्त्री) पु० छकड़ा, लढ़ढ़, शकट, २ (गर्त्त) खाई, गड्ढा, ३ घात, दांव ।

प्रा० गाड़ी (सं० गन्त्री, गम्=जाना) स्त्री० सम्भाली शकटी, रथ, बहल ।

प्रा० गाड़ीवान (गन्त्रीवाह) पु० गाड़ीवाला, कोचवान, सारथि ।

प्रा० गाढ़ा (सं० गाढ़, गाह्=मथना) गु० मोटा, पोढ़ा, २ मजबूत, दृढ़, ३ पक्का, चतुर, होशियार ।

सं० गाण्डिव (गाण्डि=गांठ, अर्थात् जिसमें गांठ हो) पु० अर्जुनका धनुष, २ कोई धनुष, कोई ऐसा धनुष ।

प्रा० गात (सं० गात्र) पु० शरीर, देह, अंग, तन, २ कपड़ा, वसन, वस्त्र ।

प्रा० गाता—पु० पुट्ठा, जिल्द [illegible] [illegible] देह, तन, अंग ।

सं० गात्र [illegible] पु० शरीर,

सं० गाथक (गै=गाना) क० पु० गाने वाला, गवैया, गायक, कथक।

सं० गाथा (गै=गाना) स्त्री० गीत, गाना, कथा, २ श्लोक, पद्य, छंद।

प्रा० गाद–स्त्री० तलछट, मैल, झाग।

प्रा० गाथना } गांथना } (सं० ग्रन्थन, ग्रन्थ्=जोड़ना) क्रि० स० गूंथना, बनाना।

सं० गाधि (गाध्=ठहरना, वा चाहना) पु० विश्वामित्र ऋषि का बाप।

सं० गाधितनय (गाधि+तनय=बेटा) पु० विश्वामित्र ऋषि।

प्रा० गाधिसुवन (सं० गाधिसूनु, गाधि+सूनु=बेटा, सू=पैदा होना) पु० विश्वामित्र ऋषि।

सं० गान (गै=गाना) भा० पु० गीत, नग़मा, गाना।

प्रा० गाना (सं० गान) क्रि० स० अलापना, रागउच्चारना, २ कहना।

सं० गान्धर्व (गन्धर्व) पु० गंधर्वका पु० गाना, गीत, २ एक तरह का व्याह जो केवल दुलहा और दुलहिन की मर्ज़ी से हो जाता है।

सं० गान्धार (गन्ध=सुगंध, ऋ=जाना) पु० एक राग का नाम-२ कंधारदेश।

सं० गान्धारी–स्त्री० गान्धार राजा की बेटी, धृतराष्ट्र की स्त्री।

प्रा० गाभ (गर्भ) पु० गर्भ, पेट।

प्रा० गाभा (गर्भ) पु० केले के पेड़ का नया पत्ता।

प्रा० गाभिन (सं० गर्भिणी) स्त्री० गर्भवती (जैसे गाय भैंस आदि)

सं० गामी } गामुक } (गम्=जाना) क० पु० जानेवाला, चलनेवाला, गामिनी=चलनेवाली। [धेनु।

प्रा० गाय (सं० गौ) पु० गैया, गौ,

प्रा० गायगोठ } गाइगोठ } (सं० गो+गोष्ठ गो=गाय, स्था=ठहरना) स्त्री० गोशाला।

सं० गायक (गै=गाना) पु० गाने वाला, गवैया।

सं० गायत्री (गायन=गानेवाले को त्रै=बचाना) स्त्री० एक प्रकार का मंत्र, वेदमाता, सूर्य्य की वंदना, २ एक छन्द का नाम जिसके हर एक पाद में छः अक्षर होते हैं।

सं० गायन (गै=गाना) पु० गाने वाला, गवैया।

अ० गारत–बरबाद, नष्ट, तबाह।

प्रा० गार } गारी } (सं० गालि, गल्=गिरना) स्त्री० बुरी बात, बुरावचन, गाली।

प्रा० गारि–पु० तावा, तवा।

प्रा० गारुडी (सं० गारुडिक, गरुड़) पु० विष उतारनेवाला, विष झाड़ने वाला।

प्रा० गाल (सं० गल, गल्=खाना) पु० कपोल, आंखों के नीचे का भाग, २ चोचला ।

प्रा० गालकरना / गालबजाना } बोल० चोचला करना, बकवाद करना ।

सं० गालव — पु० एक ऋषि का नाम ।

प्रा० गाली (सं० गालि, गल्=गिरना) स्त्री० गार, गारी, बुरी बात, बुरा वचन ।

प्रा० गालीगलौज — बोल० आपस में गाली देना, झगड़ा, लड़ाई, तकरार ।

प्रा० गालीदेना — बोल० गालीबकना, बुराभला कहना, झिड़कना, बुरा कहना, धुतकारना ।

प्रा० गावदी — पु० भोला, मूर्ख, बेवकूफ, अज्ञानी ।

प्रा० गावघी (सं० गोघृत) पु० गाय का घी ।

प्रा० गाह (सं० ग्राह) पु० मगर, ग्राह ।

प्रा० गाहक (सं० ग्राहक, ग्रह्=लेना) पु० मोल लेनेवाला, सौदा खरीदने वाला, खरीददार, लेनेवाला ।

प्रा० गाहना (सं० गाह=मथना) क्रि० स० [illegible], मथना, [illegible], २ [illegible] ।

प्रा० गाढ़ा (सं० [illegible]) [illegible], २ [illegible] ।

प्रा० गिड़गिड़ाना — क्रि० अ० [illegible]याना, विनती करना, घिरौरी करना ।

प्रा० गिणती / गिन्ती } (सं० गणित, गण्=गिनना) स्त्री० संख्या, गिनना, हिसाब ।

प्रा० गिणना / गिनना } (सं० गणन) क्रि० स० गिन्ती करना, हिसाबकरना, शुमार करना ।

प्रा० गिद्ध (सं० गृध्र) पु० गीध, एक पखेरू का नाम, शकुनी ।

प्रा० गिरगिट — पु० एक कीड़ा, छिपकली, टिकटिकी ।

प्रा० गिरना — क्रि० अ० पड़ना, गिरपड़ना ।

प्रा० गिरतेपड़ते — बोल० बहुत कठिनता से ।

सं० गिरा (गृ=निगलना, या निकालना) स्त्री० वाणी, वचन, २ सरस्वती, शारदा, ३ कविताई ।

सं० गिरि (गृ=निगलना वा निकालना) पु० पहाड़, पर्वत, २ संन्यासी गु० पूज्य, पूजनीय, प्रतिष्ठित, मान्य ।

सं० गिरिजा (गिरि=पहाड़, जन=पैदा होना) स्त्री० पार्वती, गौरी, उमा, हिमालय की बेटी ।

सं० गिरिधर / गिरिधारी } (गिरि=पहाड़, धा [illegible]) पु० श्री कृष्ण, [illegible] ।

प्रा० गिरिन्दा (सं० गिरीन्द्र) पु० बड़ा पहाड़, सुमेरु पहाड़, हिमालय पहाड़।
सं०गिरिराज (गिरि=पहाड़, राज =राजा) पु० पहाड़ों का राजा, गोवर्द्धन, हिमालय, सुमेरु, २ श्रीकृष्ण का नाम।
सं० गिरिवर (गिरि=पहाड़, वर= बड़ा) पु० बड़ा पहाड़।
सं०गिरिसुता(गिरि=पहाड़, सुता= बेटी)स्त्री०पार्वती,गौरी,गिरिजा,उमा।
सं० गिरीन्द्र (गिरि=पहाड़, इन्द्र= राजा)पु०हिमालय,सुमेरु, गिरीश।
सं० गिरीश (गिरि=पहाड़, ईश= स्वामी) पु० महादेव, शिव, २ हिमालय।
प्रा० गिलई—भा०स्त्री०निगलजाइ।
सं०गिलन(गृ=निगलना वा खाना) भा० पु० भक्षण, खाना।
अं०गिलन=छः बोतलका पैमाना।
सं० गिलित (गिल्+इत) र्म्म० स्त्री० खादित, भक्षित, खाई हुई।
सं० गीतिका=नाम एक छन्द का।
प्रा० गिलहरी—स्त्री० एक जानवर का नाम, रूखी चीखुर।
प्रा०गिलौरी—स्त्री० पानकी बीड़ी।
सं०गीत (गै=गाना)पु०गान,भजन।
सं० गीता(गै=गाना)स्त्री० एक पुस्तक का नाम जिस में श्रीकृष्ण और अर्जुन का संवादहै और उसको भगवद्गीता कहते हैं इस के सिवाय रामगीता, पांडवगीता, आदि और भी गीता हैं पर इन सब में भगवद्गीता बहुत प्रसिद्ध है।
प्रा० गीदड़—पु० शियाल, शृगाल।
प्रा० गीध (सं० गृध्र) पु०गिद्ध,गृध्र।
प्रा०गीला—गु०ओदा,भीगा,सीला।
सं० गु—र्म्म० विष्ठा, ग़लीज़।
प्रा०गुंजान—गु० गहरा, सघन,घना, पासपास।
प्रा० गुजरात(सं०गुर्जर) स्त्री० एक देशकानाम, हिंदुस्तानका एकसूबा।
प्रा० गुजराती—गु० गुजरात का।
सं० गुञ्जन—भा० गूंजना।
सं० गुञ्ज (गुजि=गुञ्जरना) ग०पुष्पस्तवक, गुलदस्ता, फूलोंकागुच्छा।
प्रा० गुञ्ज } सं०गुञ्जा } (गुजि=शब्द करना) पु० घुंघची लाल, एक बेली का नाम।
सं०गुटिका (गु=शब्दकरना)स्त्री० दवाईकीगोली, २ चाहे जैसीगोली।
सं० गुड (गुड्=चूर्ण करना) पु० मीठा, ऊख के रस से बनी हुई मीठी चीज़।
प्रा० गुडंबा } गुडुंबा } (सं० गुडाम्र) पु० केरी पाक, गुड़ के रस में पकाया हुआ कच्चा आम।

प्रा० गुड़गुड़ी—स्त्री० छोटा हुक्का ।

प्रा० गुड़िया—स्त्री० लड़कियों का खिलौना । [कनकौवा ।

प्रा० गुड्डी—स्त्री० पतंग, गिड्डी,

सं० गुण—(गुण=बुलाना वा गुनना) पु० स्वभाव, विशेषण, २ हुनर, चतुराई, प्रवीणता, विद्या, ३ रस्सी, डोरी, ४ सत्त्व रज तम ये तीन गुण ५ कृपा, मिहरबानी, भला, भलाई, ६ गुना हुआ, बार ।

प्रा० गुणकरना—बोल० भला करना, भलाई करना ।

प्रा० गुणकापलटादेना— बोल० भलाई का बदला देना, भलाई के पलटे भलाई करना ।

प्रा० गुणमानना—बोल० भला मानना, अहसान मानना ।

सं० गुणक (गुण=गुना करना) कर्त० पु० वह अंक जिस से गुना किया जाय, ई मज़रूबफ़ीह ।

प्रा० गुणग्राहक—(सं० गुण=ग्राहक) वि० पु० गुण जानने वाला, गुण

सं० गुणन } (गुण=गुनना) भा० गुणना } पु० गुना करना, समझना, अभ्यासकरना ।

सं० गुणवान् } (गुण=हुनर, मतुप्=वाला) गुणवन्त } पु० गुणी, चतुर, प्रवीण, ज्ञानी ।

सं० गुणित (गुण्=गुणना) कर्म० गुणा हुआ ।

सं० गुणी (गुण) पु० गुणवान, विद्यावान, निपुण, प्रवीण, हुनरमन्द ।

सं० गुण्य (गुण=गुणना) कर्म० पु० जो अंक गुणाजाय, मज़रूब ।

प्रा० गुन (सं० गुण) पु० (गुण शब्द को देखो)

प्रा० गुनगुना—पु० थोड़ा गर्म ।

सं० गुप्त } (गुप्=छिपाना वा बचाना) गोपित } कर्म० छिपा हुआ, ढका हुआ, लुका हुआ, २ बचा हुआ, रक्षित ।

सं० गुप्ति—भा० स्त्री० रक्षण, पोशीदगी ।

प्रा० गुप्ती (सं० गुप्त) स्त्री० छिपी हुई तलवार, लाठी के भीतर छोटी तलवार ।

पु० मंत्र देने वाला, मंत्र उपदेशक, धर्म सिखानेवाला, आचार्य, उपदेशक, २ बाप, अथवा अपना और कोई बड़ा पुरुष, ३ शिक्षक, पढ़ानेवाला, ४ बृहस्पति, देवताओं का गुरु, ५ द्विमात्रिक अक्षर, दीर्घस्वर, अनुस्वार और विसर्ग वाला स्वर, संयोगी, अक्षरों के पहले का स्वर, गु० भारी, बड़ा, पूज्य, पूजनीय।

सं० गुम्फ (गुफ्=गुहना, पिरोना) भा० पु० गूथना, ग्रंथन, बाहुभूषण।

सं० गुम्फित— र्म० ग्रंथित, गुहीहुई।

सं० गुरुतर— गु० अतिगरुआ।

सं० गुरुतम—गु० अत्यन्त गरुआ, बहुतही भारी।

प्रा० गुरुमुखहोना—बोल० गुरु से मंत्र लेना, किसी का चेला होना।

सं० गुरुजन (गुरु=बड़े, जन=मनुष्य) पु० बड़े लोग, बुजुर्ग लोग।

सं० गुरुत्व (गुरु) भा० पु० बोझ, भार, २ बड़ाई, गंभीरता, हिल्म, बुर्दबारी।

सं० गुरुवार (गुरु=बृहस्पति, वार=दिन) पु० बृहस्पतिवार, जुमेरात।

सं० गुर्विणी } (गुरु=भारी, अर्था-
गुर्वी } त् जिसके गर्भहो)
स्त्री० गर्भवती, गर्भिणी, हामिला।

प्रा० गलाई (सं० गोलता) भा० स्त्री० गोल [illegible] गोलापन, मुदौर।

[illegible] त्रजामन—पु० एक तरह की मिठाई, एक तरह का फल।

प्रा० गुलेल } स्त्री० एक तरह का
गुलैल } धनुष।

सं० गुल्फ—पु० पैर की गांठ, टखना।

सं० गुल्म (गुड्=रक्षा करना, लपेटना) पु० वायुगोला, प्लीहा, २ झाड़, लता, ३ ९गज ९रथ २७अश्व ४५ पदाति सेना की संख्या ४ विष्णु ५ आवरण।

सं० गुह (गुह्=ढकना) पु० निषाद, शृंगबेरपुरका राजा और श्रीरामचन्द्र का मित्र, २ कार्त्तिकेय।

प्रा० गुहना (सं० गुम्फन, गुम्फ=गूंथना) क्रि० स० गूंथना, पिरोना।

सं० गुहा (गुह्=ढकना) स्त्री० गुफा, खोह, कंदरा। [२ सहाय।

प्रा० गुहार—स्त्री० पुकार, शोर, हाहू,

सं० गुह्य (गुह्=ढकना, छिपाना) र्म० छिपाने योग्य, गुप्त, पु० शरीर के ढके हुये अंग।

सं० गुह्यक (गुह्=छिपाना) पु० कुबेर के दूत, एक प्रकार के देवता।

प्रा० गुसांई } (सं० गोस्वामी) पु०
गोसांई } मालिक, स्वामी,
२ संन्यासी।

प्रा० गूंगा—गु० मुंहबंधा, अन बोलता, मूक, मौन।

प्रा० गूंजना (सं० गुञ्जन, गुजि=शब्द करना) क्रि० अ० भिनभिनाना, २ पीछी आवाज आना,

प्रतिध्वनि होना, गूंज रहना, २ गर्जना, गुर्राना ।

प्रा० गूंझा—पु० एकतरह की मिठाई।

प्रा०गूंथना—(सं० गुम्फन, गुम्फ्=गूंथना) क्रि० स० पिरोना, लड़ियाना, गुहना ।

प्रा०गूजर—(सं० गुर्जर=गुजरात) पु० एक जाति जिस का धंधा दूध बेंचने का है, और जो गुजरात से फैली है, ग्वाला, गोप, अहीर—गूजरी =अहीरी, गोपी, गूजर की स्त्री ।

प्रा० गूजरी—स्त्री० लुगाइयों के हाथ में पहनने का एक गहना ।

सं०गूढ़—(गुह=छिपाना) पु० गहन, कठिन, २ छिपा, गुप्त ।

प्रा०गूदा—(सं०गोंद) पु० सार,भेजा।

प्रा० गूलर—पु० अंजीर, उदुम्बर, एक फल का नाम ।

सं० गृध्नु—क० पु० लोभी,लालची।

सं०गृहस्थ—(गृह=घर,स्था=ठहरना) पु० घरवाला, घरबारी, दूसरा आश्रम २ किसान ।

सं० गृहस्थाश्रम—(गृहस्थ+आश्रम) पु० गृहस्थ का धर्म अथवा काम,दूसरा आश्रम (आश्रम शब्द को देखो)।

सं०गृहागत—(गृह+आगत, आ+गम्+त) क० पु० आगन्तुक, अतिथि, महमान, पाहुन, मायुख ।

सं०गृहिणी—(गृह=घर) स्त्री० घर वाली, लुगाई, जोरू, भार्या, स्त्री, पत्नी । [गृहस्थ ।

सं०गृही—(गृह) पु० घर वाला,

सं०गृहीत—(ग्रह=लेना) स्त्री०पु० लियाहुआ, पकड़ाहुआ, स्वीकार किया हुआ, ग्रहण किया हुआ ।

प्रा० गेंडा—(सं० गण्ड) पु० एक जानवर का नाम जिस के पुट्ठों पर

सं० गेय—(गा=गाना) स्त्री० गाने योग्य।

प्रा० गेरू—(सं० गैरिक, गिरि=पहाड़) स्त्री० पहाड़ की लाल मिट्टी।

प्रा० गेरुआ—(गेरू) गु० गेरू से अथवा गेरू जैसा रंगा हुआ।

सं० गेह—(ग=गणेशजी, ईह=चाहना अर्थात् घर की नेव डालने के दिन ही से घर में गणेशजी को स्थापन करते हैं) पु० घर, मकान।

प्रा० गेहूं—(सं० गोधूम, गुध=ढकना) पु० गोहूं, एक प्रकार का अनाज, गंदुम।

प्रा० गेहुंआ / गेहुंवा (गेहूं) पु० गेहूं का रंग, २ एक प्रकार की घास, गु० गेहूं बरण, सांवला, गेहूं के रंग जैसा।

प्रा० गेवली—स्त्री० बोदी, फूहड़, लुथरी, देसलीका।

प्रा० गैया / गइया (सं० गौ, गम्=जाना) स्त्री० गाय।

प्रा० गैल—पु० रस्ता, मार्ग, पैंड़ा, बाट।

सं० गो—(गम्=जाना) पु० स्त्री० गाय, गैया, धेनु, २ स्वर्ग, ३ किरण, ४ पृथ्वी, धरती, ५ पानी, ६ वाणी, बोली, ७ इन्द्रिय, ८ स्वर्ग, किरण ९ वज्र।

प्रा० गोई—(सं० गुप्त) गु० छिपा हुआ, गुप्त, क्रि० स० छिपाया।

सं० गोकर्ण—पु० पुरुषविशेष, मृग

सं० गोकुल—(गो=गाय, कुल=समूह वा घर) पु० व्रज, मथुरा के पास एक गांव जहां नंद जी रहते थे और जहां श्रीकृष्ण ने अपना बालपन बिताया, श्रीकृष्ण का जन्मस्थान, २ गायों का समूह, ३ गायों के रहने की जगह।

प्रा० गोखरू—(सं० गोखुर, गो=गाय, खु=खुर) पु० एक पौधे का नाम, २ एक प्रकार का गहना।

सं० गोचर—(गो=इन्द्रिय, चर=चलना जिसमें इन्द्रियां जाती हैं) पु० इंद्रियों के विषय, जैसे रूप, रस, गन्ध, शब्द और स्पर्श, गु० जो इंद्रियों से जाना जाय।

प्रा० गोट (सं० गुटिका) स्त्री० चौपड़ वा शतरंज की गोटी।

प्रा० गोट—स्त्री० संजाफ, कोर।

प्रा० गोटा—पु० सोना या चांदी के बुने हुए तार, किनारी, तागतोड़।

प्रा० गोटी (सं० गुटिका) स्त्री० शीतला का दाग, चेचक का दाग।

प्रा० गोड—पु० पांव, पैर, पिंडली, टांग।

प्रा० गोड़ना—क्रि० स० खोदना, [खुर्चना।

प्रा० गोण—(सं० गोणी, गुण=बढ़ा-

ना) स्त्री० थैला, बोरा, अनाज डालने का थैला । [जात, कुल ।

प्रा० गोत—(सं० गोत्र) पु० वंश,

सं० गोतम—पु० एक ऋषि का नाम, जिसने न्यायशास्त्र बनाया ।

सं० गोतमनारी—स्त्री० गोतम की स्त्री, अहल्या ।

प्रा० गोतिया } (गोत पु० जातभाई
गोती } सम्बन्धी, कुटुम्बी ।

सं० गोत्र—(गो=पृथ्वी, त्रै=बचाना) पु० गोत, कुल, वंश, जाति २ पहाड़ ।

सं० गोत्रज (गोत्र=गोत, जन=पैदा होना) पु० गोतिया, गोती, एक गोत का, संबंधी ।

सं० गोतीत—(गो=इंद्रिय, अतीत=परे) पु० जो इंद्रियों से नहीं देखा-जाय, अगोचर ।

प्रा० गोद } (सं० क्रोड़) स्त्री० कँक-
गोदी } वार ।

स्त्री० एक नदी का नाम जो दक्षिण में है ।

सं० गोधन—(गो+धन) पु० गौरूपधन

सं० गोधूम—पु० गेहूं ।

सं० गोधूलि—(गो=गाय, धूलि, रज, अर्थात् जिस समय जंगल से शहर में आने से गायों के पैर से रज उड़ती है) स्त्री० संध्या, सायंकाल, सूर्य के अस्त होने का समय ।

प्रा० गोना } (सं० गोपन) क्रि० स०
गोवना } छिपाना ।

सं० गोप—(गो=गाय, पा=पालना) पु० ग्वाला, अहीर, घोसी ।

प्रा० गोप—पु० गले में पहनने का एक गहना ।

सं० गोपन—(गुप=छिपाना, बचाना) पु० छिपाव, लुकाव, दुराव, बचाव ।

सं० गोपनीय (गुप=छिपाना) वि० छिपाने योग्य, गुप्त ।

प्रा० गोबरगणेश—गु०मोटा, स्थूल।

प्रा० गोभी—स्त्री० एक तरकारी और पौधे का नाम।

सं० गोमती—(गो=गाय, वा पानी, मती=वाली) स्त्री०एकनदीकानाम।

सं०गोमय—(गो=गाय) पु०गोबर।

सं०गोमायु—(गो=बुरी वाणी, मा =फेंकना, वा शब्द करना) पु० सियाल, गीदड़, शृगाल।

सं०गोमुखी—(गो=गाय, मुख=मुंह, जिसका मुंह गाय कैसा है) स्त्री० बनात की बनी हुई थैली जिसमें हिंदू लोग माला डालकर जप करते हैं, २ हिमालय पहाड़में एक गुफा जहां से गङ्गा निकली हैं, गङ्गोत्तरी।

सं०गोमेध—(गो=गाय, मेध=यज्ञ) पु० गाय की बली, गोवध यज्ञ।

सं०गोरस—(गो+रस) पु०दूध दही मट्ठा आदि। [श्वेत, गौर।

प्रा०गोरा—(सं० गौर) गु०उजला,

प्रा०गोरू—(सं० गौ) पु०बैल,बछ-ड़ा, गौ।

सं०गोलक—(गुड़+अक) पु०वि-धवासे जार पुत्र, २ कन्दुक, ३ गो-लोक, ४ गुड़, ५ कलश घड़ा जिस में महसूल के रुपये पैसे डाले जाते हैं ६ नेत्रस्थान।

प्रा०गोला—(सं० गोल, गुड़=बचा-ना) पु० घेरा, मंडल, वृत्त, २ तोप का गोला, लोहे का गोल गोल पिंडा, ३ नारियल का गूदा, ४ अनाज रखनेका कोठा, खत्ता, अनाजकीमंडी।

प्रा०गोलाकार—(गोल+आकार) पु० गोल रूप। [गोला।

प्रा०गोली—(सं० गोल) स्त्री० छोटा

प्रा० गोलीमारना—बोल० गोली चलाना, बंदूक चलाना, बंदूक छो ड़ना मारना।

सं० गोवर्द्धन—(गो=गाय, वर्द्धन= बढ़ाने वाला) पु० वृन्दावन में एक पहाड़ है जिस को जब इन्द्र ने कोप कर के मूसला धार मेह बरषाया था तब श्री कृष्ण ने सब व्रज वा-सियों को बचाने के लिये अपनी छंगुनी अंगुली पर उठाया था।

सं०गोविंद— (गो=वेद की भाषा, विद्=जाना, अर्थात् जो वेद से जाने जाते हैं अथवा गो=गाय, विद्=पा-ना अथवा गो=स्वर्ग, विद्=पाना अर्थात् जिस की भक्ति करने से स्वर्ग पाते हैं) पु० श्रीकृष्ण का नाम, विष्णु, भगवान्, वेद लभ्य।

सं०गोशाला— (गो=गाय, शाला= जगह) स्त्री० गाय बांधने की जगह, खड़क, गाय का घर, गाय का बाड़ा।

सं० गोष्ठ—(गो=गाय, स्था=ठहरना) पु० गोशाला, गाय का बाड़ा ।

सं० गोष्ठी (गो=बोली, स्था=ठहरना, अर्थात् जहां बहुत बात चीत होती है) स्त्री० सभा ।

प्रा० गोसैंयां } (सं० गो=स्वामी) गुसैंयां } पु० ईश्वर, परमेश्वर ।

सं० गोस्वामी—(गो=स्वर्ग, वा इंद्रिय वा गाय, स्वामी=मालिक) पु० ईश्वर, २ गुरु, महन्त, ३ गुसांई ।

प्रा० गोह—(सं० गोधा, गुध्=ढकना) पु० बिसखपरा, टिकटिर्रा ।

प्रा० गोहार—पु० हुल्लड़, रौला ।

प्रा० गोहूं—(सं० गोधूम) पु० गेहूं ।

प्रा० गौं—पु० अवसर, सुभीता, अवकाश, दांव, घात ।

सं० गौड़—पु० मध्य बंगाला २ एक पुराने शहर का नाम जो पहले बंगाले की राजधानी था, ३ ब्राह्मणों की एक जात । [मदिरा ।

सं० गौड़ी—(गुड़) स्त्री० गुड़ की बनी हुई

सं० गौण—भा० पु० अमुख्य, जो प्रधान नहीं ।

अर्थात् जिस में मन जाता है) गु० गोरा, श्वेत, उजला ।

सं० गौरव—(गुरु=बड़ा) भा० पु० बड़ाई, गुरुता, मान ।

प्रा० गौरिया—स्त्री० चिड़िया ।

सं० गौरी (गौर) स्त्री० पार्वती, गिरिजा, २ आठ बरस तक की कन्या, ३ एक रागिणी का नाम, ४ गोरेरंग की, ५ तुलसी ६ गोरोचन ।

सं० गौरीश—(गौरी=पार्वती, ईश=पति) पु० महादेव, शिव ।

प्रा० ग्यारह } (सं० एकादश) गु० इग्यारह } ग्यारह, एकादश, ११ ।

सं० ग्रथित—(ग्रन्थ्=गूंथना) स्त्री० गुंथा हुआ, बंधा हुआ, पिरोया हुआ, मुसल्सिल ।

सं० ग्रन्थ—(ग्रन्थ्=जोड़ना, इकट्ठा करना) पु० पुस्तक, शास्त्र, २ गुरु नानक की बनाई हुई सिक्खों की पुस्तक ।

सं० ग्रन्थकर्त्ता } (ग्रन्थ=शास्त्र, कर्त्ता वा कार=करने-ग्रन्थकार }

सं० ग्रह—(ग्रह्=लेना) पु० सूर्य्य, चांद, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनीचर, राहु और केतु, ये नवग्रह, नौग्रह, २ घर, ग्रहदशा=शनीचरी, बुरे दिन, ग्रहपीड़ा।

सं०ग्रहण—(ग्रह्=लेना) पु० लेना, पकड़ना, २ गहन, सूर्य्य और चांदको राहु के ग्रसन का समय—सूर्य्य और चांदके बीच मे धरती के आने से जब धरती की छाया चांदमें पड़तीहै तब चन्द्रग्रहण होता है, और जब धरती और सूर्य्य के बीच में चांद आ जाता है तब उसको सूर्य्य ग्रहण कहते हैं।

सं०ग्राम—(ग्रस्=खाना, अर्थात् जहां खाने पीने के लिये कुछ मिले) पु० गांव, बस्ती, खेड़ा, पुरा, २ समूह, बहुतायत।

सं०ग्राम्य—(ग्राम=गांव) गु० गांव का वासी, गंवार, असभ्य, मूर्ख, ग्राम्य भाषा—गंवारू बोल चाल, गांव की बोली।

सं०ग्रास—(ग्रस्=खाना) पु० कवल, कौर, कवा, लुक़मा।

सं० ग्राह—(ग्रह्=लेना) पु० हांगर, मगर मच्छ, घड़ियाल, कुम्हीर।

सं०ग्राहक—(ग्रह्=लेना) क०पु० लेने वाला, मोल लेनेवाला, गाहक, खरीददार। [दार।

सं० ग्राही—क०पु० लेनेवाला खरीद

सं०ग्राह्य-(ग्रह्=लेना) र्म्म० लेनेयोग्य, ग्रहण करने योग्य।

सं०ग्रीवा-(गृ=निगलना) स्त्री० गर दन, गला, कंठ।

सं०ग्रीष्म-(ग्रस्=खाना, वा पकड़ना) स्त्री० गर्मी की ऋतु (ऋतु शब्द को देखो)।

सं०ग्लानि-(ग्लै=मलीन होना, वा हर्ष का नाश करना) स्त्री० घिन, नफरत, घृणा, २ थकावट, मांदगी।

प्रा० ग्वाल } ग्वाला } (सं० गोपाल) पु० अहीर, गोप।

प्रा० ग्वालिन (ग्वाल) स्त्री० गोपी, अहीरी।

प्रा० ग्वैंड़ } ग्वैंडे } क्रि० वि० पास, समीप, निकट।

प्रा० ग्वैंडा—पु० नगर का आसपास।

सं० ग्लौ—पु० प्रकाश, कपूर, चन्द्रमा, हर्ष, आनन्द।

—:०:—

घ

सं०घ-पु० घंटा, २घर्घरशब्द ३मेघ, घाम।

प्रा०घघरा—पु० घाँघरा, लहँगा, साया।

सं० घट—(घट्=बनाना) पु० घड़ा, २ देह, कूट, कपट, कुम्भराशि।

सं० घटक—(घट्+अक) क० पु० मध्यस्थ, दलाल, बिचवैया, फलोत्पत्ति, कार्यकर्ता, योगक, मिलाने वाला।

प्रा० घट-पु० मन, जी, अंतःकरण।

सं० घटज (घट=घड़ा, जन्=पैदा होना) पु० अगस्त्यऋषि, कुंभज।

सं० घटयोनि (घट=घड़ा, योनि=पैदा होनेकी जगह) पु० अगस्त्यऋषि जो घड़े में पैदा हुआ।

प्रा० घटती (घटना) स्त्री० कमती, घटी, टोटा।

प्रा० घटना-क्रि० अ० कम होना, कमती, न्यून होना, २. योजना, हादसा, वाकिया, संयोग।

प्रा० घटाव, घटनि (घट=इकट्ठा होना) स्त्री० बादलोंकासमूह, बादलोंका उमड़ना, बादल, समूह, आडम्बर।

सं० घटाटोप (घटा=समूह, आटोप=ढकना) पु० पालकी अथवा रथके ढकनेका कपड़ा, ओहार, ओढ़ना।

प्रा० घड़घड़ाना-क्रि० अ० गर्जना, कड़कड़ाना।

प्रा० घड़ना-क्रि० स० गढ़ना, बनाना, गहना बनाना या और कोई धातु को गढ़ना।

प्रा० घड़ा (सं० घट) पु० मिट्टी का बरतन, गगरा, कलश, कुंभ।

प्रा० घड़ियाल (सं० घटिका, वा घंटी, स्त्री० घंटा, २. मगरमच्छ, कुंभीर।

प्रा० घड़ी (सं० घटी) स्त्री० साठ पल का समय, चौबीस मिनट, २. समय जानने की कल।

प्रा० घड़ीमेंतोला घड़ीमेंमाशा-कहा० यह उस आदमी के लिये बोला जाता है जिसका स्वभाव या मन घड़ी घड़ी में बदलता हो।

४ रेखागणित में ऐसी चीज़ जिस में लंबाई, चौड़ाई और मुटाई ये तीनोंपाई जायँ, गु० ठोस, दृढ़, निबिड़, गहरा, घना ।

सं० घनघोर (घन=बादल, घोर=डरावना) पु० गहरा बादल, घटा, घनगर्ज, डरावना शब्द ।

सं० घननाद (घन=बादल, नाद=शब्द) पु० रावण का बेटा, मेघनाद, इन्द्रजित् ।

सं० घनमूल (घन+मूल) पु० घन का मूल, जिस संख्या का धन किया गया, जैसे २७ का घनमूल ३ ।

सं० घनरस-पु० सघन, गोंद, अवलेह, द्रव, गुर्च, कपूर, जल, सिद्धरस ।

सं० घनश्याम (घन=बादल, श्याम=काला) पु० श्रीकृष्ण, २ काली घटा, गु० बादल जैसा काला ।

सं० घनसार-पु० कपूर, पारा, जल ।

प्रा० घना (सं० घन) गु० गहरा, सघन, २ बहुत, ढेर ।

प्रा० घनेरा } घनेरी } (सं० घन) गु० बहुत, घनेरी, अधिक, गुंजान, बहुतघनी ।

प्रा० घबराना-क्रि० अ० व्याकुल होना, हड़बड़ाना ।

प्रा० घबराहट (घबराना) भा० स्त्री० हड़बड़ी, झंझट, धड़का, व्याकुलता, बेकली, उलझेड़ा, हलचल ।

प्रा० घबरि-पु० गुच्छा ।

प्रा० घमंड-पु० अहंकार, गर्व, अभिमान, दर्प, ग़रूर ।

प्रा० घमंडी-गु० अभिमानी ।

प्रा० घमसान (सं० घोरश्मशान) पु० लड़ाई, युद्ध, संग्राम, बड़ीलड़ाई ।

प्रा० घमोई-स्त्री० नरसल, नरकट बेत, सरकंडा, नल ।

प्रा० घर (सं० गृह) पु० मकान, रहने की जगह, बास, बासा, डेरा, २ खाना, खन ।

प्रा० घरघालना-बोल० उजाड़ना, नाश करना, घर नाश करना ।

प्रा० घरचलाना-बोल० घरकाखर्च चलाना, घरका काम चलाना ।

प्रा० घरजाना-बोल० घरका नाश होना, उजड़ना, बिगड़ना ।

प्रा० घरडुबोना-बोल० किसी का घर बिगाड़ना, किसी के घराने का नाश करना ।

प्रा० घरडूबना-बोल० नाशहोना, घरका नाश होना, उजड़ना ।

प्रा० घरबैठना } घरबैठजाना } बोल० सर्वस्वनाश होना, सत्यनाशहो जाना, घर डूबना, घरजाना ।

प्रा० घरहोना-बोल० स्त्री और पुरुष के आपसमें प्रीति होना या मन मिलना ।

प्रा० घरणी } घरनी } (सं० गृहिणी) स्त्री० घरवाली, लुगाई, भार्या, पत्नी, स्त्री ।

प्रा० घालक-क०पु०नाशकरनेवाला।

प्रा० घालना-क्रि०स० उजाड़ना, नाशकरना, २ डालना, घुसेड़ना।

प्रा० घाला-स्त्री० नाशक्रिया।

प्रा० घाव-पु० चोट, व्रण, जखम।

सं० घास (घस्+खाना) पु० तृण, फूस, चारा, गोरू, गाय आदि का खाना।

प्रा० घिघियाना-डरसे या खुशी से बोल नहीं निकलना, २ फुसलाना, बहलाना, ३ लड़खड़ाना, तुतलाना, हकलाना, ४ लल्लोपत्तो करना, गिड़गिड़ाना, बहुतगरीबी से प्रार्थना करना, बिनती करना।

प्रा० घिघीबंधजाना- बोल० तुतलाना, हकलाना, २ मारे लाज के या डरके मुँहसे बोलनहीं निकलना।

प्रा० घिण } घिन } (सं० घृणा) स्त्री० नफरत, गलानि, अवज्ञा, घिन्ना।

प्रा० घिया- स्त्री० घियातुरई, एक तरकारी का नाम।

प्रा० घिरना- क्रि० अ० घिर जाना, बन्द होजाना, घेरे में आजाना, बादलों का उमड़ना।

प्रा० घिरनी (सं० घूर्ण=घूमना) स्त्री० चरखी, छोटा पहिया, बल विद्या में एक दल का नाम, २ रस्सी बटने की कल, ३ लोटन कबूतर, एक तरह का कबूतर।

प्रा० घिरनीखाना- बोल० लोटन खाना, गोलगोलजाना, गोलघूमना।

प्रा० घी (सं० घृत) पु० घृत, घी।

प्रा० घुंडी स्त्री० बटन, बूताम।

प्रा० घुटना-पु० ठेवना, गोड़ा, जानू।

प्रा० घुटनोंचलना- बोल० टेवने से चलना, (जैसे बालक) खिसकना।

प्रा० घुड (घोड़ा) पु० घोड़ा।

प्रा० घुडचढा- पु० घोड़े पर चढ़ने वाला, सवार।

प्रा० घुडदौड़- स्त्री घोड़ों का दौड़ना, वह जगह जहां शर्त करके दो दो आदमी घोड़ा दौड़ाते हैं।

प्रा० घुडबहल- चारपहियों का रथ जिसमें घोड़े जुतते हैं।

प्रा० घुडमुँहा- गु० जिसका मुँह घोड़े कैसा हो।

प्रा० घुडसाल पु० तबेला, अस्तबल।

सं० घुण (घुण्=घूमना) पु० एक कीड़ा जो लकड़ी को और अनाज को खाकर थोथा कर डालता है।

प्रा० घुणा (सं० घुण) गु० घुणका खाया हुआ, थोथा, पोला।

सं० घुणाक्षरन्याय (घुण+अक्षर+न्याय) पु० घुन के खाने

जो लकड़ी में कभी अक्षर का सा रूप बन जाता है तात्पर्य यह है कि कोई वस्तु अकस्मात् संयोग से प्राप्त होजाय वो इस स्थल पर कहा जाता है।

प्रा० घुप-पु० अंधेरा।

प्रा० घुमंडना-क्रि० अ० बादलों का घिरना।

प्रा० घुमाना (घूमना) क्रि० स० गोल गोल फिराना, फिराना, २ भटकाना।

प्रा० घुरकना (सं० घुर=डरना) घुरकाना क्रि० स० धमकाना, झिड़की देना, डराना।

प्रा० घुरकी (घुरकना) स्त्री धमकी, झिड़की।

प्रा० घुरनाना—क्रि० स० ग्वर्राटा मारना, नाकवजना। [जाना।

प्रा० घुसना-क्रि० अ० पैठना, भीतर

प्रा० घुंगर) पु० म्हराये हुये बाल, घूंघर) घुंघुरुये बाल, घुंघुरिये बाल।

प्रा० घूंघटकरना—बोल० ओड़नीसे मुँह ढाकना, बुर्का डालना, मुँह छिपाना, लाज करना।

प्रा० घूंघरू) (सं० घर्घरा) पु० घुंघरू) छोटी घंटी, क्षुद्रघंटिका, पांव में पहनने का एक प्रकार का गहना।

प्रा० घूंस--स्त्री० बड़ामूसा, बड़ाचूहा।

प्रा० घूंसा-पु० मुक्का, मुक्की, धप्पा, गूका।

प्रा० घूघू-पु० उल्लू एक जानवरका नाम।

प्रा० घूमघुमाला- बोल० घेरदार।

प्रा० घूमना (सं० घूर्ण=घूमना) क्रि० स० फिरना, गोल गोल फिरना, चक्कर खाना।

प्रा० सिरघूमना-बोल० सिरमें कुछ दर्द होना, सिर फिरना, सिरचकराना।

प्रा० घूरना- क्रि० स० ताड़ना, ताक लगाना, २ कोपकी आंखसे देखना, क्रोध से देखना।

सं० घृणित (घृण्+इत) म्र्म० निन्दित, अनादरित, गंदा, मकरूह ।

सं० घृत (घृ=सींचना)पु० घी,घिउ, सर्पिष् ।

सं० घृष्ट (घृष्=घिसना)म्र्म० घर्षित, घिसाहुआ ।

सं० घृष्टि (घृष्+ति) भा० पु० घिसना, मारना, शूकर, स्त्री० विष्णुक्रान्ता, शूकरी, शुअरी ।

प्रा० घेंटा- पु० सूअर का बच्चा ।

प्रा० घेगा } पु० गलगंडरोग, गले
घेघा } का रोग ।

प्रा० घेर (घेरना) पु० घेरा, मंडल ।

प्रा० घेरा (घेरना) पु० मंडल, गोलाकार, २ नाकाबंदी, छेकना, क़िलाबंदी, बेढ़, अहाता ।

प्रा० घेराडालना-बोल० चारोंओर से छेकना, घेरलेना, रोक लेना, नाकाबंदी करना, अहाताकरना ।

प्रा० घेरे में पड़ना- बोल० घिरजाना, घेरेमें आजाना, बन्द होजाना ।

प्रा० घेवर- पु० एकतरह की मिठाई ।

प्रा० घोंघा- पु० एक जानवर का नाम, शम्बूक ।

प्रा० घोंटना } क्रि० स० साफ़ कर-
घोटना } ना, चिकना करना, ओपना, रगड़ना मलना, २ पु० लोढ़ा, पत्थर जिससे चीज़ घोटी जाती है ।

प्रा० घोंसला- पु० खोंता, पखेरुओं का वासा, पखेरुओं का घर ।

प्रा० घोखना (सं० घुष्=शब्द करना क्रि० स० दोहराना, पाठ सुनाना, बराबर कहना, चिंतना, ज़ोर से बोलना ।

प्रा० घोटन-भा० घोटना, हलकरना।

प्रा० घोटा (घोटना) पु० घोटने की लकड़ी ।

प्रा० घोड़ा (सं० घोटक, घुट्=रोकना वा फिरना) पु० एक जानवर का नाम, अश्व, तुरंग, वाजि, घोटक, २ बंदूक की टोंटी ।

प्रा० घोड़े को सरपट हांकना-बोल० घोड़े को बहुत जल्दी से दौड़ाना ।

सं० घोर (घुर्=डरावना होना)गु० डरावना, भयानक, २ गहरा, पु० शिव, महादेव, २डरावनाकाम—३ ढोल का शब्द ।

सं० घोरनिद्रा (घोर=गहरी, निद्रा =नींद) स्त्री० गहरी नींद ।

सं० घोल (घुड्=रोकना) पु०मट्ठा, छांछ, मही । [बहाना,छल ।

प्रा० घोलघुमाव- पु० टालमटोल,

सं० घोष(घुष्=उच्चस्वर से बोलना)धि० पु० अहीरों का ग्राम, आभीरपल्ली, शब्द, अहीर गोपाल।

सं० घोषक-क० पु० अलापकर्ता, शब्द-

कर्त्ता, बुलानेवाला, रटनेवाला ।

सं० घोषण- भा० पु० याद करना, रटना, प्रचार करना ।

सं० घोषणपत्र-पु० एलान, इश्तिहार ।

प्रा० घोसी (सं० घोष) पु० मुसलमान ग्वाला ।

सं० घ्राण (घ्रा=सूंघना) पु० सुगन्ध, गंध, बू, बास, सूंघना, २ नाक, नासिका ।

सं० घ्राणेन्द्रिय (घ्राण+इन्द्रिय) स० स्त्री० सूंघने की इन्द्री, नाक, नासिका ।

सं० घ्रायक-भा० पु० गंधग्राहक, सूंघने वाला ।

च

प्रा० चचनाना-क्रि० अ० टीसमारना, सनसनाना, २ चनचन ऐसा शब्द करना ।

प्रा० चंडोल-पु० डोला, पालकी, डोली, चौपाला, २ एक पखेरू का नाम, ३ एक खिलौने का नाम ।

प्रा० चंदला-पु० गंजा । [याना ।

प्रा० चंदवा-पु० चांदनी, छोटासामि-

प्रा० चंदा (सं० चन्द्र) पु० चांद ।

प्रा० चंदा-पु० बाढ़, उगाही लगती, लगान, बिहरी ।

प्रा० चंदेला (सं० चंद्र) पु० राजपूतों की एक जात जो अपने तई चंद्रवंशी बतलाते हैं ।

चूर करना, टुकड़े २ करना, टूक २ करना। [कपड़ा,२ मोजा।
प्रा० चकमा-पु० एक भांति का ऊनी
प्रा० चकरबा-पु० धूमधाम, चकरग।
प्रा० चकरबामचाना--बोल०धूम धाम करना।
प्रा० चकरा-पु० दाल का बड़ा।
प्रा० चकराना-क्रि०अ० अचंभे में होना। [दासी।
प्रा० चकरानी(चाकर)स्त्री०टहलनी,
प्रा० चकला- (सं० चक्र)पु० पतुरिया का घर, वेश्यालय, २ एक भांति का कपड़ा जो रेशम और रूई से बनाया जाता है, गु० चौड़ा।
प्रा० चकला (सं०चक्रल)पु०देश का एकभाग जिसमें बहुतसे परगने होते हैं, मंडल,प्रदेश। [हाकिम।
प्रा० चकलेदार- पु० चकले का
प्रा० चकवा (सं० चक्रवाक) पु० एक पखेरू का नाम,२(सं०चक्र) भँवर।
प्रा० चकाचौंध } चकाचौंधी } स्त्री० तिरमिरी, अंधियारी।
प्रा० चकावी-स्त्री० भैंसियादाद।
सं० चकित (चक्=अचंभा करना, वा भ्रान्ति करना) पु० अचंभित, अचंभे में विस्मित, २ व्याकुल, घबरायाहुआ, डरा हुआ।
प्रा० चकोत्रा-पु०एक फलकानाम।
सं० चकोर (चक्=तृप्तहोना, प्रसन्न होना) पु० एक पखेरू का नाम जो चांद को देख कर बड़ी प्रसन्नता से आकाश में ऊंचा उड़ताहै।
प्रा० चकौंदा } चकौंड } (सं० चक्रमर्दक, चक्र=गोल २दाद, मर्दक=नाश करनेवाला) पु० एक पौधा जो दाद की दवाई में काम आता है।
प्रा० चक्का (सं०चक्र=गोल) पु०दही जमाहुआ, दूध,२गाड़ी का पहिया, ३ घेरा, गु० गोल, गाढ़ा, २ जमा हुआ (जैसे दही)।
प्रा०चक्की (सं० चक्र=गोल) स्त्री० पाट, जांता, चाकी, २ खुरिया, चपनी, घुटने की ढकनी, ३ गाज, बिजली, ४ लड़कों के एक खिलौने का नाम।
प्रा० चक्कू-पु० छुरी, चाकू।
प्रा० चक्कर-(सं० चक्र) पु० भँवर, २ बगुला, बवंडर, ३ एक गोल शस्त्र जिसको विशेष करके सिख लोग रखते हैं, ४ गोलचाल, कावा, ५ विपत्ति, जंजाल,घबराहट,६ ओर, तरफ, दिशा।
प्रा० चक्करदेना-बोल० फिराना,घु-

माना, २ ठगाना, छलना, धोखादेना।

प्रा० चक्करखाना—बोल० फिरना, घूमना, २ धोखे में आना, ठगा जाना।

प्रा० चक्करमारना—बोल० गोलगोल घुमाना, फिराना।

प्रा० घोड़ेकोचक्करदेना—बोल० कावादेना, घोड़ेको गोल २ फिराना।

सं० चक्र (कृ=करना) पु० पहिया, २ कुम्हार का चाक, ३ विष्णु का अस्त्र, ४ घेरा, वृत्त, ५ व्यूहरचना, सेना को चक्रके आकार पर सजाना, ६ हाथ में एक चिह्न जो भाग्यमानीका लक्षण है, ७ भीड़, ८ सेना, ९ प्रमंडल, देश, मुल्क, राज, १० चकवा पक्षी, चक्रीर।

प्रा० चख ⎫ (सं० चक्षु) स्त्री० आंख,
चषु ⎭ नेत्र, नयन, लोचन।

फ़ा० चखाचखी—स्त्री० बिगाड़, विरोध।

प्रा० चखाना—पु० खिलाना, चस- [का देना।

प्रा० चखना ⎫ (सं० चषण, चष=
चाखना ⎬ खाना) क्रि० स० स्वा-
चीखना ⎭ द लेना, रसलेना।

प्रा० चङ्गा—पु० अच्छा, नीरोग, सुखी।

प्रा० चचेरा (चचा) पु० चचा का, जैसे चचेराभाई=चचेका बेटा भाई, चचेरीबहन=चचे कीबेटी बहन।

प्रा० चचोरना—क्रि० स० चूसना, तोड़ चूसना, निचोड़ना। [भ्रमर।

सं० चञ्चरीक (चर=जाना) पु० भौंरा,

प्रा० चटदे तोड़ना } बोल० चट-
चटसे तोड़ना } काना, तड़-
काना, तोड़ना।

प्रा० चट(चाट)स्त्री० चाट,स्वाद,खाना।

प्रा० चटकरना—बोल० खाजाना,
उड़ादेना। [खायाजाना।

प्रा० चटहोना—बोल० पूरा होना,

प्रा० चटक—स्त्री० कड़क, कड़ाका,
२ फुरती, जल्दी, ३ चमक, भड़क,
शोभा, पियरामूल।

सं० चटक (चट्=तोड़ना)पु०चिड़ा,
गौरैया।

प्रा० चटकना } क्रि० अ० तड़कना
चटखना } (जैसे कोयले अ-
थवा जलती हुई लकड़ी का) फ-
टना, टूटना, चिरना। [ड़कीला।

प्रा० चटकीला—गु०चमकीला, भ-

प्रा० चटपट (सं० झटिति=जल्दी,
पट्=जाना)क्रि० वि० झटपट,तुरंत।

प्रा० चटपटाना (चटपट) क्रि०
अ० घबराना, व्याकुलहोना, फड़-
फड़ाना, तड़फड़ाना।

प्रा० चटपटी (चटपट)स्त्री०उतावली,
जल्दी, हड़बड़ी, घबराहट।

प्रा० चटशाल (सं०चटु=शाला वा
छात्रशाला, चटु वा छात्र=लड़का,
शाला=जगह) स्त्री० पाठशाला,
पढ़ने की जगह, मदर्सा।

प्रा० चटाई—स्त्री० बोरिया पाटी।

प्रा० चटाका—पु०धड़ाका,कड़ाका।

प्रा० चटान } स्त्री० शिला, पत्थर,
चट्टान } पाषाण।

प्रा० चटिया (सं० छात्र) पु० वि
द्यार्थी,शिष्य,छात्र, चेला, शागिर्द।

सं० चटु—पु० सुन्दर, मनोहर, प्रिय,
चीखना, गर्जना, चिल्लाना, चिग्घा-
रना, पेट, तोंद।

सं० चटुल—पु० मनोहर, सुन्दर,
प्रिय, रूपवान्, पूर्ण, प्रसन्न, क
म्पित, पथिक, स्त्री०ज्योति, विद्युत्,
बिजली।

प्रा० चटोरा (चाटना) गु० पेटू,
जीभचला, खाऊ।

प्रा० चट्टा (सं० चटु, वा छात्र)पु०
विद्यार्थी, पाठशाला का लड़का,
स्कूल का लड़का। [फटना।

प्रा०चड़चड़ाना—क्रि०अ०तड़कना,

सं० चड (चड्=कोप करना) पु०
क्रोध, कोप गु० क्रोधी गुस्सेवर।

प्रा० चढ़ती (चढ़ना) स्त्री० बढ़ती,
लाभ।

प्रा० चढ़ना—क्रि० अ०ऊपर जाना,
२ आगे बढ़ना, धावा मारना,
चढ़ाई करना, ३ सवार होना।

प्रा० चढ़न्दार—पु०चढ़नेवाला, चढ़
नेहार, वा कर्णधार।

प्रा० चढ़ाई (चढ़ना) भा० स्त्री०

धावा, चढ़ाव, हल्ला, हमला, २ चढ़ने का भाड़ा।

प्रा० चढ़ाना—क्रि० स० सवार करना, २ भेंट करना, बलिदान कराना, ३ तार चढ़ाना, डोरी लगाना, ४ ढोल कसना, ५ ऊंचा करना, खड़ा करना, ६ कपड़े पर रंग चढ़ाना।

प्रा० चढ़ाव (चढ़ना) भा० पु० ऊँचाव, ऊँचाई, उठाव, पहाड़ में ऊपर रस्ता, २ चढ़ाई, धावा, ३ बढ़ती, ४ समुद्र की बाढ़। [छूट।

सं० चणक (चण=देना) पु० चना,

सं० चण्ड (चडि=क्रोध करना) गु० डरावना, भयानक, क्रोधित, तेज, उग्र, तीक्ष्ण, तीव्र, तीखा, गर्म, पु० एक दैत्य का नाम।

सं० चण्डाल / चाण्डाल (चडि=क्रोध करना) पु० नीच, कुजात, नीच जात का मनुष्य जिसका बाप शूद्र और मा ब्राह्मणी हो, वर्णसंकर, दुष्ट, निठुर, निर्दयी, पापी, दुराचारी।

सं० चण्डु (चण्ड्+उ) पु० मूषक, मर्कट, छोटा बन्दर।

सं० चतुर (चत्=मांगना) गु० निपुण, प्रवीण, स्याना, सियाना, बुद्धिमान्, २ छली, कपटी, धूर्त, चालाक, नटखट।

सं० चतुर्—(चत=मांगना) गु० चार।

सं० चतुरस्र-गु० चौखूंटा, चौकोण।

प्रा० चतुर-पु० बुद्धिमान्, होशियार।

प्रा० चतुराई (सं० चतुरता) भा० स्त्री० निपुणता, प्रवीणता, स्यानपन, बुद्धिमानी, २ धूर्तता, कपट, नटखटी, चालाकी।

सं० चतुरंगिनी (चतुर्=चार, अङ्गिनी=अंगवाली) स्त्री० सेना जिसमें हाथी, रथ, घोड़े और पैदल चारों हों।

सं० चतुरानन—(चतुर=चार, आनन=मुंह) पु० ब्रह्मा।

सं० चतुर्थ—(चतुर=चार) गु० चौथा।

सं० चतुर्दशी—(चतुर=चार, दश—

सं० चतुर्वर्ग (चतुर्=चार, वर्ग=समूह) पु० धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष।

सं० चतुल–पु० विश्वस्त, विश्वासी, निष्कपट, मनोहर, सुन्दर।

सं० चतुष्क–स्त्री मशकहरी अर्थात् मसहरी, नदीविशेष, झील।

सं० चतुष्पद-(चतुर्=चार, पद=पांव) पु० पशु, चौपाया, मवेशी।

सं० चतुष्पदी (चतुर्=चार, पद =चरण) स्त्री० चारपदवाला छंद।

सं० चतुष्षष्टि (चतुर्=चार, षष्टि= साठ) स्त्री, चौंसठ।

प्रा० चना (सं० चणक) पु० बूट, छोला, चणा।

प्रा० चन्द–(सं० चन्द्र) पु० चांद।

सं० चन्दन–(चदि=प्रसन्नहोना) पु० एक सुगन्धित लकड़ी, मलयागिरि कासुगंधितकाठ, गन्धसार, श्रीखंड।

सं० चन्द्र–(चदि=प्रसन्न होना, वा चमकना) पु० चांद, चन्द्रमा, चन्द्र, सोम, २ कपूर।

सं० चन्द्रकला–(चन्द्र=चांद, कला= अंश) स्त्री० चांद का सोलहवां अंश, १ अमृता, २ मानदा, ३ पूषा, ४पुष्टि, ५तुष्टि, ६ रति, ७धृति, ८ शशिनी, ९ चन्द्रिका, १० कान्ति, ११ ज्योत्स्ना, १२ श्री, १३ प्रीति, १४ अङ्गदा, १५ पूषणा, १६ पूर्णा।

सं० चन्द्रगुप्त–पु० नाम राजा का महानन्द राजा का पुत्र जो मुरा नामा नाइन से उत्पन्न हुआ चाणक्य ब्राह्मण ने महानन्द को पुत्रों सहित नाश करके चन्द्रगुप्त को राज्य गद्दी दी।

सं० चन्द्रमणि–(चन्द्र=चांद, मणि =रत्न) स्त्री० चन्द्रकांति, मणि एक रत्न का नाम।

सं० चन्द्रमण्डल-(चन्द्र=चांद, मंडल =घेरा) पु० चांदकाघेरा, चन्द्रलोक

सं० चन्द्रमा-(चन्द्र=कपूर, मा=माप वा बराबर करना अर्थात् जो अ प्रकाशसे सब चीजोंको कपूरकेब बर साफ कर दिखाता है) पु० चां २ एक ऋषि का नाम।

सं० चन्द्रमुखी }
प्रा० चन्दमुखी } (चन्द्र=चांद, मुख=मुँह) स्त्री जिस स्त्री का मुँह चांद कैसा हो, च वदनी, सुमुखी, सुन्दरी।

सं० चन्द्रमौलि-(चन्द्र=चांद, मौलि शिर वा शिखा) पु० शिव, महादे

सं० चन्द्रलौह-पु० चांदी, रांगा, फू

सं० चन्द्रवंशी-(चन्द्र=चांद, वंश घराना) पु० क्षत्रियों की एक ज जो अपने को चांदसे पैदा हुये क लाते हैं पुरूरवा से हुआ वंश।

सं० चन्द्रवदनी }
प्रा० चन्दवदनी } (चन्द्र=चांद, वदन=मुँह) स्त्री चन्दमुखी, सुन्दरी।

सं० चन्द्रशाला (चन्द्र+शाला) स्त्री० अट्टालिका, अटारी, गृहशिखर ।

सं० चन्द्रशेखर (चन्द्र=चांद, शेखर=शिरकागहना) पु० शिव, महादेव।

सं० चन्द्रहार (चन्द्र=चांद, हार=माला) पु० गलेमें पहननेकी माला।

सं० चन्द्रहास (चन्द्र=चांद, हास=चमक, हस्=हसना अर्थात् जिसकी चमक चांद कैसी हो) स्त्री० तलवार, खड्ग, चमेली, कुमुदिनी ।

सं० चन्द्रायत (चन्द्र+आयत) पु० गृहशिखर, छत, चांदनी छप्पर ।

सं० चन्द्रापीड़—पु० शिव, महादेव ।

सं० चन्द्रिका (चन्द्र) स्त्री० चांदनी, चांद का उजाला, चांद की जोत, कौमुदी, ज्योति, प्रकाश ।

सं० चन्द्रिकापायिन (चन्द्रिका+पायिन) स० पु० चकोर, पक्षि ।

सं० चन्द्रिल—पु० शिव । [गावना ।

प्रा० चपकन—स्त्री० एक तरहका दो-

प्रा० चपनी—स्त्री० ढकनी, ढपनी, घुटने की ढकनी ।

प्रा० चपरासी--पु० चपरास रखने वाला, नौकर ।

सं० चपरि—स्त्री० तुरंत, शीघ्र ।

सं० चपल (चप=जाना) गु० चंचल, उतावला ।

सं० चपला (चपल) स्त्री० लक्ष्मी, २ बिजली, चंचला ।

प्रा० चपाती-स्त्री० रोटी, फुलका ।

प्रा० चपाना--क्रि० स० दबाना, दाबना, २ लजाना ।

सं० चपेट
चपेटिका } (चप=जाना) स्त्री० धप्पा, थप्पड़, धौल, हथेली ।

प्रा० चप्पा--पु० चार अंगुलका नाप ।

प्रा० चबाना (सं० चर्वण) क्रि० स० चाबना, दांत से कुचलना, २ दांत काटना ।

प्रा० चबूतरा--पु० चौतरा, अटारी, चौपाड़, बैठक, २ चौकी, ३ थाना ।

दिन को नहीं दीखता, गादुर, चमचड़ख।

प्रा० चमचमाहट--भा० स्त्री० चमकाहट, चमक, भड़क। [खाल।

प्रा० चमड़ा (सं० चर्म) पु० चाम,

प्रा० चमड़ा उधेड़ना / चमड़ा छुड़ाना / चमड़ानिकालना } बोल० खाल खींचना, चमड़ा खींचना।

सं० चमत्कार (चमत्=अचंभा, कार=करना) पु० अचंभा, विस्मय, २प्रकाश।

सं० चमर / चामर } (चम्=खाना) पु० चमरीगाय, सुरह गाय, २ चँवर, सुरहगायकी पूंछ।

प्रा० चमार (सं० चर्मकार) पु० मोची, जूता बनानेवाला।

सं० चमस--पु० चमचा, चम्मच।

सं० चमू (चम्=खाना) स्त्री० सेना, कटक, दल, फौज जिस में ७२९ हाथी, ७२९ रथ, २१८७ घोड़े और ३६४५ पैदल हों।

प्रा० चमेटा (सं० चपेट) पु० थप्पड़, धप्पा, चपेटा।

प्रा० चमोटा, पु० / चमोटीस्त्री० } (सं० चर्म्म) चमड़ेकी पट्टी जिसपर उस्तरा तेज़ करते हैं।

सं० चम्पक (चपि=जाना) पु० चंपा जिसके फूल पीले रंग के औ सुगंधित होते हैं।

प्रा० चम्पत--क्रि० वि० छिपा, अंतर्धान, अदृश्य।

प्रा० चम्पतहोना--बोल० छिपजाना, भाग जाना, चला जाना अलख होना।

प्रा० चम्पा (सं० चम्पक) पु० एक पेड़ का नाम जिसके फूल पीले और सुगंधित होते हैं।

प्रा० चम्पाकली (चम्पा+कली) स्त्री० एक प्रकार की माला जिसका हार एक दाना चंपा की कली सा होता है।

प्रा० चम्बू--पु० एक तरह का पानी का बरतन। [फूल

प्रा० चम्बेली--स्त्री० एक प्रकार का

सं० चय (चि=इकट्ठा करना) पु० ढेर, समूह, राशि।

सं० चर (चर्=चलना, खाना) पु० दूत, धावन, २ खाना, भक्षण, गु० चलने योग्य, चलनेवाला, जङ्गम।

सं० चरक (चर्=जाना, वा खाना) क० पु० वैद्यकशास्त्रका बनानेवाला, २ वैद्यकशास्त्रका नाम, ३ कोढ़, ४ मुखविर।

फ़ा० चरख़ा (पु० सूत कातनेकी कल) रहँटा, घिरना।

फ़ा० चरख़ी--स्त्री० घिरनी, २ रहँटी

प्रा० चरचना (सं० चर्चा) क्रि० स० शरीर में चन्दन लगाना, चंदन से शरीर को लेपना।

सं० चरण (चर्=चलना) स० पु० पांव, पैर, २ श्लोक का एक पद, मिसरा।

सं० चरणायुध (चरण+आयुध, युध्=लड़ना) पु० मुर्ग, कुक्कुट।

प्रा० चरणपीठ (सं० चरणपृष्ठ, चरण=पांव, पृष्ठ=पीठ) स्त्री० खड़ाऊं।

सं० चरणामृत—(चरण=पांव, अमृत=स्वर्गी) पु० देवता की मूरत अथवा साधुजन के पैरों का पानी, पानी जिससे देवता की मूरत वा साधुजन के पैर धोये हों, चरणोदक।

सं० चरणारविन्द—(चरण=पांव, अरविन्द=कमल) पु० चरणकमल, कमल जैसे पांव, सुन्दर चरण।

प्रा० चरस— पु० एक नशेकी चीज़, २ चमड़े की मोट, चमड़े का बड़ा डोल।

प्रा० चरसा—पु० अधौड़ी, खाल।

प्रा० चराई—(चराना) स्त्री० चराने की मज़दूरी, चरवाई।

सं० चराचर—(चर=चलनेवाला, अचर=नहीं चलने वाला) पु० जीव जन्तु वृक्ष पत्थर आदि सब पदार्थ जो सृष्टि में हैं, स्थावर जंगम, संसार सृष्टि।

प्रा० चराना—(चरना) क्रि० स० चुगाना, घास खिलाना, खिलाना।

सं० चरित } (चर्=जाना) पु० कथा चरित्र } वार्ता, वृत्तान्त, हाल, शील स्वभाव, चाल चलन, व्यवहार, आचार, लीला, काम।

बतकहाव, तर्क, २ पूजा, ३ शरीर में चन्दन लगाना।

सं० चर्चित(चर्चा)र्म्म० चरचाहुआ, चन्दन लगाया हुआ।

सं० चर्म्म(चर्=जाना)पु० चमड़ा, अजिन, खाल, २ ढाल।

सं० चर्म्मकार (चर्म्म=चमड़ा, कार =करनेवाला)पु० चमार, मोची।

सं० चर्म्मज(चर्म्म+जन्=पैदाहोना) पु० रुधिर, केश, बाल, चमड़े से बनी हुई।

सं० चर्वण(चर्व्=खाना)पु० चाबना, दांत से पीसना।

सं० चलचित्त (चल=चलाहुआ, चित्त=मन) गु० चंचल, चपल, स्थिर।

सं० चलत—कृ० पु० चलनशील, चलनेहार।

सं० चलन(चल्=चलना) भा० पु० चलना, जाना, चाल, गति, २ रीति, व्यवहार, चालचलन, ३ रिवाज, प्रचार, चाल, चर्चा, गु० प्रचलित।

प्रा० चलना (सं० चलन) क्रि० अ० जाना, गमन करना, आगे बढ़ना, हिलना, सरकना, फिरना, २ प्रचलित होना, रिवाज होना, प्रचार होना, फैलना (जैसे सिक्का) ३ छूटना (जैसे बंदूक) ४ बहना (जैसे हवा) ५ व्यवहार होना।

प्रा० चलदेना--बोल० कूच करना, भागजाना, चलाजाना।

प्रा० चलनिकलना--बोल० निकल चलना, हद्द से बाहर निकलना, खराब अथवा व्यसनी होना।

प्रा० चलेचलना-बोल० आगेबढ़ना, चले जाना।

प्रा० चलनी(सं० चालनी, चल्=चलना) स्त्री० पीतल की लोहे की अथवा चमड़े की बनी हुई एक चीज़ जिसमें बहुत छेद होते हैं और उस में आटा छानते हैं।

सं० चलपूंजी--स्त्री० जायदाद मन्कूला, जो चीज़ एक जगह से दूसरी जगह चल सके।

सं० चलित (चल्=चलना) गु० चला हुआ, प्रचलित, व्यवहारिक, हिलता हुआ।

प्रा० चवाई (सं० चर्वणावादी) पु० निंदक, लाबालुतरा, चुगलीखोर।

प्रा० चवाव (सं० चर्वणावाद) पु० निंदा, चुगली, झूठा कलंक, लिप्त।

सं० चष (चष्=भक्षण, वध) पु० भोजन, खाना, मारण, मारना, क्लेश।

सं० चषक (चष्+अक) कृ० पु० जलपात्र, आबखोरा, पानपात्र, मदिरापात्र, मयजाम, शहद, मदिरा।

सं० चपाति--पु० भोजन, मारण, स्त्री० मूर्च्छा, मदान्धता।

बतकहाव, तर्क, २ पूजा, ३ शरीर में चन्दन लगाना।
सं० चर्चित(चर्चा)म्म०चरचाहुआ, चन्दन लगाया हुआ।
सं० चर्म्म(चर्=जाना)पु०चमड़ा, अजिन, खाल, २ ढाल।
सं० चर्म्मकार(चर्म्म=चमड़ा, कार =करनेवाला)पु० चमार, मोची।
सं०चर्म्मज(चर्म्म+जन्=पैदाहोना) पु० रुधिर, केश, बाल, चमड़े से बनी हुई।
सं० चर्वण(चर्व्=खाना)पु० चाबना, दांत से पीसना।
सं० चलचित्त (चल=चलाहुआ, चित्त=मन) गु० चंचल, चपल, स्थिर।
सं० चलत—क्र० पु० चलन शील, चलनेहार।
सं०चलन(चल्=चलना) भा० पु० चलना, जाना, चाल, गति, २ रीति, व्यवहार, चालचलन, ३ रिवाज, प्रचार, चाल, चर्चा, गु० प्रचलित।
प्रा० चलना (सं० चलन) क्रि० अ० जाना, गमन करना, आगे बढ़ना, हिलना, सरकना, फिरना, २ प्रचलित होना, रिवाज होना, प्रचार होना, फैलना (जैसे सिक्का) ३ छूटना (जैसे बंदूक) ४ बहना (जैसे हवा) ५ व्यवहार होना।
प्रा० चलदेना--बोल० कूच करना, भागजाना, चलाजाना।
प्रा०चलनिकलना--बोल०निकल चलना, हद्द से बाहर निकलना, खराब अथवा व्यसनी होना।
प्रा०चलेचलना-बोल० आगेबढ़ना, चले जाना।
प्रा० चलनी(सं० चालनी, चल्=चलना) स्त्री० पीतल की लोहे की अथवा चमड़े की बनी हुई एक चीज जिसमें बहुत छेद होते हैं और उस में आटा छानते हैं।
सं०चलपूंजी--स्त्री० जायदाद मन्कूला, जो चीज़ एक जगह से दूसरी जगह चल सके।
सं० चलित (चल्=चलना) गु० चला हुआ, प्रचलित, व्यवहारिक, हिलता हुआ।
प्रा० चवाई (सं० चर्वणावादी) पु० निंदक, लावालुतरा, चुग़लीखोर।
प्रा० चवाव (सं० चर्वणावाद) पु० निंदा, चुग़ली, झूठा कलंक, लिम।
सं० चष (चष्=भक्षण, वध) पु० भोजन, खाना, मारण, मारना, क्लेश।
सं० चषक (चष्+अक) क० पु० जलपात्र, आवखोरा, पानपात्र, मदिरापात्र, मयजाम, शहद, मदिरा।
सं० चपाति--पु० भोजन, मारण, स्त्री० मूर्च्छा, मदान्धता।

सं० **चषाल** पु० यज्ञके खंभा का कड़ा, यूप कटक, होम कुण्ड, कुशा,

प्रा० **चसका**-पु० प्यार, लालसा, चाट, स्वाद, चाल, टेव।

सं० **चह** (चह=छलना, मतारण) पु० अहंकार, पाखण्ड, परिकल्कन, गु० अहंकारी, दम्भकृत, छली।

प्रा० **चहकना**-क्रि० अ० चहचहाना, चिड़ियों का बोलना।

प्रा० **चहचहा**-गु० गहरा रंगाहुआ,

प्रा० **चहचहाना**-क्रि० अ० पखेरुओं का बोलना।

प्रा० **चहलपहल**-स्त्री० आनन्द, हँसी खुशी, चुहुल, रंग रस।

प्रा० **चहला** } पु० कीचड़, काँदा,
चिहला } पांका, पंक, दलदल

प्रा० **चहुं** } (सं० चतुर) गु० चार,
चहूं } चारों—चहुंओर=चारों तरफ, सब तरफ।

प्रा० **चहुंचक** } (सं० चतुश्चक्र, चतु
चहुंचक्र } र्=चार, चक्र=देश) क्रि० वि० चारों, ओर, सब ओर, चारों खूंट में, चहुंदिश।

प्रा० **चहुंदिस** (सं० चतुर्दिश, चतुर्=चार, दिश=ओर) क्रि० वि० सब ओर, चारों ओर, चहुं ओर, चहुं चक्र।

प्रा० **चांकी**-स्त्री० बिजली।

प्रा० **चांद** (सं० चन्द्र) पु० चन्द्रमा, चंद्र, सोम, चंद, २ एक गहने का नाम।

प्रा० **चांदरात**-स्त्री० महीने का अंत पूनों की रात।

प्रा० **चांदमारना**-बोल० निशाना-मारना।

प्रा० **चांदने खेतकिया**-बोल० चांद उगा।

प्रा० **चांदना** (सं० चान्द्र) पु० प्रकाश, ज्योति, तेज।

प्रा० **चांदनापख**-पु० उजाला पख, शुक्ल पक्ष, सुदी।

प्रा० **चांदनी** (सं० चांद्री, चंद्र=चांद) स्त्री० चांदकी उजियाली चांद का प्रकाश, अँजोरी, चंद्रिका, २ एक फूल का नाम, ३ सफेद कपड़ा जो दरी पर बिछाया जाता है, ४ सफेद और चमकीली चीज़।

प्रा० **चांदनीचौक**-बोल० चौड़ा बाज़ार, वा गली, चौक।

प्रा० **चांदी** (सं० चांद) स्त्री० अच्छा रूपा, २ टटरी, टांट, खोपरी,

प्रा० **चांपना**-क्रि० स० दाबना, दबाना, ठांसना, २ जोड़ना।

फ़ा० **चा**-स्त्री० एक पौधे की पत्ती जिसको पीनेसेशरीरमेंफुर्तीरहती है।

प्रा० **चाक** (सं० चक्र) पु० कुम्हार की चक्की अथवा पहिया जिसपर बरतनबनायेजाते हैं, २ पाट, चक्की।

प्रा० चाका (सं० चक्र) पु० पहिया
प्रा० चाकी (सं० चक्र) स्त्री० चक्की जांता।
प्रा० चाचा-पु० चचा, काका।
प्रा० चाट (चाटना) स्त्री० चसका, स्वाद, रस, लालसा, उत्कण्ठा रुचि, २ स्वभाव।
प्रा० चाटना-क्रि० स० स्वादलेना लपलप खाना, चबड़चबड़ खाना
सं० चाटु-प्यारीबात, चापलोसी लल्लोपत्तो। [खुशामदी
सं० चाटुपटु-पु० भाण्ड, मशखरा,
सं० चाटु लक्ष्मी-रू० पु० खुशामदी बातैं, चिकनी चुपड़ी बातैं।
प्रा० चाड़-स्त्री० चाह, २ चोट, ३ ढेंकली, उठंगन।
सं० चाणक्य-पु० चाणक मुनि के गोत्र का, विश्व गुप्त।
सं० चाणूर-पु० कंस का प्रधान मल्ल, वड़ा पहलवान। [नीच।
सं० चाण्डाल-पु० श्वपच, डोम
सं० चातक (चत्=मांगना, अर्थात् बादलों से पानी मांगना)पु० पपीहा।
सं० चातुर (चतुर) गु० चतुर, प्रवीण, बुद्धिमान्, २ धूर्त, ३ चार।
सं० चातुरी (चातुर) स्त्री० चतुराई, निपुणता, २ धूर्तता।
[सं]० चातुर्वर्ण्य-ब्राह्मण २ क्षत्री ३ वैश्य ४ शूद्र चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं मिति गीता।
प्रा० चातृक (सं० चातक) पु० पपीहा।
सं० चान्द्रायण (चंद्र=चांद, अयन =चाल, वा चांद्र=चंद्रलोक, अय्= पाना (जिस व्रत से) पु० एक व्रत जिस मे अंधेरे पख में जब चांद की कला घटती है, हर एक दिन खाने में एक ग्रास घटाते हैं और चांदने पख में ज्यों चंद्रमा की कला बढ़ती है त्यों हर एक दिन एक एक ग्रास बढ़ाते हैं, रोज़ा कमरी।
सं० चाप (चप्=बांस अर्थात् बांस का बना हुआ, चप्=जाना) पु० धनुष्, कमान।
सं० चापखण्ड (चाप+खण्ड) धनुष् के टुकड़े।
प्रा० चापी स्त्री० दबाई।
प्रा० चाबना (सं० चर्वण) क्रि० स० चबाना, दांत से कुचलना, चिकलना।
प्रा० चाबी-स्त्री० कुंजी, ताली।
प्रा० चाम (सं० चर्म) पु० चमड़ा, खाल।
सं० चामुण्डा (चम्= खाना, वा चमू=सेना, ला=लेना अर्थात् खा जाना) स्त्री० दुर्गा, देवी, काली, योगिनी, चण्ड मुण्ड राक्षसों की मारने वाली देवी।

सं० चार (चर्=चलना) पु० दूत, जासूस । [दुगुना, ४ ।

प्रा० चार (सं० चतुर्) गु० दो का

प्रा० चारआंखें- बोल० चौनजर, मिलना, भेंट होजाना ।[ड़े टुकड़े ।

प्रा० चारटूक- बोल० टूक टूक, टुक-

प्रा० चारण (चर्=लेजाना, अर्थात् जो यश को फैलाता है) पु० भाट, यश बखाननेवाला ।

प्रा० चारा (सं० चर्=खाना) पु०प-शुओं का खाना, घास ।

सं० चारु (चर्=चलना) गु० सुन्दर, मनोहर, सुहाना, मनभावन ।

प्रा० चाल (सं० चल्=चलना)भा० स्त्री० चलना, चलन, गति, गमन, २ रीति रसम रीति भांति,ढंग,राह, ३ चालचलन ।

प्रा० चालपकड़ना- बोल०फैलना, चलना प्रचलित होना ।

प्रा० चालचलना-बोल०निबाहना, व्यवहार करना । [रीति भाँति ।

प्रा० चालढाल- बोल०चालचलन,

प्रा०चालना (सं० चालन, चल्= चलना) क्रि० स० छानना (जैसे आटा) झारना, फटकना,देखना ।

सं०चालनी (चल्=चलना) स्त्री० चलनी ।

प्रा० चालीस (सं० चत्वारिंशत्) गु० दो बीसी, ४० ।

प्रा० चाव } चाय } (सं० इच्छा) पु० ब-ड़ीचाह, उत्कण्ठा,रुचि, अभिलाष, चोंप, शौक़, २ चारअंगुल ३ एक तरह का बांस ।

प्रा० चावचोचला-बोल० प्यार, दुलार, अनुराग, प्रेम, स्नेह,किलोल ।

प्रा०चावल } चंवल } पु० एक प्रकार का अनाज ।

प्रा० चाषु (सं० चाष, चष=भक्षण करना) पु० नीलकण्ठ, कटनाश ।

प्रा० चासा- पु० किसान, जोतहा, हल चलानेवाला ।

प्रा० चाह (सं०इच्छा)स्त्री०चाहना, अभिलाष, इच्छा, प्यार, प्रेम, प्रीति, पसंद ।

प्रा० चाहना- क्रि० स० इच्छाकर-ना, मांगना, याचना, प्यार करना प्रेम करना, मानना, पसंद करना, मन में भाना, आवश्यकताहोना, प्र-योजन पड़ना ।

प्रा० चिंघाड़ (सं० चित्कार,चित् ऐ-सा शब्द कार=करना) स्त्री० हाथी का शब्द ।

प्रा०चिंघाड़मारना-बोल०चित्का-रना चिंघाड़ना, हाथी का शब्द करना ।

प्रा० चिक- पु० परदा, जवनिका, २ कमर में दर्द ।

प्रा० चिकना (सं० चिक्कण) गु०चो-

टा हुआ, साफ, २ सुन्दर, ३ चपड़ा हुआ, तिलहा, तेलसा, तेलमयं, चिक्कण, ४ निर्लज्ज, बेशरम लंपट, चंचल।

प्रा० चिकनाघड़ाबनना- बोल० किसी की कुछ शिक्षा नहीं मानना, निलज्ज होना।

प्रा० चिकनाचांदा (सं० चिक्कण चन्द्र) बोल० सुन्दर, मनोहर, सुहावना।

प्रा० चिकनाई (सं० चिक्कणता) भा० स्त्री० ओप, घोट, संवार, सफाई, चिकनाहट, २ चर्बी, ३ चंचलता, चंचलाई।

सं० चिकित्सक (कित्=इलाज करना, चंगाकरना) क० पु० वैद्य, हकीम, डाक्टर।

सं० चिकित्सा (कित्=इलाजकरना चंगाकरना) भा० स्त्री० औषधकरना, इलाज, वैदाई, रोगप्रतीकार।

सं० चिकित्सालय (चिकित्सा+आलय) धि० पु० शिफाखाना, हास्पिटल।

सं० चिकित्साशास्त्र-पु० इल्म=डाक्टरी, तिब्बत।

सं० चिकीर्षा (कृ=करना) स्त्री० करनेकी इच्छा, आकांक्षा।

सं० चिकीर्षु क० पु० आकांक्षी।

सं० चिकुर-(चि=इकट्ठा करना, या चि=ऐसा शब्द, कुर=शब्द करना) पु० बाल, केश, घूंघर।

प्रा० चिकुला= बच्चा, बालक।

प्रा० चिट- स्त्री० टुकड़ा, लीर, धज्जी।

प्रा० चिट्टा-गु० गोरा, श्वेत, सफेद, पु० रुपया, मुद्रा।

प्रा० चिट्ठी-स्त्री० पाती, पत्री, पत्रिका, खत, क़ाग़ज़।

प्रा० चिट्ठीपत्री } पु० लिखापढ़ी,
चिट्ठीपाती } चिट्ठीका आना जानाखत किताबत।

प्रा० चिड़चिड़ा-गु० खुन्साहा, झनझना, कर्कश, रिसाहा, पु० एक पेड़ का नाम।

प्रा० चिड़ना- क्रि० अ० खुनसाना झुझलाना, कुढ़ना, खिसियाना, झट क्रोध करना।

प्रा० चिड़िया } (सं० चटक) स्त्री०
चिड़ी } गौरिया, पखेरू, पक्षी।

प्रा० चिड़ीमार-पु० चिड़िया पकड़ने और मारनेवाला, बहेलिया, व्याधा।

प्रा० चित (सं० चित्त) पु० मन, बुद्धि, हृदय, अन्तःकरण, हिया, हिय, जी, सुध, स्मरण, स्मृति, याद।

प्रा० चितचाय-बोल० मनभावन जो मनको अच्छालगे।

प्रा० **चितचेता**-बोल० मनभाना,पसंद आना। [ला।

प्रा० **चितचोर**-बोल० मन हरनेवा[ला।

प्रा० **चितदेना**-बोल० ध्यानदेना, मन लगाना।

प्रा० **चितलगना**-बोल० मनोरंजन मनभावन।

प्रा० **चितलाना**-बोल० सचेत होना, तत्पर होना, मन लगाना, ध्यान देना।

प्रा० **चित**-(सं० चित्=जानना) स्त्री० चितवन, दृष्टि, दीठ, नज़र, अवलोकन, २ समझ, बूझ, बोध, ज्ञान, विचार, गु० पट, सीधा, अन्ता चित, चितांग।

प्रा० **चितकरना**-बोल० उलटाना, चित गिराना (जैसे कुश्ती में) जीतना, मात करना, हराना, परास्त करना।

प्रा० **चितकबरा** (सं० चित्र कर्बुर) गु० कबरा, रंगरंग का, चितला

प्रा० **चितरना** (सं० चित्र) क्रि०स० चीतना, रंगदेना, रंगना, चित्रकरना

प्रा० **चितला** (सं० चित्रल, चित्र=रंग, ला=लेना) गु० चितकबरा।

प्रा० **चितवन**- स्त्री० दृष्टि, नजर अवलोकन, चित, झांक, कटाक्ष।

प्रा० **चितवना** }
चितना } क्रि०स० देखना।

सं० **चिता** (चि=इकट्ठा करना) स्त्री० जगह जिसपर मुर्दा जलाया जाताहै चिताखा, मसान, मरघट।

प्रा० **चिताना** }
चितावना- } (सं० चेतन, चित् यादकरना, सोचना) क्रि०स० जताना, जतलाना, जनाना, चौकसकरना, खबरदार करना, सूचितकरना, याददिलाना, बताना।

प्रा० **चितेरा** (सं० चित्रकार) पु० लकड़ी पर अथवा दीवार पर बेल बूटे खेंचने वाला, चित्रखेंचनेवाला

सं० **चिति** स्त्री० समूह, ढेर, राशि, जमअत।

सं० **चित्त** (चित्=जानना, वा यादकरना) पु० मन, अन्तःकरण, बुद्धि, हृदय, जी, चित, ज्ञान।

सं० **चित्तताप** }
चित्तोत्ताप } पु० मनका खेद, दिलीरंज।

प्रा० **चितौनी**- स्त्री० सूचना विज्ञापन, जताना।

सं० **चित्कार**-पु० रेंकना, विलाप, चिल्लाहट, चीखमारना, चूहा, निउला, छछूंदर।

सं० **चित्र** (चित्र्=कई प्रकारकेरंगों से रँगना, वा चित=मन त्रै=रचना) पु० तसवीर, बेल बूटे, छवि, रूप, सूरत, लेख, लिपि, २ यम, गु० अद्भुत, अनोखा, रंगरंगका रंगारंग, भांति भांति का।

सं० चित्रकण्ठ (चित्र=रंगरंग का कण्ठ=गला) पु० कबूतर, कपोत।

सं० चित्रकर, चित्रकार (चित्र=तसवीर कृ=करना) पु० चितेरा, मुसव्विर।

सं० चित्रकारी (चित्रकार) स्त्री० चितेरे का काम, बेलबूटे बनाना, तसवीर बनाना, चित्र लिखना।

सं० चित्रकूट (चित्र=अनोखी, वा भांति भांति की, कूट=चोटी) पु० एक पहाड़ का नाम जो बुन्देलखंड में है जहां श्रीरामचन्द्र अपने वनवास के समय पहलेही पहल रहे थे।

सं० चित्रगुप्त (चित्र=लेख, गुप्त=बचाना वा चित्र लिखना, गुप्त छिपी हुई बात को) पु० यम का नाम, २ यमराज का लेखक जो मनुष्यों के पाप पुण्य को लिखता है, कायस्थों का पुरुखा।

सं० चित्ररेखा, चित्रलेखा (चित्र=तसवीर, लिख्=लिखना) स्त्री० ऊषा की सहेली, बाणासुरके प्रधानकूष्माण्ड की बेटी।

सं० चित्रलिखित (चित्र=तसवीर, लिखित=लिखाहुआ) सर्व० तसवीर में लिखा हुआ।

सं० चित्रविचित्र (चित्र=रंग, विचित्र=रंग रंगका) गु० रंग रंग का, नाना वर्ण का, अनेक रंग का।

सं० चित्रा (चित्र्=रंगना) स्त्री० चौदहवां नक्षत्र, २ श्रीकृष्ण की सखी।

सं० चित्राक्षी, चित्रनेत्रा, चित्रलोचना (चित्ररंग रंगकी, अक्ष, वा नेत्र, वा लोचन=आंख) स्त्री० मैना पक्षी।

सं० चित्र विद्यासार, वसूल नक्शाकशी, चित्र खींचने का मूल।

सं० चित्राङ्ग (चित्र=रंग रंग का अङ्ग शरीर) पु० चितकबरा सांप, २ एक पौधेकानाम, ३ एकप्रकारका रंग, गु० चितकबरा, चित्रित, चित्र विचित्र।

सं० चित्रिणी (चित्र्=रंगना) स्त्री० दूसरे प्रकार की स्त्री, चार प्रकार की स्त्रियों में की एक प्रकार की स्त्री, (१ पद्मिनी, २ चित्रिणी, ३ हस्तिनी, ४ शंखिनी, ये चार प्रकार की स्त्रियां होती हैं)

सं० चित्रित (चित्र्=रंगना) सर्व० रंगा रंग, रँगा हुआ, चित्र किया हुआ, नाना वर्ण का, तसवीर खिंचा हुआ, २ अद्भुत, अनोखा।

प्रा० चिथड़ा-पु० फटा कपड़ा, लत्ता गुदड़ा।

सं० चिदाकाश (चित्=चैतन्य,

आकाश अर्थात् आकाश के समान निर्विकार वा सब का आधार) पु० ब्रह्म, शुद्ध स्वरूप।

सं० **चिदात्मा**- पु० परमात्मा।

सं० **चिद्रूप** (चित्+रूप) पु० चैतन्य स्वरूप, तेजरूप।

सं० **चिदानन्द** (चित्=ज्ञान वा चैतन्य आनंद=हर्ष) पु० चैतन्य, ज्ञानानंद, परमानन्द, ब्रह्म, परमेश्वर परमात्मा।

प्रा० **चिनचिनाना**- क्रि० अ० चिल्लाना, चीखना।

सं० **चिन्तन** (चिति=याद करना, सोचना) भा० पु० याद, स्मरण, सोचना, ध्यान, चिंता, विचार।

सं० **चिन्ता** (चिति=याद करना, सोचना) भा० स्त्री० सोच, विचार भावना, ध्यान, याद, स्मरण, स्मृति २ फिक्र खटका, दुविधा, संदेह, सोच, डर।

सं० **चिन्ताकीमुद्रा**- स्त्री० शोच की दशा फिक्रकी हालत।

सं० **चिन्तामणि** (चिन्ता=सोची हुई (वस्तु देने वाली) मणि=रत्न स्त्री० एक प्रकार की मणि, पारस।

सं० **चिन्तित** (चिति=सोचना) र्म्म० चिंता करता हुआ, सोची, भावित, फिकरमन्द, चिंता करने योग्य, उदास, व्याकुल।

सं० **चिह्न** (चिह्न=चिह्न करना) पु० संकेत, निशान, पहचान, लक्षण अंक, दाग। [दागी।

सं० **चिह्नित**- र्म्म० अंकित संकेतित

सं० **चिबुक** }
चिवुक } (चीव्=ढकना वा बोलना) स्त्री० ठुड्डी, ठोढ़ी। [चिपकना।

प्रा० **चिमटना**- क्रि० अ० लिपटना

प्रा० **चिमटा**- पु० चुमटा, मुचना स्यूठा। [मन्द।

सं० **चिरबाधित**- र्म्म० इहसान-

सं० **चिर** }
चरम् } (चि=इकट्ठाकरना) गु० बहुत काल, बहुत कालीन बहुत दिनका, बहुत, दिनतक

प्रा० **चिरंजी** (सं० चिरंजीवी) गु० बहुतसमयतक जीनेवाला, दीर्घायु।

सं० **चिरजीवी** }
चिरंजीवी } (चिर, बहुतसमय तक, जीवी=जीनेवाला जीव्=जीना) गु० चिरंजी।

सं० **चिरात्**- अव्य० अर्सा से बहुत काल से।

सं० **चिरना**- पु० पुराना प्राचीन, स्त्री० चिरानी=पुरानी।

सं० **चिरस्थायी**- पु० दवामी हमेशगी, चिरकाल तक रहनेवाली।

प्रा० **चिरौंजी**- स्त्री० एक प्रकार की मेवा।

प्रा० **चिलकना**- (सं० ज्वल्=चमकना) क्रि० अ० चमकना।

प्रा० चिलम- स्त्री० मिट्टी की बनी हुई चीज जिसमें तमाकू डाल के पीतेहैं।

प्रा० चिलमची स्त्री० हाथ धोनेका बरतन।

प्रा० चिल्लाना (सं० चित्कार) क्रि० अ० पुकारना, ज़ोरसे बोलना, चीखना।

प्रा० चींटी / चींवटी (सं० चिट्टकी) स्त्री० कीड़ी, चेंवटी।

प्रा० चीखुर, स्त्री० गिलहरी।

प्रा० चीतना (सं० चित्र) क्रि० स०. चित्र करना, रंगना, चित्रकारी करना, चित्रउतारना, रंग देना, २ (सं० चिन्तन) चाहना, सोचना।

प्रा० चीतल (सं० चित्रल, चित्र=रंग, ला=लेना) पु० तेंदुवा, चीता, गु० चितकबरा।

प्रा० चीता (सं० चित्रक, चित्र=रंग) पु० तेंदुआ, चीतल, २ एक पौधे का नाम, ३ (सं० चेतना) चाह, ४ समझ, बुद्धि, विचार, ५ (चीतना) रंगना, रंग देना।

सं० चीन (चि=इकट्ठाकरना) पु० एक देश का नाम, २ एक प्रकार का घास, ३ एक प्रकारका कपड़ा।

प्रा० चीनी (सं० चीनीय चीन देश की, अर्थात् जो कदाचित् चीन देश से इस देश में पहलेही पहल आई हो) स्त्री० बहुत अच्छी और साफ शक्कर, गु० चीन देश का, चीन देश संबंधी।

प्रा० चीह्नना (सं० चिह्न=चिह्न करना) क्रि० स० पहचानना, जानना।

सं० चीय (चि=इकट्ठाकरना) पु० प्राप्ति, ग्रहण, धारण, गु० लेनेवाला, पहरनेवाला, स्त्री० झिल्ली झींगुर।

सं० चीर (चि=इकट्ठा करना)पु० कपड़ा, वस्त्र, साड़ी।

प्रा० चीर- (चीरना) पु० खोंच, चीरना, फाड़ना।

प्रा० चीरनिकलना-बोल० सेनाके बीच में होके निकल जाना, सेना की कतारको तोड़ डालना।

प्रा० चीरना- क्रि० स० फाड़ना, टुकड़े टुकड़े करना, मसकना, बिदारना।

प्रा० चीरा (सं० चीर) पु० पगड़ी, २ काट, फाड़, घाव।

सं० चीरि- पु० रींवा जन्तु, झींगुर, पलक, घोड़ोंके आंखपर बांधनेकी अंधियारी।

सं० चीर्ण- गु० प्राचीन, प्रवीण, पुराना, फटाहुआ।

सं० चीर्णपर्ण- पु० नींबवृक्षप्रवीन पत्र, पुरानापत्ता, खजूरवृक्ष।

सं० **चीवर**—पु० प्राचीनवस्त्र, जीर्ण वस्त्र, फटावस्त्र, चिथड़ा, प्राचीन, पुराना।

प्रा० **चील्ह** (सं० चिल्ल,चिल्ल्=ढीला होना) स्त्री० एक पखेरू का नाम।

प्रा० **चीलझपट्टामारना**—बोल० छीनना, छीन लेना, झपट लेना।

प्रा० **चीलर** / **चील्हड** } स्त्री० जूं, जूई,ढील।

प्रा० **चुआन** (सं० च्यु=जाना, घूमना) स्त्री० कोट के आस पास की गहरी खाई जिस में पानी भरा रहता है, २ कुंड, जलाशय।

प्रा० **चुंगी**—स्त्री० महसूल का इतना अनाज जितना कि हाथ में समावे जो कि अनाज के व्यौपारियों से सदा उगाहा जाता।

प्रा० **चुकाना** (चुकना) क्रि० स० निपटाना,पूराकरना,मोलठहराना।

सं० **चुक्र**—पु० खट्टा का वृक्ष, चूक, सिरका,गु० खट्टा,अम्ल,अमलवेत।

प्रा० **चुगना**— क्रि० स० चोंच से खाना, चरना, खाना, २ चुनना, बीनना, ढूंगना।

प्रा०**चुगलेना**—बोल०छांटना,बराय लेना, चुनलेना, पसंद करना।

सं० **चुचि**—पु० स्तन, कुच, चूंची।

सं० **चुचुक**—पु० स्तनाग्रभाग, कुचाग्रभाग, चूंची की घुण्डी।

प्रा० **चुटकुला**—पु० चुहुल, परिहास, हँसी, ठठोली, हँसी की बात, आनन्द, रस।

प्रा० **चुडैल**—स्त्री० डायन, प्रेतनी, डाकिनी, २ फुहड़ स्त्री, मैली कुचैली स्त्री।

प्रा० **चुनत**—(चुनना) स्त्री०चुनन, परत, उचू, घड़ी, पुट, तह।

प्रा० **चुनरी**—स्त्री० एक तरह का रंगा हुआ कपड़ा जिस में कई तरह के रंग होते हैं। [चूंधा।

प्रा० **चुंधला**— गु० तिरमिरा, चक-

प्रा० **चुनना**— क्रि० स० चुगना, इकट्ठा करना, बीनना, छांटना, बराय लेना, पसंद करना, २ अपनी अपनी जगहपर रखना, सजाना, ठीकठाक करना, ३ तह जमाना, कपड़ों की घड़ा बनाना।

प्रा० **चुनौती**—सौगन्द, कसम।

प्रा० **चुन्नी**—स्त्री० लाल।

प्रा० **चुप**— गु० मौन , अनबोल, अवाक्, वि० बो० चुप रहो, मत बोलो।

प्रा०**चुपचाप**—बोल०चुप,अनबोल।

प्रा० **चुपड़ना**— क्रि० स० चिकना करना, चिकनाना, घी अथवा तेल लगाना, २ तेल मलना।

प्रा० **चुभकी**—डुबकी, गोता।

प्रा०चुभना—क्रि० अ० छिदना, घुसना, पैठना, पारहोना, धसना, गड़ना ।

सं० चुम्बक / चुम्बकी (चुवि=चूमना) क० पु० चुम्बक पत्थर जो लोहेकोखींचताहै, २ चूमनेवाला, थोड़ा थोड़ा पढ़के छोड़नेवाला ।

सं० चुम्बन—(चुवि=चूमना)भा०पु० चूमना, चूमा, बोसा, चूमालेन ।

सं० चुम्बित—र्म०पु० चूमा हुआ, बोसा लियागया ।

प्रा० चुराना—(सं० चोरण, चुर्= चुराना) क्रि० स० चोरीकरना ।

प्रा० चुरी—(सं० चूड़ा) स्त्री० चूड़ी ।

प्रा० चुलबुला—बोल० चंचल, रंगीला ।

प्रा० चुलाना—क्रि० स० चुवाना, टपकाना ।

सं० चुल्ल (चुल्ल्=चालना, चलना) पु० प्रकाश, उजाला जिसके नेत्र में कीचर भरा है, चूल्हा, स्त्री० चिंता उद्धारना ।

सं० चुल्लि—स्त्री० चूल्ही, चूल्हा ।

प्रा० चुल्लू (सं० चुलुक, चुल्=इकट्टा करना वा होना) पु० लपभर, मुट्ठीभर, चुक्का, दोनों हाथोंको इसतरह मिलाना कि उसके बीचमें पानी रह सके ।

प्रा० चुल्लूभरपानीमेंडूबमरना--बोल० बहुतही बहुत लजाना ।

प्रा०चुल्लू में उल्लूहोना--बोल० चुल्लू भर नशे में मस्त होना ।

प्रा० चुसकी--स्त्री० पानी का घूंट, मुँहभर पानी ।

प्रा०चुहल—स्त्री० हँसी, विनोद, हर्ष, हुलास, ठट्ठा ।

प्रा०चुहुलकरना--बोल० आनन्द करना, हँसी खुशी करना, विनोद करना ।

प्रा० चूंची / चूची (सं०चूचुक, चूष्=दूध पीना वा चूसना) स्त्री० स्तन, थन, कुच, छाती ।

चुकौता--पु० निपटारा, फ़ैसला ।

प्रा० चूक—(चूकना) स्त्री० भूल, खोट, दोष, भ्रम, अपराध ।

प्रा० चूक—(सं० चुक्र, चुक्र्=दुखाना) गु० खट्टा ।

प्रा०चूकना--क्रि० अ० भूलना, भूल करना, बिसरना, अशुद्ध करना ।

सं० चूडा--स्त्री० चोटी, चुटिया, शिखा, झुटैया ।

सं० चूडाकरण—(चूड़ा=चोटी, करण, करना) पु० मुंडन ।

सं०चूडामणि--(चूड़ा=चोटी, मणि =रत्न) स्त्री० स्त्रियों के चोटी में पहनने का गहना, चोटी की मनी ।

प्रा० चूड़ी / चूरी (सं०चूड़ा, चुल्=इकट्ठा होना) स्त्री०स्त्रि-

यों के हाथ में पहनने की काच आदि की बनी हुई चीज़।

सं० चूत } पु० आम्रवृक्ष, क्षरण,
चूतक } आव, वहन, ढपना।

प्रा० चुनना—क्रि० स०बीनना, बटोरना, इंतिखाब करना।

प्रा० चुनाहुआ—मुन्तखिब।

प्रा० चून (सं० चूर्ण) पु० आटा, २ चूना।

प्रा०चूना--(सं० च्यवन, च्यु=जाना) क्रि० अ० टपकना, रसना, झरना, (सं० चूर्ण) पु० चून, एक चीज़ जिससे मकान बनाये जाते हैं।

प्रा० चूनालगाना—बोल० बदनाम करना, लिम लगाना।

प्रा० चूमना—(सं० चुम्बन) क्रि० स० चूमा लेना। [बोसा।

प्रा०चूमा—(सं चुम्बन) पु० चुम्बा,

प्रा० चूमाचाटी—बोल० दुलार, प्यार, रंग, रस, रावचाव।

प्रा० चूर—(सं० चूर्ण) पु०बुकनी, भुरभुरा, चूर्ण, रेतन, गु० चूर किया हुआ।

प्रा० चूरचूर—बोल० टूकटूक, खंड खंड। [डूबा रहना।

प्रा० चूर रहना--बोल०मस्त रहना,

प्रा० चूर करना--बोल० टुकड़े २ करना।

प्रा० चूर होना--बोल० टुकड़े २ होना, २ किसी के प्यार में फँसना, अत्यन्त प्यार वा स्नेह करना, ३ थकना।

प्रा० नशे में चूर होना—बोल० मस्त होना, मतवाला होना।

प्रा० चूरण } (सं० चूर्ण) पु०
चूरन } पाचक औषध जिससे खाना पचता है।

प्रा० चूरा--(सं०चूर्ण)पु०रेतन,चूर।

सं० चूर्ण-- (चूर्ण=पीसना, बुकनी करना) पु० बुकनी, रेतन, चूर, चूरा, धूल, २ चूरन, एक पाचक औषध।

सं० चूर्णन--भा० पु० पीसना।

सं० चूर्णक--(चूर्ण्+अक) कृ०पु० पीसनेवाला।

सं०चूर्णित--(चूर्ण्+इत) स्पं०पु० पीसा हुआ।

प्रा०चूर्नी--(सं० चूर्ण) क्रि० स० टुकड़े २ करना।

प्रा० चूर्मा-(सं० चूर्ण=चूरना) पु० एक प्रकार का मीठा खाना।

प्रा०चूल--पु० लकड़ी का जोड़ वा कील जिस पर किवाड़ फिरता है।

प्रा०चूल्हा--(सं० चुल्ली) पु० आग रखने की जगह।

सं० चूषक-(चूष्+अक, चूष्=चूसना) क० पु० चूसनेवाला ।

सं० चूषण--भा० पु० चूसना ।

सं० चूषित--कर्म० चूसा हुआ ।

प्रा० चूसना--(सं० चूष्=चूसना) क्रि० स० पी लेना, सोखना, चचोड़ना ।

प्रा० चूहा--पु० मूसा, मूषिक ।

प्रा० चेत--(सं० चेतस्, चित्=सोचना) पु० सुध, याद, स्मरण, विचार, बोध, ज्ञान, अनुभव, सावधानी, चौकसी ।

सं० चेतन--(चित्=सोचना) पु० जीव, आत्मा, प्राण, २ ज्ञान, बुद्धि, विचार, विवेचन, समझ, गु० चैतन्य, जीताहुआ, सचेत, प्राणी ।

सं० चेतना--(चित्=सोचना) स्त्री० बुद्धि, ज्ञान, चेत ।

प्रा० चेतना--(सं० चेतन) क्रि० स० याद करना, स्मरण करना, सुध करना, मन में रखना, सोचना, २ चेत मे आना, होश में आना ।

प्रा० चेता-- (सं० चित्त) पु० चित्, चेत, मन, २ उपदेशक, ज्ञानदाता ।

प्रा० चेपना-- क्रि० स० साटना, लगाना, चिपटाना ।

प्रा० चेरा-- (सं० चेड़ वा चेट, चिट्=भेजना) पु० नौकर, दास, चाकर ।

प्रा० चेरी--स्त्री० दासी ।

प्रा० चेला--(सं० चेड़ वा चेट, चिट्=भेजना) पु० शिष्य, विद्यार्थी, २ दास ।

प्रा० चेवली-- स्त्री० एक प्रकार का रेशमी कपड़ा ।

सं० चेष्टक--(चेष्ट्+अक) क० पु० यत्नकारी, उपायी, तदबीरी ।

सं० चेष्टा-- (चेष्ट्=परिश्रम वा यत्न करना) भा० स्त्री० यत्न, उद्यम, परिश्रम, उद्योग, काम, शरीर का व्यापार ।

प्रा० चैत--(सं० चैत्र) पु० एक महीने का नाम ।

सं० चैतन्य--(चेतन) भा० पु० जीवात्मा, परमात्मा, ब्रह्म, २ बुद्धि, ज्ञान, विचार, विवेचना, चेत, चेतना, गु० सचेत, चेत में, चौकस, सज्ञान, चेतन, सचेत, सुचेत ।

सं० चैत्र--(चित्रा एक नक्षत्र का नाम) पु० चैत, हिंदुओं के बरस का बारहवां महीना जिसमें पूरा चांद चित्रा नक्षत्र के पास रहता है और उस महीने की पूर्णमासी के दिन चित्रा नक्षत्र होता है ।

सं० चैत्ररथ--पु० कुबेर का बाग ।

प्रा० चैन--पु० सुख, आराम, आनन्द, हर्ष ।

प्रा० चौंगा--पु० नली, नलुवा, नल।

प्रा० चौंच--(स० चञ्चु) स्त्री० ठोंठ, परवेरुओं की चंचु।

प्रा० चौंडा--(सं० चूड़ा) पु० चोटा, बाल का जूड़ा।

प्रा० चौंप } चौंप } चोप } स्त्री० इच्छा, चाह, रुचि, उछाह, लालसा, फुर्ती, २ स्त्रियों के दांतों में पहननेका सोनेका गहना।

प्रा० चोआ } चोवा } पु० सुगन्धित चीज़, अर्गजा।

प्रा० चोखा--गु० साफ, सच्चा, खरा, अच्छा, तीखा, तीक्ष्ण।

प्रा० चोचला--पु० खिलाड़पन, मान, नखरा, मीठीबातें, प्यारीबातें, भोलीबातें, हावभाव।

प्रा० चोट--पु० मार, पीट, चोट, मुक्का, घूंसा, धक्का, आघात, पछाड़।

प्रा० चोटपरचोट--बोल० दुख पर दुख, एक विपत् पर दूसरी विपत् का आना।

प्रा० चोटखाना--बोल० पिटना, मारखाना, २ नुक़सान उठाना।

प्रा० चोटी--(सं० चूड़ा, चुल्=इकट्ठा होना) स्त्री० शिखा, शिरके पिछले बाल, २ शिखर, पहाड़ का शृंग।

प्रा० चोटीआस्मानपरघिसना--बोल० बहुत घमंडी होना, बहुत अभिमान करना

प्रा० चोटीकट--बोल० दास, २ शिष्य।

प्रा० चोटीकटवाना--बोल० दास होना, २ शिष्य होना।

प्रा० चोटी किसी की हाथ में आना--बोल० किसी पर अधिकार रखना, किसी को वश में करना, दबाना, नवाना।

प्रा० चोट्टा--(सं० चोर) पु० चोर।

सं० चोर--(चुर्=चोरी करना) पु० चोट्टा, चोरी करनेवाला, ठग, लुटेरा, तस्कर।

प्रा० चोरचकार--बोल० चोर।

प्रा० चोरख़ाना } चोरघर } बोल० छिपा हुआ मकान, एकान्त घर, गुप्तघर।

प्रा० चोररस्ता--बोल० छिपी राह गुप्तराह, पगडंडी, लीक।

प्रा० चोरलगना--बोल० बिगाड़होना, हानिहोना, नुक़सानउठाना।

प्रा० चोरी--(सं० चौर्य, चोर, चुर् =चोरी करना) स्त्री० चुराने का काम, डकैती, ठगी।

सं० चोली--(चुल्=इकट्ठा होना) स्त्री० अँगिया, कांचुली।

प्रा० चौ--(सं० चतुः=चार) गु० चार पु० हल का फाल।

प्रा० चौअन्नी--(चौ=चार, आना) स्त्री० चारआनी, सकी, चारआना

प्रा० चौंकना-क्रि० अ० झिझकना, भड़कना, डर उठना, ठठकना, चमकना, नींदटूटना, नींदउचटना ।

प्रा० चौंकउठना--बोल० भड़क उठना, झिझकउठना, चमकउठना ।

प्रा० चौंकपड़ना--बोल० उछल पड़ना, चौकड़ी भरना, भड़कजाना, चमक जाना । [देखो ।

प्रा० चौंतरा--पु० (चबूतरा) शब्द को

प्रा० चौंतीस } चौतीस } (सं० चतुस्त्रिंशत्) गु० तीस और चार, ३४ ।

प्रा० चौंधियाना--क्रि० अ० घबराना, व्याकुल होना, डरना, अचंभे में होना, तिरमिराना ।

प्रा० चौंसर } चौसर } (सं० चतुश्शारिः चतुः=चार, शारि=गोटी) पु० एक खेल का नाम जो पांसों से खेला जाताहै, चौपड़, २ फूलों की माला ।

प्रा० चौक--पु० बाजार, हाट, गुदड़ी, पेठ, २ नगर का चौराहा, चौहट्टा, २ आंगन, अंगना । [वाला ।

प्रा० चौकड़ा--पु० दो मोती का

प्रा० चौकड़ी--स्त्री० कूद, फांद, फलांग, उछल ।

प्रा० चौकड़ी भरना--बोल० कूदना, फांदना, उछलना ।

प्रा० चौकड़ी भूलना--बोल० मोह जाना, मोह में आना, भूलासा जाना, होश ठीक न रहना ।

प्रा० चौकड़ी मार बैठना--बोल० उकडू बैठना, सिमट बैठना, सु[illegible] बैठना, चार ज़ानू बैठना ।

प्रा० चौकन्ना--गु० सावधान, सु[illegible] चौकस, फुर्तीला ।

प्रा० चौकस--गु० सावधान, सु[illegible] चलाक, फुर्तीला ।

प्रा० चौका--पु० रसोई, वह जग[illegible] हां हिन्दू खाना पकाते और [illegible] हैं, २ चौकोनी चीज़, चौकोनी [illegible] ३ आगे के चार दांत ।

प्रा० चौकी--कुरसी, पीढ़ा, चौ[illegible] काठकी बनी हुई चीज, २ र[illegible] ली, चौकसी, पहरा, ३ थाना चौकीदार और पहरादार र[illegible] ४ एक गहना जिसको गलेमें पह[illegible]

चौकीदार-- गु० चौकी देने[illegible] पहरा देनेवाला, पहरुआ ।

प्रा० चौकीदारी--स्त्री० चौ[illegible] का काम, २ चौकीदार की म[illegible] चौकीदारी टिक्कस ।

प्रा० चौकीदेना--बोल० रख[illegible] देना, पहरा देना ।

प्रा० चौकीमारना--बोल० [illegible] महसूली वस्तुलाना वा भेजना, मारना, महसूल पुराना ।

प्रा० चौकोना } (सं० चतुष्कोण) चौकोर } गु० चौखूंटा, चार कोना।

प्रा०चौखट } (सं०चतुष्काष्ठ)स्त्री० चौकट } दरवाजे का ढांचा।

प्रा०चौखूंटा (सं० चतुष्कोण) गु० चौकोर, चौकोना।

प्रा० चौगुणा } (सं० चतुर्गुण) गु० चौगुना } चारगुना, चारबार लिया हुआ।

प्रा०चौड़ा--गु०फैलाहुआ, विशाल।

प्रा०चौड़ाचकला--बोल० चिपटा, फैलाऊ, विस्तृत, फैला हुआ, चौड़ा।

प्रा० चौतनी--चौगोशिया टोपी।

प्रा०चौतारा--पु०चारतारकाबाजा।

प्रा० चौताल--स्त्री० एक रागिणी का नाम।

प्रा० चौथ (सं० चतुर्थी) स्त्री० चौथी तिथि, २ (सं० चतुर्थांश) चौथा हिस्सा, कर अथवा खिराज जो मरहटे उगाहा करते थे। [चौथा।

प्रा०चौथा (सं०चतुर्थ) गु०चारहवां,

प्रा० चौथेपन } (चौथा चारहवां) चौथापन } पु० बुढ़ापा, मनुष्य के उमरका चौथा अथवा सब से पिछला हिस्सा।

प्रा० चौदस (सं० चतुर्दशी, चतुर्=चार, दश=दस) स्त्री० चौदहवीं तिथि चतुर्दशी। [चार, १४।

प्रा०चौदह (सं०चतुर्दश)गु०दस और

प्रा० चौदानिया--पु } (चौ=चार, चौदानी--स्त्री० } दाना) चार मोती का बाला।

प्रा० चौधरी--पु० पञ्च, प्रधान, जमींदार की पदवी।

प्रा०चौपट--गु० उजाड़, बरबाद, नष्ट, बराबर किया हुआ, चपटा।

प्रा० चौपटकरना-बोल० उजाड़ना, नष्ट करना, बरबाद करना, ढहा देना-विनाश करना, बराबर करना।

प्रा० चौपड़ (सं० चतुष्पुटी, वा चतुष्पादिका, चतुर्=चार, पुट=तह-वा पद पैर) स्त्री०पांसोंकाखेल, २कपड़ाजिसपर यह खेलखेलाजाताहै।

प्रा० चौपाई (सं० चतुष्पदी) स्त्री० चार पद का छन्द।

प्रा० चौपाड़ (सं० चतुष्पटिका) पु० बैठकघर, २ (सं० चतुष्पाद) चौपाया।

प्रा० चौपाया--(सं० चतुष्पाद) पु० चारपाया, पशु, जानवर।

प्रा० चौपाला-(सं०चतुष्पाद) पु० पालकी, डोली।

प्रा०चौबारा-- (सं० चतुष्पाटिका) पु० ऊपर का कोठा, उसारा।

प्रा० चौबीस-(सं० चतुर्विंशति) गु० बीस और चार।

प्रा० चौबे-- (सं० चतुर्वेदी) पु० ब्राह्मण जो चारों वेद जानता हो, अब एकजातिके ब्राह्मणों को चौबेकहते हैं चाहे वेद पढ़े हों या न पढ़े हों।

प्रा० चौमासा--(सं० चतुर्मास,चतुर्=चार,मास=महीना)पु० बरसात, वर्षाऋतु, असाढ़ से कुँवार तक के चार महीने।

प्रा०चौमुखा--(सं० चतुर्मुख) पु० चौमुहां दीया।

प्रा० चौमुखी-(सं० चतुर्मुखी)स्त्री० देवी, चारमुहँवाली दुर्गा, २ रुद्राक्ष का दाना।

प्रा० चौरस-(चौ=चार, रस=बराबर) गु० चारों ओर से बराबर, समान, सब ओर से बराबर।

प्रा० चौरानबे-- (सं० चतुर्नवति, चतुर्=चार, नवति=नब्बे) गु०नब्बे और चार।

प्रा० चौरासी-- (सं० चतुरशीति, चतुर्=चार, अशीति=अस्सी) गु० अस्सी और चार।

प्रा० चौवन, चव्वन (सं०चतुष्पञ्चाशत्) गु० पचासऔरचार।

प्रा० चौवाई-(सं० चतुर्वायु, चतुर्=चार, वायु=हवा, अर्थात् चारों दिशा से हवा का बहना) स्त्री० आंधी, अन्धड़, झकड़।

प्रा० चौसठ-- (सं० चतुःषष्ठि) गु० साठ और चार।

प्रा० चौहटा, चौहट्टा (सं० चतुर्हट्ट, चतुर्=चार, हट्ट=हाट) पु० चौराहा, चौक।

प्रा० चौहत्तर-- (सं० चतुःसप्तति) गु० सत्तर और चार।

प्रा०चौहान-- (सं० चाहुवान) पु० राजपूतों की एक जाति।

सं०च्युत-(च्युत=गिरना)क०पु०च्युत गिरा, टपकपड़ा, पतित, आर्द्र, नष्ट।

सं०च्युति--(च्युत+इ) भा० स्त्री० पतन, हानि, खिन्नता।

छ

सं० छ--(छो=काटना) गु० काटनेवाला, २ निर्मल, ३ चंचल, छेदक, नाशक।

प्रा०छः--(सं०षट्)गु०दुगुना तीनछ।

प्रा०छई--(सं० क्षय) स्त्री० एक रोग का नाम।

प्रा०छई--(सं० छदिः, छद्=ढकना) स्त्री० नाव का छप्पर।

प्रा०छकड़ा--(सं० शकट)पु०गाड़ी, रहडू, अरावा।

प्रा०छकना--क्रि० अ० अघाना, तृप्त होना, संतुष्ट होना, २ व्याकुल होना, अचंभे में होना, ३ मस्तहोना।

प्रा०छकाना-क्रि० स० अघाना, तृप्त करना, २ ठीक करना, सीधा करना।

प्रा० छक्का-(सं० षट्क, षष्=छः) पु० छः का समूह, २ एक तरहका पिंजरा ।

प्रा० छक्कापंजाकरना–बोल० ठगना, छलना, धोखादेना, जुआ खेलना ।

प्रा० छक्केछूटजाना-बोल० घबराना, हक्का बक्का रहजाना ।

सं० छग, छगल-(छो=काटना)पु०बकरा, छाग, भेड़ा, स्त्री०भेड़ी, बकरी ।

प्रा० छटाक-(सं० षट्टङ्क, षट्=छः, टङ्क एक प्रकार का तोल) स्त्री० सेर का सोलहवां भाग, कनवा ।

सं० छटा-(छो=काटना)स्त्री० चमक भड़क, शोभा, दमक, चमचमाहट, उजाला । [तालवृक्ष ।

सं० छटाफल-पु० नारियल, वृक्ष,

सं० छटाभा-स्त्री० बिजली ।

प्रा० छट्ठी, छठ (सं०षष्ठी)स्त्री०पखकी छठवीं तिथि ।

प्रा० छठी, छठी (सं०षष्ठी) स्त्री०छठवीं, लड़काके पैदाहोने के पीछे छठे दिन की रीति ।

प्रा० छड़ा-पु० पैर का गहना, मोती की लड़ी, गु० अकेला ।

प्रा० छड़ी-स्त्री० बेत, हाथ में रखने की लकड़ी, २ फूलों का गुच्छा ।

प्रा० छण, (सं० क्षण) स्त्री०पल, दम, क्षण, छिन ।

प्रा०छत, छात (सं०छत्र,छद्=ढकना) स्त्री० घर के ऊपर का पटाव, गच, पु० फोड़ा, घाव ।

प्रा० छत्ता-(सं० छत्र, छद्=ढकना) पु० मधुमक्खियों का छाता ।

प्रा० छत्तीस-(सं० षट्त्रिंशत्, षट्=छः,त्रिंशत्=तीस)गु० तीस औरछः।

सं० छत्र-(छद्=ढकना)पु०राजाओं के शिरपर रखने का छाता, छतरी ।

सं० छत्रक-(छत्र)क०पु० भुईंफोर, कुकुरमुत्ता, धरती का फूल ।

सं० छत्रधारी-(छत्र=छाता, धारी =रखनेवाला, धृ=रखना) क०पु० राजा, महाराज, छत्रपति ।

सं० छत्रपति-(छत्र=छाता, पति=मालिक) पु० राजा, महाराज, छत्रधारी ।

सं० छत्रभङ्ग-(छत्र=छाता, भङ्ग=टूटना) पु० पति का मरना, रंडापा, विधवापन, २ राजा का मरण ।

प्रा० छत्री-(सं० छत्र) स्त्री० छोटा छाता, २ चंदवा, ३ बैठने की जगह ।

प्रा० छत्री-(सं० क्षत्री) पु०राजपूत।

सं०छत्वर-पु० गृह, कुंज, कोठरी, खोह्वर ।

सं० छद-(छद=ढापना) पु० पंख, आच्छादन, पत्ता,डांख, तमालवृक्ष ।

सं० छदन-भा०पु०पत्ता, आच्छादन, छान, छत, मियान, गिलाफ ।

प्रा० छदाम-स्त्री० पैसे का चौथा भाग, दो दमड़ी, ६ दाम ।

सं० छद्मन-पु० कपट, छप्पर, पत्ता, अपदेश वा हुज्जत, उज़र, दलील ।

प्रा० छनाक-पु० गर्म चीज़ पर पानी के गिरने का शब्द ।

सं० छन्द-(छदि=ढकना, और चाहना) पु० श्लोक, काव्य, पद्य, मात्राओं का मिलाव, २ वेद, ३ वेदका छंद जैसे गायत्री आदि, ४ इच्छा, अभिलाषा ।

सं० छन्दपातन-(छन्द+पातन, पत्=गिरना) पु० कपट, कुटिलता, मक्र, बहाना ।

सं० छन्दोग-पु० कवि, सामवेदका गानकर्ता, वेदपाठी ।

सं० छन्न-कर्म० पु० एकान्त, गुप्त, छिपा हुआ ।

प्रा० छन्ना-पु० पानी छानने का कपड़ा, कोई चीज़ छाननेकाकपड़ा ।

प्रा० छपना-क्रि० अ० छापा होना, मुद्रित होना ।

प्रा० छपाई-स्त्री० छापनेकी मज़दूरी, छापने का काम ।

प्रा० छप्पन-(सं० षट्पञ्चाशत्, षट्=छः पञ्चाशत्=पचास) गु० पचास और छः ।

प्रा० छप्पय-(सं० षट्पदी, षट्=छः पद=चरण) छः पदका छन्द ।

प्रा० छप्पर-पु० फूस की छावनी ।

प्रा० छप्परखट- पु० पलंग, खाट ।

प्रा० छबीला-गु० सुन्दर, सुहावना ।

प्रा० छब्बीस-(षड्विंशति, षष्=छः विंशति=बीस) गु० बीस और छः ।

प्रा० छयासठ / छियासठ (सं० षट्+षष्टि, षट्=छः षष्टि=साठ) गु० साठ और छः ।

प्रा० छरे-गु० छटे, चुने ।

सं० छर्द- (छर्द=वमन करना, क़य करना) पु० वमन, क़य ।

सं० छर्दन- (छर्द्+अन) भा० पु० छांट, वमन, क़य, अलंबुप ।

सं० छर्दि- स्त्री० छांट, क़य ।

प्रा० छर्रा- पु० छोटी २ गोली ।

सं० छल- (छो=काटना) पु० कपट, धोखा, फरेब, बहाना, मिष, जाल, ठगाई । [छलछिद्र ।

प्रा० छलबल- बोल० कपट, धोखा,

प्रा० छलकना-(सं० उच्चलन, उत्=ऊपर, चल्=चलना) क्रि० अ० उमंडना, ढलकना, बहचलना, फूटनिकलना, बोरना ।

सं० छलछिद्र- (छल+छिद्र) पु० छलबल, कपट, धोखा ।

सं० छलविनय- स्त्री० कपट से बड़ाई, फरेब के साथ तअरीफ़ ।

प्रा० छलांग- स्त्री० फलांग, फांद, कूदफांद।

प्रा० छलांगें मारना- बोल० कूदना, उछलना, झपटना, कुलाच मारना।

प्रा० छलिया, छली (सं० छल) गु० कपटी, दगाबाज़, धोखा देनेवाला।

प्रा० छल्ला- पु० मुंदरी, अंगूठी।

सं० छवि (छो=काटना, अंधेरेको) स्त्री० शोभा, सुन्दरता, चमक, प्रकाश।

प्रा० छां- (सं० छाया) स्त्री० छाया, आड, प्रतिबिम्ब, परछाईं।

प्रा० छांटना- क्रि० स० वमनकरना, उलटी करना, कै करना, २ अनाज से भूसा अलग करना, फटकना, ३ काटना, कतरना, काट कूट करना, ४ सँवारना, साफ करना, ५ चुनलेना, पसंद करना।

प्रा० छांटकरना- बोल० वमन करना, कै करना।

प्रा० छांटलेना- बोल० चुनलेना, धराय लेना, पसंद करना।

प्रा० छांडना- क्रि० स० उगेलना, निकालना, २ छोड़ना।

प्रा० छांव, छांह (सं० छाया) स्त्री० छाया, छां, प्रतिबिम्ब, परछाईं।

प्रा० छाक- पु० कलेवा, जलखाना।

सं० छाग, छागल (छो=काटना) पु० बकरा, खस्सी।

प्रा० छाछ, छाछी स्त्री० मट्ठा, मही।

प्रा० छाज- पु० सूप, डगरा।

प्रा० छाजना- (सं० छादन, छद्= ढकना) क्रि० स० छाना, २ फबना, सोहना, छजना, खुलना, योग्य होना।

प्रा० छांडना- क्रि० स० छोड़ना, त्यागना, तजना।

प्रा० छाता- (सं० छत्र) पु० छतरी, २ मधुमक्खियोंका छत्ता।

प्रा० छाती- स्त्री० हिरदा, उर, वक्षस्थल, २ चूंची, कुच।

प्रा० छातीभर- बोल० छाती जितना ऊंचा, छाती तक।

प्रा० छाती भर आना- बोल० रोना, आंसू ढालना, मोह आना।

प्रा० छाती पर पत्थर रखना- बोल० संतोष करना, सबर करना, धीरज धरना, सहलेना।

प्रा० छाती पर मूंग दलना- बोल० किसी के सामने ऐसा काम करना कि जिस से वह दुख पावे, किसीकोकुढ़ाना, खिझाना, सताना

प्रा० छातीफटना- बोल० ट[illegible] अथवा फिक्रमें घबराना, गम आ[illegible]

प्रा० छातीपीटना- बोल० रोना, विलाप करना, शोक करना, बिलखना।

प्रा० छाती ठोकना-बोल० साहस देना, हिम्मत बांधना, भरोसादेना।

प्रा० छाती ठंढी होना— बोल० प्रसन्न होना, बहुतही बहुत आनंदित होना।

प्रा० छातीकापत्थर } बोल० दुःखदायी, कंटक।
छातीकाजम }

प्रा० छातीखोलकरमिलना— बोल० सच्चे मनसे मिलना, सरलता से मिलना, निष्कपट होकर मिलना।

प्रा० छातीलगाना } बोल० प्यारकरना, दुलारना
छातीसेलगाना }

प्रा० छातीनिकालकरचलना— बोल० अकड़ कर चलना, ऐंठकर चलना।

सं० छात्र-(छद्=ढकना, गुरुके दोषोंको) पु० विद्यार्थी, शिष्य, चेला।

सं० छात्रवृत्ति-स्त्री० वज़ीफा, पारितोषिक, स्कालरशिप।

सं० छादन-(छद्=ढकना) पु० ढकने का कपड़ा, ढकना, २ पत्ता।

प्रा० छान-(सं० छादन) स्त्री० छप्पर, टठरी।

प्रा० छानबिनान } बोल० खोज,
छानबीन } ढूंढ़, परीक्षा, विचार, विवेचना।

प्रा० छानबे } (सं० षण्णवति) गु० नव्वे और छः।
छियानबे }

प्रा० छानन-(छानना) पु० चोकर, भूसी, तुस, बूर।

प्रा० छाना-(सं० छादन, छद्=ढकना) क्रि० स० छाया करना, पाटना, ढकना।

प्रा० छाजाना- बोल० ढकजाना, छाया होना, पटजाना, घिरजाना।

प्रा० छालेना-बोल० अंधेराकरना, ढक लेना।

प्रा० छानना- क्रि० स० निखारना, गारना, झारना, चालना, फटकना, २ खोजना, ढूंढ़ना, ढूँढ़ मारना।

प्रा० छानमारना-बोल० खोजना, ढूँढ़ना, ढूँढ़मारना।

प्रा० छाप (छापना) स्त्री० ठप्पा, मुद्रा, छापीहुई वस्तु, अंक, चिह्न, २ मोहर, ३ अंगुलीमें पहनने का गहना।

प्रा० छापना-क्रि० स० छापाकरना, मुद्रित करना।

प्रा० छापा- (छापना) पु० ठप्पा, मुद्रा, छापी हुई वस्तु, अंक, चिह्न, २ शंख चक्र गदा पद्म आदिका चिह्न जिसको वैष्णवलोग अपने शरीर पर लगाते हैं।

प्रा० फ़ा० छापाखाना-पु० छपनेका घर, छापाकी जगह, यन्त्रालय, मतबआ, प्रिंटिंगप्रेस।

सं० छाया—(छो=काटना, अर्थात् उजाले को रोकना) स्त्री० छांह, छांव, छां, परछाई, प्रतिबिम्ब, २ अंधेरा, ३ भूत, प्रेत, ४ शनैश्चर की माता, सूर्य की स्त्री।

सं० छायापथ—पु० आकाश, पोला, अवकाश, आसमान।

सं० छायामृत—(छाया+अमृत) पु० चन्द्रमा।

प्रा० छार—(सं० क्षार) स्त्री० राख, भस्म, धूलि, खाक।

प्रा० छाल—(सं० खल्ल, वा छल्ली, छद्=ढकना) स्त्री० छिलका, बकला, पोस्त।

प्रा० छाला—पु० फुनसी, फुंसी, फफोला, फुलका।

प्रा० छालिया—स्त्री० एक प्रकारकी [सुपारी।

प्रा० छावनी—(छाना) स्त्री० पलटन के रहने की जगह, सिपाहियों के रहने के घर, २ छाने का काम।

प्रा० छिंगुली- स्त्री० छोटी अंगुली, कन अंगुली।

प्रा० छिछला- पु० उथला, पैतला, [अगंभीर।

प्रा० छिछोड़ा-पु० हलका, ओछा, चिबिल्ला।

प्रा० छिटकना- क्रि० अ० बिखरना, फैलना, छितरना, बिथरना।

प्रा० छिटकनाचांदनीका- बोल० चांदनी का फैलना।

प्रा० छिटकाना- क्रि० स० बिखेरना, फैलाना, छितराना, बिथराना।

प्रा० छिड़कना—क्रि० स० छींटना, तरकरना, सींचना।

प्रा० छिड़काव- (छिड़कना) पु० पानी का छिड़कना, सिंचाई, सींचना।

प्रा० छितरना- क्रि० अ० बिखरना, फैलना, पसरना, छिटकना, बिथरना।

प्रा० छिति- (सं० क्षिति) स्त्री० धरती, जमीन, पृथ्वी, भूमि, धरणी।

प्रा० छिदना—(सं० छेदन, छिद्=काटना) क्रि० अ० बिंधना, पार होना, धसना, चुभना।

सं० छिद्र- (छिद्र=भेदना, वा छिद्=छेदना) पु० छेद, गढ़ा, रंध्र, विवर बिल, २ दोष, दूषण।

सं० छिद्रित- (छिद्र+इत) म्र्म० पु० वेधित, छेद किया गया।

प्रा० छिन- (सं० क्षण) स्त्री० पल, क्षण, निमेष।

प्रा० छिनभरमें- बोल० एक पल में, पल भर में।

प्रा० छिनाल- स्त्री० वेश्या, व्यभि- [चारिणी।

प्रा० छिनाला—(छिनाल) पु० छिनालपन, व्यभिचार।

सं० छिन्न- (छिद्=काटना) म्र्म० टूटा हुआ, खंडित, भाग किया हुआ, टुकड़े किया हुआ।

सं० छिन्नभिन्न (छिन्न+भिन्न

अलग अलग, तित्तर बित्तर, कटा हुआ, टूटा हुआ।

प्रा० छिपकली } टिकटिकी, एक
छिपकी } जानवरकानाम।

प्रा० छिपना } क्रि० अ० लुकना, अ-
छपना } लख होना, दुबक-
ना, अदृश्य होना।

प्रा० छिमा—(सं० क्षमा) स्त्री० क्षमा, माफ़ी।

प्रा० छियालीस-(सं० षट्चत्वारिंशत्, षट्=छः चत्वारिंशत्=चालीस) गु० चालीस और छः।

प्रा० छियासी-(सं० षडशीतिः षट्=छः अशीति=अस्सी) गु० अस्सी और छः।

प्रा० छिलका-(सं० छल्ली, छद्=ढकना) पु० छाल, बकला, त्वचा, पोस्त,

प्रा० छिहत्तर- (सं० षट्सप्ततिः षट्=छः सप्तति=सत्तर) गु० सत्तर और छः।

प्रा० छी— वि० बो० तुच्छ और घिन करने का शब्द।

प्रा० छींक-(सं० छिक्का, छिक् ऐसा शब्द, कृ=करना) स्त्री० शब्द जो नाक से होता है।

प्रा० छींका-(सं० शिक्य, शि=छेदना) पु० झूला, बहंगीकी डोरी, जालकी तरह बनीहुई चीज़ जिसमें कोई चीज़ रखके लटका देते हैं।

प्रा० छींट—(सं० चित्र रंग रंगका) स्त्री० एक प्रकार का रंगा हुआ कपड़ा। [सींचना।

प्रा० छींटना—क्रि० स० छिड़कना,

प्रा० छींटा-पु० छाँटा, टपका, बिन्दु।

प्रा० छीजना- क्रि० अ० घटना, कम होना, सूखना, झूरना, देखा देखी कीजै योग, छीजैकाया बाढ़े रोग, कहावत० जो कोई किसी की देखा देखी तप अथवा व्रत आदि करता है उसका शरीर दुबला हो जाता और बीमारी बढ़ती है।

प्रा० छीन- (सं० क्षीण) गु० मन्द, पतला, दुबला, कृश, घटा हुआ, लागर।

प्रा० छीनना— क्रि० स० लेलेना, खींचलेना, जबरदस्ती से लेलेना, झपट लेना।

प्रा० छीनाछानीकरना— बोल० झपट लेना, झपटा झपटी करना, छीना झपटी करना। [दूध।

प्रा० छीर—(सं० क्षीर) पु० दुग्ध,

प्रा० छीलना— क्रि० स० काटना, छिलका उतारना।

प्रा० छुछूँदर- (सं० छुछुन्दरी, छुछु ऐसा शब्द, दृ=फाड़ना) पु० एक जानवर का नाम।

प्रा० छुछूँदरछोड़ना- बोल० चुगली खाना, कलङ्क लगाना, बुराई

करना, निंदा करना, भड़काना-बहकाना।

प्रा० छुट-(सं० छुट्=जुदा २ करना क्रि० वि० सिवाय, २ छोटा) गु० छोटा, थोड़ा।

प्रा० छुटकारा-(छूटना)पु०छुड़ाव, उद्धार, मुक्ति, मोक्ष, रिहाई।

प्रा० छुट्टी-स्त्री० छुटकारा, रुखसत, अवकाश, फुरसत, समय।

सं० छुड-(छेदना) पु० आच्छादन, आवरण, नीच,स्वल्प, मिथ्यावादी, तुच्छ, पेच, फेर, किरण, भूषण।

प्रा० छुडौती-(छुड़ाना) स्त्री० छुड़ाने का मोल। [चूना, नींबू।

सं०छुर-पु० छुरा छुरा स्त्री० छूरा,

सं० कारिका } (छुर्=काटना)स्त्री०
छूरी } चक्कू, चाकू।

प्रा० छुहारा-पु० खजूर, एक फल का नाम।

प्रा० छूछा-गु० खाली, खोखला, शून्य, वृथा, निष्फल, पु० टोना टोटका, जादू।

प्रा० छूट-(छूटना) स्त्री० छोड़ना, बट्टा, छुड़ाव।

प्रा०छूत (छूना) स्त्री० छूना, अपवित्रता, किसी से छूआ जाना।

सं० छूद-(छूद्=प्रकाशकरना) पु० प्रकाश, दीप्ति, वमन, विलाप, गु० प्रकाशक, प्रकाशवान्।

प्रा० छेंकना- क्रि० स० रोकना, अटकाना, घेरना,

प्रा० छेड़-(छेड़ना) स्त्री० खिजावट, सताना।

प्रा० छेडछाड } बोल० टोकटाक,
छेडखानी } ताना, खिजावट, टेढ़ीबात।

सं० छेद-(छिद्=काटना)पु०काटा हुआ, भिन्न का हर, भाग।

प्रा० छेद-(सं० छिद्र) पु० गड्हा, खड्डा, मांद।

प्रा० छेदना-(सं० छेदन, छिद्=काटना, क्रि० स० बेधना, पारकरना, धसाना, चुभाना, नाथना।

प्रा०छेनी-स्त्री०रुखानी,टांकी,छेदनी।

सं० छेमण्ड-पु० मुरहा, माता पिता रहित बालक, यतीम, बेवारिस, अनाथ।

प्रा० छेरी-(सं० छागी,छो=काटना) स्त्री० बकरी।

प्रा० छेवा-(सं० छेदन, छिद्=काटना) पु० चिह्न, लकीर।

प्रा० छैल } पु० बांका,अकडैतचि-
छैला } कनिया।

प्रा०छैलाचिकनियां-बोल०बांका, छैला।

प्रा० छोकरा-पु० लड़का, बालक।

प्रा० छोकरी-स्त्री०लड़की, कन्या।

प्रा० छोटा-(सं० क्षुद्र)गु० लघु, लहुरा, कनिष्ठ।

सं० छोटिका-(छुट्+इका) स्त्री० उच्छाल, स्पर्श, छूना, अंगुष्ठ, अंगूठा, कोपीन, लँगोटा, कछौटा, कछौंट।

प्रा० छोर-पु० अन्त, किनारा।

सं० छोरण-(छुर्+अन,छुर्=छेदना) पु० त्याग, पैना करना, कर्तन, काटना।

सं० छोरंग-पु० नींबू, खट्टा, चूना, सफ़ेदी, सफेदा, करौंदा।

प्रा० छोह-(सं० क्षोभ) पु० प्यार, स्नेह, मोह, प्रीति।

प्रा० छोही-(छोभ) गु० प्रेमी, प्यारा, स्नेही, अनुरागी।

प्रा० छौना-पु० जानवर का बच्चा।

ज

सं० ज-(जन्=पैदा होना, वा, जि=जीतना) पु० शिव, २ विष्णु, ३ जन्म, ४ माता पिता, उत्पत्ति, सुरमा, अंजन, शेप, राक्षस, जीव, शरीर आदि।

प्रा० जक-पु० गाड़ाधन का रक्षक।

प्रा० जकड़ना-क्रि० स० कसना, कस के बांधना, खींचना, बॉधना, तानना।

प्रा० जग-(सं० जगत्) पु० संसार, जगत्, दुनियां, जंगम, वायु।

प्रा० जग-(सं० यज्ञ) पु० यज्ञ, बलि, २ उत्सव, पर्व।

प्रा० जगजगाहट-स्त्री० चमक, चमकाहट, प्रकाश, उजलाई।

प्रा० जगजागी-स्त्री० संसार में विदित हुई, दुनियां में जाहिर हुई।

सं० जगत्-(गम्=जाना) पु० संसार, जग, दुनियां।

सं० जगती-(गम्=जाना) स्त्री० पृथ्वी, धरती, २ लोग।

सं० जगदम्बा-(जगत्=संसार, अम्बा=मा) स्त्री० जगमाता, महामाया, देवी, दुर्गा।

सं० जगदाधार-(जगत्=संसार, आधार=आसरा,) पु० अनन्त, शेषजी, संसार का आसरा, २ हवा, वायु।

सं० जगदीश-(जगत्=संसार, ईश=स्वामी) पु० परमेश्वर, संसार का कर्ता जगन्नाथ, विष्णु।

प्रा० जगना-(सं० जागरण, जागृ=जागना) क्रि० अ० नींद से उठना, सचेतहोना, जागना।

सं० जगन्नाथ-(जगत्=संसार, नाथ=स्वामी) पु० विष्णु, जगदीश, जगत्पति, जगन्नाथ का मंदिर उड़ीसा में जगन्नाथपुरी में है जहां बहुत से यात्री जाया करते हैं।

प्रा० जगमगा-गु० चमकीला, चमकदार, झलाझल।

प्रा० जगमाता-(सं० जगन्माता जगत्=संसार, माता=मा) स्त्री० संसार की मा, जगदम्बा, देवी दुर्गा, सरस्वती।

प्रा० जगह } स्त्री० ठौर, स्थान,
जागह } ठिकाना।

प्रा० जगहछोड़ना-बोल० कागज में कुछ जगह बिन लिखी रखना।

प्रा० जगहसिरखरचना-बोल० मौके पर खर्च करना, यथोचित खर्चना, जहां चाहिये वहां खरचकरना

प्रा० जगह सिर होना-बोल० किसी काम परहोना, ठीक होना, यथोचित होना, जैसा चाहिये वैसा होना।

प्रा० जगाज्योति-(सं० जाग्रज्ज्योतिः) स्त्री० चमक, भड़क, जगजगाहट, बहुत अथवा बड़ी जोत।

सं० जङ्गम-(गम्=जाना)गु० चलने वाला, जिसमे चलने की शक्ति हो २ पु० योगी जिनके सिर पर जटा होती है और छोटी घंटी को बजाया करते हैं और महादेव के भजन गाया करते है। (झाडी।

सं० जङ्गल-(गल्=गिरना) पु०,बन

प्रा० जङ्गली-(सं० जङ्गल)गु०बनैला, बनवासी।

सं० जग्ध-(अद्=भोजन करना। भूभै० पु० भुक्त, खायागया।

सं० जग्धि-(अद्+ति) भा० पु० भोजन।

सं० जघन-(हन+घन) पु० स्त्रियो के कटि का अग्र भाग, जंघा, कटि हौंन, कटिदेश, ऊरुस्थल।

सं० जघन्य-(जघ+न्य)भै०पु०अधम, नीच, पिछला।

सं० जघन्यज-पु० कनिष्ठ,शूद्र,अधम

सं० जङ्घा-(हन्=टेढ़ा जाना, वा जन्=पैदा होना) स्त्री० जांघ, जानु, जानू।

प्रा० जचना-क्रि० स० अटकलहोना नजरमें खटाना।

प्रा० जचावट-(जांचना) भा०स्त्री० जांच, परख।

प्रा० जंजाल-(सं० जनजाल, जन्=मनुष्य, जाल=फंदा) पु०उलझेडा, उलझाव, कलेश, झंझट, घबराहट, व्याकुलता, कठिनता।

सं० जटा-(जट्=इकट्ठाकरना) स्त्री० बालों का जूडा, बिखरे बाल, मिले हुयेबाल, २ जड़, वृक्ष की जड़।

सं० जटाजूट-(जटा+जूट=जूड़ा) पु० जटाका जूड़ा, जटा का बंध।

सं० जटाधारी-(जटा+धारी=रखने वाला, धृ=रखना)पु० शिव, रखने वाला।

सं०जटामांसी-(जटा, मन्

स्त्री० एक औषध का नाम।

सं० जटायु-(जटा और या=जाना, वा जट=बहुत, आयु=उमर (-जिसकी) पु० एक गीध का नाम जिसका वर्णन रामायण में है।

सं० जटित-(जट्=मिलाना, जोड़ना) स्र्म० जड़ाऊ, जड़ा हुआ।

सं० जटिल-(जटा) गु०जटावाला, जटाधारी, पु० सिंह, २ ब्रह्मचारी, ३ शिव।

सं० जठर-(जन्=पैदा होना) पु० पेट, उदर, गर्भ, कोख, गु० कठोर, दृढ़, २ बूढ़ा।

सं० जठराग्नि } (जठर=पेट, अग्नि
जठरानल } वा अनल=आग)
स्त्री० पेट की आग जिससे खाना पचता है, २ भूख, ३ पेट का रोग।

सं० जड़-(जल्=ढकना) पु० मूर्ख, सुस्त, ठंढा, अज्ञानी, निर्बोध, गावदी, भकुआ।

प्रा० जड़--(सं० जटा, जट्=इकट्ठा करना) स्त्री० मूल, कारण, नेंव, ठहराव।

प्रा० जड़ना-(सं० जटन, जट्=मिलाना) क्रि० स० मारना, झट कारना २ जोड़ना, लगाना, साटना। ३ नग बैठाना, खोद कर बनाना।

प्रा० जड़ पेड़--स्त्री० मूल समेत पेड़ [illegible]।

प्रा० जड़पेड़सेउखाड़ना--बोल० उखाड़ डालना, जड़ से खोद डालना, मूल समेत उखाड़ डालना।

सं० जड़मति(जड़+मति) स्त्री० निर्बुद्धि, बेवकूफ।

प्रा० जड़हन-पु० अगहनी धान।

प्रा० जड़ाई--(जड़ाना) भा० स्त्री० जड़ाने का मोल, जड़ाने का काम।

प्रा० जड़ाऊ--गु० जड़ित, जड़ाहुआ।

प्रा० जड़ित--(सं० जटित) स्र्म० पु० जड़ा हुआ। [जौहरी।

प्रा० जड़िया--क० पु० जड़नेवाला,

प्रा० जड़ी--(सं० जटा) स्त्री० औषधी की बेल की जड़।

प्रा० जड़ीबूटी--स्त्री० दवाई, लकड़ी, बेली।

प्रा० जतन--(सं० यत्न) पु० उपाय, उद्योग, परिश्रम, मिहनत, २ इलाज।

प्रा० जताना--(सं० यत्=यतन करना) क्रि० स० चिताना, बुझाना, बताना, बतलाना चेतना, सुध करना, २ प्रकट करना।

प्रा० जती--(सं० यति) पु० जितेंद्रिय, संन्यासी, भिखारी, योगी।

सं० जतुक--पु० लाख, हींग।

प्रा० जथा--(सं० यथा) क्रि० वि० [illegible] से, जिस प्रकार से।

प्रा० जत्था--(सं० यूथ) पु० मंडली, [illegible]

समूह, समाज, टोली, झुंड ।

प्रा० जत्थाबाँधना-बोल० झुण्ड बनाना, गोल बांधना ।

सं० जन-(जन्=पैदाहोना) पु० मनुष्य, लोग, आदमी, मनुष्य जाति व्यक्ति, २ दुष्ट वा नीच मनुष्य ।

सं० जनक-(जन्=पैदाकरना) क० पु० बाप, पिता, २ मिथिला के राजा और सीताके बाप का नाम ।

सं० जनकतनया / जनकसुता (जनक=एक राजा का नाम, तनया वा सुता=बेटी) स्त्री० सीता, जानकी ।

सं० जनकपुर-(जनक=एक राजा का नाम, पुर=शहर) पु० तिरहुत में एक शहर है जो राजा जनक की राजधानी था । [नक का ।

प्रा० जनकौरा-(सं० जनक) पु० ज-

सं० जनता- स्त्री० जनसमूह, मनुष्य समूह ।

प्रा० जनना-(सं० जनन, जन्=पैदा होना) क्रि० अ० जन्म होना पैदा होना ।

सं० जननी-(जन्=पैदा होना) स्त्री० मा, मैया, माता, महतारी ।

सं० जनपद-(जन+पद) पु० देश, ग्राम, लोक, जाति, क़ौम, जनस्थान।

सं० जनप्रवाद-पु० किंवदन्ती, अफ़वाह, बदगोई, मज़म्मत, शुहरत, ख़बर, कलङ्क ।

सं० जननीय-(जन्+अनीय) कर्म० संतान, उपजायागया, पैदा किया हुआ ।

सं० जनमेजय-(जन=संसार, एज=चमकना, वा जन्=दुष्ट लोग, एज्=कंपाना) पु० राजापरीक्षितका बेटा ।

सं० जनयिता (जन्+इ+तृ, जन् पैदा करना) क० पु० पिता, जनक, बाप, जन्मदाता।

सं० जनयत्री (जनयितृ+ई) क० स्त्री० माता, जननी, मा, महतारी ।

सं० जनलोक-(जन=मनुष्य, लोक=जगह) पु० सात लोकों में का एक लोक जहां धर्मात्मा मनुष्य मरने के पीछे रहते हैं ।

प्रा० जनवासा-(सं० जन्यवास, जन्य=दुलहेके मित्रआदि, वास=जगह) पु० बरातियों के उतरने की जगह।

सं० जनाश्रय-(जन=मनुष्य, आश्रय=अवलंब) पु० विश्रामस्थान, टिकासरा, २ अधिकार, मन्त्री ।

सं० जनश्रुति-(जन=मनुष्य, श्रुति=सुनी हुई) स्त्री० ख़बर, समाचार, किंवदन्ती, संदेशा, अफ़वाह ।

प्रा० जनाना-(जनना) क्रि० स० पैदा करना, जन्माना, २ (जानना) चिताना, जताना, चेताना, बुझाना ।

प्रा० जनाव-(जनाना) भा० पु० सैन, संकेत, लखाव, चेताव, सुनगुन ।

फ़ा० जनाब-अन्नभवान्, हुज़ूर, उच्चस्थान ।

सं० जनार्दन–(जन=दुष्ट लोग, अ- र्द=पीड़ा देना, मारना, वा जन मनुष्यों से, अर्द जाचा जाना अ र्थात् जिससे मनुष्य जाचते हैं)पु० विष्णु, भगवान्, नारायण।

प्रा० जनि / जिन } क्रि० वि० मत, नहीं।

सं० जनि–(जन्+इ) भा०स्त्री०ज- न्म, पैदाइश उत्पत्ति।

सं० जनित–(जन्=पैदा होना) र्म० पु० पैदाहुआ, उत्पन्न, भया, जन्मा।

सं० जनुस्-पु० उत्पत्ति, पैदाइश, स्त्री० जनु, उत्पत्ति, जनन।

प्रा० जनेऊ-(सं० यज्ञोपवीत)पु० सूत का तार जिसको तीन वर्ण के लो- ग गले में पहनते है, उपवीत, यज्ञो पवीत—२ जनेऊ जैसा चिह्न जो हीरे आदि रत्नों में होता है।

प्रा० जनेत--(सं० जन्य)पु० बराती, स्त्री० बरात।

प्रा० जञ्जाल–पु० झगड़ा, बखेड़ा, सांसारिक कार्यों का समूह।

प्रा० जन्ता–(सं० यंत्र) पु० तार खींचने का औज़ार।

सं० जन्तु--(जन्=पैदा होना) पु० जीवधारी, प्राणी, जीव, जानवर, पशु, देहधारी. देही।

प्रा० जन्त्र--(सं० यंत्र) पु० कल, २ बाजा, ३ गंडा, तावीज़, जन्तर, टोटका।

सं० जन्म–(जन्=पैदा होना) पु० उत्पत्ति, पैदा होना, पैदाइश।

सं० जन्मद– (जन्म + द=देनेवाला, दा=देना) पु० जन्मदाता, बाप, पिता।

सं० जन्मदिन–(जन्म + दिन)पु० पैदा होने का दिन, बरस गांठ, बरसवांदिन, सालगिरह।

सं० जन्मपत्री--(जन्म + पत्री) स्त्री० लग्न कुंडली, जन्मपत्र, जायचा।

सं० जन्मभूमि–(जन्म+भूमि)स्त्री० अपना देश, उत्पत्तिस्थान, वतन।

सं० जन्मान्तर-- (जन्म=पैदाइश, अन्तर और)पु० दूसराजन्म, नया जन्म, पुनर्जन्म, फिर जन्मना।

सं० जन्मान्ध– (जन्म + अन्ध) गु० जन्म का अन्धा, सूरदास।

सं० जन्माष्टमी--(जन्म + अष्टमी) स्त्री० श्री कृष्ण का जन्म दिन भादों वदी ८।

सं० जन्मोत्सव--(जन्म + उत्सव) पु० जन्मदिन का उत्सव, २ जन्मा ष्टमी के दिनका उत्सव।

सं० जन्य–(जन्=पैदाकरना) र्म० पु० संग्राम, निन्दितवाद तत्काल कालीन, हट्ट, उत्पाद्य सेवक भृत्य मित्र, ज्ञाति, बाप, २ दुलहे के मित्र और साथी आदि।

सं० जप--(जप्=जपना) पु० परमेश्वर का नाम लेना, माला फेरना, मंत्र पाठ।

प्रा० जपत-(सं० जपित, जप्=जपना) म्ध्य० जपता हुआ, माला फेरता हुआ।

सं० जपमाला-(जप+माला) पु० सुमिरना, जप करने की माला, माला।

प्रा० जब, जद (सं० यदा, यद्=जो) क्रि० वि० जिससमय, जिस काल में।

प्रा० जबतक, जबतलक, जबतोंडी क्रि० वि० जबलग, जबलों, जिससमय तक।

प्रा० जबतब-बोल० कभीकभी।

प्रा० जबजब--बोल० जब कभी।

प्रा० जबनतब--बोल० कभी न कभी, सदा।

प्रा० जबड़ा--पु० जभा, चौहड़, जभड़ा।

प्रा० जमकना--क्रि० अ० ठहरना, निभना।

प्रा० जम--(सं० यम) पु० यमराज, काल, मौत।

प्रा० जमदूत-(सं० यमदूत) पु० मौतकेदूत।

प्रा० जमदीया-(सं० यमदीपक) पु० जो दिया कातिक बदी १३ को जम के नाम से बलाते हैं।

प्रा० जमघट-(यम=रोकना, घट=शरीर, जहां बहुत भीड़ से आदमी चलने से रुक जाते हैं) पु० मंडली, भीड़ भाड़, झुंड।

प्रा० जमधर--(सं० यमधार, यम=मौत, धार=तीखीनोक) पु० कटार।

प्रा० जमना--(सं० जन्=पैदाहोना) क्रि० अ० उगना, उपजना, पनपना, बढ़ना, २ दृढ़ होना, गाढ़ा होजाना, ठोस हो जाना (जैसे पाला अथवा घी) ३ इकट्ठा होना, ४ ठीकबैठना, लगना सटना।

प्रा० जमहाई--(सं० जृम्भा, जृम्भ्=जम्हाना) स्त्री० आलस में आकर मुंह खोलना, आलस्य, सुस्ती।

प्रा० जमहाना-(सं० जृम्भ्=जमहाना) क्रि० अ० मुंहखोलना, जमहाईलेना।

प्रा० जमाई, जंवाई (सं० जामाता) पु० दामाद, बेटी का पति।

प्रा० जमालगोटा--पु० एक दवा का नाम, दतुइनिया।

प्रा० जमुना, जमन, जमना (सं० यमुना) स्त्री० एक नदी का नाम।

सं० जम्बु, जम्बू (जम्=खाना) पु० जामन।

सं० जम्बुक } (जम्=खाना) पु० गीदड़, सियाल,
जम्बूक } शृगाल।

सं० जम्बुद्वीप } (जम्बु वा जम्बू
जम्बूद्वीप } जामन, द्वीपखंड) पु० सात द्वीपों में का पहला द्वीप, जिस में नौ खंड हैं उसका यह भरतखंड अथवा हिंदुस्थान एक खंड है, (द्वीप शब्द को देखो)

सं० जय--(जि=जीतना) भा० स्त्री० जीत, विजय।

सं० जयजयकार-बोलवाला, फतेह।

सं० जयपताका--(जय+पताका) स्त्री० जीतकाझंडा, फतेहकानिशान।

सं० जयपत्र- पु० जीतनेकापत्र अश्वमेध यज्ञ, दस्तूरुल्अमल, मोग्राम।

सं० जयन्त--(जि=जीतना) पु० इन्द्र का बेटा।

सं० जयमाल--(जय=जीत, माल=माला) स्त्री० जीत की माला, स्वयम्बरमें लड़की जिसको पसन्द करके उसके गले में जो माला डालती है वह भी जयमाल कहलाती है। [ला, विजयी, जयवान्।

सं० जयी--(जय) कृ० पु० जीतनेवा-

प्रा० जर--(सं० ज्वर) स्त्री० तप, ताप, ज्वर, २ (मड़) जड़, मूल।

सं० जरठ--(जृ=बूढ़ा होना) गु० बूढ़ा, वृद्ध, पुराना, २ कठोर, कठिन, क्रूर।

सं० जरत }
जरी } कृ० पु० बूढ़ा, वृद्ध।

सं० जरती-स्त्री० बुढ़िया, वृद्धा।

प्रा० जरनी (जलना) स्त्री० जलन, चिंता, फिकर।

सं० जरा--(जृ=बूढ़ा होना) स्त्री० बुढ़ापा, वृद्धावस्था, २ एकराक्षसी का नाम।

सं० जरायुज--(जरायु+ज) कृ० पु० पिण्डज, मनुष्यादि।

सं० जरासन्ध--(जरा एकराक्षसी का नाम, सन्ध=जोड़ा हुआ) पु० मगध देश का प्रसिद्ध राजा जो कंस का ससुर श्रीकृष्ण का वैरी था। कहतेहैं कि जब वह जन्मा था तब उसके शरीर की दो फांकें थीं जिन को जरा नाम राक्षसी ने जोड़ा और उस ने यह वर दिया कि जब तक इसके जोड़ न फटेंगे यह किसी से न मरेगा पर इसी तरह से भीम ने उसको चीरडाला।

अ० जरीब--स्त्री० खेत नापने की डोरी जो ६० गज अथवा २० लट्ठे की होती है।

सं० जर्जर--(जृ=पुराना होना) गु० पुराना, जीर्ण, निर्बल, पु० इन्द्र

झंडा, शैवाल, सिवार, इन्द्र धनुष्।

सं० जल- (जल्=ढकना) पु० पानी।

सं० जलक--पु० बराटिका, कौड़ी, शुक्तिका, सूती, शंख, घोंघा।

सं० जलकरङ्क-- पु० शंख, घोंघा, बराटिका, नारियलका फल दूधयुक्त, सिवार, काई।

सं० जलकाक-पु० गोताखोर, वनक, पनडुब्बी।

सं० जलकुक्कुट--(जल=पानी, कुक्कुट=मुर्गा) पु० जलमुर्गा, मुर्गावी।

सं० जलकूपी--स्त्री० तड़ाग, हौज।

सं० जलगुल्म-- पु० जल भौंर, कछुआ, वर्फ, हिम, पाला।

सं० जलक्रीडा--(जल+क्रीड़ा) स्त्री० पानी में खेल करना।

सं० जलचर-(जल=पानी, चर=चलनेवाला, चर्=चलना) पु० जल का जीव मकर, मछली, ग्राह आदि।

सं० जलचरकेतु--(जलचर=मकर केतु=झंडा, अर्थात् जिसके झंडेपर मकर का चिह्न है) पु० कामदेव, मदन, मकरध्वज।

सं० जलज--(जल=पानी, ज=पैदा होनेवाला, जन्=पैदा होना) पु० कँवल, कमल, पंकज, २ मछली, ३ शंख, ४ चन्द्रमा, ५ मोती।

सं० जलजात- (जल=पानी, जात पैदा हुआ, जन्=पैदा होना) पु० कँवल, कमल।

सं० जलत्र--(जल+त्र, त्र=रक्षा करना) छत्र, छाता, नौका, नाव।

प्रा० जलथल--(सं० जलस्थल) पु० आधी धरती पानी से ढकीहुई और आधी सूखी, दलदल।

सं० जलद-- (जल=पानी, द=देनेवाला, दा=देना) पु० बादल, मेघ, घन, घटा, वारिद, मोथा घास, कलश, घड़ा, गु० पानी देनेवाला।

सं० जलधर--(जल=पानी, धर=रखनेवाला, धृ=रखना) पु० बादल, २ समंदर, ३ एकप्रकार का घास, गु० पानी को रखनेवाला।

सं० जलधारा--(जल=पानी, धारा=धार) स्त्री० झरना, प्रवाह, सोता, स्रोत, पानी का गिरना।

सं० जलधि--(जल=पानी, धा=रखना) पु० समंदर।

प्रा० जलन-- (सं० ज्वलन) स्त्री० जलना, तपन, २ तप, ३ रिस, क्रोध, कुढ़न।

सं० जलनिर्गम- पु० मोरी, पानी का निकास।

प्रा० जलना--(सं० ज्वलन, ज्वल्=जलना) क्रि० अ० बलना, दहना, सुलगना, भड़कना,

-गना, २ क्रोध करना, कोपकरना, कुढ़ना।

प्रा० जलउठना-- बोल० भड़क उठना, जलजाना।

प्रा० जलबुझना-बोल० राख हो जाना।

प्रा० जलेपरनोनलगाना- बोल० दुखिया मनुष्य को फिर सताना।

सं० जलनिधि-(जल=पानी, निधि=खज़ाना) पु०समंदर, सागर।

सं० जलनीली-स्त्री०काई, सिवार।

प्रा० जलन्दर } जलन्धर } (सं० जलोदर, जल=पानी, उदर =पेट) पु० पेटमें पानीका इकट्ठा होना, एक प्रकार का पेटका रोग, २ दैत्य विशेष, ३ जलाशय, कूपादि।

सं० जलपति - (जल=पानी,पति =राजा) पु० वरुण देवता,२ समंदर।

सं० जलपान--(जल=पानी,पान= पीना)पु०कलेवा,कलेऊ,नाश्ता।

सं० जलयान-(जल=पानी, यान =सवारी)पु०नाव, नौका, जहाज़।

सं० जलराशि-(जल=पानी, राशि =ढेर) पु० समुद्र।

सं० जलरुह-(जल=पानी, रुह= उगना)पु० कँवल।

सं० जलत्राण-(जल=पानी,त्राण= [illegible]र) पु० प.नांके नदि।

सं० जलबिन्दु- पु० पानीका बूंद।

सं० जलविहङ्ग- पु० जलपक्षी।

सं० जलशायिन- (जल+शायिन, शी=सोना) क० पु० विष्णु,जलचर।

सं० जलाकर- (जल+आकर) पु० सोत, झरना।

सं० जलाञ्चल-(जल+अंचल)पु० झरना, नाला, सोता।

सं० जलाशय-(जल=पानी,आशय =जगह) पु० तालाब, झील, सरोवर, समंदर।

प्रा० जलेबी- स्त्री० एक प्रकार की मिठाई।

सं० जलौका-(जल=पानी,ओक= वास) स्त्री० जोंक, जलिका, जलुका।

सं० जल्प- (जल्प=वृथा बकना) वृथाबकवाद, झूठाझगड़ा, वाद।

सं० जल्पक- (जल्प्+अक) क० पु० वावदूक, वाचाल, फजूलगो, गप्पी,बकवादी।

सं० जल्पना- (सं०जल्पन,जल्प= बकना) क्रि० अ० बकना,बोलना, वृथा बकवाद करना, झूठा झगड़ा करना।

सं० जल्पित-(जल्प्,वृथाबकना) भू० पु० बकतेहुये, बकवाद करते हुये।

प्रा० जव } (सं० यव) पु० एक अ-
जौ } नाज का नाम।

सं०जवनिका--(जु=जाना, जिसमें) स्त्री० परदा, क़नात, काई।

प्रा०जवान--(सं०युवन्,यु=मिलना) पु० तरुण,सोलह बरसकी उमरका।

प्रा०जवार--पु० समंदर की बाढ़, २ एक प्रकार का अनाज।

प्रा० जवारभाटा--पु० समुद्र का उतार चढ़ाव।

प्रा०जवासा-(सं०यवास,यु=मिलना) पु० एक प्रकार की घास जिसकी गर्मी के दिनों में टट्टी बनाई जाती हैं और इस पर बरसात का पानी गिरने से सूख जाता है।

प्रा०जस--(सं० यश) पु० कीरति, नामवरी।

प्रा०जस--क्रि०वि० जैसे, जिसप्रकार से।

प्रा० जसोदा } (सं०यशोदा)स्त्री०
जसुमति } नन्दजी की स्त्री, श्री कृष्ण की दूसरी मा।

प्रा० जस्त } पु० रांगा, एक प्रकार
जस्ता } की धातु।

सं०जहक--(ज+हक,हाक=छोड़ना) पु० समय, बालक केंचुल गु० त्यागी, छोड़नेवाला।

प्रा० जहँ } (सं० यत्र)क्रि०वि०जिस
जहां } जगह।

प्रा०जहांतहां--बोल० हर एक जगह, सब ठौर।

प्रा०जहांकातहां--बोल० जहां था वहीं, उसी जगह।

प्रा० जहांजहां--बोल० जिस जिस जगह।

प्रा० जहांकहीं-बोल० चाहे जहां, किसी जगह।

प्रा०जहांतहांफिरना--बोल० भटकना, इधर उधर फिरना।

सं०जह्नु-पु०चन्द्रवंशियोंमें एक राजर्षि का नाम जो गंगाको उतरनेके समय पीगया था (पुराणोंके अनुसार)।

सं० जह्नुतनया--(जह्नु+तनया=बेटी) स्त्री० गंगा, कहते हैं कि जब जह्नु राजा तप करते थे तब गंगा की धारा से व्याकुल हुए तो गंगा को पी गये फिर देवताओं के कहने से पीछे पेट से निकाल दी इस लिये गंगाको जह्नुकी बेटी कहते हैं।

प्रा०जाई-(सं०जाता, जन्=जन्मना) स्त्री० बेटी, लड़की, जनी, गु० पैदा हुई, २ (सं० जाती) चमेली।

प्रा०जांघ-(सं०जङ्घा)स्त्री०रान,जंघा।

प्रा०जांघिया--(जांघ) पु० कछनी।

प्रा०जांचना--क्रि० स० परखना, अटकलना, कसना।

प्रा०जांता--(सं० यंत्र)स्त्री० चक्की, पाट, पेषणी।

प्रा०जाकड़--पु० बन्धक, धरोहर, कोई चीज़ शर्त पर लेना।

प्रा० जागना--(सं० जागरण, जागृ=जागना) क्रि० अ० नींद से उठना, सचेतहोना।

सं० जागर, जागरण } (जागृ=जागना)भा० पु० रतजगा, जगौती, रात को जागकर परमेश्वर का ध्यान करना।

सं० जागरित, जागरिता, जागरी, जागरूक, जाग्रत् } क० पु० जगैया, निद्रोत्थित, सचेत, बेदार।

सं०जाङ्गल-पु०गौरवापक्षी,गरगौटा।

प्रा०जाचक-(सं०याचक)पु०मांगनेवाला, भिखारी, याचनेवाला।

प्रा०जाचना--(सं० याचन) क्रि० स० मांगना, चाहना।

प्रा०जाजम--स्त्री० शतरंजी, दरी, बिछौना।

प्रा०जाट--पु० हिंदुओंमें एक जाति।

प्रा०जाड़ा--(सं०जड़, जल्=ढकना) पु० सर्दी, ठंढ, शीतकाल।

सं०जात--(जन्=पैदा होना) गु० जन्मा हुआ, पैदाहुआ, उत्पन्न।

प्रा०जात--(सं० जाति) स्त्री० जाति, वंश, कुल, वर्ण, गोत, २ प्रकार, भेद, गण, वर्ग।

सं०जातक--(जन्=पैदा होना) पु० बेटा, २ बृहज्जातक आदि ज्योतिष के ग्रंथ, ३ जातकर्म।

सं० जातकर्म--(जात=जन्म, कर्म=काम)पु०जन्मकेसमयकी एकरीति।

प्रा०जातपांत--(सं० जातिपंक्ति) स्त्री० वंशावली,वंश, उत्पत्ति,पीढ़ी।

सं०जातरूप--पु० सोना, चांदी।

सं०जाति--(जन्=पैदा होना)स्त्री० जात, वर्ण, गोत्र, वंश, २ उत्पत्ति।

सं०जातकर्म-पु०नांदीमुखश्राद्धादि।

सं०जाती--(जन्=पैदा होना) स्त्री० चमेली, जावित्री।

सं० जातीफल--पु० जायफल।

सं०जातुधान--(जातु=कभी, धान=पास, अर्थात् जो समय पाकर मनुष्यों के पास आ जाता है) पु० राक्षस, असुर।

प्रा० जात्रा-- (सं० यात्रा) स्त्री० तीरथको जाना,देशाटन, सफर,कूच।

प्रा०जात्री--(सं० यात्री) पु०यात्रा करनेवाला, तीरथ को जानेवाला, मुसाफिर।

फ़ा० जान--रूह, जीव, आत्मा।

सं०जानकी--(जनक राजा का नाम) स्त्री०जनक राजाकी बेटी, सीता, वैदेही, श्रीरामचन्द्रकी पत्नी।

प्रा० जानना-(सं० ज्ञान, ज्ञा=जानना) क्रि० स० समझना, बूझना, पहचानना, जानबूझ के, बोल० मन से, जीसे, समझ बूझ कर ।

प्रा० जाना--(सं० यान, या=जाना) क्रि० अ० गमन करना, चलना, बीतना, पहुँचना, जारी रहना, चला जाना ।

प्रा० जातारहना-बोल० खोयाजाना, चलाजाना, अदृश्यहोना, अलोप होजाना, मर जाना, चंपत होना, बिलाय जाना ।

प्रा० जानेदेना--बोल० छोड़ देना, क्षमाकरना, कुछ ध्यान नहींकरना ।

सं० जानु--(जन्=पैदा होना) पु० घुटना, टखना, टेंवना, ऊरू, जानू ।

सं० जाप--(जप्=जपना) कृ० पु० जप रटना, माला फेरना, मंत्र जपना ।

सं० जापक-(जप्=जपना) कृ० पु० जप करनेवाला, जपनेवाला ।

प्रा० जाम--(सं० याम) स्त्री० पहर, दिन रात का आठवां भाग, तीन घण्टा ।

प्रा० जामन-(सं० जम्बु, जम्=खाना) पु० एकपेड़ और उसके फलका नाम ।

सं० जामाता--(जाया=पत्नी, मा=आदर करना) पु० जमाई, बेटी का पति, दामाद । [रात, रात्रि ।

प्रा० जामिनी--(सं० यामिनी) स्त्री०

प्रा० जाम्बवन्त--(सं० जाम्बुवन्त, जाम्बु=जामन, वत्=वाला) पु० रीछों का राजा जो श्रीरामचन्द्र का मित्र और श्रीकृष्णका ससुरथा ।

सं० जाम्बूनद--पु० सुवर्ण, स्त्री० जाया, विवाहिता स्त्री ।

प्रा० जायफल-- (सं० जातिफल) पु० एक तरह का गर्म मसाला ।

प्रा० जाय--क्रि० वि० वृथा ।

सं० जाया--(जन्=पैदा होना) स्त्री० भार्या, पत्नी, ब्याही हुई स्त्री ।

सं० जायानुजीवी-- (जाया+अनुजीवी) पु० नट, वेश्यापति, भडुआ, बकपक्षी ।

सं० जायापती--दंपती, स्त्री पुरुष ।

सं० जार--(जॄ=दुबला होना, अर्थात् स्त्री के सच्चे पति का प्यार घटानेवाला) पु० यार, दूसरा पति, उपपति ।

सं० जारज-(जार=यार, जन्=पैदा होना) पु० जार से पैदा हुआ लड़का, हरामी बेटा ।

प्रा० जारना--(सं० ज्वलन) क्रि० स० जलाना, सुलगाना, भड़काना, आंच लगाना ।

सं० जाल--(जल्=ढकना, घेरना) स्त्री० फंदा, पाश, २ जालीदार खिड़की, झरोखा, ३ माया, इंद्रजाल, जादू, ४ समूह ।

सं० जालक--(जाल्+अक) कृ० पु० फरेबी, मक्कार, २ मछली का

स्त्री० ३ जाली लोट कपड़ा, ४ शिलाजीत, ५ जोंक, ६ राँड़, रँडा, ७ झिल्लम, बख्तर, ८ व्याध, बहेलिया, मल्लाह। [मथनी, रयी।

सं० जालगर्णिका-- स्त्री० मथेनी,

प्रा० जाला--(सं० जाल, जल्=ढकना) पु० मकड़ी का फांदा, २ मोतियाबिंद, आंख की बीमारी।

प्रा० जाली--(सं० जाल) स्त्री० एक तरहका कपड़ा, २ झंझरी, जालीदार, खिड़की, झरोखा।

सं० जाल्म--पु० जार, धूर्त, पामर, अधम, क्रूर, ढीठ।

प्रा० जावक--(सं० यावक, यु=मिलना) पु० महावर, अलता।

प्रा० जावित्री } (सं० जातीपत्री)
जायपत्री } स्त्री० एक प्रकार का गर्म मसाला।

प्रा० जासु--(सं० यस्य) सर्वना० जिस का, जिस से।

प्रा० जाहि--सर्वना० जिस को।

सं० जाह्नवी--(जह्नु एक राजर्षिका नाम) स्त्री० गंगा, भागीरथी, (जह्नुतनया देखो)।

सं० जिगमिषा (गम्=जाना) भा० स्त्री० गमनेच्छा, जानेका इरादा।

सं० जिगीषा-(जि=जीतना) भा० स्त्री० जीतने की इच्छा, जय की इच्छा, हिमका।

सं० जिघत्सा--(अद्=भक्षणकरना) भा० स्त्री० भोजनेच्छा, खाने का इरादा।

सं० जिघत्सु--(अद्=खाना) क० पु० बुभुक्षु, भोजन करने की इच्छा करने वाला।

सं० जिघांसा--(हन्=मारना) भा० स्त्री० मारने की इच्छा करना।

सं० जिघांसु--(हन्=मारना) क० पु० मारने की इच्छा करने वाला।

सं० जिज्ञासा--(ज्ञा=जानना) भा० स्त्री० जानने की इच्छा, पूछना, प्रश्न।

सं० जिज्ञासु- क० पु० पूछनेवाला।

प्रा० जित--(सं० यत्र) क्रि० वि० जहां, जिधर, २ जीतागया, हाराहुआ।

सं० जितेन्द्रिय--(जित=जीतली वा वश करली, इंद्रिय इन्द्रियां, जिस ने) गु० इन्द्रियजित्, जिसने इन्द्रियों को वश में कर लिया हो, ऋषि, मुनि, यती, संन्यासी।

सं० जिन--(जि=जीतना) पु० बुद्ध, जैनियो का देवता, जैनमत में २४ जिन हुए वतलाते हैं।

फ़ा० जिन्स--जात, क़ौम।

प्रा० जिमाना--(सं० जेमन, जिम्=खाना) क्रि० स० खिलाना। [प्रकार।

प्रा० जिमि--क्रि० वि० जैसे, जिस

प्रा० जिय } (सं० जीव) पु० जीव,
जियरा } प्राण, आत्मा, रूह।

प्रा० जियाना (सं० जीवन) क्रि० स० जिलाना, प्राणदेना, २ पालना, पोषना।

प्रा० जिहिं--सर्वना० जिनको, जिस को, जिसके, जो।

सं० जिह्वा--(लिह्=स्वाद लेना) स्त्री० रसज्ञान इन्द्री, जीभ, रसना।

प्रा० जी--(सं० जीव) पु० जीव, प्राण, आत्मा, जिय, २ मन चित्त।

सं० जिह्वल--क० पु० चटोरा, आस्वादक, जिभोर।

प्रा० जीउठाना--बोल० मन खींच लेना, किसी से मित्राई छोड़ देना।

प्रा० जीबुराकरना--बोल० जीमिचलाना, वमन करना, या किया चाहना, रद्द किया चाहना।

प्रा० जीबढ़ाना--बोल० मन में किसी चीज की चाह पैदा होना, जी में उत्साह होना, हौसिला होना।

प्रा० जीबिखरना--बोल० अचेतहोना, मूर्च्छित होना, मूर्च्छा आना।

प्रा० जीभरजाना--बोल० सन्तोष होना, मन तृप्त होजाना, आसूदा होना, अघाजाना।

प्रा० जीआजाना--बोल० किसी चीज पर अचानक मन लग जाना, किसी से प्रसन्न होना।

प्रा० जीभरआना--बोल० मन में दया का उपजना, दया हर्ष अथवा शोच से मुँहसे बोल न निकलना।

प्रा० जीबहलाना--बोल० मन बहलाना।

प्रा० जीपाना--बोल० किसी के स्वभाव को जानना।

प्रा० जीपानीकरना--बोल० सताना, दुख देना, खिझाना, पीड़ादेना।

प्रा० जीपरखेलना--बोल० अपने को जोखिम में डालना, जी देने पर उद्यत होना।

प्रा० जीपसीजना } बोल० दया
जीपिघलना } आना, मोह आना।

प्रा० जीपकड़ाजाना--बोल० शोच में होना, उदास होना।

प्रा० जीफटजाना--बोल० दिलटूट जाना, निराश होना।

प्रा० जीफिरजाना--बोल० किसी चीजको नहीं चाहना, सन्तुष्टहोना, तृप्तहोना, किसी चीज से अघा जाना।

प्रा० जीजलना--बोल० मन में दुख पाना, कुढ़ना।

प्रा० जीजलाना--बोल० सहाय करना, कृपा करना, आप दुख सहकर दूसरे का उपकार करना, २ सताना, खिजाना, दिल दुखाना, कल्पाना

प्रा० जीचाहना--बोल० किसी चं

ज की इच्छाकरना, दिललचाना, मन में किसी की चाह पैदा होना।

प्रा०जीछिपाना } बोल० किसी
जीचुराना } काम को सुस्ती से करना, असावधानी करना।

प्रा० जीचलाना-बोल० किसी काम को वीरता से करना।

प्रा० जीचलना--बोल० चाहना, इच्छा करना। [बचाना।

प्रा०जीदान--बोल० बचाना, मरनेसे

प्रा० जीदानकरना--बोल० किसी के प्राण बचाना, बड़े दोषको क्षमा करना, जान बख्श देना।

प्रा०जीधड़कना—बोल०डर से अथवा शोच से दिल धुकड़ पुकड़ करना, दिल कांपना।

प्रा० जीडूबजाना--बोल० अचेत होना, मूर्च्छा आना, जी बिखरना, गशआना, वेहोश होना।

प्रा०जीरखना-बोल० झटपट प्रसन्न होजाना, प्रसन्नकरना, दिल खुशकरना।

प्रा० जीसे उतर जाना--बोल० नहीं चाहना, दिलसे गिरना।

प्रा० जीसे मारना--बोल०मारडालना, जानसे मारडालना।

प्रा० जीकरना } बोल० चाहना,
जीहोना } किसी चीज की चाह मन में पैदा होना।

प्रा०जीखोलकेकुछकरना-बोल० किसी काम को चाह से अथवा प्रसन्नता से करना।

प्रा० जीपरआना--बोल० मुश्किल पड़ना, जी क्लेश में होना।

प्रा० जीघटजाना--बोल० किसी चीज़ से मन हट जाना, घिनाना, अवज्ञा करना, उदास होना।

प्रा० जीलगना--बोल० किसी से प्यार करना, किसी की चाह होना,

प्रा० जीलगाना--बोल०किसी चीज पर मन लगाना, किसी की चाह मनमें पैदा होना।

प्रा० जीलेना--बोल० किसीके मन की बात को जानना, २मारडालना।

प्रा० जीमारना--बोल० किसी की इच्छा को तोड़ना, निराशकरना, अप्रसन्न करना।

प्रा० जीमिलाना--बोल० किसीसे मित्राई करना, मुहब्बत बढ़ाना।

प्रा० जीमेंआना-बोल० कोई बात सूझना, याद पड़ना।

प्रा० जीमेंजलजाना--बोल० डाह से दुख पाना।

प्रा० जीमेंजीआना--बोल० सुख पाना, चैन होना, प्रसन्न होना।

प्रा० जीमेंघरकरना--बोल० मन भाना, किसी को बहुत चाहना।

प्रा० जीनिकलना--बोल० मरना

२ बेकल होना, ३ बहुत डरना।

प्रा० जीहारना--बोल० हिम्मत हारना, घबराना, साहस नहीं रखना, निराश होना।

प्रा० जीहटजाना--बोल० मन हट जाना, जी घट जाना।

प्रा० जी--अव्यय० हां, २ साहिब आप।

प्रा० जीत (सं० जित, जि=जीतना) स्त्री० विजय, जय, फ़तह।

प्रा० जीतना--(सं० जि=जीतना) क्रि० स० जयकरना, पराजय करना, हराना।

प्रा० जीतब--(सं० जीवन वा जीवितव्य) पु० जीना, जीवन, जिंदगी।

प्रा० जीता--(जीना) गु० जीता हुआ, चलता, चैतन्य, २ अधिक, ऊपर।

प्रा० जीतेजी-- बोल० जबतक जीता है।

प्रा० जीना--(सं० जीवन) क्रि० अ० जीता रहना।

प्रा० जीभ--(सं० जिह्वा) स्त्री० जिह्वा, रसना, ज़बान।

प्रा० जीभचढ़ाना--बोल० बातें बनाना, बकबक करना, निंदा करना।

प्रा० जीभपकड़ना-- बोल० चुप होना वा करना, २ किसी की बात काटना, ३ छोटे २ दोषनिकालना।

प्रा० जीभचाटना-- बोल० बड़ी लालसा करना, जी ललचाना, बहुत चाहना।

प्रा० जीभनिकालना-बोल० बहुत ही बहुत थक जाना या प्यासा होना, हाँफना।

प्रा० जीभी--(जीभ) स्त्री० जीभ साफ़ करने की चीज़।

जीमना } (जेवन, जिम्=
जेवना } खाना) क्रि० स० खाना, भोजन करना।

प्रा० जीमूत--पु० मेघ, २ पर्वत, ३ मोथा, ४ दण्डकारण्य, ५ शेष ६ धूम, ७ इन्द्री।

प्रा० जीरा--(सं० जीर, ज्या=पुराना होना) पु० एक मसाले का नाम।

सं० जीर्ण--(जॄ=बूढ़ा होना, पुराना होना) पु० बूढ़ा आदमी, गु० पुराना मुर्झायाहुआ, पचाहुआ।

सं० जीर्णोद्धार--(जीर्ण+उद्धार) मरम्मत, लेसपोत।

प्रा० जील--स्त्री० गाने में ऊंचा स्वर तीखी राग।

सं० जीव-- (जीव्=जीना) पु० प्राण जी, आत्मा, २ जीवधारी जन्तु जानवर, ३ जीविका।

सं०जीवक--(जीव + अक) कृ०पु० सेवक, किंकर, कृपण ।

सं० जीवन-- पु० जीना, जीतव, २ जीविका, वृत्ति, ३ पानी ४ बेटा, पुत्र।

सं० जीवनचर्य्या--जीवन वृत्तान्त, हाल, सवानह उम्री ।

सं०जीविका—स्त्री०जीने का उपाय, आजीविका, वृत्ति, निबाह, रोजी ।

सं जीवित, जीवी } गु० जीताहुआ, जीता, पु० जीना, जीवन, वर्तमान ।

प्रा० जीह, जीहा } (सं० जिह्वा) स्त्री० जीभ, रसना ।

प्रा०जुआरी, जुवारी } (सं०द्यूतकारी) क० पु०जूआखेलनेवाला।

प्रा०जुग (सं० युग) पु० सत्य, त्रेता, द्वापर, कलि ये चार, जुग कहलाते हैं, समय, २ जोड़ा ।

प्रा० जुगानजुग--(सं० युगानुयुगः युग,+अनु+युग) बोल० कई युग, कई वरस, वहुत वरस तक ।

प्रा० जुगजुग--बोल० सदा, नित, सर्वदा, हमेशह ।

प्रा० जुगत--(सं० युक्ति) स्त्री०चतुराई, निपुणता, बनावट, हिकमत

प्रा०जुगनी-स्त्री०चमकनेवाला कीड़ा।

प्रा० जुगल--(सं० युगल) गु० दो, जोड़ा ।

प्रा०युगवना-क्रि० स० देखना, यत्न करना, खबर लेना, रखना, रक्षाकरना।

प्रा० जुगालना, जुगालीकरना } क्रि० अ० उगालना, पागुराना, राउथ करना । रोमंथ।

प्रा० जुगाली--स्त्री० पागुर, उगाल,

सं० जुगुप्सा-(गुप्=निन्दाकरना) भा०स्त्री० निन्दा, बुराई, असूया।

सं० जुगुप्सित--र्म० पु० निन्दित, बदनाम ।

प्रा०जुझाऊ--(सं० युद्धीय, लड़ाई का) गु० लड़ाई का,—जुझाऊबाजा, लड़ाई का बाजा ।

प्रा० जुझार--(सं० योद्धा) क० पु० लड़ाका, वीर, भट, लड़नेवाला, वहादुर ।

प्रा०जुटना-(सं०युक्त, युज्=मिलना) क्रि० अ० भिड़ना, मिलना, लड़ने को सामने होना ।

प्रा०जुड़ना--(सं०जुड्=जुडना) क्रि० अ० मिलना, सटना ।

प्रा० जुड़ाना, जुराना } क्रि० स० छाती ठंढी करना, ठंढा होना, २ मिलाना, जोड़ना ।

प्रा० जुन्हरी--स्त्री०ज्वार, एक प्रकार का अनाज। [अनाज।

प्रा० जुवार--स्त्री० एक प्रकार का

प्रा० जुहार--पु० सलाम, रामराम, पालागन, दंडवत्, नमस्कार।

प्रा० जूआ--(सं० द्यूत) स्त्री० पांशा खेलना, दांव लगाना।

प्रा० जूआ, जूवा--(सं० युग) पु० एक लकड़ी की चीज जो बैलों के गले में बांधते हैं, जूआट।

प्रा० जूं--स्त्री० चिल्लड़, ढील, चीलहड़।

प्रा० जूझना--(सं० युध्=लड़ना) क्रि० अ० लड़ना, लड़ाई करना, २ लड़ाई में मरना।

प्रा० जूझमरना--बोल० लड़ाई में लड़ के मरना।

सं० जुष्ट--(जुष्=सेवाकरना) र्म्म० पु० जूंठा, सेवित, सेवा किया गया।

सं० जूट--(जट्=बांधना) पु० केशों का बंध, जटा का जूड़ा, २ समूह।

प्रा० जूड़ा--(सं० जूट) पु० बंधे हुए बाल, २ (जड़) ठंढ।

सं० जुड़ित, जुड़िया--(जुड्+इत) र्म्म० पु० मिलित, तोअम, दो लड़के जुड़े हुए।

प्रा० जूड़ी--(सं० जड़=जाड़ा) स्त्री० ज्वर, शीतज्वर, कंपज्वर, जाड़ा, लरजा।

प्रा० जूता, जूती--पनही, पगरखी, जोड़ा, चमरौधा।

प्रा० जूहा--(सं० यूथ) पु० समूह, झुंडा।

प्रा० जूही, जुही--(सं० यूथी, यु=मिलना) स्त्री० एक फूल का नाम।

सं० जृम्भ, जृम्भा, जृम्भण--जृम्भ्=जम्हाना, भा० स्त्री० जम्हाई, आलस्य।

प्रा० जेट--स्त्री० ढेर, ढेरी, समूह, परत।

प्रा० जेठ--(सं० ज्येष्ठ) पु० पति का बड़ा भाई, २ एक महीने का नाम।

प्रा० जेठा--(सं० ज्येष्ठ) गु० बड़ा, पहलौटा, २ पु० कुसुम का बहुत अच्छा और गाढ़ा रंग।

प्रा० जेठानी, जिठानी--(जेठ) स्त्री० जेठ की स्त्री।

प्रा० जेठीमधु--(सं० यष्टीमधु: यष्टी=तांत, मधु=शहद) स्त्री० मुलहटी, एक दवाई।

प्रा० जेठौत--(जेठ) पु० जेठ का बेटा।

प्रा० जेब--स्त्री० खलीता, पाकट।

प्रा० जेबकतरा--पु० उचक्का, जेब कतरनेवाला।

सं० जेता--(जि=जीतना) क० पु० विजयी, जीतनेवाला, फत्ताह।

सं० जेमन--(जिम्=खाना) भा० पु० भोजन, खाना, भोज्यपदार्थ, खाने की वस्तु।

प्रा० जेवड़ी, जेवरी--स्त्री० रस्सी, डोरी।

प्रा० जेहर--[illegible] स्त्रियों के पैरों का एक गहना।

प्रा० जै--गु० जितना।
प्रा० जै--(सं० जय) स्त्री० जीत, विजय, जय, फतेह।
प्रा० जैजैकार--(सं० जयकार) पु० आनन्द, उत्सव, हर्ष, जीत, विजय, जय, बोलबाला।
प्रा० जैजैकारकरना--बोल० जय का शब्द करना।
सं० जैन--(जिन अर्हत्, बुध) पु० जिन धर्मको माननेवाला, बौद्धमती।
प्रा० जैनी--(सं० जैन) क० पु० जैन मतकोमाननेवाला, श्रावक, सरावक।
प्रा० जैसा--(सं० यादृश्, यत्=जो, दृश्=देखना) क्रि० वि० जिस तरह, जिस प्रकार।
प्रा० जैसाचाहिये--बोल० यथोचित, ठीक।
प्रा० जैसाकातैसा--बोल० ठीक, जैसा चाहिये, ज्यों का त्यों।
प्रा० जैहैं--(व्रजभाषा) क्रि० अ० जायगा, जावेगा, जावेंगे। [जव।
प्रा० जों--क्रि० वि० जैसे, जिसतरह,
प्रा० जोंतों } जोंतोंकरके } बोल० किसीतरहसे।
प्रा० जोंकातों--बोल० जैसा का तैसा, जैसा था वैसाही, ठीक वैसाही।
प्रा० जोंक--(सं० जलौका) स्त्री० जल का कीड़ा, जलौका।
प्रा० जोंहीं--क्रि० वि० ज्यों, तुरंत।
प्रा० जोखना--क्रि० स० तौलना, नापना।
प्रा० जोखिम } जोखों } स्त्री० बीमा, २ डर चिंता, शङ्का कठिन काम।
प्रा० जोखिमउठाना--बोल० अपने तईं चिंता में डालना, कठिन काम के करने का साहस करना।
प्रा० जोट } जोटा } (सं० जोड़, जुड़=मिलाना) पु० जोड़ी, साथी सम, बराबरी के, गु० बराबर।
सं० जोड़--(जड्=बांधना, मिलाना) पु० मेल, मिलाव, इकट्ठा, मीज़ान, टोटल, २ गांठ, संधि।
प्रा० जोड़देना--बोल० गिनना हिसाब करना, मीज़ान देना, ठीक करना, जोड़ना।
प्रा० जोड़तोड़- बोल० बनावट बंधान, हिक्मत, जुगत, २ गांठ।
प्रा० जोड़जाड़--बोल० बचत, बचाव, थोड़ा थोड़ाकरके इकट्ठा करना।
प्रा० जोड़ना } जोरना } (सं० जुड्=मिलाना) क्रि० स० मिलाना इकट्ठा करना, २ गांठना, थेगली लगाना, पैवन्द लगाना, ३ गिनना हिसाब करना, मीज़ान देना, जोड़ देना, ४ बनाना, लगाना, चिपटाना, साटना, पीछे लगा देना।
प्रा० जोड़ा (सं० जुड़=जोड़ना) पु०

दो मनुष्य अथवा दो चीज़, युग्म, २ जूता, ३ कपड़े का जोड़ा।

प्रा० जोतना–(सं० योजन, युज् =मिलाना) क्रि० स० जुआमेंलगाना, हल जोतना, चासना।

प्रा० जोति } जोत } (सं० ज्योति) स्त्री० चमक, उजाला, प्रकाश, किरन, तेज, दीप्ति, रोशनी, दीपक का प्रकाश, २ दृष्टि, दीठ।

प्रा० जोतिस्वरूप–(सं० ज्योतिःस्वरूप) गु० आप से प्रकाशित, दीप्तिमान्, प्रकाशरूप, परमेश्वर का गुण वा विशेषण।

प्रा० जोतिष–(सं० ज्योतिष्) पु० ग्रह नक्षत्र आदि जानने का शास्त्र।

प्रा० जोतिषी } जोतषी } (सं० ज्योतिषिक) क० पु० जोतिष विद्या जाननेवाला, जोषी, गणक, दैवज्ञ, नजूमी।

प्रा० जोती--स्त्री० तराजू के पलड़े की रस्सी।

प्रा० जोधा--(सं० योधा) पु० लड़ाका, वीर, बहादुर, भट, जुझार।

प्रा० जोना } जोवना } क्रि० स० देखना, चितवना, ताकना।

प्रा० जोबन (सं० यौवन) पु० जवानी, तरुणाई।

प्रा० जोय } जोरू } (सं० जाया) स्त्री० पत्नी, भार्या, स्त्री, लुगाई।

प्रा० जोरी } जोड़ी } (सं० युज्=मिलना) स्त्री० जोड़ा, युगल, युग्म, दो।

सं० जोपित् } जोषिता } (जुष्=प्रसन्न करना, तृप्तकरना) स्त्री० नारी, लुगाई।

प्रा० जोषी } जोसी } (सं० ज्योतिषी) पु० ज्योतिषी, ब्राह्मणों की एकजाति।

प्रा० जोहना--क्रि० स० बाट देखना, बाट निहारना, अपेक्षा करना, देखना, खोजना, ढूंढ़ना।

प्रा० जोही–गु० खोजी, ढुंढ़ैया, मुतलाशी।

प्रा० जौलौं } जौलग } क्रि० वि० जबतक।

प्रा० जौ--(सं० यव) पु० जव एक प्रकार का अनाज।

प्रा० जौन--(सं० यद् वा यः जो) सर्वना० जो, जिस।

प्रा० जौनार } जेवनार } (सं० जेमन) स्त्री० भोजन, भोग, खाना, उत्सव, अपने भाई बंध अथवा मित्रों को खिलाना।

सं० ज्ञात--(ज्ञा=जानना) कर्म० पु० जाना हुआ, समझा हुआ, जाना गया, विदित।

सं० ज्ञाता--(ज्ञा=जानना) क० पु० जानैया, वाकिफ।

सं० ज्ञाति--(ज्ञा=जानना)पु० पिता, बाप, २ संबंधी, जातभाई ।

सं० ज्ञान--(ज्ञा=जानना) पु०जानना, बोध, बुद्धि, समझ, विज्ञता ।

सं० ज्ञानवान् } (ज्ञान) गु० बुद्धिमान् पण्डित, विद्वान्, विज्ञ, विचारवान् ।
ज्ञानी }

सं० ज्ञानवापी--(ज्ञान,वापी=बावली) स्त्री०एक बावली का नाम जो बनारस में विश्वेश्वर के मन्दिर में है ।

सं०ज्ञानेन्द्रिय--(ज्ञान + इन्द्रिय) स्त्री० इन्द्रियां जिनसे देखने, सुनने, सूंघने, स्वाद लेने और छूने आदि का ज्ञान होता है अर्थात् आंख, कान, नाक, जीभ, त्वचा, अर्थात् शरीर पर का चमड़ा अन्तःकरण, मन ।

सं० ज्ञापक—(ज्ञप्=जनाना)क० पु० जतलाने वाला, बतलाने वाला, आज्ञा देने वाला ।

सं०ज्ञापन-(ज्ञप्+अन, ज्ञप्=जनाना) भा० पु० जनाना, विदित करना, २ निदेश, हुक्म ।

सं० ज्ञापित } कर्म०पु० जानाहुआ, जानने योग्य ।
ज्ञाप्य }
ज्ञेय }

सं० ज्या--(ज्या=पुराना होना,वा बू[illegible] होना) स्त्री० मा, माता, २ पृ[illegible]ी, धर्ती, ३ धनुष का चिल्ला ।

सं० ज्येष्ठ--(वृद्ध, यहां वृद्ध को ज्या आदेश हो जाता है) गु० बड़ा प्र[illegible]धान, श्रेष्ठ, उत्तम, जेठा, पहलौटा।

सं० ज्येष्ठा--(ज्या=बूढ़ा वा बड़ा वा पुराना होना) स्त्री० अठारहवां नक्षत्र, २ बिचली अंगुली, ३ गंगा।

सं० ज्येष्ठ--(ज्येष्ठा)पु० जेठ का महीना जिसकी पूर्णमासी के दिन ज्येष्ठा नक्षत्र होता है और पूरा चांद इस नक्षत्र के पास रहता है ।

[illegible]० ज्यों--क्रि० वि० जैसे ।

प्रा० ज्योंकात्यों--बोल० ठीक, वैसाही, ठीक २ ।

सं०ज्योतिः(द्युत्=चमकना) भा०स्त्री० जोत, उजाला, प्रकाश, चमक, दीप्ति, प्रभा ।

सं०ज्योतिश्शास्त्र (ज्योतिस्+शास्त्र)पु०गृह नक्षत्र आदि की चाल जानने का शास्त्र, ज्योतिष, तिथि, वार, नक्षत्र, योग, करण आदि जानने का शास्त्र, पंचाङ्गशास्त्र ।

सं०ज्योतिर्विद्--(ज्योति+विद्, विद्=जानना) क० पु० ज्योतिषी, नजूमी ।

सं०ज्योतिष--(ज्योतिः)पु०ज्योतिः शास्त्र, ज्योतिश्शास्त्र ।

सं० ज्योत्स्ना(द्युत्=चमकना)स्त्री० चांदनी, चंद्रिका,चांद की किरण

सं० ज्वर--(ज्वर्=बीमार होना) पु० तप, ताप, ज्वर।

सं० ज्वराग्नि (ज्वर+अग्नि) पु० तप की गरमी।

सं० ज्वलन--(ज्वल्=जलना, चमकना) भा० स्त्री० जलन, तपन, दाह. २ आग।

सं० ज्वलित-- ज्वल्=चमकना) क० पु० प्रकाशित, जलता हुआ।

प्रा० ज्वार--स्त्री० एक प्रकार का अनाज।

सं० ज्वाला--(ज्वल्=चमकना) स्त्री० आंच, लौ, लपट, लूका, चमक।

सं० ज्वालामुखी (ज्वाला=आग का लूका, मुख=मुँह) स्त्री० वह जगह जहां से आग निकलती है, आग का पहाड़, २ देवी, अम्बिका, दुर्गा।

—:०:—

झ

सं० झ--पु० बृहस्पति, २ इन्द्र, ३ शब्द ध्वनि, ४ नैपथ्य, ५ झकोर, ६ मिलाप, ७ स्थिति।

सं० झङ्कार--(झम्=ऐसा शब्द, कृ=करना) पु० झझनाहट, झंझना होने का शब्द।

प्रा० झंखना--क्रि० अ० बड़बड़ाना, चड़बड़ाना, टैं टैं करना, बकना, २ पछताना, खिलखना।

प्रा० झंखाड़--पु० बिन पत्तेका पेड़।

प्रा० झंगा, झगा } पु० अंगा, कुरता, ऊपर पहननेका कपड़ा।

प्रा० झंझट--पु० घबराहट, झगड़ा, रगड़ा।

प्रा० झंझनाना--(सं० झणत्कार, झणत्=ऐसा शब्द, कृ=करना) क्रि० अ० ठनठनाना, बाजना।

प्रा० झंझरी--स्त्री० जाली, झरोखा।

प्रा० झंडा--पु० निशान, ध्वजा, पताका, फरहरा।

प्रा० झंप, झंव } स्त्री० मूर्च्छा।

प्रा० झक--स्त्री० कोप, क्रोध, रिस, सनक, २ लहर।

प्रा० झकमारना--बोल० वृथा काम करना, निरर्थक काम करना, यह बोल० दूसरे की हलकाई जताने के लिये बोला जाता है।

प्रा० झकझोरी--स्त्री० छीना छीनी, झपटा झपटी, खैंचा खैंची, लूट पाट।

प्रा० झकाझक--गु० झलाझल, जगामग, २ सुथरा, साफ़।

प्रा० झकोरना--क्रि० स० हिलाना, कंपाना. झकोरा देना, झोका देना।

प्रा० झक्कड़--(सं० झङ्कार) पु० आंधी, चौबाई, तूफ़ान, हवा का बौंडर।

प्रा० झक्की—गु० वृथा बकवाद करनेवाला, बक्की, प्रलापी, लहरी, तरंगी।

प्रा० झखना—क्रि० अ० बड़बड़ाना, ठींकना, बकना।

प्रा० झगड़ना—क्रि० अ० लड़ना, लड़ाई करना, बखेड़ा करना, वाद विवाद करना, कलह करना।

प्रा० झगड़ा--पु० लड़ाई, रगड़ा, बखेड़ा, विवाद।

प्रा०झगड़ालू—(झगड़ना) क० पु० लड़नेवाला, लड़ाक, लड़ाईखोर, झगड़ेल, झगड़ा करनेवाला।

प्रा०झगुला—पु० बालक के पहनने का कुरता, चोला।

प्रा० झझ्—पु० लंबेबाज।

सं० झञ्झा--स्त्री० वायु, वर्षाऋतु, झकोरा, झाँझ।

सं०झंझानिल—(झंझ+अनिल) पु० वर्षाऋतु, ग्रीष्म का वायु, झकोरा।

प्रा० झंझट--पु० बखेड़ा, झगड़ा।

प्रा० झट—(सं० झटिति, झट=उलझना, मिलना) क्रि०वि० तुरंत, शीघ्र, उसीदम, जल्दी।

प्रा० झटसे, झटपट—बोल० तुरन्त, शीघ्र, उसी दम, जल्दी से, आगे।

प्रा० झटकना--क्रि० स० खैंच लेना, खसोटना, क्रि० अ० दुबला होना, २ हिलना।

प्रा० झटका—पु० झटके से मारने का शब्द, २ खिंचाव, खींच, गु० झटके से मारा हुआ।

प्रा० झड़—स्त्री० झड़ी, २ आंच, ३ एक तरह का ताला।

प्रा० झड़ना--क्रि० अ० गिरना (जैसे पेड़ से फल अथवा पत्ते) टपकना, चूना, २ बाजना (जैसे नौबत)।

प्रा० झड़पना—क्रि० अ० लड़ना, चिल्लाना, झपटा झपटी करना, झड़पा झड़पी करना।

प्रा०झड़बेर--पु०, झड़बेरी-स्त्री० } (झाड़झाड़ी सं० बदरीबेर) बेर की झाड़ी, बेर का पेड़।

प्रा०झड़ी—स्त्री० लगातार मेह बरसना, बराबर बरसते रहना।

प्रा०झप—क्रि० वि० झट, तुरंत।

प्रा०झपसे--बोल० झटपट, झटसे।

प्रा० झपकना--क्रि० स० झलना, पंखा झलना, क्रि० अ० लपकना। झपटना, २ पलक मारना, उंघाना।

प्रा० झपकी--स्त्री० झपट, लपक, २ ऊंघाई, पलकमारना, पलक लगाना।

प्रा० झपट--भा० स्त्री० छीन खसो-

ट, खैंचा खैंची, २ लपक, उछल।

प्रा० झपटलेना--बोल० छीनलेना।

प्रा० झपट्टा--बोल० धावा, चढ़ाव, २ लपक, ३ छीन, खसोट।

प्रा० झपट्टामारना--बोल० झपट लेना, छीन लेना।

प्रा० झपाझपी--स्त्री० उतावली, हड़बड़ी।

प्रा०,झपास--स्त्री० फूही, फुहार, झीसी, झड़ी।

प्रा० झब्बा--पु० फूंदा, लटकन, गुच्छा।

सं०झम--(झम्=खाना) क० पु० भोक्ता, खानेवाला, भोजन।

प्रा० झमझम } झमाझम } क्रि० वि० लगातार।

प्रा०झमझमाना--क्रि० अ० चमकना, झलकना।

प्रा० झमरझमर--क्रि० वि० बूंद बूंद से।

प्रा० झर--स्त्री० झड़ी, मेह का लगातार बरसना, २ आंच, लूका।

प्रा० झरना--(सं०झरण) पु० सोता, चश्मा, २ झरनी, कछनी, क्रि० स० चूना, टपकना, बहना, जारी होना, २ गिरना (जैसे फल पत्ते आदि)।

प्रा० झरोखा--पु० जाली, खिड़की, मोखा, दरीची।

सं० झर्झरा--स्त्री० वेश्या, पतुरिया।

सं० झर्झरी--स्त्री० खंजरी, डफुली।

प्रा०झल--(सं०ज्वल) स्त्री०ज्वाला, २-क्रोध।

प्रा० झलक--स्त्री० चमक, उजाला, जगमगाहट।

प्रा०झलकना--(सं० ज्वलन) क्रि० अ० चमकना।

प्रा० झलकी--स्त्री० चमक, दमक, कटाक्ष।

प्रा०झलझलाना--(सं०ज्वलन) क्रि० अ० चमकना, झलझल करना, २ क्रोध करना, टीसना।

प्रा० झलझलाहट--स्त्री० चमक, झलक।

प्रा०झलना--क्रि० अ० झपकना, पंखा चलाना वा हाँकना।

प्रा०झलाझल--(सं० ज्वलन) गु० चमकीला, जगमगा।

सं० झष--(झष्=मारना) पु० मच्छ, मकरमच्छ, बड़ीमछली, पाठीन।

सं० झषकेतु--(झष=मकरमच्छ, केतु=झंडा अर्थात् जिसके झंडे पर मकर का चिह्न है) पु० कामदेव।

प्रा० झांकना--क्रि० स० छिपकर देखना, ताकना, निहारना, कनखी से देखना।

प्रा० झांख—पु० बारहसिंगा, हरिन।

प्रा० झांझ—(सं० झर्झ, झर्झ= शब्द करना) पु० मंजीरा, एक तरह का बाजा, २ क्रोध, गुस्सा, चिड़चिड़ाहट।

प्रा० झांपना—क्रि० स० ढकना, बंद करना, तोपना, ढापलेना।

प्रा० झांवली—स्त्री० चोंचला, हाव भाव, नखरा।

प्रा० झाऊ—(सं० झाबु, झ=ऐसा शब्द, वा लेजाना, वहना) पु० एक वृक्ष का नाम।

प्रा० झाग—पु० फेन, गाज। [खीझना।

प्रा० झाखा—पु० झंखना, रोना,

प्रा० झाझा—पु० गांजा भंग नशेकी चीज।

प्रा० झाड़—पु० झाड़ी, कंटेलावन, २ एक प्रकार की आतिशबाजी, ३ बत्तियों का झाड़, पंजशाखा, ४ जुल्लाब, ५ लगातार मेंह, झाड़ी।

प्रा० झाड़बांधना—बोल० लगातार मेंह बरसना।

प्रा० झाड़झंखाड़—बोल० कटीली और घनी झाड़ी।

प्रा० झाड़खण्ड—(झाड़=झाड़ी, सं० खण्ड=टुकड़ा) पु० वन, जङ्गल, बैजनाथ महादेव का वन।

प्रा० झाड़न—(झाड़ना) स्त्री० बुहारना, कूड़ा कचरा, कुर्कुट, २ असबाब पोंछने का मोटा कपड़ा।

प्रा० झाड़ना—क्रि० स० बुहारना, झाड़ू लगाना, २ कूंची मारना या कूंची से कपड़ा साफकरना, साफकरना, ३ चकमक से आग झाड़ना।

प्रा० झाड़पछाड़करदेखना—बोल० जांचना, परखना, खूबदेखना।

प्रा० झाड़नाफूंकना—बोल० भूत उतारना, मंत्र पढ़ना, टोटका करना।

प्रा० झाड़डालना } झाड़देना } बोल० साफ करडालना बुहारडालना।

प्रा० झाड़झटक—बोल० झाड़ना बुहारना।

प्रा० झाड़झूड़—बोल० झाड़न, बुहारन, झाड़, झटक, २ ऊपरी पैसा दस्तूरी, ३ जंगल, झाड़ी।

प्रा० झाड़न्त—क्रि० वि० सबके सब, संपूर्ण रूप से।

प्रा० झाड़ा—पु० दस्त, मल का त्याग।

प्रा० झाड़े झपटे जाना—बोल० पाखानेजाना, झाड़े फिरना।

प्रा० झाड़ाझपटालेना—बोल० ढूंढ़ना, खोजना, तलाशी लेना।

प्रा० झाड़ादेना—बोल० तलाशी देना।

फा० झाड़ूकश—(झाड़ू=बुहा-

फ़ा० कश=खींचना,भंगी, मिहतर, हलालखोर।

प्रा० झावा--पु० तेल नापने का बरतन, २ मुर्ग बंद करनेका टापा।

प्रा० झारी--(सं० झर)स्त्री०सुराही जिसकी नाली लंबी होती है और उसके एकटोंटी लगी रहती है।

प्रा० झारी--पु० सब, समूह।

प्रा०झाल--स्त्री०बड़ाटोकरा, २तेज़ी, ३ धातु के टूटे बरतन को जोड़ना।

प्रा० झालना--क्रि० स० ओपना, घोटना, २ जोड़ना।

प्रा० झालर--स्त्री० किनारा, सूत या रेशमकी जाली।

प्रा० झालरा--(सं० झर)पु०पानी का बड़ा कुंड, झरना।

प्रा० झिझकना-क्रि० अ० चौंकना, भड़कना, डर उठना।

प्रा० झिड़कना-क्रि०स०धमकाना, डराना, घुरकना, डाटना।

प्रा० झिड़की--(झिड़कना)स्त्री० धमकी, घुरकी, झिड़क।

प्रा० झिनझिनी-स्त्री०सनसनाहट, झनझनाहट,सनमनी जो हाथपैर सो जाने हैं तब मालूम होतीहै।

प्रा० झिलम--पु० लोहे की कुरती, कवच, बखतर।

प्रा० झिलमिली--स्त्री० दरवाजे की झँझरी, झिलमिल, जाली।

प्रा० झिल्ली--स्त्री० पतला चमड़ा झिगुरी।

प्रा० झींकना } झींखना } क्रि०अ०पछतावा करना, रोना,हाय हाय करना।

प्रा० झींगा--स्त्री० एक तरह की [मछली।

प्रा०झींगुर--पु० एक प्रकार का कीड़ा।

प्रा० झीन } झीना } (सं०क्षीण)गु०पतला, पतील।

प्रा० झील--स्त्री० सरोवर, सरवर, जलाशय।

प्रा० झीसी--स्त्री० फूही, फुहार, झपास, झड़ी।

प्रा०झुकना--क्रि० अ० नवना, निहुरना, नीचासिर करना, ऊंघना, प्रणाम करना, सलाम करना, नीचे लटक आना (जैसे वृक्षकी डाली) २ क्रोध करना, क्रोधित होना, चिढ़ना, जैसे "झुकी रानि अरहु अरगानी" (रामायण)

प्रा० झुंझलाना--क्रि० चिड़चिड़ा होना, चिढ़ना, खिसियाना, झटपट क्रोधित होजाना, क्रोध करना, क्रोधित होना।

प्रा० झुटलाना } (झूठ)क्रि० स० झुठलाना } झूठाकरना, झूठा कलङ्क लगाना, झूठा ठहराना।

प्रा० झुठालना--(झूठ)क्रि०स० झूठाकर दिखाना, झूठा ठहराना, २ उच्छिष्ट करना, कुछ खाकेछोड़ देना। [खाना।

प्रा० मुँहझुठालना- बोल० कुछ

प्रा० मुँहामुँहझुठालना--बोल० किसीको उसके मुँहपर वा साम्हने झूठा ठहराना।

प्रा० झुंड-पु० समूह,भीड़भाड़,दल, यूथ, ठट्ठ, २ पेड़ों की कुंज।

प्रा० झुनझुना- पु० बालकों का एक खिलौना।

प्रा० झुनझुनी-स्त्री० घूंघरू, नूपुर।

प्रा० झुमका } पु० ढेढी, कर्णफूल, झूमका } २ फूलोंका वा फलों का गुच्छा, ३ एक फल का नाम। [कुम्हलाना, २ झरना।

प्रा० झुरना-क्रि० अ० मुरझाना,

प्रा० झुरी-स्त्री० चुनत, सकोड़।

प्रा० झुलसना(सं०ज्वल्=जलाना, क्रि० अ० जलना, झुलसना।

प्रा० झुलाना-क्रि० स० डोलाना, हिलाना, झूला देना, २ लटकाना।

प्रा० झूंझल-स्त्री० चिड़चिड़ाहट, खुन्स।

प्रा० झूठ } (सं० जुष्ट,जुष=भ्रमहोना) जूठ }

गु० झूठा, स्त्री० उच्छिष्ट, खाने के पीछे बचा खाना।

प्रा० झूठ-स्त्री० मिथ्या, असत्य।

प्रा० झूठमूठ-बोल० झूठ, अशुद्ध, मिथ्या।

प्रा० झूठा-(झूठा) गु० झूठ बोलनेवाला, मिथ्यावादी, २ जूठा खाना, खाने के पीछे बचा हुआ खाना। [खाना।

प्रा० झूठाझाठा-- बोल० झूठा

प्रा० झूमना-क्रि० अ० हिलना, लहरना, २ ऊंघना, सिर को ऊंचा नीचा घुमाना, ३ बादलों का घिर आना।

प्रा० झूमझूम-बोल० बादलों का उमंडना।

प्रा० झूरना-(सं० चूर्णन)क्रि०स० कूटना, चूर २ करना, पीसना, २ पेड़ से फल हिलाना, क्रि० अ० ३ झुरना, किसी की याद में शोच करना, कलपना, पछताना।

प्रा० झूल-स्त्री० चौपायों के शरीर पर ओढ़ाने का कपड़ा, झोला।

प्रा० झूलना- (सं० दोलन, दुलझूलना) क्रि०अ० डोलना, हिलाना, लटकना, पु० एक तरह की कविता।

प्रा० झूला-(सं० दोला, दुलझूलना) पु० हिंडोला, पालना, डो

ला, एक रस्सी जिसपर झूलते हैं।
प्रा० झूसी-पु० फूही, फुहार, झींसी, २ इलाहाबाद के साम्हने एक शहर जिसको पहले प्रतिष्ठानपुर कहते थे और चंद्रवंशियोंकी राजधानीथा।
प्रा० झोंक--स्त्री० ढकल, झूलने में ढकेलना, २ हवा का झोंका।
प्रा० झोंकदेना-- बोल० आग में पुवालडालना, जलाना, जलादेना, २ धूल फेंकना वा डालना, ३ फेंक देना, किसीको जोखिम में डालना।
प्रा० झोंकना-क्रि० स० डालना, फेंकना, घुसेड़ना, चूल्हे में ईंधन डालना।
प्रा० झोंटा--(सं० जटा)पु० सिरके पिछले वाल, चोटी, २ हिंडोले का झोंका।
प्रा० झोंकादेना-बोल० किसीका सिर अथवा सिरके वाल पकड़ कर जोरसे हिलाना।
प्रा० झोंपड़ा-पु० } मढ़ी, कुटी,
झोंपड़ी-स्त्री० } मढ़िया।
प्रा० झोंरा- पु० फल का गुच्छा।
प्रा० झोंका-पु० झकोरा, हवा की झोंक, ठोकर, ठेस।
प्रा० झोठा } (सं० उच्छिष्ट) पु०
झूठा } खाने के पीछे बचा हुआ खाना।
प्रा० झोला-पु० अर्द्धांग, लकवा, २ थैला।
प्रा० झोली-स्त्री० कोथली, थैली।
प्रा० झौंरा-पु० गेहूंवरण, सांवला।
प्रा० झौड़-पु० झगड़ा, बखेड़ा, टंटा।

—:०:—

ट

सं० ट—पु० वामन, शब्द, ध्वनि, चन्द्रमा, गान, रुद्र, अंकुश, वृद्धावस्था।
प्रा० टंकना— क्रि० अ० सियाजाना, लगाया जाना, लटकना, लगना।
प्रा० टंगना-- क्रि० अ० लटकना।
प्रा० टंगड़ा } (टङ्का, टकि=बांध-
टंगरी } ना) स्त्री० पिंडली। गोड़, पैर का एक भाग।
प्रा० टंटा—पु० झगड़ा, लड़ाई, बखेड़ा, रगड़ा।
प्रा० टक-स्त्री० स्वभाव, २ताक, दृष्टि।
प्रा० टकबांधना- बोल० ताकना, घूरना।
प्रा० टकलगाना- बोल० बाट देखना।
प्रा० टकटकी-स्त्री० ताक, घूर, एकटक।
प्रा० टकटकीबांधना--बोल० ताकना, घूरना, एक टक देखना।
प्रा० टकराना--(टक्कर) क्रि० स० टक्कर खिलाना, टक्कर देना।
प्रा० टकसाल-(सं० टङ्कशाला, टङ्क=सिक्का, शाला=मकान)

मुद्रालय, वह जगह जहां सिक्का तैयार होताहै ।

प्रा० टकसालकाखोटा-- बोल० शिक्षा अथवा उपदेश में बिगड़ा हुआ ।

प्रा० टकसालचढ़ना--बो० शिक्षा पाना, उपदेशपाना, सिखायाजाना ।

प्रा० टकसालबाहर-- सं० अनपढ़, कुपढ़, अनघड़, २ खोटा, खराब ।

प्रा० टका--(सं० टङ्क=सिक्का)पु० दो पैसा ।

प्रा० टकुआ, टकुवा (सं० तर्कु, कृत्=काटना) पु० तकला, तकुवा, फिर्की ।

प्रा० टकोर--स्त्री० ढोल का शब्द, धुनि, थाप, चुमकार ।

प्रा० टक्कर--स्त्री० धक्का, ठोकर, ठेला-ठेली, रेला, ढकेल, झोक, ठेस ।

प्रा० टक्करखाना-- बोल० ठोकर खाना, किसी चीज से भिड़ जाना, २ दुःख में गिरना, नुक़सानउठाना ।

प्रा० टक्करमारना--बोल० धक्का लगाना, ठोकर मारना, ढकेलना, रेलना, पटकना, ठेस मारना ।

प्रा० टखना-पु० टेहना, गुल्फ, घूटी ।

सं० टङ्क-(टकि=बांधना)स्त्री० टांक, चारमाशे का तौल, २टांकी, छेनी, पत्थर काटने का औज़ार, ३ तलवार, ४ क्रोध, ५अहंकार, ६सुहागा, ७ खुरपी ।

सं० टंककशाला- (टङ्क=टकशा, शाला=मकान) स्त्री० टकशाल, रुपये बनाने का घर ।

सं० टंक-पु० खनित्र, खंता, खुरपा, फरुहा, टांकी, तलवारका मियान।

सं० टंकार- (टम्=ऐसा शब्द, कृ=करना)पु० धनुष्के चिल्ले का शब्द, २ अचंभा, ३ नामवरी ।

प्रा० टटका- गु० नया, ताजा, तुरत का । [घेरा, मेड़ ।

प्रा० टटड़ी- स्त्री० चांदी, टांट, २

प्रा० टटपूंजिया- गु० थोड़ी पूंजी वाला, दिवालिया । [घोड़ी ।

प्रा० टटवानी- (टट्टू)स्त्री० छोटी

प्रा० टटोलना--क्रि० स० टोवा टोई करना, टोना, छूने से ढूंढना (जैसे अंधे लोग ढूंढ़तेहैं । [झांप ।

प्रा० टट्टर--पु० बड़ी टट्टी, टट्टा,

प्रा० टट्टी--स्त्री० टटिया, चटाई का बना हुआ छोटा टट्टर, ओट, आड़ (टट्टी खसखसकी और फूस आदि की भी बनती है)—शिकार की टट्टी की ओट बैठना=छिप के करना, घात में बैठना ।

प्रा० टट्टू--पु० टांगन, पहाड़ी घोड़ा ।

प्रा० टपकना--टूट पड़ना, गिर पड़ना, चूना ।

प्रा० टपका- पु० पानी का बूंद, २ पके फल का गिरना ।

प्रा० टपना-क्रि० स० नांघना, फांदना, कूदना ।

प्रा० टपाना- क्रि० स० नँघवाना, कुदवाना ।

प्रा० टप्पा-पु० डाक का घर, डाकखाना, २ एकप्रकार का गीत अथवा रागिणी, ३ गेंद अथवा गोली का उछालना, ४ कूद, उछाल ।

प्रा० टप्पाखाना—बोल० गोली अथवा गेंदका उछलताहुआजाना ।

प्रा०टरना } टलना } (सं० टल्=व्याकुल होना वा घवराना) क्रि० अ० हटना, सरकना, चंपत होना, चलेजाना, दबकरहना, लौट पौट जाना, अस्तव्यस्त होना ।

प्रा० टर्रा--पु० मगरा, दुष्ट, २बकी, ३ जोरावर ।

प्रा० टर्राना--क्रि० स० टेंटेंकरना, बकबक करना, चिड़चिड़ाना ।

सं० टलन--(टल्=घवराना) भा० पु०चंचलहोना, शोक, उलटा पलट ।

प्रा०टसक--स्त्री० टीस, पीड़ा, कहराना ।

प्रा० टसकना--क्रि० अ० हिलना, चलना, सरकना, उकसना, २ कहराना । [डाली ।

प्रा० टहनी--स्त्री० डाली, छोटी

प्रा० टहल } टहलटकोर } स्त्री० घर का काम काज, सेवा, नौकरी, दास का काम । [सेवा करना ।

प्रा०टहलटकोरकरना— बोल०

प्रा०टहलना— क्रि० अ० फिरना, चलना, हवा खानेको बाहरजाना ।

प्रा० टहलनी } टहलवी } (टहल) स्त्री०घर का काम काज करनेवाली, दासी ।

प्रा०टहलुवा (टहल) पु० घर का काम काज करने वाला, दास, सेवक, नौकर, चाकर ।

प्रा० टांक—(सं० टङ्क) स्त्री० चार माशे का तोल, २ एक तरह की सुई, ३ सीवन ।

प्रा० टांकना--क्रि०स० सीना, टांका मारना, तुरपना ।

प्रा० टांका-पु०सीवन, टांक, जोड़ना ।

प्रा० टांकेलगाना--बोल० सीना, जोड़ना ।

प्रा०टांकी--(सं०टङ्क) स्त्री० रुखानी, छेनी, २ नासूर, फोड़ा, खर्बूजे का चौकोर टुकड़ा जो उसको अच्छा बुरा देखने के लिये काटा जाता है ।

प्रा० टांग--(सं०टङ्गा)स्त्री० टंगड़ी, पिंडली, गोड़ ।

प्रा० टांगन—पु० पहाड़ी घोड़े की एक जाति ।

प्रा० टांगना- क्रि० स० लटकाना।

प्रा० टांट-स्त्री० चांदी, टटड़ी, सिर का बिचला भाग।

प्रा० टांडा- पु० खेप, बनजारे की चीज़ वस्तु।

अं० टाउनहाल=सभास्थान, मजलिस, दरबार।

प्रा० टाट-पु० सन का कपड़ा, अजाड़। [आड़।

प्रा० टाटी-स्त्री० टट्टी, टटिया, झाप,

प्रा० टाप-स्त्री० घोड़े के अगले पैर का आहट, चलने में घोड़े के खुर का शब्द, २ मछली पकरनेके लिये बांस का बना हुआ ढांचा।

प्रा० टापू- पु० धरती का वह टुकड़ा जो चारों ओर पानी से घिरा हो, उपद्वीप।

प्रा० टारना } (टलना) क्रि०
टालना } स० हटाना, सरकाना, दूरकरना, २ बहाना करना, देरी करना, ढील करना।

प्रा० टालटोल } बोल० बहाना,
टालमटोल } छल, ढीलढाल, चकरमकर, घोल घुमाव, लपेट सपेट, बनावट।

प्रा० टाल-पु० बहाना, टाल टोल, टालमटोल, २ स्त्री० ढेर (अनाज वा लकड़ी आदि का) तूदा, अंबार, अटाल, सूखी घास का गंज।

प्रा० टाला-पु० टालमटोल, घोल घुमाव, बनावट, लपेट सपेट, २ ढेर, तूदा, गंज, टाल।

प्रा०टालाबालाबताना-- बोल० टालना, घोलघुमाव करना, टालमटाल बताना, टालटोल करना।

प्रा० टिकटिकी- स्त्री० छिपकी, छिपकली।

प्रा०टिकठी-स्त्री० तिपाई, तिखूंटी।

प्रा० टिकना-- क्रि० अ० रहना, ठहरना, बसना, मुक़ाम करना।

प्रा०टिकली -पु० बेंदी, बिन्दु, २ पतली रोटी। [ठहराना।

प्रा० टिकाना- क्रि० स० रखना,

प्रा० टिकिया-स्त्री० कोयले की गोल गोल टिकली, २ पतली और छोटी रोटी।

प्रा०टिक्कड़-पु० मोटी रोटी।

प्रा०टिटीहरी-(सं० टिट्टिभ) स्त्री० एक पखेरू का नाम।

सं०टिट्टिभ-(टिट्टि ऐसा शब्द, भाष्=बोलना) पु० टिटीहरी, एक पखेरू का नाम।

प्रा० टिड्डा--पु० फनगा, पतंगा।

प्रा० टिड्डी- स्त्री० शलभ, अनाज को नाश करनेवाला कीड़ा।

प्रा० टिप्पन } (टिप्=फेंकना) स्त्री०
सं० टिप्पनी } टीका, विवरण,

व्याख्या, अर्थ, टिपनी, शरह।

प्रा० टिहरा-पु० पुरा, पुरवा, छोटी वस्ती।

प्रा०-टीक-स्त्री० गलेका एक गहना।

सं० टीका--(टीक्=जाना) स्त्री० शरह, टिप्पनी, विवरण, कठिन शब्दोंके अर्थ और गूढ़अभिप्रायको अच्छी तरह से समझाना।

प्रा० टीका--(सं० तिलक) पु० तिलक, ललाट पर चंदन केशर आदिका चिह्न, २ स्त्रियों के ललाट पर पहननेका एक सुवर्णका गहना, ३ व्याहमें दुलहिनके घरसे जो भेंट जाती है, ४ गोटी का खुदवाना, छापा।

प्रा० टीकाभेजना-बोल० व्याहके शुरूअ में दुलहिन के घर से दुलहे के घरमें वस्त्र रुपया नारियलआदि भेंट भेजना।

प्रा० टीकालेना--बोल० व्याह की भेंट को लेना वा ग्रहण करना वा स्वीकार करना।

प्रा० टीडी--स्त्री० टिड्डी, शलभ।

प्रा० टीप--स्त्री० टिपनी, बोहरे का तमस्सुक जिस में मूल और व्याज के रुपयों के पलटे फसल पर अनाज आदि लिन्ने देनेको लिख देते हैं, २ गाने में राग को ऊंची लेजाना, ३ जल्दी में कोई बात लिखलेना या अटका लेना वा टांक लेना, ४ दबाव, दबाहट।

प्रा० टीला--पु० मेड़, ऊंची धरती, पहाड़ी।

प्रा०टीस--स्त्री० पीड़ा, टपक, व्यथा, धड़क।

प्रा० टीसमारना—बोल० पीड़ा होना।

प्रा० टुक--(सं०स्तोक, ष्टुच्=प्रसन्न होना) गु० थोड़ा, कम, अल्प, जरा, जरासा।

प्रा० टुकड़ा } (सं० स्तोक,ष्टुच्=
टूक } प्रसन्न होना) पु०
खंड, भाग, हिस्सा, चिट, अंश, परमाणु।

प्रा०टुच्चा-पु०पोच,ओछा,बेहूदा,वाही।

प्रा० टुंड--गु० टूठा, काटाहुआ अंग।

प्रा० टुंडी } (सं०तुन्दि,तुद्=पीड़ा
टूंडी } देना) स्त्री० नाभि,तोंदी,
गु० बिन हाथ की।

प्रा० टुंडियांकसना } बोल०पीठ
टुंडियांचढ़ाना } पीछे हाथों
टुंडियांबांधना } को बांधना,
मुसके बांधना।

प्रा० टुसकना--क्रि० अ० रोना, बिलखना, मुसकना।

प्रा० टूट--(टूटना, सं० त्रुटि) स्त्री० टूटन, फूटन, खंडन, २ टोटा, कमी, हानि, नुकसान, ३ कोई बात जो

पुस्तक के लिखने में भूल से छूट जातीहै और हाशिये पर पीछे से लिखीजाती है।

प्रा० टूटना—(सं० त्रोटन, त्रुट्=काटना) क्रि० अ० टुकड़ा होना, फूटना, फटना, २ चढ़ना, चढ़ाई करना, धावा करना।

प्रा० टूटा—(टूटना) गु० टूटाहुआ, फूटा हुआ, पु० टोटा, कमी, हानि, नुक़सान, घटी।

प्रा० टूटाफूटा-बोल० टुकड़े २ खंडहर।

प्रा० टूसी-स्त्री० कली, कोंपल।

प्रा० टेंट--पु० करील का फल, कपासकाफल, कपास का फल, आंख की फुल्ली।

प्रा० टेंटुवा-पु० सांसी, नरेटी, नरी।

प्रा० टेंटें--पु० चेंचें, किलकिलाहट।

प्रा० टेक--भा० स्त्री० थूनी, टिकाव, सहारा, अवलम्ब, टेकन, खंभा, रोक, २ प्रण, प्रतिज्ञा, हठ, संकल्प।

प्रा० टेकी--गु० प्रतिज्ञापालक, बात का पूरा करनेवाला, बातका धनी।

प्रा० टेकरा--पु० टीला, ऊंचीधरती।

प्रा० टेढ़ा--गु० वक्र, बांका, तिरछा, अकड़ा, बेंड़ा।

प्रा० टेढ़ाकरना--बोल० झुकाना, बांका करना, तिरछा करना।

प्रा०टेढ़ाबेंड़ा--बोल० टेढ़ा, बांका, कठिन।

प्रा० टेम--स्त्री०बत्तीकीजलनवाफूल।

प्रा०टेर--गु० लय, स्वर, तान, ताल, राग, २ पुकार, हांक, फ़र्याद, पुकार।

प्रा० टेरना--क्रि०स०पुकारना, ललकारना, बुलाना, हांकमारना, अलापना।

प्रा० टेव--स्त्री० चाल चलन, रीति, बात, स्वभाव, आदत, चाट, चस्का।

प्रा० टेवकी--स्त्री० थूनी, खंभा, टेक, टेकन।

प्रा० टेवना, टेना -क्रि० स० तीखा करना, चोखा करना, बाढ़देना, धार लगाना, पैनाना।

प्रा० टेवा--पु० जन्मपत्री, २ टेव, स्वभाव, चाट, चस्का।

प्रा० टेसू--पु० पलाश का फूल, टेसू, २ एक प्रकार का खेल।

प्रा० टेहला--पु० ब्याहकीएकरीति।

प्रा० टोआटोई-स्त्री० टटोलना, ढूंढ़ा।

प्रा० टोंटा--पु० पटाखा, मुर्रा, बांस की गांठ, २ कारतूस, गु० जिसका हाथ टूटा हुआ हो।

प्रा० टोंटी--स्त्री० नली, नल।

प्रा०टोक--(टोकना) स्त्री० रोक, रुकाव, अटकाव, २ बुरीदृष्टि, नज़र, दीठ।

प्रा० टोकना--क्रि० स० रोकना, २ पूछना, ३ डाह करना, ४ बुरी

नज़र से देखना, दीठ लगाना ।

प्रा० टोकरा—पु० डला, खांचा, बड़ी टोकरी, छटवा, पलड़ा ।

प्रा० टोकरी—स्त्री० डलिया, पलड़ी, खचिया ।

प्रा० टोटका—पु० मंत्र यंत्र, गंडा, तावीज, टोना, मोहन, लटका, वशीकरण ।

प्रा० टोटा—पु० घटी, घाटा, कमी, नुकसान, २ टोंटा, कारतूस ।

प्रा० टोड़ी—स्त्री० एकरागिणीकानाम।

प्रा० टोना—पु० मोहन, टोटका, जादू, सेहर, लटका, क्रि० स० टटोलना ।

प्रा० टोनाटामी } बोल० मंत्र, यंत्र,
टानाटामन } टोना, टोटका ।

प्रा० टोप—पु० बड़ी टोपी, २ टांका, सीवन ।

प्रा० टोपा—पु० टोप, शिर का ढकना । [का ढकना ।

प्रा० टोपी—स्त्री० छोटा टोप, शिर

प्रा० टोल—पु० } थोक, झुण्ड,
टोली—स्त्री० } दल, सभा, वट्ट ।

प्रा० टोला—पु० महल्ला, खंड, शहर का एक हिस्सा ।

अं० टच [illegible] + [illegible]=[illegible]-
[illegible], परे[illegible], [illegible]-
[illegible] ।

अं० ट्रेन्सपोज़िशन—[illegible]-
रोकी कमेटी ।

प्रा० ट्रैन्सलेटर—पु० मुतरज्जिम, अनुवादक, उल्था करनेवाला ।

ठ

सं० ठ—पु० शिव, २ चंद्रबिम्ब, ३ मंडल, ४ शून्य, ५ महाध्वनि, ६ मूर्ति, ७ जनसमूह । [शब्द ।

प्रा० ठकठक—पु० कठिन काम, २

प्रा० ठकठकाना—क्रि० स० ठोंकना, खट २ करना, कूटना, मारना ।

प्रा० ठकुर—(सं० ठकुर) पु० ठाकुर शब्द को देखो ।

प्रा० ठकुराई—(सं० ठकुरता) भा० स्त्री० ईश्वरता, प्रधानता, स्वामीपन, बड़प्पन ।

प्रा० ठग—पु० ठगनेवाला, बटमार, चोर, दगाबाज़, बहकानेवाला, छली, कपटी ।

प्रा० ठगबाजी } स्त्री० बोल०
ठगविद्या } ठगाई, कपट, छल, माया ।

प्रा० ठगलाना—बोल० ठगना, छलना, धोखा देना, बदला को ले लेना ।

प्रा० ठगलेना—बोल० छलना, धोखा देना, छलसे लेना ।

प्रा० ठगाई—(ठग) भा० स्त्री० ठगाई, ठग का काम, छल, धोखा ।

प्रा० ठगना—क्रि० स० छलना, भुलावादेना, धोखा देना, बहकाना ।

प्रा०ठगाई—(ठग)भा० स्त्री०ठगई,छल, धोखा ।

प्रा० ठगौरी—(ठग)स्त्री० ठगाई, भुलावा, माया, छल, धोखा ।

प्रा० ठट्ठ } ठठ } पु०भीड़भाड़, झुंड, मंडली, समूह ।

प्रा० ठट्ठा—पु० हँसी,ठठोली, खिल्ली, चुहल ।

प्रा० ठट्ठाकरना--बोल०हँसीकरना, ठठोली करना,हँसना,उपहास करना, मसखरापन ।

प्रा० ठट्ठेबाज़--बोल० गु० ठठोल, हँसोड़, रसिक, मसखरा ।

प्रा० ठट्ठेबाज़ी—बोल० स्त्री० ठट्ठा करना, हँसोड़पन, खेल,दिल्लगी ।

प्रा० ठट्ठामारना—बोल० हँसी करना, ठठोलीकरना, हँसना,उपहास करना ।

प्रा० ठठरी—स्त्री० ठहर, ठाठ,२ रथी, ३ ढांचा,पांजर, अस्थि पंजर, हड्डियों का ढांचा, बहुत दुबला मनुष्य ।

प्रा० ठठकना--क्रि० अ० रुकना, ठहरना, हटना,खड़ा रहजाना, अचंभे में खड़ा रहजाना,झझकना, रुकना, ठिठकना ।

प्रा० ठठाना—क्रि० स० मारना, पीटना, कूटना, २ दुख में अपना सिर पीटना, ३ अपने को दुख में डालना ।

प्रा० ठठेरा--पु० कसेरा, भरतिया ।

प्रा०ठठोर } ठठोल } गु० हँसोड़, रसिक, ठट्ठेबाज़ ।

प्रा० ठठोली--स्त्री० ठट्ठा, हँसी, खिल्ली, हांसी ।

प्रा० ठण्ढ—स्त्री० जाड़ा, सर्दी, शीत, [शीतकाल ।

प्रा० ठण्ढक--स्त्री०ठंढाई,शीतलता ।

प्रा० ठण्ढा—गु० शीतल, सर्द ।

प्रा० कलेजाठण्ढाकरना—बोल० प्रसन्न होना, अपने मित्र अथवा बेटा आदिको देखने से आनंद में होना, २ बदला लेने से मन प्रसन्न होना ।

प्रा० ठण्ढा करना-- बोल० शीतल करना, सर्द करना, २ बुझाना, बुताना (जैसे आग) ३ शांत करना, स्थिर करना, धीरज देना, दिलासा देना ।

प्रा० ठण्ढापरना—बोल०कमहोना घटना (जैसे क्रोध, पौरुष, चंचलहट का) ।

प्रा० ठण्ढाहोना—बोल० सर्दहोना, शीतल होना, २ बुझना, बुतना, ३ शांत होना, धीरज धरना, स्थिर होना ।

ठण्ढाई--स्त्री० ठंढी औषध, (जैसे सौंफ कासनी आदि) २ भंग, ३ सर्दी, शीतलता ।

प्रा० ठण्ढीसांसभरना--बोल० हाय मारना, आह भरना, लंबी सांस लेना ।

प्रा० ठनकना--क्रि० अ० टीसना, टीस मारना, शिर में दर्द होना, २ झनकना, झंझनाना, ठनठनाना ।

प्रा० ठनठनाना--क्रि अ० झन-झनाना, झनकना, ठनकना ।

प्रा० ठनाक--पु० झनकार, झनझनाहट, टनकार ।

प्रा० ठप्पा--पु० छापने की चीज़, छापा, मोहर ।

प्रा० ठरक } **ठरर** } पु० खर्राटा, घुर्रा ।

प्रा० ठरिया--पु० एक तरहका मिट्टी का हुक्का ।

प्रा० ठवनि--स्त्री० चाल ।

प्रा० ठसक--स्त्री० भड़क, छैलपन, अहंकार, धूमधाम ।

प्रा० ठस्सा--पु० सांचा, ढांचा, २ अहंकार, घमंड ।

प्रा० ठहरना--(सं० स्था=ठहरना) क्रि० अ० टिकना, रहना, थमना, खड़ा रहना, रुकना, अटकना, उतरना, डगाकरना, टिकानाहोना, निर्णय होना, निश्चित होना, सिद्ध होना, पक्का होना, दृढ़ होना, निपटना ।

प्रा०ठहराना-(ठहरना) क्रि० स० टिकाना, रखना, खड़ा करना, रोकना, अटकाना, उतारना, डेरा देना, निर्णय करना, सिद्ध करना, ठिकाना करना, पक्का करना, निपटाना, दृढ़ करना, निश्चित करना, नियत करना, ठानना, विचारना, लगाना ।

प्रा० ठहराव--(ठहरना) भा०पु० टिकाव, स्थापन, निर्णय, निश्चय ।

प्रा० ठां } **ठांव** } **ठाम** } (सं० स्थान) पु०स्त्री० ठौर, जगह, ठिकाना, स्थान, स्थल ।

प्रा० ठांसना } **ठासना** } क्रि० स० दबा दबा के भरना, घुसेड़ना, ठूसना, दबाना ।

प्रा० ठाकुर--(सं० ठक्कुर देवता की मूर्त्ति, और प्रतिष्ठित पदवी) पु० देवता, ईश्वर, २ देवता की मूर्त्ति, ३ स्वामी, मालिक, प्रधान, प्रभु, नाथ, नायक, मुखिया (राजपूतों में) ४ ज़मीनदार, ५ नाई ।

प्रा०ठाकुरद्वारा--(सं० ठक्कुरद्वार) पु० मन्दिर, देवालय, देवस्थान ।

प्रा० ठाकुरबाड़ी--(सं०ठक्कुरवाटी स्त्री० मन्दिर, देवालय, ठाकुरद्वारा

प्रा० ठाट--पु० ठटरी, २ ढांचा

रचना, धूमधाम, साज, भड़क, तजल्ली, शान, हशमत, ३ भीड़ भाड़, झुंड, समूह, बहुतात ।

प्रा० ठाढ़ा--गु० खड़ा, सीधा ।

प्रा० ठाढ़ारहना--क्रि० अ० खड़ा रहना ।

प्रा० ठानना--क्रि० स० ठहराना, मन मे पक्का करना, विचारना, निश्चय करना ।

प्रा० ठानी--स्त्री० ठहराई, विचारी, निश्चय की ।

प्रा० ठाला--गु० बेकार, बिन काम, [खाली ।

प्रा० ठाहर } ठाहरु } (सं० स्थान) स्त्री० ठौर, जगह, जागह, ठां, ठांव, स्थान ।

प्रा० ठिकरा--पु० घड़े वा मटकी का [टुकड़ा ।

प्रा० ठिकाना--(सं० स्थान) पु० जगह, वास, स्थान, ठौर, जागह, २ पता, ३ सीमा, हद्द ।

प्रा० ठिकानाढूंढ़ना--बोल० वासा ढूंढ़ना, काम ढूंढ़ना ।

प्रा० ठिकानेलगना--बोल० मारा जाना, मरना, २ पूराहोना।

प्रा० ठिकानेलगाना--बोल० मार डालना, २ पूराकरना, खपाना ।

प्रा० ठिगना--पु० नाटा, छोटा, [illegible] ।

प्रा० ठिठकना } ठिठकजाना } ठिठकरहना } क्रि० अ० अचंभे में होना, थोड़ी देर ठहर जाना।

प्रा० ठिठरना--क्रि अ० जमना, जड़ना, अकड़ना ।

प्रा० ठिनकना--क्रि० अ० सिसकना, सिसकी भरना, धीरे धीरे रोना।

प्रा० ठिलिया--स्त्री० गगरी, छोटा घड़ा ।

प्रा० ठीक--गु० पूरा, बराबर, सही, शुद्ध, खरा, साफ, योग्य, उचित, सच, यथार्थ, जैसा चाहिये ।

प्रा० ठीकआना--बोल० मिलना, बराबर होना, बराबर आजाना।

प्रा० ठीककरना--बोल० सही करना, निश्चय करना, २ मारना।

प्रा० ठीकठाक--बोल० सही, शुद्ध, सच, ठीकठीक ।

प्रा० ठीकठाककरना--बोल० सही करना, जांचना; निश्चयकरना।

प्रा० ठीकरा--पु० मिट्टी के फूटे बरतन का टुकड़ा ।

प्रा० ठीका--पु० भाड़ा, ठहराया हुआ मोल, २ इजारा, मुकाना, मुस्ताजिरी, कटकना, छुकाना, लिखापढ़ी ।

प्रा० ठुड्डी--स्त्री० ठोढ़ी, चिबुक, २ भुंना अनाज ।

प्रा० ठुमकना--क्रि० अ० अच्छी चाल चलना, ऐंठ कर चलना।

प्रा० ठुनकना--क्रि० अ० धीरे २ रोना।

प्रा० ठूंठ--पु० ठुंडा, बिन पत्ते की डाल, २ कटा हुआ हाथ।

प्रा० ठेडना }
ठेवना } पु० घुटना।

प्रा० ठेंगा--पु० लाठी, लट्ठ, २ अंगूठा।

प्रा० ठेंगाबाजना--बोल० लाठी चलना, २ बिगड़ना।

प्रा० ठेंठी--स्त्री० कानका मैल, २ डट्टा, ठेपी, ३ घुटने तक की धोती।

प्रा० ठेक--स्त्री० टेकनी, टेक, सहारा, अवलंब, २ नाज का भरा हुआ बोरा।

प्रा० ठेकाधिकारी--रू० पु० मुस्ताजिर, मुकातादार।

प्रा० ठेठ--गु० निकेवल, खालिस, असल, साफ़, वेमेल, ठीक, निपट, २ झगड़ालू।

प्रा० ठेपी--स्त्री० ठेंठी, डट्टा, डाट।

प्रा० ठेपीमुहँमेंदेना--बोल० चुप रहना, अवाक होना।

प्रा० ठेलना--क्रि० स० ढकेलना, रेलना, धक्का देना, झोंकना।

प्रा० ठेला--पु० धक्का, रेलपेल, झोंक, [illegible] लादने की गाड़ी।

प्रा० ठेलाठेली--बोल० धक्कमधक्का, रेलपेल।

प्रा० ठेस--स्त्री० ठोकर, चोट, चपेट।

प्रा० ठेसना--क्रि० स० छेदना, बेधना, २ ठोकरदेना, ठोकराना, ३ ठांसना।

प्रा० ठोंकना }
ठोकना } क्रि० स० मारना, गढ़ना, गाड़ना, २ थपथपाना, पीटना, (जैसे ढोलक आदि बाजे को)।

प्रा० ठोकदेना--बोल० गाड़ देना, गढ़ देना, पीटना।

प्रा० पीठठोंकना--बोल० पीठ थपथपाना (जब किसी को सराहते अथवा उसकी हिम्मत बढ़ाते हैं)।

प्रा० ठोंठ--(सं० त्रोटि, त्रुट्=काटना) चोंच, ठोर।

प्रा० ठोकर--स्त्री० पैर की मार, लात।

प्रा० ठोकरखाना--बोल० गिर पड़ना, लुड़कना, २ भूलना, चूकना, ३ घटी सहना।

प्रा० ठोकरलगना--बोल० पैरमें चोट लगना।

प्रा० ठोढ़ी--स्त्री० ठुड्डी, चिबुक।

प्रा० ठोर--(सं० त्रोटि, त्रुट्=काटना) स्त्री० चोंच, ठोंठ।

प्रा० ठोस--पोला नहीं, घना, कठोर, कड़ा, दृढ़, भारी, [illegible]।

प्रा० ठोसना--[illegible]

दवा के भरना, दबाना, भरना।

प्रा० ठोसा--पु० ठेंगा, अंगुठा दिखलाना।

प्रा० ठौर--स्त्री० जगह, ठांव, ठिकाना, स्थान।

प्रा० ठौररहना--बोल० खेत रहना, मारा जाना, मररहना।

ड

सं० ड--पु० शिव, २ डर, ३ शब्द, ४ बाड़वाग्नि।

प्रा० डकराना--क्रि० अ० कूक मार के रोना।

प्रा० डकार--स्त्री० डेकार, ढकार, उद्गार।

प्रा० डकरना--क्रि० अ० डकार लेना, २ रांभना, हूंकारना, गर्जना, भोंकारना, ३ पचाजाना।

प्रा० डकारजाना / डकारबैठना } बोल० उड़ा जाना, खाजाना, पचाजाना, पचाबैठना।

प्रा० डकारलेना--बोल० डकारना, ढकार लेना।

प्रा० डकैत--पु० डाकू, बटपार, लुटेरा, चोर।

प्रा० डकैती--स्त्री० डाका, बटपारा, लूट, चोरी।

प्रा० डकौत } पु० एक जाति के [illegible] (लोग जो ब्राह्मण से

ग्वालिन के पैदा हुए और ये लोग शनैश्चर का दान लेतेहैं और ज्योतिषविद्या में पक्के होते हैं।

प्रा० डग--स्त्री० फाल, पद, लंबी चाल।

प्रा० डगना--क्रि० हिलना।

प्रा० डगमगाना--क्रि० अ० ल[illegible] खड़ाना, डगडगाना, हिलना, डोलना, कांपना।

प्रा० डगर--पु० रस्ता, राह, मा[illegible] पैंड़ा, पथ, सड़क।

प्रा० डगरना--क्रि० अ० यात्रा[illegible]ना, रस्ते चलना, घूमना।

प्रा० डगरा--पु० सूप, बांस[illegible] बना हुआ बरतन।

प्रा० डङ्क--(सं० दंश, दंश्=काटना, डंक मारना) पु० च[illegible]क, विच्छू[illegible] दांत जिसमें जहर भरा रहता[illegible]

प्रा० डङ्कमारना--बोल० का[illegible] (बिच्छू घिर्नी आदिका)।

प्रा० डङ्का--(सं० ढक्का, ढक ऐसा[illegible] कै=शब्द करना) पु० नकारा[illegible]ने का डंडा, २ धौंसा, नकारा, ढोल।

सं० डङ्गर--पु० भूसा, खीरा, धूर्[illegible] सेवक, मक्षेप, स्त्री० ककरी।

प्रा० डटना--क्रि० अ० थमना, [illegible] जमजाना।

प्रा० डट्टा--पु० ढेंठी, ठपी, [illegible]

प्रा० डढ़मुंडा—(सं० दाढ़ीमुण्डित) गु० डाढ़ी मुंडा, विन डाढ़ी का।

प्रा० डढ़ियल- (सं० दाढ़ी) गु० लंम्बी दाढ़ीवाला।

प्रा० डण्ड—(सं० दण्ड) पु० भुजा एक तरह की कसरत अथवा व्यायाम जिसमें हाथों को धरती पर टेक कर नीचे को इसतरह से झुकना होता है कि छाती से जमीन छुइ जाय,—डंडपेल=डंड पेलनेवाला, डंड करनेवाला।

प्रा० डण्डा—(सं० दण्ड) पु० सोंटा, लट्ठ, छड़ी, झंडे की लकड़ी।

प्रा० डण्डिया—पु० स्त्रियों का एक प्रकार का कपड़ा, स्त्रियों के ओढ़ने का दुपट्टा वा ओढ़नी।

प्रा० डण्डी—(सं० दण्डी) स्त्री० डंडा, बेंट, पकड़ने की लकड़ी, २ तराज़ू का डण्डा अथवा धारण, ३ लकीर, पु० संन्यासी जो अपने हाथ में दण्डरखते हैं—पगडण्डी=पदचिह्न, चोरराह, लीक, गुमराह।

प्रा० डण्डीर—स्त्री० धारी, लीक, लकीर।

प्रा० डपटना—क्रि० अ० पुकारना, खदेड़ना, डांटना, झिड़काना, घुड़कना।

प्रा० डफ्फ- (फा० दफ़) स्त्री० खंजरी।

प्रा० डफाली—(डफ) गु० एक प्रकार के मुसलमान फकीर जो डफ वजा कर भीख मांगा करते हैं।

प्रा० डबगर—पु० चमड़ा कमाने वाला, दब्बाग।

प्रा० डबडबाना—क्रि० स० आंखों में आंसू भर लाना।

प्रा० आंखेंडबडबाना
आंसूडबडबाना } बोल० रोनी सूरत बनाना।

प्रा० डबरा—पु० गॅदले पानी का छोटा तालाब, डाबर, ताल।

प्रा० डबोना—क्रि० स० डुबाना, गोता खिलाना, डुबकी देना, बोरना, २ उजाड़ना, बरबाद करना।

प्रा० डब्बा—पु० बड़ी डिबिया, २ कुप्पा। [पु० एक प्रकारका बाजा।

सं० डमरू-(डम्=ऐसाशब्द, ऋ=जाना

सं० डयन—(डी=आकाश में उड़ना) भा० पु० उड़ना, आकाशगमन।

प्रा० डर—(सं० दर, दृ=डरना) पु० भय, त्रास, शंका, आतंक, दबदबा।

प्रा० डरना
डरपना } (सं० दृ=डरना) क्रि० अ० भय खाना।

प्रा० डरपोकना—(डर) गु० कायर, भीरु, डरवैया, डरनेवाला।

प्रा० डराऊ—(डर) गु० भयानक, भयावना, डरावना।

प्रा० डराना } (डरना) क्रि०स०
डरावना } भय दिखाना, त्रास दिखाना, गु०भयानक, भयावना, डराऊ।

प्रा० डलवा—पु० टोकरा, छटवा, भवई ।

प्रा० डला—पु० ढेला, ईंटा, लोंदा, २ टोकरा, बड़ी दौरी ।

प्रा० डलिया—स्त्री० टोकरी, दौरी।

प्रा० डली—पु० टुकड़ा, खंड, टूक। (चीनी मिसरी अथवा मांस का)

प्रा० डसना—(सं० दंशन, दंश्=काटना) क्रि० स० सांप का काटना, डङ्क मारना, चभकना ।

प्रा० डहकाना—क्रि० स० बहकाना, निराश करना, बिगारना, धोखा देना, ठगना ।

प्रा० डहडहा—गु० खिला हुआ, हरा भरा, फूला हुआ, प्रफुल्लित, प्रसन्न, हर्षित ।

प्रा० डहडहाना—क्रि० अ० खिलना, फूलना, विकसना ।

प्रा० डांग—स्त्री० लाठी, २ पहाड़ की ऊंची चोटी, ३ डगर, पगडंडी, रास्ता, ४ टहनी, डाली ।

प्रा० डांगर—गु० दुबला, पतला, पु० दुबला पशु, २ मूली वा सरसों का पत्ता वा फूल ।

प्रा० डांटना—क्रि० स० डपटना, धमकाना, घुड़कना, भिड़कना, [illegible]ना ।

प्रा० डांठी—स्त्री० डण्ठा, डाली, डांठ, डण्डी ।

प्रा० डांड—(सं० दंड) पु० दंड, नागदण्ड, धिग्दण्ड, जुर्माना या धनदंड, पलटा, बदला, सज़ा, २ नाव खेने का बांस, बल्ली, ३ रीढ़, पीठ की हड्डी, ४ लकड़ी, लाठी, डण्डा।

प्रा० डांडभरना—बोल० जुर्माना देना, दंड देना ।

प्रा० डांडलेना—बोल० दंड लेना, जुर्माना लेना ।[बदला लेना ।

प्रा० डांडना—क्रि० स० दंड देना,

प्रा० डांवरू—पु० बाघ का बच्चा।

प्रा० डांवाडोल (सं० धावनदोलन) गु० इधर उधर, भटकना, तीन तेरह, वासहीन, डगमग ।

प्रा० डांस—(सं० दंश) पु० बड़ी मक्खी, मच्छड़, २ डंक, हूल ।

प्रा० डाक—स्त्री० टप्पा, चिट्ठी डालने की जगह, २ घोड़े की अथवा पालकी की चौकी, २ लगातार वमन करना ।

प्रा० डाका—पु० लुटेरों का धावा, छापा।

प्रा० डाकापड़ना—बोल० लुटजाना, लुटाजाना, चोरी होना ।

प्रा० डाकापड़ना }
डाकाडालना } बो० लूटना, राह मारना, ज़ोर से छीन
डाकादेना }

लेना, मार लेना। [प्रेतनी।

सं० डाकिनी- स्त्री० डाइन, चुड़ैल,

प्रा० डाकिया- पु० हाकू, २ डाक दौड़ाहा, डाकवाला, चिट्ठीरसां।

प्रा० डाकी--पु० खाऊ, पेटू, बहुत खानेवाला [रा, चोर।

प्रा० डाकू--पु० डकैत, बटपार, लुटे-

प्रा० डाट- (डाटना) स्त्री० धमकी, घुरकी, झिड़की, डपट।

प्रा० डाटना--क्रि० स० डपटना, घुड़कना, धमकाना।

प्रा० डाढ़--(सं० दाढ़ा वा दंष्ट्रा, दा-वा दंश्=काटना) स्त्री० दाढ़, पीसने के दांत, पिछले बड़े दांत।

प्रा० डाढ़ा-क्रि० अ० जलाना, मुँह-काला होना।

प्रा० डाढ़ी- (सं० दाढ़ी वा दाढ़िका अर्थात् डाढ़ के पास) स्त्री० ठुड्डी पर का बाल, श्मश्रु, रीश। [कुशा।

प्रा० डाब- (सं० दर्भ) पु० डाभ,

प्रा० डाब--पु० तलवार का परतला, २ कच्चा नारियल।

प्रा० डाबर-गोल तालाब, डबरा, गड्ढा, पु० गोदला, मैला।

प्रा० डाभ- (सं० दर्भ) पु० डाब, कुशा, २ सं० दाभ, जंगल, वन।

प्रा० डायन--(सं० डाकिनी) स्त्री० डाकिन, चुड़ैल।

सं० डायरी-अं० दिनचर्या-रोज-नामचा, रोजनामा।

प्रा० डार- स्त्री० डाल, डाली, टहनी, शाखा।

प्रा० डार- (सं० धारा) स्त्री० कतार, पांत, पंक्ति।

प्रा० डारकीडार-बोल० झुंड का झुंड, जत्था, दल, टोली, समूह।

प्रा० डारना / डालना क्रि० स० फेंकना, झोंकना, चलाना, उड़ेलना, उझलना, भीतर फेंकना, रखदेना, धर देना, जल्दी से गिरा देना, घुसेड़ना। [शाखा।

प्रा० डाल-स्त्री० डाली, डार, टहनी,

प्रा० एकडाल- बोल० एक मेलका।

प्रा० डाली- पु० फल आदि की भेंट, २ फलों की टोकरी, ३ डाल, टहनी, शाखा।

प्रा० डासना- क्रि० स० बिछाना।

प्रा० डासी-स्त्री० बिछाई।

प्रा० डाह- (सं० दाह=जलन) स्त्री० लाग, बैर, जलन, द्रोह, द्वेष, कुनस, गांठ, ईर्षा, हसद, रश्क।

प्रा० डाहना-(सं० दाहन=जलना) क्रि० अ० दाह रखना, दाह से जलना, दुःख देना, २ क्रि० स० धातु को गलाना, वा पिघलाना, धातु को पिघलाना वा नर्म करना।

प्रा० डिगना-- क्रि० अ० हिलना, डगमगाना, लड़खड़ाना, [illegible] २

हटना, टलना।

सं० डिण्डिम—(डिरिड ऐसाशब्द, मि=फेंकना अर्थात् करना या निकालना) डमरू, ढोल, डुगडुगी, धमादी, २ एक पेड़ का नाम।

अं० डिपार्टम्यण्ट—पु० मुहकमा, सरिश्ता, विभाग, प्रकरण।

अं० डिस्ट्रिक्टबोर्ड—(डिस्ट्रिक्ट=ज़िला वा खंड, बोर्ड=कमेटी) ज़िला की कमेटी, खण्डसभा।

प्रा० डिबिया—स्त्री० छोटा डिब्बा, डिब्बी। [डब्बा।

प्रा० डिब्बा—पु० बड़ी डिबिया,

सं० डिम—पु० संग्राम, पाखण्ड, पाखण्डी, प्रलय।

सं० डिम्ब—संग्राम, प्रलय।

सं० डिम्ब—पु० पाखण्ड, डाका, लूट पाट, बे हथियार की लड़ाई, अण्ड, फुफ्फुस, रेड़ वृक्ष।

प्रा० डिम्भ—पु० पाखण्ड, जवान पशु, शिशु, बालक, मूर्ख, अनारी, अज्ञान।

अं० डिमीअफ़िशल—आधासरकारी और आधानिजकालेख जिस में आधा महसूल देना पड़ता है।

अं० डिस्ट्रिक्ट-ज़िला, खंड, विभाग,

प्रा० डींग-स्त्री० बड़ाई, घमंड, शेखी, अहंकार, अभिमान, दर्प।

[illegible] ० डींगमारना—बोल० शेखी करना, घमंड करना, बड़ाई करना।

प्रा० डीठ--(सं० दृष्टि) स्त्री० ताक, दीठ, नजर, दृष्टि, देखना।

प्रा० डीठबन्दी-बोल० जादू से नजर बन्द होजाना, नजरबन्दी, इन्द्रजाल, नटमाया।

सं० डीन--भा० पु० पक्षी की गति, उड़ान।

प्रा० डील-पु० शरीर, देह, २ डौल।

प्रा० डुबकी--स्त्री० चुभकी, गोता, डूब, जल में पैठना।

प्रा० डुबाना, डुबोना—क्रि० स० दबोना, गोता खिलाना, डुबकी देना, २ उजाड़ना।

प्रा० डुमरी, डुमर—(सं० उडुम्बर) पु० गूलर का वृक्ष।

प्रा० डुरियाना--(सं० डोर) क्रि० स० बाग डोर, हाथ में लेकर घोड़े को खाली लेचलना।

प्रा० डुलाना, डोलाना—(सं० दोलन, डुल्=झुलाना) क्रि० स० हिलाना, झुलाना।

प्रा० डूबना-- -क्रि० अ० डुबकीमारना, गोताखाना, २ बोरना, बूड़ना, पानी में मग्न होना, ३ अस्त होना, बैठ जाना, ४ उजड़ना, बरबाद होना, नष्ट होना, ५ लय होजाना, मग्न हो जाना, लग जाना (जैसे किसी काम अथवा पढ़ने आदि में

दिल डूबना, बोल० मूर्छित होना, अचेत होना ।

प्रा० डेढ़-गु० एक और आधा ।

प्रा० डेढ़पाव-गु० पाव और आध पाव, छः छटांक ।

प्रा० डेढ़पावा-पु० डेढ़ पावका तौल।

प्रा० डेढ़गत-पु० एक तरहका नाच।

प्रा० डेरा-पु० वासा, घर, २ तंबू, खीमा, गु० भेंगा, टेढ़ा देखनेवाला।

प्रा० डेवढ़ा-गु० डेढ़गुना ।

प्रा० डेवढ़ी } स्त्री० उसारा, डेहुडी } दालान, डेवढ़ीदार =द्वारपाल ।

प्रा० डैन--(सं० डयन, डी=उड़ना) पु० पाख, पंख, पखेरू का पर।

प्रा० डोंगा-पु० उडुप, प्लव, छोटी नाव, २ कठरा।

प्रा० डोंगी--स्त्री०छोटीनाव२कठरी।

प्रा० डोंडी--स्त्री० ढंढोरा, मनादी ।

प्रा० डोकरा-पु० बुड्ढा, बूढ़ा ।

प्रा० डोकरी--स्त्री० बुढ़िया।

प्रा० डोब--(डूबना) पु० डूब, गोता, डुबकी, कपड़ेको रंग में डुबाना।

प्रा० डोबदेना-बोल० कपड़ेको रंग में डुबोना ।

प्रा० डोम-पु० एक नीच जाति, २ मुसलमान जाति के लोग जिन की स्त्रियें केवल स्त्रियोंहीके सामने गाती और बजाती हैं और मर्द गवैये और बजंत्री होते हैं ।

प्रा०डोमड़ा—पु० डोम, अत्यन्त नीच जात ।

प्रा० डोमनी-स्त्री० डोम की स्त्री।

प्रा० डोर-स्त्री० रस्सी, डोरी, जेवड़ी, सूतली ।

प्रा० डोरा-पु० तागा, धागा, तार सूत, लीक, लकीर, २ तलवार की धार,—आंख का डोरा=आंख में लोहूकी लाल, २ लकीर या चिह्न ।

प्रा०डोरिया-पु० एकतरहका कपड़ा।

प्रा० डोरी-स्त्री० रस्सी, डोर, जेवड़ी, सूतली ।

प्रा० डोल--पु० पानी निकालने का लोहे या चमड़े का बरतन। [डोल।

प्रा० डोलची-स्त्री० चमड़ेका छोटा

प्रा० डोलना--(सं० दोलन, दुल्= डोलना)क्रि०अ० हिलना, झुलना, २ फिरना, भटकना।

प्रा० डोला--(सं० दोल, दुल्=झूलना) पु० एक तरह की पालकी २ नीचेघरानेकी रानी जो बड़ेराजा को ब्याहीजाती है और इसरानी का दर्जा बराबर घराने की रानियों से नीचा होता है।

प्रा०डोलादेना--बोल०मूर्छा[illegible] जब ऐसी दशा होजाती है तब ये [illegible]

को दे देते हैं उसे डोलादेना कहते हैं, लड़की व्याह देना ।

प्रा० **डोली**--(सं० दोला) स्त्री० चौपाला, दोला, स्त्रियोंकी पालकी।

प्रा० **डोढ़ी**--स्त्री० डेवढ़ी, उसारा, २ गु० डेढ़गुनी, ३ गाने में ऊंचास्वर ।

प्रा० **डौल**--पु० प्रकार, रीति, ढब, भांति, रूप, आकार ।

ढ

सं० **ढ**--पु० बड़ा ढोल, २ ध्वनि ।

प्रा० **ढंग**--पु० चलन, रीति, प्रकार, डौल, चाल, लक्षण ।

प्रा० **ढंढोरा**--(सं० ढुण्ढन, ढुण्ढ् =खोजना) पु० ढोंडी, मनादी ।

प्रा० **ढक**--पु० तौल विशेष, बट, खरा, बाँट ।

प्रा० **ढकना**--क्रि० स० ढांपना, ढपना, तोपना, मूँदना, बंदकरना, २ छिपाना, ३ बचाना, ४ मढ़ना, ५ छाना, पु० ढकनी, ढकनेकी चीज ।

प्रा० **ढकनी**--स्त्री० चपनी, ढकने की चीज, सरपोश ।

प्रा० **ढकार**--स्त्री० डकार ।

प्रा० **ढकेल**-पु० रेल, ठेल, पेल, धक्का । [रेलना, पेलना ।

प्रा० **ढकेलना**-क्रि० स० ठेलना,

प्रा० **ढकेलू**-वि० पु० ढकेलनेवाला, [illegible] धक्का देनेवाला ।

प्रा० **ढक्का**-पु० बड़ा ढोल, डंका ।

प्रा० **ढडकौवा**--पु० जंगली कौवा।

प्रा० **ढडवा**-पु० मैना की जाति का पखेरू । [मनादी ।

प्रा० **ढपढोरा**-पु० डुगडुगी, ढोंडी,

प्रा० **ढनमनाना**-क्रि० अ० लुढ़कना, गिरना, डगमगाना, कांपना ।

प्रा० **ढपढपाना**-क्रि० स० ढोलको पीटना (जैसे लड़के करते हैं)

प्रा० **ढपना**-क्रि० अ० ढक जाना, छिपना, लुकना, पु० ढकना, ढकने की चीज़ ।

प्रा० **ढब**--पु० डौल, चाल, रीति, रूप, बनावट, हथौड़ी ।

प्रा० **ढबरा**-गु० गँदला, मैला, कीचड़।

प्रा० **ढबुआ**-पु० पैसा, ताम्र मुद्रा।

प्रा० **ढलकना**-क्रि० अ० ढुलकना, बहजाना, डगरना, छलकना ।

प्रा० **ढलना**-क्रि० अ० सांचे में पिघलना (जैसे धातु) २ ढलकना, छलकना, लोटना, लुढ़ना, डगरना, ३ झुकना, नवना,—दिन ढलना, बोल० दिन घटना, दिनका बीतना।

प्रा० **ढलतीफिरतीछांव**--बोल० संसार के कामों की बदलने योग्य या अस्थिर दशा, संसार के कामों में एरा फेरी ।

प्रा० **ढलमलाना**--क्रि० अ० डगमगाना, कांपना ।

प्रा० ढलाना—क्रि० स० सांचे में ढालना, २ बहाना।

प्रा० ढलैत—(ढाल) पु० ढालतलवार बांधने वाला, गोड़इत।

प्रा० ढवाना—क्रि० स० गिरवाना, ढहाना, खसवाना, उजड़वाना, गिरा देना, जड़से उखाड़डालना।

प्रा० ढाई—(सं० सार्द्धद्वय) गु० अढ़ाई दो और आधा।

प्रा० ढांकना—क्रि० स० ढांपना, ढकना, छिपाना, बंद करदेना।

प्रा० ढांग—स्त्री० कंदला, शिखर, शृंग, पहाड़ की चोटी।

प्रा० ढांचा—पु० सांचा, डौल, घर, ठाठ।

प्रा० ढांपना—क्रि० स० ढांकना, बंद करना, छिपाना, लुकाना।

प्रा० ढाक—पु० पलाशवृक्ष, तेज, प्रताप, शुहरत, शुहरा।

प्रा० ढाटा—पु० दुपट्टा जो डाढ़ी और कानोंपर बांधा जाता है, बड़ी पगड़ी जो मारवाड़ और उदयपुर आदि राजपूतानेके लोग बांधा करतेहैं।

प्रा० ढाड़स } ढाढ़स } ढारस } (सं० दार्ढ्य, दृढ़, कठोर या स्थिर) स्त्री० मनकी दृढ़ता, साहस, भरोसा, दिलासा, धैर्य, धीरज, [illegible], हिम्मत।

प्रा० ढाढ़सदेना— बोल० हिम्मत देना, हिम्मत बंधाना।

प्रा० ढाढ़सबँधाना—बोल० भरोसा देना, साहसदेना, धीरजदेना, हियाव रखना।

प्रा० ढाढ़िन-स्त्री० ढाढ़ी की स्त्री।

प्रा० ढाढ़ी—पु० गाने बजानेवाला, बजंत्री, कलावत, क़व्वाल।

प्रा० ढाना } ढहना } क्रि० स० गिराना, उजाड़ना, नेव से उखाड़ डालना।

प्रा० ढाबर—गु० मैला। [लती।

प्रा० ढाबा—पु० जाल, ओरी, ओ-

प्रा० ढाल—पु० फरी, २ उतार, ढलाव, झुकाव।

प्रा० ढालना—क्रि० स० सांचे में उतारना, धातुको सांचे में पिघलाना, २ बहाना, ३ बिगाड़ना।

प्रा० ढालवाँ—गु० उतारू, ढालू। ढाला हुआ, सांचे में ढाला हुआ, (जैसे धातु) [२ बिगाड़ू,

प्रा० ढालू—गु० उतारू, ढालवाँ,

प्रा० ढाहा—पु० नदी का ऊंचा किनारा, करारा।

प्रा० ढिग—(सं० दिक्=दिशा) स्त्री० तरफ़, ओर, दिशा, क्रि० वि० पास, समीप, नज़दीक, निकट।

प्रा० ढिठाई—(सं० धृष्टता) स्त्री० [illegible], [illegible], गुस्ताख़ी, चंचलता, निर्लज्जता, साहस, प्रगल्भता।

प्रा० ढिमढिमी—स्त्री० डफ़, खंजरी।

प्रा० ढीठ } (सं० धृष्ट)गु० मगरा,
ढीठा } मचला, साहसी, निर्लज्ज, मिला जुला, बीर, निडर, प्रगल्भ, गुस्ताख ।

प्रा० ढील—स्त्री० ढिलाई, २ आलस्यत, सुस्ती, अचेती, ३ देरी, देर, विलम्ब ।

प्रा० ढीला—गु० बेकसा हुआ, छुटा, शिथिल, २ धीमा, आलसी, सुस्त, अचेत, मंद ।

प्रा० ढीहा—पु०टीला,डूंगर,खंडल, पहाड़ी ।

प्रा० ढुलना—क्रि० अ० ढलना,गिरना, बहना, लुढ़कना,

प्रा०ढूंढ़ना—(सं० ढुण्ढन, ढुण्ढ= खोजना) क्रि० स० खोजना, हेरना, तलाश करना ।

प्रा० ढूंढ़नाढांढ़ना } बोल० खो-
ढूंढ़ढांढ़करना } जना,हेरना, तलाशकरना,ढूंढ़ना,जुस्तजूकरना ।

प्रा० ढूढ़िया—पु०जैनियोंकाभिखारी।

प्रा० ढूकना—बंधकरना,२ पास आना, ३ पैठना ।

प्रा०ढूसर—पु० हिंदुओं में एक जाति वैश्यों की ।

प्रा० ढेऊ—स्त्री० लहर, तरंग ।

प्रा०ढेकली—स्त्री० ढेंकुवा, पानी निकालने की कल, यन्त्रविद्या में यह एक प्रकार की डंडी है जिस में जो लगी लगी उस को महारा देती है वह तो टेक है और जो पानी का डोल निकाला जाता वह बोझ है और जो दूसरी ओर जो जमीन का अथवा पत्थर का बोझ है व ही जोरहै ।

प्रा० ढेंका—पु० कूटनेकी कल।

प्रा० ढेंढ़ी—स्त्री० पोस्त का फूल,२ कर्णफूल, स्त्रियों के कानमें पहनने का एक गहना ।

प्रा० ढेक—पु० सारस पक्षी ।

प्रा० ढेढ़—पु० चमार, २ कौवा ।

प्रा०ढेढ़ी—स्त्री० एक कान का गहना ।

प्रा० ढेर—पु० राशि, ढेरी, अटाला, संचय, इकट्ठा किया हुआ, समूह, गु० बहुत ।

प्रा०ढेरी--स्त्री० राशि, ढेर ।

प्रा०ढेला-पु० पिण्डा, लोंदा, मिट्टी का टुकड़ा ।

प्रा०ढेलाचौथ--स्त्री० भादौं सुदी ४ जिस दिन हिन्दू लोग एक दूसरे के घर में पत्थर फेंकते हैं और जो कोई गाली देता है तो उस को अच्छा सगुन मानते हैं ।

प्रा० ढैया--पु० अढैया, अढ़ाई सेर का तोल ।

प्रा० ढोंचा--गु० साढ़ेचार ।

प्रा० ढोकना-क्रि० स० पीना, घूंटना, निगलना ।

प्रा० ढोका--पु० पत्थर का टुकड़ा, २ पांच की गिन्ती जो कंडे मोल लेने में बोलते हैं।

प्रा० ढोटा--पु० लड़का, बालक।

प्रा० ढोना--क्रि० स० लेजाना, बहना।

प्रा० ढोर-पु० गाय, गोरू, भैंस आदि चौपाये, पशु।

प्रा० ढोल- एकबाजा, दमामा।

प्रा० ढोलक, ढोलकी } स्त्री० छोटा ढोल।

प्रा० ढोलकिया--पु० ढोल बजाने वाला।

प्रा० ढोला-पु० हिंदुओं में एकप्रसिद्ध प्रेमी का नाम, २ लड़का।

प्रा० ढोली-पु० ढोल बजानेवाला, २ दो सौ पान की आंटी।

प्रा० ढौंचा-पु० साढ़ेचार।

सं० ण (णक्ष=जाना) पु० बिन्दुदेव, भूषण, गुणरहित, निर्णय, ज्ञान, बुद्धि, हृदय, शिव, दान, अन्न, उपाय, विद्वान, जलस्थान, निर्वाण, निर्गुणाकर।

त

सं० त--(तक=सहना, वा हँसना) पु० चोर, २ म्लेच्छ, ३ पूंछ, ४ गर्भ, ५ पुरुष, ६ रत्न ७ सोना, ८ अटिल, ९ तैरना, १० पुण्य।

प्रा० तईं--(सं० स्थान) क्रि० वि० तक, तलक, लग, लौं, पर्य्यन्त, २ को।

प्रा० तई--स्त्री० एक प्रकार की लोहे की कड़ाही।

प्रा० तक-क्रि० वि० तलक, लौं, तईं, पर्य्यन्त, पु० लकड़ी या भूसा तौलने की तराजू।

प्रा० तकना-क्रि० स० ताक लगाना, देखा करना, टकटक देखना, चितवना।

प्रा० तकान-पु० हिलाव, थकाव।

प्रा० तकला--(सं० तर्कु, कृत्=काटना) पु० टकुवा, फिरकी, कतुवा, सूत कातने का यंत्र।

सं० तक्र--(तक्=सहना, वा तञ्च्=जाना) पु० छांछ, मट्ठा, मही जिस में चौथा हिस्सा पानी मिला हो।

सं० तक्ष--(तक्ष्=काटना व पतला करना) भा० पु० आच्छादन, कर्षन, काटना, चर्म्म, चित्रा नक्षत्र।

सं० तक्षक--(तक्ष=काटना, वा पतला करना) कृ० पु० लकड़ी काटने वाला, बढ़ई, २ पाताल का बड़ा सांप, ३ विश्वकर्मा, ४ सूत्रधार, ५ एक वृक्ष का नाम।

सं० तक्षशिला--स्त्री० एक नगर का नाम जो पंजाबमें था जिसको भरत

अपनेइतिहासमें Taxila लिखाहै, भरत के पुत्र की राजधानी।

प्रा०तखरी-स्त्री०तुला,तखड़ी,तराजू।

सं० तगर--पु० मरुआवृक्ष, सुगंधित काठ।

प्रा०तगा-पु० दो पैसे, टका।-

प्रा० तज--(सं०त्वच्)पु०तेजपातका वृक्ष अथवा उसकी छाल।

प्रा० तजना } (सं०त्यज्=छोड़ना)
त्यजना } क्रि० स० छोड़ना, त्यागना, त्याग करना, छोड़देना।

सं० तज्ञ--(तद्+ज्ञ, ज्ञा=जानना) तत्त्वज्ञाता, पंडित।

सं० तट-(तट्=ऊंचा होना) पु० तीर, किनारा, कड़ारा, २ निकट, पास।

सं०तटस्थ--(तट्=तीर,स्था=ठहरना) गु० तीर पर ठहरनेवाला, तीर पर के, तीरवासी, २ उदासीन।

सं० तटनी--क० स्त्री० नदी, नहर।

सं० तटी-क० पु० कूल, किनारा, तटवाला।

प्रा० तड--पु० पक्ष, दल, धड़ा, मारना, जथा,टोली, २ तड ऐसा शब्द।

प्रा० तडकना--क्रि० अ० फटना, फूटना, टूटना, चटकना, दड़कना।

प्रा०तडका--पु० भोर. विहान, प्रभात, प्रातःकाल, भिनुसार, पोह, सवेरा।

प्रा० तडके--क्रि० वि० सवेरे, भोर के समय, पोह फटे।

प्रा० तडफ--स्त्री० बेकली, व्याकुलता, धड़क, घबराहट, निढालपन, धड़धड़ाहट।

प्रा०तडफडाना--क्रि०अ०धड़कना, छटपटाना, व्याकुल होना, घबरा जाना,धकधकाना,तड़फना, तड़पना।

प्रा० तडफडाहट- स्त्री० धुकधुकी, धड़क।

प्रा०तडफना } क्रि०अ० छटपटाना,
तडपना } घबराना, व्याकुल होना, धकधकाना, २ कुदकना, उछलना, ३ किसी चीज के लिये बहुत बेकल होना, किसी चीजको बहुत ही बहुत चाहना।

प्रा० तडाका--पु० आहट, आवाज मारने का शब्द।

प्रा० तडाग--(तड्=पीटना,वा चमकना)पु० तलाव, तालाव, सरवर, सरोवर, पोखरा, जलाशय।

सं० तडित्--(तड्=भिड़ाना, एक बादल को दूसरे बादल से) स्त्री० बिजली, दामिनी, विद्युत, बर्क।

सं० तण्डक--(तड्+अक, तड्=भिड़ाना) क० पु० मायावी, पाखण्डी,२ समग्र, ३ खंजन अर्थात् भारद्वाज पक्षी,खटगैंचा, खड़ैंचा, ४ धन्नी, कड़ी, ५ गृह।

सं०तड़ित्वान्—का० पु० मेघ, बादल।

सं०तड़ित्समाचार-(तड़ित्=तारबर्की, समाचार=हाल) पु० तारबर्की के समाचार, तार द्वारा वृत्तान्त।

सं०तण्डुल—(तड्=पीटना वा कूटना) र्म० पु० चांवल, कूटा हुआ धान।

सं० तत्काल—(तत्=वह, काल=समय) क्रि० वि० उसी दम, उसी समय, वही क्षण।

सं० तत्क्षण—(तत्=वह, क्षण=समय) क्रि० वि० उसी पल में, उसी समय, तुरंत, तत्काल, उसी क्षण।

प्रा० तत्ता—(सं० तप्त) गु० गर्म, उष्ण, २ क्रोधी।

सं० तत्पर—(तत्=वह, पर=लगा हुआ) गु० किसी काम में लगा हुआ, उद्यमी, परिश्रमी।

सं० तत्र—(तत्=वह) क्रि० वि० वहां, तहां, उस जगह।

सं० तत्रभवान्=आंप जनाव।

सं० तत्रभवती=आँजनावा।

सं० तत्व } तत्त्व } (तत्=वह, त्व भाव अर्थ में प्रत्यय, अर्थात् उस (परमेश्वर) का) पु० सार, मूल, यथार्थ, सत्य, आदिकारण, पंचभूत, (जैसे १ मिट्टी, २ पानी, ३ आग, ४ हवा, ५ आकाश) २ परमात्मा, ब्रह्म, ३ सारवस्तु, ४ सांख्यशास्त्र में प्रकृति आदि पच्चीस पदार्थ।

सं० तत्त्वज्ञान—(तत्त्व=सच्चा, वा परमेश्वर का ज्ञान) पु० ब्रह्मज्ञान, यथार्थ ज्ञान, परमार्थ ज्ञान, परमेश्वर का ज्ञान।

सं०तत्त्वतः—अव्य० ठीक २, यथार्थ, हक़ीकत में।

सं० तथा—(तत्=वह, था प्रकार अर्थ में प्रत्यय) क्रि० वि० उसप्रकार से, वैसाही, उसी तरह से, वही, तैसा, तिसप्रकार।

सं०तथापि—(तथा=तैसे, अपि=भी) समुच्च० वा क्रि० वि० तौ भी, तब भी, तिसपर भी।

सं० तथास्तु—(तथा=तैसे, अस्तु=होवे, अस्=होना) समुच्च० क्रि० वि० वैसाही हो, हां।

सं० तथ्य--पु० सत्य, निष्कपट, मिथ्यारहित।

प्रा० तद—(सं० तदा) क्रि० वि० तब, उस समय, फिर, इसके पीछे, उस दशामें।

सं०तदनन्तर } तदुपरान्त } (तत्=उसके, अनन्तर=पीछे) क्रि० वि० वा समुच्च० उसके पीछे, तिसके पीछे।

सं० तदपि—(तत्+अपि) समुच्च० तबभी, तौभी।

सं० तदा, तदानीम् —(तत्=वह) क्रि० वि० तब, तद, उस समय ।

सं० तद्धित--(तत्+हित) पु० उस का हित, दूसरे की भलाई, २ व्याकरण में नाम से नाम बनाये जाने को कहते हैं जैसे विष्णु से वैष्णव, शिव=शैव ।

प्रा० तधी—(सं० तदाहि) क्रि० वि० तभी ।

प्रा० तन—(सं० तनु) पु० शरीर, देह, काया, अंग, २ ओर, तरफ़ ।

प्रा० तनदेना—बोल० ध्यानदेना ।

प्रा० तनक--(सं० तनुक, तन्=फैलना) गु० थोड़ा, अल्प, छोटा, ज़रा ।

प्रा० तनना, तन्ना —(सं० तन्=फैलना) क्रि० अ० फैलना, खिचना, विस्तार देना ।

सं० तनय--(तन्=फैलाना, वंश को) पु० बेटा, पुत्र, सन्तान, औलाद ।

सं० तनया--(तनय) स्त्री० बेटी, कन्या ।

प्रा० तनी--(सं० तनया) स्त्री० बेटी ।

प्रा० तनी--स्त्री० अंगरखे का बन्द ।

सं० तनु, तनू —(तन्=फैलाना) पु० शरीर, देह, तन, काया, अंग, २ गु० पतला, थोड़ा, अल्प, सूक्ष्म ।

सं० तनुज, तनूज —(तनु=शरीर, जन्=पैदा होना) पु० बेटा, पुत्र ।

सं० तनुजा, तनुजाता, तनूजा —(तनु=शरीर, जन्=पैदाहोना) स्त्री० बेटी, लड़की ।

सं० तनुत्र—(तनु=शरीर, त्रै=बचाना) पु० कवच, बख्तर ।

सं० तनुरुह--(तनु=शरीर, रुह्=उगना) पु० बाल, केश ।

सं० तन्ति--(तन्=फैलाना) पु० बुननेवाला, जुलाहा, तांती ।

सं० तन्तु--(तन्=फैलाना) पु० सूत, तागा, धागा, २ वंश, सन्तान ।

सं० तन्तुकीट--(तन्तु=तागा, कीट=कीड़ा) पु० रेशम का कीड़ा, पाटकीट ।

सं० तन्तुवाय-(तन्तु=सूत, वे=फैलाना वा बुनना) पु० बुननेवाला, जुलाहा, तांती, कोरी ।

सं० तन्त्र—(तन्=फैलाना) पु० एक शास्त्र का नाम जिस में महादेव और पार्वती का संवाद है इस लिये तांत्रिक लोगों के येही दोनों मुख्य देवता हैं, इस शास्त्र के बहुत से ग्रंथ मिलते हैं जैसे रुद्रयामल तंत्र आदि । मंत्रशास्त्र, २ मंत्र, मंत्र यंत्र, टोना टोटका, ३ सिद्धान्त, प्रमाण, ४ प्रधान, ५ वश, आधीन, ६ अमल, काम ।

सं० तन्त्रि, तन्त्री —स्त्री० निद्रा, नींद, ऊंघाई, ऊंघ ।

सं० तन्द्रा--(तन्द्रा=आलस करना, वा आलसी होना) स्त्री० आलस, थकावट, थकाई, श्रम, काहिली, सुस्ती।

सं० तन्द्रालु--(तन्द्रा) गु० आलसी, सुस्त, निद्रालु।

सं० तन्मात्र--पु० शब्द, २ रस, ३ रूप, ४ गंध ५ स्पर्श, उतनाही, जितनाही।

सं० तन्मय--पु० तद्रूप, अभेद, उसी रूप का।

सं० तन्वी (तनु) क० स्त्री० जिस स्त्रीका शरीर पतला हो, कृशांगी।

सं० तप (तप्=तपना) पु० गर्मी, उष्णता, २ गर्मीकी ऋतु, ३ तपस्या, रियाजत।

प्रा० तपत--(सं० तप्त) र्म० स्त्री० गर्मी, गु० तत्ता, गर्म, तपाहुआ।

सं० तपन--(तप्=तपना) भा० पु० सूर्य, २ एक नरक का नाम, ३ गर्मी, जलन, उष्णता, ४ ग्रीष्मऋतु, गर्मी की ऋतु।

प्रा० तपना--(सं० तपन) क्रि० अ० गर्म होना, दहकना, २ भागवान् होना, तेजोवान् होना, ऐश्वर्यवान् होना।

सं० तपस्या--(तपस्, तप=तप करना) स्त्री० तप, योग, काया को कष्टदेना, रियाजत।

सं० तपस्वी--(तपस्विन्, तपस्, तप [illegible] करना) पु० तपस्या करने-वाला, योगी, योग साधनेवाला, तापस, तपसी, रियाजी।

प्रा० तपाना--(तपना) क्रि० स० गर्म करना, तत्ता करना, गर्माना।

प्रा० तपी / **तप्सी**--(सं० तपस्वी) गु० तपस्या करने वाला, तपस्वी, योगी।

सं० तपोधन--(तपस्=तप, धन=दौलत, अर्थात् जिनके तपही धन है) पु० तपस्वी, तप करनेवाला, योगी, तप्सी।

सं० तपोवन--(तपस्=तपस्या, वन=जंगल) पु० तपस्या करने का वन वह वन जिसमे योगी लोग तप करते हैं, २ एक तीर्थ का नाम।

सं० तप्त--(तप्=तपना) र्म० पु० गर्म, तपा हुआ, तत्ता, उष्ण, गर्मी अथवा पीड़ा अथवा शोचसे जलाहुआ।

प्रा० तब--(सं० तदा) क्रि० वि० तिस समय, उस समय, तब, फिर, इसके पीछे।

सं० तम--(तम्=सताना व दुःखदेना) पु० तमोगुण, २ अँधेरा, अन्धकार, अज्ञान, ३ राहु, ४ अन्यन्त अर्थ में प्रत्यय, निकृष्ट, कुत्सितरूप।

सं० तमः--(तम्=सताना व दुःख देना) पु० अन्धेरा, अन्धकार, २ तमोगुण, ३ [illegible], ४ [illegible], [illegible], ५ राहु।

प्रा० तमक—(सं० तमः) स्त्री० घमंड, अभिमान, २ क्रोध, गुस्से से मुँहलाल होजाना।

प्रा० तमकना—क्रि० अ० गुस्से से मुँह लाल होजाना, खिसियाना, क्रोध करना।

प्रा० तमतमाना—क्रि० अ० लाल होना, झलझलाना, चमकना, मुँह लाल होजाना।

सं० तमस—(तम्=सताना वा दुःख देना, वा अन्धेराहोना) पु० अन्धेरा, २ तमोगुण, ३ एक नरक का नाम, ४ राहु।

सं० तमसा—(तम्=चाहना) स्त्री० एक नदी का नाम।

सं० तमारि—(तम्=अँधेरा, अरि=वैरी) पु० सूर्य।

सं० तमाल—(तम्=अँधेरा होना वा चाहना) पु० एक वृक्षका नाम जिस की पत्तियां काली होती हैं, २ चन्दन का टीका, ३ तमाखू, ४ मोरपंख।

सं० तमि, तमी—(तम=अँधेरा) स्त्री० रात, रात्री, रजनी।

सं० तमीचर—(तमी=रात, चर=चलनेवाला, वा खानेवाला, चर्=चलना, वा खाना) पु० राक्षस, निशाचर।

सं० तमोगुण—(तमस्=अँधेरा, गुण) पु० तीसरा गुण, तीन गुणों में का एक गुण, क्रोध, गजब, गुस्सा, मोह अज्ञान आदि।

सं० तमोघ्न—(तमस्+हन्) हन्को घ्न आदेश होगया पु० सूर्य्य, २ चन्द्र, ३ अग्नि, ४ दीप, ५ गुरु, ६ ज्ञानी।

प्रा० तम्बू—डेरा, पाल, रावटी, छोलदारी, कपड़कोठा।

प्रा० तम्बूरा—अरबी तम्बूरह, पु० एक बाजे का नाम।

प्रा० तम्बोली—(सं० ताम्बूली, ताम्बूल=पान) कृ० पु० पानबेचनेवाला।

प्रा० तर, तरे—(सं० तल, तल्=ठहरना) क्रि० वि० नीचे, तले।

सं० तर—गु० अधिक अर्थ में प्रत्यय, जैसे श्रेष्ठतर।

प्रा० तरई—(सं० तारा) स्त्री० तारा, तरैया, नक्षत्र।

प्रा० तरकना—क्रि० अ० कूदना।

प्रा० तरकारी—स्त्री० भाजी, साग।

सं० तरंग—(तॄ=पार होना) स्त्री० लहर, ढेऊ, हिलकोरा, २ उमंग, ललक, मौज।

सं० तरङ्गिणी—(तरङ्ग) स्त्री० नदी।

सं० तरङ्गी—(तरङ्ग) गु० लहरी, चंचल मन, उच्छाहवाला, तरल।

सं० तरण—(तॄ=पार होना) पु० तैरना, पार होना, उद्धार, बचाव, २ डोंगा, नाव, ३ स्वर्ग, गु० पार होने

वाला, तरनेवाला, मुक्ति पानेवाला।

सं० तरणि--(तृ=पार होना) पु० सूर्य, स्त्री० २ किरण, ३ नाव, नौका।

प्रा० तरना--(सं० तरण) क्रि० अ० पार होना, २ मुक्त होना, छुटकारा पाना, उद्धार होना।

प्रा० तरफना—क्रि० अ० तड़पना, व्याकुल होना।

प्रा० तरबूज़ (फा० तरबूज़) पु० एक फल का नाम।

सं० तरल—(तृ=पारहोना) गु० चंचल, तरंगी, अस्थिर, ओछा, पु० हार, २ हार के बीच की मणि। [गाछ।

प्रा० तरव--(सं० तरु) पु० वृक्ष, पेड़,

प्रा० तरवर—(सं० तरुवर, तरु=पेड़, वर=बड़ा) पु० बड़ा वृक्ष।

प्रा० तरवरिया—(तरवार) क० पु० तलवार रखनेवाला, खड्गधारी, २ तलवार।

प्रा० तरवार / तलवार (सं० तरवारि, तर चाल (वैरियोंकी) तृ=पार होना, और वृ=रोकना, अर्थात् जो वैरियों की चालको रोक देतीहै) स्त्री० खड्ग, खाडा।

प्रा० तरसना-(सं० तर्पण, तृष्=प्यासा होना) क्रि० अ० बहुत चाहना, जी लगा रहना, रटना।

प्रा० तरहैन—(सं० तारागण) पु० [illegible], नक्षत्र।

प्रा० तराई—स्त्री० दलदल, धरती, जलाभूमि, २ चौगान, चरनेकी जगह।

सं० तरि / तरी (तृ=पार होना) स्त्री० नाव, डोंगी, नौका, तरणी।

सं० तरु—(तृ=पार होना, अर्थात् जिसका लगानेवाला तरजाता है) पु० वृक्ष, पेड़, रूख, तरवर, गाछ, दरख़्त।

सं० तरुण—(तृ=बीत जाना, वा चलाजाना) गु० जवान, युवा।

प्रा० तरुणाई—(सं० तरुणता) भा० स्त्री० जवानी, जोबन, यौवन।

सं० तरुणी—(तरुण) स्त्री० जवान स्त्री, युवती।

प्रा० तरेरना—क्रि० अ० घूरना, त्योरी चढ़ाना, आंख दिखाना।

प्रा० तरैया—(सं० तारा) स्त्री० तारा, तारगण।

सं० तर्क—(तर्क=तर्क करना) स्त्री० वाद, विवाद, शास्त्रार्थ, न्याय संबंधी बात चीत, शंका दलील, २ न्यायशास्त्र, ३ (न्यायशास्त्र में) अनुमान, कल्पना।

सं० तर्कवितर्क—स्त्री० शंका, संदेह।

सं० तर्कविद्या—(तर्क+विद्या) स्त्री० न्यायशास्त्र।

सं० तर्जक—(तर्ज+अक) क० पु० [illegible]नेवाला।

सं० तर्जन—(सं० तर्ज्=धमकाना) पु०कोप,क्रोध, ताड़न, धमकी, गर्ज।
प्रा० तर्जना—(सं०तर्जन) क्रि०स० क्रोध करना, कूदना, धमकाना।
सं० तर्जनी—(तर्ज्=धमकाना, जिस से) स्त्री० दूसरी अंगुली, अंगूठे के पास की अंगुली।
सं० तर्जित—(तर्ज्+इत्) र्म्म० पु० कूदा, धमकायागया।
सं० तर्पण—(तृप्=तृप्त होना) पु० तृप्ति, संतोष, परिपूर्णता, २ पितरों को जल देना।
सं० तर्पक--(तृप्+अक) क० पु० तृप्तिदेनेवाला,संतोष करनेवाला।
सं० तर्पित—(तृप्+इत) र्म्म० पु० तृप्त, संतुष्ट, आसूदा।
सं० तर्ष--(तृप्=प्यासा होना)स्त्री० प्यास, २ चाह, इच्छा, तृष्णा।
प्रा० तर्स--स्त्री० दया, कृपा, करुणा।
प्रा० तर्सखाना—बोल०दयाकरना।
प्रा०तर्साना—(तरसना) क्रि०स० ललचाना, लुभाना।
प्रा० तर्सों--क्रि०वि०परसों के आगे का दिन, आज से पहला वा पिछला तीसरा दिन।
प्रा० तल—(तल्=ठहरना)पु०तला, नीचा, नीचे का भाग, नीचे की जगह, थाह, २ तलवा, तला, तली।
प्रा० तलघर--वि० पु० तहखाना, नाग्वाना।
प्रा० तलछट--स्त्री० मैल, निचोड़, खूद, मल।
प्रा०तलपना } तलफना } क्रि० अ०तलफना, छटपटाना, २ रोना, हाय मारना।
प्रा० तलमलाना--क्रि०अ० तल. चाना, तरसना, २ कलपना, तड़फना।
प्रा० तला--सं० तल पु० पेंदा, थाह, २ जूतेके नीचेका चमड़ा,तल्ला,तली।
प्रा० तलाव--(सं०ताल और फा० तालाब) पु० तालाव, सरोवर, जलाशय।
प्रा०तली--(सं० तल) स्त्री०तला, नीचा, पेंदा, २ जूते के नीचे का चमड़ा, ३ चूर्ण।
प्रा० तलुवा } तलवा } (सं० तल) पु०पाँव का तला, पगतली।
प्रा० तलुवाचाटना } तलुवेतलेहाथधरना } बोल० चापलूसी करना, लल्लोपत्तो करना, खुशामद करना।
प्रा० तले--(सं० तल) क्रि० वि० नीचे, उतर के, घट के।
प्रा० तलेऊपर--बोल० नीचे ऊपर, उलट पुलट।
सं० तल्प--पु० पलँग, शय्या, २ अट्टालिका, अटारी, ३ नारी,अबला।
सं० तल्लिका--स्त्री० कुंजी, ताली, २ कूंचिका, कूची, ३ तरुणी।

सं० तव—सर्वना० तेरा।

प्रा० तसर—पु० एकप्रकार का रेशम।

सं० तस्कर—(तत्=वह, कृ=करना) क० पु० चोर, चोरी करनेवाला, चोट्टा।

प्रा० तस्म—पु० चमोटा, चमोटी, तस्मा।

प्रा० तस्मई—स्त्री० खीर।

सं० तस्मै—सर्वना० तुम्हारे लिये।

प्रा० तस्सू—पु० इंच, एक प्रकार का नाप।

प्रा० तहसनहस—पु० नाश, नष्ट, तित्तर बित्तर, चौपट, उजाड़।

प्रा० तहां—(सं० तत्र) क्रि० वि० तिस जगह, वहां।

प्रा० ता—सर्वना० उसको, उसे, तिसको।

प्रा० तांगा--पु० एक तरह की गाड़ी।

प्रा० तांत--(सं० तन्तु) स्त्री० चमड़े का तार, चमड़े की डोरी, बाजे का तार, २ तांती का यंत्र।

प्रा० तांता--(सं० तति, तन्=फैलाना) पु० पांत, श्रेणी, कतार (जैसे घोड़े हाथी ऊंटों की)।

प्रा० तांती--(सं० तन्त्रि) पु० जुलाहा, बुननेवाला, ततार।

प्रा० तांबा--(सं० ताम्र) पु० एक धातु का नाम।

प्रा० ताबूत--(अरबी ... ताबूत) पु० [illegible]।

प्रा० ताई--स्त्री० बापके बड़े भाई की स्त्री।

प्रा० ताऊ--पु० बापका बड़ा भाई।

प्रा० ताक--(सं० तर्क) स्त्री० दृष्टि, दीठ, झांक, टकटकी।

प्रा० ताकना--(ताक) क्रि० स० झांकना, घूरना, देखना।

प्रा० ताग, तागा—पु० डोरा, सूत, धागा।

प्रा० तागतोड़--पु० गोटा, किनारी।

सं० ताटङ्क, ताडङ्क—(ताड़ वा ताटपीटना) (तड्=पीटना) और अङ्क, चिह्न) पु० ढेडी, कर्णभूषण, कान का गहना।

प्रा० ताड़--(सं० ताल) पु० ताल का वृक्ष, २ ताड़ना, स्त्री० पहचान।

सं० ताड़का--(तड्=पीटना) स्त्री० एक राक्षसी का नाम।

सं० ताड़क--(तड्+अक) क० पु० पीटनेवाला, सजा देनेवाला, नाम दैत्यका, २ एक मंत्र।

सं० ताड़न पु०, ताड़ना स्त्री०—(तड्=पीटना) दंड, झिड़की, सज़ा, मार, डांट, धमकी।

प्रा० ताड़ना--क्रि० स० जानना, पहचानना।

सं० ताड़नी--स्त्री० चाबुक, सोंटी, बेंत, कोड़ा।

प्रा० ताड़ी--(ताड़) स्त्री० ताड़ का

रस जिस में नशा होता है, २ कटार की मूठ।

सं० ताड़ित--(तड्+इत) म्मं०पु० मारा गया, पीटा गया।

सं० ताड्यमान--म्मं० पु० मारने योग्य, पीटने लायक।

सं० ताण्डव--(तण्ड एक ऋषि का नाम जिसने पहले पहल इस नाचको निकाला और सिखलाया, वा तडि =पीटना)पु०महादेव और उनके गणों का नाच, २ पुरुषों का नाच, जैसे "पुंनृत्यंताण्डवंप्रोक्तंस्त्रीनृत्यंलास्य मुच्यते" उद्धतनृत्य, तृणविशेष।

सं० तात--(तन्=फैलाना अपने वंश को वा बल को)पु० बाप, २ प्यारा, जैसे "तातमणामतातसनकहेहू" (रामायण) यहां पहले तात शब्द का अर्थ प्यारा और दूसरे तात शब्दका अर्थ बाप है, ३ प्यार का शब्द जो मा वाप अपने लड़के वालों के लिये और गुरु अपने शिष्यों के लिये बोलते हैं, जैसे "कहहुताताजननीबलिहारी" (रामायण) ४ भाई, ५ मित्र, सखा, गु० बड़ा, पूज्य, आर्य।

प्रा० तात, ताता (सं० तप्त) गु० गर्म, उष्ण।

प्रा० तातनी--सर्वना० उसको।

प्रा० तातनौ--सर्वना० उसका।

प्रा० ताते, तातें सर्वना० उससे, तिससे।

सं० तात्कालिक--(तत्काल) गु० उसी दमका, उसी समय का।

सं० तात्पर्य्य--(तत्पर)पु० अभिप्राय, आशय, अर्थ, मतलब।

सं० तादर्थ्य--पु० तिसके लिये, तिस के अर्थ, तिस वास्ते।

सं० तादृश--(तत्=वह, दृश्=देखना) वैसाही, उसी के बराबर, उसी के समान, उसका सा।

सं० तान--(तन्=फैलाना) स्त्री० राग का उच्चारण, स्वर, राग, ताल।

प्रा० तानतोड़ना--बोल० ठट्ठा मारना, ताल पूरी करना।

प्रा० ताना--(सं० तन्=फैलाना) पु० कपड़ा बुनने की कल पर सूत का फैलाना, ताना सूत, तानी।

प्रा० ताना, तावना (सं० तपन, वा तापन, तप्=तपाना) क्रि० स० गर्म करना, ताव देना, परखना।

सं० तान्त्रिक--(तन्त्र) क० पु० तन्त्र शास्त्र का जानने वाला, पंडित।

प्रा० तान्ना--(सं० तनन, तन्=फैलाना) क्रि० स० फैलाना, खैंचना, कसना, तम्बू तानना, बोल० हां खड़ा करना।

सं० ताप--(तप्=गर्म होना) पु० गर्मी, २ दुःख, पीड़ा, सन्ताप, ३ शोच, फिक्र, शोक, खेद, उदासी, स्त्री० तप, ज्वर, जर।

सं० तापक—(तप्+अक)क०पु०दुःखदायी, दुःखद, दुःखदाता।

सं० तापित—(ताप्+इत)मर्म०पु० दुःखित, तापयुक्त। [निढाल।

प्रा० तापतिल्ली—स्त्री०प्लीहा,पिलही,

प्रा० तापना—(सं० तापन,तप्=तपाना) क्रि० अ० गर्माना, देह सेकना, शरीर गर्म करना, जाड़े में आग के पास बैठकर देह को गर्माना, घाम खाना।

सं० तापस—(तपस्=तप) पु०तपसी, तपस्वी, तप करनेवाला, योगी।

प्रा० तामड़ा—(सं० ताम्र)पु०तांबे जैसे रंगका एक हलकेमोलका रतन।

सं० तामरस—(तामर=पानी, सम्=सोना)पु०कमल, कँवल, २ तांबा ३ सोना।

सं० तामस—(तमस्=तमोगुण, वा अंधेरा) गु० तमोगुणी, तामसी, क्रोध मोह आदि मे लगा हुआ, पु० अंधेरा, २ तमोगुण, ३ दुष्ट. ४ अहंकार, क्रोध मोह आदि।

प्रा० तामसी—(सं० तामसिक)गु० क्रोधी, तमोगुणी. रिसकरनेवाला।

प्रा० तामेश्वर—(सं० ताम्रेश्वर, ताम्र+ईश्वर) पु० तांबे की राख, भस्म, बंग।

सं० ताम्बूल—(तम्=चाहना) पु० पान, नागरवेल का पत्ता।

सं० ताम्बूली } पु० तमोली,पान
ताम्बूलिक } बेचनेवाला।

सं० ताम्र—(तम्=चाहना)पु० तांबा, २ लालरंग।

सं० ताम्रकार } क०पु०ठठेरा,ता-
ताम्रकुट्टक } मा पीटनेवाला।

फ़ा० तार-पु० लोहे आदि धातु का खिंचाहुआ तागा जो सितार आदि बाजों में लगाया जाताहै,—तार बांधना, बोल० किसी काम को लगातार जारी रखना,——तार टूटना, बोल० अलग होजाना, छूट जाना, किसीकामका बंध होजाना।

सं० तारक—(तॄ=पारकरना, वा बचाना) क० पु० बचानेवाला, रक्षक, उद्धार करनेवाला, पु० एकराक्षसका नाम, २ एक प्रकार का मन्त्र, ३ तारा, सितारा, नक्षत्र, ४आंखका तारा,पुतली,कनीनिका।

सं०तारण—(तॄ=पारकरना,बचाना) गु० पार करनेवाला, पु० उद्धार, पार करना, २ घरनई, बेड़ा।

सं० तारणतरण—(तॄ=पार करना, गु० पार करनेवाला, और पार होने वाला।

प्रा० तारणा } (सं०तारण)क्रि०
तारना } स० पार करना.ब-

चाना, उद्धार करना, मुक्ति देना, मुक्त करना।

सं० तारतम्य-भा० पु० फर्क़,अंतर, दर्जा बदर्जा।

प्रा०तारतोड़—पु०कारचोबी,बूटानिकालना,बूटे का काम, बूटे कारी।

सं० तारा—(तृ=पार होना, अर्थात् जाना) पु० नक्षत्र,सितारा,२ आंख की पुतली,स्त्री०बालि वानरकी स्त्री और अंगद की मा,२ बृहस्पति की स्त्री, ३ देवी का नाम।

प्रा० तारेगिनना—बोल० नींद नहीं आना, नींद न पड़ना।

सं० तारिक—पु०उतराई,स्त्री०ताड़ी, तालरस।

सं० तार्किक—(तर्क) क०पु०नैयायिक, तर्कशास्त्री।

सं० ताल—(तल्=ठहरना,वा तड्=पीटना)पु०एकवृक्षका नाम,ताड़, खजूर, २ ताली बजानेका शब्द,३ गानका परिमाण, ४ झांझ,मँजीरा ५नाला,६तालाब, ७कुश्ती करने में भुजा पर हाथ मारने का शब्द।

प्रा० तालमारना } तालठोकना } बोल०कुश्ती करनेमें भुजा को हाथ से ठोंकना। [नाम।

प्रा० तालमखाना-पु०एकपौधेका

तालवृन्त } तालवृन्तक } पु० पंखा, व्यजन, बेना, वादकश।

सं० तालव्य—(तालु)गु० जो तालु से बोले जायँ, जैसे इ ई च छ ज झ ञ य श।

प्रा० ताला—(सं० ताल)पु०बन्द करने की कल, कुलफ, कुफ़ल।

सं० तालांक—(ताल+अंक) पु० बलराम, २ महादेव, ३ नाचने वाला, ४ ताल का लक्षण, ५ आरा, ६ ग्रंथ।

प्रा० ताली—(सं०ताल) स्त्री०कुंजी, चाभी, २ हाथबजाना, ३ एक प्रकार का ताड़ वृक्ष।

प्रा० तालीएकहाथसेबजाना-बोल० यह मुहावरा अनहोना जतलाने के लिये बोला जाता है।

प्रा० तालीबजाना } तालीमारना } बोल०हाथ परहाथमारना, हाथ बजाना, २ धिक्कारना, धुतकारना, हूहूकरना।

सं० तालु—(तृ=पार होना, अर्थात् जहां से अक्षर निकलते हैं) पु० तालुवा, तालू।

प्रा० ताव—(सं०ताप,फ़ा, ताफ़)पु० ताप, गर्मी, २ क्रोध, कोप, तमक, ३ बल, जोर, ४ चमक, तेज, प्रताप, ५ पेंट, मरोड़, बल, बट, अकड़, ६ कागज की परत, ७ जांच, परख, कस, ८शीघ्रता, उतावली,

हड़बड़ी ।

प्रा० **तावदेना**-बोल० मरोड़ना, बटना, ऐंठना, २ मोछों पर हाथ फेरना, मोछें सँवारना, ३ गर्म करना (जैसे लोहे को)।

प्रा० **तावपेचखाना**-बोल० गर्म होना, क्रोधित होना, गुस्सा होना ।

सं० **तावत्**--(तत्=वह) क्रि० वि० उतना, इतना, यहां तक, यहां लों, तब तक ।

प्रा० **तावना**--(सं० तपन,वा तापन, तप्=तपाना) क्रि०स० गर्म करना, गर्माना, २ ताव देना, परखना, कसना, जांचना,३ऐंठना, मरोड़ना॥

प्रा० **ताश**--पु० लप्पा, बादला, बूटेदार पट्टू ।

प्रा० **तास**--पु० गंजफा, २ लप्पा, बादला, बूटेदार पट्टू ।

प्रा० **तासु**--(सं० तस्य) सर्वना० उसका, जिसका ।

प्रा० **तासों**--(सं० तस्मात्)सर्वना० उससे, जिससे ।

प्रा० **ताहि**--(सं० तम्) सर्वना० उसको, उसे, जिसको, जिसे ।

प्रा० **तिकोनिया**--(सं० त्रिकोण) गु० तिखूंटा ।

सं० **तिक्त**--(तिज्=तीक्ष्ण करना)गु० तीखा, कडुआ ।

प्रा० **तिगुन**--(सं० त्रिगुण, त्रि=तीन, गुण=गुना) गु० तिगुना, तीन गुना, तिहरा ।

सं० **तिग्म**--(तिज्+म) कर्म० पु० तीक्ष्ण, पैना, तेज ।

प्रा० **तिच्छन** / **तीछन** (सं० तीक्ष्ण) गु० तीखा,तीता,कठोर, कड़ा ।

प्रा० **तिजारी**--(सं० तृतीय ज्वर, तृतीय=तीसरा, ज्वर=तप) स्त्री० जो तप एक दिन बीचमें न आकर तीसरे दिन फिर आवे, अंतरिया, ज्वर ।

सं० **तिजिल**--(तिज+इल,तिज्=क्षमा करना) क० पु० चन्द्रमा ।

प्रा० **तित**--(सं० तत्र) क्रि० वि० वहां, तहां, तिधर । [क्षमी ।

सं०**तितिक्षक**-क० पु० सहनशील,

सं० **तितिक्षा**--(तिज्=सहना)भा० स्त्री० धीरज, क्षमा, सहनशीलता, धैर्य्य सहना ।

सं० **तिथि**--(अत्=जाना) स्त्री० हिंदी महीनों के दिन, हिंदी महीनों की तारीख ।

प्रा० **तिनका**--(सं० तृण) पु० तृण, डांडी, घास का टुकड़ा ।

प्रा० **तिनकादांतोंमेंलेना**- बोल० आधीन होना, दीन हो मांगना, जी की अमन मांगना ।

प्रा० तिबारा—(सं० त्रि=तीन, द्वार=दरवाज़ा) पु० तीन दरवाज़ेका मकान, कमरा, तिदरी, २ (तीनबार) गु० तीन बार, तीनदफे।

सं० तिमिर—(तिम्=भिगोना, वा तम्=अँधेरा होना) पु० अंधेरा, अन्धकार, २ एक प्रकारका आंख का रोग।

प्रा० तिमी—स्त्री० बड़ी मछली।

प्रा० तिय-(सं० स्त्री) स्त्री० नारी, लुगाई, स्त्री।

प्रा० तिरखा—(सं० तृषा) स्त्री० प्यास, पीने की चाह, पियास, २ तृष्णा, चाह।

प्रा० तिरछा, तिर्छा—(सं० तिर्यञ्च, तिरस्=टेढ़ा, अञ्च्=जाना) गु० टेढ़ा, बांका, आड़ा।

प्रा० तिरछादेखना-बोल० कनअँखियों देखना, टेढ़ी आंखसे देखना, तिरछी चितवन से देखना।

प्रा० तिरना—(सं० तरण) क्रि० अ० पैरना, हेलना, तैरना।

प्रा० तिरपन—(सं० त्रिपञ्चाशत, त्रि=तीन, पञ्चाशत्=पचास) गु० तीन और पचास।

प्रा० तिरपौलिया—(त्रि=तीन, पोल=दरवाज़ा) पु० तीन दरवाज़ेका मकान, २ तिराहा।

प्रा० तिरसठ—(सं० त्रिषष्टि, त्रि=तीन, षष्टि=साठ) गु० तीन और साठ।

सं० तिरस्कार—(तिरस्=अवज्ञा, वा अनादर, कृ=करना) पु० अपमान, अवज्ञा, अनादर, निंदा, घिन, धिक्कार। [बेइज्ज़ती।

सं० तिरस्कृत-र्म्म० पु० अपमानित।

सं० तिरस्क्रिया—(तिरस्+क्रिया) अनादर, त्याग।

प्रा० तिराना—(तिरना) क्रि० स० तैराना, पैराना, हेलाना।

प्रा० तिरानबे—(सं० त्रिनवति, त्रि=तीन, नवति=नव्वे) गु० नव्वे और तीन, ९३।

प्रा० तिरासी—(सं० त्र्यशीति, त्रि=तीन, अशीति=अस्सी) गु० अस्सी और तीन, ८३।

प्रा० तिरिया—(सं० स्त्री०) गु० नारी, लुगाई, स्त्री।

प्रा० तिरियाचरित्र—(सं० स्त्रीचरित्र) स्त्री० स्त्रियों के छल बल, स्त्रियोंके फरेब।

सं० तिरोधान-पु० आच्छादन, गुप्त, अन्तर्द्धान।

सं० तिरोहित—(तिरस्=छिपा, धा=रखना) गु० छिपा हुआ, गुप्त, ढका हुआ।

प्रा० तिर्मिराना—क्रि० अ० चौं

याना, २ फड़कना, हिलना, फड़फड़ाना, ३ पानीपर तेलका तैरना।

सं० तिर्य्यक्—गु० टेढ़ा, तिरछा, कुटिल, पु० पशु, पक्षी।

प्रा० तिर्हुत, तिरहुत, तिरहुति—(सं० तीरभुक्ति)पु० एक जिलाका नाम जो सूबे बिहारमें है और जिसका मुख्य नगर मुजफ्फरपुर है।

सं० तिल—(तिल्=चिकना होना) पु० एक पौधा अथवा उसका बीज जिसका तेल निकलता है, २ देह में एक काला चिह्न।

सं० तिलक—(तिल्=जाना) पु० टीका ललाट में चन्दन वा केशर वा रोली आदि का चिह्न, गु० श्रेष्ठ, प्रधान, मुख्य, सर्वोत्तम, अग्रगण्य, जैसे " रघुकुलतिलकसदा तुम उथपनथापन " अर्थात् रघुवंशियों में प्रधान वा श्रेष्ठ, (जानकीमंगल)

प्रा० तिलकुट—(तिल, कुट=कूटाहुआ) पु० एक तरहकी मिठाई जिसमें तिलकूट कर मिलाते हैं।

प्रा० तिलंगा—(सं० तैलंग, करनाटक देश) पु० तैलंग देशका वासी, पहले ही पहल अंगरेजी सेना में तैलंग अर्थात् करनाटक देश के लोग भरती हुए थे इसलिये अंगरेजी सेना के सब सिपाहियों को तिलंगे कहते हैं।

प्रा० तिलंगी-स्त्री० गुड्डी, पतंग, चंग।

प्रा० तिलड़ा-(सं० त्रि, प्रा० लड़, लड़ी) पु० तीन लड़ का हार।

प्रा० तिलहा-- (तैल) गु० तेलिया, तेल सा चिकना।

प्रा० तिलुआ-(तिल) पु० तिलकेलड्डू

प्रा० तिल्ली-स्त्री० पिलई, तापतिल्ली।

सं० तिलोत्तमा-स्त्री० स्वर्गवेश्या।

सं० तिलोदक-(पु० तिल+उदक) तिल और जल तर्पण, पितरों का पानी।

सं० तिलौदन-(तिल+ओदन) कृशरान्न अर्थात् खिचड़ी।

प्रा० तिस (सं० तृष्) स्त्री० प्यास, पियास।

प्रा० तिसरायत-- (तीसरा) पु० तीसरा मनुष्य, बिचवैया, मध्यस्थ, पंच, तिहायत।

प्रा० तिहत्तर--(सं० त्रिसप्तति, त्रि=तीन, सप्तति=सत्तर) गु० सत्तर और तीन, ७३।

प्रा० तिहरा--(त्रीणि=तीन) पु० तिलड़ा, गु० तिगुना।

प्रा० तिहाई—(सं० तृतीय) स्त्री० तीसरा भाग।

प्रा० तिहायत--(तीसरा) पु० तीसरा मनुष्य, तिसरायत, बिचवैया, मध्यस्थ, पंच।

प्रा० तिहारा-(सं० तव) सर्वना० तेरा, तुम्हारा ।

प्रा० तिहिं-सर्वना० उन्हों को।

प्रा० तिहुँ, तिहूँ-(सं० त्रि) गु० तीन।

सं० तीक्ष्ण-(तिज्=तीखा होना) गु० तीखा, चोखा, पैना, तेज, तीव्र, २ तीता, कडुआ, ३ उत्साही, फुर्तीला, चालाक, तेज, ४ चतुर, प्रवीण, ५ क्रोधी ।

प्रा० तीखा-(सं० तीक्ष्ण) गु० चोखा, पैना, तेज, तीक्ष्ण, तीव्र, २ तीता, कडुवा, ३ क्रोधी।

प्रा० तीज-(सं० तृतीया) स्त्री० तीसरी तिथि ।

प्रा० तीत, तीता-(सं० तिक्त) गु० चरपरा, कडुवा, कटु, २ तीखा, तीक्ष्ण, तीव्र ।

प्रा० तीतर-(सं० तित्तिरि, तित्ति ऐसा शब्द, रा=लेना) पु० एक पखेरू का नाम।

प्रा० तीतरके मुँह लछमी, तीतरके मुँह कुशल जबकि कोई कम समुझ मनुष्य किसी बात को निर्णय करने के लिये नियत किया जाय जिसके निर्णय करने में वह योग्य नहीं है तब उस मनुष्य के लिये यह कहावत बोली जाती है।

प्रा० तीतरी-स्त्री० तितली, पांखों वाला कीड़ा ।

प्रा० तीन-(सं० त्रि) गु० दो और एक, तीन, ३ ।

प्रा० तीनतेरह-तित्तरवित्तर, डांवाडोल, छिन्न भिन्न, खराब, सत्यानास, चौपट, तहस नहस।

प्रा० तीय-(सं० स्त्री) स्त्री० लुगाई, नारी, स्त्री, भार्या ।

प्रा० तीयल-(तीय) स्त्री० स्त्रियोंके कपड़ों का जोड़ा ।

सं० तीर-(तीर्=पार हो जाना, वा पूरा करना) पु० किनारा, तट, कूल, २ बाण, क्रि० वि० पास, ढिग।

सं० तीर्थ-(तॄ=पार होना) पु० पवित्र जगह, पुण्यस्थान, यात्राकी जगह, जैसे प्रयाग, काशी, गया, जगन्नाथ पुरीआदि विशेषकरके ये जगह जिनके पास पवित्र नदियां (जैसे गंगा यमुना आदि) बहती हों और उन के आस पास की जगह ।

सं० तीर्थराज-(तीर्थ+राजा) पु० तीर्थों का राजा, प्रयाग, इलाहाबाद।

प्रा० तीली-(सं० तूली) स्त्री० सींक, सलाई ।

सं० तीव्र-(तीव्=मोटा होना, वा तिज्=तीखा होना) गु० तीखा, तीक्ष्ण २ तीता, चरपरा, बहुत कडुवा, ३ अत्यन्त, अपार ।

प्रा० तीस-(सं० त्रिंशत्) गु० बीस और दश, ३० ।

प्रा० तीसरा--(सं० तृतीय) गु० तीजा, तिहायत।

प्रा० तीसी—(सं० अतसी) स्त्री० अलसी, अतसी।

प्रा० तुक-स्त्री० दोहे चौपाई आदि छंद में पद के अन्त के अक्षरों का मिलान, यमक, जमक, काफिया संबंध, २ छन्द का एक पद।

प्रा० तुक्कली } स्त्री० छोटी गुड्डी,
तुक्कल } छोटी पतंग।

सं० तुङ्ग—(तुन्ज्=बचाना, वा दृढहोना) गु० ऊंचा, लंबा, पु० एकपेड़ का नाम, २ पहाड़।

सं० तुङ्गभद्रा-स्त्री० एक नदी का नाम जो मैसूर में है।

सं० तुच्छ—(तुद्=दु:ख से, छो=काटना) पु० पुआल, तुस, गु० नीचा, नीच, शून्य, छूछा, निष्फल, अवज्ञा करने योग्य, घृणाके योग्य, अधम, हलका, निकम्मा, थोड़ा।

सं० तुट--पु० संग्राम, टूटफूट।

सं० तुण्ड--(तुड=तोड़ना) पु० मुख, होंठ, चोटी, नोक, चोंच।

प्रा० तुतराना } क्रि० अ० हिचक
तुतलाना } हिचकके बोलना, रुकजाना, अटक अटकके बोलना, अशुद्ध बोलना, साफ नहीं बोलना, जैसे छोटे बालक बोलते हैं।

प्रा० तुनक-[illegible]

प्रा० तुम--(सं० त्वम्) सर्वना० मध्यम पुरुष का बहुवचन। [पिंजाना।

प्रा० तुमाना—क्रि० स० धुनवाना,

सं० तुमुल-पु० अत्यन्त रोमहर्षण युद्ध, घोर युद्ध।

सं० तुम्बुर-पु० तम्बूरा।

सं० तुम्बरी-स्त्री० वीणा, बीणा।

प्रा० तुरई-स्त्री० एकतरकारीका नाम

प्रा० तुरग } (तुर=वेग से, गम्=
तुरी } जाना) पु० घोड़ा।

सं० तुरङ्ग } (तुर=वेगसे, गम्=जा-
तुरङ्गम } ना) पु० घोड़ा, तुरग, अश्व, बाजि।

प्रा० तुरत } (सं० त्वरित, त्वर=ज-
तुरन्त } ल्दीकरना) क्रि० वि० झटपट, तुरतफुरत, शीघ्र, जल्दी, अभी।

प्रा० तुरपन-(तुरपना) स्त्री० एक तरह का टांका।

प्रा० तुरपना-क्रि० स० सीना, टांकना।

प्रा० तुरही } (सं० तूर्य) स्त्री० रण
तुरी } सिंगा, नफीरी, सहनाई करनाई, नरसिहा।

प्रा० तुराई-स्त्री० सेज, शय्या, तोशक, बिछौना, २ (त्वरा) गु० वेग से।

सं० तुरीय--(चतुर्=चार) गु० चौथा, पु० निर्गुण ब्रह्म, स्त्री० एक अवस्था।

प्रा० तुरुक-मुसलमान, तुर्किस्तानका रहनेवाला।

प्रा० तुल, तूल (सं० तुल्य) गु० बराबर, समान।

प्रा० तुलकरखड़ेहोना-बोल० लड़नेकेलिये आमने साम्हने खड़ेहोना।

प्रा० तुलना--(सं० तुलन, तुल्=तोलना) क्रि० अ० तोला जाना, २ उपमा, बराबर होना, लड़ने को खड़े होना।

प्रा० तुलसिका, तुलसी (तुला=बराबरी, अस्=फेंकना, अर्थात् जिस के बराबर सृष्टिमें कोई नहीं) एक पौधे का नाम।

सं० तुलसी, तुलसीदास पु० हिंदी रामायण कर्त्ता।

सं० तुला--(तुल्=तोलना) स्त्री० बराबरी, २ तराजू, ३ सातवीं राशि (ज्योतिष में)।

सं० तुलाधार--(तुला+आधार) क० पु० वैश्य, बनिया, बक्काल।

सं० तुलित-मं० पु० तौला हुआ।

सं० तुल्य-(तुल्=तोलना, वा तुलना) गु० बराबर, समान, सदृश, सम।

सं० तुष=भूसी, छिलका, चोकर।

सं० तुषार--(तुष्=प्रसन्न करना वा होना) पु० शीत, पाला, हिम, बर्फ, ओस, गु० ठंढा।

सं० तुष्ट (तुष्=प्रसन्न होना) क० पु० तृप्त, सन्तुष्ट, प्रसन्न, आनंद, हर्षित, साबिर।

सं० तुष्टि-(तुष्=प्रसन्न होना) भा० स्त्री० तृप्ति, सन्तोष, आनंद, प्रसन्नता।

सं० तुहिन-(तुह्=मारना, वा हानि पहुँचाना) पु० पाला, वर्फ, हिम।

प्रा० तू (सं० त्वम्) सर्वना० मध्यम पुरुष, एक वचन।

प्रा० तूतू-कुत्ते को पुकारनेकाशब्द।

प्रा० तूंबा--(सं० तुम्ब, तुबि=मांगना) पु० तुम्बा, एक तरह का बरतन जिसमें साधु लोग पानी रखते हैं।

सं० तूण, तूणीर (तूण्=भरना, वा सिकुड़ना) पु० भाथा, तर्कश, तीर रखने की पेटी, निषंग।

प्रा० तूतक, तूतिया (सं० तुत्थ, तुत्थ्=फैलानावा ढकना) पु० नीलाथोथा।

प्रा० तून--(सं० तुन्न, तुद्=पीड़ा देना) पु० एक पेड़ का नाम जिस की लकड़ीकी मेज कुरसी आदि बनती हैं उसके फूल पीले होते हैं जिस से कपड़े रंगे जाते हैं।

सं० तूर्ण--(तूर् वा त्वर्=जल्दी करना) क्रि० वि० झटपट, तुरन्त, शीघ्र।

सं० तूल--(तूल्=निकालना, वा भरना) स्त्री० रूई, निर्बीज रूई।

सं० तूली--(तूल्=भरना) स्त्री० चित्रों की कूची, तीली, सींक।

प्रा० तुवर, तूंवर पु० राजपूतों की एक जाति।

सं० तूष्णीम्--(तुष्=सन्तोष करना वा सन्तुष्ट होना) क्रि० वि० चुपचाप, मौन, खामोश ।

सं० तृण--(तृह=नाश करना) पु० घास, चारा, घासफूस, तिनका, खर ।

सं० तृणवत्--(तृण=तिनका, वत्=बराबर) गु० तिनके के बराबर, तुच्छ, हलका ।

सं० तृतीय--(त्रि=तीन) गु० तीसरा ।

सं० तृतीया--(तृतीय) स्त्री० तीसरी तिथि ।

सं० तृप्त--(तृप्=तृप्त होना) क० पु० सन्तुष्ट, हर्षित, आनंदित, सुखी ।

सं० तृप्ति (तृप्=तृप्त होना) भा० स्त्री० सन्तोष, हर्ष, प्रसन्नता, अघाना ।

सं० तृष् } (तृष्=प्यासा होना) भा०
तृषा } स्त्री० पियास, प्यास, तृष्णा, पिपासा ।

सं० तृषार्त्त--(तृषा=पियास, आर्त्त=घबराया हुआ) गु० पियास से व्याकुल, बहुत प्यासा ।

सं० तृषावन्त--(तृषा=पियास, वन्त=वाला) क० पु० पियासा, प्यासा ।

सं० तृषित--(तृषा) क० पु० पियासा, प्यासा ।

सं० तृष्णा--(तृष=प्यासा होना, वा लोभ करना) स्त्री० पियास, प्यास, २ लोभ, लालच, ३ चाह, इच्छा, ४ लालसा, जो वस्तु नहीं मिली हो उसकी चाह ।

सं० ते--सर्वना० वे, २ तेरा ।

प्रा० ते }
तैं } अव्यय० से ।

प्रा० तैंतालीस--(सं० त्रयश्चत्वारिंशत्, त्रि=तीन, चत्वारिंशत्=चालीस) गु० चालीस और तीन ।

प्रा० तैंतीस--(सं० त्रयस्त्रिंशत्, त्रि=तीन, त्रिंशत्=तीस) गु० तीस और तीन ।

प्रा० तेंदुवा--पु० चीता, बाघ ।

प्रा० तेईस--(सं० त्रयोविंशति, त्रि=तीन, विंशति=बीस) गु० बीस और तीन ।

सं० तेज--(तेजस्, तिज्=तीखा होना) भा० पु० प्रताप, ऐश्वर्य, पराक्रम, प्रभाव, चमक, २ बल, ३ आग, ४ तीक्ष्णता । [नायागया ।

सं० तेजित--कर्म० पु० शाणित, पै-

प्रा० तेजपात--(सं० तेजपत्र, तेज=तीखा, पत्र=पत्ता) पु० तेज की पत्ती, एक तरह का गरम मसाला ।

प्रा० तेजमान } (सं० तेजस्विन्)
तेजवन्त } गु० प्रतापी, ऐश्वर्यवान् [जितना ।

प्रा० तेता--(सं० तावत्) क्रि० वि०

प्रा० तेतो--क्रि० वि० जितना ।

सं० तोमर--पु० नाम छन्द, २ एक प्रकार का शस्त्र ।

प्रा० तेरस--(सं० त्रयोदशी) स्त्री०

तेरहवीं तिथि।

प्रा० तेरह—(सं० त्रयोदश)गु० तीन और दश १३। [बरस।

प्रा०तेरुस—(सं०तृतीय)पु०तीसरा

प्रा० तेल—(सं० तैल, तिल अर्थात् तिलों से निकला हुआ) पु० तिलों से निकलाहुआ चिकना पदार्थ।

प्रा० तेलचढ़ाना—बोल० ब्याह में दुलहा और दुलहिन के शिर, कंधे और हाथ पैरों में तेल और हल्दी मलना, (यह ब्याहकी एक रीति है)।

प्रा०तेलिया—(सं० तैल)गु० एक प्रकार का रंग।

प्रा०तेली—(सं० तैली) पु० तेल बेचनेवाला।

प्रा०तेलिन—स्त्री०तेली की लुगाई।

प्रा० तेवरी—स्त्री० घुरकी, धमकी, झिड़की।

प्रा० तेवरीचढ़ाना—बोल० घुड़कना, आंख दिखलाना, भौं चढ़ाना।

प्रा०तेवहार—पु०पर्व,उत्सव,मेला।

प्रा० तेह } पु० क्रोध, कोप, गुस्सा,
तेहा } रिस, झांझ।

प्रा० तेहर—पु० स्त्रियों के पावँ का गहना।

प्रा० तेहि—सर्वना० उसने, उसको, उनको, जिससे, उससे।

प्रा०तैरना—(सं०तरण)क्रि० अ० ठेलना, पैरना, तिरना, पार होना।

सं० तैलङ्ग—पु० कर्णाटकदेश।

प्रा०तोंद—(सं० तुन्द, तुण्=खाना) स्त्री० बड़ा पेट।

प्रा० तोंदैल } (तोंद)गु० मोटा पे-
तोंदैला } ट वाला।

प्रा० तोड़—(तोड़ना) पु०टूट,फूट, खण्डन, २ नदीका वेग, ३दूधकापानी।

प्रा० तोड़जोड़—बोल० काट छांट, काट कूट, बात को ठीक ठाक करके बोलना।

प्रा० तोड़डालना—बोल० तोड़ना, और नाश करना, गिराना, टुकड़े टुकड़े करना।

प्रा०तोड़देना—बोल० तोड़ना,वि० गाड़ना।

प्रा० तोड़लेना—बोल० खींचना, नोचना, खींच लेना (जैसे पेड़ से फल फूल आदि)।

प्रा०तोड़ना—(सं०त्रोटन, त्रुट्=तोड़ना) क्रि० स० फोड़ना, फाड़ना, टुकड़े करना, २ रुपया भुनाना, ३ खींच लेना (पेड़ से फल फूल आदि)।

प्रा० तोड़ा—पु० कमी, घटी, २ हज़ार रुपयों की थैली, ३ पलीता, ४ रस्सी का टुकड़ा, ५ सिकली, ६ पांव में पहनने का गहना।

प्रा०तोतला-गु०हकला,लड़बड़ा।

प्रा०तोता—पु०सुग्गा, सुआ, सुगा।

प्रा० तोपना—क्रि० स० ढांकना, छिपाना, गाड़ना।

प्रा० तोबड़ा—पु० एक प्रकार की थैली जिस में घोड़ा दाना खाता है।

सं० तोमर—(तु=नाश करना, और मृ=मारा जाना, वा तो गये हुये (तु=जाना) और मृ=मारा जाना अर्थात् जो उसके सामने जाते हैं वे मारे जाते हैं) पु० बरछी, सांगी, एक शस्त्र का नाम, २ एक छंद का नाम।

सं० तोय—(तु=जाना, वा बढ़ना वा तु=पूर्णता (तु=भरना) और या जाना अर्थात् जो हरएक चीज़ को भर देता है) पु० पानी, जल, नीर, वारि।

सं० तोयद—(तोय=पानी, द=देने वाला, दा=देना) पु० बादल, मेघ, घटा।

प्रा० तोयधर—(तोय=पानी, धर= रखनेवाला, धृ=रखना) पु० बा- दल, मेघ, घन।

सं० तोयनिधि—(तोय=पानी, निधि =ख़ज़ाना) पु० समुद्र, सागर, स- मुद्र। [तड़ागादि।

सं० तोयाशय—वि० पु० जलस्थान,

प्रा० तोर—सर्वना० तेरा।

सं० तोरण—(तुर=जल्दी करना) पु० घर के द्वार के बाहर सिर से [illegible]

और कोई उत्सव में बांधा जाता है, २ फूलों की माला जो पर्व अ- थवा किसी उत्सव में फाटक पर बांधी जाती है। [वैया।

सं० तोलक—क० पु० तौला, तौल-

प्रा० तोल / तौल—(सं० तुल्=तोलना) पु० माप, जोख, नाप।

प्रा० तोला—(सं० तुल्=तौलना) पु० बारह माशे की तौल।

सं० तोषक-(तुष्+अक) क० पु० तृप्ति- कारक, संतोषी, प्रसन्न करनेवाला।

सं० तोष—(तुष्=प्रसन्न होना) भा० पु० सन्तोष, हर्ष, आनंद, प्रसन्नता।

प्रा० तोहि—सर्वना० तुझको, तुझे।

प्रा० तौलना—(सं० तुल्=तौलना) क्रि० स० जोखना, तौल करना, वज़न करना।

सं० त्यक्त—(त्यज्=छोड़ना) स्त्री० पु० छोड़ा हुआ, त्यागा हुआ।

सं० त्याग—(त्यज्=छोड़ना) भा० पु० छुड़ाव, तजना, २ दान, ३ विरक्ति, वैराग्य।

प्रा० त्यागना—(सं० त्याग) क्रि० स० छोड़ना, तजना, त्याग करना।

सं० त्यागशील—क० पु० दाता, दा- नी, [illegible]।

सं० त्याजित—वि० पु० छोड़ाहुआ, [illegible]।

सं० त्यागी--(त्यागिन्,त्याग)क०पु० छोड़नेवाला, २ वैरागी, ३ उदार, दाता।

सं० त्याज्य--र्म०पु० त्यागने योग्य, छोड़ने लायक। [ख्याति।

सं० त्रपा--स्त्री० लज्जा, कीर्ति, यश,

सं० त्रपाक--क० पु० लज्जालु, लज्जाशील।

सं० त्रपित--(त्रप्+इत,त्रप्=लजाना) र्म० पु० लज्जित, शर्माया हुआ।

सं त्रयोदशी--(त्रय=तीन, दश=दश) स्त्री० तेरस, तेरहवीं तिथि।

सं० त्रस्त--(त्रस्=डरना) क० पु० डरा हुआ, डरपोका, भीत, डरौवा।

सं० त्राण--(त्रै=बचना) भा० पु० बचाव, रक्षा, पालन, २ मुक्ति, मोक्ष, निस्तार, छुटकारा, उद्धार, ३ कवच, लोहे की कुरती।

सं० त्राणकर्त्ता--(त्राण+कर्त्ता) क० पु० बचानेवाला, मुक्तिदाता, उद्धार करनेवाला, मोक्ष देनेवाला।

सं० त्राता--(त्रै=बचाना) क० पु० बचानेवाला, रक्षक, त्राणकर्त्ता, मुक्तिदाता।

सं० त्रास--(त्रस्=डरना) भा०पु० डर, भय, शंका, धाक।

सं० त्रासक--(त्रास+अक) क० पु० डरानेवाला।

सं० त्रासित--(त्रस्=डरना) र्म० डराहुआ, भयान्वित, भयभीत।

प्रा० त्राह--(सं० त्राहि,त्रै=बचाना) वि० बो० बचाओ, दया करो।

प्रा० त्राहत्राहकरना--बोल० विलाप करना, हाय हाय करना, दया के लिये पुकारना, २ दोष लगाना, बुरा कहना।

सं० त्रि--(तॄ=पार होना)गु० तीन ३।

सं० त्रिकालदर्शी--(त्रि=तीन, काल=समय, दर्शी=देखनेवाला, दृश=देखना) पु० भूत, वर्त्तमान और भविष्यत् इन तीनों समय की बात जाननेवाला, त्रिकालज्ञ, सर्वज्ञ, २ ऋषि, मुनि।

सं० त्रिकूट--(त्रि=तीन,कूट=चोटी) पु० एकपहाड़कानाम जिसपर लंकापुरी बसतीहै,जैसे "गिरि त्रिकूटऊपर बस लंका" "तहँ रह रावण सहज अशंका;" (तुलसीकृतरामायण)।

सं० त्रिकोण--(त्रि=तीन,कोण=कोना) पु० तिकोन, तिखूंट, त्रिभुज।

सं० त्रिगुण--र्म० पु० तीन से गुणा हुआ पु० तीन गुण,सतोगुण, रजोगुण, तमोगुण।

सं० त्रिजटा--स्त्री० एक राक्षसी का नाम जिसका वर्णन रामायण में है।

सं० त्रिदश-(त्रि=तीन, दशा=अवस्था अर्थात् १ जन्मना, २ विद्यमान रहना

३ नाश होना ये तीन दशा जिनकी हों, अथवा त्रि=तीन, त्रिदश तीस अर्थात् तेंतीस, यहां इस एकही त्रि शब्द का अर्थ दो बार लिया जाता है मुख्य देवता ३३ हैं, जैसे १२ सूर्य, ११ रुद्र, ८ वसु, और २ विश्वेदेव) पु० देवता, देव, सुर।

सं० त्रिदोष--(त्रि = तीन, दोष= बिगाड़) पु० वात, पित्त, कफका रोग।

सं० त्रिधा--(त्रि = तीन, धा = प्रकार अर्थ में प्रत्यय) क्रि० वि० तीन प्रकार से, त्रिविध।

सं० त्रिनयन, त्रिनेत्र (त्रि = तीन, नयन वा नेत्र = आंख, अर्थात् तीन आंखवाला) पु० शिव, महादेव।

प्रा० त्रिपुंड--(सं० त्रिपुण्ड्र, त्रि = तीन, पुण्ड्र = लकीर, पुंडि=मलना) पु० तीन रेखा का तिलक, शिव और शक्तिमतवालों का तिलक।

सं० त्रिपुर--(त्रि = तीन, पुर = नगर) पु० एक दैत्य का नाम जिसने तीन पुर बनाये थे।

सं० त्रिपुरदहन--(त्रिपुर = एक असुरका नाम, दहन = जलानेवाला, दह = जलाना) पु० शिव, महादेव।

सं० त्रिपुरान्तक--(त्रिपुर + अन्तक, नाश करनेवाला) पु० शिव, महादेव।

सं० त्रिपुरारि--(त्रिपुर, अरि= वैरी) पु० शिव, महादेव।

प्रा० त्रिफला--(त्रि=तीन, फल) पु० हड़, बहेड़ा, आंवला।

सं० त्रिभंगी--(त्रि=तीन, भंग=टूटा हुआ) पु० टँगड़ी, कमर और गरदन को झुका कर खड़े होने की दशा जैसे " त्रिभङ्गीछवि " स्त्री० एक छन्दका नाम।

सं० त्रिभुज--(त्रि=तीन, भुजा=बाहु) पु० त्रिकोण, तिखूंट, तिकोन।

सं० त्रिभुवन--(त्रि=तीन, भुवन= लोक) पु० तीन लोक (स्वर्ग, पृथ्वी और पाताल)।

प्रा० त्रिया--(सं० स्त्री) स्त्री० स्त्री, नारी, लुगाई, तिरिया, तिय, तीय।

सं० त्रियामा--(त्रि=तीन, याम=पहर) स्त्री० रात, रजनी, रात्रि।

सं० त्रिलोक--(त्रि+लोक) पु० तीन भुवन, (स्वर्ग, पृथ्वी, पाताल)।

सं० त्रिलोकी--(त्रिलोक) स्त्री० तीन लोकों का समूह, स्वर्ग, पृथ्वी, और पाताल।

सं० त्रिलोकीनाथ--(त्रिलोकी+ नाथ) पु० तीन लोक के नाथ, विष्णु, ईश्वर।

सं० त्रिलोचन--(त्रि=तीन, लोचन =आंख) पु० महादेव, शिव, ३ तीन आंखवाला।

सं० त्रिविक्रम--(त्रि=तीनों लोकमें

वि=सब तरफ से, क्रम्=पांव रखना) अर्थात् जिन्हों ने अपने पैर से तीनों लोक को नापा, जैसे हरिवंश में लिखा है कि, (त्रिरित्येवत्रयोलोकाः, कीर्तितामुनिसत्तमैः । क्रमतेतांस्तथा सर्वान्, त्रिविक्रमोजनार्दनः) पु० विष्णु, वामनावतार में राजा बलि को बांधने के समय विष्णु का विराट् रूप ।

सं० त्रिविध--(त्रि=तीन, विध=प्रकार) गु० तीन प्रकार का, तीन तरह का ।

सं० त्रिवेणी--(त्रि=तीन, वेणी=धारा) स्त्री० गंगा यमुना और सरस्वतीका संगम जो प्रयाग में हुआ है, तीन नदियों का संगम ।

सं० त्रिशिर--(त्रिशिरस्, त्रि=तीन, शिरस्=सिर, अर्थात् जिसके तीन सिर हों) पु० एक राक्षसका नाम, रावण का बेटा वा भाई ।

सं० त्रिशूल--(त्रि=तीन, शूल=लोहे का तीखा कांटा) पु० एक अस्त्रका नाम जिसके लोहेके तीन तीखे कांटे होते है, महादेव का अस्त्र ।

सं० त्रिशूलपाणि--(त्रिशूल+पाणि=हाथ, अर्थात् जिस के हाथ में त्रिशूल है) पु० महादेव, शिव, २ त्रिशूल रखनेवाला ।

सं० त्रिसन्ध्या--(त्रि=तीन, सन्ध्या =समय) स्त्री० प्रभात, दोपहर, और सांझ, प्रातः, मध्याह्न, सायंकाल ।

सं० त्रुटि--(त्रुट्=तोड़ना) स्त्री० टूट, हानि, कमी, न्यूनता, (टूट शब्दको देखो) ।

सं० त्रेता- (त्रि=तीन, इता पाया, वा त्रय=तीन) पु० यज्ञकी तीन पवित्र अग्नि (जैसे १ दक्षिणाग्नि, २ गार्हपत्य, ३ आहवनीय) २ दूसरा युग जो १२९६००० बरस का था ।

सं० त्रैराशिक--(त्रि=तीन, राशि=समूह) स्त्री० तीन जानी हुई राशियों का हिसाब ।

सं० त्रैलोक्य--(त्रिलोक) भा०पु० त्रिलोकी, आकाश, पाताल, पृथ्वी ।

सं० त्रोटक--(त्रुट्=तोड़ना) पु० एक छन्दका नाम ।

सं० त्रोटी--(त्रुट्=तोड़ना) स्त्री० चञ्चु, चोंच, ठोंठ, २ पखेरू ।

सं० त्र्यम्बक--(त्रि=तीन, अम्बक=आंख) पु० महादेव, शिव, त्रिनयन, त्रिलोचन ।

सं० त्वक्, त्वचा--(त्वच्=ढकना) स्त्री० चमड़ा छूनेकी इन्द्री, स्पर्शइन्द्री, छाल, छिकला, बकला, शरीर पर का चाम ।

सं० त्वरा (त्वर्=जल्दी करना) स्त्री० शीघ्रता, जल्दी, उतावली, तेज़ी ।

सं०त्वरित--(त्वर्=जल्दी करना)क० पु०तुरन्त, झटपट, जल्दी, क्रि० वि० जल्दी से, वेग से।

सं० त्वष्टा--(त्वक्ष्=दुर्बल होना)क० पु० ब्रह्मा, विश्वकर्म्मा।

सं० त्विषा--भा० स्त्री० रश्मि, किरण, ज्योति।

सं० त्विषि--(त्विष्=दीप्ति,उजाला) भा० स्त्री० किरण।

—:०:—

थ

सं० थ (थुड्=ढाना) पु० पहाड़, २ खाना, ३ रोग, ४ डर, ५ बचाव, ६ मंगल।

प्रा० थई--स्त्री०कपड़ों का ढेर, घड़, [घड़ी।

प्रा० थंब } **थंभ** (सं० स्तम्भ) पु० खम्भा, खंभ, थांभ, थूनी, सितून, पाया।

प्रा० थंभना--(सं०स्तम्भन,ष्टम्भ् वा स्तम्भ्=रोकना वा ठहरना) क्रि० अ० ठहरना, स्थिर होना, रुकना, २ संभलना।

प्रा० थकना } **थाकना** (सं० स्थगन, स्थग=ढकना) क्रि० अ० मांदा होना, खेदित होना, अकुलाना, हारना।

प्रा० थकित--(सं० स्थगित, स्थग=ढकना) वि० पु० थका हुआ, २

अचंभित, विस्मित, अचंभेमें, तअज्जुबमें।

प्रा० थन--(सं०स्तन) पु० गाय, भैंस आदिकी चूंची, लेवा।

प्रा० थपक--पु० थपथपानेका शब्द, थोप, थप्पड़, चपेटा।

प्रा० थपड़ा--पु० थाप, थपेड़ा, चपेटा, तमाचा।

प्रा० थपड़ी--स्त्री०ताली, हाथताली, करताली, थपेड़।

प्रा०थपेड़ा--पु० चपेटा, धौल, थाप, थपेड़ा, तमाचा।

प्रा० थप्पड़-- पु०स्त्री०थपड़ा,थपेड़ा, धौल, चपेट।

प्रा०थम—(सं० स्तम्भ)पु० खंभा, खंभ, थाँभ, थूनी।

प्रा० थमना--(सं०स्तंभ) क्रि० अ० ठहरना, स्थिर होना, रुकना, २ संभलना।

प्रा०थरथर--गु०डगमग,कांपताहुआ।

प्रा० थरथराना } **थरहराना** } **थर्राना** } क्रि० अ०कांपना, हिलना, डगमगाना।

प्रा०थरथराहट } **थरथरी** } स्त्री० कंपाहट, कंपकंपी, डोल, हिलाव, कंपन।

प्रा० थल--(सं० स्थल) वि० पु० जगह, सूखी जगह, ठांव, धरती, स्थान।

प्रा०थसकना--क्रि० अ० धसकना, धसकना, गड़ना।

प्रा० थलचर (सं० स्थलचर) क० पु० धरतीपर चलनेवाला पशुआदि, भूचर, भूमिचर।

प्रा० थलथलकरना } क्रि० अ०
थलथलाना } डगमगाना, लहराना, हिलोरना, हिलना (जैसे मोटे आदमी का ढीला मास)।

प्रा० थलिया--(सं० स्थाली, स्था वा स्थल्=ठहराना) स्त्री० थाली, थाल, छोटा थार।

प्रा० थांग--स्त्री० चोरों की मांद अथवा घात की जगह।

प्रा० थांभ--(सं० स्तम्भ) पु० खंभ, खंभा, थंब, थंभ, थम, थूनी।

प्रा० थांभना--(सं० स्तम्भ,ष्टम्भ् वा स्तम्भ्=रोकना वा ठहरना) क्रि० स० सहारना, ठहराना, संभालना, सहारा देना, टेक देना, आड़ देना, २ हाथ पकड़ना, बचाना, पालन करना, रक्षा करना, ३रोकना, अटकाना, छेंकना, ४ ठहरा देना, खड़ा करना, (जैसे घोड़ेको)।

प्रा० थांवला--(सं० स्थल, स्थल्= ठहराना) पु० पेड़के जड़ के आस पास मिट्टी की मेंड अथवा घेरा, क्यारी, आलवाल, थाला।

प्रा० थिति--(सं० स्थिति, स्था=ठहरना) भा० स्त्री० ठहराव, रुकाव, रोक, कयाम।

प्रा० थाती } (सं० स्थापित, स्था=
थाथी } रहना) स्त्री० धरोहर, गिरों, जाकड़, बन्धक, अमानत।

प्रा० थान--(सं० स्थान) पु० जगह, २ सारा कपड़ा, ३ घोड़े अथवा गाय बैल के रहने की जगह चरनी, ४ सिक्का, जैसे एक थान अशरफी अथवा मोहर।

प्रा० थाना--(सं० स्थान) पु० चौकी, कोतवाली, २ बांसकाटाल।

प्रा० थाप--स्त्री० धौल, थप्पड़, थपक, २ छोटे ढोल के बजाने का शब्द, ३ मर्य्याद, नामवरी।

प्रा० थापना--(सं० स्थापन) क्रि० स० थोपना (जैसे गोबर) २ थपाना, ठोंकना, ३ रखना, स्थापन करना, ठहरा देना, धरना।

प्रा० थापना--(सं० स्थापना) स्त्री० नवरात्रि में एक कोरे घड़े में पानी भर करके दुर्गा के सामने रखके दुर्गा की पूजा करना, आश्विन सुदी अथवा चैत सुदी परिवा को जो देवी की पूजा होती है उसे थापना की पूजा कहते हैं। [चिह्न

प्रा० थापा--पु० चौपाये के पांव के

प्रा० थापी--स्त्री० थपथपाने का शब्द, २ मोंगरी जिस से कुम्हार मिट्टी कूटते है, वा छत पीटी जाती है।

प्रा० थाम--(सं० स्तम्भ) पु० खंभ

सितून, थांभ, थूनी, टेक।

प्रा० थार } सं० स्थाल, स्था वा
थाल } स्थल्=ठहरना) पु०
बड़ी थाली।

प्रा० थाला--(सं० स्थल, स्थल्=
ठहरना) पु० थांवला, पेड़ के
आस पास का घेरा जिसमें पानी
सींचते हैं, एक गढ़ा अथवा खोखली
जगह जिस में पेड़ उगाया जाता है,
२ (सं० स्थाल) बड़ी थाली।

प्रा० थाली--(सं० स्थाली, स्था, वा
स्थल्=ठहरना) स्त्री० थलिया,
टठिया।

प्रा० थाह--(सं० स्था=ठहरना) पु०
तला, पेंदा, पानी के नीचे की
धरती।

प्रा० थिर } (सं० स्थिर, स्था=
थीर } ठहरना) गु० ठहरा
हुआ, अटल, अचल, २ शांत,
सुस्थिर।

प्रा० थिरता--(सं० स्थिरता) स्त्री०
ठहराव, २ शांति, चैन, आराम।

प्रा० थुतकारना } क्रि० स० दुर-
थुथकारना } दुराना, अनादर
के साथ निकाल देना, अपमान
से साथ हटाना।

प्रा० थुपली-स्त्री० [illegible]
[illegible]। [गेहूँ [illegible]।

[illegible]

प्रा० थूक-पु० खखार, कफ, राल,
लार।

प्रा० थूकचाटना-बोल० वचनतो-
ड़ना, कही अनकही करना, मुकर
जाना, बात को बदलना।

प्रा० थूकना-क्रि० अ० मुँह मे से
खखार फेंकना।

प्रा० थूणी } (सं० स्थाणु, स्था=
थूनी } ठहरना) स्त्री० थंभ,
खंभा, टेक, थांभ, धरन। [राध।

प्रा० थूथड़ा--पु० मुँह, गु० बुरा, ज-

प्रा० थूहर } पु० स्त्री० एक कांटेदार
थोहर } पौधे का नाम।

प्रा० थेईथेई-पु० स्त्री० नाचने में
खुशीका शब्द। पैबन्द।

प्रा० थेगली-स्त्री० जोड़, चिप्पी,

प्रा० थैला-पु० बोरा, गोन। [थली।

प्रा० थैली-स्त्री० छोटा थैला, को-

प्रा० थोक-पु० ढेर, राशि, २ रोक,
रोकड़, ३ हिस्सा, भाग।

प्रा० थोड़ा-गु० कम, तनक, अल्प,
कुछ, किंचित्, जरा, कम।

प्रा० थोड़ाथोड़ा -बोल० कुछ कुछ,
धीरे धीरे, कम कम।

प्रा० थोड़ाथोड़ाहोना-बोल० ना-
[illegible] होना, २ कम कम होना।

प्रा० थोड़ा [illegible] -बोल० [illegible]

ड़, कमोबेश, कम व ज़ास्त।

प्रा० थोड़ेसेथोड़ा-बोल० बहुत थोड़ा, निहायत कम।

प्रा० थोथा—गु० विन फल, फलहीन, खाली, छूछा, पु० बिन फल अथवा बिन अणी का तीर, २ एक दवा का नाम।

प्रा० थोथीबात--बोल० वृथा बात, अनर्थक वाक्य, अर्थहीन बात, सटर पटर, बेमतलब।

प्रा० थोपना--(सं० स्तुप्=ढेरीलगाना, बटोरना) क्रि० स० सहारना, थांभना, २ लेपना, थापना, छोपना, ३ बटोरना, इकट्ठा करना।

प्रा० थोपी--स्त्री० धक्का, थापी, मुक्की।

द

सं० द—(दा=देना, वा दैप्=शुद्ध करना, वा दो=काटना) गु० देनेवाला, दाता, पु० दान देना, २ पर्वत, ३ खंडन, काटना, स्त्री० भार्या, पत्नी, ४ शोधन, शुद्ध करना, ५ रक्षा, ६ कलत्र, ७ मेघ।

प्रा० दई--(सं० दैव) पु० ईश्वर, २ देवता, ३ भाग्य, क़िस्मत, स्त्री० ईश्वरता।

प्रा० दईमारा-बोल० अभागा, दुर्भागी, [illegible]भाग्यवान्, अभिशापित, [illegible]।

सं० दंश--(सं० दंश=काटना, डसना) पु० डांस, २ डंक, ३ दांत, ४ दोप, ५ कवच, ६ महिष, भैंसा।

सं० दंशक } दंशी } (दंश्=काटना, डसना) क० पु० डंक मारने वाला, पु० डांस, २ सांप।

सं० दंशन--(दंश्=काटना) भा० पु० दांतों से काटना, डंक मारना, २ कवच।

सं० दंशित--(दंश्+इत) स्र्म० पु० काटा हुआ, काटा गया।

सं० दंष्ट्रा--(दंश्=काटना) जिस से काटते हैं सा० स्त्री० दाढ़, बड़ेदांत।

सं० दक--पु० पानी, रस।

प्रा० दकखन } दखन } दखिन } (सं० दक्षिण) पु० दक्षिणदिशा, २ हिंदुस्थानकादक्षिण भाग।

सं० दक्ष--(दक्ष्=बाढ़ना) पु० ब्रह्मा का बेटा, एक प्रजापति का नाम, कहते हैं कि दक्ष ब्रह्मा के दहने हाथ के अंगूठे से पैदा हुआ था और उस के ६० बेटियां थीं जिन में से २७ तो चांदको ब्याहीं (वेही सत्ताईस नक्षत्र कहलाते हैं) और एक उस की बेटी सती महादेव को ब्याही थी और १३ कश्यप मुनिको ब्याहीं जो सब सृष्टि की माता थीं। और १० धर्म को ब्याहीं (एक वार दक्षने यज्ञ किया था उस में महादेव को नहीं बुलाया और सती

का निरादर किया इस लिये सती उस यज्ञ के कुंड में जल के मरगई तब महादेव ने दक्षका शिर तोड़ डाला) २ एक मुनि का नाम, ३ महादेव के बैलका नाम, गु० चतुर, निपुण, प्रवीण, २ समर्थ ।

सं० दक्षसावर्णि—पु० नववाँमनु, चौदह मनुमें एक मनु ।

सं० दक्षकन्या } (दक्ष+कन्या वा दक्षसुता } सुता=बेटी) स्त्री० दक्ष की बेटी, सती, दुर्गा ।

सं० दक्षिण-(दक्ष=बढ़ना) गु० चतुर, प्रवीण, निपुण, २ दहना, ३ दक्षिणदिशा का, ४ खरा, सच्चा, पु० दक्खन, दक्षिणदिशा, २ दह ना भाग, ३ सब नायिका में बरा- बर सनेह रखनेवाला नायक ।

सं० दक्षिणा-(दक्ष=बढ़ना) स्त्री० दान, ब्राह्मणको जिमाके कुछदेना, गुरुकी भेंट, २ दुर्गाकी एकमूरत ।

सं० दक्षिणायन-(दक्षिण=दक्खिन

प्रा० दगधना-(सं० दग्ध) क्रि० स० जलाना, २ सताना, छेड़ना, ३ सजादेना, धमकाना, डाटना, घुड़कना, ताड़ना करना ।

प्रा० दगला-पु० रूईदार अंगरखा, रूई भरा अंगरखा ।

सं० दग्ध-(दह्=जलना) स्त्री० पु० जलाहुआ, झुलसाहुआ, भस्म, ज्वलित, विप्लुष्ट, जलायागया, भ- स्मंत ।

सं० दग्धिक-पु० दहीभात ।

प्रा० दङ्गा-पु० झगड़ा, रौला, बलवा, हुल्लड़ ।

प्रा० दङ्गैत-(दङ्गा) गु० दंगा करने वाला, झगड़ालू, लड़ाका ।

सं० दघ-(दह=जलाना) पु० त्याग, हिंसा, नाश ।

प्रा० दच्छ } पु० दक्ष शब्द को दछ } देखो ।

प्रा० दच्छिना } स्त्री० दक्षिणा दछना } शब्द को देखो ।

दाढ़ीवाला।

सं० दण्ड-(दण्ड्=सज़ा देना वा दम्=वश करना वा शान्त करना) पु० लाठी, सोंटा, २ ताड़ना, सज़ा, शासन, जुर्माना, प्रकाण्ड, राजाओं का चौथा उपाय अर्थात् वध, दण्ड, फांसी, ३ एक घड़ी, साठपल का समय, ४ यमराज, ५ चक्राव्यूह, ६ इक्ष्वाकु राजा का पुत्र, ७ क़तल, ८ दमन।

सं० दण्डक-(दंड्=सज़ा देना) पु० एकराजाकानाम, एकछन्दकानाम।

सं० दण्डकारण्य- (दण्डक+अरण्य) दण्डक नाम राजा का देश, शुक्राचार्य अथवा भृगु मुनिके शापसे नष्ट होकर जंगल होगया) पु० हिन्दुस्तान के दक्षिण में दण्डक नाम वन जहां वनवास के समय श्रीरामचन्द्र कुछदिन रहेथे।

सं० दण्डदास-पु० शोक, गदा, आयुध, यम, किंकर, सजादेनेवाला।

सं० दण्डधर-(दण्ड+धर, धृ=धरना) क० पु० यमराज, कुलाल अर्थात् कुम्हार, लकुटधारी, राजा, दंडी, संन्यासी, द्वारपाल, सिपाही, आसाबरदार।

सं० दण्डनायक- पु० यमराज, मुक़ाजिम फ़ौजदारी।

सं० दण्डपांशुल-पु० सिपाह, चौकीदार।

सं० दण्डपाशिक-क० पु० वधिक, फाँसी देनेवाला, जल्लाद।

सं० दण्डवत्-(दण्ड=लाठी, वत्=बराबर, अर्थात् लाठी के समान गिर कर प्रणाम करना) स्त्री० प्रणाम, नमस्कार।

सं० दण्डयात्री-स्त्री० फ़ौजदारी।

सं० दण्डादण्डी-(दण्ड=लाठी) स्त्री० लाठा लाठी, लाठी से लड़ना, गदायुद्ध।

सं० दंडी-(दण्डिन्, दण्ड=लाठी अर्थात् लाठी रखने वाला) पु० एक प्रकार के संन्यासी जो हाथ में दण्ड रखते हैं, २ यमराज, ३ राजा, ४ द्वारपाल, ५ काव्यादर्श के बनानेवाले कवि का नाम, गु० लाठी रखनेवाला, लठैल, चोबदार।

सं० दतवन, दतौन (सं० दन्तधावन) पु० दतुन, दांतन, दांत साफ करने की लकड़ी।

सं० दत्त--(दा=देना) कर्म० पु० दिया हुआ, समर्पित, पु० वैश्यों का उपनाम, उर्फ़।

सं० दत्तक-(दा=देना) कर्म० पु० गोद लिया हुआ, ले पालक, दत्तक पुत्र=गोद लियाहुआ लड़का, पोष्य पुत्र, लेपालक, मुतबन्ना।

सं० दत्तात्रेय-पु० अत्रि ऋषिका पुत्र, विष्णु का अवतारभेद, ये ज्ञानी थे २४ गुरु किये।

सं० ददन-पु० दान देना, त्याग।

सं० दद्रू-पु० दाद रोग। फुलाव।

प्रा० ददोड़ा--पु० फोड़ा, गुमड़ा,

सं०दधि(दध्=रखना)पु०दहीचक्का।

प्रा० दधिकांदो-(सं०दधि+कर्दम, दधि=दही, कर्दम=कीच) पु० श्रीकृष्ण के जन्म दिन अर्थात् जन्माष्टमी का उत्सव जिस में मनुष्य दही और हल्दी मिलाकर आपस में एक दूसरे पर डालते हैं और खेलते हैं जिससे कीचमच जाती है।

सं०दधीचि-(दध् वा धा=रखना) पु० एक ऋषि का नाम जिस ने अपने शरीर का हाड़ इन्द्र और सब देवताओं को दिया तब इन्द्रने उस का वज्र बना के वृत्रासुर को मारा। [त, नैत।

सं० दधिसार--पु० मक्खन, नवनी-

सं० दनुज--(दनु कश्यपमुनि की स्त्री० और दक्षप्रजापति की बेटी, जन्मीद्वा होना) पु० दनु के बेटे, दानव, दैत्य, असुर, राक्षस।

सं० दन्त--(दम्=तोड़ना, वा वश करना) पु० दांत ३२ की संख्या।

सं० दन्तच्छद--(दन्त=दांत, छद= ढकना) पु० होठ, ओठ, ओष्ठ।

सं० दन्तधावन-(दन्त=दांत धाव= धोना) पु० दातुन, दतवन।

सं० दन्तवेष्टन-(वेष्ट=लपेटना) पु० मसूड़ा, मसूढ़ा।

सं० दन्तशठ-पु० कैथा, नींबू, नारंगी, करौंदा।

सं० दन्तालिका-(दन्त+अलिका, अल=भूषणकरना, रोकना) लगाम,

सं० दन्ती-(दन्त=दांत, अर्थात् जिसके बड़े दांत होते हैं) पु० हाथी, हस्ती, गज, गु० दन्तैल, दन्तीला।

प्रा० दन्तीला-(सं० दन्तुर, दन्त= दांत) गु० दांतवाला, दन्तैल, जिस के बड़े और ऊंचे दांत हों, शूकर, हुक, सुअर, भेड़िया।

सं०दन्त्य-(दन्त)गु० जो दांतोंसे बोलेजायँ, लृ लॄ त थ द ध न ल स ये अक्षर दन्त्य कहलाते हैं।

प्रा०दन्दनाना-क्रि० अ० आराम से रहना, चैन करना, गाजना, बिराजना।

प्रा०दपट-(दपटना) स्त्री० दौड़, सरपट, बाग छूट दौड़, घोड़े की बड़ी दौड़।

प्रा०दपटना-क्रि० अ० सरेटजाना, झपटना, दौड़ना, टूट पड़ना, डपटना, धमकाना, झिड़कना, घुड़कना।

प्रा०दपसना-क्रि० अ० [illegible]

लुकजाना, घात में बैठना, २ डर जाना।

प्रा० दबकजाना } दबकरहना } बोल० छिप रहना, लुक रहना, जी छिपाना, जी चुराना।

प्रा० दबंग-पु० कुशील, कुढंग, धृष्ट, मूढ़, निठुर, गँवार, जड़, मूर्ख, गधा, पशु।

प्रा० दबना-क्रि० अ० झुकना, नवना, चपना, सिकुड़ना, २ आधीन होना, डरना, ३ लजाना, ४ छिप रहना, दबकना।

प्रा० दबचलना } दबनिकलना } बोल० वश होना, आधीनहोना, डर जाना।

प्रा० दबजाना-बोल० चलाजाना, हटजाना, पीछे फिरना, हारजाना।

प्रा० दबमरना-बोल० कुचल जाना, चूर २ होना। [हौले।

प्रा० दबेपांव-बोल० धीमें, धीरे,

प्रा० दाबना-(दबना) क्रि० स० दाबना, चापना, जांतना, २ तंग करना, ३ जबरदस्तीसे कराना, ४ डाटना, झिड़कना, ५ रोकना, थांभना, ६ नीचा करना, झुकाना, नवाना, ७ छिपाना, ८ जीतना, हराना, पराजय करना।

प्रा० दबामरना-बोल० कुचल डालना, चूर २ करना, २ हराना, जीतना।

प्रा० दबालेना-बोल० चढ़जाना, चढ़ाई करना, धावा करना।

प्रा० दबाव-(दबाना) पु० दाव, चांप, २ जोर, पराक्रम, अधिकार, ३ आधीनता।

प्रा० दबावमानना-बोल० धाकमानना, डरना, अदब करना।

प्रा० दबेल-(दबना) आधीन, वश में, पु० प्रजा, रइयत।

प्रा० दबोचना-क्रि० स० दबाडालना, दाबना।

सं० दम-(दम्=वशकरना, वा शांत करना) पु० इन्द्रियों को वश में करना, इन्द्रियों की इच्छाको रोकना, २ ताड़ना, सज़ा, ३ वशकरना।

सं० दमक-(दम्+अक) क० पु० वश करनेवाला, रोकनेवाला।

प्रा० दमक-(दमकना) स्त्री० चमक, झलक, शोभा, भड़क।

सं० दमघोष-पु० शिशुपाल का पिता, चंदेरी का राजा।

प्रा० दमकना-क्रि० अ० चमकना, झलकना। [की कल।

प्रा० दमकला-पु० आग बुझाने

प्रा० दमड़ा-(सं० द्रम्म) पु० धन, दौलत, विभव, संपत्ति।

प्रा० दमड़ी-(सं० द्रम्म) स्त्री० पैसे का आठवांभाग ।

प्रा० दमड़ीकेतीनतीनहोना-बोल० उजड़ना, नष्टहोना, सत्यानाशहोना, बरबाद होना ।

सं० दमन-(दम्=वश करना, वा शांत करना) पु० वशकरना, नाश करना, २ एक फूल का नाम ।

सं० दमनीय-(दम्+अनीय)त्रि० पु० दाबने के लायक,तोड़ने योग्य ।

सं० दमयन्ती-(दम्=वशकरना) स्त्री० नल राजा की पत्नी, विदर्भ देश के राजा भीमसेन की बेटी ।

फ़ा० दमामा-पु० नगारा, धौंसा, डंका ।

सं० दमी-(दम्+ई) त्रि० पु० योगी, इन्द्रियजित् ।

सं० दम्पति-(जाया=पत्नी, पति= भर्तार, यहां जाया को दम् आदेश हो जाता है)पु० स्त्री पुरुष,जोड़ा, जायापति ।

सं० दम्भ-(दम्भ=छल करना) पु० पाखंड, कपट, छल, २ घमंड, गर्व, [illegible], बखान करना ।

सं० दम्भी-(दम्भ) पु० पाखंडी, कपटी, छली, अहंकारी, अभिमानी ।

सं० दया-(दय=देना, पालना) स्त्री० [illegible]

सं० दयायुत-(दया=कृपा,युत= मिला हुआ) गु० दयालु,कृपालु, दया करने वाला ।

प्रा० दयालु-(सं० दयालु, दया) गु० कृपालु ।

सं०दयावन्त, दयावान्-(दया=कृपा, वत =वाला) गु०कृपालु, दयालु ।

सं दयित- पु० पति, खाविंद ।

सं० दयिता-(दय्=देना वा पालना) स्त्री० पत्नी, भार्या, स्त्री, प्रिया, प्यारी ।

सं० दर-(दृ=फाड़ना, वा डरना) पु० छेद, गुफा, खोह, लहा, २ डर, ३ शंख, गु० थोड़ा ।

प्रा० दर-पु० मोल, भाव, दाम ।

सं० दरद-पु० म्लेच्छ जाति, २ भयानक, भय, ३ हिंगुल, हींग, ४ शिगरफ,मुर्दाशंख,पारा,स्त्री०पीड़ा, नाश, भय ।

फ़ा० दरबार-पु० कचहरी, सभा ।

प्रा० दरदरा-गु० मोटा पीसाहुआ, दलिया, अरीला ।

प्रा०दरस-(सं० दर्श,) पु० दर्शन. देखना. दीठ ।

सं० दरा, दरी-(दृ=फाड़ना) स्त्री० गुफा, खोह, कंदरा ।

प्रा० दरांती-(सं० [illegible]) स्त्री० [illegible] ।

प्रा० दरार-(सं० दृ=फाड़ना) स्त्री० फटी हुई जगह, दरज, शिगाफ़, चीर, फटा, दरका, फाड़।

सं० दरिद्र-(दरिद्रा=दुर्दशा होना) गु० कंगाल, निर्धन, रंक, दीन, दुःखी, ग़रीब, मुफ़लिस।

सं० दरिद्रता-(दरिद्र)भा०स्त्री० कंगालपन, निर्धनता, ग़रीबी, दीनता, दुःख, दुर्दशा।

प्रा० दरिद्री-(सं० दरिद्र) गु० कंगाल, निर्धन, दीन, दुःखी, ग़रीब, दरिद्र।

सं० दर्दुर-(दु=दुःख देना (कानो को शब्द करके) वा दृ=फाड़ना) पु० दादुर, मेंडक, वेंग, भेक, २ मेघ, ३ एक बाजे का नाम, ४ एक पहाड़ का नाम।

सं० दर्प-(दृप्=घमंड करना) पु० घमंड, अभिमान, अहंकार, दाप, ग़रूर।

सं० दर्पण-(दृप्=चमकना) पु० काच आईना, आरसी, मुकुर।

सं० दर्पित-क० पु० अलंकारी, घमंडी, मगरूर।

सं० दर्वी-(दृ=फाड़ना) क० स्त्री० कलछुली, कर्छी, चमची, डोई।

सं० दर्भ-(दृभ्=गाथना, बांधना) पु० डाभ, कुश, एक प्रकार की घास।

प्रा० दर्राना-क्रि० अ० निधड़क और बिनठहरे सीधा चलाजाना।

सं० दर्श-(दृश्=देखना)पु० दर्शन, देखना, दृष्टि, २ अमावस्या जिस दिन चांद और सूर्य एक साथ देखे जाते हैं।

सं० दर्शक-(दृश्=देखना) क० पु० दिखानेवाला, पु० द्वारपाल, पौरिया।

सं० दर्शन-(दृश्=देखना) भा० पु० देखना, दृष्टि, दीठ, २ भेंट, एक दूसरे को देखना, ३ रूप, आकार, दिखाव, ४ आंख, ५ सपना, ६ दर्पण, ७ न्यायआदि छः शास्त्र, (१) न्याय इसका आचार्य गौतमऋषि, २ वैशेषिक इसका आचार्य कणाद मुनि, यह बहुत बातों में न्याय से मिलता है और बहुतमें नहीं मिलता, ३ मीमांसा इसका आचार्य जैमिनि ऋषि, इस में यज्ञ, व्रत, तप, दान और वेद पढ़ना आदि कर्मों के करने से मुक्ति पाना लिखा है, ४ वेदान्त इसका आचार्य व्यासदेव, ५ सांख्य, इसका आचार्य कपिलदेव, इस मतके माननेवाले सृष्टि का कोई कर्त्ता नहीं मानते और कहते हैं कि संसार नित्य है और कोई इसका बनानेवाला नहीं है, ६ पातंजल इसका आचार्य पतंजलिमुनि, यह और सब बातों से सांख्य में मिलता है पर सांख्यवाले सृष्टि का

कर्त्ता नहीं मानते, और इसमें ईश्वर को सृष्टि का कर्त्ता माना है)।

प्रा० दर्शनी—(सं० दर्शनीय=देखने योग्य) स्त्री० वह हुंडी जो देखनेही से पट जाय, २ भेंट, चढ़ावा, गु० सुन्दर, सुडौल, रूपवान्, मनोहर, देखने योग्य। [मिनी।

सं० दर्शनप्रतिभू—पु० हाजिर जा-

सं० दर्शन्त—भा० पु० देखना, देख पड़ना।

सं० दल—(दल्=फाड़ना वा टुकड़े२ करना) पु० वृक्ष का पत्ता, २ बड़ी सेना, ३ ढेर, समूह, ४ खंड, टुकड़ा, ५ कीचड़, ६ आधा, दलदार, गु० मोटा, गाढ़ा। [झलक।

प्रा० दमक—(दमकना) स्त्री० चमक,

प्रा० दलकना—क्रि० अ० चमकना, झलकना, झमकना, थरथराना।

प्रा० दलदल—(सं० दल=कीचड़) पु० कीचड़, पांका, कांदो, धसान, धसाव, पंक।

सं० दलन—(दल=टुकड़े करना) भा० पु० टुकड़े २ करना, मर्दन, नाश, गु० नाश करनेवाला, टुकड़े करने वाला, मर्दन करनेवाला।

प्रा० दलमला—(सं० दलन) क्रि० स० [illegible], कुम्हलाना, [illegible] करना ([illegible] को)।

सं० [illegible]—[illegible]

गरी, लोह का मुग्दर।

प्रा० दलबादल—(सं० दलवारिद, दल=सेना वा समूह, वारिद=बाद-ल) पु० बादलोंकी सेना, बादलोंका समूह, २ बड़ी सेना, ३ बड़ा डेरा।

प्रा० दलमलना, दलमसलकरना—(सं० दलन) क्रि० स० पीस डालना, मींजना, तोड़ डालना, मर्दन करना।

सं० दलित—(दल्=दल) गु० पु० मर्दित, रौंदा गया, फाड़ागया।

प्रा० दलिद्र—(सं० दारिद्र) भा० पु० कंगालपन, निर्धनता, गरीबी, हीनता, दुःख, दुर्दशा।

प्रा० दलिद्री—(सं० दारिद्री) गु० कंगाल, निर्धन, हीन, दुःखी, गरीब।

प्रा० दलिया—(सं० द्वि=दल, द्वि=दो दल=टुकड़ा) पु० दलाहुआ अनाज

प्रा० दलैंती—(सं० दलयन्ती) स्त्री० चक्की, जांती।

सं० दव—(दु=जलना, वा पीड़ा होना) पु० वन, जंगल, २ जंगल की आग, ३ पीड़ा, दुःख।

सं० दवाग्नि—(दव+अग्नि) स्त्री० वन की आग।

प्रा० दवारी—(सं० दवाग्नि) स्त्री० वन की आग।

सं० दविष्ठ—गु० बहुत दूर।

सं० दर्वीकर—पु० [illegible]।

सं० दश--गु० दश, पांच के दूने, काटना, अञ्चल।

सं० दशकण्ठ--(दश + कण्ठ) पु० रावण, दशकन्धर, दशानन।

सं० दशकन्धर--(दश + कन्धर) पु० रावण।

सं०दशग्रीव-(दश+ग्रीवा)पु०रावण।

सं० दशन--(दंश्=काटना) पु० दांत, दन्त, २ कवच, ३ शिखर।

सं० दशम--(दश) गु० दशवां।

सं० दशमहाविद्या--(दश, दस महाविद्या=महामाया) स्त्री० दस प्रकार की दुर्गा, जैसे १ काली, २ तारा, ३ षोडशी, ४ भुवनेश्वरी, ५ भैरवी, ६ छिन्नमस्ता, ७ धूमावती, ८ वगला ६ मातङ्गी, १० कमला।

सं० दशमलव--(दशम+लव) पु० दशमांश, दशवां हिस्सा, कसूर अशारिया। [तिथि।

सं० दशमी--(दशम) स्त्री० दशवीं

सं०दशमुख-(दश+मुख)पु०रावण।

सं० दशमुखान्तक--(दशमुख=रावण, अन्तक=नाशकरनेवाला) पु० श्री रामचन्द्र।

सं० दशरथ--(दश(दसों दिशा में) रथ (रथकी गति है जिसकी) अर्थात् जिसने दसों दिशा को जीत लिया) पु० अयोध्या का राजा और श्री रामचन्द्र का बाप।

प्रा०दशशीस--(सं०दश=दस, शीर्ष=शिर) पु० रावण, दशकन्धर, दशानन।

सं० दशहरा--(दश दशजन्म के पाप, हृ=हरना) पु० जेठ सुदी दशमी जो गङ्गा का जन्म दिन है, इस दिन जो कोई गङ्गा में अन्हाता है उसके दश जन्म के अथवा दशप्रकार के पाप दूर होजाते हैं, २ (दश(दश मुख) रावण, हृ=नाशकरना) कुंआर सुदी दशमी जिस दिन रामचन्द्र रावण को मारने के लिये चढ़े थे इस लिये इस को विजयदशमी भी कहते हैं।

सं० दशा--(दंश्=काटना, विभाग करना) स्त्री० अवस्था, हालत, गति, दशा दशप्रकार की हैं १ गर्भवास, २ जन्म, ३ बालकपन, ४ लड़कपन, ५ किशोर, ६ जवानी, ७ अधबुढ़ापा, ८ बुढ़ापा, ९ प्राणरोध अर्थात् मरने के समय की अवस्था, १० नाश वा मरना।

सं०दशांश--(दश + अंश)पु०दशवां भाग, दशवां हिस्सा।

सं० दशानन--(दश+आनन) पु० रावण, दशमुख, दशकंठ, दशकंधर, दशग्रीव, दशशीस।

प्रा० दस--(सं० दश) गु० पांच का दूना।

प्रा० दशहरा--पु० दशहरा शब्द को देखो ।

प्रा०दसोंद्वार--(सं० दशद्वार) पु० ब० व० शरीर के दश रस्ते, २ आंखे, २ कान, २ नाक के नथुना, सातवां मुंह, आठवां लिंग इन्द्री, नवां गुदा, दशवां ब्रह्मांड अर्थात् शिरकाबिचला भाग, संस्कृत और हिन्दी के बहुत से ग्रंथों में नौ द्वारही लिखेहैं वहां दसवां द्वार ब्रह्मांड नहीं माना है, नवद्वार शब्द को देखो ।

प्रा० दसोंधी-पु० भाट, राय, स्तावक, प्रशंसक ।

सं० दस्यु--(दस=देखना, चुराना) पु० शत्रु, चोर, तस्कर, ३ अग्नि, ४ खल, ५ बड़ा साहसी, ६ लुटेरा ।

सं० दस्र--पु० अश्विनीकुमार, गधा-पशु स्त्री० अश्विनी नक्षत्र ।

प्रा० दह--(सं० ह्रद) पु० बहुत गहरा पानी, गहराव, भंवर, (जैसे कालीदह) ।

प्रा० दहकना--(सं० दहन) क्रि० अ० जलना, २ भेंट करना ।

प्रा० [illegible]--(सं० दहन) क्रि० वि० [illegible] से, जोर से, वेग से, [illegible] से ।

प्रा० [illegible]--[illegible] [illegible] से [illegible], [illegible] जोर के [illegible] ।

सं०दहन--(दह्=जलाना) भा० पु० आग, अग्नि, आगी, २ जलाना, जलन, दाह, ३ चित्रक वृक्ष, गु० जलानेवाला । [जलना ।

प्रा० दहना--(सं० दहन) क्रि० अ०

प्रा० दहना / दहिना --(सं० दक्षिण) गु० दाहिना, दक्षिण ।

सं० दहर--(दह्=जलाना) पु० सूक्ष्म, ह्रस्व, २ बालक, ३ मूषक, चूहा, ४ छोटा भाई, ५ बहन, ६ हृदय, आकाश ।

प्रा० दहलना-- क्रि० अ० कांपना, डरना ।

प्रा०दहाड़ना--क्रि० अ० गरजना ।

प्रा० दहाना--(सं० दहन) क्रि० स० जलाना, २ बोराबन्दी ।

प्रा० दही--(सं० दधि) पु० जमा हुआ दूध ।

प्रा० दहेंडी--(सं० दधि=हण्डी) स्त्री० दही की हांडी ।

प्रा० दाई--(सं० दायक) का० पु० देनेवाला, (जैसे सुखदाई) ।

प्रा० दाई--(फा० दायह) स्त्री० धाय, दूध पिलाने वाली, २ नाई, जनाई, ३ दासी, [illegible], [illegible] ।

प्रा० दाऊ--पु० बड़ा भाई, २ बाप, ३ बलदेवजी का नाम ।

प्रा० दाऊदी--([illegible]) [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ।

का नाम, २ एक तरह की आतशबाजी, ३ सफ़ेदी।

प्रा० दांड--(सं० दण्ड) पु० सज़ा, ताड़ना,दंड,जुर्माना,२घटी, ४ डांड।

प्रा० दांत--(सं० दन्त) पु० दन्त, दशन, रदन।

प्रा० दांतउंगलीकाटना-बोल० अचंभे में आकर दांतों से उंगली काटना, अचरज करना, विस्मय करना।

प्रा० दांतकचकचाना-बोल०खीस निकालना, खिसियाना, दांत पीसना।

प्रा० दांतकटकटाना--बोल०दांत पीसना, किचकिचाना।

प्रा० दांतकाटी रोटी खाना--बोल० किसी का जी से मित्र होना, दिलीदोस्त होना, पक्कीमित्राईहोना।

प्रा० दांतखट्टे करना--बोल० मन तोड़ना, मन मारना, हरा देना, बे हिम्मत करना, सताना, क्रोधित करना।

प्रा० दांततलेउंगलीदबाना वा काटना--बोल० हक्का बक्का रह जाना, भैचक रहना, अचंभे में होना, मुतहैयर होना।

प्रा०दांतनिकालना-बोल० हँसना, मुसकुराना, २ अपनी अयोग्यता और बेबसी जतलाना, अथवा मानना।

प्रा०दांतपरचढ़ाना--बोल० किसी की भलाई अथवा नामवरी को मिटाना, कलंक लगाना।

प्रा० दांतपीसना--बोल०दांत कड़कड़ाना, खिसियाना, दांत कचकचाना, कटकटाना, क्रोध करना, खीस निकालना।

प्रा० दांतबजना या बाजना-बोल० टेंटें करना, चेंचें करना, बकबक करना, झगड़ना।

प्रा० दांतरखना,या होनाकिसी पर--बोल० किसी वस्तु को बहुतही बहुत चाहना, २ अवज्ञा करना, तुच्छ जानना।

प्रा० दांतुन-(सं० दन्तधावन) पु० दतवन, दतून।

प्रा० दांताकिलकिल--(सं० दन्त किलाकिला) स्त्री० झगड़ा, लड़ाई।

प्रा० दांव--पु० घात, जाल, पेंच, २ अवसर, मौक़ा, गौं, बारी, समय, ३ कुश्ती में पेंच।

प्रा० दांवचलना-बोल० बर रहना, जीतना, सरस होना, बढ़ चलना, दाल गलना।

प्रा० दांवचलाना-बोल० क़ाबू चलाना, गौं पाना, चोट करना।

प्रा० दांवपकड़ना--बोल० कुश्ती करना, कुश्तीलड़ना, पेंच करना, दांव करना।

प्रा० दांवबैठना--बोल० घात में बैठना, दबकना।

सं० दाक्षायणी--स्त्री० सती, पार्वती, अश्विन्यादि नक्षत्र, दंतीवृक्ष, जमालगोटा का वृक्ष।

सं० दाक्षाय्य--पु० गृद्धपक्षी।

सं० दाक्षिण--भा० पु० कथन, उपाय, अधिकार, दक्षिण देशीय।

सं० दाक्षिणात्य--पु० नारियल वृक्ष, दाक्षिणीय।

सं० दाक्षिण्य--भा० पु० उदारता, दोगिधार, मददगार, अनुकूल।

प्रा० दाख--(सं० द्राक्षा) स्त्री० अंगूर, मुनक्का, किशमिश।

प्रा० दाग--(फा० दाग और सं० दग्ध) पु० चिह्न, कलंक, दोष, गर्म लोहे से जलने का चिह्न।

प्रा० दागचढ़ाना, या लगाना--बोल० कलंक लगाना, बदनाम करना।

प्रा० दागदेना--बोल० गर्म लोहेसे चिह्न करना, धुन देना, दागना, [illegible], २ दोष लगाना, कलंक [illegible]।

प्रा० दागलगाना--बोल० बदनाम होना, अपकीर्ति होना।

प्रा० [illegible]--बोल० [illegible]।

प्रा० दागना--क्रि० [illegible] देना, गर्म लोहे से चिह्न करना, २ बंदूक अथवा तोप छोड़ना।

सं० दाघ--पु० दाह, जलना।

सं० दाडक--पु० दान्त, दाढ़, दंष्ट्रा।

सं० दाडिम } (दल=फटना) स्त्री०
दालिम } अनार।

प्रा० दाढ़ (सं० दाढ़ा, दा=काटना, वा दंष्ट्रा, दंश्=काटना) स्त्री० बड़े दांत, पिछलेदांत, पीसने के दांत।

प्रा० दाढ़ी--(सं० दाढ़िका, दाढ़ अर्थात् दाढ़ के पास) स्त्री० ठोढ़ी परके बाल।

प्रा० दाढ़ीबनाना या मुंडाना--बोल० हजामत बनाना, खत बनाना, क्षौर कराना।

सं० दाता--(दा=देना) क० पु० देने वाला, दानी, उदार, दानशील, दयालु, हितकारी, सखी, फैय्याज़।

प्रा० दातार--(सं० दातृ, दा=देना) क० पु० देने वाला, दाता।

सं० दात्र--(दा=काटना, छेदना) पु० हँसिया, बसुला।

प्रा० दाद--(सं० दद्रु, दद्रु=[illegible], वा द=काटना) पु० दिनाय, चकवाँड़।

सं० दाद--पु० दान, देना।

प्रा० दादा--पु० बाप का बाप, पितामह, २ बड़ा भाई।

प्रा० दादी--स्त्री० दादा की मा।

प्रा० दादुर--(सं० दर्दुर) पु० [illegible], [illegible]।

प्रा० दादू--पु० एक बड़ा साधु जिसने एक नया मत चलाया जो दादू पंथ के नाम से प्रसिद्ध है।

प्रा० दादूपंथी--पु० दादू के धर्म को मानने वाला।

प्रा० दाधना--(सं० दग्ध) क्रि० अ० दग्धना, जलना, दहना।

सं० दान--(दा=देना) पु० देना, त्याग, पुण्यार्थ वा नामके लिये देना, २ पुण्य, खैरात, भीख, दक्षिणा, ३ भेंट, समर्पण, अर्पण, ४ गजमद।

सं० दानपत्र--पु० हिबानामा।

सं० दानव--(दनु) पु० दनु के बेटे, दनुज, असुर, दैत्य, राक्षस।

सं० दानशील--(दान=देना, शील =स्वभाव) गु० दान करने का जिसका स्वभाव हो, दानी, दाता, उदार।

सं० दानशौण्ड-- पु० बड़ा दानी, दान शूर, बहुप्रद, बड़ादाता।

प्रा० दाना--(फा०दाना)पु० अनाज, अन्न, बीज।

फ़ा० दाना--पु० बुद्धिमान्, अक़्लमन्द, ज्ञाता।

प्रा० दानापानी--बोल० अन्न जल, संयोग, पु० खाना पीना।

सं० दानी--(दा=देना) गु० दाता, देनेवाला, उदार, दानशील, पुण्यात्मा, [illegible], परोपकारी।

सं० दान्त--(दम्=दबाना) पु० जितेन्द्रिय, तपी।

सं० दान्ति--(दम्=ति) भा० स्त्री० इन्द्रिय निग्रह, दमन, इन्द्रियवश करना, नफ़्सकुशी।

प्रा० दाबना--(दबना) क्रि० स० दबाना, दमन करना, चापना, २ निचोड़ना।

प्रा० दाबरखना--बोल० छिपालेना, चुरालेना, २ पकड़ रखना, दबाए रखना।

प्रा० दाप--(सं० दर्प) पु० घमंड, अभिमान, अहंकार, गरूर, शेखी।

सं० दाम-- (दामन्, दो=काटना) स्त्री० रस्सी, जेवरी, डोरी, २ माला।

प्रा० दाम--पु० एक पैसेका पचीसवां भाग, २ मोल, भाव, कीमत।

सं० दामाञ्चन--(दाम+अञ्चन=बांधना) पु० घोड़े की अगाड़ी पिछाड़ी की रस्सी।

प्रा० दामिनी--(सं० सौदामिनी) स्त्री० बिजली, तड़ित्, कौंधा, बर्क़।

सं० दामोदर-(दामन्=रस्सी, उदर=पेट अर्थात् जिसके पेटपर रस्सी बांधी गई हो, श्री कृष्ण ने एक बार दूध दही के बरतन फोर डाले थे तब उनकी माता यशोदा ने उनके पेट पर रस्सी बांधी थी तब दामोदर ऐसा नाम हुआ था दामन=रस्

उदर=पेट, अर्थात् जिसके पेट में बहुत से लोक हैं जैसे "दामानि लोकनामानि तानियस्योदरान्तरे। तेनदामोदरोदेव") पु० श्री कृष्ण का नाम, विष्णु।

सं० **दाम्पत्यमुक्तिपत्र**--पु० तलाक नामा, स्त्री और पुरुष के छुड़ाती देने का पत्र।

सं० **दाय**--(दा=देना) पु० बाप दादों का धन, पैतृक धन, वर्षासी, २ दान, ३ दायजा, यौतुक।

सं० **दायक**--(दा=देना) क० पु० देनेवाला, दानी, दाता, उदार, दानशील।

फा० **दायजा**--(सं० दाय) पु० दहेज, देना, यौतुक।

सं० **दायभाग**--(दाय+भाग) पु० बाप दादों के धन का हिस्सा, पैतृक धनका विभाग, २ एक ग्रन्थ का नाम।

सं० **दायाद**--(दाय=पैतृक धन, आ+दा=लेना) पु० बेटा, पुत्र, २ सकुटुम्बी, नातेदार, रिश्तेदार, भाईबंध, ३ हकाधिकारी, वारिस।

सं० **दार** } (दृ=फाड़ना, जो भाइ-
दारा } यों के स्नेह को फाड़ दे-
ती है) स्त्री० भार्या, पत्नी, जोरू, [illegible]।

सं० **दारक**--(दृ=फाड़ना, [illegible]) पु० विष्णु के सारथी का नाम, २ बालक, ३ सुअर, क० फाड़ने वाला भेदक, काटने वाला।

सं० **दारकर्म**--पु० विवाह, व्याह।

प्रा० **दारचीनी**--(सं० दारु=लकड़ी, चीनीय चीन देश की) स्त्री० दालचीनी, एकपेड़कीमसालेदारछाल।

सं० **दारण**--भा० पु० भेदन, विदारण, कर्तन, काटना।

सं० **दारद**--पु० विष भेद, २ पारा, ३ शिंगरफ, समुद्र।

सं० **दारिका**--(दारक=बालक) स्त्री० बेटी, पुत्री, लड़की, कन्या।

प्रा० **दारिद**--(सं० दारिद्र) पु० दरिद्रता, कंगालपन, दीनता।

सं० **दारिद्र** } (दरिद्रा=दुर्दशा हो-
दारिद्रा } ना) पु० कंगालपन, निर्धनता, गरीबी, दीनता, दुःख, दुर्दशा।

सं० **दारु**--(दृ=फटना या फाड़ना) स्त्री० लकड़ी, काठ, काष्ठ, २ देवदारु वृक्ष।

सं० **दारुक**--(दृ=फाड़ना) पु० श्री कृष्ण के सारथी का नाम, २ देवदारु वृक्ष, ३ काठ, लकड़ी, स्त्री० कठपुतली।

सं० **दारुगर्भा**--स्त्री० गुड़िया, पुतलिका, कठपुतली।

सं० **दारुण**--(दृ=फाड़ना, [illegible] [illegible]) पु० भयानक, [illegible]

कर, डरावना, विकट, कराल, कठिन कठोर, पु० भयानक रस, रौद्ररस, २ चित्रक वृक्ष ।

सं० दारुहस्तक--पु० काष्ठ का चिमचा, काठकी कलछली, करछी ।

प्रा० दारू--स्त्री० मदिरा, मद, शराब, २ बारूत, बरूद ।

प्रा० दारूडा } पु० मदिरा, मद,
दारूडी } स्त्री० शराब, दारू ।

सं० दाल--(दल्=टुकड़े करना) स्त्री० दले हुए मूंग, चने, उरद, मोठ, मसूर, अरहरआदि, दलहन, दाली ।

प्रा० दालगलनी, किसी की-बोल० सरस होना, वर रहना, जीतना, गठाव गांठना, डौल बांधना, युक्ति करना, काम बनाना ।

प्रा० दालिद्र--(सं० दारिद्र) भा० पु० कंगालपन, ग़रीबी, निर्धनता, दीनता, दुःख, दुर्दशा ।

सं० दाव--(दु=जलाना) पु० जंगल, वन, २ वन की आग, ३ गर्मी, पीड़ा, संताप ।

सं० दावन--भा० पु० पीड़न, नाशन, दावना, दबाना ।

सं० दावाग्नि } (दाव=जंगल,
दावानल } अग्नि वा अनल=आग) स्त्री० वन की आग, जंगल की आग ।

सं० दाश--(दाश्=देना जिसको दरमाहा आदि देते हैं) पु० नौ[कर] सेवक, २ (दश्=काटना, मार[ना] जो मछलियों को मारता है) मछुवा, धीवर ।

सं० दाशरथ--(दशरथ) पु० दश[रथ] राजा के बेटे श्रीरामचन्द्र ।

सं० दाश[illegible]--पु० दानी, दाता ।

सं० दास--(दास्=देना जो भ[गवान] आत्मा को देताहै अथवा जिस[को] धन आदि देते हैं) पु० नौक[र] सेवक, किंकर, टहलुवा, २ शू[द्र] ३ शूद्रों का उपनाम ।

सं० दासी--(दास) स्त्री० लौंडी, [ट]हल[नी] चेरी, शूद्रा, पीत झंडी, बंदी ।

सं० दासेय--पु० दासी पुत्र, [ग़ु]ला[म] गुलाम ।

सं० दाह } (दह्=जलाना) भा० पु०
दाहन } जलाना, जलन, ताप, गा[?] करना, भुलसाव ।

प्रा० दाहदेना--बोल० मुर्दा जलाना ।

सं० दाहक--(दह्=जलाना) क० पु० जलानेवाला, पु० चित्रक वृक्ष ।

प्रा० दाहना--(सं० दाहन) क्रि० [स०] जलाना ।

प्रा० दाहना } (सं० दक्षिण) [?]
दाहिना } दहना, दक्षिण, [?] दिना ।

सं० दिक्‌पति } (दिश=दिशा, [?]
दिक्‌पाल } राजा, वा पाल=[?]

पालनेवाला)पु० दिशाओंके राजा, (श्लोक) इन्द्रोवह्निःपितृपतिर्नैर्ऋतो वरुणो मरुत् । कुबेर ईशःपतयः पूर्व्वादीनांदिशांक्रमात् जैसे १ पूर्व का इन्द्र, २ अग्निकोण का अग्नि, ३ दक्षिण का यमराज, ४ नैर्ऋत्यकोणका नैर्ऋत, ५ पश्चिमका वरुण, ६ वायव्यकोण का पवन, ७ उत्तर का कुबेर, ८ ईशानकोणका महादेव, ९ ऊपरकी दिशाका ब्रह्मा, १० नीचे की दिशा का अनन्त वा विष्णु—अथवा(श्लोक)सूर्यःशुक्रः क्षमापुत्रः सैंहिकेयः शनिः शशी । सौम्यस्त्रिदशमंत्री च पूर्वादीनामधीश्वराः १ पूर्व का दिक्पति सूर्य, २ अग्निकोण का शुक्र, ३ दक्षिण का मंगल, ४ नैर्ऋतकोणका राहु, ५ पश्चिम का शनैश्चर, ६ वायव्य कोण का चांद, ७ उत्तरका बुध, ८ ईशानकोण का बृहस्पति ।

सं० दिक्शूल) (दिक् वा दिशा=
दिशाशूल) और,शूल=कांटा, मंगलवार को उत्तर में दिशाशूल होताहै ।

प्रा० दिखलाना) (देखना)क्रि०
दिखाना) स० बताना, सुझाना, बतलाना, समझाना, जताना, प्रकाशकरना, प्रकटकरना, लखाना, बुझाना, दर्शाना ।

प्रा० दिखलाईदेना) बोल० जान
दिखाईदेना) पड़ना, देख पड़ना, मालूम होना ।

प्रा० दिखाऊ--(दिखाना) गु० देखने योग्य, सुन्दर, सजीला, सुहावना, रूपवान् ।

सं० दिगन्त--(दिक्+अन्त) पु० दिशा का अन्त । [आसमान]

सं० दिगन्तराल-- पु० आकाश

सं० दिगम्बर--(दिक्=दिशा वा शून्य, अम्बर=कपड़ा, अर्थात् जिस के दिशाही कपड़ा है) गु० नंगा, नग्न, वस्त्रहीन, पु० शिवका नाम,

१ ऐरावत, २ पुण्डरीक, ३ वामन, ४ कुमुद, ५ अंजन, ६ पुष्पदन्त, ७ सार्वभौम, ८ सुप्रतीक ।

सं० द्विग्ध-पु० विषलपेटा बाण, २ अग्नि, ३ स्नेह, ४ लेप, ५ लिप्त।

सं० दिग्विजय--(दिक्=दिशा, विजय=जीत) स्त्री० चारों दिशा का जीतना ।

प्रा० दिग्गी, दिग्घी (सं०दीर्घिका, दीर्घ=लंबा) स्त्री० लंबा पोखरा, तालाब ।

सं० दिति--(दो टुकड़े करना)स्त्री० दैत्यों की मा, दक्षप्रजापति की बेटी और कश्यपमुनिकी स्त्री ।

सं० दित्सा--(दा=देना)भा० स्त्री० दानेच्छा, देने की इच्छा ।

सं० दिदृक्षा-स्त्री०देखने की इच्छा ।

सं० दिन (दो=नाश करना, अंधेरा को)पु० दिवस,दिवा,वासर, घस्र ।

प्रा० दिनकाटना--बोल० दुःख से समय बिताना ।

प्रा० दिनकोदिन रातकोरात न जानना-बोल० शोच में अथवा काम में डूब जाना ।

प्रा० दिनखुलना- बोल० भाग जागना, दुःख के दिन चले जाना और सुख के दिन आना, दिन फिरना, बढ़ती होना, फलनाफूलना।

प्रा० दिनगँवाना-बोल० अभावधानीसे अथवा वृथासमय बिताना।

प्रा० दिनचढ़ना-बोल० दिन आना, दिन बढ़ना, २ स्त्रियों के कपड़ों से होने का समय बढ़ जाना।

प्रा० दिनचढ़ाना--बोल० किसी काम को देर से शुरुअ करना।

प्रा० दिनढलना-बोल० दिन घटना, दिन पलटना ।

प्रा० दिनधौले-बोल० दिनदोपहर, दिन दिया । [दुःख पड़ना।

प्रा० दिनपड़ना-बोल०दुःख आना,

प्रा० दिनफिरना-बोल० किस्मत खुलना, भाग जागना, बढ़ती होना, फलना फूलना ।

प्रा० दिनबदिन, दिनादिन बोल० हर एक दिन, प्रत्येक दिन, प्रतिदिन ।

प्रा० दिनभरना-बोल० दुःख और कष्ट में समय बिताना ।

प्रा० दिनमुँदना-बोल० दिन छिपना, सूर्य्य अस्त होना, सूर्य छिपना ।

सं०दिनकर-(दिन,कर=करनेवाला, कृ=करना, वा कर=किरण जिसकी किरण दिनमें दिखाई देती है) पु० सूर्य्य, रवि । [सूर्य ।

सं० दिनमणि--(दिन+मणि)पु०

सं०दिनमान--(दिन,मान=मापना

पु० दिनका नाप, दिनका परिमाण।

प्रा० दिनमुख-पु० प्रातःकाल, प्रभात।

प्रा० दिनाई-स्त्री० दाद।

सं० दिनान्त-(दिन+अन्त) पु० दिनका पूरा होना, सांझ, संध्या, सायंकाल, शाम होना।

सं० दिनेश-(दिन+ईश) पु० सूर्य्य, दिनकर, दिनपति।

प्रा० दिया—(सं० दीप) पु० दीवा, दीपक, चिराग, २ (देना) क्रि० स० देना, देदिया।

सं० दिलीप-पु० रघुराजाका पिता।

सं० दिव-(दिव्=खेलना, चमकना, चाहना) पु० स्वर्ग, आकाश।

सं० दिवस } दिवा (दिव=खेलना, चमकना, वा व्यवहार करना) पु० दिन, वासर, रोज।

सं० दिवाकर-(दिवा=दिन, कर=करनेवाला) पु० सूर्य, भानु, रवि, दिनेश, दिनकर।

सं० दिवान्ध-(दिवा=दिन, अन्ध=अन्धा) पु० दिनमें अन्धा, पु० उल्लू, २ चिमगादड़।

प्रा० दिवाला-पु० कर्ज चुकाने की असमर्थता, [illegible] अपना [illegible] निकलना।

प्रा० दिवाली—[illegible]

सं० दिविषद्-(दिव्=प्रकाशकरना) पु० देवता, अमर।

सं० दिवौकस-(दिव=दिन+ओकस=आश्रय) पु० देवता, अमर, चातक, पपीहा।

सं० दिव्य-(दिव=स्वर्ग, दिव्=चमकना) गु० स्वर्गका, स्वर्गीय, २ सुन्दर, मनोहर, स्वच्छ, मनभावन, पु० शपथ, गूगुल, जौ।

सं० दिव्यदृष्टि-(दिव्य+दृष्टि) स्त्री० चमत्कारी ज्ञान, अलौकिक ज्ञान, ऐसी नजर जिससे सब जगह की चीजें देख सके।

सं० दिश् } दिशा (दिश्=देना, व दिखलाना) स्त्री० तरफ, ओर, दिशा दश हैं, १ ऊपर, २ नीचे, ३ पूर्व, ४ अग्निकोण, ५ दक्षिण, ६ नैर्ऋतकोण, ७ पश्चिम, ८ वायव्यकोण, ९ उत्तर, १० ईशानकोण, [illegible]।

प्रा० दिसावर-(सं० देश) पु० देश, विलायत, परदेश, मुल्क।

प्रा० दिसावरी-(दिसावर) गु० एक तरह के पान, गु० दिसावर का (माल आदि)।

प्रा० दिहरा (सं० देवगृह) पु० देवहरा, देवता का मंदिर।

प्रा० दिहाती-[illegible]

दहलीज़, २ फाटक, द्वार, डेवढ़ी, नाम शहर का।

सं० दीक्षक-(दीक्ष्+अक, दीक्ष्=मंत्र देना)क०पु०मंत्रदाता, गुरु।

सं० दीक्षा-(दीक्ष्=यज्ञ करना, मंत्र देना) स्त्री० गुरुसे मंत्रलेना, गुरु मुखहोना, मंत्रउपदेश, २ यज्ञ, याग।

सं० दीक्षित-(दीक्ष्=यज्ञ करना, मंत्र देना)पु० मन्त्रदेनेवाला,गुरु-यज्ञकरनेवाला, म्प०मंत्रलियाहुआ।

प्रा०दीखना-(सं०दृश्=देखना)क्रि० अ० देख पड़ना, दिखलाई देना।

प्रा० दीठ-(सं० दृष्टि) स्त्री०दृष्टि, ताक, दर्शन, नज़र। [रश्मि।

सं० दीधिति-स्त्री०किरण, मरीचि,

सं० दीन-(दी=नाश होना) गु० कंगाल, निर्धन, दरिद्र,दुःखी,ग़रीब, दुखिया,२ आधीन, नम्र,विनीत।

सं०दीनता-(दीन)भा०स्त्री०ग़रीबी, कंगलापन, २ आधीनता, नम्रता।

सं० दीनदयालु-(दीन+दयालु) गु० ग़रीबोंपर दयाकरनेवाला,भक्तों पर कृपा करनेवाला,ईश्वरकानाम।

सं० दीनबन्धु-(दीन+बंधु)पु० ग़रीबोंके अथवा भक्तोंके भाई अथवा मित्र, ईश्वर का नाम।

प्रा०दीनानाथ-(सं०दीननाथ)पु० ग़रीबों के अथवा भक्तों के स्वामी, ईश्वर का नाम।

सं० दीनार-(दी=नाश होना)पु० सोने का एक सिक्का, २ सोने का एक तौल, सुवर्णकर्ष,निष्कपरिमित।

सं०दीप-(दीप्=चमकना)पु० दिया, दीवा,दीपक, चिराग। [को देखो।

प्रा० दीप-(सं० द्वीप)पु०द्वीपश०

सं०दीपक- (दीप्=चमकना) पु० दिया, दीवा, दीप, चिराग, २ एकरागकानाम, ३ एक अलंकार का नाम गु० चमकीला,दीप्तिमान।

सं० दीपमालिका-(दीप=दिया, मालिका=पांत) दिवाली, एक तिवहार का नाम।

सं० दीप्त-(दीप्=चमकना) गु० प्रकाशित, चमकीला, प्रज्वलित, पु० सोना।

सं० दीप्ति-(दीप्=चमकना)स्त्री० चमक, प्रकाश, झलक, तेज, शोभा।

सं०दीप्तिमान्-(दीप्ति=तेज,चमक, मान्=वाला) गु० तेजस्वी, प्रतापी, शोभावान, शोभायमान।

सं०दीप्यमान-(दीप्य+म्=आन) प्रकाशता हुआ, चमकता हुआ, शोभायमान।

प्रा०दीमक-(फा० दीवक) स्त्री० दीयाँ, वल्मीक, एक प्रकार की मकोड़, चिउँटी।

सं०दीर्घ-(दृह्=बढ़ना,वा दृ=दरना,वा दराना)गु०लम्बा,बड़ा,ऊंचा,

पु० द्विपात्रिक स्वर, २ सालवृक्ष।

सं० दीर्घग्रीव-(दीर्घ=लंबी, ग्रीवा =गरदन) पु० ऊंट, लंबी गरदन वाला)

सं० दीर्घजङ्घा-पु० सारसपक्षी, ऊंट।

सं० दीर्घजीवी-(दीर्घ=लम्बा अर्थात् बहुत दिनोंतक, जीवी=जीनेवाला) दीर्घायु।

सं० दीर्घदर्शी-(दृश्=देखना) क० पु० दूरदर्शी, विवेकी।

सं० दीर्घरोमन्-पु० भालू, रीछ।

सं० दीर्घवक्त्र-(दीर्घ=बड़ा, वक्त्र= मुख) पु० हस्ती, हाथी।

सं० दीर्घसूत्री-(दीर्घ=लम्बा अर्थात् बहुत देर से, सूत्र=चाहे हुए काम को करना) पु० आलसी, सुस्त, हर एक काम में देरी करनेवाला, धीमा, शिथिल।

सं० दीर्घायुः-(दीर्घ=लम्बी, आयुस्= उम्र) पु० चिरंजीवि, दीर्घजीवि, बहुत दिनों तक जीनेवाला, पु० कौवा, २ सेमल का वृक्ष, ३ मार्कण्डेय ऋषि।

प्रा० दीवा-(सं० दीप) पु० दीपक, दिया, चिराग।

कतलीफ, व्यथा, आपदा, विपदा।

प्रा० दुखकामारा-बोल० दुखी, दुखारी।

सं० दुःखद-(दुःख+द, दा=देना) दुःखदाता, दुखदेनेवाला।

प्रा० दुखपाना-बोल० कुढ़ना, कलपना, दुख भरना, दुखी होना।

प्रा० दुखभरना-बोल० परिश्रम करना, दुख पाना, दुखी होना।

प्रा० दुखड़ा-(सं० दुःख) पु० दुख, आपदा, अभाग, दुर्गति, तकलीफ।

प्रा० दुखदाई-(सं० दुःखदायक) क० पु० दुख देनेवाला।

प्रा० दुखना-(सं० दुःखन, दुःख= दुख पाना) क्रि० अ० पिराना, दर्द होना, पीड़ा होना, कलेश होना, जलना, चरपराना।

सं० दुःखसागर-(दुःख+सागर) पु० दुख का समुन्दर, बड़ा भारी दुख, २ संसार, दुनियां।

सं० दुःशील-(दुः=बुरा, शील=स्वभाव) पु० दुष्टस्वभाव, बदमिजाज।

प्रा० दुखाना-(दुखना) क्रि० स० दुख देना, सताना, पीड़ा देना।

सं०दुःखावह-(दुःख+वह्=भोगना) क०पु० दुखिया, दुःखित, तकलीफ उठानेवाला।
सं० दुःखित-(दुःख) गु० दुखी, दुखियारी, दुखिया, पीड़ित।
सं० दुःखी-(दुःख) गु० दुःखित।
सं० दुःशासन-(दुर्=दुखसे, शास् =सिखाना) पु० धृतराष्ट्र राजाका वेटा और दुर्योधन का छोटा भाई।
सं०दुःसह-(दुर्=दुखसे,सह=सहना) गु० जो दुखसे सहाजाय, असह्य, बहुत कठिन, नहीं सहने योग्य।
प्रा० दुकड़ा-(सं० द्वि=दो)पु० दो दमड़ी,छदाम,पैसे का चौथाभाग।
प्रा० दुकान-(फा दूकान) पु० हाट, सौदा रखने वेचने की जगह।
सं० दुकूल-पु० कपड़ा, वस्त्र, रेशमी कपड़ा, महीन कपड़ा। [राग।
प्रा० दुगुन-(सं० द्विगुण)पु०दूनी।
प्रा० दुगुना-(सं० द्विगुण, द्वि=दो, गुण=गुनाहुआ)गु०दूना, दोगुना।
सं० दुग्ध-(दुह=दुहना)स्त्री०पु०दूध, क्षीर, पय।
प्रा० दुचित, दुचिता-(सं०द्विचित्त,द्वि=दो, चित्त=मन)गु०जिस को दुब्धा लगी हो, दोमना, दुब-धेल, व्याकुल।
प्रा० दुत-(सं०दूर वा दुर्) वि०बो० दूर हो, परे जा, निकल भाग, चलाजा।
प्रा०दुतकार,पु० दुतकारी,स्त्री० -झिड़की,घुरकी, ताड़ना, दुत-कारना,डाटना, झिड़कना,घुरकना।
प्रा० दुतदबक—बोल० झिड़की, घुरकी, डाट।
प्रा०दुत, दुति-(सं० द्युति)स्त्री०चमक, चटक, भड़क, सुन्दरता, प्रकाश।
प्रा० दुधार, दुधैल-(दूध) गु० दूधदेने वाली, दुधारी।
सं० दुंदुभि- (दुन्दु ऐसे शब्द से, उभ्=भरना) पु० धौंसा, नगारा, डंका, भेरी, २ वरुण, ३ एक राक्षस जिसको वालि ने मारा।
प्रा०दुपट्टा—(सं०द्वि=दो,पट=कपड़ा) पु० दो पाट का कपड़ा जिसको दोनों कांधों पर डालते हैं, बहुत बार एक पाट के कपड़े को भी दु-पट्टा बोलते हैं।
प्रा०दुपट्टातानकेसोना—बोल० असावधानी से अथवा वे फिक्र होके सो रहना।
प्रा०दुपट्टाहिलाना,वाफिराना—बोल० संधि के लिये मोहलत या अवकाश चाहने के लिये झंडा हिलाना, किला या गढ़ वैरी को सौंप देना।
प्रा० दुपहरिया—(दोपहर)पु०एक प्रकार का फूल, मध्याह्नपुष्प,

गु० दोपहर का ।

प्रा० दुविधा--(सं० द्वैविध्य, द्वि=दो, विध=प्रकार) स्त्री० संदेह, खटका, दुचिताई, पसोपेश, संकल्पविकल्प ।

प्रा० दुबला--(सं० दुर्बल) गु० कमजोर, दूबर, निर्बल, २ पतला, कृश, क्षीण ।

प्रा० दुभाषिया--(सं० द्वि=दो, भाषा=बोली) क० पु० दोनों ओर की बोली समझाने वाला, एक बोली से उलथा करके दूसरी बोली में समझानेवाला ।

सं० दुर् / दुस्) उपस० बुरा, दुष्ट, अशुभ, नीच, तुच्छ, स्वल्प करने योग्य (जैसे दुर्वचन, दुर्जन, दुर्बुद्धि, दुर्दिन आदि) २ अनुचित, उलटा, असत्य, झूठ (जैसे दुष्कृत) ३ निषेध, नहीं, ४ कठिनता से, दुःख से, [illegible])।

प्रा० दुरना--क्रि० अ० छिपना, [illegible] ।

सं० दुराचार--(दुर्=बुरा, आचार=चलन) भा० पु० बुराचलन, बुरा व्यवहार, अन्याय, अधर्म, पाप, गु० दुष्ट, जिसका बुरा चाल चलन हो ।

सं० दुराचारी--(दुराचार) गु० दुष्ट, पापी, अन्यायी, अधर्मी, भ्रष्ट, पापात्मा ।

सं० दुरात्मा(दुर्=दुष्ट, आत्मा=चित्त, मन) गु० दुष्ट, पापी, अधर्मी ।

सं० दुराधर्ष--(दुर्=दुःख से, आ+धृष्=जीतना, दबाना) गु० जो दुःख से जीता जाय, जो शत्रु से नहीं दबे । [काना ।

प्रा० दुराना--क्रि० स० छिपाना, लु-

सं० दुरालाप--(दुर्=बुरा, आलाप=बोलना) पु० गाली, दुर्वचन ।

प्रा० दुराव--(दुराना) भा० पु० छिपाव, लुकाव ।

सं० दुराशा--(दुर्=बुरी, आशा=आस) स्त्री० बुरी आशा, नीच आशा ।

रीति से कहना, मुहमिल कहना, जैसे पानी आनी, रोटी ओटी।

सं० दुरोदर—पु० जुआं का खेल, जुआरी, कपटी, धूर्त, व्यवहार, व्यवहारी।

सं० दुर्ग—(दुर्=कठिनता से वा दुःख से, गम्=जाना जहां) पु० गढ़, कोट, क़िला, घाटा, २ एक राक्षस का नाम, गु० कठिन, अगम्य, दुर्गम्य।

सं० दुर्गत—(दुर्=दुखसे, गम्=जाना) गु० दुःखी, दीन, कंगाल, गरीब, दरिद्र, २ छीछालेदर।

सं० दुर्गति—(दुर्=बुरी, गति=दशा) भा० स्त्री० बुरी दशा, दुर्दशा, बरबादी, खराबी, गरीबी, नीचपन, अधमता, २ नरक।

सं० दुर्गन्ध—(दुर्=बुरी, गन्ध=बास) स्त्री० बुरीबास, कुबास, बुरी महक, बदबू।

सं० दुर्गम—(दुर्=कठिनतासे, गम्=जाना) गु० कठिन, औघट, अगम्य, विकट, दुश्वार, गुज़ार, २ गंभीर।

सं० दुर्गा—(दुर्ग एक राक्षसका नाम उसको मारनेवाली देवी) जैसे दुर्गापाठ में लिखा है कि "तत्रैवचवधिष्यामि दुर्गमाख्यंमहासुरम्। दुर्गादेवीतिविख्याता" अर्थ देवी कहती है कि मैं वहां दुर्ग नाम असुर को मारूंगी तब मेरा नाम दुर्गा प्रसिद्ध होगा, स्त्री० देवी, भवानी, काली, भगवती, २ दुर्गापाठ, दुर्गामाहात्म्य, दुर्गाचरित्र, जिस में दुर्गाकी महिमा लिखी है।

सं० दुर्घट—(दुर्=कठिन, घट=चेष्टा) गु० कठिन, औघट, विकट, अगम्य।

सं० दुर्जन—(दुर्=दुष्ट, जन=मनुष्य) पु० दुष्टमनुष्य, गु० दुष्ट, बुरा, नीच, बुरा करनेवाला।

सं० दुर्जय—(दुर्=कठिनता से, जि=जीतना) गु० जो कठिनतासे जीतने में आवे।

सं० दुर्दशा—(दुर्=बुरी, दशा=हालत, अवस्था) स्त्री० बुरी हालत, आपदा, विपदा, अभाग, बुरी अवस्था, दुर्दिन।

सं० दुर्दिन—(दुर्=बुरा, दिन) पु० बुरा दिन, ऐसादिन जिसमें बादल घिरे हुएहों और अंधेरा हो जाय।

सं० दुर्नीति—स्त्री० दुष्टनीति, बुरा न्याय, खराबइन्साफ़।

सं० दुर्बल(दुर्=थोड़ा वा नहीं, बल=ज़ोर) गु० निर्बल, निबल, दुबला, असमर्थ, बलहीन, कमज़ोर।

सं० दुर्बुद्धि—(दुर्=बुरी, बुद्धि=समझ) गु० मूर्ख, भोंदू, अनाड़ी, अज्ञान, नासमझ, मन्दबुद्धि, बदअक़ल।

सं० दुर्भगा—(दुर्=बुरा, भग=भाग) स्त्री० वह स्त्री जिसको उसका पति

नहीं चाहता हो ।

सं० दुर्भाग्य--(दुर्=बुरा, भाग्य=भाग) गु० अभागा, भाग्यहीन, कमबख्त ।

सं० दुर्भिक्ष--(दुर्=नहीं, भिक्षा=खाने की वस्तु) पु० काल, अकाल, कुसमय, असमय ।

सं० दुर्मति--(दुर्=बुरी, मति=बुद्धि) गु० मूर्ख, अज्ञान, दुर्बुद्धि, मंदबुद्धि, स्त्री० बुरी समझ, बदअक्ल ।

सं० दुर्मद-(दुर्=बुरा, मद=अभिमान, गु० जिस को बहुत अथवा बुरा घमंड हो, पु० एक राक्षस का नाम।

सं० दुर्मुख--(दुर्=बुरा, मुख=मुंह) गु० जिस का मुंह बुरा हो, २ कड़ी बात बोलनेवाला, पु० एक बन्दर का नाम, २ एक राक्षस का नाम।

सं० दुर्योधन--(दुर्=दुःख से वा बुरी तरह से युध्=लड़ना) पु० धृतराष्ट्र का बड़ा बेटा और कौरवों का मुखिया जिसने अपने चचेरे भाई युधिष्ठिर आदि पांडवों से लड़ाई की थी जो लड़ाई महाभारत कहलाती है ।

सं० दुर्[illegible]

[illegible]

वचन, दुर्वाद ।

सं०दुर्वाद--(दुर्=बुरा, वाद=कहना) पु० गाली, बुरा वचन, दुर्वचन, बुरी बात, दुर्नाम ।

सं० दुर्वासना--(दुर्=बुरी, वासना =इच्छा) स्त्री० बुरी इच्छा, खराब, ख्वाहिश ।

सं० दुर्वासाः--(दुर्=बुरा, वा डरावना, वासस्=कपड़ा) पु० एक ऋषि का नाम जो अत्रि ऋषि का बेटा और शिव का अंश था, २ मैला कपड़ा, मलिन वस्त्र ।

सं० दुर्विपाक--(दुर्=बुरा, विपाक =फल) पु० बुराफल, बदनतीजा, बदकिस्मती, दुर्दैव, अभाग्य ।

सं० दुर्बोध्य--(दुर्+बुध्+य, बुध् =जानना, ण्यत्) गु० कठिनता से जानने योग्य, मुश्किल से जाना जाय।

प्रा० दुलकी--स्त्री० घोड़े की एक चाल, फुदक चाल ।

प्रा० दुलड़ा--(दोलड़) पु० दो लड़ की माला, गु० दुगुना ।

प्रा० दुलत्ती--(दु=दो, लात पांव की मार) स्त्री० [illegible] दोनों पैरों से लात [illegible] ।

प्रा० दुला[illegible]

[illegible]

प्रा० दुलहन / दुलहिन } स्त्री० बनी, बनरी, लाड़ी ।

प्रा० दुलहा / दुल्हा } पु० वर, बनरा, बना ।

प्रा० दुलाई—(दु=दो + लाय=परत) स्त्री० रजाई, दुलैया ।

प्रा० दुलार-पु० प्यार, सनेह, प्रीति, प्रेम ।

प्रा० दुवार—(सं० द्वार) पु० दरवाजा ।

प्रा० दुशाला--पु० शाल का जोड़ा ।

सं० दुश्चरित--(दुः + चरित, चर=चलना) भा० पु० दुराचार, बदचलन, दुष्ट व्यवहार ।

सं० दुष्कर--(दुर्=दुःखसे, कृ=करना) स्वी० पु० कठिन, असाध्य, जो करने में कठिन हो, मुश्किल ।

सं० दुष्कर्म्म-(दुर=बुरा, कर्म्म=काम) पु० बुरा काम, कुकर्म, पाप, नीचकर्म्म ।

सं० दुष्कर्म्मी—(दुष्कर्म्म) क० पु० पापी, दुरात्मा, अधर्मी, कुकर्मी ।

सं० दुष्ट—(दुष्=बिगड़ना, भ्रष्ट होना, या बुरा करना) गु० बुरा, दुर्जन, कुजन, नीच ।

सं० दुष्णाम--(दुष्+नाम) पु० बुरा नाम, गाली, अयश, बदनाम ।

सं० दुष्टता--(दुष्ट) स्त्री० बुराई, खोटाई ।

सं० दुष्प्राप्य-(दुर्=कठिनतासे, प्राप्य=पाने योग्य) गु० दुर्लभ, दुःख से वा कठिनता से पाने योग्य ।

प्रा० दुसह--(सं० दुःसह) गु० दुःसह शब्द को देखो ।

सं० दुस्तर-(दुस्=दुःखसे, तृ=पारहोना) गु० कठिन, जिस का पार होना कठिन हो ।

प्रा० दुहना—(सं० दोहन, दुह्=दुहना) क्रि० स० दोहना, गाय के थनों में से दूध निकालना ।

प्रा० दुहराना—क्रि० स० दूना करना, २ दोहराकर कहना, बारबार कहना ।

प्रा० दुहाई-(सं० द्वौ=दो, हाहा=हाय, अर्थात् दोनों हाथ ऊंचे कर के पुकारना) स्त्री० न्याय के लिये पुकारना, पुकार, २ सौगंद, शपथ, जैसे "नन्ददुहाई" ।

प्रा० दुहाईतिहाईकरना--बोल० बारबार पुकारना ।

सं० दुहिता—(दुह्=देना, वा दुहना, जो माबाप के धन को दुहाकरे या जिसको देते रहैं) स्त्री० बेटी, लड़की, कन्या, पुत्री, सुता ।

प्रा० दुहूं—(सं० द्वौ) गु० दो, दोनों ।

प्रा० दूज—(सं० द्वितीया) स्त्री० दूसरी तिथि ।

प्रा० दूजवर— (सं० द्विजायावर द्वि=दूसरी, जाया=पत्नी, वर=दुलहा) पु० वह मनुष्य जो दूसरा ब्याह करता है ।

प्रा० दूजा-(सं० द्वितीय) गु० दूसरा, और ।

सं० दूत--(दु+जाना) पु० समाचार लेजाने वाला, संदेशा पहुँचाने वाला, एलची, हरकारा ।

सं० दूतिका } (दूत) स्त्री० समाचार पहुँचानेवाली,
दूती } संदेशा लेजाने वाली, २ कुटनी, नायका ।

प्रा० दूध--(सं० दुग्ध) स्त्री० पु० दुग्ध, पय, क्षीर, २ किसी जड़ीका अथवा पौधे का रस ।

प्रा० दूधाधारी (सं० दुग्धाहारी) वा० पु० दूध पीके जीनेवाला ।

प्रा० दूधाभाती--(दूध+भात) स्त्री० व्याहके चौथे दिन एक रीति होती है जब दुलहा और दुलहिन एक साथ बैठ कर खीर खाते हैं । [दोहरा ।

प्रा० दूना--(सं० द्विगुण) पु० द्विगुना,

प्रा० दूब--(सं० दूर्वा,दुर्व्व=हिंसा करना, अर्थात् मारना) स्त्री० एक प्रकार की घास ।

प्रा० दूभर--(सं० दुर्भर) पु० दुष्कर, अबखोर, २ दुर्भर (दुर=दुःख से, भर=भरणा) कठिन ।

ना, अवज्ञा करना, खगव करना, बचना, टल जाना, अलग रहना ।

प्रा० दूरकरना--बोल० हटाना, सरकाना, टालना, हँकादेना, निकालदेना ।

प्रा० दूरहोना--बोल० हटना, अलग होना, टलना, निकल जाना, सरकना ।

प्रा० दूरहो--बोल० चला जा, परे हो, निकल भाग ।

सं० दूरदर्शिता--भा० पु० दूरसे देखना, पाण्डित्य, विवेकता, दूरदेशी ।

सं० दूरदर्शी--(दूर=दूर से अर्थात् पहलेसे, दर्शी=देखनेवाला, दृश्=देखना) वा० पु० दूर से देखनेवाला, पहलेसे जानने वाला, अग्रशोची, पु० पण्डित, विवेकी, ज्ञानी, २ गीध । [पु० निंदक ।

सं० दूषक--(दुष=दोषी होना) वा०

सं० दूषण--(दुष=दोषीहोना) भा० पु० दोष, निंदा, चूक, अपराध, अपवाद, अनन, २ एक राक्षस का नाम ।

सं० दूषणीय--(दुष+अनीय) वा० पु० निन्दायोग्य, दुष्ट, बदनाम ।

प्रा० दूसर / दूसरा } (सं० द्वितीय) गु० दूजा, और।

प्रा० दृग--(सं० दृक्, दृश्=देखना) ग० पु० आंख, चक्षु।

सं० दृढ़--(दृह्=बढ़ना) गु० कड़ा, कठोर, मज़बूत, पोढ़ा, पक्का, अचल, गाढ़ा, ठोस

सं० दृढ़ता--(दृढ़) भा० स्त्री० पकावट, मज़बूती, पोढ़ाई, कठिनता, ठोसपन।

प्रा० दृढ़ाना--(सं० दृढ़) क्रि० स० मज़बूत करना, पक्का करना, पोढ़ा करना, सबल करना।

सं० दृश्य--(दृश्=देखना) र्म्म० पु० देखने योग्य, दर्शनीय, २ सुन्दर, सुहावना, मनोहर।

सं० दृश्यमान--र्म्म० पु० देखने योग्य, दर्शनीय, देखने क़ाबिल।

सं० दृष्ट--(दृश्=देखना) र्म्म० पु० देखाहुआ, प्रकट, जो देखनेमें आवे।

सं० दृष्टकूट--पु० पहेली, क्लिष्ट, कठोर, कड़ा।

सं० दृष्टान्त--(दृष्ट=देखा, अन्त=आख़िर, पार) पु० उदाहरण, उपमा, बराबरी।

सं० दृष्टि--(दृश्=देखना) भा० स्त्री० देखना, दर्शन, दीठ, नज़र, २ आंख।

सं० दृष्टिपात--(दृष्टि+पात, पत्=गिरना) पु० दर्शन, कटाक्ष, घूरना, देखना।

सं० दृष्टिशशि--पु० महादेव, शिव।

प्रा० देखना--(सं० दृश्=देखना) क्रि० स० लखना, दृष्टि करना, ताकना, निहारना।

प्रा० देखनाभालना--बोल० अच्छी तरहसे देखना, देखना, ताकना, निहारना।

प्रा० देखादेखी--बोल० हिस्काहिस्की, बराबरी, देखनेसे, २ आपसमें देखना।

सं० देदीप्यमान-क० पु० चमकीला, जाज्वल्यमान, चमकदार।

प्रा० देनलेन--(देना लेना) भा० पु० व्यवहार, पलटा, व्यापार, वनिज, बैपार, देवालेई, साहूकारी।

प्रा० देना--(सं० दान, दा=देना) क्रि० स० देदेना, देडालना, सौंपना, त्यागना। [देनालेना।

प्रा० देनापाना--बोल० हानिलाभ,

प्रा० देमारना-- बोल० पटकदेना, पछाड़ डालना।

सं० देय-(दा=देना) र्म्म० पु० देने योग्य

सं० देव--(दिव्=खेलना, वासरहना) पु० देवता, २ परमेश्वर, ३ राजा, ४ देवर, ५ ब्राह्मणों का उपनाम, ६ बादल, मेघ, गु० पूज्य, पूजने योग्य।

सं० देवक--(दिव्=खेलना, या चम-

कना) पु० श्रीकृष्ण का नाना और देवकी का बाप ।

सं० देवकार्य्य-- (देव=देवता, कार्य =काम) पु० पूजा होम आदि ।

सं० देवकी / दैवकी (देवक) स्त्री० देवक राजाकीबेटी, वसुदेव की स्त्री और श्रीकृष्ण की मा ।

सं० देवकीनन्दन--(देवकी + नन्दन =बेटा) पु० श्रीकृष्ण ।

सं० देवगुरु--(देव + गुरु) पु० देवताओं का गुरु बृहस्पति ।

सं० देवगृह--(देव + गृह) पु० मंदिर, देवालय, देहरा, ठाकुरद्वारा ।

प्रा० देवठान-- (सं० देवोत्थान) पु० कातिक सुदी ११ जिस दिन विष्णु चार महीने की नींद से जागते हैं ।

सं० देवर-(दिव्=खेलना) पु० पतिका छोटाभाई । जैसे "पश्यतिदेवरस्ते" ।

प्रा० देवल--(सं० देवालय) पु० मंदिर, ठाकुरद्वारा, देहरा ।

सं० देवलोक--(देव + लोक) पु० देवताओं के रहने का स्थान, स्वर्ग, सात लोकों में का एक लोक (लोक शब्द को देखो) ।

सं० देववाणी--(देव + वाणी) स्त्री० देवताओंकी बोली, संस्कृतभाषा ।

सं० देवस्थान--(देव+स्थान) पु० मंदिर, देवालय, देवल, ठाकुरद्वारा, देहरा ।

प्रा० देवा--(सं० देव) पु० देवता, २ (देना) देनेवाला । [वाला ।

प्रा० देवाल-- (देना) पु० देने

सं० देवालय--(देव=देवता, आलय =घर) पु० मंदिर [illegible]

सं० देश--(दिश्=देना) पु० मुल्क, देश, पृथ्वी का खंड, मंडल, चक्र, प्रदेश, स्थान।

सं० देशदशाभिज्ञ--क० पु० देश की दशा का ज्ञाता, मुल्ककी हालत का जानने वाला।

प्रा० देशनिकाला--(देश+निकालना)पु० अपने देश से निकालना।

सं०देशभाषा(देश+भाषा)स्त्री० देशीभाषा, देश की बोली।

सं० देशस्थ--(देश+स्थ)क० पु० देशमें टिका, मुल्कमें ठहराहुआ।

सं० देशाचार--(देश+आचार)पु० देशका व्यवहार,देशकी रीतिभांति।

सं०देशाटन-(देश=मुल्क,अटन=फिरना) पु०देशमेंफिरना,सफ़रकरना।

सं० देशाधिपति-(देश+अधिपति) पु० देशका राजा, देशका स्वामी।

सं० देशाधीश--(देश+अधीश)पु० देश का राजा, देश का स्वामी।

सं०देशान्तर--(देश=मुल्क,अन्तर= दूसरा, वा दूरी) पु० दूसरा देश, विदेश, २ मध्याह्नरेखासे पूर्व अथवा पश्चिम को किसी जगह की दूरी,- इंगलैंडके भूगोलजाननेवाले ग्रीनच शहरसे और हिंदुस्तानके ज्योतिषी लंकासे देशान्तरका हिसाब करते हैं।

सं० देशहितैषी--क० पु० देशकी भलाई की इच्छा करनेवाला, ख़ैरख़्वाह मुल्क।

प्रा० देशी--(सं०देशीय)पु० देशका।

सं०देशोन्नति--(देश+उन्नति)स्त्री० देश की बढ़ती, देशकी वृद्धि, मुल्क की तरक्की।

सं० देह--(दिह्=बढ़ना)स्त्री० शरीर, तन।

प्रा० देहढुराना-- बोल० गुप्त अंगों को ढकना।

प्रा० देहसंभालना--बोल० सचेत होना, चैतन्य होना, ढारस रखना, आप में आना।

सं० दोग्धा-(दुह+तृ, दुह=दुहना) क० पु० वत्स, बछड़ा, २ अहीर।

सं० दोग्धी--(दुह+तृ+ई)स्त्री० धेनु, गौ, गाय।

सं० देहत्याग--(देह+त्याग)पु० मरण, मौत, मीच, प्राणत्याग।

प्रा० देहरा--(सं०देव=गृह) पु० देवता का मन्दिर, देवल, ठाकुरद्वारा, देवालय।

सं० देहली--(देह=लेपन,(लिह=लेपना)और, ला=लेना) स्त्री० दोनों किवाड़ों के बीच का काठ, दिहली, दहलीज, २ फाटक, द्वार, डेवढ़ी।

सं० देही--(देह) क०पु० प्राणी, जीवधारी।

प्रा०देही--(सं० देह) स्त्री० देह, शरीर, तन।

सं० दैत्य (दिति) पु० दितिकेबेटे, राक्षस, असुर ।

सं० दैत्यगुरु—(दैत्य + गुरु) पु० राक्षसों का गुरु, शुक्राचार्य ।

सं० दैत्यारि-(दैत्य+अरि)पु०विष्णु।

सं० दैवज्ञ—(दैव + ज्ञ=जानना)कृ० पु० ज्योतिषी, नजूमी ।

सं० दैन्य—भा० पु० दीनता, दुःखीपन,गरीबी,लाचारी, बेबसी ।

सं०दैनिक–भा० पु० दिनका, रोजाना, रोज रोज ।

सं०दैनिकवेतन-पु०रोजकीमजदूरी।

सं० दैव—(देव ईश्वर, अर्थात् ईश्वर से आयाहुआ, वा ईश्वर का) पु० भाग, प्रारब्ध, कर्म का फल,२ संयोग,ईश्वर,विधाता,गु०ईश्वरका।

सं० दैवात् } (दैव) क्रि० वि०
दैवी } संयोग से, अचानक,

प्रा०दोजीवा—(सं० द्वि जीवाः द्वि=दो, जीव=प्राणी) स्त्री० गर्भिणी, गर्भवती, पेट से ।

प्रा० दोजीसेहोना—बोल० पेट से होना, गर्भिणी होना ।

प्रा० दोना } पु० पत्तों का बना
दौना } हुआ बरतन जिसमें तरकारीमिठाईआदिलेकरखाते हैं ।

प्रा०दोनाली—(सं० द्विनाल)स्त्री० दो नल की बन्दूक । [उभय ।

प्रा० दोनों—(सं० द्वौ) गु० दोऊ,

प्रा० दोवे—(सं० द्विवेदी, दो वेद जानने वाला) पु० ब्राह्मणों की एक पदवी अथवा जाति ।

सं० दोला—(दुल=झूलना) पु० हिंडोला, झूलना ।

सं० दोलन—(दुल+अन) भा० पु० झूलना, पेंगना ।

गाना, ऐबलगाना। [अपराधी।
सं० दोषी--(दोष) गु० पापी,
प्रा० दोसाद--पु० नीच जाति जिस का धंधा सुअर पालने का है।
सं० दोहता--(सं० दौहित्र, दुहित्=बेटी) पु० बेटी का बेटा, नाती, दोहती=बेटी की बेटी, नतिनी।
प्रा० दोहना--(सं० दोहन, दुह्=दुहना) क्रि० स० दुहना, दूध खींचना।
सं० दोहनी--(दुह्=दुहना जिसमें) स्त्री० दूध दुहने का बरतन।
प्रा० दोहर--(दो) स्त्री० दोहरा कपड़ा, २ थियान। [दोहा।
प्रा० दोहरा--(दो) गु० दूना, पु०
प्रा० दोहा--(सं० द्विपदा) पु० दोपद का छंद ४८ मात्रा का छंद प्रथम तृतीय चरण में तेरह २ और द्वितिय चतुर्थ चरण में ग्यारह २ मात्रा होती हैं।
प्रा० दौंगड़ा--पु० भारी वर्षा।
प्रा० दौड़धूप--भा० स्त्री० परिश्रम, मिहनत।
प्रा० दौड़धूपकरना--बोल० बहुत मिहनत करना, परिश्रम करना।
प्रा० दौड़ना--(सं० धोर=ज़ोर से चलना) क्रि० अ० भागना, जल्दी से चलना, डपटना, चढ़ना।
प्रा० दौड़ादौड़ी--बोल० धावाधावी। हड़बड़ी, उतावली।
प्रा० दौड़ाहा--(दौड़ना) गु० दौड़ने वाला, हलकारा, अगुवा, दूत।
प्रा० दौरी--स्त्री० टोकरी, चंगेरी।
सं० द्युति--(द्युत्=चमकना) स्त्री० चमक, प्रकाश, सुन्दरता, दीप्ति।
सं० द्युतित--(द्युत्+इत) क० पु० प्रकाशयुक्त, प्रकाशवान्।
सं० द्युसत- (दिव+सद्, दिव=स्वर्ग, सद्=रहना) क० पु० स्वर्गस्थ, स्वर्ग निवासी, बिहिश्त का रहनेवाला।
सं० द्यूत--(दिव्=खेलना) पु० पाशा खेलना, जुआ।
सं० द्यूतकार--(द्यूत=जूआ, कार=करनेवाला, कृ=करना) पु० जुआरी, जूआ खेलनेवाला। [देवलोक।
सं० द्यो--(दिव+त) क० पु० स्वर्ग,
सं० द्योत-(द्युत्+अ) पु० प्रकाश, दीप्ति
सं० द्योतक(द्युत्=चमकना) क० पु० चमकनेवाला, प्रकाश करनेवाला।
सं० द्योतन-(द्युत्+अन) भा० पु० प्रकाशकरना, जाहिरकरना, प्रकटकरना।
प्रा० द्यौरानी--(सं० देवर) स्त्री० देवर की स्त्री।
सं० द्रव--(द्रु=जाना) पु० रस, अर्क, २ वेग, गु० पिघलाहुआ, बहताहुआ।
प्रा० द्रवना--(सं० द्रव) क्रि० अ० पिघलना, २ कृपालु होना, कोमल चित्त होना।
सं० द्रविण--पु० धन, रुपिया पैसा।

सं० द्रव्य—(द्रु=जाना) पु० धन, दौलत, २ सामग्री, पदार्थ. ३ न्याय में नौप्रकार के द्रव्य हैं (१ धरती, २ पानी. ३ आग, ४ हवा, ५ आकाश, ६ समय, ७ दिशा, ८ आत्मा. ९ मन) ४ औषध, दवाई।

सं० द्रष्टव्य—(दृश+तव्य, दृश=देखना) वि० पु० देखनेयोग्य, दर्शनीय, काबिलदीद।

सं० द्रष्टा—(दृश+तृ) क० पु० दर्शक, देखनेवाला, नाज़िर।

सं० द्राक्षा—(द्राक्ष=चाहना) स्त्री० दाख, अंगूर।

सं० द्रावण—(द्राव+अन, द्राव=भा-
गना वा भग) [illegible]

गज, हस्ती, कुठार, कुल्हाड़ा, प्रचण्ड-वायु, तेजहवा।

सं० द्रुमेश्वर—(द्रुम+ईश्वर) पु० चन्द्रमा, ताल वृक्ष, अश्वत्थवृक्ष, पीपर।

सं० द्रोण—(द्रुण=टेढ़ा करना, वा द्रु=जाना) पु० द्रोणाचार्य जिसने पाण्डवों और कौरवों को धनुर्विद्या सिखलाई थी, २ चार आढक का परिमाण अथवा आठ सेर, ३ काला कौआ।

सं० द्रोह—(द्रुह=बुरा चीतना) पु० वैर, लाग, द्वेष, डाह, ईर्षा, विरोध।

प्रा० द्रोहिया—(सं० द्रोही) पु० द्रोही, द्वेषी, वैरी।

र्थात् दो के पीछे) पु० तीसरा युग जो ८६४००० बरस का था।

सं० द्वार—(द्वृ=ढकना)पु० दरवाज़ा, किंवाड़, २ राह, मार्ग, उपाय, कारण।

सं० द्वारका—(द्वार=उपाय, अर्थात् मोक्ष का उपाय जहां हो) स्त्री० एक पुरी का नाम जिसको श्री कृष्ण ने समंदर के तीर पर बसाई।

सं० द्वारपाल—(द्वार=दरवाज़ा, पाल =खबर रखने वाला) पु० डेवढ़ीवान्, पौरिया।

सं० द्वारा—(द्वृ=ढकना) क्रि० वि० कारण से, हेतु से, सहायता से, मदद से।

सं० द्वारावती } (द्वार=मोक्ष का
द्वारका } उपाय जहां हो) स्त्री० द्वारका, श्री कृष्ण की पुरी।

सं० द्विगुण—(द्वि=दो, गुण=गुना हुआ) गु० दूना, दुगुना, दोहरा।

सं० द्विज— द्वि=दोबार, जन्=पैदा होना) गु० दोबार जन्मा हुआ, पु० ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य इन तीन वर्णों के मनुष्यों को द्विज कहते हैं क्योंकि ये एक वार तो अपनी मा के गर्भ से पैदा होते हैं और दूसरी बार यज्ञोपवीतादि संस्कार से, जैसे स्मृति में लिखा है कि " जन्मनाजायते शूद्रः संस्कारैर्द्विजउच्यते " अर्थ— जन्म से शूद्र पैदा होता है औरसंस्कार से द्विज कहलाता है, और भी " मातुरग्रेऽधिजननं द्वितीयंमौञ्जिबन्धने " अर्थ एकबार मा के गर्भ से पैदा होना और दूसरीबार मौञ्जीबन्धन संस्कार से, २ दांत, ३ पक्षी आदि अण्डे से पैदा होने वाले जीव।

सं० द्विजराज—(द्विज=ब्राह्मण, राजन्=राजा) पु० चन्द्रमा, चांद, गरुड़, विप्र, शिव।

सं० द्विजाति-पु० द्विजशब्दकोदेखो।

सं० द्वितीय-(द्वि=दो)गु० दूसरा, दूजा।

सं० द्विधा—(द्वि=दो, धा=प्रकार) क्रि० वि० दोप्रकारसे, दो तरहसे।

सं० द्विप-(द्वि=दो से, पा=पीना, हाथी पहले अपनी शुंड में पानी भर कर फिर अपने मुंह में उतारता है) पु० हाथी, गज, वृक्ष, नागकेशर।

सं० द्विपद—(द्वि=दो पद=चलना) पु० मनुष्य, राक्षस, देवता, दोनों से चलने वाले।

सं० द्विपायिन्-(द्वि=दो, पा=पीना) पु० हस्ती, गज।

सं० द्विविद-(द्वि=दो, विद्=जानना) पु० एक वानर का नाम।

सं० द्वीप—(द्वि=दोनों ओर, आप =पानी, अर्थात् जिसके सब ओर

पानी हो) पु० धरती का वह बड़ा टुकड़ा जिसके चारों ओर पानी हो. हिन्दुओं के शास्त्र में सात द्वीप लिखे हैं और हर एक द्वीप एक एक समुद्र से घिरा है; सातों द्वीपों के नाम, १ जम्बूद्वीप, २ कुश, ३ प्लक्ष, ४ शाल्मली, ५ क्रौंच, ६ शाक, ७ पुष्कर । [गुलवगा ।

सं० द्वीपिन्—पु० व्याघ्रभेद, चीता,

सं० द्विरेफ—पु० भ्रमर, मधुप, भौंरा ।

सं० द्वेष—(द्विष=वैर करना) पु० द्रोह, वैर, ईर्षा, शत्रुता, अदावत, दुश्मनी ।

सं० द्वेषक—(द्विष+अक) क० पु० वैरी, द्रोही, शत्रु, दुश्मन ।

सं० द्वेषी—(द्वेष) क० पु० वैरी, विरोधी, शत्रु, द्रोही ।

सं० द्वेष्टा—क० पु० वैरी, शत्रु, दुश्मन ।

प्रा० द्वै—(सं० द्वौ) गु० दो ।

सं० द्वैधीभाव—भा० पु० दो तरफा, लड़ाई, झगड़ा, आपस की ना इत्तिफाकी ।

सं० द्वैपायन—पु० व्यासजी ।

सं० द्वैमातुर—पु० गणेश, जरासन्ध, जो दो माताओं से उत्पन्न हो ।

———

प्रा० धन्धा—पु० काम काज, पेशा, उद्यम, कार्य, व्यवहार ।

प्रा० धंधारी—(धंधा+अरी=शत्रु) शिथिल, उदासी, ढीला, पेशा न करने वाला ।

प्रा० धँसना—क्रि० अ० पैठजाना, गड़जाना, घुसजाना ।

प्रा० धकधकी—स्त्री० कँपकँपी, धड़क, थरथरी, धड़धड़ाहट, घबराहट, हड़बड़ी ।

प्रा० धकधकाना—क्रि० अ० कांपना, धड़कना, थरथराना, धड़धड़ाना, फड़कना ।

प्रा० धकेलना—क्रि० स० ढकेलना, रेलना, धकादेना, ठेलना, हूलना, पेलना ।

प्रा० धकेलदेना—बोल० ढकेलना, धक्का देना, झोंकदेना ।

प्रा० धक्का—पु० ढकेल, ठेल, झोंक रेला, रेल, टक्कर, हूल ।

प्रा० धक्कादेना—बोल० ढकेलना, ठेलना, रेलना, पेलना, झोंकना, [illegible] ।

र्थात् दोके पीछे) पु० तीसरा युग जो ८६४००० बरस का था।

सं० द्वार—(द्वृ=ढकना)पु० दरवाज़ा, किंवाड, २ राह, मार्ग, उपाय, कारण।

सं० द्वारका—(द्वार=उपाय, अर्थात् मोक्ष का उपाय जहां हो) स्त्री० एक पुरी का नाम जिसको श्री कृष्ण ने समंदर के तीर पर बसाई।

सं०द्वारपाल—(द्वार=दरवाज़ा, पाल =खबर रखने वाला) पु० डेवढ़ीवान, पौरिया।

सं० द्वारा—(द्वृ=ढकना) क्रि० वि० कारण से, हेतु से, सहायता से, मदद से।

सं०द्वारावती } द्वारका } (द्वार=मोक्ष का उपाय जहां हो) स्त्री० द्वारका, श्री कृष्ण की पुरी।

सं० द्विगुण—(द्वि=दो, गुण=गुना हुआ) गु० दूना, दुगुना, दोहरा।

सं० द्विज— द्वि=दोवार, जन्=पैदा होना) गु० दोवार जन्मा हुआ, पु० ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य इन तीन वर्णों के मनुष्यों को द्विज कहते हैं क्योंकि ये एक बार तो अपनी मा के गर्भ से पैदा होते हैं और दूसरी बार यज्ञोपवीतादि संस्कार से, जैसे स्मृति में लिखा है कि " जन्मनाजायते शूद्रः संस्कारैर्द्विजउच्यते " अर्थ—जन्म से शूद्र पैदा होता है औरसंस्कार से द्विज कहलाता है, और भी " मातुरग्रेऽधिजननं द्वितीयंमौञ्जिबन्धने " अर्थ एकबार माके गर्भ से पैदा होना और दूसरीवार मौञ्जीबन्धन संस्कार से, २ दांत, ३ पक्षी आदि अण्डे से पैदा होते वाले जीव।

सं० द्विजराज—(द्विज=ब्राह्मण, राजन्=राजा) पु० चन्द्रमा, चांद, गरुड़, विप्र, शिव।

सं०द्विजाति-पु० द्विजशब्दकोदेखो।

सं०द्वितीय-(द्वि=दो) गु० दूसरा, दूजा।

सं० द्विधा—(द्वि=दो, धा=प्रकार) क्रि० वि० दोप्रकारसे, दो तरहसे।

सं० द्विप-(द्वि=दो से, पा=पीना, हाथी पहले अपनी शुंड में पानी भर कर फिर अपने मुंह में उतारता है) पु० हाथी, गज, वृक्ष, नागकेशर।

सं० द्विपद—(द्वि=दो पद=चलना) पु० मनुष्य, राक्षस, देवता, दोपैर से चलने वाले।

सं० द्विपायिन्-(द्वि=दो, पा=पीना) पु० हस्ती, गज।

सं० द्विविद-(द्वि=दो, विद्=जानना) पु० एक वानर का नाम।

सं० द्वीप—(द्वि=दोनों ओर, आप=पानी, अर्थात् जिसके सब ओर

पानी हो) पु० धरती का वह बड़ा टुकड़ा जिसके चारों ओर पानीहो, हिन्दुओं के शास्त्र में सातद्वीप लिखे हैं और हर एक द्वीप एक एक समुद्र से घिरा है, सातों द्वीपों के नाम, १ जम्बूद्वीप, २ कुश, ३ प्लक्ष, ४ शाल्मली, ५ क्रौंच, ६ शाक, ७ पुष्कर । [गुलबघा ।

सं० द्वीपिन्—पु० व्याघ्रभेद, चीता,

सं० द्विरेफ—पु० भ्रमर, मधुप, भौंरा।

सं० द्वेष—(द्विष्=बैरकरना) पु०द्रोह, बैर, ईर्षा, शत्रुता, अदावत, दुश्मनी।

सं० द्वेषक—(द्विष्+अक) क० पु० बैरी, द्रोही, शत्रु, दुश्मन ।

सं० द्वेषी—(द्वेष) क० पु० बैरी, विरोधी, शत्रु, द्रोही ।

सं० द्वेष्टा—क०पु०बैरी, शत्रु, दुश्मन।

प्रा० द्वै—(सं० द्वौ) गु० दो ।

सं० द्वैधीभाव—भा०पु० तोड़फोड़, लड़ाई, झगड़ा, आपस की नाइत्तिफ़ाकी ।

सं० द्वैपायिन—पु० व्यासजी ।

सं० द्वैमातुर—पु०गणेश, जरासन्ध, जो दो माताओं से उत्पन्न हो ।

—०—

ध

सं० ध—(धा=रखना, वा धे=पीना)पु० धर्म, २ कुबेर, ३ ब्रह्मा, ४धन ।

प्रा० धन्धक—पु०काम करनेवाला, उद्यमी ।

प्रा० धन्धा—पु० काम काज, पेशा, उद्यम, कार्य, व्यवहार ।

प्रा० धंधारी-(धंधा+अरी=शत्रु) शिथिल, उदासी, ढीला, पेशा न करने वाला ।

प्रा० धँसना—क्रि० अ० पैठजाना, गड़जाना, घुसजाना ।

प्रा० धकधकी—स्त्री० कँपकँपी, धड़क, थरथरी, धड़धड़ाहट, घबराहट, हड़बड़ी ।

प्रा० धकधकाना-क्रि० अ०कांपना, धड़कना, थरथराना, धड़धड़ाना, फड़कना ।

प्रा० धकेलना—क्रि० स०ढकेलना, रेलना, धक्कादेना, ठेलना, हूलना, पेलना ।

प्रा० धकेलदेना—बोल० ढकेलना, धक्का देना, झोंकदेना ।

प्रा० धक्का—पु० ढकेल, ठेल, झोंक रोला, रेल, टक्कर, हूल ।

प्रा० धक्कादेना—बोल० ढकेलना, ठेलना, रेलना, पेलना, झोकना, हूलना ।

प्रा० धक्कमधक्का—बोल० ठेलाठेली, रेलपेल, ठेलमठेल, कशमकश ।

प्रा० धज—(सं०ध्वज, ध्वज्=जाना) स्त्री०रूप, डौल, आकार, चालढाल, रविश, आन, दशा, अवस्था,

सजधज, वजअ। [झंडा।

प्रा० धजा—(सं०ध्वजा)स्त्री०पताका,

प्रा० धजीला—गु०सुडौल,सजीला, स्वरूपवान्, सुन्दर।

प्रा० धज्जी—(सं ध्वज)स्त्री०कपड़े का अथवा कागज़ का टुकड़ा,लीर, कतरन, काटन, टुकड़ा।

प्रा०धज्जियांउड़ाना—बोल०बद-नाम करना, बातों से हराना।

प्रा० धज्जियांकरना—बोल०टुकड़े २ करना।

प्रा० धड़ } (सं० धृ=रखना)स्त्री० धर } बिनशिर की देह, रुण्ड, शरीर, काया।

प्रा० धड़क—(धड़कना) स्त्री० धड़ धड़ाहट,धुकधुकी,फड़क,थरथराहट, २ डर, भय।

प्रा० धड़कना—क्रि० अ० कांपना, धुकधुकाना,धकधकाना, थरथराना, धड़धड़ाना, फड़कना, मारना।

प्रा० धड़का—पु० डर, संदेह,दुविधा, २ कपकपी, धड़क, धड़धड़ाहट, ३ कड़क, गर्ज।

प्रा० धड़काना—क्रि० स० डराना, भयदिखाना) कँपाना, दहलाना।

प्रा० धड़धड़ाना—क्रि०अ०धड़कना, कांपना।

प्रा० धड़क्का- पु० ठनक, टोकनेकी आवाज़, २ डर, दहलना, ३ भीड़।

प्रा० धड़ा-पु० जत्या, समूह, तरफ़, ओर, पक्ष, २ तौल, जोख।

प्रा० धड़ाका-पु० कड़क, धमक, शब्द, आवाज़।

प्रा० धड़ी--स्त्री० पांच सेरकी तौल।

प्रा० धत- स्त्री० हाथी चलाने का शब्द, दुदकारना, हिक्कारतकरना।

प्रा० धतूरा--(सं० धत्तूर,ध=रखना धातुओं को) पु० एक प्रकार का पौधा, कनक।

प्रा० धतूरिया--(धतूरा)गु०छली, बहुरूपिया।

प्रा० धधकना-(सं०दहन)क्रि०अ० भभकना, बरना।

प्रा०धधच्छर } (सं० दग्धाक्षर दधच्छर } जलाने वाले अ क्षर) पु० कविता में वे अक्षर जि न को कवि अशुभ गिनते हैं (जैसे ह ग न कविता के शुरूअ में र ज स बीचमें, और क ट ब अक्षर क वित्तके अन्तमें अशुभ गिने जाते हैं)।

सं० धन—(धन्=पैदाहोना)पु० दौ लत, द्रव्य, लक्ष्मी, सम्पत्ति, संप दा, २ गणित में जोड़का चिह्न+

प्रा० धनक--पु०जड़ाव,कारचोबी।

सं० धनञ्जय--(धनम्=दौलत को जि=जीतना) पु० अर्जुन का नाम, २ आग, ३ एक वृक्ष का नाम।

सं० धनतृष्णा–(धन+तृष्णा)स्त्री० धन का लालच, धनकीलालसा, लोभ।

प्रा० धनत्तर–गु० धनी, धनवान्, अड़ियल, सेठ, कोठीवाल।

सं० धनद–(धन=दौलत, दे=पालना, वा=देना) पु० कुबेर, धनपति, गु० दातार, उदार, धन देनेवाला।

सं० धनपति–(धन+पति)पु० कुबेर, धन का देवता।

सं० धनवन्त, धनवान्–(धन=दौलत, वत् वाला) गु० धनी, दौलतमंद, मालदार, धनिक, लक्ष्मीवान्, धनाढ्य।

सं० धनहीन–(धन+हीन)गु० मुफलिस, निर्धन, दरिद्र, कंगाल, गरीब।

सं० धनाढ्य–(धन=द्रव्य,आढ्य=युक्त) गु० धनवान्, धनी,मालदार।

सं० धनाधार–धि० पु० धनागार, भण्डार, खज़ाना रखनेका मकान।

सं० धनाधिप–(धन+अधिप)पु० कुबेर।

सं० धनाध्यक्ष–(धन+अध्यक्ष)पु० कुबेर, २ खजानची, भंडारी।

सं० धनान्ध–(धन+अन्ध) गु० धन से अंधा, धन के मद से घमंडी, धनगर्वित।

सं० धनार्थी–(धन+अर्थी) गु० लोभी, लालची, कृपण।

सं० धनाशा–(धन+आशा)स्त्री० धनेच्छा, धनकीचाह।

प्रा० धनासरी–(सं० धनेश्वरी)स्त्री० एक रागिणी का नाम, एक छन्द का नाम।

सं० धनिक–(धन) गु० धनवान्, धनी, पु० महाजन,उधार देनेवाला।

प्रा० धनियां-पु० एक मसाला।

सं० धनिष्ठा- (धन्=पैदाहोना)स्त्री० चौबीसवें नक्षत्र का नाम।

सं० धनी--(धन)गु० धनवान्, दौलतमंद, मालदार, लक्ष्मीवान्, पु० मालिक, स्वामी, अधिकारी, पति।

प्रा० धनु, धनुक–(सं० धनुष्)पु०कमान, चाप।

प्रा० धनुकधारी--(सं० धनुर्धारी) पु० तीरन्दाज़, कमनैत।

सं० धनुस्, धनुष्–(धन्=शब्द करना) पु० धनुक, कमान, चाप, २ ज्योतिष में नवीं राशि।

सं० धनुर्धर-(धनुष्=कमान,धृ=रखना) क० पु० कमान चढ़ानेवाला, धनुर्धारी, तीरन्दाज, कमनैत।

प्रा० धनुटंकार--(सं०धनुष्टङ्कार)पु० कमान के चिल्ले का शब्द, रोदा की आवाज़।

सं० धनुर्विद्या–(धनुष+विद्या) स्त्री० तीर चलाने की विद्या,

तीरंदाज़ी, बाण चलाना।

सं० धनेश
धनेश्वर } (सं० धन+ईश वा ईश्वर) पु० कुबेर, धनाधिप।

प्रा० धनेसर--(सं० धनेश)पु० कुबेर।

प्रा० धन्नासेठ
धनासेठ } (सं० धन श्रेष्ठ) गु० बहुत धनवान्, कृतार्थ,धनका घमंड।

सं० धन्य--(धन) गु० सराहने योग्य, भाग्यवान्, श्रीमान्, वि० बो० शाबाश, वाहवाह, धन, प्रशंसा को जतलाने वाला शब्द।

प्रा०धन्यमानना
धनमानना } बोल० धन्यवाद करना, उपकार मानना।

सं० धन्यवाद--(धन्य,वद्=कहना) पु० सराह, स्तुति, आशिष्, शुकर गुज़ारी, अहसानमंदी।

सं० धन्वन्तरि--(धन्वन्=वैद्यकशास्त्र वा शिल्पशास्त्र,री=जाना अर्थात् वैद्यक शास्त्र के पार जानेवाला) पु० समुद्र मथने के समय उसमे से प्रकट देवताओंका वैद्य जो हुआ, २ एक पंडित का नाम जो विक्रमादित्य की सभा में था।

सं० धन्वी--(धन्व=धनुष,धन्व्=दौड़ना) धनुर्धर, तीरंदाज़, कमनैत, धनुर्धारी।

प्रा० धब्बा--पु० कपड़े पर दाग।

प्रा० धमक-स्त्री० पांव का आहट, २ ताड़न।

प्रा० धमका--पु० भारी चीजके गिरने का शब्द, २ झिड़की, ३ बड़ी धूप वा गरमी।

प्रा० धमकाना-क्रि०स०झिड़कना, डांटना, डराना, घुड़कना।

प्रा०धमकाहट
धमकी } स्त्री० झिड़की, घुरकी, डाट, भवकी।

सं० धमनी--(धम्×अन्+ई,धम=चलना वा शब्द करना) स्त्री० नाड़ी, नाटिका, नब्ज़ रग।

प्रा० धमाका--पु० एकतरहकी तोप जो हाथी पर लेजाई जाती है।

प्रा० धमाल-- स्त्री० ताल, २ एक तरह का गीत जो होली में गाया जाताहै।

सं० धरण--(धृ=रखना)स्त्री०कड़ी, वरँगा,२ नाभी, अथवा नाभी में की नस।

सं० धरणा--स्त्री० पृथिवी, धरती।

प्रा०धरणडिगना
धारणउखड़ना } बोल० नाभ टलना, पेट की रग बिगड़ना।

सं० धरणि
धरणी } (धृ=रखना,वा पकड़ना) स्त्री० धरती, पृथ्वी, जमीन।

सं० धरणिधर } (धरणि, वा धर-
धरणीधर } णी=धरती, धर=
रखने वाला, धृ=रखना) पु० शे, षजी, अनन्त, २ विष्णु का नाम, ३ पहाड़, ४ कछुवा।

सं० धरणीसुता-(धरणी=धरती, सुता=बेटी) स्त्री० सीता, जानकी।

प्रा० धरती-(सं० धरित्री) स्त्री० पृथ्वी, धरणी, भूमि।

प्रा० धरना-(सं० धरण, धृ=रखना, पकड़ना) क्रि० स० रखना, रख-देना, २ सौंपना, ३ पकड़ना, प-कड़ लेना, गहना।

प्रा० धरनादेना } जब कोई मनुष्य
धरनाबैठना } किसी से रुपये
मांगता हो और वह नहीं दे तब रुपये मांगने वाला उसके दरवाजे पर आ बैठता है और जबतक उसके रुपये का कुछ निबेड़ा नहीं होता तब तक न आप कुछ खाता है और न उसको खाने देता है उ-सको धरना देना वा धरना बैठना कहते हैं।

प्रा० धरषना-(सं० धर्षण, धृष्=क्रो-ध करना वा अनादर करना) क्रि० स० दबाना, क्रोध करना।

सं० धरा-(धृ=रखना) स्त्री० धरती, पृथ्वी, धरणी, जमीन।

सं० धरातल-(धरा+तल) स्त्री० पृथ्वी का तल, भूतल, तहजमीन।

सं० धराधर—(धरा=धरती, धर=धा-रण करनेवाला, धृ=रखना) पु० वराह रूप विष्णु, २ पहाड़, शेषनाग।

सं० धरित्री—(धृ=रखना) स्त्री० धरती, पृथ्वी, जमीन।

प्रा० धरोहर—(धरना) स्त्री० गिरो, थाती, अमानत, बन्धक।

सं० धर्ता-पु० ऋणी, धारणिक, कर्जदार।

सं० धर्म्म-(धृ=रखना) पु० पुण्य, पवित्र काम, न्याय, नेकी, २ पन्थ, मत, मजहब, जाति व्यवहार, ३ क़ानून, व्यवस्था, ४ कर्तव्य कर्म, करने योग्य काम, ५ यमराज।

सं० धर्म्मक्षेत्र-(धर्म्म+क्षेत्र) पु० पवित्र जगह, कुरुक्षेत्र।

सं० धर्मज्ञ-(धर्म+ज्ञ=जाननेवाला ज्ञा=जानना) क० धर्म्मात्मा, धर्म्म ज्ञानी।

सं० धर्म्मधुरन्धर-(धर्म्म=पुण्य, धुर-न्धर=बोझा उठाने वाला) गु० धर्म के काम में प्रधान, धर्मात्मा।

सं० धर्म्मध्वजी—(धर्म्म=पुण्य, ध्वजी =ध्वजा वाला) गु० पाखंडी, क-पटरूप जो जीविका के लिये जटा आदि बढ़ा लेता है।

सं० धर्म्मपत्नी-(धर्म्म+पत्नी) स्त्री० पहली स्त्री जो एकही जाति

की हो और धर्म्म की रीति से ब्याही जाय।

सं० धर्म्मपुत्र-(धर्म्म=धर्म्मराज,पुत्र =बेटा)पु० युधिष्ठिर।

सं०धर्म्ममूर्त्ति-(धर्म्म+मूर्ति)पु०धर्म्म का स्वरूप, धर्मात्मा, धर्मावतार।

सं०धर्म्मराज-(धर्म्म=न्याय,राज=राजा,राज़=शोभना, अर्थात् जो धर्म से शोभता है अथवा धर्म का राजा) पु० यमराज, २ युधिष्ठिर का नाम, ३ न्यायी राजा।

सं० धर्मशाला-(धर्म+शाला) धि० स्त्री० वह मकान जहां ग़रीबों को खैरात बांटी जाती है, २ विचारस्थान, न्याय करने की जगह, कचहरी।

सं० धर्म्मशास्त्र-(धर्म्म+शास्त्र) पु० व्यवस्था शास्त्र, कानून की किताब जैसे मनुस्मृति, याज्ञवल्क्य, अत्रि, विस्नु, हारीत, उष्णा, अङ्गिरा, यम, आपस्तम्ब, संवर्त, कात्यायन, वृहस्पति, पराशर, व्यास, शंख, लिखित, दक्ष, गातम, शातातप, वशिष्ठ, ये धर्म्मशास्त्र प्रवर्तक हैं।

सं० धर्म्मशील-(धर्मशीलस्वभाव) गु०साधु,पुण्यवान्, धर्म्मात्मा,नेक।

सं० धर्म्मशीलता-भा० पु०साधुत्व. नेकी, धर्म्मकी मर्यादा।

सं० धर्म्मात्मा-(धर्म्म+आत्मा) गु० पवित्र मनुष्य, साधु, नेक, पुण्यात्मा।

सं०धर्माधिकरण-पु० जज्ज।

सं० धर्माध्यक्ष-(धर्म=न्याय,अध्यक्ष =स्वामी) पु० न्यायी, न्यायकर्ते वाला, मजिस्ट्रेट, जज।

सं०धर्मनिष्ठ } धर्म्मरत } स्पं० पु० धर्म में ठहरा हुआ, धर्म में तत्पर, धर्म पर आरूढ़।

सं० धर्म्मावतार-(धर्म+अवतार) पु० धर्म का अवतार, धर्म स्वरूप, धर्म मूरत।

सं० धर्म्मिष्ठ } धर्म्मी } (धर्म)गु० पुण्यवान्, न्यायी, साधु, धर्मात्मा, नेक।

सं० धव-(धु वा धू=कंपाना) पु० पति, स्वामी, भर्ता, २ एक वृक्ष का नाम।

सं० धर्ष-(धृष्=क्रोध करना) पु० प्रागल्भ, धृष्ट।

सं०धर्षक-(धृष्+अक) क० पु० साहसी, दिलेर, धैर्यवान्।

सं० धर्षण-भा० पु० दिलेरी करना, साहस करना।

सं० धवल-(धाव=शुद्ध करना, वा धव=कंपाना और ला=लेना) गु० धौला, स्वेत, सफेद, २ सुन्दर, पु० शुक्लवर्ण, धौलारंग, ३ एक वृक्ष

का नाम ।

प्रा० धसकना—क्रि० अ० गड़ना, धस जाना, गिरना, पड़ना, बैठ जाना ।

प्रा० धसना—क्रि० अ० खुबना, चुभना, छिदना, २ गड़ना, कीचड़ में पांव डूब जाना, धस जाना ।

प्रा० धसान, धसाव—(धसा) पु० दलदल, पांका ।

प्रा० धांगर—पु० किसान, कुनी ।

प्रा० धांचना—क्रि० स० भखना, भकोसना, अफरना ।

प्रा० धांधल—स्त्री० नटखटी, झगड़ा, बेईमानी, लुट्टस, लूट ।

प्रा० धांसना—क्रि० अ० खांसना, खोखना ।

प्रा० धांसी—स्त्री० खांसी, खोखी ।

प्रा० धाई, धाय—(सं० धात्री) स्त्री० लड़के को दूध पिलाने वाली, दाई ।

प्रा० धाक—स्त्री० डर, भय, धमकी, आतंक २ ठाठ, धूमधाम, ३ नाम, यश, कीर्त्ति ।

प्रा० धागा—पु० डोरा, तागा, सूत ।

प्रा० धात—(सं० धातु) स्त्री० धातु शब्द को देखो ।

सं० धाता—(धा=रखना, पालना) पु० ब्रह्मा, विष्णु, क० पालनेवाला ।

सं० धातु—(धा=रखना) स्त्री० मनुष्य के शरीर का सार अंश, जैसे (वात पित्त कफ) २ बीज, वीर्य, ३ सोना, रूपा, तांबा आदि खानि से निकली हुई चीज, ४ व्याकरण में शब्दों का मूल अर्थात् ऐसा शब्द जिससे क्रिया आदि शब्द बने ।

सं० धातुविलेपक—(धातु=रांगा, पारा, विलेपक=लेप करने वाला) क० पु० कलई साज, कलई गर ।

सं० धात्री—(धा=पालना) स्त्री० धाय, धाई, २ मा, माता, ३ आंवला ।

प्रा० धान—(सं० धान्य) पु० बिन कूटा चांवल ।

प्रा० धाना, धावना—(सं० धावन, धाव्=जाना) क्रि० अ० दौड़ना, जल्दी से चलना, २ परिश्रम करना, ३ (सं० ध्यान) पूजना, अर्चना, आराधना करना ।

प्रा० धानी—(धान) स्त्री० एकप्रकार का बिन कूटा चांवल, २ हलका हरा रंग ।

सं० धान्य—(धा=पोषना, पालना, जिससे शरीर का पोषण होता है) पु० सब प्रकार का अनाज, पर विशेष करके बिनकूटा चांवल, धान ।

प्रा० धाभाई—(सं० धात्रीभ्राता) पु० दूधभाई, कोका ।

सं० धाम—(धा=धारण करना, र-ना) पु० घर, स्थान, गेह, प

मसकन, जगह ।

प्रा० धायमारना ⎫ बोल०पुकारके
धायमाररोना ⎭ रोना, हायमार
के रोना।

प्रा० धार--(सं० धारा, धृ=पकड़ना वा गिरना) स्त्री० लकीर, २ बहाव, सोता, प्रवाह, ३ नोक, तीखी अनी, ४ तीक्ष्णता, बाढ़, चोखाई ।

प्रा० धारमारना ⎫ बोल० तुच्छ
धारपरमारना ⎭ जानना, हर-
का जानना।

सं० धारक--(धृ=रखना) कृ० पु० ऋणी, मक़रूज़, उधरहा ।

सं० धारण--(धृ=रखना) भा०पु० पकड़ना, रखना, संभालना, सहारना ।

प्रा० धारना--(सं० धारण) क्रि० स० स्मरण, चेत,याददाश्त रखना, पकड़ना, २ पहनना ।

सं०धारा--(धृ=गिरना)स्त्री०बहाव, प्रवाह, सोता, चश्मा ।

सं०धारावाहिक--(धारा+वाहिक, वह=चलना) कृ० पु० परंपरागतिक, क़दीम राह पर चलनेवाला ।

सं० धारासार--पु० भारीवर्षा ।

प्रा० धारि--स्त्री० सेना, फ़ौज ।

प्रा० धारी--(सं०धारा)स्त्री०लकीर, रेखा, २ एक पौधे का नाम गु० २-रखनेवाला, धरनेवाला ।

सं० धार्म्मिक--(धर्म्म)गु० धर्मात्मा, धर्म्मिष्ठ, पुण्यवान्, साधु, पुण्यात्मा।

सं० धार्य्य--(धृ=धरना) कर्म०पु० धरनेयोग्य, लेनेलायक़ ।

सं० धावक--(धाव्=दौड़ना)कृ०पु० दूत,दौड़ाहा, चलनेवाला, क़ासिद।

सं० धावन--(धाव्=दौड़ना)पु० जाना, दौड़ना, गमन, २ दौड़ाहा, दूत ।

सं० धावमान--गु० दौड़ता हुआ, भागता हुआ ।

प्रा० धावा--(सं०धावन) पु० दौड़, चढ़ाई, हल्ला, हमला ।

प्रा० धावामारना--बोल० चढ़ाई करना,छापा मारना, हमलाकरना।

प्रा० धाह--स्त्री०हाय,कूक, चिघार।

सं० धिक्--त्रि० बो० फिट, छीछी, निंदा को जतलानेवाला शब्द।

सं० धिक्कार--(धिक्=छीछी, कृ=करना) पु० फिटकार, तिरस्कार, शाप, छीछी, लअनत ।

प्रा० धिकारना--(सं= धिक्कारण) क्रि०स० फिटकारना, तिरस्कार करना, लअननदेना ।

प्रा० धिया--(सं० धी) स्त्री०बेटी।

प्रा०धिरकार--(सं० धिक्कार) पु० धिक्कार, फिटकार, अपमान ।

सं० धी--(ध्यै=सोचना)स्त्री०बुद्धि मति, अक़्ल, ज्ञान, २ बेटी, पुत्री ।

सं० धीमत--गु० अक्लमन्द, बुद्धिमान्।

प्रा० धीमा, धीरा (सं० धीर) गु० ढीला, धीरा, सुस्त, आलसी, काहिल, २ कोमल, शांत, ठंढा, स्थिर, गंभीर।

प्रा० धीमेधीमे--क्रि० वि० बोल० धीरे धीरे, हौले हौले, आहिस्ता आहिस्ता।

सं० धीमान्--(धी=बुद्धि, मत्=वाला) गु० बुद्धिमान्, चतुर, निपुण, अक्लमन्द।

सं० धीर--(धी=बुद्धि, रा=लेना) गु० धीरज रखने वाला, साहसी, धीर, स्थिर, क्षमावान्, संतोषी, साबिर, गंभीर, शान्त, बुद्धिमान्, पंडित।

प्रा० धीरज--(सं० धैर्य) स्त्री० साहस, स्थिरता, सहनशीलता, बरदाश्त, सब्र, संतोष, धीरता, गंभीरता, दृढ़ता।

सं० धीवर--(धा=रखना, वा पकड़ना) पु० मछुवा, कैवर्त्त, मछली पकड़ने वालों की जाति।

प्रा० धुआं, धुवां (सं० धूम) पु० धुवां, धूम, भाफ़, २ मरण, मरना, जैसे "धुआंदेखिखरदूषण केरा" "जाइसुनखारावणभेरा"।

प्रा० धुकड़पुकड़, धुकुड़पुकुड़ स्त्री० धड़क, थरथराहट, धकधकाहट, हिलाव डुलाव।

प्रा० धुकधुकी--स्त्री० लटकन, गले में पहनने का गहना, २ घबराहट, धड़कड़ी, व्याकुलता, सोच।

सं० धुत--(धु=कँपना) क० पु० कम्पित, भीत, डराहुआ। [छल।

प्रा० धुत्ता--(सं० धूर्त्तता) पु० धोखा,

प्रा० धुत्तादेना--बोल० धोखादेना, फ़रेबकरना, छलना।

प्रा० धुन--(सं० ध्यान) स्त्री० इच्छा, चाह, लहर, तरंग, लौ, अभ्यास।

प्रा० धुन, धुनि (सं० ध्वनि) स्त्री० शब्द, आवाज़, स्वर, नाद।

प्रा० धुनिया--(धुना) पु० रुई धुनने वाला, नद्दाफ़।

प्रा० धुन्ना, धुनना (सं० धुनना, धु=कांपना) क्रि० स० धुनना, रुई को सुधारना, २ हिलाना, कंपाना, पीटना—सिरधुनना—बोल० दुखसे सिर हिलाना या पीटना।

सं० धुर्--(धृ=रखना, वा धुर्व्=मारना) पु० बोझा, भार, २ जुवा, ३ अंत, किनारा।

प्रा० धुर--पु० आरंभ, शुरूअ, २ अवधि, अन्त। [अन्ततक।

प्रा० धुरसेधुरतक--बोल० आदिसे

सं० धुरन्धर--(धुर् भार को, धृ=रखना) क० बोझ उठानेवाला, २ भारवाहक, संगोपके साथ काम पूरा करनेवाला, ३ मुखिया, प्रधान, सरदार।

प्रा० धुरपद--(सं० ध्रुवपद) पु० एक प्रकार का गीत।

सं० धुरा--(धृ=धरना) स्त्री० चिन्ता, भार, रथ की धुरी।

प्रा० धुरी--(सं० धुरा, धृ=रखना, वा धुर्व्=मारना) स्त्री० गाड़ी के पहिये का लोहे का डंडा।

सं० धुरीण--(धुर्=बोझ) क० पु० धुरन्धर, बोझउठानेवाला, २ प्रधान, मुखिया, बैल, रथ, वृषभ, लांगला, अर्थात् बैब।

सं० धुर्य्य--(धुर=बोझ) क० पु० धुरन्धर, बोझउठानेवाला, २ प्रधान, सिरदार।

प्रा० धुलाई--(धुलाना) भा० स्त्री० कपड़े धोने की मजदूरी।

प्रा० धुलाना--(धोना) क्रि० स० धुवाना, कपड़े साफ कराना।

प्रा० धुलेंडी } धुलैंडी } स्त्री० होली का दूसरा दिन जिस मे धूल उड़ाते हैं।

प्रा० धुस्सा--पु० लोई, एक प्रकार का ऊनी कपड़ा।

प्रा० धूआं } धूवां } (सं० धूप) पु० धुवां, धूप, धूम्र, भाफ।

प्रा० धूवांधार--(सं० धूमाधार) पु० बहुत धुवां, गु० धुआंसा, हराया, भगाया, २ सुन्दर, संवारा हुआ, शोभित।

प्रा० धूंवारा--(सं० धूम) पु० धुएं के निकलने का मोखा अथवा राह।

प्रा० धूनी--(सं० धूम) स्त्री० धुवां, २ आग जिसको तपस्वी तपस्याकरने के लिये जलाते हैं, ३ किसी दवा को आग पर रख कर उसका धुवां पिलाना वा भूत प्रेत झाड़ने के समय किसी चीज को आग पर रख कर उसको महक सुँघाना, ४ किसी चीज के मांगने के लिये आग जला कर धरना देना।

प्रा० धूनीदेना--बोल० धरना देना, बार २ मांगना, २ धुआँ, आग सु-लगाना, पिलाना।

प्रा० धूनीलगाना--बोल० हठकरना अथवा बराबर मांगा करना।

प्रा० धूनीलेना--बोल० धुआं पीना, बफारा लेना।

सं० धूप--(धूप्=तपना, वा चमकना, वा महकना) पु० गूगल और लो-बान आदि सुगंधित वस्तु जिसको पूजाके समय देवता के आगे आग पर रखते हैं।

प्रा० धूप--(सं० धूप=तपना) स्त्री० घाम, तपिश। [भाफ

सं० धूम--(धू=कांपना) पु० धुवां,

प्रा० धूम--स्त्री० रौला, बखेड़ा, ... ल्हिन्न, हलचल, खड़बड़ी, ...

चर्चा, शोहरत, नामवरी।
सं० धूमकेतु—(धूम=धूआं, केतु=भंडा) पु० पूंछलतारा, २ आग, ३ केतु, ४ एक राक्षस का नाम।
प्रा० धूमधाम—स्त्री० भड़क, शोभा, ठाठ, बाठ, २ हूहा, रौला, कोलाहल, भीड़भाड़।
सं० धूमयन्त्र=रेलका एंजन।
प्रा० धूमरा, धूमला, धूमा (सं० धूम्र वा धूम्रल, धूम=धुआं, रा=लेना) गु० धूएं सा रंग लाल और काला मिला हुआ।
० धूमवाहनी—(धूम+वाहनी) स्त्री० रेल, रेलका एंजन।
प्रा० धूर, धूल (सं धूलि) स्त्री० धूल, खाक, रेत, रज, रेणु।
प्रा० धूर—स्त्री० बिस्वे का बीसवां हिस्सा, बिस्वांसी।
सं० धूर्जटि—(धूर=बोझ, जटि वा जटा केशोंका समूह) पु० शिव का नाम, जटाधारी।
सं० धूर्त्त—(धूर=वा धुर्व्=मारना, हानि पहुँचाना) क० नटखट, छली, फरेबी, मक्कार, कपटी, ठग, उचक्का, दुष्ट, हानि पहुँचानेवाला।
सं० धूर्त्तता—(धूर्त्त भा० स्त्री० नटखटी, मक्कारी, फरेब, ठगाई, छल, कपट।
सं० धूलि, धूली (धू=कांपना) स्त्री० धूर, धूल, रज, रेत, रेणु।
सं० धूसर—(धू=कांपना) गु० कबरा, भूरा, धुंधला, खाकी, मिटिया।
सं० धृत—(धृ=रखना) कर्म० पु० धारण किया हुआ, रक्खा हुआ, पकड़ा हुआ।
सं० धृतराष्ट्र—(धृत=रक्खा है, राष्ट्र=राज, जिस ने) पु० दुर्योधनका बाप और पांडवों का चचा।
सं० धृति—(धृ=रखना) स्त्री० धीरज संतोष, स्थिरता, मजबूती, धैर्य, इस्तक़लाल।
सं० धृतिमान्—गु० बुद्धिमान, मतिमान, अक़्लमन्द।
सं० धृतिसंख्य-गु० अठारह, दश और [आठ।
सं० धृष्ट—(धृष्=ढीठ होना) क० पु० ढीठ, धीठ, साहसी, २ निर्लज्ज, ३ मगरा, मचला, गुस्ताख।
सं० धृष्टता—भा० स्त्री० ढिठाई, शोखी, साहसपन, गुस्ताखी।
सं० धृष्णु—क० पु० ढीठ, साहसी, शोख, २ निर्लज्ज।
प्रा० धेगामुष्टि—स्त्री० बोल० घूंसम घूंसा, धक्कम धक्का, मुक्कम मुक्का।
सं० धेनु—(धे=पीना, जिसका दूध आदि पीते हैं वा जो अपने बछड़ों को दूध पिलाती है) स्त्री० गाय, दूध देने वाली गाय।
सं० धेनुक—(धेनु) पु०
सं० धेनुमती (धेनु=गाय, मती

स्त्री० गोमती नदी।

प्रा० धेला--पु० आधा पैसा, (अधेला शब्द को देखो)

सं० धैर्य्य--(धीर) स्त्री० धीरज, स्थिरता, दिलेरी हिम्मत।

प्रा० धोक--स्त्री० देवताकी मूरत के सामने झुकना, दंडवत्, प्रणाम।

प्रा० धोकड़--पु० महाबली, बलवान्, पराक्रमी, पहलवान, ताक़तवर।

प्रा० धोखा--पु० छल, कपट, दग़ा, ठगाई, चूक, भूल, भ्रम, २ निराश, ३ संदेह, ४ मृगतृष्णा, कोई कल्पित वस्तु।

प्रा० धोखाखाना--बोल० धोखे में आना, ठगा जाना, बहकना, भूलना, भुलावे में आना।

प्रा० धोखादेना--बोल० ठगना, छलना, बहकाना, भुलावा देना, दग़ा देना, फ़रेब में लाना।

प्रा० धोती--(सं० धौत्र, धाव्=धोना) स्त्री० एक कपड़े का नाम।

प्रा० धोना--(सं० धावन, धाव=धोना) क्रि० स० पखारना, साफ करना।

प्रा० धोप-स्त्री० एक प्रकारकी तलवार।

प्रा० धोव } (धोना) पु० धोना,
धोप } साफ करना, पखारना।

प्रा० धोबी--(धोना) पु० कपड़े धोनेवाला।

प्रा० धौं--(सं० धानकी, धा=रखना) स्त्री० एक प्रकार की लकड़ी।

प्रा० धोरी--पु० बैल, बर्द, वृषभ।

प्रा० धौं--अव्यय० न जाने, कि, अथवा, क्या। [क्रि० स० फूंकना।

प्रा० धौंकना--(सं० ध्मा फूंकना)

प्रा० धौंकनी-(धौंकना) स्त्री० आग फूंकने की चमड़े की भाथी, धौंकी।

प्रा० धौताल--(सं० धनवन्त) गु० धनवान्, मालदार, मज़बूत, बलवान, ३ शूरमा, वीर, ४ दुष्ट, दुर्जन।

प्रा० धौन--(आधमन) पु० बीस सेर, आधामन।

प्रा० धौंसा--पु० बड़ा नगारा।

सं० धौत--(धाव्=धोना) स्त्री० पु० धोया हुआ, प्रक्षालित।

प्रा० धौरा } (सं० धवल) गु० श्वेत,
धौला } शुक्ल, सफ़ेद।

प्रा० धौल--स्त्री० धप्पा, थप्पड़, थाप

प्रा० धौलजड़ना } बोल० ठठाना
धौलमारना } मुक्का मारना
धौललगाना } थाप मारना
थप्पड़ मारना

प्रा० धौललगना--बोल० घटी देना, हानि सहना, नुक़सान उठाना, घटी होना।

प्रा० धौलधप्पा--बोल० धप्पा धप्पी, मारकूट, चोट चपेट।

प्रा० धौलागिरि--(सं० धवलगिरि) पु० धवल धौला, गिरि पहाड़)

हिमालय पहाड़ की एक चोटी।

सं० ध्यात--(ध्यै=चिन्ताकरना) र्म्मि० पु० चिन्तित, विचारित।

सं० ध्यातव्य--(ध्यै+तव्य) र्म्मि० पु० ध्यान योग्य, यादके लायक।

सं० ध्याता--क०पु० चिन्तक, विचार कर्त्ता, शोचक।

सं० ध्यान--(ध्यै=सोचना) पु० सोच, विचार, चिन्ता, परमेश्वर में मन लगाना, लौ, लगन।

प्रा० ध्याना--(सं० ध्यान) क्रि० स० ध्यान करना, लौ लगाना, मन लगाना।

सं० ध्यानी--(ध्यान) क०पु० ध्यान करनेवाला, विचार करनेवाला, सोचने वाला, योगी, भक्त।

सं० ध्यानीय--(ध्यै+अनीय) र्म्मि० पु० चिन्तनीय, विचारणीय, विचार योग्य, भजन योग्य, याद के लायक।

सं० ध्यायक--(ध्यै+अक) क०पु० चिन्तक, विचारी, योगी, भक्त।

सं० ध्येय--(ध्यै=विचारना) र्म्मि० पु० ध्यान योग्य, विचारणीय, ध्यानार्ह।

सं० ध्रुव--(ध्रु=ठहरना) गु० ठहरा हुआ, पक्का, दृढ़, अटल, २ ठीक, किल, सच, निश्चय, पु० विष्णु, २ एक भक्तकानाम जो उत्तानपाद राजाका बेटाथा, ३ ध्रुवकातारा, ४ उत्तरकेन्द्र।

सं० ध्वंस }
ध्वंसन } (ध्वंस्=नाशकरना) भा० पु० नाश, क्षय, हानि।

सं० ध्वंसक--(ध्वंस्=अक) क०पु० नाशक, क्षयकारक, हानिकर्त्ता।

सं० ध्वंसित--(ध्वंस्+इत) र्म्मि० पु० नाशित, क्षयकृत, हानिकृत।

प्रा० ध्वजा--(सं० ध्वज, ध्वज्=जाना) स्त्री० पताका, केतु, झंडा।

सं० ध्वन् }
ध्वनि } (ध्वन्=शब्द करना) भा० स्त्री० शब्द, स्वर, नाद, आवाज।

सं० ध्वनित--(ध्वन्+इत) र्म्मि० पु० शब्दित, उदित, कथित।

सं० ध्वस्त--(ध्वंस्=नीचे गिरना) र्म्मि० पु० गिरा हुआ, नीचे पड़ा हुआ, मात किया गया, हत किया गया।

सं० ध्वान्त--पु० अन्धकार, तम।

—:०:—

न

सं० न--क्रि० वि० नहीं, निषेध, अभाव, सूर्य, शनैश्चर, दीर्घ, मनुष्य।

प्रा० न }
नि } व्रजभाषा में और कविता में बहुवचन का चिह्न जैसे "वेगिकऽहु किन आंखिन ओटा" "तव कपीश चरननि शिरनावा"।

प्रा० नंग } (सं० नग्न) गु० उघा-
नंगा } ड़ा, बिन कपड़े, वस्त्र हीन, दिगम्बर, २ निर्लज्ज, बेशरम।

प्रा० नंगाझूरी-बोल० ढूंढ़ना, ढूंढ़-ढांढ़, झाड़ाझूड़ी।

प्रा० नंगामुंगा } बोल० खिल-
नंगामुनंगा } कुल नंगा, दि-
नंगधड़ंग } गम्बर, वस्त्रहीन, नंगा, मादरज़ाद।

प्रा० नंगेसिर-बोल० खुले सिर, उघाड़े सिर।

प्रा० नक-(सं० नासिका) पु० नाक, नासिका, नासा।

प्रा० नकघिसनी-बोल० दंडवत् करने में या आधीनी से जमीनपर नाक रगड़ना।

प्रा० नकचढ़ा--बोल० चिड़चिड़ा, खुनसाहा, रिसहा, क्रोधी, जिसका बुरा स्वभाव हो।

प्रा० नकटा--(नाक कटा) गु० नाक कटा हुआ, बिन नाक का, २ निर्लज्ज, बेशरम।

प्रा० नकसीर--(सं० नासिका नाक और शिरा नस) स्त्री० नाक की नस अथवा रग।

प्रा० नकसीरफूटना } बोल० ना-
नकसीरचलना } कसे लोहू बहना।

सं० नकार--(न=नहीं, कृ=करना) पु० नहीं, निषेध, न मानना, (अरबी में इनकार)।

प्रा० नकारना--(सं० नकार) क्रि० स० नहीं मानना, निषेध करना, स्वीकार नहीं करना।

सं० नकुल--(न=नहीं, कुल वंश जिसके) गु० निर्वंश, कुलरहित, जिस के वंश न हो. पु० युधिष्ठिरका भाई, पांच पांडवों में का चौथा, २ नेवला जानवर, ३ महादेव।

प्रा० नकेल--(नाक) स्त्री० लकड़ी अथवा लोहे की बनी हुई एक चीज जो ऊँटके नाक में डाली जाती है और उस में डोरी डाल कर ऊंट को चलाते हैं।

प्रा० नक्कू-- गु० अपयशी, निखट्टू, बदनाम, नाकारा, बुरा, नीच, निकम्मा।

सं० नक्त--(नज्=लजाना), रात, [रजनी।

सं० नक्तक--पु० लघुवस्त्र, २ मलिन, ३ धूम्रवर्ण, धुमैला रंग।

सं० नक्र--(न=नहीं, क्रम्=दूर जाना) पु० मगर।

सं० नक्रराज -(नक्र+राज) पु० ग्राह, हांगर।

प्रा० नक्षत्र--(नक्ष=पहुंचना व जाना) पु० तारा, नक्षत्र २७ हैं जैसे १ अश्विनी २ भरणी, ३ कृ

त्तिका, ४ रोहिणी, ५ मृगशिरा ६ आर्द्रा, ७ पुनर्वसु, ८ पुष्य, ९ श्लेषा, १० मघा, ११ पूर्वाफाल्गुनी, १२ उत्तराफाल्गुनी, १३ हस्त, १४ चित्रा, १५ स्वाती, १६ विशाखा, १७ अनुराधा, १८ ज्येष्ठा, १९ मूल, २० पूर्वाषाढ़, २१ उत्तराषाढ़, २२ श्रवण, २३ धनिष्ठा, २४ शतभिषा, २५ पूर्वभाद्रपद, २६ उत्तरभाद्रपद, २७ रेवती ।

सं० नक्षत्री–(नक्षत्र, अर्थात् जो अच्छे नक्षत्रों में पैदा हुआ हो) गु० भाग्यवान् । [चन्द्र, चांद ।

सं० नक्षत्रेश–(नक्षत्र+ईश) पु०

सं० नख–(न=नहीं, ख=छेद जिस में, अथवा, नह्=बांधना) पु० नाखून, नखर, बीस की संख्या, विभाग, गुड, खांड़, स्त्री० सीप, शुक्ति ।

प्रा० नखसिखसे } बोल० सिर
नखसेसिखतक } से पांव तक, सब का सब, बिलकुल ।

प्रा० नख–(फा० नख) पु० पतंग की डोरी ।

प्रा० नखत–(सं० नक्षत्र) पु० नक्षत्र ।

सं० नखमुख-पु० नम्रता, २ बाण, धन्वा ।

सं० नखायुध–(नख+आयुध) गु० व्याघ्र, कुक्कुट, बिल्ली, नृसिंह, सोर ।

सं० नखी-(नख) गु० फाड़नेवाले, वे जानवर जिनके नख और पंजा होते हैं नखैल ।

प्रा० नग-पु० नगीना, अंगूठीमें जड़ने का पत्थर ।

सं० नग-(न=नहीं, गम्=चलना) पु० पहाड़, पर्वत, २ वृक्ष, ३ सात की संख्या ।

प्रा० नगचाना-(सं० निकट) क्रि० अ० पास आना, पहुँचना ।

प्रा० नगन–(सं० नग्न) गु० नंगा।

सं० नगपति } (नग=पहाड़, पति वा
नगाधिराज } अधिराज=राजा) पु० पहाड़ों का राजा, हिमालय पहाड़, सुमेरु ।

सं० नगर–(नग वृक्ष वा पहाड़ अर्थात् जिस में वृक्ष वा पहाड़ हों) पु० शहर, पुर, पत्तन ।

सं० नगरनारी–(नगर+नारी) स्त्री० वेश्या, पतुरिया ।

सं० नगरी–(नगर) स्त्री० पुरी, छोटा शहर ।

सं० नग्न–(नज्=लजाना) गु० नंगा, उघाड़ा, वस्त्रहीन, विन कपड़े, पु० नंगा साधु वा भिखारी, बौध वा जैन मत का दिगम्बर ।

प्रा० नचवाना } (नाचना) क्रि०
नचाना } स० नाचकराना।

प्रा० नचवैया—(नाच) क० पु० नाचनेवाला, नृत्यक।

सं० नट—(नट्=नाचना) पु० नटवा, नर्तक, जायाजीवी, नटुआ, नटवर, स्वांगी, इन्द्रजाली।

प्रा० नटखट—(सं० नट) गु० कपटी छली, पाखंडी, धूर्त, फ़रेबी, फरफंदी, गँठीला।

प्रा० नटखटी—स्त्री० हरामज़दगी, दग़ाबाज़ी, फ़रेब, छल, कपट, धूर्तता।

सं० नटन—(नट्+अन) भा० पु० नाचना, नृत्य करना।

सं० नटवर—(नट+वर) पु० बड़ा नट, नटवा।

सं० नटमाया—(नट+माया) स्त्री० छलविद्या, बाजीगरी, नटका खेल, धोखा, फरफन्द, प्रपंच।

सं० नटी—(नट) स्त्री० नटिनी, नट की स्त्री, २ वेश्या, नाचनेवाली, पतुरिया।

सं० नत—(नम्=झुकना, नवना) कर्म० पु० झुका हुआ, नमा हुआ, नम्र, नमित।

प्रा० नतरु—(सं० नान्यतर, न=नहीं अन्यतर और मकार) क्रि० वि० नहीं तो।

सं० नतांगी—(नत=झुक गया है (स्तन और जांघ आदि के भार से) अंग शरीर जिसका) स्त्री० स्त्री, नारी, सुन्दरी।

सं० नति—(नम्=झुकना) स्त्री० नवना, झुकना, नमस्कार, प्रणाम।

प्रा० नतिनी—(सं० नप्त्री) स्त्री० दोहती, बेटी की बेटी।

प्रा० नतैत—(नाता) गु० नातेदार, सगा, रिश्तेदार।

प्रा० नथ, नथनी—(सं० नाथ=पति, अर्थात् पतिके जीने का चिह्न) स्त्री० नाक का गहना, नाक की बाली, एक गहना जो चौड़ा और गोल होता है जिसको वेही स्त्री नाक में पहनती है जिस का पति जीता हो।

प्रा० नथना—पु० नाक का छेद।

सं० नद—(नद्=शब्द करना) पु० बड़ी नदी जैसे ब्रह्मपुत्र, सोन, और सिंधु आदि।

सं० नदित—क० पु० शब्दकर्त्ता, शब्द करनेवाला।

सं० नदी—(नद्=शब्द करना) स्त्री० बहता हुआ पानी, जलधारा, जलका प्रवाह, जैसे गंगा, यमुना आदि।

सं० नदीश—(नदी+ईश) पु० समुद्र, सागर।

प्रा० नदेश—(नद+ईश) पु० समुद्र, सागर।

प्रा० ननद—(सं० ननन्दा, न=नहीं,

नन्द=प्रसन्न होना, अर्थात् जो बहुत कुछ देने से भी राज़ी नहीं होती है) स्त्री० पति की बहन, ननदिया, ननदी।

प्रा० ननदिया / **ननदी** } (सं०ननन्दा) स्त्री० ननद, पति की बहन।

प्रा० ननिहाल—(नाना) पु० नाना का घर।

सं० ननु—अव्य० प्रश्न, निश्चय, अवधारण, अनुमति, अनुज्ञा, अनुनय, आमन्त्रण, सम्बोधन, परकृत अविकार, संभ्रम, स्तुति, आक्षेप, उत्प्रेक्षा, विरोधोक्ति।

सं० नन्द—(नन्द्=आनन्द करना, वा प्रसन्नहोना) पु० श्रीकृष्ण का पालनेवाला बाप, आनन्द, हर्ष।

सं० नन्दन—(सं० नन्द्=आनन्द करना, प्रसन्न होना) पु० बेटा, पुत्र, २ इन्द्र का बाग, गु० सुखदायक, आनन्द देनेवाला।

सं० नन्दनन्दन—(नन्द+नन्दन) पु० नन्द का बेटा, श्रीकृष्ण, नन्दलाल।

सं० नन्दलाल—(नन्द + लाल प्यारा) पु० नन्द का बेटा, नन्दनन्दन, श्रीकृष्ण।

सं० नन्दि—(नन्द्=आनन्द करना) पु० शिवका द्वारपाल, द्यूतक्रीड़ा, जुआ खेलना।

सं० नन्दिघोष-(नन्दि + घोष) पु० अर्जुन का रथ, वन्दीजनों का शब्द, भाटों की स्तुति।

सं० नन्दिनी—स्त्री० पार्वती, गंगा, ननद, वशिष्ठमुनि की गौ।

प्रा० नन्दोई / **नन्दोसी** } (सं० ननन्दपति) पु० ननद का पति।

सं० नद्ध—(नह्=लगना) स्म० पु० लगाहुआ, नाधाहुआ।

प्रा० नन्हा / **नन्का** } (सं० न्यून) गु० छोटा, लघु, प्यारा, लाड़ला, पु० छोटा लड़का, बेटा।

सं० नपुंसक-(न=नहीं, पुंसक=पुरुष) पु० हिजड़ा, खोजा, क्लीब, नामर्द, गु० डरपोक, कायर, हेठा।

फ़ा० नफ़ीरी—स्त्री० तुरही, सहनाई, सहनाय।

सं० नभ / **नभस्** } (नह्=बाँधना) पु० आकाश, गगन, आस्मान, २ सावनका महीना, सूर्य्य, मेघ, वर्षा।

सं० नभग-(नभ=आकाश, गम्=जाना) पु० परेवा, पक्षी।

सं० नभगनाथ / **नभगेश** } (नभग=परेवा, नाथ वा ईश=राजा) पु० गरुड़।

प्रा० नभचर—(सं० नभश्चर, नभस्=आकाश, चर=चलनेवाला, चर=

चलना) पखेरू, पक्षी, २ विद्याधर, मेघ, ४ हवा, पवन, गु० आकाश में चलनेवाला।

सं० नभोधूम–पु० मेघ, वारिद।

सं० नमः–(नम्=नमना) अव्यय० नमस्कार, प्रणाम, २ दान।

सं० नमस्कार–(नमस्=प्रणाम, कृ=करना) पु० प्रणाम, दंडवत्।

सं० नमित–(नम्=झुकना) कर्म० झुकाहुआ, लचाहुआ।

सं० नम्र–(नम्=नमना, झुकना) गु० झुकाहुआ, अधीन, विनयी, मिलनसार। [आधीनता, विनय।

सं० नम्रता–(नम्र) भा० स्त्री०

सं० नय–(नी=लेजाना, चलाना, वा पाना) स्त्री० नीति, इन्साफ।

सं० नयन–(नी=लेजाना, पहुँचाना, वा पाना) गु० पु० आंख, नेत्र, लोचन।

सं० नयनपट–(नयन=आंख, पट=परदा) पु० पलक।

प्रा० नयना–(सं० नयन) स्त्री० आंख की पुतली, आंख का तारा।

सं० नयनागर–(नय=नीति, नागर=चतुर) गु० नीति में निपुण, नीति में चतुर, अथवा प्रवीण, नीति जानने वाला।

सं० नयनामृत–(नयन+अमृत) पु० अंजनविशेष, सुरमा, काजल।

प्रा० नया } **नवा** } (सं० नव) गु० नवेला, नवीन, टटका, नूतन।

प्रा० नयेसिरसे-बोल० फिरसे, दूसरीबार से।

सं० नर–(नॄ=लेजाना, वा चलाना) पु० मनुष्य, पुरुष, मर्द, मनुष्यजाति, २ परमेश्वर, ३ नरावतार, अर्जुन।

सं० नरक–(नर मनुष्य, कै=शब्द करना, जहां पापी रोते हैं, वा नॄ=लेजाना, जहां पापी लोग ले जाये जाते हैं) पु० पापों के फल भुगतने की जगह, दोज़ख १ तामिस्र २ अंधतामिस्र ३ रौरव ४ महारौरव ५ कुंभीपाक ६ कालसूत्र ७ असिपत्रवन ८ शूकरमुख ९ अन्धकूप १० कृमिभोजन ११ संदंश १२ तप्तभूमि १३ वज्रकंटक १४ शाल्मली १५ वैतरणी १६ पूयोद १७ प्राणरोध १८ विशसन १९ लालाभक्ष २० सारमेयादन २१ अवीचिरयःपान २२ क्षारकर्दम २३ रक्षोगणभोजन २४ शूलप्रोत २५ दंदशूक २६ अवनिरोधन २७ पर्यावर्तन २८ सूचीमुख।

सं० नरककुण्ड–(नरक+कुण्ड) पु० वह कुण्ड जिसमें पापीलोग दुःख भुगतने के लिये डाले जाते हैं ८६ हैं वह ब्रह्मवैवर्त्तपुराण में वर्णन किये गये हैं।

प्रा० नरकट } **नरकल** } (सं० नलकाण्ड) पु० सरकण्डा, [illegible]

प्रकार का बांस।

सं० **नरकासुर**--(नरक+असुर) पु० एक राक्षस का नाम जो कंस का मित्रथा।

सं० **नरकेशरी**--(नर=मनुष्य,केशरी =सिंह) पु० नरसिंह अवतार, विष्णु का चौथा अवतार।

सं० **नरकान्तक**--(नरक+अन्तक) पु० विष्णु।

सं० **नरकदेवता**--स्त्री० अभाग्य,दरिद्र, यमराज, चित्रगुप्त।

सं० **नरकामय**--(नरक+आमय) पु० कोढ़रोग, जिससे शरीर नरक सम होजाय।

सं० **नरङ्ग** } पु० नारंगी, नारङ्ग,
नारङ्ग } कौला।

सं० **नरनारायण**--(नर+नारायण) पु० श्रीकृष्ण और अर्जुन का अवतार, दो मुनि।

सं० **नरपति**--(नर+पति)पु० मनुष्यों का राजा, राजा, महाराज,भूपाल।

सं० **नरपुर**--(नर+पुर) पु० मर्त्यलोक, पृथ्वी, यह लोक।

सं० **नरमेध**--(नर=मनुष्य,मेध=यज्ञ) पु० नरबली, वह यज्ञ जिसमें मनुष्य होमा जाता है।

प्रा० **नरसिंगा**--(सं० नलशृंग, नल=नली, शृंग=सींग)पु० तुरही, सींगी, एकप्रकार का बाजा।

सं० **नरसिंह**--(नर+सिंह)पु० विष्णु का चौथा अवतार जो हरिणकशिपु को मारने के लिये और प्रह्लाद के बचाने के लिये हुआथा, २ मनुष्यों में श्रेष्ठ मनुष्य, नरश्रेष्ठ।

प्रा० **नरसों**--पु० आजसे चौथा दिन, (पहला अथवा पिछला)।

सं० **नरहरि**--(नर=मनुष्य,हरि=सिंह) पु० नरसिंह, विष्णु का चौथा अवतार, २ तुलसीदास के गुरु का नाम।

सं० **नराधम**--(नर+अधम) पु० मनुष्योंमें नीच,पापी, नीच, कमीना।

सं० **नराधिप**--(नर=मनुष्य,अधिप =राजा) मनुष्यों का राजा, नरपति, बादशाह।

प्रा० **नरिया**--पु० खपरा।

प्रा० **नरेटी**--स्त्री० गला, घांटी, गर्दन, टेंटुआ।

प्रा० **नरेटीदबाना**--बोल० गला [घोटना।

सं० **नरेन्द्र**--(सं० नर+इन्द्र) पु० राजा, नरपति।

सं० **नरेश** } (नर=मनुष्य, ईश वा
नरेश्वर } ईश्वर=स्वामी) पु० राजा, नरेन्द्र, नरपति।

सं० **नर्त्तक**--(नृत्=नाचना)कृ० पु० नाचनेवाला, नट।

सं० **नर्त्तकी**--(नर्त्तक)कृ० स्त्री० नाचनेवाली, नटनी।

सं० नर्त्तन- (नृत्=नाचना)भा० पु० नाच, नृत्य।

सं० नर्तनप्रिय--गु०जिसकोनाचना अच्छा लगे, मोर।

सं० नर्दक--(नर्द्=शब्द करना)क० पु० बोलनेवाला फा० नर्द स्त्री० गोट।

सं० नर्म्मद--(नर्म्म=हँसी वा आनंद, दा=देना) क०पु०सुखद,सुखदायक, आनंदकारी, खुशी देनेवाला।

सं० नर्म्मदा--(नर्म्म=हँसीवा आनंद, दा=देनेवाली, दा=देना) स्त्री० एक नदीका नाम जो दक्षिणमे है, रेवा, मेकलसुता।

सं०नल- (नल्=बांधना)पु०सरकंडा, सेंठा,नरकट, नेजा, बाँस, २ नली, फोंफी, चोंगा, टोंटा, टोंटी, ३ नाली मनाली, ४ एक राजा का नाम, ५ एक बंदर का नाम, ६ एक राक्षस का नाम।

सं० नलकूबर--पु० कुबेरके दो बेटेजो नारदमुनिके शापसे पेड़ होगये थे।

सं० नलनीर--पु० फव्वारा।

सं० नलिन--(नल्=बांधना) पु०कमल, पद्म, २ पानी, ३ सारस।

सं० नलिनी--(नलिन) स्त्री०कमलिनी, कुमुदिनी, २ कमलों का समूह, ३ कमलों से भरा तालाब।

प्रा० नली--(सं० नल) स्त्री० फोंफी, चोंगा, टोंटी, २ नरेटी, सांसी, ३ बंदूककी नाल, ४ टंगड़ीकी हड्डी।

सं०नव--(नु=सराहना) गु० नया, नवीन, नूतन, २ नौ संख्या, ९।

सं०नवखण्ड--(नव नौ,खण्ड भाग) पु०भरतखंड आदि पृथ्वीके नौखंड।

सं० नवग्रह--(नव+ग्रह) पु० सूर्य आदि नौ ग्रह, जैसे १ सूर्य,२ चांद, ३ मंगल, ४ बुध, ५ बृहस्पति, ६ शुक्र, ७ शनि, ८ राहु, ९ केतु।

सं० नवदुर्गा--(नव दुर्गा) स्त्री०दुर्गा की नौ मूर्ति, जैसे १ शैलपुत्री, २ ब्रह्मचारिणी, ३ चन्द्रघण्टा, ४ कूष्माण्डा, ५ स्कन्दमाता, ६ कात्यायनी, ७ कालरात्री, ८ महागौरी, ९ सिद्धिदा।

सं० नवद्वार--(नव + द्वार) पु०शरीरके नौ रस्ते, २ आंखें, २ कान, २ नाकके छेद, सातवां मुँह, आठवां लिंग नवां गुदा जैसे " नवद्वार का पींजरा यामें पंछी पौन "(कबीर)।

सं० नवनिधि--(नव नौ, निधि रखजाना) स्त्री० संपदा, कुबेर का धन, कुबेर का खज़ाना।

प्रा० नवनी--(सं० नवनीत) स्त्री० मक्खन, नैनू।

सं०नवनीत-(नवनया,नी=लेजाना) पु० मक्खन, माखन, नैनी, नवनी।

सं० नवयात्रा--(नव=नई, यात्रा=

जवान स्त्री वा लड़की) स्त्री० नव यौवना, सोलह बरसकी लड़की, जवान स्त्री।

सं० **नवम**-(नव) गु० नवां।

सं० **नवमी**-(नवम) स्त्री० नौमी, नवीं तिथि।

सं० **नवयौवना**-(नव=नई, यौवना =जवानस्त्री)स्त्री० जवान स्त्री, नव बाला, नवोढ़ा।

सं० **नवरत्न**-(नव+रत्न) पु० नौ जवाहिर (अर्थात् १ हीरा, २ पन्ना, ३माणिक, ४नीलम, ५ लहसुनिया, ६पुखराज, ७गोमेद, ८मोती, ९मूंगा) २ विक्रमादित्य की सभाके नौपंडित (१ धन्वन्तरि, २ क्षपणक, ३अमरसिंह, ४ शंकु, ५वेतालभट्ट, ६ घटकर्पर, ७ कालिदास, ८ वाराहमिहिर, ९ वररुचि)३ हाथमें पहनने का एक गहना जिसमें नौरत्न जड़े हों।

सं० **नवरात्र**-(नव=नौ, रात्र रातों का समूह) पु० आश्विनसुदी परिवा से ले नौमीतक के नौ दिन रात, आश्विन चैत, असाढ़ और माघ के शुक्ल पक्ष के नौ दिन रात नवरात्र कहलाते हैं, दुर्गा पूजा के नौ दिन।

सं० **नवल**-(नव=नया, ला=लेना) गु० नया, नवा, नवीन, सुन्दर, मनोहर, पु० एक पौधे का नाम।

सं० **नवशिक्षक**-(शिक्ष्=सीखना) क० पु० नया पढ़ने वाला, मुबतदी।

सं० **नवांश**-(नव+अंश) पु०नवां भाग।

प्रा० **नवाड़ा**-(नाव) पु० एक प्रकार की नाव, छोटी नाव।

प्रा० **नवाना**-(सं० नमन, नम्= झुकना) क्रि० स० झुकाना, नीचे करना, २ वश करना।

सं०**नवीन**-(नव, नु=सराहना) गु० नया, नवा, नूतन।

सं० **नवोढ़ा**-(नव+नवीन, ऊढा= स्त्री)स्त्री० नईब्याहीहुई, नईस्त्री, बनी।

सं० **नव्य**-गु० नया।

सं० **नश्वर**-(नश्=नहीं दीखना, नाश होना) क० पु० नाश होने वाला, विनाशी, २ हानि करने वाला, हिंसक।

सं० **नष्ट**-(नश्=नाश होना) क० पु० जो नाश हुआ, भ्रष्ट, विनष्ट, मलमेट, मलियामेट। [दुष्टा।

सं०**नष्टा**-स्त्री० व्यभिचारिणी, भ्रष्टा,

प्रा० **नसाना** } (सं० नाशन, नश्
नसावना } =नाश होना) क्रि० स० नाश करना, बिगाड़ना।

प्रा० **नहनी** } (सं० नखहरणी) क०
नहरनी } स्त्री० नखकाटने का औज़ार।

प्रा० **नहलाना**-(न्हाना) क्रि० स०

स्नान कराना, अंग धोना।

प्रा० नहान-(न्हाना) पु० स्नान।

प्रा० नहाना } (सं० स्नान, वा न्हाना } अवगाहन) क्रि० अ० स्नान करना, शरीर शुद्ध करना, अंगधोना।

प्रा०नहानी-(न्हाना) कपड़ों से होने का समय, रज फूल।

प्रा० नहारुआ-पु० नारू, जांघ में अथवा और कहीं शरीर में एक सूतसा रोग जो निकलता है।

प्रा० नहियर-पु० पीहर=मैका।

प्रा० नहीं-(सं० नहि, नह=बांधना रोकना) क्रि वि० निषेध, न, मना, नांह।

प्रा० नाइन-स्त्री० नाई की स्त्री०।

प्रा० नाई } (सं० नापित) पु० ह-नाऊ } जाम, हजामतबनाने वाला, उस्तां।

प्रा०नाईं-स्त्री० भांति, तरह।

प्रा० नांदिया-(सं० नन्दि) पु० महादेव का वाहन बैल।

प्रा० नांव } (सं० नाम) पु० नाम नाऊं } संज्ञा, २ यश, नामवरी।

प्रा० नांह-(सं० ना, वा नहि) क्रि० वि० नहीं, निषेध, न।

प्रा० नाक-(सं०नासिका) पु० स्त्री० नासा, नासिका, सूंघने की इन्द्री।

प्रा० नाक कटाना--बोल० अपमान करना, अनादरकरना, पानी उतारना, २ बदनाम होना।

प्रा० नाककटी होना--- बोल० अपना मान खोना, अपनी बड़ाई को मिटाना, बदनाम होना।

प्रा० नाक का बाल- बोल० जिस का बहुत मान हो, प्यारा, जिसका बहुत आदर किया जाय।

प्रा०नाक चढ़ाना--बोल० क्रोधित होना, अप्रसन्न होना, गुस्सा होना, नाराज़होना।

प्रा० नाक रखना--बोल० अपना यश बनारखना, अपनी इज्जत को बना रखना।

प्रा० नाक सकोड़ना-बोल० नाक चढ़ाना, अप्रसन्नहोना, नाराजहोना।

सं० नाक-(न=नहीं, अक=दुःख अर्थात् जहां दुःख नहीं है और अक=बना है, अ=नहीं और [illegible] सुख, अर्थात् सुख नहीं दुःख) पु० स्वर्ग, देवलोक।

सं० नाकपति-(नाक=स्वर्ग, [illegible] =राजा) पु० स्वर्ग का राजा, इन्द्र।

सं० नाकनटी-(नाक=स्वर्ग, [illegible] नाचनेवाली) स्त्री० अप्सरा।

प्रा० नाका-पु० रस्ते का [illegible] २ सुई का छेद, ३ गली, [illegible] नाकेबन्दी, बोल० रस्ता [illegible] करना।

प्रा० नाका--(सं० नक्र) पु० मगर, घड़ियाल, ह्रांगर।

सं० नाग--(न=नहीं, अग=ठहराहुआ) पु० कश्यपमुनि की स्त्री कद्रू के बेटे जिन का मुँह मनुष्य का और फण और पूंछ सांपकी होतीहै जो पाताल में रहते हैं और देवता कहलाते हैं, सांप, सर्प, २ हाथी, ३ नागकेशर।

सं० नागकन्या--(नाग+कन्या) स्त्री० नागों की अथवा पाताल के देवताओं की लड़कियां जो बहुत रूपवती और सुन्दर होती हैं।

सं० नागकेशर--पु० फूलों के एक पेड़ का नाम।

सं० नागदन्त, नागदन्तक--(नाग=हाथी, दन्त=दांत) पु० हाथी-दांत, २ दोकाटोंका टेकन, जो हाथी-के दांतकी तरह होताहै स्त्री० खूटी।

प्रा० नागन, नागनी--(सं० नागनी) स्त्री० नागकीस्त्री, सांपिनी, सर्पिणी।

सं० नागपञ्चमी--(नाग+पञ्चमी) स्त्री० सावनसुदी पञ्चमी जिस दिन हिंदूलोग सांपकी पूजा करते हैं।

सं० नागपाश--(नाग=सांप, पाश=फंदा) स्त्री० वरुण का अस्त्र, फन्दा, फांसी, फांस।

प्रा० नागफांस-(नाग=पाश) स्त्री० वरुण का अस्त्र, फंदा, फांसी, पाश।

प्रा० नागबेल-(सं० नागवल्ली) स्त्री० पान की बेली।

सं० नागर--(नगर=शहर) पु० नगर का वासी, चतुर, प्रवीण, २ गुजराती ब्राह्मणों की एक जाति।

सं० नागरी--(नागर) स्त्री० चतुर स्त्री, २ नागरकी स्त्री, ३ देवनागरी अक्षर वा भाषा।

सं० नागरिपु-(नाग=हाथी, रिपु=वैरी) पु० सिंह, शेर, बाघ।

प्रा० नागल--(सं० लाङ्गल, लगि=मिलना वा जाना) पु० हल।

सं० नागलोक--(नाग+लोक) पु० नागों का लोक, पाताल।

प्रा० नागा-(सं० नग्न) पु० नंगेसंन्यासी।

प्रा० नागिन, सं० नागिनी--(नाग) स्त्री० नागन, सांपनी, सर्पिणी।

प्रा० नांघना-(सं० लङ्घन) क्रि० अ० लांघना, पार होना, उतरना, कूदना।

प्रा० नाच--(सं० नाट्य, वा नृत्य) पु० नाचना, नृत्य, नाट्य।

प्रा० नाचनचाना-बोल० खिझाना, चिढ़ाना, सताना।

फ़ा० नाज़=नखरा, घमण्ड, मान।

सं० नाट-(नट्=न चना) पु० कर्णाटक देश, नाच, नृत्य।

सं० नाटक--(नट्=नाचना) क्रि० प० एक प्रकार का काव्य जि नटी के खेल की रीति ५

होता है जैसे "शकुन्तलानाटक" "विक्रमोर्वशी" "वेणीसंहार" "उत्तररामचरितआदि", २नट, नाचनेवाला।
सं०नाटन-भा०पु० नाचना, नर्तन।
प्रा० नाटा--गु० बावना, ठिगना, पस्तक़द।
सं० नाटेय-पु० नटीसुत, वेश्यापुत्र।
सं० नाट्य--(नट) पु० नटों का काम जैसे नाचना, गाना और बजाना।
सं० नाट्यशाला--(नाट्य + शाला) स्त्री० नाचघर, रंगशाला, जहां नाटक होता हो।
प्रा० नाट--पु० नास्ति, शून्यता, अभाव, नाश।
सं० नाडि } (सं० नड़ गिरना)
नाडी } स्त्री० धमनी, शिरा, नब्ज, नस। [नासूर।
सं० नाडीव्रण--पु० नसोंका घाव-
प्रा० नातर--(सं० नान्यतर, वा नान्यथा, न=नहीं, अन्यतर वा अन्यथा और प्रकार) क्रि०वि० नहीं तो।
प्रा० नाता--(सं० ज्ञातेय, ज्ञाति=जाति भाई) पु० सम्बंध, अपनायत, रिश्तेदारी। [की बेटी।
प्रा० नातिन--(सं० नप्त्री) स्त्री० बेटी
प्रा० नाती--(सं० नप्ता, न=नहीं, पत्=गिरना, अर्थात् नाती के होने से पितर अर्थात् पुरुषे नीचे नहीं गिरते) पु० बेटी का बेटा, दोहता।

सं० नाथ--(नाथ्=मांगना जिससे मांगते हैं) पु० स्वामी, मालिक, पति, धनी, २ योगियों की पदवी, जैसे गोरखनाथ।
सं० नाथ--(नाथ=सताना, दुःखदेना) स्त्री० रस्सी जो बैल के नाक में डाली जाती है।
प्रा० नाथना--(सं० नाथन, नाथ सताना वा दुःख देना) क्रि० स० बैल की नाक छेदना।
सं० नाद--(नद=शब्द करना) पु० शब्द, गर्ज, आवाज, ध्वनि, मिट्टी का बर्तन।
सं० नादन--(नाद्+अन) भा०पु० शब्द करना, गर्जना, नाद करना।
प्रा० नानक--पु० सिक्खों के मत का चलानेवाला।
प्रा० नानकपंथी } पु० नानक के
नानकशाही } मत को मानने वाला, सिख।
सं० नाना--अव्य० अनेक प्रकार, भांति भांति, उभयार्थ। [मह।
प्रा० नाना--पु० मा का बाप, माता
सं० नानार्थ--(नाना+अर्थ) पु० बहुत अर्थ, अनेकप्रयोजन, बहुताशय।
सं० नान्दी--(नद्=शब्द करना) स्त्री० देवता पितर जहाँ आनन्द का शब्द करें, प्रशंसा, नक़ारा, नगारा, स्तुतिसंयुक्त आशीर्वाद।

सं० नान्दीमुख— पु० वृद्धिश्राद्ध, वृद्धिश्राद्धभुक् पितृगण, कुआ के ढापनेका पट, कूपमुखबन्धन।

प्रा० नाप--(सं० मापना, वा नापना) पु० माप, परिमाण,—नापजोख, बोल० नापतौल।

प्रा० नापना--(सं० मापन मा=मापना) क्रि० स० मापना, परिमाण करना।

सं० नापित--पु० नाई, हज्जाम।

सं० नाभि (नह=बांधना) स्त्री० नाभ, नाभी, तोंदी, तुंडी, कस्तूरी, पु० नाम राजाका।

सं० नाम--(नम् पुकारना) पु० नाव, संज्ञा, पदवी, २ यश, ख्याति।

सं० नामकरण--(नाम+करण) पु० लड़के का नाम रखना, नाम देना, लड़के के पैदा होने के पीछे दशवें दिन नाम रखने का संस्कार अर्थात् रीति।

प्रा० नामकरना- बोल० नामीहोना, नामवर होना, यशस्वी होना, विख्यात होना, प्रसिद्ध होना।

प्रा० नाम डुबोना--बोल० अपना यश खोना, बदनाम होना।

प्रा० नामदेना—बोल० नाम रखना।

प्रा० नामधरना— बोल० नाम रखना, नाम ठहराना, किसी नाम से पुकारना, खराब करके कहना, बुरा नाम रखना। [वाचक।

सं० नामधेय— पु० नाम, संज्ञा, नाम-

प्रा० नाम निकालना— बोल० नामी होना, नाम करना, २ दोषी का नाम निर्णय करना।

प्रा० नाम रखना—बोल० नाम धरना, नाम देना।

प्रा० नामलेकर मांग खाना— बोल० दूसरे मनुष्य के नामसे भीख मांग खाना।

प्रा० नाम लेना—बोल० सराहना, प्रशंसा करना, २ परमेश्वर का नाम लेना, जप करना, माला फेरना। [यश फैलना।

प्रा० नामहोना—बोल० यश होना,

प्रा० नामी—(सं० नाम) गु० विख्यात, यशस्वी, उजागर।

प्रा० नामीहोना—बोल० नामवर होना, प्रसिद्धहोना, विख्यात होना, उजागर होना।

सं० नायक--(नी=लेजाना वा चलाना) पु० अगुवा, मुखिया, सरदार, प्रधान, २ सेनापति, थोड़ीसी सेना का सरदार, ३ प्रेमाभिलाषी पुरुष, ४ नाचने और गाने में निपुण पुरुष।

प्रा० नायन- स्त्री० नाई की [illegible]।

सं० नायिका--(नायक) [illegible] क की स्त्री, जवान स्त्री

२ कुटनी, दूती, ३ रूपवती स्त्री, सुन्दर स्त्री, साहित्य में नायिका तीन प्रकार की हैं (१ स्वकीया जो केवल अपने पतिही से प्रेम करे, २ परकीया जो पराये पुरुषसे प्रीति करे, ३ सामान्या जो धन लेकर किसी से प्रीति करे) जैसे "स्वकिया व्याही नायिका परकीया परवाम। सो सामान्या नायिका जाके धन सों काम" अवस्थाभेद से प्रत्येक नायिका आठ प्रकार की हैं (१ प्रोषितपतिका, २ खंडिता, ३ कलहान्तरिता, ४ विप्रलब्धा, ५ उत्कण्ठिता, ६ वासकसज्जा, ७ स्वाधीनपतिका, ८ अभिसारिका)।

प्रा० नार--(सं० नारी) स्त्री० लुगाई, स्त्री, २ (सं० नाल) बंदूक की नाल वा नली, ३ कमलों की नाल, ४ गरदन।

प्रा०नारकी-(नरक) गु० नरकवासी, नरक भोगनेवाला जीव, २ नरक।

प्रा० नारंगी, **नारंज** (सं० नारङ्ग) स्त्री० केवला, कौला, एक प्रकारका खटमीठा फल।

सं० नारद--(नार=ज्ञान, दा=देना) पु० एक ऋषिका नाम, ब्रह्मा का बेटा और दश देवऋषियों में का एक देवऋषि।

सं० नाराच-(नार=मनुष्योंकासमूह, आ=चारोंओर से, चम्=खाना) पु० तीर, बाण।

सं० नारायण--(नार=मनुष्यों का समूह, अयन=स्थान, अर्थात् जिन में सब मनुष्य रहते हैं, वा नार=पानी, अयन=स्थान, अर्थात् जो क्षीरसमुद्र में सोते हैं) पु० विष्णुका नाम, आदिपुरुष।

सं० नारायणी--(नारायण) स्त्री० विष्णु की पत्नी, लक्ष्मी, २ गंगा, ३ सतावरी।

सं० नारिकेल--(नारि=डांठी, र=हवा वा पानी इल=चलना, अर्थात् जिसकी डांठी हवा से वा पानी से बढ़ती है) पु० नारियल, श्रीफल।

प्रा० नारियल--(सं० नारीकेल) पु० श्रीफल, नारिकेल, एक फलका नाम।

सं० नारी--(नर) स्त्री० लुगाई, स्त्री, औरत, अबला, वनिता, जन।

प्रा० नारू--नहारु शब्द को देखो।

सं०नाल-(नल्=बांधना व चमकना) स्त्री० नली, २ बंदूक की मुहरी वा नली, ३ मृणाल, कमलकी डांठी, डांडी, हुक्कांकी चिरागी।

प्रा० नाला--पु० नहर, छोटी नदी, सोता, २ पनाला, मोरी।

प्रा० नालकी--स्त्री० एक प्रकार की पालकी।

सं० नालिक--(नाल्+इक) क० स्त्री० बन्दूक, भुशुण्डी।

प्रा० नाव--(सं० नौ) स्त्री० नौका, डोंगी, तरणी।

प्रा० नावना } नाना } (सं० नमन, नम्=झुकना) क्रि० स० झुकाना, निहुराना, शिर झुकाना, नमस्कार करना।

प्रा० नावरि--स्त्री० नाव झुकाना, नाव फेरना।

सं० नाविक--(नौ) क० पु० मांझी कर्णधार, केवट, मल्लाह।

सं० नाश--(नश्=नाश होना) भा० पु० ध्वंस, बरबादी, नष्ट होना, क्षय, हानि, बिगाड़।

सं० नाशक--(नश्=नाशकरना)क० पु० नाश करनेवाला, उजाडू, बिगाड़ करनेवाला, हानि करनेवाला।

सं० नाशन--(नाश्+अन) भा० पु० नाश करना, बिगाड़ देना, उड़ा देना।

सं० नाशवान्--क० पु० नाशहोनेवाला।

सं० नाशनीय } नाशित } नाश्य } र्म्म० पु० नाश करनेयोग्य, उजाड़ने लायक।

सं० नाशी--(नाश्+ई) क० पु० नाशकरनेवाला, उड़ाऊ, उजाड़।

प्रा० नास--(सं० नाश)पु० नाश, २ (सं० नस्य, नासा=नाक) स्त्री० हुलास, सुंघनी।

सं० नासमझ--गु० अबोध, अज्ञान।

प्रा० नासना (सं० नाश) क्रि० अ० भागना, पलाना, पीठ देना, २ क्रि० स० नाश करना।

सं० नासा } नासिका } (नास्=शब्द करना) स्त्री० नाक, सूंघने की इन्द्री।

सं० नासीर--(नास्=शब्द करना) पु० सेना का मुख, आगे चलने वाली सेना।

सं० नास्ति--(न=नहीं, अस्ति=है, अस्=होना) नहीं है, नाहीं, अभाव।

सं० नास्तिक-- (नास्ति=नहीं है, अर्थात् परलोक और ईश्वर वा सृष्टि का कर्ता नहीं है ऐसा कहनेवाला) पु० ईश्वर और परलोक को नहीं माननेवाला, अनीश्वरवादी।

सं० नास्तिकवाद--भा० पु० ईश्वर को न मानना, नास्तिकोंका झगड़ा, कुफ़्र की बातें।

सं० नास्तित्व--भा० पु० अभाव, शून्यता, नाठ।

प्रा० नाह (सं० नाथ) पु० स्वामी, मालिक, नाथ, पति।

प्रा० नाहर--पु० बाघ, शेर।

प्रा० नाहिं } नाहीं } (सं० नहि) क्रि० वि० नहीं, न।

सं० नि--उपस० नहीं, बिन, रहित, २ नीचे, ३ नित्य, सदा, ४ हास, ५ निश्चय, ६ अच्छी तरह से, सब तरह से, ७ बीच में, मध्य, भीतर ८ बाहिर, ९ क्षेप, १० कौशल, ११ आश्रय, १२ दान, १३ मोक्ष, १४ भाव, १५ बन्धन, १६ स्थापन, १७ निवेश।

सं० निःशङ्क--(निर्=नहीं, शङ्का=डर) गु० निडर, निर्भय।

सं० निःशेष--(निर्=नहीं, शेष=बाकी) गु० पूरा, समाप्त, जहां कुछ नहीं बचे।

सं० निःश्वास--(निर्=बाहर, श्वास=सांस) पु० मुँह और नाक से बाहर निकली हुई हवा, पवन, सांस, प्राणवायु, २ पछतावा, हाय, ठंढी सांस, लंबी सांस।

सं० निःसंदेह-- निर्=बिन, सन्देह=शक) गु० बिन संदेह, निश्चय, बेशक।

सं० निःसरण--(सृ=जाना) भा० पु० निकलना, द्वार, मार्ग, मृत्यु, उपाय, मोक्ष, निर्गम।

सं० निःसारण--भा० पु० निकालना, निछावर, घरके निकलनेका दरवाजा।

सं० निःस्पृह } **निस्पृह** } (निर् वा नि=नहीं, स्पृहा=इच्छा) गु० जिसको किसी बातकी इच्छा न हो, इच्छारहित, अनिच्छुक, बेख्वाहिश।

सं० निःस्वादु--निर्=बिन, स्वादु=रस) गु० बेस्वाद, बेरस, फीका, अलोना।

सं० निकट--(नि=पास, कट=जाना) नित्य सं० पास, नगीच, नजदीक, समीप।

सं० निकटस्थ--(निकट+स्था, क०) पु० पास रहनेवाला, करीबी, नजदीकी।

प्रा० निकंटक--(सं० निष्कण्टक) गु० अकण्टक, बिनशत्रु, आराम से, सुखी, बेखरखशा।

सं० निकन्द } **निकन्दन** } (नि=नहीं, कन्द=जड़) पु० नाश, २ नाशकरनेवाला, उसड़ाहुआ।

प्रा० निकम्मा--(सं० निष्कर्म, निर्=बिन, कर्म्म=काम) गु० जो कुछ कामका न हो, बेकाम।

सं० निकर--(नि, कृ=बिखेरना, डालना) पु० समूह, भीड़भाड़।

प्रा० निकलना (सं० नि, कस=जाना) क्रि० अ० बाहर आना, बाहर जाना, निकसना, फटना, उत्पन्न होना, बढ़ आना।

प्रा० निकलचलना--बोल० भा० ना, टल जाना, २ बढ़ चलना, आगे निकलना, ३ बहुत बोलना

अथवा अपना गुण दिखलाना ।

प्रा० निकलजाना--बोल० भाग जाना, चलाजाना । [आ जाना ।

प्रा० निकलपड़ना--बोल० बाहर

प्रा० निकलभागना-बोल० भाग जाना ।

प्रा० निकसना--(सं०नि,कस=जाना)क्रि०अ०निकलना,बाहरआना ।

प्रा० निकाई--(फा०नेक)भा०स्त्री० शोभा, भलाई, अच्छाई ।

सं० निकाम--(नि=नहीं,कम्=चाहना) गु० जिस को किसी बात की इच्छा न हो, इच्छारहित, निस्पृह, बेतमअ, कामनारहित, क्रि० वि० आप से, इच्छा से, मन से ।

सं० निकाय--(नि,चि=इकट्ठाकरना) पु० समूह, २ घर, स्थान, शरीररहित, परमात्मा ।

प्रा० निकास--(निकालना) पु० निकास, निसार, बाहर आना, २ उपाय, युक्ति, जोड़, तोड़ ।

प्रा०निकालडालना--बोल० काटना, काट डालना, खारिजकरदेना, अलग करना ।

प्रा० निकालदेना-- बोल० छुड़ा देना, बाहर करना, अलग करदेना, दूर करना ।

प्रा०निकाललाना--बोल० लेआना, बचा लाना, ढूंढ़ लाना ।

प्रा० निकाललेना-बोल०लेजाना, उखाड़लेना, काढ़लेना, छांटलेना ।

प्रा०निकालना
निकासना } (सं०निष्कासन, नि,कस्=जाना) क्रि० स० बाहर लाना, बाहर करना, ले लेना, उखाड़ना, प्रकट करना, कढ़ना, बनाना ।

सं० निकृष्ट--(नि=नीचे,कृष्=खेंचना) म्म० पु० नीच, अधम, तुच्छ, जाति से निकाला हुआ ।

सं० निकेत
निकेतन } नि=अच्छी तरह से, कित्=रहना, बसना) धि० पु० घर, स्थान ।

सं० निक्षिप्त--(नि=नीचे, क्षिप्=फेंकना) म्म० फेंका हुआ, डाला हुआ, छोड़ाहुआ, रक्खा हुआ ।

सं० निक्षेप--म्म०पु० धरोहर, अमानत, प्रक्षेप, न्यास ।

प्रा० निखट्टू--गु० सुस्त, आलसी, उड़ाऊ, निर्दयी, कठोर, निठुर, निकम्मा ।

सं० निषङ्ग--पु० तरकस, तूण ।

प्रा०निखरना--क्रि०अ० साफहोना, चमकना, उजलना, उजला होना, फर्श होना ।

सं०निखर्व--पु० अधिक,दीर्घ, ह्रस्व, बौना, दशखर्ब ।

प्रा० निखारना--क्रि० स० छांटना,साफ करना, उजलाना।

फछा करना।

सं० निखात--(खन्=खोदना) म्म० पु० खत्ता, गर्त, खन्दक।

सं० निखिल-(नि=नहीं, खिल=शेष, बाक़ी) गु० पूरा, सम्पूर्ण, सब, सारा।

सं० निगड--पु० बेड़ी, हथकड़ी, शृंखला, ज़ंजीर, आंदु, मोटीज़ंजीर।

सं० निगडित--(गल=बांधना) म्म० पु० बंधाहुआ, कसाहुआ।

सं० निगद--(गद्=कहना)भा० पु० कहना, औषधि।

सं० निगदित--म्म० पु० कथित, कहा हुआ।

सं० निगम--(नि, गम्=जाना) पु० वेद, पवित्र लेख।

सं० निगमनिवासी--(निगम=वेद, निवासी= रहनेवाला) पु० वेदों में रहनेवाला, विष्णु, २ ब्रह्मा।

प्रा० निगलना--(सं० नि, गल्= खाना, वा गृ=निगलना) क्रि० स० लीलना, गले उतारना, घोटना, खा जाना, गट करना।

सं० निगूढ़--(नि+गूढ़) गु० गहरा, सूक्ष्म, गंभीर, २ गुप्त, छिपाहुआ।

प्रा० निगोड़ा--(नि=नहीं, गोड़= पांव, तो इसका अक्षरार्थ हुआ बिन पैर का) गु० निकम्मा, अकर्मी, २ कुकर्मी, दुष्ट, चंडाल।

सं० निग्रह }
निग्रहण } (ग्रह=लेना) भा० पु० रोक, विरोध, २ कलह, युद्ध, भर्त्सन, जलाना, ३ मर्यादा, ४ पराभव, ५ मानत खंडन, ६ चिकित्सा, ७ हठ, ८ क़ैद, बन्धन, ९ घुड़की, धमकी, १० रोष।

सं० निघण्ट--(घट्=इकट्ठा करना) पु० औषधकोष संग्रह, औषधों का गुणदोषसूचक ग्रंथ।

सं० निचय }
निचाय } (चि=चुनना, इकट्ठा करना) पु० राशि, ढेर, समूह, समुच्चय।

प्रा० निचंत }
निचिंत } (सं० निश्चित) गु० बे फ़िक्र, बे सोच, अशोची, असावधान।

प्रा० निचिंतहोना--बोल० काम पूरा करना, निबटाना, बे फ़िक्र होना, फ़ुरसत पाना।

प्रा० निचाई--(नीच) स्त्री० नीच पन, तुच्छता।

प्रा० निचोड़--(निचोड़ना) पु० किसी काम का अन्त, सिद्धान्त, न तीजा, निष्पत्ति, बोझ, भार, अथवा वह चीज़ जिस पर कोई दूसरी चीज़ ठहरे।

प्रा० निचोड़ना--क्रि० स० गीले कपड़ेसे पानी निकालना, मरोड़ना, दबाना, गारना, पेरना।

प्रा० निछावर--स्त्री० उतारा, बलि, कुरबान, बलिहारी।

सं० निज--(नि, जन्=पैदा होना) गु० सर्वना० अपना, स्व, आपका, आत्मीय।

सं० निजगति--स्त्री० अपनी दशा, अपनी हालत।

सं० निजवृत्ति--स्त्री० अपनी जीविका, अपना पेशा।

सं० निजतन्त्र--पु० स्वतन्त्र, स्ववश, खुदमुख्तार।

प्रा० निठल्ला--गु० निकम्मा, सुस्त, आलसी।

प्रा० निठुर--(सं० निष्ठुर) गु० कठोर, निर्दय, कठिन, बड़ा क्रूर, जिसका दिल पत्थर सा कड़ा हो।

प्रा० निठुरता / निठुराई--(सं० निष्ठुरता) भा० स्त्री० कठोरता, निर्दयता, कड़ापन, बेरहमी।

प्रा० निडर--(सं० निर्दर निर्=नहीं दृ=डरना) गु० निर्भय, निधड़क, निशंक, ढीठ, बेडर, अशंक, बेखौफ।

प्रा० निढाल / निढोल--(सं० निर्दोल नि र्=नहीं, दुल्=हिलाना) गु० अचेत, सूनसान, निश्चल, अचल।

प्रा० नित--(सं० नित्य) क्रि० वि० सदा, सर्वदा, निरन्तर, हमेश, हमेशह, रोज रोज।

प्रा० नितउठ / नितउठके--बोल० सदा, निरंतर, रोज़ रोज़, हमेशह, हरदम, हमेश।

प्रा० नितनित--बोल० सदा, नित उठ, हरदम, रोज़ रोज़, निरन्तर, हमेशह।

सं० नितम्ब--(नि=नीचे, तम्ब=जाना, वा स्तम्भ=ठहरना) पु० कमरके नीचे का भाग, पुट्ठा, कूला, चूतड़।

प्रा० नितप्रति--(सं० प्रतिनित्य प्रति=हर एक, नित्य=सदा) क्रि० वि० नित नित, नितउठ, सदा, हररोज़, रोज़ रोज़, हमेशह।

सं० नितान्त--गु० एकान्त, अतिशय, निरन्तर।

सं० नित्य--(नि=निश्चय, अर्थात् जो निश्चयहीहो) क्रि० वि० सदा, सर्वदा, नित, हमेशह, सनातन, निरंतर, लगातार, मामूली।

सं० नित्यकर्म्म--(नित्य=सदा का कर्म्म धर्म का काम) पु० स्नान, सन्ध्या, वंदन, तर्पण, पूजा, जप, तप आदि षट्कर्म, हर एक दिनका अवश्य, करने योग्य काम।

सं० नित्यानित्य--(सं० नित्य+अनित्य) क्रि० वि० निरन्तर, हमेशा, हमेशगी, जावेदानी।

सं० नित्यानन्द--(नित्य+आनन्द)

पु० सदासुख, सदाहर्ष।

प्रा० निथरा--गु० फच्छा, स्वच्छ, निर्मल।

प्रा० निथारना--क्रि० स० ढालना, उफलना, २ निखारना, पानी को अथवा और किसी रसको साफ करना, निर्मल करना।

प्रा० निदरना--(सं० निरादर) क्रि० स० निरादर करना।

सं० निदर्शन--(नि, दृश्=दिखाना) पु० उदाहरण, दृष्टान्त, प्रमाण।

सं० निदाघ--(हन्=मारना, नाशकरना) पु० ग्रीष्मकाल, ग्रीष्म ऋतु, घाम, उष्ण, पसीना।

सं० निदान--(नि=निश्चय, दा=देना) क्रि० अ० अन्तमें, पीछे, पु० आदि कारण, मूलकारण, सबूत, हुक्म, नज़ीर।

सं० निदेश--(दिश्=हुक्मदेना) पु० आज्ञा, हुक्म, निकट, भाजन, बर्तन।

सं० निद्रा--(नि, द्रा=सोना) स्त्री० नींद

सं० निद्रालु--(निद्रा) गु० निंदालु, उँघासा, निंदासा, जिसको नींद आती हो।

सं० निद्राशन--(निद्रा+अशन) पु० सोना, और खाना ख्वाब खुर।

सं० निद्रित--कर्म० पु० सोयाहुआ, नींदमें भराहुआ।

प्रा० निधड़क-(सं० निर्दर, निर्=नहीं, दृ=डरना) गु० निडर, निर्भय, अशंक।

सं० निधन--(नि, हन्=मारना) पु० मौत, मरण, मृत्यु, २ (नि=नहीं, धन दौलत) गु० निर्धन, कंगाल, ग़रीब।

सं० निधनता--(निधन) स्त्री० कंगालपन, ग़रीबी।

सं० निधान--(नि=भीतर, धा=रखना) पु० घर, आधार, स्थान, जगह, ठांव, २ कुबेरका भंडार, खज़ाना, निधि।

सं० निधि--(नि=भीतर, धा=रखना) पु० कुबेर का भंडार, खज़ाना, संपदा, कोष, २ आधार, जगह, स्थान, घर, आसरा।

सं० निनीषा--(नी=प्राप्त करना पैदा करना) स्त्री० लेने की इच्छा, हासिल करने का इरादा।

सं० निनीषु--क० पु० प्राप्तिकी इच्छा करने वाला।

सं० निनेता--क० पु० सरदार, नायक

सं० निन्दक--(निद्=बुराई करना) क० पु० निन्दा=करनेवाला, बुराई करनेवाला, हजो करनेवाला।

प्रा० निन्दना--(सं० निन्दन, निंद बुराई करना) क्रि० स० कलंक लगाना, दूषना, बुराकहना, निन्दा करना।

सं० निन्दा--(निन्दा=निन्दाकरना) स्त्री० बुराई, कलंक, दोष, अपवाद, कुत्सा, धिक्कार।

सं० निन्दित-(निन्दू=निन्दाकरना) र्म्म० पु० दोष लगायाहुआ, दूषित, बुरा, बदनाम।

सं० निन्द्य-(निन्द्=निन्दाकरना) र्म्म० पु० निन्दा के योग्य, बुराई करनेके लायक।

सं० निन्द्यकर्म्म-पु० कुत्सितकर्म्म, बुराकाम।

प्रा० निन्नानबे--(सं० नव नवति नव=नौ, नवति=नब्बे) गु० नब्बे और नौ ९९।

प्रा० निन्नानबेकेफेरमें पड़ना-बोल० धनके इकट्ठा करनेही में लगा रहना २ दुःख में फसना।

प्रा० निपट-गु० बहुत, अधिक, अत्यन्त।

सं० निपतन--(पत्=गिरना) भा० पु० नीचे गिरना।

सं० निपात-(नि=नीचे, पत्=गिरना) भा० पु० गिरना, मौत, मृत्यु, मरण, २ व्याकरण में च आदि और प्र आदि अव्यय।

सं० निपातक--(निपात+अक) नाशक, उजाड़ने वाला, ढहाने वाला।

प्रा० निपातना-(सं० निपात) क्रि० स० गिराना, नाश करना, मारना।

सं० निपातता-र्म्म० पु० नाश किया, उजाड़दिया।

सं० निपातित-र्म्म० पु० अधःपातित, निक्षिप्त, नीचेगिरा, उजाड़ाहुआ।

सं० निपान-(पा=पीना) धि० जलाधार, चरही, कुएंका चहबच्चा, दोहनी, दूधदुहने का पात्र, कठरा।

सं० निपीड़न-(पीड़=मारना, मथना) भा० पु० पीड़ा देना, तकलीफ देना।

सं० निपीड़ित-र्म्म० पीड़ा दिया गया, घातित, निचोड़ा गया।

सं० निपुण-(नि, पुण=पवित्रहोना) गु० प्रवीण, चतुर, बुद्धिमान्।

प्रा० निपुणाई-भा० स्त्री० चतुराई, अक्लमन्दी।

प्रा० निपूता-(सं० निष्पुत्र) गु० जिसके लड़का न हो, पुत्रहीन, निःसन्तान, बे औलाद।

प्रा० निबड़ना, निबटना-(सं० निवर्तन) क्रि० अ० होचुकना, निपटना, खर्चहोना, नाश होना, पूरा होना, खतम होना।

सं० निबन्धन-(बन्ध=बांधना) भा० पु० बन्धन, बन्धेज, रोक, क़ैद।

सं० निबन्ध-भा० पु० प्रमाण, बन्धन, प्रबन्ध, कारण, आनाह रोग, मूत्रादि रोग, ग्रन्थ की वृद्धि, संग्रह विशेष, माहवारी, सालीना, दैवीसम्पत्।

प्रा० निबल-(सं० निर्बल) गु० दुबला, दुर्बल, कमज़ोर।

प्रा० निबाह-(सं० निर्वाह)पु० पूरा करना, निर्वाह, पूरा, समाप्त, गुज़ारा, बसर।

प्रा० निबाहना-(सं० निर्वहण निर्=निश्चय, वह्=सहना, ले जाना) क्रि०स० पूरा करना, सिद्ध करना, समाप्त करना, पार लगाना, २ बचाना, रक्षा करना, ३ वचन पूरा करना, अपना विश्वास बना रखना, ४ व्यवहार करना।

प्रा० निबेड़ना } (सं० निवर्त्तन) क्रि०
निवेड़ना } स० पूरा करना, निपटाना, चुकाना।

प्रा० निबेड़ा } (सं० निवर्त्तन) पु०
निवेड़ा } निबटारा, छुटकारा, पूरा करना।

प्रा० निबुकना-क्रि०अ० छुड़ाना, छुटकारापाना, २ सुकुड़ना, छोटा होना।

सं० निभ-(नि=पास, भा=चमकाना) गु० बराबर, समान, सदृश, पु० कपट, छल, व्याज।

प्रा० निभना-(सं० निर्वहण) क्रि० अ० पार लगना, होना, पूरा होना, बन आना।

सं० निभृत-(निभृ=भरना) गु० नम्र, अचल, निश्चल, एकाग्र, २ निर्जन, बुद्धिमान, र्म्म, ४ गृहीत, लिया गया, छिपा, गुप्तिया।

सं० निभृतं-अव्य० बलात्कार, हठ, आग्रह।

सं० निम-पु० सूची, सूजा, कर्त्त कतरनी, २ घोसला, ३ क्लेश।

सं० निमग्न-(नि=नीचे मस्ज् बना) गु० डूबा हुआ, मग्न।

सं० निमज्जन-(नि=नीचे, मस डूबना) पु० स्नान, न्हाना, जल डूबना, गुस्ल करना।

सं० निमन्त्रण-(नि, मन्त्र=बुला ना) पु० नेवता, बुलाहट, नौता

सं० निमन्त्रित-र्म्म० न्योतागया बुलाया गया।

सं० निमि-एक राजा का नाम जो इक्ष्वाकु राजा का पुत्र था।

सं० निमित्त-(नि, मा=नापना) पु० कारण, हेतु, सबब लिये, २ भाग्य, भाग, शकुन, फल, शक्य।

सं० निमीलन-(मील्=मींचना) भा० पु० संकोचन, आँखमींचना, मृत्यु तन्द्रा, ऊंघ, बड़ी नींद।

सं० निमीलित-र्म्म० पु० मुद्रित बन्दकर लिया।

सं० निमिष } (नि, मिष्=पलक
निमेष } मारना) पु० पलक पल, क्षण, लव।

सं० निम्न-(नि=नीचे, म्ना=अभ्यास करना, याद करना) गु० नीचे जल, २ गहरा।

सं० निम्नगा-(गम्=जाना)स्त्री०नदी।

सं०नियत-(नि,यम्=रोकना)र्म्म० पु० रोकाहुआ, २ ठहरा हुआ, निश्चित, मुकर्रर किया हुआ, क्रि० वि० लगातार।

सं० नियन्ता-(नियम्+तृ)क० पु० शिक्षक,सारथी,पशुप्रेरक। [धर्म्म।

सं० नियति-स्त्री० प्रमाण, इमान,

सं० नियम-(नि, यम्=रोकना, ठहराना) पु० वचन, शर्त, प्रतिज्ञा, संकल्प, वाचा, २ धर्म का काम जैसे व्रत, जागरण, प्रार्थना यज्ञ आदि, ३ रीत, चलन, व्यवहार, क़ायदा।

प्रा० नियर-(सं० निकट) क्रि० वि० पास, नज़दीक।

प्रा० नियराना-(नियर)क्रि०अ० पास आना, नगचाना, पहुँचना, करीब आना।

सं० नियुक्त-(नि, युज्=मिलना) क० पु० लगाहुआ, ठहराया हुआ, स्थापित, मुकर्रर किया, मशग़ूल।

सं० नियुत-(नि, यु=मिलना)गु० दसलाख।

सं० नियोग-(नि, युज्=मिलना) पु० आज्ञा, प्रेरणा, हुक्म, ताकीद, २ काम, शुग्ल, अनुमति।

सं० नियोगी-क० पु० अशुभचिंतक, बदख़्वाह, अहलकार, कारकुन।

सं० नियोजन- (युज्=मिलना) भा० पु० प्रेरणा, ताकीद, लगाना, मिलाना।

सं०निर्-उपस० नहीं, बिन, २ निश्चय, ३ बाहिर, ४ अच्छी तरहसे।

प्रा० निरङ्कार-(सं० निराकार) गु० आकार रहित, बिन आकार, अस्वरूप, पु० परमेश्वर, विष्णु।

सं०निरंकुश-(निर्= बिन, अंकुश= आंकुश) गु० बिन रुकावट, नहीं रोकाहुआ, स्वेच्छाचारी, अपनी इच्छा के अनुसार चलने वाला, स्वतन्त्र, बे अदब।

प्रा० निरखना-(सं० निरीक्षण) क्रि० स० देखना, ताकना।

सं० निरञ्जन-(निर्=चलागयाहै, अञ्जन=मल अथवा अन्धकार तमोगुणआदि)गु०निर्मल,निस्पृह,स्वच्छ, निर्दोष, काम क्रोध से रहित, बेमक्र, बेरिया, परमेश्वर, परब्रह्म।

सं० निरत-(नि=भीतर, रत=लगा हुआ) गु० लगा हुआ, नियुक्त, आसक्त, तत्पर, मशग़ूल।

सं०निरति-स्त्री० अप्रीति, बेग़र्ज़ी।

सं० निरधार-भा० पु० निश्चय, निर्णय, ठीक।

सं० निरन्तर-(निर्=नहीं, अन्तर= बीच)क्रि० वि० लगातार, नितउठ।

सं० निरपराध-(निर्=नहीं, अप-

राध=पाप) गु० निष्पाप, निर्दोष, शुद्ध।

सं० निरय-पु० नरक, दोजख।

सं० निरर्गल-(निर्=नहीं, अर्गल= संकली) गु० बेरोक, निरंकुश, बे जंजीर, बेसाँकरका।

सं० निरर्थक-(निर्=नहीं अर्थ= प्रयोजन)गु० निष्प्रयोजन, वृथा, निष्फल, अर्थ हीन, बेफायदा।

सं० निरवकाश-(निर्+अवकाश) गु० बे फुरसत, बे छुट्टी।

सं०निरवद्य-(निर्=नहीं, अवद्य =दोष) गु० निर्दोष, बे ऐब।

सं० निरस-(नि=बिन,रस = स्वाद) गु०फीका,बेस्वाद,अलोना,फीका।

सं० निरसन-(निर्+असन, अस् =फेकना) पु० परित्याग, अतिक्षेप, वध, निकारना।

सं० निरस्त-स्मी० पु० हार गया, फेकागया, मारा गया, भर्त्सित, जलायागया, लस्तपस्त।

प्रा० निरा- (सं०निरालय, निर= बाहिर, एकान्त, आलय=जगह) गु० केवल, मात्र, बिलकुल, सिर्फ।

सं० निराकार-निर्=नहीं, आकार =रूप) गु० अस्वरूप, निरंकार, पु० परमेश्वर, अरूप।

सं० निरादर-(निर्=नहीं, आदर =मान) पु० अपमान, अमान, अप्रतिष्ठा, बेइज्जती, बे क़दरी।

सं० निरामय- (निर्=नहीं, आमय =रोग) गु० तन्दुरुस्त, नीरोग, सुखी, पु० सुअर, २ बनकाबकरा।

सं० निरामिष-(निर्=नहीं, आमिष मांस)गु० मांस बिना, बिन मांस का (भोजन)।

सं० निरायुध-(निर्=नहीं, आयुध शस्त्र) गु० बिन शस्त्र, बे हथियार।

प्रा०निराला-(सं० निरालय, निर् =बाहिर, एकान्त, आलय=जगह) गु० एकान्त, निर्जन, अलग, २ निरा, केवल, मात्र, ३ अनूठा।

प्रा०निरावना-क्रि० स० खेती से कूड़ा करकट, जुदाकरना, साफ करना, पछोड़ना।

सं० निराश-(निर्=नहीं, आश= उम्मैद)गु० आशाहीन, नाउम्मैद, बेसहारा, बेभरोसा।

सं० निराश्रय-(निर्=नहीं, आश्रय =आसरा) गु० बिन आसरे।

सं० निराहार-(निर=बिन, आहार =खाना) पु० उपवास, उपास, फाका, गु० बिनभोजन, बिनखाये।

सं० निरीक्षण-(निर्=निश्चय, ईक्ष =देखना) भा० पु० देखना, दर्शन, दृष्टि, नजरकरनी, ताक।

सं०निरीह-(निर=नहीं, ईहा=इच्छा, चेष्टा)गु० जिसको किसी बात की

अथवा चीजकी इच्छा न हो, बे चेष्टा, निःस्पृह, बे नयाज़, बेलालच।

सं० निरुक्त--(निर्=निश्चय, उक्त=कहा हुआ, वच्=कहना) पु० वेदका एकअंग जिसमें वेदके शब्दोंका अर्थ लिखा, वेद का व्याकरण और कोष, गु० कहा हुआ, कथित।

सं० निरुत्तर--(निर्=नहीं उत्तर=जवाब) गु० चुप, अवाक्, लाजवाब, बेजवाब।

सं० निरुत्साह--(निर=बिन, उत्साह=उमंग) गु० जिसके मन में किसी बात की उमंग नहो, सुस्त, आलसी, ढीला।

सं० निरुपम-(निर्=नहीं, उपमा=बराबरी) गु० जिसकी बराबरी नहीं हो सके, अनूप, अनुपम, अतुल्य, अपूर्व, बे मिस्ल।

सं० निरुपाधि--(निर्=नहीं, उपाधि=गुण नाम, विशेषण वा छल) गु० उपाधिरहित, गुणरहित, निर्गुण, शुद्ध, निर्मल, बेखशखशा, बेझगड़ा।

सं० निरूप--(नि=नहीं, रूप=आकार) गु० निराकार, अस्वरूप, अरूप, बे सूरत, पु० परमेश्वर।

सं० निरूपण--(नि=निश्चय, रूप्=आकार बांधना, वा देखना) पु० वर्णन, निर्णय, निर्द्धार, विचार, दर्शन, देखना।

सं० निरोग--(नि=नहीं, रोग=बीमारी) गु० भला, चंगा, अरोग, तंदुरुस्त।

सं० निर्गत--(निर्=बाहिर, गम्=जाना) क्र० निकलाहुआ, बाहिर गया हुआ।

सं० निर्गन्ध--(निर्=नहीं, वा बिन, गन्ध=बास) गु० बिना बास, बिन महक, गन्ध रहित।

सं० निर्गम--(निर्=बाहिर, गम्=जाना) भा० पु० निकलना, बाहर जाना।

सं० निर्गुण--(निर्=नहीं, गुण=हुनर, चतुराई, वा सत, रज, तम) पु० परमेश्वर, परमात्मा, ब्रह्म, गु० निर्विकार, निराकार, निरंजन, सत रज और तम इन तीनों गुणों से रहित, २ मूर्ख, गुणहीन, निकम्मा।

सं० निर्घर्षण--(घर्ष=रगड़ना) भा० पु० घिसना, रगड़ना।

सं० निर्घोष--(घुष=शब्द करना) शब्द, आवाज़।

सं० निर्जन--(निर्=बिन, जन=मनुष्य) गु० एकान्त, जहां कोई मनुष्य न हो।

सं० निर्जर-(निर्=नहींजरा=बुढ़ापा) पु० देवता, २ अमृत, गु० अजर, अमर।

सं० निर्जल--(निर्=बिन, जल=पानी) पु० जंगल, मैदान, मरु-

स्थल, ऐसी जगह जहां पानी न मिले,गु० ऊसर,उजाड़, बिन पानी, जल बिन, सूखी (धरती)।

सं० निर्जित--(निर्=नहीं, जि=जीतना)गु०अजय, अपराजित, अजीत, २ परास्त, पराजित, जीतागया।

सं० निर्जीव--(निर्=बिन, जीव=प्राण) गु०अचेत, जड़, प्राणहीन।

सं० निर्झर--(निर्=नीचे,झॄ=ऊपर का घटना वा गिरना) पु० झरना, पहाड़ का सोता, चश्मा।

सं० निर्णय--(निर्=निश्चय, नी=पाना वा चलाना) पु० निश्चय, विचार,विवेचना, मीमांसा,फ़ैसला।

सं० निर्णीत--र्म्म० पु० निश्चय कृत, फ़ैसलहुआ, विचारित।

प्रा० निर्त--(सं० नृत्य) पु० नाच।

प्रा० निर्दई--(सं० निर्दय:. निर=बिन+दया) गु० जिसके मन में दया न हो, कठोर, कड़ा, दया हीन, जिसका दिल पत्थरसा कड़ा हो, संगदिल, निठुर।

सं० निर्दम्भ--गु० निश्छल, निष्कपट, बेमक्र।

सं० निर्दिष्ट--(निर्=अच्छीतरहसे दिश्=देना वा दिखाना, जताना) र्म्म० पु० अच्छी तरह से कहा हुआ, दिखलाया हुआ, निर्णय किया हुआ, नियत किया गया।

सं० निर्दोष--(निर्=बिन, दोष=अपराध) गु० निरपराध, दोषहीन, बिन चूक,बे क़सूर।

सं० निर्द्वन्द्व--(निर्=बिन, द्वन्द्व=दो, वा बखेड़ा)गु० बिन बखेड़े, बे झगड़े; आराम से, चैनसे।

सं० निर्धन--(निर्=बिन, धन=दौलत) गु० ग़रीब, कंगाल, दरिद्री

सं० निर्धार } निर्धारण } (निर=निश्चय, धृ रखना) पु० निश्चय निर्णय,२पृथक् करण,जुदाकरना

सं०निष्पक्ष--(निर्=बिन,पक्ष=सहाय) गु० असहाय, बेवश, अनाथ बे मदद।

सं० निष्फल--(निर+फल) गु निष्फल, वृथा, व्यर्थ।

सं० निर्बन्ध--(बन्ध=बन्धना) भा पु०बेरोक,बेक़ैद,बेसहारा,बेरोज़गा

सं० निर्बल--(निर्+बल) गु निबल, दुर्बल, दुबला, कमज़ोर।

सं० निर्बुद्धि--(निर्+बुद्धि) गु मूर्ख,असमझ,अनसमझ,अज्ञान।

सं० निर्भय--(निर्=नहीं,भय=डर) गु० निडर, बेख़ौफ़।

सं० निर्भर--(निर्=निश्चय, भृ भरना) गु० पूरण, पूरा, बहु अत्यन्त, अतिशय।

सं० निर्म्मल--(निर्=बिन, मल मैल)गु०पवित्र,शुद्ध,स्वच्छ, उजल

साफ। [कर्ता।

सं० निर्माणक--क० पु० मुसन्निफ,

सं० निर्माण--(निर्, मा=नापना, वा बनाना) पु० बनावट, रचना, तसनीफ़ २ सार।

प्रा० निर्म्माणकरना-- क्रि० स० बनाना, रचना।

सं० निर्म्माल्य--(निर्मल से, अथवा निर् और माल्य फूल वा फूलों की माला) भा० पु० देवता का जूंठा प्रसाद, देवता को चढ़ाया हुआ नैवेद्य, २ पवित्रता, सफाई, फर्छाई, गु० पवित्र, साफ, शुद्ध।

सं० निर्मित--(निर्, मा=नापना, वा बनाना) मर्म० बनाया हुआ, रचित, कल्पित।

सं० निर्मूल--(निर्=बिन, मूल=जड़) गु० उखड़ाहुआ, जड़सेखोदाहुआ, बिन जड़, निर्बीज, बे ठिकाने, २ उजड़, नाश, ध्वंस।

सं० निर्मोही--(निर्=बिन, मोह= प्यार) गु० निर्दय, कठोर, कड़ा।

सं० निर्यास--(यस्=निकलना) पु० वृक्षरस, गोंद, गंध।

सं० निर्लज्ज--(निर्=बिन, लज्जा= लाज) गु० निर्लज्ज, बेशर्म, नकटा।

सं० निर्लेप--(निर् = नहीं, लिप= लेपना) गु० बेलाग, बिनलगाव, अलेप, बेनोस।

सं० निर्लोभ, निर्लोभी--(निर्=बिन, लोभ= लालच) गु० जिस को लालच न हो, लोभ हीन, बेतमा।

सं० निर्वंश--(निर्=बिन, वंश=कुल) गु० वंश हीन, जिस के वंश न हो, अपूता, निपूता, बेऔलाद, लावल्द।

प्रा० निरवहे-गु० बीतगये, छूटगये।

सं० निर्वाचन--(वच्=कहना) भा० पु० चुनना।

सं० निर्वाचक--क० पु० चुननेवाला।

सं० निर्वाण--(निर्, वा=बहना, जाना) पु० मुक्ति, मोक्ष, लयहोना, गु० बुता हुआ, बुझा हुआ, ठंढा किया हुआ, २ नष्ट।

सं० निर्वात--गु० वायु रहित स्थान, बे हवा का।

सं० निर्वास--(निर्+वास=रहना) भा० पु० निकालना, बाहर करना, मारना, मना करना।

सं० निर्वासक--(निर्वास्+अक) क० पु० निकालने वाला। [गया।

सं० निर्वासित--र्म्म० पु० निकाला

सं० निर्वाह--(निर्=निश्चय, वह= लेजाना) पु० निबाह, पूराकरना, समाप्ति।

सं० निर्विकल्प-(निर्=नहीं, विकल्प भेद भ्रम) गु० भेद और भ्रम से रहित, बेशक, मुद्दा।

सं० निर्विकार--(निर्=बिन,विकार =बदलना)गु० नहीं बदला हुआ, जिस मे किसीतरह का विकार वा दोष न हो, एक भाव, एक रंग।

सं० निर्विघ्न--(निर्=बिन,विघ्न=बिगाड़) गु० विघ्न रहित, बिन बिगाड़, बेखटके।

सं० निर्बीज--(निर्+बीज) गु० निर्मूल, बीज रहित, बिन बीज।

सं० निलय--(नि=भीतर,ली=लेना वा मिलना) पु० घर, स्थान।

सं० निवारण--(नि, वृ=घेरना रोकना) पु० रोक, रुकावट,अटकाव, बाधा,दूरकरना,हटाना, निवारना।

प्रा० निवारना--(सं० निवारण) क्रि० स० रोकना, दूर करना, अटकाना।

सं० निवास-(नि=भीतर वस्=रहना) पु० वासा, घर, मकान,डेरा, जगह।

सं० निवासी- (निवास) गु० रहने वाला, बसने वाला, वासी।

सं० निविड--(नि=बहुत,विड्=इकट्ठा होना) गु० गहरा,घना,सघन,गुंजान।

सं० निवृत--(वृ=घेरना) भू० पु० छूटाहुआ,मुक्त,फरागत पायाहुआ।

सं० निवृत्ति--भा० स्त्री० छुट्टी,रिहाई, सुख, सिद्धि।

सं० निवेदन--(नि=अच्छी तरहसे विद्=जानना) पु० विनती, प्रार्थना,विज्ञापन,विनयपत्र,दरख्वास्त।

सं० निश् } (नि=सब तरह से, शो
निशा } =पतला करना, अर्थात् कामोंको पूरा करना) स्त्री० रात, रात्री।

सं० निशाकर--(निशा=रात, कर=करने वाला, कृ=करना) पु० चांद, चंद्र, चन्द्रमा।

सं० निशाचर--(निशा=रात, चर =चलने वाला, वा खाने वाला चर्=चलना वा खाना) पु० १ राक्षस, २ भूत, ३ उल्लू, ४ चोर, ५ गीदड़, गु० रात को चलने वाला, वा खाने वाला।

सं० निशाचरी-- (निशाचर) स्त्री० राक्षसी २ वेश्या, व्यभिचारिणी, कुलटा, ३ केशिनी नाम गंधद्रव्य।

सं० निशानन } (निशा+आनन)
निशामुख } सायंकाल, शाम।
रात्रिमुख }

सं० निशानाथ } (निशा=रात,
निशापति } नाथ वा पति=राजा) पु० चांद, चन्द्रमा, चंद्र

सं० निशिनाथमुखी-- स्त्री० चन्द्रमुखी।

प्रा० निशि } (सं० निश् वा निशा) स्त्री०
निसि } रात, रात्री, रजनी।

प्रा० निशिचर } (सं० निशाचर
निसिचर } से वा निशि रात में चर् चलने वाला) पु० राक्षस।

सं० निशित--(नि=अच्छी तरह से शी=तीषा करना) पु० तीखा, तीक्ष्ण, चोखा, शाणित, पैना।

सं० निशीथ--(नि=अच्छी तरह+शी=सोना) पु० अर्द्धरात्रि, आधी रात।

सं० निशीथिनी-- स्त्री० रात्रि।

सं० निशुम्भ--(नि=निश्चय, शुम्भ् =मारना) पु० एक राक्षस का नाम, जिसको दुर्गा ने मारा।

सं० निशेश--(निशा=रात, ईश= राजा) पु० चांद, शशि।

सं० निश्चय--(निर्=अच्छीतरह से चि=इकट्ठा करना) भा० पु० निर्णय, ठीक करना, पक्का करना, भरोसा, विश्वास, गु० ठीक, सच, असंशय।

सं० निश्चर--(निश्=रात, चर=चलने वाला, चर्=चलना) पु० राक्षस।

सं० निश्चल--(निर्=नहीं, चल्=चलना) गु० अचल, अटल, स्थिर, ठहरा हुआ, जो नहीं चले।

सं० निश्चला-स्त्री० पृथ्वी, जमीन।

सं० निश्चित--(निर्=अच्छीतरहसे, चि=इकट्ठा करना) र्म० पु० निश्चय किया हुआ, निर्णय किया हुआ।

सं० निश्चिन्त--(निर्=नहीं, चिन्ता =शोच) गु० निचिन्त, बे फिक्र, बिनचिंता, चिन्तारहित।

सं० निश्वास--(नि=बाहिर, श्वस् =सांस आना वा लेना) पु० मुंह और नाक से बाहर निकली हुई हवा, सांस, निसास।

सं० निषङ्ग-- (नि, षञ्ज्=मिलना) पु० भाथा, तूण, तूणीर, तर्कस।

सं० निषण्ण-- (नि=नहीं, षद्=चलना) र्म० पु० बैठा हुआ, आसीन, आसन्न।

सं० निषाद-- (नि, षद्=मारना) पु० चंडाल, जो ब्राह्मण से शूद्री के गर्भ में पैदा हो, मल्लाह, २ एकराग का नाम।

सं० निषिद्ध--(नि, षिध्=जाना, पर नि, उपसर्ग के साथ आने से अर्थ हुआ रोकना) र्म० रोकाहुआ, निवारित, वर्जित।

सं० निषेधक--(नि, षिध्=अक) कृ० पु० रोकनेवाला, मनाकरनेवाला।

सं निषेध--(नि, षिध्=रोकना) पु० रोक, रुकाव, बाधा, नाहीं।

सं० निष्क-पु० अशर्फी, सोनेकारुपया, दीनार।

सं० निष्कण्टक--(निर्=विन, कंट-

क=कांटा) गु० बिन दुःख, अकण्टक, बिन शत्रु ।

सं० निष्कर—(निर्=बिन, कर=लगान) गु० बेलगान, मुआफी ।

सं० निष्कपट—(निर्=बिन, कपट=छल) गु० बिन छल, सीधा, सरल, सच्चा ।

सं० निष्कलङ्क—गु० निर्दोष, बेदाग, बे अयब ।

सं० निष्काम—(निर्=बिन, काम=इच्छा) गु० निकाम, जिसको किसी बात की इच्छा न हो, निस्पृह ।

सं० निष्कारण—गु० बेप्रयोजन, बेसबब ।

सं० निष्केवल—(निर्+केवल) गु० अकेला, तनहा ।

सं० निष्क्रमण—(निर्+क्रम=चलना) भा० पु० बाहर निकलना, शिशुको चौथे महीने बाहर निकालते हैं, उसको कहते हैं ।

सं० निश्चेष्ट—गु० बेकाम, चेष्टाहीन, तदबीरसेखाली ।

सं० निष्ठा—भा० स्त्री० धर्म में तत्परता, श्रद्धा, विश्वास, क्लेश, व्रत, उत्पत्ति, नाश, अंत, उत्कर्ष ।

सं० निष्ठुर—(नि, स्था=ठहरना) गु० निठुर, निर्दयी, कठोर, कड़ा, कठिन ।

सं० निष्पक्षपात—गु० मित्रतारहित, [illegible] बिलानरफदारी, नहीं [illegible], और न लेना, मददनदेना, बेतअस्सुब ।

सं० निष्पत्ति—(निर्=अच्छी भांति से, पद, जाना) स्त्री० सिद्धि, पूरा होना, सिद्ध होना ।

सं० निष्पन्न—(निर्, पद्=जाना) गु० सिद्ध, पूरा, पूर्ण, पूरा किया हुआ ।

सं० निष्पाप, निःपाप—(निर्=नहीं, पाप=अपराध) गु० निरपराध, निर्दोष ।

सं० निष्फल—(निर्+फल) गु० वृथा, विफल, निरर्थक, फलहीन ।

सं० निस्—उपस० नहीं, २ निश्चय, ३ सब तरहसे, सबप्रकारसे ।

प्रा० निसरना—सं० निःसरण, नि=बाहर, सृ=जाना) क्रि० अ० निकलना, निकसना ।

सं० निसर्ग—(नि, सृज्=उपजाना) पु० स्वभाव, स्वरूप, सृष्टि, खिलकत ।

प्रा० निसास—(सं० निःश्वास) पु० सांस, उसास, पछतावा ।

प्रा० निसेनी, निसैनी—(सं० निःश्रेणी) स्त्री० सीढ़ी, सोपान ।

सं० निसूदन—(नि, सूद्=खोदना) भा० पु० मारना, वधकरना, कतल करना, खोदना ।

सं० निस्तार—(निर्=निश्चय, तॄ=पार होना) पु० उद्धार, मुक्ति, मोक्ष, पार होना, बचाव, छुटकारा, [illegible]

जन्म मरण का निबेड़ा फराग़त।

प्रा॰ निस्तारना-(सं॰ निस्तारण) क्रि॰ स॰ बचाना, उबारना, मुक्ति देना, जन्म मरण से छुटकारा करना।

प्रा॰ निस्तारा--(सं॰ निस्तार) पु॰ छुटकारा, निबेड़ा, मोक्ष, मुक्ति २ बर, आशिष।

सं॰ निस्त्रस--स्त्री॰ संगीन बन्दूक की।

सं॰ निस्सन्देह (निस्=बिन, संदेह =शक) गु॰ निश्चय, बेशक।

सं॰ निहत-(निहन्=मारडालना) म्र्म॰ पु॰ मारागया, वधकियागया।

सं॰ निहित-(नि=निश्चय, धा=धरना) म्र्म॰ स्थापित, गुप्त, स्थित, निक्षिप्त।

प्रा॰ निहाई-स्त्री॰ घन, हथौड़ा।

प्रा॰ निहार-पु॰ कुहर, कुहिरा।

प्रा॰ निहारना-क्रि॰ स॰ ताक लगाना, देखना।

प्रा॰ निहाल-गु॰ प्रसन्न, सुखी, आनंदित, हर्षित, बढ़ा हुआ।

प्रा॰ निहाली-स्त्री॰ रज़ाइ, फर्द।

प्रा॰ निहुरना-क्रि॰ अ॰ झुकना, नमना, दबना।

प्रा॰ निहोरा--पु॰ उपकार, २ बिनती, इहसान।

प्रा॰ नींद, नींद (सं॰ निद्रा) स्त्री॰ सोने की चाह, ऊंघाई।

प्रा॰ नींदउचाटहोना--बोल॰ नींद नहीं आना, नींद का टूटना, आंख नहीं मिलना।

प्रा॰ नींदभरसोना-बोल॰ गहरी नींद आना, चैन से सोना।

प्रा॰ नींबू-(सं॰ निम्बूक, निम्ब् =सींचना) पु॰ लेमू, एक प्रकार का खट्टा फल।

प्रा॰ नीका, नीकौ (फा॰ नेक) गु॰ भला, सुन्दर, अच्छा, सुडौल, २ चंगा।

प्रा॰ नीगुने-(सं॰ निर्गण) गु॰ बेगिनत, बेशुमार, अनगिनत, नहीं गिना हुआ।

सं॰ नीच-(नि=नीचे, अञ्च=जाना अथवा नि=नीच संपदा को, चम् =खाना, भोगना) गु॰ नीचा, अधम, छोटा, निकम्मा, निकृष्ट, कमीना।

प्रा॰ नीचा-(सं॰ नीच) गु॰ नीच, अधम, छोटा, पु॰ तला, तळ।

प्रा॰ नीचाऊंचा-(बोल॰ ना बराबर ज़मीन, न हम वार।

प्रा॰ नीचे-(सं॰ नीचैस्) क्रि॰ वि॰ तले।

सं॰ नीचगा--(नीच=नीचे, गम्= जाना) स्त्री॰ नदी, दरिया।

सं॰ नीड़-(नि=अच्छीतरहसे, इल्= सोना जिसमें) पु॰ पखेरुओं का घर, घोंसला, खोंता, आशियाना।

सं॰ नीत-(नी+त, नी=ले जाना)

र्म० पु० प्राप्त, लाया गया।

सं० नीति--(नी=ले जाना) स्त्री० अच्छा चलन, उचित व्यवहार, राज नीति, देश सम्बंधी विद्या, न्याय, ४ प्रकार के हैं साम, दाम, दण्ड, भेद।

सं० नीति कला--स्त्री० राजनीति, हिकमत अमली, पालसी।

सं० नीतिधात्री } मुहकमा
नीतिविधायक } दीवानी।

सं० नीतिज्ञ-(नीति+ज्ञा जानना) पु० नीति जानने वाला, राज ज्ञानी।

प्रा० नीम } (सं० निम्ब, निम्बू=सींचना) पु० एक वृक्ष
नींब } का नाम।

सं० नीर--(नी=लाना) पु० पानी, जल, २ रस।

सं० नीरज--(नीर=पानी, जन्=पैदा होना) पु० कमल, कँवल, २ ऊद बिलाव, गु० पानी में पैदा हुई चीज़।

सं० नीरद--(नीर=पानी, दा=देना) पु० बादल, मेघ, घन।

सं० नीरधर--(नीर=पानी, धृ=रखना) पु० बादल, मेघ।

सं० नीरनिधि--(नीर=पानी, निधि =खजाना) पु० समंदर, समुद्र, सागर।

सं० नीरस--(नि=बिन, रस=स्वाद) गु० निरस, फीका, असार, रसहीन।

सं० नील--(नील्=नीला होना) गु० नीला, काला, कृष्ण २ सौ खरब। स्त्री० एक पौधा जो नीला रंगने के काम में आता है, २ एक नदी का नाम जो मिसर देश में है, पु० एक पहाड़ का नाम, २ एक बानर का नाम, ३ कुबेर की नौ निधि अथवा खज़ाने में का एक खज़ाना।

सं० नीलकंठ--(नील=नीला, कण्ठ =गला) पु० महादेव जिन्हों ने समुद्र मथने के समय विष निकला था उसको पिया इस लिये उनका गला नीला हो गया, २ मोर, मयूर, ३ एक पखेरू का नाम कटनास।

प्रा० नीलगाव--(सं० नील गौ) स्त्री० नीली गाय, रोझ।

सं०नीलग्रीव--(नील=नीली, ग्रीव =गरदन) पु० महादेव, शिव, गु० नीला गलावाला, जिसका गला नीला हो, २ मोर।

प्रा०नीलम--(सं० नीलमणि) पु० नीले रंग का रतन, जमुर्रुद।

सं० नीलमणि--(सं० नील=नीला, मणि=रतन) स्त्री० नीलम, जमुर्रुद।

प्रा० नीला--(सं० नील)गु० नील में रंगा हुआ, नीलवर्ण।

प्रा० नीलाथोथा--- पु० तूतिया, नीलांजन।

प्रा० नीलाम--(पोर्तुगालकी भाषा के शब्द "लेलाम" "Leilam" का अपभ्रंस) पु० किसी चीज़ को एक मोल पर नहीं बल्कि पहले कुछ मोल बोलना फिर ज्यों ज्यों ग्राहक मोल बढ़ाते जाते हैं अन्त में जो सब से अधिक बोले उसीको बेच देना।

सं० नीलाम्बर-(नील=नीला, अंबर=कपड़ा जिसके हो) पु० बलदेव, २ शनैश्चर ३ नीला कपड़ा।

सं० नीलोपल } नीलोत्पल } नील=नीला, उपल=पत्थर, उत्पल=कमल, पु० नीला पत्थर, नीलमणि वा नीलकमल।

सं० नीवार-(नी, वृ=आच्छादनकरना घेरना) पु० तिन्नी का वृक्ष, तालाव का चावल।

सं० नीवी—स्त्री० बनियोंका मूल धन, पूंजी, कमरबन्द, इजारबन्द, नारा।

सं० नीवृत्-पु० देश, जनपद, जनस्थान।

सं० नीशार-(नी+शृ=मारना) पु० तम्बू, क़नात डेरा, कमल, रेशमीवस्त्र।

सं० नीहार-(नी, हृ=लेना) पु० घना पाला, ओस, कुहर, शिशिर।

सं० नूतन } नूत्न } (नव, नु=सराहना) पु० नया, नवीन, टटका।

प्रा० नून } नोन } (सं० लवण) पु० नि-मक, नमक, लोन, खार।

सं० नूपुर—(नू=गहना, पुर आगे जाना, अर्थात् जो सब गहनों के आगे रहता है) पु० बिछिया, पांव की अँगुलियों में पहनने का गहना, नूपुर। [मनुष्य, पुरुष, नर, मर्द।

सं० नृ-(नी=लेजाना वा चलना) पु०

सं० नृग—पु० एक सूर्यवंशी राजा का नाम।

सं० नृत्त } नृत्य } (नृत्=नाचना) पु० नाच, नर्त्तन।

सं० नृत्यक--(नृत्=नाचना) पु० नाचने वाला, नचवैया।

सं० नृप-(नृ=मनुष्य, प=पालनेवाला, पा=पालना) पु० राजा, भूपाल, भूपति।

सं० नृपघाती—(नृप=राजा, हन्=मारना) क० पु० राजाओं का मारनेवाला, परशुराम।

सं० नृपति-(नृ=मनुष्य, पति=स्वामी मालिक) पु० राजा।

सं० नृपाल--(नृ=मनुष्य, पाल=पालना) पु० राजा।

सं० नृशंस- (नृ=मनुष्य, शंस्=मारना) गु० मारनेवाला, दुष्ट, दुःखदायी, क्रूर, परद्रोही, बेहया, बदकार।

सं० नृसिंह--(नृ+सिंह) पु० नरसिंह अवतार।

सं० नृहरि--(नृ=मनुष्य, हरि=सिंह) पु० नरसिंह अवतार।

प्रा० नेक } गु० कुछ,थोड़ा, अल्प,
नेकु } तनक, ज़रा।

सं० नेक्ता--(निज्+तृ, निज् पोषण करना) क० पु० पोषक, पालक, पोषणकर्ता।

प्रा० नेग } पु० व्याह में अथवा
नेगचार } और किसी उत्सव में अपने नातेदारों को कुछ देना, व्याह में पुरोहित की दक्षिणा, २ बांटा हिस्सा।

प्रा० नेगी--(नेग)गु० बटानेवाला, हिस्सेदार, २ परजा, मंगता।

सं०नेजक--(निज्+अक,निज्=शुद्ध करना) क०पु०धोबी,परिष्कारक।

सं० नेजन--भा० पु० शोधना।

सं० नेता--(नी=ले जाना) क० पु० लेजानेवाला।

सं०नेतव्य--कर्म०पु०लेजाने योग्य।

सं० नेति--(न=नहीं, इति=यह)गु० ऐसा नहीं, यह नहीं, जिसका पार नहीं, अनन्त, परमेश्वर का गुण।

प्रा० नेती--(सं०नेत्र,नी=ले जाना वा चलाना) स्त्री० दही मथनेकीरस्सी।

सं० नेत्र--(नी=ले जाना,वा चलाना वा पहुँचाना, वा पाना) पु०आंख, नयन, लोचन, २ नेती, गु० नायक, चलाने वाला।

सं०नेत्रच्छद--(नेत्र=आंख, छद=ढकना) पु० नेत्र पुट, आँख पट।

सं० नेत्राम्बु--(नेत्र=आंख, अम्बु=पानी) पु०आंसू,आंख का पानी।

सं० नेपथ्य } पु० पर्दा से रास्ता,
नैपथ्य } आड़का रास्ता खिलाने के लिये सजी भूमि, मतान्तर, अलंकार, पंथ।

सं० नेपाल--पु० एक देश का नाम।

प्रा० नेपुर--(सं० नूपुर) पु०नूपुर।

प्रा० नेम--(सं० नियम) पु० वचन प्रण, प्रतिज्ञा, संकल्प, वाचा, होड़, हठ, २ व्रत संयम आदि।

सं० नेमि--स्त्री० धुरी जिसमें पहिया लगे पु० तिन्नी, जङ्गली चावल।

प्रा०नेमधर्म--(सं०नियम धर्म)पु० उपवास, व्रत, २ अच्छा चलन।

प्रा० नेरे } (सं० निकट) नित्य
नेरौ } पास, समीप, नगीच।

प्रा० नेव } स्त्री० भीत की जड़।
नींव }

प्रा० नेवतना } (सं० निमंत्रण)
न्योतना } क्रि०स०न्योतादेना, खिलाने के लिये बुलाना।

प्रा० नेवता } (सं०निमंत्रण) पु०
नोता } बुलाहट, खिलाने के
न्योता } लिये बुलाना।

प्रा० नेवर } पु०घोड़ेकेपांवका घाव
नेवल } अथवा रोग।

प्रा० नेवल } (सं० नकुल) पु० एक
नेवला } जानवर का नाम ।

प्रा० नेवार } (फ़ा० नेवार) स्त्री० एक
निवार } प्रकार की चौड़ी पट्टी
या कोर जिससे पलंग बुने जाते हैं ।

प्रा० नेह-(सं० स्नेह) पु० प्यार, प्रीति,
मोह, मुहब्बत । [मित्र ।

प्रा० नेही-(सं० स्नेही) गु० प्यारा,

प्रा० नैन } (सं० नयन) पु० आं-
नैना } ख, नेत्र, लोचन ।

सं० नैमित्तिक-भा० पु० निमित्त, स-
म्बन्धी, निमित्तसे आया, गैर मअमू-
ली, जो रोज़ न हो ।

सं० नैमिष-(निमिष, अर्थात् जहां
विष्णु पल भर में एक राक्षस को
माराथा) पु० एक तीर्थ का नाम ।

सं० नैमिषारण्य-(नैमिष+अर-
ण्य) पु० एक जंगलका नाम जहां
बहुत ऋषि रहते थे और जहां सू-
त जीने इनसनकादि ऋषियों
को महाभारत और पुराण आदि
सुनाये थे ।

सं० नैयायिक- (न्याय) पु० न्याय
शास्त्र जानने वाला, न्यायशास्त्र
का पण्डित, मुन्सिफ़ ।

सं० नैराश्य-भा० पु० निरासरा,
नउम्मेदी, आशाशून्य, आशारहित ।

सं० नैर्ऋत्य-(नैर्ऋत=एक राक्षस
का नाम जो ईस्वरेरा का दिक्पाल
है) पु० दक्षिण पश्चिम का कोण ।

सं० नैवेद्य-(निवेद) पु० देवता का
भोग, प्रसाद, चढ़ावा, बलि ।

सं० नैसर्गिक-भा० पु० स्वाभावि-
क, तबयी, दिली ।

सं० नैष्ठिक-भा० पु० धार्मिक, मुअत
क़िद, विश्वासिक, स्त्री० नैष्ठिका, धा-
र्मिका, विश्वासिका ।

सं० नैहर-पु० पीहर, मैका, स्त्री के
बाप का घर ।

प्रा० नोकचोक-बोल० स्त्री० संके-
तों से बातें करना, इशारों से बातें
करना, २ लागडाट ।

प्रा० नोकझोक-बोल० स्त्री० खैंचा
खैंची, चढ़ाउपरी ।

प्रा० नोचना-क्रि० स० खसोटना,
बकोटना, खरोटना, छीलडालना,
नख से उखाड़ना ।

फ़ा० नौकर-पु० चाकर, सेवक, दास ।

फ़ा० नौकरी-स्त्री० चाकरी, सेवा ।

सं० नौ } (नुद्=चलाना) स्त्री०
नौका } नाव, तरणी ।

प्रा० नौखंड-(सं० नव खण्ड) पु०
पृथ्वी के नव भाग, १ भरत २ इ-
लावृत ३ किम्पुरुष ४ भद्र ५ केतुमा-
ल ६ हिरण्य ७ कुरु ८ रम्य ९
हरिवर्ष ।

प्रा० नौगरी-स्त्री० स्त्रियों के हाथ में
पहनने का गहना, नौगिरही ।

प्रा० नौछावर-स्त्री० निछावर,

दक्का, उतारा, बलिहारी।

प्रा० नौज़-क्रि० वि० ऐसा न हो।

प्रा०नौढ़ाना-(सं०नमन, नम्=झुकाना) क्रि० स० सिर झुकाना।

प्रा० नौतना-(सं० निमन्त्रण) क्रि० स० नेवतना, न्योतना।

प्रा० नौता- (सं० निमन्त्रण) पु० नेवता, न्योता।

प्रा०नौमी-(सं० नवमी) स्त्री० नवीं तिथि।

प्रा० नौसादर-पु०एकतरहकाखार।

सं० न्याय-(नि, निश्चय इ=जाना) पु० धर्म, विचार, इन्साफ, नीति, २ तर्कशास्त्र।

सं० न्यायकारी } क० पु० न्याय
न्यायी } करनेवाला, मुन्सिफ, आदिल।

सं०न्यायालय-(न्याय+आलय) धि० अदालत,कचहरी,न्यायसभा।

सं० न्यायी-(न्याय)क० पु० न्याय करनेवाला, धार्मिक, धर्मात्मा, २ न्याय शास्त्रका जाननेवाला।

प्रा० न्यार-(सं० न्याद, नि, अद्=खाना)पु० चारा, सूखी घास।

प्रा० न्यारा-(सं० निरालय) गु० जुदा, अलग, एकान्त।

प्रा० न्यारिया-पु० एक जाति के मनुष्य जो सोने चांदी आदि धातुओं को मैल मिट्टी से जुदा करके निकालते हैं।

प्रा० न्याव-(सं० न्याय)पु० धर्म, विचार, इन्साफ।

अं० न्यशनलकांग्रेस=जातीयमहासभा, क़ौमी दरबार।

सं० न्यस्त-(नि+अस्त, अस्=देना) र्म० पु० स्थापित, अर्पित, दियागया।

सं० न्यास-(नि+अस्)पु०अर्पण, निक्षेप, विन्यास, संन्यास, स्थापन, उपनिधि, धरोहर।

सं०न्युब्ज-(नि+उब्ज=कोमल करना) पु० अधोमुख, नीचा मुंह, कुब्जमुख, टेढ़ामुख।

सं०न्यून-(नि=निश्चय,ऊन=थोड़ा, ऊन=कम होना) गु० थोड़ा, कम, २ दोषी, पामर, नीच।

सं० न्यूनता-(न्यून)भा०स्त्री०कमी, घटी, २ छोटापन, क्षुद्रता, निचाई।

सं० न्यूनाधिक-(न्यून+अधिक) गु० थोड़ा बहुत, घटबढ़, कमबेश।

—:o:—

प

सं०प-(पत्=गिरना वा पा=बचाना, यापीना) पु० हवा, पवन, २ पत्ता, ३ पीना, गु० बचाने वाला, २ पीने वाला, ३ तीव्र, ४ लाखरंग का ५ शूरवीर।

प्रा० पवांर-(सं० भ्रमर, भ्र=बहुत,

मृ=मारना) पु० राजपूतों की एक जाति, ३६ में से। [हांस।

प्रा० पंवारा--पु० कहानी, कथा, इति

प्रा० पंवारिया--(पंवारा) पु० भाट, कहानी कहनेवाला, नकलिया।

प्रा० पंवारी--(सं० पर्णवाटी) स्त्री० पान की वाड़ी।

प्रा० पंख--(सं० पक्ष)पु० पांख, पर।

प्रा० पंखडी--(सं० पक्ष) स्त्री० फूलकी पत्ती, कली, पखड़ी।[बेना।

प्रा० पंखा--(सं० पक्ष) पु० बिजना,

प्रा० पंखी--(सं० पक्ष) पु० पखेरू, पत्ती, स्त्री० छोटा पंखा।

प्रा० पंगत--(सं० पंक्ति) स्त्री० पांत, पांती, श्रेणी।

प्रा० पंगला--(सं० पंगु) गु० लंगड़ा, टेढ़े पांवका, अपंग। [परिंद।

प्रा० पंछी--(सं० पक्षी) पु० पखेरू,

प्रा० पकडना--क्रि० स० गहना, हाथ में लेना, धरना, २ रोकना, बाधा करना, टोकना, तर्क करना, ३ दोष निकालना।

प्रा० पकना--(सं० पचन, पच्=पकाना) क्रि० अ० रंधना, २पक्काहोना।

प्रा० पकापकाया--बोल० तयार, पका हुआ।

प्रा० पकवान--(सं० पकान्न, पक=पका हुआ अन्न=अनाज) पु० पका हुआ अन्न, तलीहुई चीज़, मिठाई।

प्रा० पका } पक्का } (सं० पक्व) गु० पका हुआ, कच्चा नहीं (जैसे फल) २ रींधा हुआ, ३ पूरा, चतुर, होशियार, निपुण, प्रवीण, सावधान, ४ दृढ़, मज़बूत, पोढ़ा, ५ सिद्ध किया हुआ, साबित किया हुआ।

सं० पक्ति--(पच्+ति, पच्=पकना पकाना) स्त्री० पचन, पकना, पकाना, पाक, सिद्धि, पकाई।

सं० पक्व--(पच्=पकना) गु० पक्का, पाका, पका हुआ, पका, २ दृढ़, ३ चतुर, प्रवीण।

सं० पक्ष -(पक्ष्=लेना वा पकड़ना) पु० पख, पाख, अंधेरा उजेला पाख, आधा महीना, २ पंख, पांख, पर, डेना, ३ सहाय, बल, ४ तरफ़, ओर, ५ अंग, पार्श्व, पांजर, ६ जत्था, दल, टोली, तड़, ७ मित्र, ८ आधा, शरीर का आधा भाग, ९ तीरका पंख, १० तरफ़दार, ११ ज़ुल्फ, जूरा, कबरी अर्थात् पटियां।

सं० पक्षक--(पक्ष्+अक) क० पु० खिड़की, मित्र, मददगार।

सं० पक्षद्वार--पु० खिड़की।

सं० पक्षपात--(पक्ष=तरफ अथवा अनुचित सहाय, पत्=गिरना) पु० अन्याय से सहायता देना, तरफ़दारी, पक्ष, पक्षदारी, अन्याय।

सटा हुआ।

प्रा० पच्चीहोना-बोल० आपस में सटाना जैसे लेई से, २ बहुत प्यार होना।

प्रा० पच्चीकारी-स्त्री०जड़ाई,खुदाई, २ रफूकरना, टांकामारना।

प्रा० पच्छम } (सं० पश्चिम)स्त्री०
पच्छिम } पछाँह,पश्चिमदिशा।

प्रा० पच्छी-(सं०पक्षी) पु० सहायी, साथी, सहायक, २ पखेरू, पक्षी।

सं० पच्यमान-र्म्म०पु०पकायागया।

प्रा० पछताना-(सं०पश्चात्तापन, पश्चात्=पीछे, तप्=जलना) क्रि० अ० पछतावाकरना, सोचना, पीछे दुख करना, हाथ मलना, शोक वा अनुताप वा खेद करना, कुढना, कलपना।

प्रा०पछतावा-(सं० पश्चात्ताप) पु० पस्तावा, खेद, सोच, अनुताप, चिन्ता, शोक, सन्ताप, अफसोस।

प्रा० पछवा } (सं० पश्चिमवात,
पछियाव } पश्चिम=पच्छिम, वात=हवा)स्त्री० पश्चिम की हवा।

प्रा० पछाड़-(पछाड़ना) भा० स्त्री० पटकन, गिराना, नीचे गिरना, २ फटकन, पछाड़।

प्रा० पछाड़खाना-बोल० सिर के बल गिरना।

प्रा० पछाड़ना-क्रि० स० गिराना, पटकना, अधीन करना।

प्रा० पछोड़ना-(सं० स्फुट्=उद्धार करना) क्रि०स० फटकना।

प्रा०पजावा-(फ़ा० पज़ावा) पु० आंवा, ईंट पकने की जगह।

प्रा० पजेब-(फा० पाजेब, पा=पाँव, ज़ेब शोभा वा गहना) स्त्री० पाजेब, पैरमें पहनने का गहना, किंकिणी।

सं० पञ्च-(पचि=फैलना)गु० पांच, पु० पंचायतमें बैठकर विचार करने वाला, मध्यस्थ,विचारकर्ता।

सं० पञ्चक-(पंच=पांच)पु०ज्योतिष में धनिष्ठादि रेवती पर्य्यन्त पांच नक्षत्रों का एक जगह पर आना २ पाच का समूह, गु० पांच, पांच संबंधी।

सं० पञ्चगव्य-(पंच=पांच, गव्य= गाय का) पु० गाय के पाच पदा(जैसे १ दूध,२दही,३ घी,४ गोबर ५ गोमूत्र)।

सं० पञ्चतत्त्व-(पञ्च=पांच, तत्त्व भूत वा पदार्थ) पु० पांच भू अर्थात् १ पृथ्वी, २ पानी, ३ आग ४ हवा, ५ आकाश।

सं० पञ्चतन्मात्र-पु०रूप,रस,गन्ध शब्द, स्पर्श, पञ्चतत्त्वों के गुण।

सं० पञ्चता भा० स्त्री० } (पञ्च
पञ्चत्व भा० पु० } पांच पदार्थ अर्थात् शरीरके पांचोंतत्त्वों का पांचोंमें मिलजाना)मौत,मृत्यु,मर

सं० पञ्चतीर्थी-(पंच=पांच, तीर्थ =पवित्र जगह) स्त्री० प्रयाग, पुष्कर आदि पांच तीर्थ, २ कार्तिक सुदी ११ से पूनौ तक के पांच दिन।

सं० पञ्चदश-(पञ्च+दश) गु० पन्द्रह।

सं० पञ्चधा-(पञ्च=पांच, धा= प्रकार) क्रि० वि० पांच प्रकार से, पंचविध।

सं० पञ्चनख-पु० पांच नखवाला, हस्ती, कच्छप, व्याघ्र, कृकलाश, स्त्री० विस्तुइया, पल्ली, छपकली।

सं० पञ्चनद-(पञ्च+नद) पु० पंजाब अर्थात् जिस देशमे १ सतलज, २ व्यासा, ३ रावी, ४ चनाव, ५ झिलम ये पांच नदियां वहती हैं।

सं० पंचपात्र-(पञ्च+पात्र) पु० एक वरतन जो शायद पांच धातुओं का वना होता है और पूजा के समय काम आता है, २ पांच पात्रों का समूह।

सं० पंचप्राण-(पञ्च=पांच, प्राण= सांस) पु० पांच प्रकार की हवा जिनके सास लेने से मनुष्य जीता है और उनके नाम ये हैं (१ प्राण २ अपान, ३ व्यान, ४ उदान, ५ समान)।

सं० पञ्चभूत-(पञ्च+भूत) पु० पांच तत्त्व (अर्थात् १ पृथ्वी, २ पानी, ३ आग, ४ हवा, ५ आकाश)।

सं० पञ्चभूतात्मा-(पञ्चभूत + आत्मा) पु० मनुष्य जो पांच तत्त्वों से बना हुआ है, २ देही।

सं० पञ्चम-(पञ्च) गु० पांचवां, पु० एक राग का नाम।

सं० पञ्चमी-(पंचम) स्त्री० पांचवीं तिथि, पांचे।

सं० पञ्चमुख-(पञ्च+मुख) पु० शिव, महादेव, २ सिंह, शेर।

सं० पञ्चरत्न-(पञ्च+रत्न) पु० पांच रतन (जैसे १ सोना, २ हीरा, ३ मोती, ४ लाल, ५ नीलम्, और कहीं कहीं सोनेकी जगह मूंगा गिनतेहैं)

सं० पञ्चवक्त्र-(पञ्च=पांच, वक्त्र= मुंह) पु० शिव, महादेव, २ सिंह।

सं० पञ्चवटी- (पञ्च=पांच, वट= वृक्ष) स्त्री० एक जगह का नाम जो गोदावरी के पासथी जहां रामचन्द्र वन वास के समय रहेथे और जहां १ पीपल, २ बिल्व, ३ वड़, ४ धात्री, ५ अशोक ये पांच वृक्ष थे।

सं० पञ्चवाण, पञ्चशर (पञ्च=पांच, वाण वा शर=तीर) पु० कामदेव का नाम, जिसके पांच बाण कहे जाते हैं, जैसे "सम्मोहनोन्मादनौच शोषणस्तापनस्तथा। स्तम्भनश्चेतिकामस्य, शराः पंचप्रकीर्त्ति-

ताः"॥—अर्थ १ मोहना,२मस्तकरना, ३ सुखाना,४सताना या जलाना, ५शिथिल अथवा अचेत करना ये पांच कामदेव के बाण कहलातेहैं

सं० पञ्चशाख-पु० हाथ, कर, पांचशाखा अर्थात् अंगुली।

सं० पञ्चसूना-स्त्री० जीव=वध स्थान, चुल्ली चूल्हा, पेषणी, चक्की, कंडनी, गाली व ओखली,उपस्कर, बढ़नी, उदकुम्भ, घनौची वा घड़ा रखने का स्थान।

सं० पञ्चाङ्ग-(पञ्च+अङ्ग) पु० तिथि पत्र, पत्रा (जिससे १ तिथि, २वार, ३ नक्षत्र, ४ योग, ५ करण ये पांच जाने जायँ) पञ्जिका, चन्दनागरु कर्पूर कुंकुमं गुग्गुलस्तथा। पञ्चाङ्गमुच्यते धीरै धूपदान विधावमुम् १ चन्दन,२अगरु,३ कर्पूर,४केशर, ५ गुग्गुल। फल, २ फूल, ३ जड़, ४ पत्ता, ५ डार।

सं० पञ्चानन-(पञ्च=पांच, आनन =मुंह) पु० सिंह, केशरी, शेर, २ शिव, महादेव।

सं० पञ्चामृत-(पञ्च+अमृत) पु० १ दूध,२दही, ३चीनी,४घी,५ मधु इन पांचों से बनीहुई वस्तु।

प्रा० पञ्चायत-(सं० पंच) स्त्री० सभा जहां पांच आदमी मिलकर विचार करते हैं, विचार करने की सभा।

सं० पञ्चाल-पु० पंजाब देश।

सं० पञ्चालिका-स्त्री० कठपुतली, गुड़िया, गुड्डा, २ द्रौपदी।

सं० पञ्चावस्था-स्त्री० बाल्य,कुमार, पौगंड, युवा, वृद्धा।

सं० पञ्चेन्द्रिय-(पञ्च+इन्द्रिय) स्त्री० पांच=इन्द्री, (इन्द्रिय शब्द को देखो)।

सं० पञ्जर-(पजि=रोकना वा घेरना) पु०पंसली, ठठरी, पंसलियों का समूह, २ पिंजरा।

सं० पट-(पट्=घेरना वा बैठना) पु० कपड़ा,पल्ला, २ परदा, आड़, ओट

प्रा० पट-(सं० पतत्, पत्=जाना) पु० गिरने या मारने का शब्द, किवाड़, झिलमिल, गु० ऊपर नीचे, उलटा, औंधा।

सं० पटक-क० पु० डेरा, कनात पटाव, छावनी फौज रहनेकी जगह

सं० पटकार-क० पु० जुलाहा,कोरी बुनने वाला।

सं० पटच्चर-पु० जीर्णवस्त्र, चिथड़ा २ चोर, सेंध देनेवाला, ठग।

प्रा० पटकन-(पटकना) स्त्री० पछाड़, चोट।

प्रा० पटकनखाना-बोल० पछाड़ खाना, नीचे गिरना।

प्रा० पटकना-क्रि० स० पछाड़ना

नीचे गिराना, दे मारना।

प्रा० पटका (सं० पट्ट=वैठना वा लपेटना) पु० कमर बंधा, दुपट्टा।

प्रा० पटड़ा } (सं०पट्ट, पट्=घेरना)
पटरा } पु०तख्ता,पाटा,पीढ़ा।

प्रा० पटतर--पु० बराबर, समान।

प्रा० पटना—क्रि० अ० मिलना, भर पाना (जैसे हुंडी का पटना) २ पानी सींचा जाना, पनियाना, ३ भरना,४ छाया जाना, ढकजाना।

प्रा० पटना (सं० पाटलिपुत्र) पु० एकशहरकानाम जो सूबे बिहार में है।

प्रा०पटानि—पु० कपड़े, वस्त्र, उढ़ना।

प्रा० पटरानी } (पाट+रानी)
पाटरानी } स्त्री० पहली और बड़ी रानी, महारानी।

प्रा० पटरी (सं० पट्ट, पट्=घेरना) स्त्री० लिखने की पट्टी, पटिया, तख्ती, २ कच्ची सड़क।

सं० पटल— (पट=कपड़ा,वा आड़, ला=लेना) पु० ढकने का कपड़ा, परदा, २ आंख का परदा, ३ समूह।

प्रा०पटली—स्त्री० पांत,पंक्ति, श्रेणी।

सं०पटवाप—पु०कनात,तम्बू,डेरा।

प्रा० पटवारी- पु० गांवका हिसाब रखनेवाला।

प्रा०पटह—पु०बाना,पटा, २ डंका, नगारा, नगारा।

प्रा०पटा—(सं० पट्ट, पट्=घेरना) पु० पाट, पाटा, आसन जिस पर हिंदूलोग बैठ कर पूजा करते हैं अथवा खाना खाते हैं, २ गदका।

प्रा०पटाका } पु० टोंटा, मुर्री,
पटाखा } छूछूंदर।

प्रा० पटाना—क्रि० स० सींचना, पानी देना, पनियाना, २ चौका देना, लीपना, थोपना, ३ छत को कड़ी अथवा धरन से छाना, ४ हुंडीके रुपये पाना, ५ झगड़ा शांत होना, आग शांत होना।

प्रा० पटाव— भा० पु० सिंचाई, २ छत बनाना, द्वारके ऊपरका काठ।

प्रा० पटिया (सं० पट्टिका) स्त्री० पटरी,पट्टी, स्लेट,२पु० गलेमें पहनने का एक गहना, ३ शिरके गुद्दे बार।

सं० पटीर—पु०बसफोड़, २ चंदन, ३ घटा, ४ मूल, ५ केदार, क्यारी, ६ कामदेव, ७ चलनी, ८ पर्वाहा, रांग, १० खादिर, ११ उदर।

सं०पटु (पट्=गाना वा चमकना)गु० चतुर,निपुण,प्रवीण,तेज,होशियार।

सं०पटुत्व—भा० पु० } (पटु)
पटुता भा०स्त्री० } चतुराई, निपुणाई, प्रवीणता।

प्रा० पटुवा (पट) क० पु० रेशम

का काम करनेवाला, रेशम से माला और मोती आदि पिरोनेवाला।

प्रा० पटेल—पु० चौधरी, गांव का मुखिया।

प्रा० पटेला, पटैला—पु० एक प्रकार की नाव, २ जिससे धरती बराबर करते हैं, धरन।

सं० पटोल—पु० परिवर, परवर।

सं० पट्टन—पु० नगर, शहर।

प्रा० पट्टा (सं० पट्ट) पु० बाल, अलक, २ पटिया जो कुत्ते के गले में डालते हैं, ३ चकनामा, ठीका अथवा किसी जमीन का काग़ज़।

प्रा० पट्टू (पाट) पु० लोई, कम्बल।

प्रा० पट्ठा—पु० जवान, पहलवान, २ पाठा, नस, शिरा।

सं० पठन (पठ्=पढ़ना) भा० पु० पढ़न, पाठ, पढ़ना, अध्ययन, सबक़।

प्रा० पठाना—क्रि० स० भेजना।

प्रा० पठावनी, पठौनी—स्त्री० मजदूरी, मेहनत।

सं० पठित—(पठ्=पढ़ना) र्म० पु० पढ़ा हुआ।

सं० पठनीय, पाठ्य—र्म० पढ़ने योग्य।

प्रा० पठिया—स्त्री० जवान स्त्री, यौवना, २ छोटी बकरी।

प्रा० पड़ना (सं० पतन, पत्=गिरना) क्रि० अ० गिरना, २ लेटना, ३ आजाना, संयोग होना, ४ पड़ाव डालना, डेरा करना, ५ टपकना, चूना।

प्रा० पड़रहना, पड़ेरहना—बोल० बेवशरहना, सो रहना, लेट रहना।

प्रा० पड़ाव (पड़ना) पु० ठहरने की जगह, ठहराव, छावनी, डेरा, कंपू, ३ सेना, ४ भीड़।

प्रा० पड़िया—स्त्री० भैंसका बच्चा।

प्रा० पड़ोस (सं० प्रतिवास) पु० पास बसना, समीपता, सहवास।

प्रा० पड़ोसी (सं० प्रतिवासी, वा पार्श्वी) पु० पास रहनेवाला।

प्रा० पढ़न (सं० पठन) भा० पु० पढ़ना

प्रा० पढ़ना (सं० पठन) क्रि० स० पाठ करना, बांचना, सीखना, रटना, जपना।

प्रा० पढ़न्त (सं० पठन) स्त्री० पढ़न, पढ़ना, पाठ, सन्था, २ मंत्र, टोना, जादू।

प्रा० पढ़ागुणा, पढ़ालिखा—बोल० गु० पढ़ा हुआ, पण्डित, प्रवीण, निपुण।

प्रा० पढ़ाना (पढ़ना) क्रि० स० सिखाना, सीखदेना, शिक्षा देना।

सं० पण (पण्=व्यवहार करना) पु० प्रतिज्ञा, वचन, होड़, शर्त, बाजी,

२ बीस गंडे अथवा ८० कौड़ी का परिमाण, ३ व्यवहार, लेनदेन, मूल्य, वेतन, शाक, साग, क़रार ।

सं० पणन--भा० पु० विक्रय, बेचना ।

सं० पणित--र्म० पु० बेचागया २ स्तुत।

सं० पणव-(पण्=व्यवहार वा जाना अथवा पण्=सराहना) पु० छोटा ढोल । [बुद्धि, मति, समझ ।

सं० पण्डा--(पण्=सराहना) स्त्री०

प्रा० पण्डा--(सं० पंडित) पु० पुजारी ।

सं० पण्डित--(पण्डा=बुद्धि) पु० बुद्धिमान्, विद्यावान्, पढ़ा हुआ, विद्वान्, २ पढ़ानेवाला, पाठक, शिक्षक । [भिमानी, मूर्ख ।

सं० पण्डितमन्य--क० पु० विद्या-

प्रा० पण्डु--(सं० पाण्डु) पु० दिल्ली का पुराना राजा, कुन्ती का पति, और युधिष्ठिर आदि पांचों पाण्डवों का बाप ।

सं० पण्य--(पण्=लेन देन करना, वा सराहना) भा० पु० बेचने योग्य, लेन देन करने योग्य, व्यवहार करने योग्य, बेचने की वस्तु, वाणिज्य, २ सराहने योग्य ।

सं० पण्यशाला--(पण्य=लेन देन करने योग्य, शाला=जगह) स्त्री० दुकान, हाट, बाज़ार ।

सं० पण्यस्त्री--(पण्य + स्त्री) स्त्री० वेश्या, नगरनारी, पतुरिया, रंडी ।

प्रा० पत--(सं० पद=अधिकार) स्त्री० प्रतिष्ठा, इज्ज़त, आबरू, बड़ाई, नामवरी, २ (सं० पति) पु० स्वामी, प्रभु, धनी, मालिक, भर्त्ता, ३ (सं० पत्र) पत्ता ।

सं० पतङ्ग--(पतन=गिरता हुआ, गम्=जाना) पु० सूर्य, २ फङ्ग पतंगा, टिड्डी, उड़नेवाला कीड़ा, ३ गुड्डी, कनकव्वा, ४ एक लकड़ी जिस से रंग निकलता है, पारा ।

प्रा० पतङ्गा--पु० चिनगारी, चिनगी ।

सं० पतंजलि-पु० शेष, महाभाष्य का बनानेवाला ऋषीश्वर ।

प्रा० पतझड़--(पत=पत्ता, झड़=झड़ना) स्त्री० एक ऋतु का नाम जिस में वृक्षों के पत्ते झड़ जाते हैं, शिशिर ।

सं० पतन--(पत्=गिरना) पु० पड़ना, गिरना, पछाड़, पटकन, पड़ना ।

सं० पतत्र--पु० पंख, पक्ष, पर ।

सं० पतद्ग्रह--पु० पीकदान, अवशेष, सेना, लशकर ।

प्रा० पतला--(सं० प्रतनु) गु० पतील, झीना, मिहीन, बारीक, २ दुबला ।

प्रा० पतवार--स्त्री० जहाज़ में एक चीज़ जिससे जहाज़ चलाया जाता है, नाव का कन्ना ।

प्रा० पता--पु० ठिकाना, चिह्न, खोज ।

सं० पताका--(पत्=जाना, वा गि...

वा जानना) स्त्री० ध्वजा, झण्डा, चिह्न, फरहरा ।

सं० पति--(पा=बचाना) पु० स्वामी, मालिक, धनी, २ भर्ता, खाविंद, इज्जत ।

सं० पतित--(पत्=गिरना) गु० गिरा हुआ, भ्रष्ट, पापी, नष्ट, दुष्ट, धर्म से गिरा हुआ ।

सं० पतितपावन-- (पतित=पापी, पावन=पवित्र करनेवाला) गु० पापियों को शुद्ध करनेवाला, परमेश्वरका नाम और गुण ।

सं० पतिदेवता--(पति+देवता) स्त्री० वह स्त्री जिसके पतिही देवता के बराबर हो, पतिव्रता ।

प्रा० पतिया } (सं० पत्रिका) स्त्री०
पाती } चिट्ठी, पत्री, पत्र, खत, २ प्रतीतपत्र, जिस में पंडित लोग अपनीसम्मति लिखकर देते हैं ।

प्रा० पतियाना--(सं० प्रत्ययन=विश्वास, प्रति=फिर, इण्=जाना) क्रि० स० भरोसा करना, विश्वास करना, प्रतीत करना ।

प्रा० पतियारा--(सं० प्रत्यय) पु० भरोसा, विश्वास, प्रतीत ।

सं० पतिंवरा--स्त्री० स्वेच्छा से विवाह करनेवाली ।

सं० पतिव्रता--पति=भर्ता, व्रत=नियम अर्थात् (जिसके पति की सेवाही करना ही नियम है) स्त्री० सती, कुलवती, पतिदेवता स्त्री, पतिसेवा करनेवाली स्त्री ।

प्रा० पतीला--गु० पतला, झीना, मिहीन, बारीक ।

प्रा० पतुरिया } स्त्री० वेश्या,
पतरिया } गणिका ।

प्रा० पतोह } (सं० पुत्रवधू) स्त्री
पतोहू } बेटा की स्त्री, बहू

सं० पत्तन--(पद्=जाना) पु० नग[र,] शहर ।

प्रा० पत्तर--(सं० पत्र) पु० पत[्र,] २ चिट्ठी, ३ दानपत्र जो तांबे [पर] खोदा जाता है, ४ सोने चां[दी] का वर्क ।

प्रा० पत्तल--(सं० पत्रावली, पत्र पत्ता, अवली=पांत) स्त्री० पत्त[ल,] रा, पत्तों की बनी हुई चीज जि[स] में खाना खाते हैं ।

प्रा० पत्ता--(सं० पत्र) पु० पा[त,] दल, गहना, पाता ।

प्रा० पत्ताहोना--बोल० भाग [जा]ना, चंपतहोना ।

सं० पत्ति--पु० पैदल, गर्त, गड्ड[ा,] मूल, वीरभेद, सैन्यभेद, एक [रथ] एक हाथी तीन घोड़े पांच पैद[ल] जिस फ़ौज में हों उसकी पत्ति सं[ज्ञा] है, गति, चाल, प्राप्ति ।

प्रा० पत्ती (सं० पत्र) स्त्री० पा[ती]

पंखड़ी, भांग, भंग, बूटी, सब्ज़ी ।

प्रा० पत्थर (सं० प्रस्तर, प्र=बहुत, स्तृ=फैलाना) पु० पाषाण, पाथर, शिला ।

प्रा० पत्थर छाती पर रखना-बोल० सब्र करना, संतोष करना, चुप होरहना, वश नहीं चलना ।

प्रा० पत्थरपसीजना--बोल० पिघलना, नर्म होना, कोमलचित्तहोना, नर्मदिलहोना, कठिन काम सहज होना ।

प्रा० पत्थरपानीहोजाना-बोल० कोमलचित्त होना, नर्म दिल होना।

प्रा० पत्थरसाफेंकमारना--बोल० किसी की बात को बिन समझे उत्तर देना, कड़ी बात कहना ।

प्रा० पत्थरसेसिरफोड़ना—बोल० मूर्ख को शिक्षा देना ।

प्रा० पत्थरहोना-बोल० भारीहोना, २ अचल होना, अटल होना, चुप खड़ा रहना, ३ निर्दयी होना, कठोर चित्तहोना ।

प्रा० पत्थरकला } (सं० प्रस्तरकला)
पथरकला } स्त्री० बंदूक, तुपक।

सं० पत्न्याट—(पत्नी + आट, अट=घूमना सैर करना) पु० भंगली पुरुष, खुशदिल, खुशवक्त, पुंश्चल जो औरत को ले कर सैर करे ।

सं० पत्रशा—स्त्री० गोटा, लरी, रोदा, कपड़ों का छोर ।

सं० पत्ररेखा—स्त्री० तिलक की रेखा, चंदनादि का लगाना ।

सं० पत्रदाता--क० पु० चिट्ठीरसां, पोष्टमैन ।

सं० पत्रदारक--क० पु० अश्रु, आंसू, बालक, वायु, आरा, आरी ।

सं० पत्रपरशु--पु० सुवर्णादि कतरने की कैंची ।

सं० पत्रपाश्या--स्त्री० सोने का टीका, सोने की खौरि ।

सं० पत्ररंजन--पु० पत्र लिखना, चित्रलिखना, शृंगारकरना ।

सं० पत्नी—(पति) स्त्री० भार्या, स्त्री० जोरू, ब्याही हुई स्त्री ।

सं० पत्र— (पत्=गिरना) पु० पत्ता, २ चिट्ठी, ३ पुस्तक का पत्रा, ४ सोने चांदी अथवा और किसी धातु का पत्तर, सवारी, दिस्ता, रथ, बाण, पंख।

प्रा० पत्रा (सं० पत्र) पु० तिथिपत्र, पंचाङ्ग, २ पन्ना, सफ़हा ।

सं० पत्रालय-थि० डाकखाना, पोष्टआफिस ।

सं० पत्रिका } (सं० पत्र) स्त्री० चिट्ठी,
पत्री } पत्र, २ पक्षी, ३ वृक्ष, ४ कमल ।

सं० पत्सल—पु० सड़क, रास्ता, पथ, [राजमार्ग ।

सं० पथ—(पथ्=जाना) पु० रस्ता, मार्ग, बाट, पैंड़ा, डगर ।

प्रा० पथराना (पत्थर) क्रि० अ० बड़ा होना, पत्थरमारना।

प्रा० पथरी-(सं० प्रस्तर) स्त्री० कंकरी, २ चकचक, ३ पेट में पथरीरोग, ४ पत्थर का बरतन।

प्रा० पथरीला—(पत्थर) गु० कंकरीला।

सं० पथिक-(पथ्=जाना) पु० बटोही, यात्री, मार्गू, राही, मुसाफिर।

सं० पथिल } क० पु० मार्गगामी,
पथी } मुसाफिर।

सं० पथिवाहक--(पथि=राह, वह=चलना) क० पु० कहार, मजूर।

सं० पथ्य--(पथ=मार्ग, राह, जो इलाज के मार्ग में अर्थात् इलाज के लिये हितकारी हो) म्र्म० पु० रोगी के हितकारी खाना, बीमार के खाने योग्य चीज, पथ, उचित, हित।

सं० पथ्या--स्त्री० हरीतकी, हड़।

सं० पद (पद्=चलना जिससे चलते हैं) पु० पांव, पैर, चरण, २ पदचिह्न, पांवका चिह्न, ३ स्थान, जगह, ४ प्रतिष्ठा, बड़ाई, अधिकार, उहदा, लक़ब, पदवी, उपाधि, ५ शब्द, विभक्ति समेत शब्द, ६ श्लोक का पाद, ७ वस्तु, पदार्थ।

सं० पदचर } (पद=पांव, चर=च-
पदचारी } लना) पु० पैदल।

सं० पदज--(पद=पांव, जन्=पैदा होना) पु० पांवकी अंगुली।

सं० पदत्याग-- पु० इस्तीफा, अधिकारत्यागपत्र।

सं० पदत्राण-- (पद्=पैर, त्रा=बचाना) पु० जूता, पगरखी, पनही।

प्रा० पदम } (सं० पद्म) पु० कमल,
पदुम } कँवल, २ सौ नील।

प्रा० पदवी-(सं० पद) स्त्री० बड़ाई, प्रतिष्ठा, अधिकार, उपनाम।

सं० पदवी--(पद्=जाना) स्त्री० मार्ग, रस्ता।

सं० पदाति (पद=पांव, अत्=चलना) पु० पैदल, पियादा, पैदल, सेना।

सं० पदाम्भोज--(पद=पैर, अम्भोज=कँवल) पु० चरणकमल, जैसे पांव, पदारविन्द।

सं० पदारविन्द—(पद=पैर, अरविन्द=कमल) पु० चरणकमल, कमल कैसे पांव।

सं० पदार्थ (पद=शब्द, अर्थ=अभिप्राय) पु० वस्तु, चीज, उत्तम वस्तु न्यायशास्त्र में सात पदार्थ माने हैं, (१द्रव्य, २गुण, ३कर्म, ४सामान्य, ५ विशेष, ६ समवाय, ७अभाव, कोई कोई नैयायिक, सोलहपदार्थ मानते हैं) शब्द का अर्थ, पद का अर्थ।

सं० पद्धति—(पद=पांव से, हन=मारना) स्त्री० मार्ग, रस्ता, पंक्ति,

३ पूजा का ग्रन्थ।

सं० पद्म--(पद्=जाना) पु० कमल, कँवल, २ सौ नील, ३ व्यूह।

सं० पद्मगर्भ--(पद्म=कमल, गर्भ=उत्पत्ति) पु० ब्रह्मा जो विष्णु के नाभिकमल से उत्पन्न हुआ।

सं०पद्मनाभ--(पद्म=कमल, नाभि=नाभ अर्थात् जिनकी नाभि में कमल हो) पु० विष्णु।

सं० पद्मराग--(पद्म=कँवल, राग=रंग, अर्थात् जिसका रंग लाल कमल जैसा हो) पु०लालमणि, माणिक।

[ब्रह्मा,सूर्य,कुबेर।

सं०पद्मलांछन—पु० राजाविशेष,

सं०पद्मस्नुषा(पद्म+स्नुषा=कन्या) स्त्री० लक्ष्मी, दुर्गा, गंगा।

सं०पद्मा--(पद्म=कँवलअर्थात्जिसके हाथ में कमल हो) स्त्री० लक्ष्मी, विष्णुपत्नी, कमला।

सं० पद्माकर--(पद्म=कँवल, आकर=खान) पु०कमलोंकाबड़ातालाव।

सं०पद्मावती--(पद्म=कँवल, वती=वाली) स्त्री० एक नदी का नाम, २ एक स्त्री का नाम, ३ मनसा देवी।

सं०पद्मिनी--(पद्म) स्त्री०सुन्दर स्त्री, उत्तम स्त्री, २ कमलिनी, (स्त्रियां चार प्रकारकी होती हैं १ पद्मिनी, २ चित्रिणी, ३ शंखिनी, ४ हस्तिनी)

सं०पद्य--(पद्=चरण अथवा श्लोक आदिका पाद) पु० श्लोक, छन्द, कविता, छन्दप्रबंध, नज़म।

प्रा० पधारना-- (सं० पदधारण, पद=पांव, धारण, रखना) क्रि०अ० जाना, सिधारना, पग धारना, आना, तशरीफ़लाना वा लेजाना।

प्रा०पन—(सं० पण) पु० वचन, होड़, शर्त।

प्रा०पन—भाववाचक संज्ञा का चिह्न जैसे लड़कपन, भलापन आदि।

प्रा० पनघट—(सं० पानीय=पानी घट्ट=घाट) पु० पानी भरनेका घाट।

प्रा०पनच—(सं० प्रत्यंचा प्रति=साम्हने, अच्=जाना) स्त्री० चिल्ला, धनुष् की रस्सी, जिह, रोदा।

प्रा०पनचक्की—(सं० पानीय=पानी चक्र=चक्की) स्त्री० पानी के वेग से चलनेवाली चक्की।

[वढ़ना।

प्रा०पनपना—क्रि० अ०मोटा होना,

प्रा० पनवट्टा—पु० पान रखने का डब्बा, गिलौरीदान।

प्रा०पनवाड़ी / **पनवारी** (सं० पर्णवाटी, पर्ण=पान, वाटी=बाड़ी) स्त्री० पान की बाड़ी।

प्रा०पनवारा—(सं०पर्णावली, पर्ण=पत्ता, अवली=पांत) पु० पत्तल, पनवारी।

संं०पनस—(पन्=सराहना) पु०कटहर, २ एक बन्दर का नाम।

प्रा०पनसारी—(सं० पण्य=बेचने योग्य वस्तु,सृ=फैलाना)पु०पसारी।

प्रा० पनसोई—स्त्री० छोटी नाव।

प्रा० पनहारिन } (सं० पानीय हारिणी, पानीय=
पनहारी } पानी, हारिणी=लानेवाली) स्त्री० पानी भरनेवाली।

प्रा० पनही—(सं० पन्नद्धी,पद=पांव, नह्=बांधना) स्त्री० जूता, जूती, पगरखी।

प्रा०पनारी } (सं० प्रणाली) स्त्री०
पनाली } मोरी,नाली,प्रणाली।

प्रा०पनिया—(सं०पानीय)पु०पानी, जल, गु० पानी का।

प्रा० पनियाना—(पानीय) क्रि०स० सींचना, पानी देना।

प्रा० पन्थ—(सं० पन्था, पथ्=जाना) पु० रस्ता, मार्ग, राह, २ मत, धर्म।

सं० पन्नग—(पन्न=गिरता हुआ, वा नीचे मुँह किये,गम्=चलना,वा पद=पैर, न=नहीं,गम्=चलना, जो पैरों से न चले) पु० सांप, सर्प, नाग।

सं० पन्नगारि—(पन्नग=सांप, अरि वैरी) पु० गरुड़, विष्णु का वाहन।

सं० पन्नगाशन—(पन्नग=सांप,अश् =खाना) गरुड़, विष्णु का वाहन।

प्रा०पनहीं—(सं० पन्नद्धा वा पन्नद्धी, नह्=बाँधना) स्त्री० उपानह, जूता, पदत्राण।

[पन्ना, २ नीलमणि।

प्रा० पन्ना—(सं० पर्ण) पु० पत्र,

सं०पपि—(पा=पीना) कृ० पु० पीने वाला।

सं० पपिस् } पु०सूर्य,चन्द्रमा,रक्षक,
पपी } पीनेवाला।

प्रा० पपनी—स्त्री० आँख की बरुनी।

प्रा० पपिहा } पु० एक पखेरू जो
पपीहा } बरसातमेंबहुतबोला करता है।

सं०पपु-(पा=पालना)कृ०पु०पालक, पालनेवाला, रक्षा, रक्षक, पिता, पालक, स्त्री० माता, धात्री, दाई, उपमाता, धाय।

प्रा०पपोटा—पु०पलक,आंखकापुट।

सं०पयः (पा=पीना) पु० दूध, २ पानी, जल।

प्रा० पयानिधि—(सं० पयोनिधि) पु० समुद्र।

[रखोरा।

सं०पयमुख—पु०दूधपीनेवाला,शी-

सं०पयस्विनी(पयस्=पानी वा दूध) स्त्री० नदी, २ दुधार गाय, दुधैल गाय, भेड़ी, बकरी।

प्रा०पयान-(सं०प्रयाण)पु०चलना, कूच, विदा, प्रस्थान, यात्रा।

प्रा०पयाल-(सं०पलाल,पल=मांस, ला=बचाना) पु० पुआल, सूखा तिनका, बिचाली।

सं०पयोद(पयस्=पानी, द=देनेवाला,

दा=देना) पु० बादल, बदल।

सं० पयोधर—(पयस्=पानीवा दूध, धर=रखनेवाला, धृ=रखना) पु० मेघ, बादल, २ स्त्रीकी चूंची,स्तन, ३ नारियल, ४ गन्ना, ५ सुगंधित घास, ६ पर्वत, दुग्धवृक्ष।

सं०पयोधि—(पयस्=पानी,धा=रखना) पु० समुद्र,७ सागर।

सं० पयोनिधि–(पयस्=पानी,निधि =खजाना) पु० समुद्र, सागर।

सं०पयोराशि—(पयस्=पानी,राशि= समूह,ढेर) पु० समुद्र, सागर।

सं०पर-(पृ=भरना) गु० दूसरा, पराया, और, भिन्न, अन्य, विदेशी, परदेशी, २ दूर, परे,अन्तर, पर,३ पिछला, ४ उत्तम, श्रेष्ठ,शिरोमणि, प्रधान, सब से बड़ा, ५ विरोधी, प्रतिकूल, ६ बहुत, अत्यन्त, अधिक, तत्पर, लगा हुआ, पु० वैरी, शत्रु, क्रि० वि० केवल, इसके पीछे, समुच्च० परन्तु, किन्तु, लेकिन।

प्रा० पर--(सं० उपरि) नित्य सं० ऊपर, पै।

सं० परकीया—(पर=दूसरा) स्त्री० दूसरे की स्त्री, पराये पुरुष के पास जानेवाली स्त्री।

प्रा० परख—(सं० परीक्षा) स्त्री० जांच, इम्तिहान, परीक्षा, कसौटी।

प्रा० परखना—(सं०परीक्षण)क्रि० स० जांचना, परीक्षा करना, देखना, निरखना।

प्रा०परचूनिया—पु० आटा दाल बेचने वाला, मोदी, बनियां।

प्रा० परछना--क्रि०स०दुलहा और दुलहिन की आरती उतारना।

प्रा०परजंक--(सं०पर्यङ्क)पु०पलंग।

सं० परजात--(पर=अन्य, जात= उत्पन्न) गु० पु० अन्य से उत्पन्न, दूसरे से पैदा हुआ, वर्णसंकर, जारज, यार से पैदा किया गया, २ दूसरी जात का, दूसरे कौमका।

प्रा०परत -स्त्री० पुट, तह, चुनन, लड़, थाक, २ नकल, कापी।

सं० परतन्त्र--(पर=दूसरा, तन्त्र= प्रधान है जिस का. अथवा पर= दूसरे के तन्त्र=वश में) गु० परवश, पराधीन, दूसरे के वश।

प्रा० परतला- पु० तलवारकीपट्टी।

प्रा० परती--(पड़ना) स्त्री० पड़ी धरती, बिन बोई धरती, बंजर।

सं० परत्र-अव्य० अन्यत्र, परलोक, और जगह, दूसरी जगह।

सं०परत्व-भा०पु० भिन्नता, जुदाई, फासला, शत्रुता, श्रेष्ठता, महत्त्व।

सं०परदेश--(पर=दूसरा,देश=मुल्क) पु० विदेश, परायादेश, और मुल्क।

सं० परदेशी--(परदेश)गु० विदेशी।

सं० परन्तप--पु० [illegible]

नाशक, जीतने वाला।

प्रा० परनाना--(सं० परिणय, परि=आपस में, नी=लेजाना) क्रि० स० ब्याह करना, शादी करना।

प्रा० परनाना-पु० नाना का बाप।

सं० परन्तु-(परम्+तु) समुच्च० पर, किन्तु, लेकिन। [जलना।

प्रा० परपराना-क्रि० अ० चरपराना,

प्रा० परबस--(सं० परवश) गु० पराधीन।

सं० परब्रह्म--(पर=सब से बड़ा, ब्रह्म=ईश्वर) पु० सर्वशक्तिमान्, ईश्वर, परमेश्वर, परमात्मा।

सं० परभृत--(भृ=पालना) पु० काक पक्षी, कोयल पक्षी, गु० शत्रु का सहायक, अन्य से पाला गया।

सं० परम--(पर=उत्तम, सब से अच्छा, मा=नापना, अथवा, पृ=भरना) गु० बहुत अच्छा, बहुत श्रेष्ठ, उत्तम, मुख्य, प्रधान, सब से पहला, भला।

सं० परमगति--(परम=उत्तम, गति=दशा) स्त्री० मोक्ष, मुक्ति, २ उत्तम दशा।

सं० परमत--(पर=भिन्न अथवा दूसरे की मत=सलाह वा सम्मति) पु० दूसरे की सलाह, २ भिन्नसम्मति।

सं० परमधाम--(परम=उत्तम, धाम=जगह) पु० बैकुंठ, परमपद, स्वर्ग।

सं० परमपद--(परम=उत्तम, पद=जगह) पु० सब से अच्छी जगह, स्वर्ग, बैकुंठ, २ मुक्ति, मोक्ष।

सं० परममित्र--(परम=मुख्य, मित्र=दोस्त) पु० पक्का दोस्त, सब से अच्छा मित्र।

सं० परमब्रह्म--(परम=सबसे बड़ा ब्रह्म=ईश्वर) पु० परमेश्वर, परब्रह्म।

सं० परमहंस--(परम=उत्तम, हंस=आत्मा, अर्थात् जिसकी आत्मा उत्तम हो) पु० संन्यासी, योगी, स्त्री० शोभा, कांति, छवि।

सं० परमा-स्त्री० बड़ी, उत्तम, शोभा, कान्ति।

सं० परमाणु--(परम=बहुतही, अणु=छोटा) पु० बहुतही छोटी वस्तु, कन, कनिका, ज़र्रा, रेजा, २ पल, बहुत थोड़ा समय।

सं० परमात्मा--(परम=उत्तम वा सब से बड़ा, आत्मा=जीव) पु० परब्रह्म, परमेश्वर।

सं० परमानन्द--(परम=बहुत, आनन्द=हर्ष) पु० बहुत खुशी, अत्यन्त आनन्द।

सं० परमार्थ--(परम=उत्तम, अर्थ=प्रयोजन) पु० उत्तम पदार्थ, सब से अच्छा विषय वा प्रयोजन, २ यथार्थज्ञान, पवित्रज्ञान, ३ उत्तम अथवा पहला काम, धर्म, पुण्य।

सं० परमायुस्--(परम+आयुस्) पु० बड़ी उमर, दीर्घावस्था, दीर्घायु, दराजउमर।

सं० परमेश्वर--(परम+ईश्वर)पु० सर्वशक्तिमान्, परमात्मा, ईश्वर।

सं० परमेष्ट--(परम+इष्ट) पु० श्रेष्ठ, महान्, परमेश्वर, ब्रह्मा, देवता।

सं० परमेष्ठिन्
परमेष्ठी } पु० ब्रह्मा, गुरु।

सं० परमोदार--(परम=बड़ा, उदार=दातार) गु० बड़ा दातार, श्रेष्ठ, उत्तम।

सं० परम्परा--(परम्=बहुत, पृ वा पृ=पूरा करना वा भरना) स्त्री० सन्तान, वंश, पीढ़ी, २ रीति, परिपाटी, क्रम, अनुक्रम, पुराने समय की रीति,कदामत, परंपरा से, क्रि० वि० पहले से, अगले समय से।

[illegible]१० परला--(सं० पर) गु० दूसरी ओर का, उस तरफ का।

[illegible]--(पर+लोक) पु० [illegible] लोक, मृत्यु, शत्रुजन, [illegible]ष्ठजन।

[illegible] (पर=दूसरे के, वश= [illegible]० पराधीन।

[illegible] पर=वैरी, शृ=मारना, [illegible]श करना) पु० फ- [illegible] कुल्हाड़ी, टांगी।

[illegible]=परसा,भृ=रख- [illegible]न।

सं०परशुराम--(परशु+राम,अर्थात फरसा रखनेवाला राम)पु०जमदग्नि ऋषिका बेटा और विष्णुका छठा अवतार जिसने राजा सहस्रार्जुन को मारा और इक्कीस बार पृथिवी के सब क्षत्रियों को नाश किया।

सं०परवश--गु० पराधीन, पराया भरोसा, पराया सहारा।

प्रा० परस--(सं० स्पर्श) पु० छूना, छुहावट, स्पर्श।

प्रा० परसत--क्रि० वि० छूतेही,स्पर्श करते ही।

प्रा० परसना--(सं० स्पर्शन,स्पृश्= छूना) क्रि० स० छूना।

प्रा० परसों--(सं० परश्वस्, पर= पिछला वा दूसरा, श्वस्=कल का दिन) क्रि० वि० आगे वा पीछे का तीसरा दिन। [ठहरना।

प्रा० परस्थौ-पु० रहना,वास करना,

सं०परस्पर-(पर=दूसरा,पर=दूसरा) क्रि० वि० आपस में, दोनों में, अन्योन्य एक दूसरेको, बाहम।

सं० परा--उपस० उलटा, पीछे, विपरीत, २ प्रभुता, बड़ाई, ३ विरोध, ४ अहंकार, ५ अनादर, तिरस्कार, ६ बहुत, अधिक, ७ जोर, बल, सामर्थ्य, ८ से।

प्रा० परा--पु० पांत, श्रेणी, दल, समूह, मंडली, टोली।

प्रा० परांठा } पु० एकतरहकी रोटी
पराठा } जो घी या तेल लगा कर कई पर्त देकर बनाई जाती है।

सं० पराक्रम--(परा=ज़ोरसे, क्रम्=जाना, वा पांव रखना) पु० बल, ज़ोर, सामर्थ्य, साहस।

सं० पराक्रमी--(पराक्रम) गु० बलवान्, ज़ोरावर, महाबली, बलवंत, साहसी, शूरवीर।

सं० पराग--(परा=बहुत, गम्=जाना) पु० फूलोंकी सुगंधित धूलि, पुष्परज।

सं० पराङ्मुख--(पराङ्+मुख)गु० विमुख, रहित, भिन्न, लज्जित, अधोमुख, शरमिन्दा, बागी।

सं० पराजय--(परा=उलटा, जय=जीत अर्थात् जीतका उलटा) भा० स्त्री० हार, पराभव, तिरस्कार, शिकस्त।

सं० पराजित--र्म्म० पु० पराभूत, शिकस्त, हाराहुआ।

सं० पराजेता--क०पु०पराजयकर्ता, जीतनेवाला, फत्ताह।

प्रा० परात--स्त्री०थाल,बड़ीथाली।

सं० पराधीन--(पर=दूसरे के, आधीन=वश) गु० दूसरे के आधीन, परवश।

प्रा० पराना } (सं० पलायन, पलाना } परा=उलटा, अय=जाना) क्रि० अ० भागजाना, पीठ देना, पीठदिखाना, चंपतहोना।

सं० पराभव-(परा=तिरस्कार, भू=होना) स्त्री० हार, पराजय, तिरस्कार। [शिकस्त, हारा हुआ।

सं० पराभूत--र्म्म० पु० पराजित,

सं० परामर्श--(परा=बहुत, मृश्=सोचना) पु० विचार, मंत्र, उपदेश, मन्त्रणा, सलाह, विवेक, भेद, राज़। [वज़ीर, सलाही।

सं० परामर्शक--क० पु० मन्त्री,

सं० परामर्शित--र्म्म० पु० विवेचित, उपदेशित।

सं० परामृष्ट--र्म्म० पु० उपदेशित, सलाह दिया गया।

सं० परामर्ष--पु० क्रोध, गुस्सा ती० व्र० सहन, क्षमा।

सं० परायण--(पर=लगा हुआ वा बहुत, अय्=जाना) गु० लगा हुआ, तत्पर, मगन, अत्यासक्त, मशगूल।

प्रा० पराया--(सं० पर) दूसरा, और, ऊपरी, बाहरी, विदेशी, २ दूसरे का।

सं० पराशर--पु०व्यासजीका बाप।

सं० पराश्रय- (पर=दूसरे के, आश्रय=आसरे में) गु० पराधीन,परवश।

सं० परास्त--र्म्म० पु० पराजित, प्रक्षिप्त, निरस्त, भग्न, शिकस्त।

सं० परास्त-(परा, तिरस्कार वा अनादर, अस्=होना) र्क्म० पु० हारा हुआ, पराजित।

सं० पराह-(पर+अहः) पु० दूसरा दिन, परदिन।

सं० पराह्ण-(पर+अह्ण) पु० दिन का पिछला भाग, दो पहर के पीछे का दिन से पहर।

सं० परि-(पृ=भरना) उपस० चारों ओर से, २ सब तरह से, सम्पूर्ण रूप से, ३ बहुत, अतिशय, ४ पहले, ५ पास, आसपास, ६ आपस में, ७ बुरा।

सं० परिकर-(परि=चारों ओर से, कृ=करना) पु० कमर, २ नौकर चाकर, सेवक, अनुचर, ३ परिवार, ४ समूह, ५ साज, ६ तैयारी।

सं० परिक्रमा-(परि=चारों ओर, क्रम्=पांव रखना) स्त्री० प्रदक्षिणा, चारों तर्फ घूमना।

सं० परिक्षित } **परीक्षित** } (परि=पहले, क्षि=नाशकरना, क्योंकि परीक्षित को अपनी माके गर्भमेंही अश्वत्थामा ने मार डाला था पर श्रीकृष्ण ने उसको जिलाया था इसकी कथा श्रीमद्भागवत और महाभारतमें है) पु० अर्जुनका पोता, और अभिमन्यु का बेटा और हस्तिनापुर का राजा।

सं० परिखा-(परि=चारों ओर से, खन्=खोदना) स्त्री० खाई, खंदक, किले के चारो ओर का नाला।

सं० परिगत-(गम्=जाना) र्क्म० पु० विस्मृत, भूला हुआ, वेष्टित, लपेटा हुआ, गया हुआ।

सं० परिग्रह-भा० पु० स्त्री, औरत, परिवार, मूल, स्वीकार, शपथ, सौगन्द, शाप, सूर्य्यग्रहण।

सं० परिग्राहक-क० पु० गाहक, स्वीकारक।

सं० परिघ-(परि=चारों ओर से, हन्=मारना) पु० लोहे की लाठी, गदा, लोहे का मुद्गर।

सं० परिघोष-पु० गाली, शब्द, मेघशब्द।

सं० परिचय-(परि=चारों ओर से चि=इकट्ठाकरना) पु० जानपहचान, बहुत मित्राई।

सं० परिचर्य्या-(परि=सब तरह से, चर्=जाना) पु० सेवा, पूजा, उपासना।

सं० परिचारक-(परि=चारों ओर, चर्=जाना) पु० दास, सेवक, नौकर, आज्ञापकर्ता, असिद्धकर्ता।

सं० परिच्छद-पु० पुस्तकर उपयोगी वस्तु, साज, बिछौना, कपड़ा, सभा, रक्षक, आस्तरण, हाथियों का झूल असबाब।

सं०परिच्छन्न-र्म०पु० आच्छादित, मदसूर, घिराहुआ।

सं० परिचित-र्म० पु० ज्ञात, जाना हुआ, पहचाना हुआ।

सं० परिच्छेद-(परि,छिद्=काटना) पु० भाग, खंड,विभाग,अध्याय,पर्व।

सं० परिजन-(परि=पास के, जन मनुष्य)पु० परिवार, कुटुम्ब, घराना, घरके लोग, २ नौकरचाकर, अनुचर।

सं०परिणत-(नम्=झुकना) क० पु०भक्त,नम्र,पकाहुआ,झुकाहुआ।

सं० परिणति-(नम्=झुकना)भा० स्त्री०नमस्कार,नम्रता, झुकाव,प्राप्त।

सं० परिणय-(परि+नी= लेजाना) पु० विवाह, नम्रता, प्राप्ति।

सं० परिणाम-(परि,नम्=झुकना, पर परि उपसर्ग के साथ आने से इसका अर्थ बदलना होताहै) पु० अन्त, समाप्ति, बदलना, भिन्नभाव, अन्तकी अवस्था, फल।

सं०परिणामदर्शी-(परिणाम=अंत, दर्शी=देखनेवाला, दृश्=देखना) क०पु० पहलेसे हरएककामकाभला बुरा फल जाननेवाला, अग्रशोची, बुद्धिमान्।

सं० परिणायक-(परि+नी=ले जाना) क० पु० पांसाका खेलने वाला, पति, वर।

सं० परिणाह-पु० चौड़ाई,विस्तार, निबन्धन, सम्बन्ध, रिश्ता।

सं० परितः-अव्य०सर्वतः,चारोंतर्फ़, चारों ओर।

सं०परिताप-(परि=चारों ओर से तप्=तपना) पु० दुःख, शोक, सोच, पीड़ा, संताप, कष्ट, २ एक नरक का नाम।

सं० परितुष्टि-(परि+तुष्‌तुष्टि) भा० स्त्री० संतुष्टि, इतमीनान।

सं० परितृप्त-(परि+तृप्+त,तृप्=संतोष) क० पु० सब प्रकार से तृप्त, आसूदा।

सं० परितोष-(परि=सब तरह से तुष्=प्रसन्नहोना) पु० संतोष, तृप्ति, हर्ष, आनन्द, प्रसन्नता, खुशी।

सं० परित्यक्त-र्म० पु० छोड़ागया, सम्यक्‌त्यक्त, जल्द छोड़ागया।

सं० परित्याग-(परि=सब तरह से त्यज्=छोड़ना) पु०त्याग, छोड़ना, तजना।

सं० परित्राण-(परि=सब तरह से त्रै=बचाना) पु० बचाव, रक्षा, उद्धार, डरसे अथवा बुराई से बचाना, रक्षण, हिफाज़त।

सं० परित्रात-र्म० पु० रक्षित, महफूज। [मुहाफ़िज़।

सं० परित्राता-क० पु० रक्षक,

सं० परिदान-(परि=सब प्रकार दा=देना) पु० दानादान, [illegible]

लेन, त्याग, प्रक्षेप, धरोहड़ धरना, तिरस्कार, निवारण ।

सं० परिदेवक--(परि=सब तरह से देव्=क्रीड़ा) कृ० पु० विलापकर्ता, रोनेवाला, जुआरी, जीतनेवाला, व्यवहारी, स्तुतिकर्ता, शोभायमान ।

सं० परिदेवन--(देव=स्तुति, क्रीड़ा) भा० पु० विलाप, रोदन, क्रीड़ा, जिगीषा, द्यूतकर्म, जुआ खेलना, स्तुति ।

सं० परिधान--(परि=चारों ओर से, धा=पहनना) पु० पहनने का कपड़ा नाभि से नीचे पहनने का कपड़ा ।

सं० परिधि--(परि=चारों ओर से धा=रखना अर्थात् घेरना) स्त्री० गोल लकीर जिससे वृत्त घेरा जाताहै, घेरा, मंडल, २ सूर्यका अथवा चांद का मंडल ।

सं० परिधेय--(परि=चारो ओर से धा=पहनना) कर्म० पु० पहनने योग्य कपड़ा ।

सं० परिध्वंस--(परि=चारों ओर से ध्वंस्=नाश होना) पु० नाश, बिगाड़, हानि ।

सं० परिपक्व--(परि=बहुत पच्=पका हुआ) कर्म० पु० खूब पका हुआ, २ दक्ष, चतुर, बुद्धिमान ।

सं० परिपाक-भा० पु० फल, नतीजा ।

सं० परिपन्थक-पु० (पन्थ=क्लेश देना, मारना) कृ० पु० शत्रु, ठग, चोर, लुटेरा, पापी, कुमार्गी, उन्मादी ।

सं० परिपाटी--(परि=सब तरह से, वा चारों ओर से, पट्=जाना) स्त्री० रीति, दस्तूर, अनुक्रम, परम्पराकीरीति

सं० परिपूर्ण--(परि=सब तरह से, पूर्ण=पूरा) गु० पूरा, भरा हुआ, संपूर्ण, समाप्त ।

सं० परिभव
परिभाव } (परि=अनादर, भू=होना) पु० अनादर, अवज्ञा, तिरस्कार, नफरत ।

सं० परिभाषा--(परि=चारों ओर से भाष्=कहना) स्त्री० लक्षण, व्याख्या, संज्ञा ।

सं० परिभ्रमण--(परि=चारों ओर भ्रम=घूमना) पु० फिरना, घूमना ।

सं० परिमाण--(परि=चारों ओर से, मा=नापना) पु० माप, नाप तौल, अंदाज ।

सं० परिमार्जित--(परि+मार्जित, मृज्=शुद्धकरना, साफ करना) कर्म० पु० शुद्ध, संशोधित, पाक साफ ।

सं० परिमित--(परि=चारोंओर से, मा=नापना) कर्म० पु० नापा हुआ, मापा हुआ, नियमित ।

सं० परिमिति--भा० स्त्री० परिमाण, हद, किनारा ।

सं० परिरंभ- (परि+रंभ्=उत्सुक होना) पु० आलिंगन, भेटना, श्लेष, मुलाक़ात ।

सं० परिवर्जन-- (परि+वृज्=त्यागना)भा०पु०मारना,त्यागकरना।

सं० परिवर्त्तन-- (परि, वृत=होना, पर परि उपसर्ग के साथ आने से इसका अर्थ बदलना होताहै) पु० बदल,एराफेरी,पलटना,तबादिला।

प्रा० परिवा-- (सं० प्रतिपदा) स्त्री० पखकी पहिली तिथि,पहली तारीख़ ।

सं० परिवाद-- (परि=बुरा, वद्=कहना) पु० गाली, निन्दा, अपवाद, दुर्वाद । [बदगो ।

सं० परिवादक-- क० पु० निन्दक,

सं० परिवार- (परि=चारों ओर से वृ=घेरना वा ढकना) पु० घराना, कुटुम्ब, परिजन ।

सं० परिवारण-- (वृ=घेरना) भा० पु० मांगना, तक़ाज़ा करना ।

सं० परिवाह-- (वह्=बहना) पु० उपद्रव, जलका उछलना, बहाव, चहबच्चा, तरंग, लहर ।

सं० परिवृत-- (परि=चारों ओर से वृत=रहना) र्म० पु० रक्षित, आच्छादित, घिराहुआ, परिवेष्टित ।

सं० परिवेष्टन-- (वेष्ट=लपेटना)भा० पु० लपेटना, लिफाफा ।

सं० परिव्राज } **परिव्राजक** } (परि=सब तरफ वा सबकाम छोड़ के, व्रज्=फिरना) क० पु० संन्यासी, यती, योगी, गुसाँई ।

सं०परिशिष्ट- (शास्=सिखाना)क० पु०अवशेष,तितिम्मा,बाकी,अवशिष्ट

सं० परिशोधन- (शुध्=शुद्ध करना) भा० पु० ऋण चुकाना, क़र्जा अदा करना, फर्चा करना।

सं० परिश्रम- (परि=चारों ओर से श्रम्=मिहनत करना) पु० मिहनत, श्रम्, थकावट ।

सं० परिश्रान्त-- र्म० पु० थकागया।

सं०परिश्रमी-- क० पु० मेहनती।

सं० परिषद-- (परि+सद्=जाना) अनुचर, सेवक, सभासद।

सं० परिष्कार- (परि+कार, कृ=करना)भा० पु० सफ़ाई, स्वच्छता, शुद्धता । [भूषित।

सं० परिष्कृत-- र्म० पु० अलंकृत,

सं०परिष्वङ्ग-- पु०आलिगन, भेटना, हमागोश होना ।

प्रा०परिहरना- (सं० परिहरण परि, हृ=लेना) क्रि० स० छोड़ना, दूर करना ।

सं०परिहार-- (परि+हार, हृ=हरना, लेना) भा० पु० हरना, लेना, छीनना, अवज्ञा, अपमान, त्याग ।

सं०परिहास- (परि=बहुत, हस्=हँसना) भा० पु० हँसी, ठट्ठा, कौतुक, खेल, मसखरी, मज़ाक़

सं० परिहास्य--र्म० पु० हँसी के लायक़, हँसने योग्य।

सं० परिहित--र्म० पु० आच्छादित, घेरा हुआ, आच्छन्न, गुप्त, पोशीदा।

सं० परीक्षक--(परि=चारों ओर से, ईक्ष्=देखना) भा० पु० परीक्षाकरने वाला, परखनेवाला, इम्तिहान लेनेवाला।

सं० परीक्षा--(परि=चारों ओर से, ईक्ष्=देखना, भा० स्त्री० परख, जांच, इम्तिहान। [को देखो।

सं० परीक्षित--पु० परिक्षित शब्द

सं० परीक्षोत्तीर्ण- (परीक्षा+उत्ती-र्ण, तृ=पारजाना) गु० परीक्षा में पूरा, इम्तिहान पास, फेलनहीं, पास।

सं० परुष--(पृ=भरना) गु० कठोर, कड़ा, पु० कुवचन, गाली।

प्रा० परे--(सं० पर) क्रि० वि० उधर, उस ओर, दूर, परे रहना, बोल० दूर रहना।

प्रा० परेखा--(सं० परीक्षा) स्त्री० परख, जांच, २ पछतावा, पश्चात्ताप।

सं० परेत--(परा, इण्=जाना) पु० भूत, पिशाच, शैतान, गु० मुर्दा, मृतक।

प्रा० परेता--पु० रहटा, चर्खा, चर्खी।

प्रा० परेवा-- पु० कपोत, कबूतर, प्रतिपदा। [फ़ुल, फ़र्दी।

सं० परेद्युस्-- अव्य० दूसरा दिन,

सं० परोक्ष (पर=परे, अक्ष=आंख) गु० नहीं देखा हुआ, आंखोंकपरे।

सं० परोपकार--(पर=दूसरे का, उपकार=भला) पु० दूसरेका भला, पराये का हित।

सं० परोपकारी--(परोपकार) गु० दूसरे का भला करनेवाला।

प्रा० परोस--पु० समीपता, ग्वेड़ा, नज़दीकी।

प्रा० परोसना--(सं० परिवेषण, परि=चारों ओर से, विष्=फैलाना) क्रि० स० खाना पत्तलों में रखना, खाना चुनना, पत्तल लगाना।

प्रा० परोहा--(सं० परीवाह, परि=सब ओर से वह्=ले जाना) पु० चरस, मोट, पुर।

सं० पर्कटि--स्त्री० पाकरि, पकरिया।

प्रा० पर्चा } (सं० परीक्षा) पु० परख,
पर्चौ } जांच, परीक्षा।

प्रा० पर्चाना--(सं० परिचयन) क्रि० स० भेंट कराना, मिलाना, बातों में लगाना।

प्रा० पर्छाईं--(सं० प्रतिच्छाया, प्रति =अपने रूप, छाया=छांह) स्त्री० प्रतिबिम्ब, अक्स।

सं० पर्जन्य--(पृष्=सींचना [illegible] गर्जना) का० पु० मेघ, इन्द्र, [illegible] गर्जन, नवीन मेघ, धरमार्गी [illegible]।

सं० पर्ण--(पर्ण=हरा होना, [illegible] भरना) पु० पत्ता, पान।

सं० पर्णकार--क० पु० बरई, तम्बोली।

सं० पर्णशाला--(पर्ण=पत्ता, शाला =घर) स्त्री० पत्तों की बनी कुटी, झोपड़ी।

सं० पर्णी--क० पु० वृक्ष, पेड़।

सं० पर्व--(पर्व+जना वा पूराहोना) ग्रन्थि, गाँठ, गिरह।

सं० पर्य्यङ्क--(परि=पास, अङ्क=गोद अकि=जाना वा चिह्न करना) पु० पलंग। [पथिक।

सं० पर्य्यटक--क० पु० मुसाफ़िर,

सं० पर्य्यटन--(परि=चारोंओर, अटन=घूमना) भा० पु० घूमना, भ्रमण करना, सफर करना, सैरकरना।

सं० पर्य्यन्त--(परि=पास, अन्त= सीमा) पु० अन्त, सीमा, हद, अव्य० तक, तलक।

सं० पर्य्याप्त-(परि=चारोंतरफ, आप्= व्याप्तहोना) पु० समर्थ, तृप्त योग्य।

सं० पर्य्याय--(परि=चारों ओर से, इण्=जाना) पु० एक अर्थका शब्द, एकार्थी शब्द, २ अनुक्रम, रीति, ३ प्रकार, ४ अवसर, ५ उर्फ़, हमनामी।

सं० पर्य्यायवाचक-क० पु० एकार्थ बोधक, मुतरादिफ़।

सं० पर्य्यालोचना--(परि+आलोचना) भा० पु० विचारकरना, गौर करना, यहतियात करना, चौकसी करना, सब प्रकार से देखना।

सं० पर्व--(पॄ=भरना) पु० त्योहार, उत्सव, २ अध्याय, परिच्छेद, ३ गांठ।

सं० पर्वणी
पर्विणी (पॄ=भरना) स्त्री० त्योहार, उत्सव, तिवहार।

सं० पर्वत--(पर्व=भरना) पु० पहाड़, शैल, गिरि, भूधर।

सं० पर्वतारि-(पर्वत+अरि) पु० इन्द्र।

सं० पर्वतीय--(पर्वत) गु० पहाड़ी, पहाड़ का।

सं० पल--(पल्=जाना) स्त्री० घड़ी का साठवां भाग, निमेष, दम, आन, लहमा। [कर, निकारी, दूरकी।

प्रा० पलगारि--क्रि० वि० निकार,

प्रा० पलभरमें--बोल० तुरन्त, उसी दम, पल मारते। [भरमें।

प्रा० पलमारते--बोल० तुरत, पल

प्रा० पलक--स्त्री० आंख का पुट, पपोटा, बरुनी, पपनी, २ पल, क्षण।

प्रा० पलंग--(सं० पल्यङ्क परि+अङ्क) पु० सेज, शय्या, खाट, चारपाई।

प्रा० पलटन--(अं० बैटालियन) पु० हज़ार सिपाहियों का यूथ, या थोक, जत्था।

प्रा० पलटना--क्रि० अ० फीका आना, फिरजाना, लौटजाना, २ बदलना, बदल लेना, ३ नकारना, इन्कार करना।

प्रा० पलटा--(पलटना) पु० बदला, फेराफेरी, बट्टा, अदला बदला, २ प्रतिफल, पीछा, उपकार करना, ३ पीछा वैर लेना।

प्रा० पलटालेना--बोल० पीछा ले लेना, लौटा लेना, २ बदला लेना, वैर लेना, वैर सारना।

प्रा० पलड़ा--पु० तराजू का एक पल्ला।

सं० पलाण्डु--पु० प्याज, सलगम।

प्रा० पलथी--स्त्री० कूल्हा टेक कर जमीन पर बैठना, एक प्रकार का आसन वा बैठने का ढंग।

प्रा० पलना--(सं० पलन, पल्=बचाना) क्रि० अ० पनपना, प्रतिपालित होना।

प्रा० पलवल--(सं० पटोल, पट्=जाना) पु० परवल, एक तरकारी का नाम।

प्रा० पलवार-पु० एकप्रकारकी नाव।

प्रा० पला--पु० बड़ा चमचा, कलछुल, दर्वी, टोई, तेल आदि निकालने का बरतन।

सं० पलायन--(परा से, अथवा उलटा, अय्=जाना) पु० भागना, भागाभाग।

सं० पलायक--क० पु० भगोड़ा।

सं० पलायित--क० पु० भगोड़ा, कम्पित, चञ्चल।

सं० पलाश--(पल=चलना, फैलाना, वा खाना) पु० टेसू का वृक्ष, ढाक का वृक्ष।

सं० पलित--(पल्=पालना, जाना) भा० पु० वृद्धत्व, बुढ़ापा, सफेद बाल। गु० वृद्ध, शिथिल, पुराना।

प्रा० पली--स्त्री० चमची, जिससे तेल आदि निकाला जाता है।

प्रा० पलीत--(सं० प्रेत) पु० भूत, पिशाच, प्रेत।

प्रा० पलीता (फा० पतीला वा फतीला) पु० बत्ती, २ बंदूकका तोड़ा, जामगी।

प्रा० पलेथन--पु० सूखा आटा जो रोटीपर बेलने के समय लगाया जाताहै।

प्रा० पलेथननिकालना--बोल० बहुत मारना, बहुत पीटना।

प्रा० पलोटना--क्रि० स० धीरे २ पांव दाबना।

सं० पल्ल--पु० गोला, गोली।

सं० पल्लव--(पल्=जाना, और लू=काटना, अथवा पल्ल्=जाना) पु० नया पत्ता, अंकुर, कोंपल।

सं० पल्लवग्राही--(ग्रह्=लेना) क० पु० पत्ता बांधनेवाला, पुरोहित।

सं० पल्लवित--(पल्लव) गु० नये पत्तों वाला, नयेपत्तोंसेयुक्त, २ पुलकित, रोमांचित, हर्षित, प्रसन्न।

प्रा० पल्ला--पु० अन्तर, दूरी, टप्पा, २ सहायता, ३ कपड़े का छोर, अंचल, ४ छोर, किनारा, ५ कि-

वाड़, ६ तीनमन बोझका।

सं० पल्ली---स्त्री० छपकिली, २ स्वल्प ग्राम, छोटा गाँव, ३ कुटी, झोपड़ी, ४ कुटनी। [चल, अंचल, छोर।

प्रा० पल्लू--पु० कपड़े का खूंट, आ-

प्रा० पल्लूदार--पु० कपड़ा जिसका पल्ला सुनहरी वा रुपहरी हो।

सं० पल्वल--पु० तलैया, पानीका भरा गड़हा, छोटा तलाव।

सं० पवन--(पू=पवित्रकरना) स्त्री० हवा, वायु, बयार, बतास, बाव, पवन का पूत=हनुमान्।

सं० पवनकुमार--(पवन=हवा, कुमार=बेटा) पु० हनुमान्, पवन का बेटा। [=बेटा) पु० हनुमान्।

सं० पवनतनय--(पवन=हवा, तनय

सं० पवनायन--पु० झरोखा, खिड़की, मोखा।

सं० पवनरेखा--(पवन=हवा, रेखा=लकीर) स्त्री० उग्रसेनकी स्त्री और कंस की मा।

सं० पवनाशन--(पवन=हवा+अशन=भोजन, अश्=खाना) पु० वायुभक्षक, सर्प, सांप।

सं० पवनसुत--(पवन=हवा, सुत=बेटा) पु० हनुमान्, पवन का पुत्र।

प्रा० पवारना--क्रि० स० फेंकना, डालना, भेजना।

सं० पवि--(पू=शुद्ध करना, अर्थात् दुष्ट जनों को मार पीटकर शुद्ध करना) पु० वज्र, इन्द्रकाशस्त्र, हीरा।

सं० पवित्र--(पू=शुद्ध करना) गु० शुद्ध, निर्मल, पापरहित, साफ, विमल, पु० यज्ञोपवीत, जनेऊ, २ कुश, ३ ताँबा, जल।

सं० पवित्रता--(पवित्र) भा० स्त्री० निर्मलता, शुद्धता, सफ़ाई।

प्रा० पवित्री--(सं० पवित्र) स्त्री० कुश घास की अथवा सोना, चांदी, और तांबा इन तीनों धातु की बनी हुई अंगूठी जिसको हिंदूलोग पूजा करते समय पहनते हैं।

सं० पश--(पश्=जाना बाँधना) पु० स्पर्श, बाँधना, मथना, पीड़ा, गु० छूनेवाला, बाँधनेवाला, शत्रु।

सं० पशु--(दृश्=देखना, जो सब को बराबर देखता है और भले बुरे का विचार नहीं करता) पु० चौपाया जन्तु, जीव, गाय भैंस घोड़ा आदि, २ देवता।

सं० पशुपति--(पशु=देवता अथवा चौपाया (यहां बैल) पति=स्वामी) पु० महादेव, शिव।

सं० पशुपाल, पशुपालक--(पशु=चौपाया, पाल=बचाना) क० पु० ग्वाला, अहीर।

सं० पशुराज--(पशु=चौपाया, राज=राजा) पु० सिंह।

० **पश्चात्**--क्रि० वि० पीछे,इसके पीछे, २ पश्चिम दिशा की ओर ।

० **पश्चात्ताप**--(पश्चात्=पीछे, ताप =दुःख) पु० पछतावा, पस्तावा, अनुताप ।

० **पश्चिम**--(पश्चात्=पीछे) स्त्री० पश्चिम दिशा, पछांह,गु०पश्चिम का।

० **पश्यतोहर**--(पश्यतः=देखते२ हर=चुरा लेना) पु० सुनार, २ मृत्यु, ३ चोर । [पत्थर, शिला ।

ा० **पषान**--(सं० पाषाण) पु०

० **पस** (पस्=बांधना, गांठ देना) पु० बाँधना,छूना, गु० बांधनेवाला, छूनेवाला ।

ा०**पसरना**-(सं०प्रसरण, प्र=बहुत, सृ=जाना वा फैलना)क्रि०अ०फैलना।

ा० **पसली**--(सं० पार्श्व) स्त्री० पांसुली, पंजर, पांजर ।

ा० **पसाना**--(सं०प्रस्रावण,प्रस्रु= चूना या टपकना) क्रि० स० मांड़ निकालना, रींधे हुये चांवलों में से पानी निकालना ।

ं० **पसारना**--(सं० प्रसारण प्रसृ =जाना वा फैलना)क्रि०स०फैलाना, बिछाना । [देखो ।

प्रा० **पसारी**--पु०पनसारी शब्द को

प्रा० **पसीजना** (सं० प्रस्वेदन प्र, स्विद्=पसीना निकलना) क्रि० अ० पिघलना, नर्म होना, पसीना निकलना, २ कोमलचित्त होना।

प्रा० **पसूजना**--क्रि०स०तुर्पना तागना, डोराडालना ।

प्रा० **पसीना**--(सं०प्रस्वेद,प्र, स्विद् =पसीना होना) पु० पसेव, स्वेद ।

प्रा० **पसेव**--(सं० प्रस्वेद) पु० पसीना, २ प्रसन्नता, खुशी ।

प्रा० **पस्ताना**--(सं०पश्चात्ताप)क्रि० अ० पछताना, पश्चात्ताप करना ।

प्रा०**पह**-- स्त्री० भोर, तड़का, पोह, भिनसार, सवेरा ।

प्रा० **पहफटना** / **पौफटना** } बोल०भोरहोना, तड़का होना, रोशनी फैलना, दिन निकलना ।

प्रा० **पहचान**--(पहचानना) स्त्री० जानना, जान पहचान, ज्ञान, चिन्हार, लक्षण, चिन्हानी, चिह्न ।

प्रा०**पहचानना** / **पहिचानना** } (सं० प्रतिज्ञान) क्रि०स०जानना, चीन्हना, लक्षण करना ।

प्रा० **पहनना** / **पहरना** / **पहिरना** } (सं० परिधान) क्रि० स० कपड़ा ओढ़ना , कपड़ा पहनना,शरीरपर कपड़ा धारण करना।

प्रा० **पहनावा** (पहनना) पु० पहिराव, पोशाक ।

प्रा०**पहर** (सं० प्रहर, प्र=बहुत ह=

लेना) स्त्री० दिन रातका आठवां भाग, तीन घंटा, आठघड़ी।

प्रा० पहरा--(पहर) पु० चौकी, २ गश्त, फेरा, ३ एक नायक अथवा जमादार और छः चौकीदार।

प्रा० पहराना--(सं०परिधान) क्रि० स० पहराना, उढ़ाना।

प्रा० पहरादेना-- बोल० जागता रहना, चौकस रहना, चौकी देना, रखवाली करना।

प्रा० पहरेमेंडालना--बोल० हवालात में रखना, पहरुए को सौंपना।

प्रा० पहरेमेंपड़ना--बोल०हवालात में रहना।

प्रा०पहरावानी--(सं० परिधान) स्त्री० ब्याह में दुल्हन के घर से बरातियोंको जो कपड़ारुपयाआदि दिया जाताहै।

प्रा० पहरिया, पहरुआ, पहरू } (सं०प्रहरी,प्रहर=पहर)पु०चौकीदार, चौकी देनेवाला, रक्षा करनेवाला, रखवाली करनेवाला, पौरिया।

प्रा० पहल--पु० रूई का गाला, रूई का फाहा, २ प्रारंभ,आरंभ,शुरूअ, आदि, ३ खेतकी भुजा।

प्रा० पहला, पहिला } (सं० प्रथम) गु० प्रथम, आदि।

प्रा० पहाड़--पु०पर्वत, शैल, गिरि।

प्रा० पहाड़सीरातें--बोल० लंबी रातें, बड़ी रातें, दुःख की रातें।

प्रा० पहाड़ा-- पु० जोड़ती, गुणा का नक़शा।

प्रा०पहाड़िया, पहाड़ी } गु० पहाड़ का, पर्वती।

प्रा० पहाड़ी--स्त्री० छोटा पहाड़, टीला, टेकरी। [चक्का, चक्र।

प्रा० पहिया-- पु० पया, चाक,

प्रा० पहिला--(सं० प्रथम) गु० अगिला, आगे का। [ज्येष्ठ।

प्रा० पहिलौटा--गु० पहिला, जेठा,

प्रा० पहुँच--(पहुँचना) स्त्री०आना, आगमन, २ शक्ति, सकत,सयानापन, अच्छी समझ, ३ पैठ, पैसार, प्रवेश, दख़ल, गुजर, घुस पैठ, ४ रसीद।

प्रा० पहुँचना-क्रि० अ० आजाना, दाखिल होना, उतरना, आ रहना, जाना, फैलना, चलना, बढ़जाना, पूगना, पास आना।

प्रा० पहुँचा--पु० कलाई।

प्रा० पहुँची--स्त्री०पहुँचेमें पहननेका गहना, कङ्कण, कँगना।

प्रा०पहुड़ना--क्रि०अ०लेटना,मंद आराम करना।

प्रा० पहुनई--(सं० प्राघुणता,) आदर, मान, मनुहार, आवभगत सेवा, मेहमानी।

प्रा० पहुप } (सं० पुष्प) पु० फूल,
पुहप } सुमन ।

प्रा० पहेली—(सं० प्रहेलि अथवा प्रहेलिका, प्र=बहुत, हेल् वा हेड्=अनादरकरना) स्त्री० दृष्टकूट, गूढ़ प्रश्न श्लेष, बुझव्वल ।

प्रा० पांक } (सं० पंक) पु० कीचड़,
पांका } दलदल, कांदा । [तीना

प्रा० पांच—(सं० पञ्च) गु० दो और

प्रा० पांचसात—बोल० घबराहट, व्याकुलता, झंझट, जंजाल ।

प्रा० पांजर—(सं० पञ्जर) पु० पंसली, पार्श्व ।

प्रा० पांडे } (सं० पंडित) पु० ब्राह्मणों
पांड़े } की पदवी, २ पाठक, अध्यापक, पढ़ानेवाला ।

प्रा० पांत } (सं० पंक्ति) स्त्री० कतार,
पांती } श्रेणी, लकीर, अवली,
पांति } सिपाहियों का पर्रा ।

प्रा० पांयती—(सं० पादान्त, पाद=पांव+अन्त) स्त्री० पायतल, बिछौने के पैर की ओर ।

प्रा० पांव—(सं० पाद, और फा० पा) पु० पैर, पद, चरण, गोड़ ।

प्रा० पांवउठाना—व चलाना—बोल० झट झट चलना, जल्दी जल्दी चलना ।

प्रा० पांवउतरना—बोल० पांवका जोड़ टलना, पांव गांठसे उखड़ना ।

प्रा० पांवकांपना या थरथराना—बोल० किसीकामकेकरने से डरना ।

प्रा० पांव किसीका उखाड़ना—बोल० किसी को किसी काम पर जमने नहीं देना ।

प्रा० पांवकिसीकागलेमेंडालना—बोल० किसी मनुष्य को उसी की बातों से अथवा तर्क से दोषी अथवा अपराधी ठहराना ।

प्रा० पांवचलजाना—बोल० डगमगाना, अस्थिर होना ।

प्रा० पांवजमाना—बोल० दृढ़ होके ठहरना, मजबूती से ठहरना ।

प्रा० पांवज़मीन पर न ठहरना—बोल० बहुत प्रसन्न होना, बहुत खुश होना, २ बहुत घमंड करना ।

प्रा० पांवडालना—बोल० किसी बड़े काम के करने के लिये तैयार होना और उसको शुरूअ करना ।

प्रा० पांवडिगना—बोल० फिसलना, खिसकना, रपटना, किसी काम से हिम्मत हार जाना ।

प्रा० पांवतलेमलना—बोल० किसी को दुख देना, खिजाना, सताना, पीड़ा देना, खराब करना ।

प्रा० पांवतोड़ना—बोल० किसी के मिलने से रुक रहना, २ किसी मनुष्य से मिलने के लिये कई बार जाना, ३ थक जाना ।

प्रा० पांवधोधोपीना—बोल० बहुत मानना, किसी का बहुत विश्वास करना, बहुत खुशामद करना।

प्रा० पांवनिकालना—बोल० अपनी मर्यादा अथवा हद से बढ़ जाना, २ किसी बड़े कामके करनेसे फिरना, ३ किसी अपराध के करने में मुखिया होना।

प्रा० पांवपकड़ना—बोल० ग़रीबी अथवा अधीनी से बिनती करना, २ किसी को जाने से रोकना, ३ अधीन होना, शरण लेना।

प्रा० पांवपड़ना—बोल० घिघियाना, गिड़गिड़ाना, ग़रीबी से बिनती करना, खुशामद करना।

प्रा० पांवपरपांवरखना—बोल० दूसरे मनुष्य का चाल चलन ग्रहण करना अथवा ले लेना, दूसरे की चाल चलना, २ ऐंठ फैल बैठना, आराम से बैठना, एक पैर को दूसरे पैर पर रख कर बैठना, बड़ा तक़ाज़ा करना।

प्रा० पांवपांव, पांवोंपांवों — बोल० पैदल, पियादेपांव, पैरों।

प्रा० पांवपीटना—बोल० अधीरतासे पांवपटकना, २ वृथाकोशिशकरना।

प्रा० पांवपूजना—बोल० किसी को बड़ा जानना, २ किसी से बचना, अलग रहना, दूर रहना।

प्रा० पांवफूंकफूंकररखना—बोल० हर एक काम को सावधानी से करना, सम्हल कर काम करना।

प्रा० पांवफैलाकरसोना—बोल० सुखी रहना, चैन से रहना, बचाव से रहना, बेखटकेरहना, निडररहना।

प्रा० पांवफैलाना—बोल० हठ करना, अड़ना।

प्रा० पांवभरजाना—बोल० पांव ठिठरना, २ पांव सो जाना।

प्रा० पांवरगड़ना—बोल० वृथा और मूर्खता से भटकता फिरना, वृथा चक्कर खाना, २ मरनेके दुखमें होना।

प्रा० पांवलगना—बोल० प्रणाम करना, नमस्कार करना।

प्रा० पांवसेपांवबांधना—बोल० किसी के पास बराबर बैठा रहना अथवा किसी की खूब रखवाली रखना। [पास होना

प्रा० पांवसेपांवभिड़ाना—बोल०

प्रा० पांवसोना—बोल० पांव सु[न्न] हो जाना। [आना

प्रा० पांवदबेआना—बोल० धीरे

प्रा० पांवड़ा—(पांव) पु० वह कपड़ा अथवा शतरंजी, गलीचा आदि जिस पर बड़े आदमी पैर रखकर चलते हैं

सं० पांशव—(पांशु=खोदना) पु० पाङ्गा नमक।

सं० पांशु—पु० मिट्टी, धूलि, रे

रजोधर्म, हैज़, शुष्क गोमय, सूखा गोबर, गोबरका ढेर, पांस, कर्पूर।

सं० पांशुका--स्त्री० रेणु, धूलि, रजस्वला स्त्री, वेश्या।

सं० पांशुपत्र--पु० बथुआ शाक।

सं० पांशुल--पु० शिव, धूलियुक्त।

सं० पांशुला--स्त्री० कुलटास्त्री, वेश्या, "अपा सुतानां धुरि कीर्त्तनीये" तिरघुः (अ=नदी, पांशुल=कुलटा अर्थात् पतिव्रता)

प्रा० पाई-(सं० पाद चौथा भाग) स्त्री० एक आने का चौथा भाग, एक पैसा, अंगरेजी पाई एक आने का बारहवां हिस्सा होता है।

सं० पाक--(पच्=पकना वा पकाना) पु० रींधना, पचन, रसोई, पकवान, पकाई हुई दवाई अथवा और कोई वस्तु, २ उल्लू, ३ एक दैत्यका नाम, ४ फल प्राप्ति, ५ दशा, ६ सफेदबाल (पा=पीना) बालक, शिशु, छोटा लड़का।

सं० पाकपुटी--पु० स्थाली, चूल्हा, कुन्दी, पजावा, आवा, भट्ठा, पाकशाला।

प्रा० पाकड़--(सं० पर्कटी, पृच्=मिलाना वा छूना) पु० एक वृक्षका नाम, पाकड़िया, एक प्रकार का [illegible]

सं० पाकरिपु--(पाक=एक असुरका नाम, रिपु=वैरी) पु० इन्द्र।

सं० पाकशाला--(पाक=पकाना, शाला=घर) वि० स्त्री० रसोई घर, पाक स्थान, पकाने की जगह।

सं० पाकशासन-(पाक,एकराक्षस का नाम, शास्=दंड देना) पु० इन्द्र।

सं० पाकुक--क० पु० पकानेवाला, रसोईवदार। [मददेनेवाला।

सं० पाक्षिक--गु० सहायक, हिमायती,

प्रा० पाखर--(सं० प्रखर) पु० घोड़े हाथी को बचाने के लिये बख्तर, झूल।

सं० पाखण्ड--पु० दम्भ, डिम्भ, पाखण्ड, छल। [मक्कार।

सं० पाखण्डी--गु० दम्भी, छली,

प्रा० पाग--स्त्री० पगड़ी।

प्रा० पागल--पु० पगला, सिड़ी, उन्मत्त, बावला, बौड़ाहा, मूर्ख।

सं० पाचक } (पच्=पकाना) क० पाचुक } पु० पचानेवाली वस्तु जैसे चूरण आदि, २ आग, रसोइया।

सं० पाचिका--स्त्री० पकानेवाली।

सं० पाञ्चजन्य--(पञ्चजन=दैत्य से हुआ अर्थात् बना) पु० विष्णु का शंख।

सं० पाञ्चाल--पु० नाम देश।

सं० पाञ्चाली--स्त्री० द्रौपदी।

प्रा० पाछे } (सं० पश्चात् [illegible] पाछें } [illegible]

अनन्तर, पीठ पीछे, परे।

प्रा० पाट--पु० कपड़ेकी अथवा नदी की चौड़ाई, २ सन, सनई।

प्रा० पाट--(सं० पट्ट, पट्=घेरना) पु० रेशम, २ चक्कीका पत्थर, ३ सिंहासन, जैसे राजपाट, राजाका सिंहासन, ४ चौकी, तख्ता, पटरा, पाटा।

सं० पांसक--(पांस्+अक, पस्=बाधा करना) क० पु० मिथ्या, कुत्सित, झूंठा, अधम, नाशक, दूषक।

सं० पांसु--पु० धूलि, रज, रेणु, पांस, पाप, कलंक।

प्रा० पाटना--क्रि० स० छाना, ढकना, २ भरना, भरपूर करना, रेल पेल करना, ३ सींचना।

प्रा० पाटम्बर--(सं० पट्टाम्बर, पट्ट=रेशम, अम्बर=कपड़ा) पु० रेशमी कपड़ा, रेशमका कपड़ा।

प्रा० पाटरानी--(पाट+रानी) स्त्री० पटरानी, महारानी।

सं० पाटल--(पट्=जाना वा चमकना) पु० एक पेड़का नाम, २ गुलाबीरङ्ग, श्वेतरक्त वर्ण, लाल सफेदरंग, गुलाबका फूल, गुलाबी रंग।

सं० पाटलिपुत्र-पु० पटना नगर।

सं० पाटव--(पटु=चतुर) भा० पु० चतुराई, प्रवीणता, होशियारी।

प्रा० पाटा--(सं० पट्ट) पु० पटरा, तख्ता, २ धोबीके कपड़ा धोनेकातख्ता।

प्रा० पाटी-(सं० पट्टिका, पट्=जाना) स्त्री० खाटकी पटिया, २ एकतरह की चटाई, ३ तख्ती जिसपर लड़के लिखना सीखते हैं, ४ बालोंकी पट्टी।

सं० पाठ-(पठ्=पढ़ना) भा० पु० पढ़ना, सन्था, सबक, २ अध्याय

सं० पाठक-(पठ्=पढ़ना वा पढ़ाना) क० पु० शिक्षक, अध्यापक, पढ़ानेवाला, मुअल्लिम, मुदर्रिस, पण्डित, २ पढ़नेवाला, विद्यार्थी, शिष्य, ३ ब्राह्मणों की पदवी।

सं० पाठन-भा० पु० पढ़ना वा पढ़ाना।

सं० पाठशाला-(पाठ=पढ़ना, शाला=जगह) धि० स्त्री० पढ़ाने की जगह, चटशाला, स्कूल, कालिज, मदर्सा।

प्रा० पाठा-पु० जवान, जानवर, २ मल्ल। [हुआ।

सं० पाठित-कर्म० पु० पढ़ायागया, पढ़ा

सं० पाठी-क० पु० पढ़नेवाला।

सं० पाठ्य-कर्म० पु० पढ़ाने योग्य।

सं० पाठीन--(पठि=पीठ, नम्=झुकना) पु० एक प्रकार की मछली।

प्रा० पाड़ना--(सं० पातन, पत्=गिरना) क्रि० स० गिराना, मारना, पूराकरना, २ काजल इकट्ठाकरना।

प्रा० पाढ़ा--(सं० पृषत्, पृष्=सींचना) पु० एक जंगली जानवरकानाम।

सं० पाण--पु० क्रय विक्रय व्यवहार, स्तुति, तअरीफ।

सं० पाणि—(पण=लेन देन करना) पु० हाथ, हस्त, कर, दस्त।

सं० पाणिग्रहण—(पाणि=हाथ,ग्रह=पकड़ना) पु० ब्याह, विवाह, शादी, हाथ पकड़ना।

सं० पाणिघ—(पाणि=हाथ, हन्=मारना) पु० तबला वा ढोलक, मृदङ्ग, बजानेवाला।

सं० पाणिनि—(पणनं, पणः ततः अस्तीति पणी पाणिनो गोत्रापत्यं पुमान् पाणिनिः, अर्थात् पणि गोत्र से उत्पन्न हुआ अथवा पणि का शिष्य, पण्=स्तुति करना) पु० अष्टाध्यायी व्याकरण आदि का बनानेवाला मुनि।

सं० पाणिनीय—(पाणिनि) गु० पाणिनि ऋषि का बनाया हुआ (व्याकरण शास्त्र आदि)

सं० पाण्डर—(पडि=जाना वा मिलना)गु०पीला और धौला,सीठा, फीका, पु० कुन्दफूल, श्वेतपुष्प।

सं० पाण्डव—(पाण्डु युधिष्ठिर आदि पांचों भाइयों का बाप) पु० पाण्डु के बेटे युधिष्ठिर, अर्जुन, भीम, नकुल, सहदेव।

सं० पाण्डित्य—(पण्डित) भा० पु० पण्डिताई, विद्या, विद्वत्ता।

सं० पाण्डु—(पडि=जाना) पु० दिल्ली का एक पुराना राजा और युधिष्ठिर आदि पांचों पाण्डवों का बाप, २ धौला और पीला रंग,श्वेत रंग, ३ एक फूल और पौधे का नाम, गु०पीला और धौला,सीठा, फीका।

प्रा० पात—(सं० पत्र) पु० पत्ता, २ कान में पहनने का एक तरह का गहना, गिरना, राहु, लता पातआदि में का एक योग।

सं० पातक—(पत्=गिरना)पु०पाप, दोष, अपराध, गुनाह।

सं० पातकी—(पातक) क० पु० पापी, दोषी, अपराधी, गुनहगार।

सं० पातञ्जल-(पतञ्जलि)पु० पतञ्जलि ऋषि का बनाया हुआ योग शास्त्र आदि।

प्रा० पातर- स्त्री० वेश्या, पतुरिया, कंचनी, गणिका, गु० पतला, दुबला। [पु० रक्षक,पालक।

सं० पाता—(पा=रक्षण करना) क०

सं० पाताल—(पत्=गिरना, जहां पापी गिराये जाते हैं, अथवा पात =गिरना, आलय=स्थान) पु० नीचे का लोक, नाग लोक, नरक, पाताल ७ हैं (१ अतल, २ वितल, ३ सुतल, ४ तलातल, ५ महातल, ६ रसातल, ७ पाताल)

सं० पाति—पु० मालिक, स्वामी, पति, स्वामी, धनी, मालिक।

सं० पाप—(पा=बचाना अर्थात् जिससे अपनेको बचाना) पु० अपराध, दोष, पातक, बदी, बुराई, गुनाह ।

सं० पापजनक-(जन्=पैदा करना) क० पु० पापोत्पादक, पापी, गुनहगार ।

प्रा० पापड़—(सं० पर्पट, पर्प्=जाना) पु० उर्द वा मूंग की पतली रोटी सी चीज़ ।

प्रा० पापड़ बेलना—बोल० बहुत मिहनत करना अथवा दुखसहना ।

सं० पापभाक्-(पाप + भाक्, भज्=सेवा) क० पु० पाप करनेवाला, अपराधी, गुनहगार ।

सं० पापरूप- पाप=अपराध, रूप=सूरत) पु० पापकी मूरत, बड़ापापी, दुष्ट, आसी, गुनहगार ।

सं० पापात्मा-(पाप + आत्मा) गु० जिसकी आत्मा पापयुक्तहो, जिसका मन पाप में लगा रहे, पापी, दुष्ट, कुकर्मी ।

प्रा० पापिन } (पाप) गु० स्त्री०
सं० पापिनी } दुष्टास्त्री, बुरी स्त्री, वह स्त्री जिसका मन पाप में लगा रहे, अपराधिनी ।

सं० पापिष्ठ--(पाप) क० पु० पापी, पापात्मा ।

सं० पापी-(पाप) गु० अपराधी, दुष्ट, पापात्मा, कुकर्मी, पापिष्ठ ।

सं० पामर—(पा=तीनों वेद का धर्म (पा, में धातु है पा=बचाना) और मृ=नष्ट होना जिससे वैदिक धर्म नष्ट होताहै वा पामन् खुजली अर्थात् दुख, रा=देना) गु० नीच, अधम, दुष्ट, मूढ़ ।

सं० पामा-(पा=बचना जिससे) स्त्री० खुजली, खाज, दाद ।

सं० पामारि—(पामा=खुजली, अरि=वैरी) पु० गन्धक जिसके लगाने से खुजली मिटजाती है, २-पमार के बीज ।

प्रा० पायंती-(सं० पादान्त, पाद+अन्त) स्त्री० खाट के पैर की ओर, पायतल, पैता, पैताना ।

प्रा० पायल-(सं० पाद=पांव) स्त्री० पैरों में पहनने का गहना, पैंजनी, पायजेब, २ बांस की सीढ़ी ।

सं० पायस—(सं० पयस्=दूध) पु० खीर, जाउर ।

प्रा० पाया—(सं० पाद, अथवा फा० पाया) पु० खाट, मेज अथवा कुरसी आदिका पाया ।

प्रा० पायिक } (सं० पादिक, वा
पायक } पदातिक फ़ा० पैक)
पाहक } पु० दूत, सिपाही, नट, ध्वजा, पैदल ।

सं० पायी—(पा=पीना) क० पु० पीनेवाला ।

सं० पार--(पृ वा पार=पूरा होना) पु० नदी अथवा समुद्र का पार

तीर, दूसरी ओर, २ समाप्ति, पूर्णता, ३ अन्त, शेष, नित्य सं० वा क्रि० वि० आर पार, वार पार, उस ओर, उससे परे, उस तीर ।

सं० पारक--(पार्+अक) क० पु० कर्म समाप्तिकर्ता, उतरनेवाला, पार जानेवाला ।

प्रा० पारकरना--बोल० पार उतारना, नांघना, २ पूरा करना, कोई काम पार उतारना, निबाहना, ३ छेदना, बेधना, फोड़ना ।

सं० पारग--(पार=अन्त, गम्=जाना) क० पु० समर्थ, पारगंता ।

प्रा० पारखी--(सं० परीक्षक) क० पु० परखनेवाला, परखैया, जौहरी ।

सं० पारण--(पार्=काम पूराहोना) पु० व्रतके दूसरे दिन भोजन करना, २ (पृ=भरना) मेघ, बादल ।

सं० पारद--(पृ=भरना, वा पूरा करना) पु० पारा, २ (पारपार करना, दा=देना) गु० पार करने वाला, मोक्षकारनेवाला, उद्धार करनेवाला ।

सं० पारदारिक--क० पु० पराई स्त्री गमन करनेवाला, परस्त्रीगामी ।

प्रा० पारना--(सं० पारण) पु० ना दे. दूसरेदिन भोजनकरना. क्रि० स० निबटना, पूरा करना ।

सं० पारभृत--(पार=अन्त, भृ=धारणा) पु० दान, समर्पण ।

सं० पारमार्थिक--क० पु० श्रेष्ठ, योग्य, परोपकारी ।

सं० पारशव--पु० ब्राह्मणसे शूद्रकी कन्या में पैदा हुआ, परस्त्री पुत्र, परशुधारी ।

प्रा० पारस--(सं० स्पर्शमणि, स्पर्श=छूना, मणि=रतन) पु० ऐसा पत्थर जिसको कहते हैं कि लोहे के छूने से लोहेका सोना हो जाताहै ।

प्रा० पारस--(सं० पारस, अथवा पारसीक) पु० फारस देश, ईरान ।

प्रा० पारसनाथ--(सं० पार्श्वनाथ) पु० जैनियोंका तेइसवां जिन ।

प्रा० पारसी--(सं० पारसी, अथवा पारसीक) पु० पारस देशका रहने वाला, ईरानी, २ जरदुश्तका मतमाननेवाला, ३ स्त्री० फारसी बोली, ४ तुरकीयाअरबीघोड़ा, तुरुक, म्लेच्छ ।

प्रा० पारा--(सं० पार, वा पारद) पु० एक प्रकार की धातु ।

सं० पारायण--(पार=पूर्णता, अय्=जाना) पु० पूर्णता, समाप्ति, पुराण का पाठ, सातदिन श्रीमद्भागवत का पाठ सुनाना ।

सं० पारलौकिक--पु० परलोक का काम, उसका के काम ।

सं० पारावत--पु० कपोत, कबूतर ।

सं० पारावार--(पार=उस पार, अ-

दार=इस पार) पु० समुद्र, २ नदी के दोनों तीर, ३ वारापार, वार पार इस उस पार, ४ हद, सींव ।

सं० पाराशर--(पराशर) पु० पराशर ऋषिका बेटा वेदव्यास, २ पराशर के बनाये हुये ग्रंथ, जैसे पराशर स्मृति, भिक्षुसूत्र आदि । [वेदव्यास ।

सं० पाराशर्य्य--पु० पराशरका पुत्र

सं० पारिजात--(पारी=समुद्र, जन्=पैदा होना) पु० देवताओंका वृक्ष, तूवा, देवतरु, सुरद्रुम, २ मूंगा ।

सं० पारिणाह्य--(परि=बहुत, नह्=सम्बन्ध करना) भा० पु० संबन्ध, बन्धन, रिश्तेदारी, बिरादराना, निबंधनता, चौड़ाई ।

सं० पारितथ्य--स्त्री० बेंदी, टिकुली, पु० तिलक, यथार्थ ।

सं० पारिपन्थिक--गु० चोर, ठग, वधिक, लुटेरू ।

सं० पारितोषिक--(परि=बहुत, तुष्=प्रसन्न होना, संतुष्ट होना) पु० इनाम, दान, भेंट, प्रतिफल, दायज, दैजा, दक्षिणा ।

सं० पारिन्द्र--पु० सिंह, अजगर, सर्प ।

सं० पारिपात्र } पु० एक पहाड़का
पारियात्र } नाम जो विन्ध्याचल की श्रेणी का पश्चिमी भाग है और मालवाकी सींवार है यौतुक, दहेज ।

सं० पारी--(पृ=भरना) स्त्री० पानी की ठिलिया ।

प्रा० पारी--स्त्री० बारी, अवसर, उसरी

सं० पार्थ--(पृथा=कुन्ती) पु० कुंती के बेटे युधिष्ठिर, अर्जुन, भीम ।

सं० पार्थिव--(पृथ्वी) गु० पृथ्वीका, पु० राजा, २ शिव, --पार्थिवी, स्त्री० सीता, जानकी ।

सं० पारिपार्श्विक--पु० नट, नटी, विदूषक, भांड़ ।

सं० पारिभाव्य--पु० कूठ औषध, जमानत, जामिनी, अविश्वास, अनादरता ।

सं० पारिषद्--गु० सेवक, सभासद ।

सं० पार्वण--(पर्व + अन, पर्व=पूर्ण करना) भा० पु० पर्व अमावस आदि में जो हो, उत्सव ।

सं० पार्वती--(पर्वत=पहाड़) स्त्री० हिमालयकी बेटी, शिवरानी, दुर्गा ।

सं० पार्श्व--(स्पृश्=छूना, वा पर्शु=पसली) पु० पांजर, पाखा, २ बगल के नीचे का भाग, ३ पसलियों का समूह, गु० पास, नगीच, नजदीक, समीप ।

सं० पार्श्ववर्त्ती--(पार्श्व=पास, वृत्=होने या रहनेवाला, वृत्=होना, रहना) पु० पास रहनेवाला, निकटस्थ, समीपवर्ती, पासका, कर्ता ...

प्रा० पाल--पु० नाव का बादबान, २ छोटा तम्बू, ३ घास ...

आदि का तह जिसमें रख कर कच्चे आमपकाते हैं, ४ पालना ।

सं०पालक—(पाल्=पालना)क०पु० पालनेवाला, बचानेवाला, रक्षक, मुहाफिज़ ।

प्रा० पालक--(सं० पालङ्क पाल=बचाना, और अङ्क=जाना) पु० सोआ, एक तरह का साग, २(सं० पल्यङ्क) पलंग ।

[दयालुता ।

सं० पालकता--भा० पु०परवरिश,

प्रा०पालकी--(सं०पर्य्यङ्क,वा पल्यङ्क) स्त्री० एक प्रकार की सवारी, चौपाला, डोली ।

सं० पालन--(पाल्=पालना)भा० पु० पालना, पोषण, रक्षा, बचाव, बचाना ।

प्रा०पालना-(सं०पालन)क्रि० स० पोसना, बचाना, रक्षा करना, २पु० हिंडोना, झूलना ।

सं०पालनीय-(पाल्+अनीय)र्म० पु० पालनेयोग्य, रक्षायोग्य ।

प्रा० पाला--(सं० प्रालेय, प्र=बहुत आ=चारों ओरसे, ली=पिघलना) पु० हिम, बर्फ़, टार, तुषार, २(सं० पालक) भरोसा, विश्राम, समागत बचाना, ३ कबड्डी के खेल में खेत की मेड़ जो बीच में बनाई जाती है, ४ झाड़बेरी के पत्ते ।

प्रा० पालागन—(सं० पादलग्न: पाद=पैर, लग्न=लगना)पु० पांव का छूना, प्रणाम करना ।

सं०पालि—(पाल्=बचाना) स्त्री० मागधी प्राकृतभाषा, मगधदेश की मातृभाषा ।

सं० पालित—(पाल्=पालना) कर्म० पु०रक्षित, बचायाहुआ,पालाहुआ ।

सं०पाली—स्त्री० पंक्ति, कोण, प्रशंसा, कल्पित भोजन, प्रान्त, कर्णपत्र, कर्णफूल, सेतु, चिह्न अस्त्रोंकी धार, अङ्क, क्रोड़, गोद, उत्संग, कनियाँ ।

प्रा० पाले—(सं० पालन=बचाव) अधीन, बचाव में, हाथ में, वश में ।

प्रा०पालेपड़ना—बोल०दूसरे के वश में आ जाना, जैसे "आजकरउँ खल कालहवाले, परेउकठिनरावण केपाले" (रामायण) ।

प्रा० पाव—(सं० पाद) पु०चौथाई, चौथा भाग, चौथ, चतुर्थांश ।

सं० पावक—(पू=पवित्र करना)पु० आग, अग्नि, गु० पवित्र ।

सं० पावन—(पू=पवित्र करना) गु० पवित्र, पवित्र करनेवाला, स्वच्छ, पु० पानी, २ आग, ३ गोबर, ४ कुश, ५ धूप, ६ स्त्री० ७ गंगा ८ गौर ।

प्रा० पावला—(पाव) पु० चार आना, मुद्रा अर्थात् सिक्के का चौथा भाग ।

प्रा०पावस—(सं० प्रावृष प्र—[illegible]

शोर, हल्ला, फोड़ा ।
प्रा० पिटना (सं० पिट्=मारना) क्रि० अ० मारखाना ।
प्रा० पिटारा (सं० पेटा, वा पेटिका पिट्=इकट्ठा करना) पु० टोकरा, मंजूषा, कपड़े रखनेका झोला ।
प्रा० पिटारी (सं० पिटक, पिट्= इकट्ठा करना) स्त्री० कपड़े रखने की चमड़ेकी मंजूषा, छोटापिटारा
अं० पिटीशन अर्ज़ी ।
सं० पिण्ड (पिण्ड्=इकट्ठा करना) पु० पितरोंके लिये अन्न आदिक का पिण्डा, २ देह, शरीर, ३ गोल वस्तु, गोला ।
प्रा० पिण्डछुड़ाना—बोल० बचना, भागना, पीछा छुड़ाना, टलना ।
प्रा० पिण्डली (सं० पिण्ड) स्त्री० पिण्डरी, फिल्ली, टँगड़ी ।
प्रा० पिण्डा (सं० पिण्ड) पु० शरीर, देह, २ मिट्टी आदि का ढेला, ३ डोरी का गोला अथवा गेंदा, ४ पितरों के लिये अन्न आदि का पिण्डा ।
प्रा० पिण्डारा (सं० पिण्ड अन्न का पिण्डा, और फ़ा० आर, लाने वाला) पु० लुटेरोंकी एक जात, लुटेरा, ठग, डकैत ।
सं० पिण्डित—र्म्म० पु० राशिकृत, इकट्ठा कियाहुआ ।
सं० पिण्डूक—पु० पिंडकी पक्षी ।
प्रा० पितर—(सं० पितृ) पु० पुरुषा, पुर्खा, पूर्वपुरुष ।
प्रा० पितलाना—(पीतल) क्रि० अ० तांबे पीतल के बरतन में रखने से खट्टी चीज़ का बिगड़ना ।
सं० पिता—(पा=बचाना) पु० बाप ।
सं० पितामह—(पिता) पु० दादा, आजा, २ ब्रह्मा, पितामही=दादी ।
सं० पितृकर्म्म / पितृकार्य्य } (पितृ=पितर, कर्म्म वा कार्य्य= काम) पु० श्राद्ध पिण्डदान आदि ।
सं० पितृकानन—पु० श्मशान स्थान, गयाक्षेत्र, पितृलोक ।
सं० पितृगण—पु० पितृ समूह, प्रजापतिपुत्राः, मरीचि, अत्रि, भृगु, अंगिरा, पुलह, क्रतु, वशिष्ठ, अग्नीध्र, अग्निष्वात्ता । [तृलोक ।
सं० पितृगृह—धि० पितृ–स्थान, पि-
सं० पितृतिथि—स्त्री० अमावास्या, श्राद्धदिन ।
सं० पितृदान—पु० पिण्डदान ।
सं० पितृपक्ष-(पितृ–पुर्खा, पक्ष= पख) पु० श्राद्धपक्ष, आश्विन का अँधेरा पख
सं० पितृप्रसू-स्त्री० पिताकी माता ।
सं० पितृव्य-पु० चचा । [की बहिन ।
सं० पितृष्वसा—स्त्री० फूफी, पिता

सं० पित्त--(अपि, दो=काटना, यहां अपि के अ का लोप और द को त हुआ है) पु० शरीरकी एक प्रकार की धातु।

प्रा० पित्ता--(सं० पित्त) पु० पित्त, पित्त की थैली, पित्ताधार, २ क्रोध।

प्रा० पित्तानिकालना--बोल० दंड देना, ताड़ना करना, सज़ा देना।

प्रा० पित्तामारना--बोल० क्रोध घटना, क्रोध ठंढा पड़ना।

प्रा० पित्पापड़ा--(सं० पर्पट, पर्प्= जाना) पु० एक औषध का नाम।

प्रा० पिदड़ी--स्त्री० एक छोटा पखेरू, फुदकी। [ढकना।

सं० पिधायक--क० पु० पिहना,

सं० पिधान--भा० पु० पिहना, ढकना।

प्रा० पिनकी--स्त्री० पीनक, ऊंघाहट, अफीम का नशा।

सं० पिनाक--(पा=बचाना सृष्टिको) पु० शिवका धनुष, २ शिवका त्रिशूल।

प्रा० पिन्नी--स्त्री० चांवलका लड्डू।

सं० पिनाकिन्--क० पु० शिव।

सं० पिपासातुर-(पिपासा + आतुर) गु० बहुत प्यासा।

सं० पिपासा--(सं० पा=पीना) स्त्री० पीनेकी इच्छा, प्यास, तृषा।

सं० पिपीलिका--(अपि, पील= रोकना) स्त्री० लाल चिऊँटी।

सं० पिप्पल--(पा=रक्षाकरना) पु० [illegible], पीपल, पिप्पल, वृक्षका नाम।

प्रा० पिय, पिया, पी--(सं० प्रिय) पु० स्वामी, प्रियतम, भर्ता, गु० प्यारा।

प्रा० पियार--(सं० प्रेम, वा प्रीत) पु० प्यार, प्रेम, प्रीत, नेह छोह, दुलार, मुहब्बत। [प्रेमी, सनेही।

प्रा० पियारा--(सं० प्रिय) गु० पु०

प्रा० पियारी--(सं० प्रिया) गु० स्त्री० प्यारी, प्रिया, २ मनोहरा।

प्रा० पियास--(सं० पिपासा) स्त्री० तृषा, तृष्णा, पीने की इच्छा, प्यास।

प्रा० पियासा--(सं० पिपासित, पा= पीना) गु० प्यासा, तृषावन्त।

प्रा० पिराना--(सं० पीड़न, पिड्= दुख देना) क्रि० अ० दुखना, दर्द करना, पीड़ा होना।

प्रा० पिरीते--(सं० प्रियतम) गु० प्यारा।

प्रा० पिरोज़ा--(सं० पेरोज, और फ़ारसीमें पीरोज़ा अथवा फीरोज़ा) पु० जंगाली रंगकी मणि।

प्रा० पिरोना--क्रि० स० गूंथना, सूई में तागा डालना, लड़ियाना।

प्रा० पिलई--(सं० प्लिहा, प्लिह= जाना) स्त्री तापतिल्ली, पिलही।

प्रा० पिलना--(सं० पेलन, पिल्= प्रेरणाकरना, वा फेलना, वा पेल्= जाना) क्रि० स० धक्का मारना, ठेलना, पेलना, जोर करना, क्रि० अ० घुसना जाना, भिड़ना, [illegible]

होना, २ लड़ने को आगे बढ़ना।

प्रा० पिलपिला--गु० नर्म, पिचपिचा, कोमल, ढीला।

प्रा० पिलुवा, पिल्लू (सं० पीलु, पील्=रोकना) पु० कीड़ा।

प्रा० पिल्ला--(सं० पिल्ल, चंचला) पु० कुत्ते का बच्चा।

सं० पिशाच--(पिशित=मांस, अश्=खाना, वा पिशित मांस, आ चारों ओर से, चम्=खाना) पु० प्रेत, भूत, शैतान। [पु० मांस।

सं० पिशित--(पिश=टुकड़े करना)

सं० पिशुन--(पिश्=टुकड़ेकरना) गु० चुगल, निन्दक, दुष्ट, नीच, भेदिया, जासूस।

प्रा० पिसान--(सं० पिष्ट, पिष्=पीसना) पु० आटा, विष्टक स्त्री० पु० पीठी, चौरेठा, पिन्नी।

सं० पिहित--(अपि+धा=धारण करना) स्त्री० पु० गुप्त, आच्छादित, छिपा हुआ।

प्रा० पीछा--(सं० पश्चात्) पु० पिछला भाग, पिछवाड़ा, २ रगेदना, खदेड़ना।

प्रा० पीछाकरना--बोल० खदेरना, रगेदना, पीछे पीछे जाना।

प्रा० पीछा फेरना--बोल० लौटा देना, पीछा दे देना, फेर लेना।

प्रा० पीछे--(सं० पश्चात्) क्रि० वि० नित्य सं० पीठ पीछे, परे, इसके बाद, अन्त में, निदान।

प्रा० पीछेडालना--बोल० पीछे छोड़ना, आगे निकल जाना, आगे बढ़ जाना।

प्रा० पीछेपड़ना--बोल० पीछे दौड़ना, दबाना, बार बार मांगना, सताना, छेड़ना, खिझाना, दुख देना, २ पीछे रहजाना।

प्रा० पीछेलगना--बोल० पीछे जाना, साथ होना, साथ लगना, लगा रहना। [रूई साफ करना।

प्रा० पींजना--क्रि० स० रूईधुनना

प्रा० पीटना--(सं० पिट्=पीटना, पीड्=दुख देना) क्रि० स० मारना, कूटना, ठोंकना, खट खटाना, चूर चूरकरना,—छाती पीटना—विलाप करना, रोना, पछतावा करना, दुख करना। [का अंग।

प्रा० पीठ--(सं० पृष्ठ) स्त्री० पिछाड़ी

प्रा० पीठकेपीछेडाललेना--बोल० बचाना, पक्षकरना, रक्षा करना।

प्रा० पीठके पीछेपड़ना--बोल० शरण लेना, पनाह लेना।

प्रा० पीठठोंकना--बोल० ढाढ़स देना, साहस देना, हिम्मत बंधाना।

प्रा० पीठदेना--बोल० भागजाना, फिरना, हटना, टलना, २ अप्रसन्न होकर फिरजाना।

प्रा० पीठपरहाथफेरना—बोल० पीठ थपथपाना, शाबाशी देना, ढाढ़सदेना। [ना, भागना, हटना।

प्रा० पीठफेरना—बोल० चलाजा-

प्रा० पीठलगना—पीठ पर घाव होना, (जैसे घोड़े के) २ घोडे पर चढ़ना। [पु० आसन, पीढ़ा।

सं० पीठ--(पिठ्=मारना, ठोकना)

प्रा० पीठी--(सं० पिष्टिका, पिष्= चूर करना) स्त्री० पिसी हुई उरद की दाल।

प्रा० पीड़--(सं० पीड़ा) स्त्री० बालक के पैदा होने के समय का दुःख जो लुगाई को होता है।

सं० पीड़ा—(पीड़=दुःख देना) स्त्री० दुःख, दर्द, व्यथा, वेदना।

सं० पीड़ित—(पीड़=दुःख देना)कृ० पु० दुःखित, दुःखी, बीमार।

सं० पीड्यमान—कृ० पु० पीड़ा युक्त, पीड़ाविशिष्ट। [मोढ़ा, मचिया।

प्रा० पीढ़ा--(सं० पीठ) पु० पटरा.

प्रा० पीढ़ी--(सं० पीठिका) स्त्री० पीढ़िया, २ वंशावली, वंश की परम्परा।

सं० पीत--(पा=पीना, अर्थात् आंखों से दिखाई देना) गु० पीला, पु० पीला रंग, [illegible] पुखराज, पारद।

प्रा० पीत } (सं० प्रीति स्त्री० प्यार, पीति } [illegible]।

प्रा० पीतम--(सं० प्रियतम) गु० बहुत प्यारा, पु० स्वामी, भर्त्ता।

प्रा० पीतल--(सं० पित्तल, वा पीतलका पीत=पीला, ला=लेना) पु० एक प्रकारकी पीली धातु।

सं० पीताम्बर—(पीत=पीला, अम्बर =कपड़ा) पु० पीला रेशमीकपड़ा, २ जिसके कपड़े पीलेहों, ३ श्रीकृष्ण।

सं० पीन--(पै, वा प्यय्=बढ़ना, मोटा होना) गु० मोटा, स्थूल, पुष्ट।

प्रा० पीनक--स्त्री० अफीम के नशे से ऊंघाई।

प्रा० पीनस--पु० पालकी, रोगविशेष।

प्रा० पीनसवारे--गु० पीनसरोग वाला जिसके नाकमें कीडे पड़गयेहों।

प्रा० पीना--(सं० पान) क्रि० स० पान करना, २ तमाकू का धूआंखींचना।

प्रा० पीजाना--पु० पीना, पीलेना, २ सोखना, ३ क्रोधको पीना मारना, चुपरहना, ४ उत्तर देने से रुकना।

प्रा० पीपल--(सं० पिप्पल) पु० एक वृक्ष का नाम जिसको हिंदू पवित्र मानते हैं, २ (सं० पिप्पली, पा= बचाना) स्त्री० एक [illegible] गर्म मसाला।

प्रा० पीपरामूल-(सं० पिप्पलीमूल) पु० [illegible]।

सं० पीयूष } (पीय=पीना, वा पेयूष } [illegible] होना) पु० [illegible]

अमी, सुधा, आबहयात, २ दूध ।

प्रा० पीर--(सं० पीड़ा) स्त्री० पीड़, दर्द, दुःख, व्यथा, वेदना ।

प्रा० पीरा } (सं० पीत) गु० पीत
पीला } वर्ण ।

प्रा० पीलाम-(यहशब्दचीनीहै)बोल० साटिन, एकतरहका रेशमीकपड़ा ।

प्रा० पीसना--(सं० पेषण, पिष्= पीसना) क्रि० सं० चूर चूर करना, बुकनी करना, चूर्ण करना, आटा करना, दलना, चकना चूर करना, २ कड़ कड़ाना, (जैसे दांत) ।

प्रा० पीहर--पु० स्त्रीके बापका घर, नैहर, मैका ।

सं० पुलिङ्ग } (पुम्=पुरुष, लिङ्ग
पुंल्लिङ्ग } =चिह्न) पु० पुरुष चिह्न पुरुषत्व, २पुरुषकावाचीशब्द ।

प्रा० पुकार--स्त्री० हांक, गोहार, डाक, चिल्लाना, चिल्लाहट ।

प्रा० पुकारना-क्रि० स० हांकमारना, चिल्लाना, बुलाना ।

प्रा० पुखराज--पु० एकरत्नकानाम ।

सं० पुङ्ग--पु० सुपारी, पूंगीफल ।

सं० पुङ्गव--(पुम्=पुरुष, गो=गाय) पु० बैल, वृषभ, और जब यह किसी दूसरे पद के पीछे आवे तब इस का अर्थ होताहै श्रेष्ठ, उत्तम--जैसे नर पुङ्गव=मनुष्यों में श्रेष्ठ ।

प्रा० पुङ्गीफल } (सं० पूगफल, पू
पूंगीफल } =पवित्रहोना) पु० सुपारी डली ।

प्रा० पुजना--(सं० पूर्=भरना) क्रि० अ० पूरा होना, २ प्रतिष्ठापाना ।

प्रा० पुजवाना } (सं० पुज्=पूजना)
पुजाना } क्रि० सं० पूजा कराना, (सं० पूर्ण) पु० पूरा कराना, भरोना । [सामग्री ।

प्रा० पुजापा (सं० पूजा) पु० पूजा की

सं० पुञ्ज--(पुम्=पुरुष, जी=जीतना वा जन्=पैदाहोना अर्थात् जो पुरुषों से इकट्ठा किया जाता है) पु० ढेर, समूह, राशि, थोक ।

सं० पुट (पुट्=मिलना) पु० दोना, २ मिलाव, मिलना, ३ ढकना ।

सं० पुटक--पु० दोना, पद्म ।

सं० पुटकिनी--स्त्री० पद्मिनी, कुमुदिनी ।

सं० पुटित क० पु० युक्त, शामिल ।

प्रा० पुट्ठा--पु० जानवरकाचूतड़, पुट्ठ ।

प्रा० पुड़िया--(सं० पुटी, पुट्=मिलना) स्त्री० कागज की छोटी सी गांठ ।

सं० पुण्डरीक (पुडि=मसलना, मलना) पु० कमल, श्वेतकमल, २ अग्निकोण के हाथी का नाम, ३ बाघ, ४ एक प्रकार का सांप, ५ एक प्रकार का कोढ़, ६ सफेद छाता ।

सं० पुण्डरीकाक्ष--(पुण्डरीक= कमल, अक्ष=आंख) पु० विष्णु जिसकी आंखें कमल सी हों ।

सं० पुण्य-(पू=पवित्र होना) भा० पु० पवित्र काम, सुकृत काम, धर्म, गु० पवित्र, शुद्ध, पावन, २ सुन्दर, ३ सुगंधित।

सं० पुण्यकृत्–कृ० पु० धार्मिक।

सं० पुण्यजनक–कृ० पु० पुण्योत्पादक, पुण्यकर्ता।

सं० पुण्यभूमि–(पुण्य=पवित्र, भूमि=धरती) स्त्री० पवित्र धरती, आर्यावर्त्त, अन्तर्वेद।

सं० पुण्यवान्–(पुण्य=धर्म, वत्=वाला) गु० धर्मात्मा, धार्मिक।

सं० पुण्यात्मा–(पुण्य=पवित्र, आत्मा, मन, जिसकी आत्मा धर्म में लगी हो) गु० पुण्यवान्, धर्मात्मा, पवित्रात्मा।

ग्रा० पुतला } पूतला } (सं० पुत्तल) पु० मूर्ति, काठकी बनी हुई मूर्ति।

ग्रा० पुतली } पूतली } (सं० पुत्तली) स्त्री० आंख का तारा, २ काठ की मूरत। [मत्तिका।

सं० पुत्तिका–स्त्री० पुतली, २ क्षुद्र

सं० पुत्र–(पुत्=एक नरक का नाम, त्र=बचाना, जो पुत्=नाम नरक से अपने बाप को बचावे) पु० बेटा।

सं० पुत्रिका } पुत्री } (पुत्र) स्त्री० बेटी, लड़की, कन्या, २ पुत्तिका।

ग्रा० पुन्न } पुन्नि } (सं० [illegible]) [illegible]

सं० पुनःपुना (पुनर्=वारवार, पू=पवित्र करना) स्त्री० पुनपुन नदी जो पटने से पाच कोस गया के रास्ते पर है, "कीकटेपु गया पुण्या, नदी पुण्या पुनःपुना" (वायु पुराण) अर्थ—कीकट अर्थात् मगध देश में गया और पुनपुन नदी पवित्र हैं। [फिर।

सं० पुनःपुनर्–अव्य० वारंवार, फिर

सं० पुनर्–अव्य० प्रथम, निश्चय, अधिकार, भेद, पक्षान्तर, फिर फिर, और।

सं० पुनरागमन–(पुनः+आगमन) भा० पु० फिर आना, लौटना।

सं० पुनरुक्ति–(पुनर्=फिर, उक्ति=कहना) स्त्री० फिर कहना, दो वार कहना।

सं० पुनर्जन्म–(पुनर=फिर, जन्म=पैदा होना) पु० दूसरा जन्म।

सं० पुनर्भव–पु० नख, नहँ, पुनर्जन्म, दूसरी पैदायश।

सं० पुनर्वसु–(पुनर=फिर, वसु=रहना) पु० सातवां नक्षत्र, गंधर्व, मुनिभेद।

सं० पुनीत–(पू=पवित्र होना) गु० पवित्र, शुद्ध, निर्मल, स्वच्छ। [मलय।

सं० पुन्नाग–[illegible] पु० [illegible]

सं० पुर–(पुर=आगे जाना, वा पूर्ण करना) पु० नगर, शहर, २ [illegible]

३ देह, ४ एक राक्षस का नाम ।

सं० पुरजन--क० पु० पुर के मनुष्य।

सं० पुरञ्जन--पु० जीव ।

सं० पुरःसर--(पुरस्=आगे, सृ=जाना) गु० अगुवा, अग्रगामी, पेशवा।

सं० पुरट--(पुर=आगेजाना) पु० सोना, कंचन ।

सं० पुरतः--अव्य० अग्रे, आगे, पेश ।

सं० पुरन्दर--(पुर=नगर, दृ=फाड़ना) क० पु० इन्द्र जो राक्षसों के नगरों को नाश करताहै, २ चौर।

सं० पुरन्ध्री-स्त्री० कुटुम्बिनी, भिल्लिन ।

सं० पुरारि--(पुर=दैत्य, अरि=शत्रु) पु० महादेव, शिव ।

सं० पुरवासी (पुर=नगर, बासी=रहनेवाला) पु० शहर का रहने वाला, नगरनिवासी ।

सं० पुरस्कार--(पुरस्=आगे, कृ=करना) पु० आदर, सत्कार, पूजा, दान, फल, इनाम, बदला ।

सं० पुरस्तात्--अव्य० आगे, अग्रे, पेश्तर, पूर्व, पूर्व में ।

ग्रा० पुरा--(सं० पुर) पु० गांव ।

सं० पुरा--अव्य० प्राचीन, पुराना, पुराण, निकट, अतीत, भावी, पूर्व समय, पिछला वक्त ।

सं० पुराकृत--(पुरा=पहले, कृत=किया) कर्म० पु० पहले का किया हुआ, पूर्वजन्म ।

सं० पुराण (पुरा=पुराना (पुर=आगे जाना)—अर्थात् जिस में पुराने समय की बातें हों, अथवा जो पुराने समय में बने हों) पु० वे ग्रन्थ जिस में से बहुतों को व्यास जी ने बनाये अथवा इकट्ठे किये। पुराण सब पद्य में लिखे हुए हैं और उन को हिंदू पवित्र मानते हैं। हर एक पुराण में विशेष करके इन पांच बातों का वर्णन है जैसे-

" सर्गश्च प्रतिसर्गश्च "
" वंशोमन्वन्तराणि च "
" वंशानुचरितं चैव "
" पुराणं पंच लक्षणम् "

अर्थात् १ संसार की उत्पत्ति, २ प्रलय और प्रलय के पीछे फिर संसार की उत्पत्ति, ३ देवता और शूरवीरों की वंशावली, ४ मनुओं का राज, और ५ उनके वंश के लोगों का व्यवहार और चलन। पुराण अठारह हैं १ ब्रह्मपुराण, २ पद्मपुराण, ३ ब्रह्माण्डपुराण, ४ अग्निपुराण, ५ विष्णुपुराण, ६ गरुड़पुराण, ७ ब्रह्मवैवर्त्तपुराण, ८ शिवपुराण, ९ लिङ्गपुराण, १० नारदपुराण, ११ स्कन्दपुराण, १२ मार्कण्डेयपुराण, १३ भविष्यत् पुराण, १४ मत्स्यपुराण, १५ वराह पुराण, १६ कूर्म्मपुराण, १७ वामन पुराण, १८ श्रीमद्भागवतपुराण,

इन सब पुराणों में चार लाख श्लोक गिने गये हैं और अठारह उपपुराण भी हैं प्राचीन, जीर्ण गु० पुराना, पहले का, सबसे पहला, बूढ़ा, ८० कौड़ी की संख्या, मूल्य ।

सं० पुराणपुरुष--('पुराण=पुराना वा सब से पहला, पुरुष=मनुष्य)पु० विष्णु, भगवान्, २ बूढ़ाआदमी ।

सं० पुरातन--(पुरा=पुराना) गु० पुराना, प्राचीन, अगले समय का ।

प्रा० पुरातम--(सं० पुरातन) गु० पुराना, क़दीम, प्राचीन ।

प्रा० पुराना-(सं० पुराण) बोल० अगले समय का, प्राचीन, पुरातन, बोदा, बहुत दिन का, बूढ़ा ।

प्रा० पुराना--(सं० पूर=पूरा करना) क्रि० स० भरदेना, भरना, पूरा क० ।

सं० पुरारातिपुरारि } (पुर एक राक्षसका नाम, आराति वा अरि वैरी) पु० शिव, महादेव जिन्होंने पुर नाम दैत्य को माराथा ।

सं० पुरी--(पुर) स्त्री० नगरी ।

सं० पुरीष--(पृ=भरना) विष्ठा, गूह, मल ।

सं० पुरु--(पृ=भरना) पु० एक चंद्र-[वंशी राजा का नाम ।

प्रा० पुरखा
पुरखा
पुरखे } (सं० पुरुष) पु० बड़े, बापदादे, बाप दादे, पूर्वपुरुष ।

सं० पुरुष--(पुर=आगे जाना) पु० मनुष्य, नर, परमेश्वर, २ पुरखा ।

सं० पुरुषसिंह--(पुरुष+सिंह) पु० पुरुषों में सिंह, श्रेष्ठमनुष्य ।

सं० पुरुषार्थ--(पुरुष=मनुष्य, अर्थ=प्रयोजन)पु० धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, २ बल, जोर, वीरता, साहस, पराक्रम, परोपकार ।

सं० पुरुह
पुरूह } गु० प्राचीन, बहुल, बहुत, अधिक ।

सं० पुरोगम--(पुरस्=आगे, गम्=जाना) गु० श्रेष्ठ, अग्रगामी, पेशवा ।

सं० पुरुषोत्तम-- (पुरुष=मनुष्य, उत्तम=श्रेष्ठ)पु० विष्णु, नारायण, २ उत्तम मनुष्य ।

सं० पुरोडाश-(पुरस्=आगे, दाश्=देना) पु० होम की सामग्री घी आदि हविस्, खीर ।

सं० पुरोधा
पुरोहित } (पुरस्=आगे, धा=रखना) पु० कुलगुरु, उपाध्याय ।

प्रा० पुर्वा
पुर्वैया } (सं० पूर्ववायु) स्त्री० पूर्व की हवा ।

प्रा० पुरसा--(सं० पौरुष) गु० मनुष्य की ऊंचाई के बराबर, पु० मनुष्य के डील की ऊंचाई के बराबर विस्तार, चार हाथ का नाप ।

सं० पुल--(पुल=ऊंचा होना) पु० सेतु, बंध, बांध, गु० श्रेष्ठ, उत्तम ।

सं० पुलक--(पुल=बढ़ना, वा ऊंचा वा खड़ा होना) पु० रोम, रूओं के रोएं खड़े होना, रोमांचित होना,

प्रसन्न होना, रोमाञ्च, गजभोजन, हरताल, गड़हा, तुच्छधान्य ।

सं०पुलकित-(पुल्=बढ़ना, वा ऊंचा होना) मर्म० पु० रोमांचित, हर्षित, आनंदित ।

सं० पुलस्ति } (पुल्=बड़ा होना)
पुलस्त्य } पु० ब्रह्मा का बेटा, रावण का दादा, सप्तऋषियों में का एक ऋषि ।

सं०पुलिन-(पुल्=ऊंचा होना) पु० नदी के बीच में बालू का टापू, तट, किनारा । [म्लेच्छ ।

सं०पुलिन्द--पु० भिल्ल, निषाद, शबर,

प्रा० पुलिन्दा--पु० पार्सल, गठरी, गठिया, गांठ ।

सं०पुलोमजा--(पुलोमा=असुरभेद जा=उस से पैदा) स्त्री० इन्द्रप्रिया, शची, इन्द्राणी ।

प्रा०पुवाल-(सं० पलाल, पल्=जाना वा बचना) पु० पुवाल, खर, तिनका, बिचाली, डांठी, पयाल ।

सं० पुषा--स्त्री० पुष्टि, पालन ।

सं०पुष्कर-(पुष्=बढ़ना, वा पालना) पु० कँवल, २ आकाश, ३ पानी, एक तीर्थ का नाम जो अजमेर से तीन कोस पर है, ५ सातद्वीपों में का एक द्वीप, ६ पोखरा, ७ तालाब, ८ कमल, ९ हाथीकी सूंड, १० ढोल, ११ सर्प, १२ नृत्यबाजा, तुरही ।

सं० पुष्करिणी--स्त्री० तलैया, हथिनी, पुष्करमूल, पुहकरमूल, पद्मसमूह ।

सं० पुष्कल--(पुष्=अधिक होना) गु० बहुत, ढेर, तृप्त, सम्पूर्ण, तुष्ट, २ श्रेष्ठ, उत्तम, अच्छा, मेरुपर्वत, कस्तूरी ।

सं० पुष्ट--(पुष=पालना, वा बढ़ना) गु० पाला हुआ, २ मोटा ताजा ।

सं० पुष्टि--स्त्री० पालना, पोषण, वृद्धि, असगंध औषध मातृकाभेद विवाहों में सोलह मातृका पूजीजाती हैं उन में की एक ।

सं० पुष्टाङ्ग--(पुष्ट=मोटा, अङ्ग=शरीर) गु० मोटा ताजा, जिसका शरीर पुष्टहो ।

सं०पुष्प--(पुष्प्=फूलना, विकसना) पु० फूल, कुसुम, सुमन, २ स्त्रीका रजस्, ३ कुबेर का विमान, ४ एक प्रकारकी आंखो का रोग ।

सं०पुष्पक-(पुष्प=फूल, अर्थात् फूल सा हलका) पु० कुबेर का विमान, कंकण, रसौत, लोहपात्र, अँगीठी, लोहा, कांसाधातु ।

सं० पुष्पकरण्डक- पु० पुष्पपात्र, बांस की बनी हुई फूल रख कर रखने की पिटारी, फूलों की पिटारी ।

सं० पुष्पचाप--पु० कामदेव ।

सं० पुष्पदन्त--पु० वायुदिशा का दिग्गज, विद्याधर गंधर्व ।

सं० पुष्पपुर--पु० कुसुमपुर, पाटलिपुत्र, पटना ।

सं० पुष्पमास--पु० चैत्र ।

सं० पुष्परस--(पुष्प+रस) पु० फूलों का रस, मकरन्द, मधु ।

सं० पुष्पलिट्--(पुष्प=फूल, लिह्=स्वादलेना) क० पु० भ्रमर, भौंरा ।

सं० पुष्पवाटी--(पुष्प=फूल, वाटी=वाड़ी) स्त्री० फूलों की वाड़ी ।

सं० पुष्पविमान--(पुष्प+विमान) पु० फूलों का विमान, देवताओं का विमान, कुबेर का विमान ।

सं० पुष्पाञ्जली--(पुष्प+अंजली) स्त्री० दोनों हाथों में फूल लेकर और कुछ मंत्र पढ़ कर देवता को चढ़ाना, निछावर, भेट ।

सं० पुष्पित--(पुष्प्=विकसना) स्पं० फूला हुआ, विकसा हुआ ।

सं० पुष्य--(पुष=पुष्ट करना किसी कामको) पु० आठवां नक्षत्र ।

सं० पुस्तक--(पुस्त्=आदरकरना, वा बांधना) स्त्री० पोथी, ग्रंथ, किताब ।

प्रा० पूछा--(सं० पूप, पु=शुद्धकरना) झाड़ना, फर्श्री करना, साफ करना ।

प्रा० पूंजी--(सं० पुञ्ज) स्त्री० धन, मूलधन, असल धन, सम्पत्ति, सर्माया, सम्पदा ।

सं० पूग--(पू=पवित्र होना) पु० सुपारी, २ समूह, ३ एक वृक्षका नाम ।

प्रा० पूछ--(पूछना) स्त्री० खोज, अन्वेषण, प्रश्न ।

प्रा० पूछपाछ--बोल० पूछना, निर्णय करना, प्रश्न ।

प्रा० पूछना--(सं० प्रच्छन, प्रच्छ्=पूछना) क्रि० स० प्रश्न करना, सवाल करना, जिज्ञासा करना ।

सं० पूजक--(पूज्=पूजना) क० पु० पुजारी, पूजनेवाला, सेवक ।

सं० पूजन--(पूज्=पूजना) भा० पु० अर्चा, पूजा, अर्चन ।

प्रा० पूजना--(सं० पूजन) क्रि० स० परस्तिशकरना, पूजाकरना, अर्चना, भजना, ध्याना, बहुतमानना, २ (सं० पूर्ण) क्रि० अ० पूरा होना ।

सेवक ।

सं० पूजित--(पूज्=पूजना) कर्म० पु० पूजा हुआ, अर्चित, ख़िदमत किया गया ।

सं० पूज्य--(पूज्=पूजना) कर्म० पु० पूजने योग्य, पूजनीय, पु० ससुर, गुरुजन ।

प्रा० पूठ--पु० कूला, चूतड़, पुट्ठा ।

प्रा० पूठा-(सं० पट्टिका) पु० गत्ता जिल्द ।

प्रा० पूणी-- स्त्री० रूई का पहल जो कातने के लिये बनाया जाता है ।

सं० पूत--(पू=पवित्र करना) पु० पवित्र, सफा, शुद्ध, सच्चाई, सफाई, कुश, शङ्ख ।

प्रा० पूत--(सं० पुत्र) पु० बेटा ।

सं० पूतना--(पू=पवित्र करना) स्त्री० एक राक्षसी जिसको श्रीकृष्णने मारा ।

सं० पूति--भा० स्त्री० पवित्रता, सफाई, स्वच्छता, निर्मलता, मह्क ।

प्रा० पूनियां, पूनों, पूनौं (सं० पूर्णिमा) स्त्री० पूर्णमासी, हिन्दी महीने का पिछला दिन ।

सं० पूप--(पू=शुद्ध करना) पु० पूआ, मालपुआ ।

सं० पूय--गु० निषिद्ध, कुत्सित, पीव, [बिगड़ा रक्त ।

सं० पूरक--(पूर्=भरना) क० पु० भरनेवाला, पूर्ण करनेवाला, २ प्राणायाममें हवा को ऊपर खेंचना ।

सं० पूरण--(पूर्=पूरा करना) गु० भरा, पूरा, सारा, सब ।

सं० पूरणीय--(पूर्+अनीय) कर्म० पु० पूरा होने योग्य ।

प्रा० पूरब--(पूर्व) पु० पूर्वदिशा ।

प्रा० पूरा--(सं० पूर्ण) गु० सब, सारा, भरा, समाप्त, बस, ठीक, तमाम, पक्का ।

सं० पुरुष--(पुर्=पूरा करना) पु० मनुष्य, नर, पुरुष ।

सं० पूर्ण--(पूर्=पूरा करना) गु० पूरा, भरपूर, भरा, सब, सारा, तमाम, समस्त, समाप्त, ठीक, पक्का ।

सं० पूर्णमासी--(पूर्ण=पूरा, मास=चांद, वा महीना) स्त्री० पूनौं, पूर्णिमा ।

सं० पूर्णाहुति-(पूर्ण+आहुति) स्त्री० होम में सबके पीछे आहुति वा बलि ।

सं० पूर्णिमा, पूर्णमा (पूर्ण=पूरी, अर्थात् जिस दिन चांद की कला पूरी होती है) स्त्री० पूनौं, पूर्णमासी ।

सं० पूर्त--कर्म० पु० पूरा, समाप्त, पूरित, पु० बावली, तालाब, कुआँ, बागीचा, देवमंदिर ।

सं० पूर्तिन--क० पु० पूर्णकर्ता ।

सं० पूर्व, पूर्व (पूर्व=रहना वा बुलाना) पु० पूरब दिशा, गु० पूरबदिशा का, पूर्वी, २ पहला, क्रि० वि० पहले, प्रथम, आगे । [पु० बड़ा भाई ।

सं० पूर्वज-(पूर्व=पहले, जन=पैदा होना)

सं० पूर्वार्द्ध--(पूर्व=पहला, अर्द्ध=आधा) पु० पहला, आधा।

प्रा० पूर्विया } (सं० पौर्विक, पूर्व)
पूर्वी } गु० पूर्वदेशी, पूर्वका।

सं० पूर्वोक्त--(पूर्व=पहले, उक्त=कहा हुआ) र्म० पु० पहले कहाहुआ, मजकूर।

सं० पूर्वलिखित--(पूर्व=पहलेका, लिख्=लिखना) र्म० पु० पहले का लिखा हुआ।

प्रा० पूला-- (सं० पूल, पूल=ढेर लगाना) घासका बोझा अथवा गट्ठा।

सं० पूषन--(पुष्=बढ़ना) पु० सूर्य्य।

प्रा० पूस--(सं० पौष, पुष्य एक नक्षत्र का नाम) पु० चन्द्र वर्ष का नवां महीना जिसमें पूरा चांद पुष्य नक्षत्र के पास रहता है औरपूर्णमासी के दिन यह नक्षत्र होता है।

सं० पृक्त--(पृच्=मिलना) क० पु० मिश्रित, मिलाहुआ, मुरक्कब।

सं० पृच्छक--(पृच्छ्+अक, पृच्छ=पूछना, प्रश्नकरना) क० पु० प्रश्न कर्ता, जिज्ञासु, पूछनेवाला।

सं० पृच्छा--भा० पु० पूछना, प्रश्न।

सं० पृतना--स्त्री० सेना, फौज २४३ हाथी, २४३ रथ, ७२९ घोड़े, १२१५ मनुष्य जिस फौज में हों।

सं० पृथक् (पृथ=फेंकना) गु० भिन्न, जुदा, अलग, भिन्न, न्यारा।

सं० पृथक्करण (पृथक्=जुदा, करण=करना) पु० जुदाकरना, अलगकरना।

सं० पृथक्क्षेत्र--पु० भिन्नक्षेत्र, अलग का खेत, जारजपुत्र, वर्णसंकर माता जो यारसे पुत्र पैदाकरे।

सं० पृथा-- स्त्री० कुन्ती, पाण्डु की स्त्री और युधिष्ठिर अर्जुन और भीम की मा, विस्तार, प्रक्षेप।

सं० पृथवी } (पृथ्=विख्यातहोना
पृथिवी } फैलाना) स्त्री० धरती, धरणी, भूमि, जमीन।

सं० पृथिवीनाथ } पृथिवी=धरती,
पृथिवीपति } नाथ वा पति=मालिक) पु० राजा, नृपति, भूपति।

सं० पृथिवीपाल--(पृथिवी=धरती, पाल=बचाना) पु० राजा, पृथिवीनाथ, भूपति।

सं० पृथु } पृथ्=फेंकना, वा पृथ्=
पृथुक } विख्यात होना) पु० सूर्य वंशियों का पांचवां राजा गु० बड़ा, मोटा, २ चतुर, विशाल, ३ बालक, ४ चिउरा।

सं० पृथिक्रु--(पृथ्=विख्यात होना) पु० यदुवंशियों का एक राजा और श्रीकृष्ण का पुरुषा।

सं० पृथुल--क० पु० मस्त, बड़ा।

सं० पृथ्वी--(पृथु=बड़ी, चौड़ी, प्रथ्=विख्यात होना, फैलना) स्त्री० धरती, धरणी, भूमि, जमीन।

सं० पृष--पु० सींचना, [illegible] [illegible], [illegible], [illegible]।

सं० पृषत्--पु० मृगभेद, विभाग, हिस्सा, बिन्दु, बूंद, छींट, बेल बूटा, सूक्ष्म, पतला, वायु, हवा, सिंह।

सं० पृषोदर--(पृष+उदर) गु० सूक्ष्मोदर, कृशोदर, छोटे पेटवाला।

सं० पृष्ठ--(पृष्=सींचना) स्त्री० पीठ, पिछाड़ी का अंग, हर एक चीज का पिछला भाग, पु० पिठौता, पुस्तक के पत्रे की एक ओर।

सं० पृष्ट--(प्रच्छ=पूछना) कर्म० जिज्ञासित, पूछागया।

प्रा० पेई--(सं० पेटक पिट्=इकट्ठा करना) स्त्री० पिटारी।

प्रा० पेंग--स्त्री० झूलाका हिलाना।

प्रा० पेंठ--स्त्री० हाट, बाजार, मंडी।

प्रा० पेंदा--पु० तला नीचे का भाग।

प्रा० पेखना--(सं० प्रेक्षण) क्रि० स० देखना, निरखना।

प्रा० पेखना--पु० स्वांग, खेल।

सं० पेचक--(पचि=फैलाना) पु० उल्लू, उलूक, पेचा।

प्रा० पेचा--(सं० पेचक)पु० उल्लू।

सं० पेट--(पिट्=इकट्ठा करना) पु० उदर, जठर, २ गर्भस्थान, कोख, गर्भाधान, ३ बंदूक आदि की मुहड़ी, ४ छेद, खोह, कंदरा, बंदूक, पिटारा, पिटारी, टोकरी, डब्बा, डिबिया।

प्रा० पेटआना--बोल० पेट चलना, बहुत झाड़ा फिरना, बहुत दस्त होना, दस्त की बीमारी होना।

प्रा० पेटकादुखदेना--बोल० भूखों मरना।

प्रा० पेटकापानीनहिलना--यह बोल चाल उस जगह बोला जाता है कि जब घोड़ा ऐसी चाल चले कि सवार हिले डुले नहीं और न किसी तरह का दुःख पावे।

प्रा० पेटकीआग--बोल० मा बाप का प्यार, २ सन्तान, औलाद, लड़के का दुःख न देख सकना।

प्रा० पेटकीआगबुझाना--बोल० कुछ खाना, भूखेको कुछ खिलाना।

प्रा० पेटकीबातें--बोल० मन की बातें, गुप्त बातें, छिपी बातें।

प्रा० पेटगड़गड़ाना--बोल० पेट गड़बड़ाना, पेटबोलना, पेटहड़बड़ाना।

प्रा० पेटगिरना--बोल० गर्भगिरना, गाभ गिरना, अधूरा जाना, स्त्री के पेट से कच्चे बच्चेका गिरना।

प्रा० पेटजलना--बोल० बहुत भूखा होना।

प्रा० पेटदिखाना--बोल० अपनी गरीबी और भूख को जताना।

प्रा० पेटपालना--बोल० अन्न निर्वाह करना, गुजरान करना, २ स्वार्थी होना।

प्रा० पेटपीठएकहोना--बोल० बहुत दुबला होना, लागर होना।

प्रा० पेटपोंछन--बोल० स्त्री की

सबसे पिछला बालक। [टपालू।

प्रा० **पेटपोसू**–खाऊ, पेटू, पेटार्थू, पे-

प्रा० **पेटफूलना**-बोल० बहुत हँसना, हँसी के मारे लोटना, २ गर्भ रहना।

प्रा० **पेटबढ़ाना**- बोल० बहुत खाना, २ दूसरे के हिस्से पर हाथ बढ़ाना।

प्रा० **पेटबांधना**- बोल० भूख से कम खाना। [अघाके।

प्रा० **पेटभर**- बोल० जीभर, भरपेट,

प्रा० **पेटभरना**- बोल० खाना, खा चुकना, अघाना, तृप्त होना।

प्रा० **पेटमारना**-बोल० आत्मघात करना, आपघात करना, खुदकुशी करना।

प्रा० **पेटमेंपैठना**- बोल० दूसरे का भेद लेना, २ खुशामद की बातें

की हाजत होना, पेट गड़बड़ाना।

सं० **पेटार्थी**
प्रा० **पेटार्थू** } (सं० पेट, और अर्थी चाहने वाला, अर्थ=चाहना या मांगना) गु० खाऊ, पेटू, पेटपालू।

सं० **पेटिका**-(पिट्=इकट्ठा करना) स्त्री० संदूक, पिटारा, पेटी, टोकरी, डब्बा। [एकदिनकाखाना।

प्रा० **पेटिया**-(पेट) पु० सीधा, हर

सं० **पेटी**-(पिट्=इकट्ठा करना) स्त्री० पिटारी, २ कमरबंद, पेट पर बांधने की चमड़े की बंधनी, ३ छाती।

प्रा० **पेटू**-(पेट) गु० अपना पेट भरने वाला, पेटार्थू, पेटार्थी, मर्भूखा, पेटपालू, खाऊ।

प्रा० **पेटौखा**-(पेट) पु० पेट च-

२ दूध, गु० पीने योग्य ।

प्रा० पेलना (सं० पेलन, पिल् वा पेल्=जाना) क्रि० स० ठेलना, ढकेलना रेलना, धक्का देना, २ ठांसना, ३ निचोड़ना, ४ आज्ञा भंग करना, वचन तोड़ना ।

सं० पेश } गु० सुन्दर, दक्ष, कोमल,
पेशल } चतुर, निर्मल, मनोहर, रुचिर ।

प्रा० पेशाब-(सं० प्रस्राव प्र, स्रु=चूना, बहना) पु० मूत, मूत्र ।

सं० पेशि-(पिश्=अंगविभाग) पु० वज्र, अंडा ।

सं० पेशी- स्त्री० भृंगी, बड़ी कली, मियान, मांस, पुंज, समूह ।

सं० पेषक-कै० पु० मर्दक, पीसनेवाला।

सं० पेषण- भा० पु० पीसना ।

सं० पेषित- र्म० पु० पीसाहुआ ।

सं० पेषणि } (पिष्=पीसना) गु०
पेषणी } स्त्री० चक्की, दलैंती, जांता ।

सं० पेषि-पु० लोटा, वट्टा ।

प्रा० पैंचा-पु० हाथउधार, उधारऋण।

प्रा० पैंड-(सं० पण्ड, पण्ड्=जाना) पु० पांव, डग, क़दम, पद, २ उचान, ऊंची धरती ।

प्रा० पैंडा-(सं० पण्ड, पण्ड्=जाना) पु० रस्ता, मार्ग, बाट, सड़क ।

प्रा० पैंताना-(सं० पादान्त पाद + अन्त) पु० पायंती, पायतल ।

प्रा० पैंतालीस-(सं० पञ्च चत्वारिंशत् पंच=पांच, चत्वारिंशत्=चालीस) गु० चालीस और पांच।

प्रा० पैंतीस-(सं० पञ्च त्रिंशत् पञ्च =पांच, त्रिंशत्=तीस) गु० तीस और पांच ।

प्रा० पैंसठ-(सं० पञ्चषष्टि पञ्च= पांच, षष्टि=साठ) गु० साठ और पांच।

प्रा० पै-(सं० पयस्) पु० दूध, पानी, २ (सं० उपरि) संकेतवर्ण० पर, ऊपर, ३ (सं० पर) समुच्च० परन्तु पर।

प्रा० पैज-पु० पण, होड़, प्रतिज्ञा, अहेद, क़ौल, वचन ।

प्रा० पैठ-स्त्री० हुंडी की दूसरी नक़ल जब हुंडी खोय जाती है तब पैठ कराते हैं, २ पैठना, पहुँच, ३ भरोसा।

प्रा० पैठना-(सं० प्रविष्ट) क्रि० अ० घुसना, धसना, प्रवेश करना।

प्रा० पैड़ी-स्त्री० सीढ़ी, ज़ीना, निसेनी।

प्रा० पैतृक-(पितृ) गु० पिता का, बाप का, बपौती, मौरूसी ।

प्रा० पैदल-(सं० पादात वा पदाति) पु० पियादा, पैरों से चलनेवाला।

प्रा० पैन-(सं० पानीय) पु० नाली, नाला ।

प्रा० पैना-पु० आर, अंकुश, आंकुस, बैल के मारने का चाबुक, तीखा कांटा, गु० तीखा ।

प्रा० पैया-पु० पहिया, चक्र चक्का।

प्रा० पैर-(सं० पद) पु० पांव, चरण, क़दम।

प्रा० पैरना-क्रि० अ० तैरना, हेलना।

प्रा० पैराक-कृ० पु० तैरनेवाला, पैरनेवाला।

प्रा० पैवंदीबेर-पु० बड़े २ बेर।

प्रा० पैसा-पु० तांबे का सिक्का, २ धन, दौलत, रोक, रोकड़, संपत्ति।

प्रा० पैसाउड़ाना-बोल० बहुत खर्च करना, अंधाधुन्ध खर्च करना, २ दूसरेकाधनचुरालेना या ठगलेना।

प्रा० पैसाखाना-बो० पैसाउड़ाना, बहुत खर्च करना, २ मज़दूरी करके पेट भरना, ३ रिशवत लेना, ४ डकार जाना, विश्वासघात करके ले लेना।

प्रा० पैसाडुबोना-बोल० धनगँवाना।

प्रा० पैसाडूबना-बोल० धन बरबाद होना, रुपया पैसा खोया जाना।

प्रा० पैसेलगाना-बोल० धन खर्च करना, धन लगाना।

प्रा० पैसेवाला-गु० धनवान्, दौलतमंद, २ एक पैसे का।

प्रा० पैसोंसिरपरवारबांधना- बो० [illegible]

प्रा० पैस्तार-पु० [illegible]

प्रा० पैहं[illegible]

प्रा०पोइस-(सं०पश्य=देख) क्रि० वि० अलगहो, दूरहो, अरे, जब कि रस्ते पर बहुत से आदमी हों तब उनको अलग करने और नहीं छुआने के लिये भंगी यह शब्द बहुतबार बोला करता है।

प्रा० पोंछना- क्रि० स० पूंछना, झाड़ना, फर्श करना, साफ़करना।

प्रा० पोखर } (सं० पुष्कर) पु० पोखरा } तालाब, ताल, झील, तडाग।

सं० पोगण्ड-गु० विकलांग, नपुंसक, अंगहीन, कुपुरुप, पु० सोलह वर्षकी अवस्था।

प्रा० पोच- (फा० " पूच ") गु० नीच, तुच्छ, बुरा।

प्रा० पोट-स्त्री० मोट, गांठ, गठरी।

प्रा० पोटला- पु० बड़ी गठरी।

प्रा०पोटली-स्त्री०छोटीगठरी,मोटरी।

प्रा०पोढ़ा } (सं०प्रौढ़) गु० बलपौढ़ा } वान, रकड़ा, ठोस, दृढ़।

प्रा० पोढ़ाई } (सं० प्रौढ़ना) भा० पौढ़ाई } स्त्री० बल, २ कड़ापन, दृढ़ता, ठोसाई।

सं० पोत- ([illegible]) [illegible] [illegible]

प्रा० पोत- [illegible]

सं० पोतक-(पू=शुद्ध करना) पु० बालक, बच्चा।

प्रा० पोतड़ा- पु० बच्चे का बिछौना।

प्रा० पोतना- क्रि० स० लीपना, लेसना।

प्रा० पोता-(सं० पौत्र) पु० बेटे का बेटा।

प्रा० पोतिया-स्त्री० नहाने के समय पहनने का कपड़ा, गँवार लोगों के शिर पर बाँधने का कपड़ा, २ एक खिलौने का नाम।

प्रा० पोती-(सं० पौत्री) स्त्री० बेटे की बेटी।

प्रा० पोथा-(सं० पुस्त, पुस्त्=आदर करना, वा बांधना) पु० बड़ी पुस्तक।

प्रा० पोथी-(सं० पुस्ती, पुस्त्=आदर करना, वा बांधना) स्त्री० पुस्तक, बही, किताब।

प्रा० पोदना- एक पखेरू का नाम।

प्रा० पोना-क्रि० स० पिरोना, गाथना, गूथना, गुहना, २ रोटी बेलना वा बनाना।

प्रा० पोपला-पु० बेदाँत, दाँतरहित, अदाँत, जिस के दाँत गिरगये हों।

प्रा० पोमचा- पु० एक तरह का रंगीला कपड़ा।

प्रा० पोर-(सं० पर्व) स्त्री० गांठ, गिरहा, दो गांठों का बीच।

प्रा० पोरी-(सं० पर्व) स्त्री० बाँस की अथवा गन्ने की गांठ।

प्रा० पोला-पु० खाली, छूछा; कोमल, नर्म।

अं० पोलेटिकल एजेण्ट=राज्य प्रबन्ध कर्ता।

अं० पोलेटिकल सभा=राज नैतिक सभा।

अं० पोलेटिकल एजूकेशन=राज नीति शास्त्र।

अं० पोलेटिकल आफ़िसर=राज नैतिक कर्म्मचारी।

अं० पोलेटिकल डिपार्टमेण्ट =पोलेटिकल=राजनैतिक, डिपार्टमेण्ट=महकमा, विभाग।

सं० पोषक-(पुष्=पोसना पालना) क० पु० पोसनेवाला, पालनेवाला, रक्षक।

सं० पोषण-(पुष्=पोसना) भा० पु० पालन, भरण, रक्षा।

प्रा० पोषना, पोखना, पोसना (सं० पोषण) क्रि० स० पालना, रक्षा करना, प्रतिपालन करना।

सं० पोषणीय-(पुष् + अनीय) र्म० पु० रक्षायोग्य, पालन योग्य।

सं० पोषयित्नु-क० पु० भर्ता, स्वामी, खाविंद।

सं० पोष्टा-क० पु० पालनकरनेवाला।

सं० पोष्यपुत्र-(पोष्य=पाला हुआ, पुत्र=लड़का) र्म० पु० लेपालक, दत्तकपुत्र, गोद लिया हुआ बेटा, मुतबन्ना।

प्रा० पोह-स्त्री० भोर, तड़का, दिन, मुरब्बा।

प्रा० पोहना--क्रि स० रोटी बनाना।

प्रा० पौ--स्त्री० पासे में का एक्का, २ वह जगह जहां बटोहियों को पानी पिलाया जाता है।

प्रा० पौंडा--(सं० पुण्ड्र, वा पौण्ड, पुढि=मलना) पु० एक प्रकार की ऊख।

प्रा० पौढ़ना--क्रि० अ० सोना, लेटना, आराम करना। [बेटा।

सं० पौत्र--(पुत्र) पु० पोता, बेटेका

सं०पौत्री--(पुत्र) स्त्री० पोती, बेटे की बेटी।

प्रा० पौधा--पु० नया पेड़, केड़ा।

प्रा०पौन--(सं०पवन)स्त्री० हवा,वायु।

प्रा० पौन--(सं०पादोन,पाद=चौथा हिस्सा, ऊन=कम,)गु०तीन चौथाई, चौथे हिस्से तीन, चार भागका तीन।

प्रा० पौना--पु० झरना, झरनी, एक लोहेकी चीज जिसमें बहुत से छेद होते हैं और उससे पकौड़ी आदि तली जाती हैं। [फाटक।

प्रा० पौर-स्त्री० बड़ा दरवाजा, द्वार-

सं० पौराणिक--(पुराण)गु० पुराण कहनेवाला, पुराणबांचनेवाला, पुराण पढ़ाहुआ, पण्डित।

प्रा० पौरिया--(पौर) पु० ड्योढ़ी वान, दरबान।

प्रा० पौरी--स्त्री० पौर, ड्योढ़ी, द्वार।

सं० पौरुष--(पुरुष) पुरुषत्व, पु-

रुपार्थ, पराक्रम,बल, जोर,२पुरुषों।

सं० पौर्णमासी--(पूर्ण=पूरा,मास= महीना, वा चांद) स्त्री० पूर्णमासी, पूर्णमा, पूनौं।

प्रा० पौली--स्त्री० पौर, पौरी।

प्रा० पौवा--(सं०पाद=चौथा भाग) पु० चौथा भाग, पावभरका बांट।

सं० पौष--पूष शब्दको देखो।

प्रा० प्यार- (सं०प्रीति, वा प्रेम) पु० पियार, प्रेम, प्रीति, नेह, छोह, दुलार, मुहब्बत।

प्रा०प्यारा--(सं० प्रिय) गु० पु० प्रेमी, स्नेही।

प्रा० प्याराजानना--बोल० आदरकरना, सन्मान करना, श्रेष्ठ समझना।

प्रा० प्यारी--(सं० प्रिया)गु०स्त्री० पियारी, प्रिया, २ मनोहर।

प्रा० प्यास--(सं० पिपासा) स्त्री० पियास, तृष्णा, तृषा, पानीकी चाह।

प्रा० प्यासबुझाना--बोल० प्यास मिटाना, कुछपीलेना,पानी पिलाना।

प्रा० प्यासलगना--बोल० प्यासा होना।

प्रा० प्यासा--(सं०पिपासित) गु० पियासा, तृषावन्त, पानी चाहने वाला। [प्यासा होना।

प्रा० प्यासे मरना--बोल० बहुत

सं० प्र--उपसर्ग जैसे, १. [illegible] [illegible],

२ दूर, ४ श्रेष्ठ, प्रधान, बड़ा, ऊपर, मुख्य, ५ बहुत, अधिक, अतिशय, ६ प्रारम्भ, शुरूअ, ७ चारोंओर से, सबतरहसे, ८ उत्पत्ति, पैदा होना।

सं० प्रकट--(प्र=सब तरह से कट्=घेरना) पु० प्रगट, प्रत्यक्ष, चौड़े, ज़ाहिर, स्पष्ट, खुलासा।

सं० प्रकटन--भा० पु० प्रकाशकरना, ज़ाहिर करना। [रोशन।

सं० प्रकटित-र्म्म० पु० प्रकाशित,

सं० प्रकम्प--(प्र=बहुत, कंप=कांपना) पु० कांपना, थरथराहट, कँपकँपी।

सं० प्रकरण--(प्र=बहुत, वा शुरूअ कृ=करना) पु० भूमिका, आशय, बात, वृत्तान्त, प्रस्ताव, प्रसंग, कांड, खंड, विषय, अध्याय, सरिश्ता, अवसर, मौक़ा, विभाग।

सं० प्रकर्ष--(प्र=बहुत वा ऊपर, कृष्=खेंचना) भा० पु० उत्तमता, बड़ाई, श्रेष्ठता, उत्कर्ष।

सं० प्रकाण्ड--पु० वृक्षकी जड़ और डालीके बीच की लकड़ी, वृक्षका धड़ वा स्तम्भ, प्रशस्त वाणी, आशीर्वाद। [पूर्वक।

सं० प्रकाम--पु० यथेच्छ, यथेष्ट, इच्छा

सं० प्रकार--(प्र, कृ=करना) पु० भेद, भांति, ढंग, डौल, तरह, रीति, सादृश्य, क़िस्म।

सं० प्रकाश--(प्र=बहुत, काश्=चमकना) पु० उजाला, ज्योति, रोशनी, धूप, तेज, चमक, २ फैलाव, प्रसिद्ध, गु० प्रकट, प्रसिद्ध, विख्यात, चमकीला, उज्ज्वल, उजागर, प्रकाशित, चमकता, क्रि० वि० खुले खुले, साफ़ साफ़।

सं० प्रकाशक--(प्रकाश) क० पु० प्रकाश करनेवाला, रोशन करनेवाला, ज़ाहिरकुनिंदा।

सं०प्रकाशात्मन्-(प्रकाश+आत्मन्) पु० सूर्य, परमेश्वर।

सं० प्रकाशनीय / **प्रकाश्य** र्म्म० पु० प्रकाशनाई, प्रकाशयोग्य

सं० प्रकाशित--(प्रकाश) र्म्म० प्रकट, प्रत्यक्ष, ज़ाहिर, उजागर, प्रसिद्ध,

सं० प्रकीर्ण--(कृ=फैलाना) र्म्म० पु० विक्षिप्त, विस्तृत, फैलाहुआ पु० चमर, चौर, अश्व।

सं० प्रकृत--(प्र, शुरूअ वा पहले, कृ=करना) र्म्म० पु० कियाहुआ, शुरूअ कियाहुआ, २ठीकठीक, यथार्थ, मन।

सं० प्रकृत--(प्र=बहुत, कृ=करना) स्त्री० स्वभाव, गुण, २ माया, परमेश्वरकी शक्ति, ३ किसी वस्तु की असली दशा, ४ एक छंद का नाम जिस के हरएक पद में इक्कीस अक्षर होते है, ५ राजा, मंत्री, मित्र, खज़ाना, देश, गढ़ और सेना इन

सबके समूहको भी प्रकृति कहते हैं।

सं० प्रकीर्तन-(प्र=बहुत, कृत=कहना) भा० पु० वर्णन, कथन, भजा।

सं० प्रकीर्ण--(कॄ=फैलाना) कर्म० बिथरा हुआ, छिटका हुआ।

सं० प्रकीर्तित-कर्म० पु० कथित, वर्णित।

सं० प्रकृष्ट--(प्र=बहुत अथवा ऊपर कृष्=खींचना) गु० उत्तम, मुख्य, उत्कृष्ट, श्रेष्ठ।

सं० प्रकोष्ठ--पु० कोठे के नीचे का कोठा, अटारी, हाथकी कलाई से कोहनीतक, कलाई और कोहनी के मध्यका भाग।

सं० प्रक्रम--(प्र=शुरूअ, क्रम=जाना) पु० प्रारंभ, शुरूअ, पर्य्यटन, २ जाना, ३ अवकाश, अवसर ४ गणना।

सं० प्रक्रिया--(प्र+कृ=करना) स्त्री० विभाग, प्रकरण, २ रीति, प्रकार, विधि, व्यवहार, ३ बढ़ती, उन्नति, ४ महिमा, प्रभाव, प्रताप, ५ गणना, ६ रचन, ७ अधिकार।

सं० प्रक्लिन्न--(क्लिद्=तरहोना) क० [illegible] ।

सं० प्रक्षालन--(प्र=बहुत, क्षल=शुद्ध करना) पु० पखालना, धोना, शुद्ध करना।

सं० प्रक्षेप--(क्षिप=फेंकना) पु० [illegible] ।

सं० प्रखर--(प्र=बहुत, [illegible]

गु० बहुत तीखा, तेज, पु० घोड़े व हाथी का बख्तर, पाखर, घोड़े का चारजामा।

सं० प्रखरांशु-- पु० तीक्ष्णकिरण, तीव्रकिरण।

सं० प्रख्यात--(प्र=बहुत, ख्या=प्रसिद्धहोना) गु० प्रसिद्ध, विख्यात, नामवर, प्रतिष्ठित, मुअज्जिज।

प्रा० प्रगट } (सं० प्रकट) गु० प्र-
परगट } सिद्ध, जाहिर, प्रत्यक्ष।

प्रा० प्रगटना--(सं० प्रकट) क्रि० अ० प्रगट होना, प्रत्यक्ष होना, पैदाहोना, उत्पन्न होना, जन्मलेना।

सं० प्रगल्भ--(प्र=बहुत, गल्भ्=ढीठ होना) गु० धृष्ट, शोख, ढीट, निडर, साहसी, दृढ़, प्रबल, सामर्थी।

सं० प्रगल्भता--(प्रगल्भ) स्त्री० ढीठपन, साहस, पराक्रम, दृढ़ता, ढिठाई।

सं० प्रगाढ़--गु० दृढ़, कठोर, अधिक, बहुत।

सं० प्रग्रह--पु० लगाम, हथकड़ी, बेड़ी, तराजू की रस्सी, किरण, [illegible] बांधने की रस्सी।

सं० प्रग्राह--पु० पगहा, बांधने की रस्सी।

सं० प्रघाण--पु० [illegible] ।

सं० प्रघ[illegible]-- [illegible]

रावना) गु० बहुत डरावना, भयानक, २ बहुत तीखा, प्रबल, ३ बहुत क्रोधी, ४ अत्यन्तगर्म अथवा जलता हुआ, ५ अनसहा, नहीं सहने योग्य, असह्य, अत्युग्र, उत्कृष्ट, तेज़ ।

सं० प्रचलित--(प्र=आगे, चल्=चलना) गु० व्यवहारी, चलनी, वर्तमान, जिसका चलन हो, जो चलता हो अथवा व्यवहार में आता हो जैसे प्रचलित सिक्का—प्रचलित भाषा ।

सं० प्रचार--(प्र=बहुत वा आगे, चर्=जाना) पु० चलन, व्यवहार, रीति, २ प्रकट करना, ३ फैलाव, विस्तार ।

सं० प्रचारक--क० पु० प्रकाशक, प्रेरक, विस्तारक, फैलानेवाला ।

प्रा० प्रचारना--(सं० प्रचारण प्र=आगे, चर्=जाना) क्रि० स० ललकारना, पुकारना ।

सं० प्रचुर--अव्य० बहुत, अधिक ।

सं० प्रचुरवर्ग--पु० साथी, संगती, हमराही ।

सं० प्रच्छद--(छद्=आच्छादन) ग० पु० उत्तरीय, डुपट्टा, ढप्पन ।

सं० प्रच्छदपट-पु० परदा, क़नात, चिक ।

सं० प्रच्छन्न (छद्=ढापना) कर्म० पु० गुप्त, छपाहुआ, अदृश्य ।

सं० प्रजा-(प्र=बहुत, जन्=पैदा होना) स्त्री० सन्तान, २ प्राणी, सृष्टि, ३ राज के लोग, रइयत, अधिकार, स्थितगन ।

सं० प्रजापति (प्रजा+पति) पु० सृष्टि का स्वामी, सृष्टि का बनानेवाला, ब्रह्मा, दक्ष, कश्यप आदि दश मुनि जिन को ब्रह्मा ने पहले ही पहल पैदा किया और सृष्टि बनाने का काम सौंपा उनके नाम- १ मरीचि, २ अत्रि, ३ अङ्गिरा, ४ पुलस्त्य, ५ पुलह, ६ क्रतु, ७प्रचेता, ८वशिष्ठ, ९भृगु, १० नारद और कितने एक आचार्य कहते हैं कि प्रजापति सात हैं और कितने एक दक्ष, नारद और भृगु इन तीनों ही को प्रजापति कहते हैं और कितने एक ग्रंथकार इक्कीस प्रजापति बतलाते हैं २ राजा ३ बाप, पिता ४ जँमाई, जामाता ५ सूर्य ६ आग कुम्हार ।

सं०प्रजाधिकारी राज्य--पु० जम्हूरी सल्तनत जिस राज्य की प्रजा सब राज काज करे राजा कोई न हो ।

सं० प्रजाशन(प्रजा+अशन अश=भक्षण क०)भा०पु० प्रजा को दुख देना, प्रजा का नाश करना ।

सं० प्रजाशासन (प्रजा+शासन

शास्=सिखाना) भा० पु० प्रजा को सिखाना, दण्ड देना, सज़ा देना ।

प्रा० प्रजारना--(सं० प्रज्वलन) क्रि० स० जारना, जलाना ।

सं० प्रजेश } (प्रजा+ईश वा ईश्वर)
प्रजेश्वर } पु० दक्षप्रजापति ।

सं० प्रज्ञ-क० पु० पण्डित, बुद्धिमान् ।

सं० प्रज्ञा--(प्र=बहुत, ज्ञा=जानना) स्त्री० बुद्धि, मति, समझ, २ सरस्वती ।

सं० प्रज्ञापत्र--(फ़ा० इस्तक़ता) उसे कहते हैं जिसमें गुरु अथवा आचार्य से पूछकर सांसारिक कार्य किये जावें ।

सं० प्रज्वलित-(प्र=बहुत, ज्वल्=जलना वा चमकना) क० पु० ज्योतिमान्, प्रकाशित, उज्ज्वल, चमकीला ।

सं० प्रडीन--(डी=उड़ना) भा० पु० उड़ना, पक्षीकी गति ।

प्रा० प्रण--(सं० पण) पु० प्रतिज्ञा, व्रत, टेक, नियम, पण, क़ौल ।

सं० प्रणत-(प्र=बहुत, नम्=झुकना) क० पु० अधीन, झुका हुआ, नम्र भक्त, दीन, शरणागत ।

सं० प्रणतपाल-भा० पु० दीनपालक ।

सं० प्रणति--(प्र=बहुत, नम्=झुक ना) स्त्री० नमस्कार, प्रणाम, दंडवत् ।

सं० प्रणय--(प्र नी=लेजाना) पु० [illegible]

भरोसा, ४ मुक्ति, ५ नम्रता, सुशीलता, ६ विनती, स्तुति ।

सं० प्रणव-(प्र=बहुत, नु=स्तुतिकरना) पु० ओम्, ओङ्कार तीनों देवताओं का मंत्र ।

सं० प्रणष्ट--(नश्=नाशकरना) कर्म० पु० नाश होगया, विशेष नाश ।

सं० प्रणाम-(प्र=बहुत, नम्=झुकना) पु० नमस्कार, दंडवत्, प्रणत ।

सं० प्रणामित--क० पु० प्रणाम करने वाला, प्रणामकर्ता या प्रणाम करायाहुआ ।

सं० प्रणाम्य--कर्म० प्रणाम योग्य, नमस्करणीय या प्रणामकर ।

सं० प्रणाली-(प्र=बहुत अथवा चारों ओर से, नल्=बांधना, वा नड्=गिरना) स्त्री० नाली, पनाला, २ परम्परा की रीति, क़दामत ।

सं० प्रणिधान--(धा=धारण, पोषण करना) भा० पु० मन में ध्यान करना, बारंबार सोचना, समाधिभेद ।

सं० प्रणिधि-(प्रणि+धा=धारण कर-ना) क० पु० चर, दूत, जासूस ।

सं० प्रणिपात--(प्र=बहुत, नि=नीचे और पत्=गिरना) पु० प्रणाम, दंडवत्, मर्यादा ।

सं० प्रणाद-(प्र=बहुत, नद्=नाद करना) पु० [illegible]

सं० प्रणायवान् } [illegible]
प्रणायी } [illegible]

सं० प्रतारण-(तॄ=पार जाना,तैरना) भा० पु० प्रवञ्चना, छलना ।

सं० प्रति--उपस० को केतई की ओर, २ पास, ३ साम्हने, ४ विरुद्ध, उलटा, विपरीत, ५ इसकी अपेक्षा, इसके देखते, वनिस्वत, ६ ऊपर, पर, ७ लगभग, ८ लिये, वास्ते, ९ विषय में, १० अनुसार से, ११ हर एक की एक एक, सब, १२ पीछे, फिर, पीछा, १३ एवज़, बदले में, पलटे में, जगह में, स्थान मे, १४ आपसमें, १५ बराबर, समान, सदृश, १६ नक़ल, १७ पुस्तक, जिल्द।

प्रा० प्रतिउपकार--(सं०प्रत्युपकार प्रति=पीछा, उपकार=भला) पु० पीछा उपकार, उपकारकाबदला।

सं०प्रतिकार } प्रतीकार } (प्रति=बदलेमें, कृ=करना)पु० वैर का बदला, पलटा, २ दुःख दूर करने का उपाय, इलाज, निवारण, वर्जन, बदला, एवज़ ।

सं० प्रतिकारक--क०पु० निवारक, नासिख । [करनेयोग्य ।

सं० प्रतिकार्य्य--क्र्मे० निवार्य्य, रो-

सं० प्रतिकूल--(प्रति=उलटा वा विरुद्ध, कूल=पक्ष, कूल्=ढकना) गु० उलटा, विरुद्ध, विमुख, वखिलाफ।

सं० प्रतिक्षण--(प्रति=हरएक, क्षण =पल) क्रि० वि० पलपल में, हर एक पल, हरदम, हर-

सं०प्रतिग्रह-(प्रति=बुरा, ग्रह=लेना) दान लेना, खैरात लेना ।

सं० प्रतिघात--(प्रति=पीछा, घात= मारना) पु० पीछा मारना, मारके बदले मार ।

सं० प्रतीच्छा--स्त्री० इन्तिज़ारी।

सं० प्रतिच्छाया--(प्रति=बराबर, छाया) स्त्री० प्रतिबिम्ब, परछाईं ।

सं०प्रतिज्ञा--(प्रति=आपस में, ज्ञा= जानना) स्त्री० वचन, पण, नेम, क़ौलकरार । [दनामा ।

सं० प्रतिज्ञापत्र--पु० प्रणपत्र, अह-

सं० प्रतिदान-- भा० पु० दानोपरि दान, दान के पीछे दान।

सं० प्रतिदिन--(प्रति=हरएक, दिन) क्रि० वि० हरएक दिन, दिन दिन।

सं० प्रतिध्वनि--(प्रति=पीछा अथवा बराबर, ध्वनि=शब्द) स्त्री० प्रति शब्द, गूंज, शब्दप्रतिशब्द ।

सं० प्रतिनिधि--(प्रति=एवज़, वा बराबर, नि=में, धा=रखना) पु० एवज़, एक की जगह दूसरा, २ स- दृशता, प्रतिमा, मूरत, मुख़्तार ।

सं० प्रतिपक्ष--(प्रति=उलटा, पक्ष= तरफ) पु० वैरी, शत्रु, रिपु, दुश्मन।

सं०प्रतिपत्ति-- (पत्=गिरना) स्त्री० प्रवृत्ति, बोध, निष्पत्ति, प्र- आगम गौरव, पदप्राप्ति, ह-

प्रक्षेप, दीनता ।

सं० प्रतिपद्—(प्रति, पद्=जाना, और प्रति उपसर्ग के साथ आने से अर्थ हुआ शुरूअहोना) स्त्री० परिवा, पहली तिथि ।

सं० प्रतिपन्न (पद्=जाना) कर्म० विज्ञात, अंगीकृत, प्राप्त, शरणागत ।

सं० प्रतिपादन—भा० पु० त्याग, कथन, दान, प्रतिपत्ति, निरूपण, समर्पण, बोध करना, जताना ।

सं० प्रतिपादक—क० पु० कहनेवाला, निरूपक, मुआरिज़ ।

सं० प्रतिपाद्य—कर्म० पु० बोधनीय, विश्वासयोग्य, कथनयोग्य ।

सं० प्रतिपाल—(प्रति, पाल्=पालना) पु० पोषण, भरन, पालन, प्रतिपालन ।

सं० प्रतिपालक - (प्रति, पाल्=पालना) क० पु० पालनेवाला, पु० राजा, रक्षक ।

सं० प्रतिपालन—(प्रति, पाल्=पालना) पु० पोषण, भरन, पालन, रक्षा, बचाव, परवरिश ।

प्रा० प्रतिपालना—(सं० प्रतिपालन) क्रि० स० पालना, पोसना ।

सं० प्रतिपालिन्—[illegible] [illegible] ।

[illegible] ।

सं० प्रति[illegible]—[illegible]

सं० प्रतिबन्धक (प्रति, बन्ध्=बांधना) क० पु० बाधक, रोकनेवाला, पु० रुकाव, रोक, बाधा । [निबन्धन ।

सं० प्रतिबन्धन—भा० पु० रोज़ीना,

सं० प्रतिभा (प्रति, भा=चमकना) स्त्री० समझ, बुद्धि, बुद्धिकी तेजी, २ जोत, चमक ।

सं० प्रतिभू—(प्रति=प्रतिनिधि, या एवज, भू=होना) पु० ज़ामिन ।

सं० प्रतिभू—स्त्री० जमानत, ज़ामिनी ।

सं० प्रतिभूति-स्त्री० जमानत, ज़ामिनी ।

सं० प्रतिमा—(प्रति=बराबर, मा= नापना, अर्थात् किसी के बराबर बनाना) स्त्री० मूरत, पुतली ।

सं० प्रतिमाला—स्त्री० जयमाला, मण्डल, परिधि, बैतबाज़ी ।

सं० प्रतिमास—(प्रति=हरएक, मास=महीना) क्रि० वि० महीने या महीने, हर महीने, महीने महीने ।

सं० प्रतियोगिन्—(युज्=मिलना, जोड़ना) गु० विरुद्ध, विरोधी, उद्योगी, प्रतिकूल ।

सं० प्रतिरक्षा—(रक्ष=रक्षक होना) पु० [illegible], आशिष्टा, [illegible], [illegible] ।

सं० प्रतिरूप—(प्रति=बराबर, रूप =आकार) पु० प्रतिबिंब, छाया, [illegible], [illegible] ।

सं० प्रतिरोध--(प्रति + रुध्=रोकना) पु० निरोध, रोक, प्रतिबन्ध, निरादर, अविष्टम्भ।

सं० प्रतिलेखक--क० पु० मकतूबअलेह या जिसको पत्र लिखाजाय।

सं० प्रतिलोम--गु० विलोम, उलटा, वाम, बायें, विपरीत, अधम, नीच, कुत्सित पु० रोम रोम, हर एक रोम।

सं० प्रतिलोमन--गु० वर्णसंकर, शूद्रपुरुष और उत्तम वर्ण की स्त्री से उत्पन्न।

सं० प्रतिवादी--क० पु० विरोधी, मुद्दआअलेह।

सं० प्रतिविधान--भा० पु० कथनोपकथन, कहेको कहना, दोबारा कहना।

सं० प्रतिवासी--(वस्=रहना) क० पु० परोसी, हमसाया।

सं० प्रतिबिम्ब--(प्रति=नीछा, वा समान, बिम्ब=छाया) पु० पर्छाई, छाया, प्रतिरूप, अक्स।

सं० प्रतिश्रव (श्रु=सुनना) भा० पु० अंगीकार, मंजूर। [स्वीकृत।

सं० प्रतिश्रुत--र्म० पु० अंगीकृत,

सं० प्रतिषेध (सिध्=सिद्ध करना) भा० पु० निषेध, निरोध, मुमानिअत, मना करना।

सं० प्रतिष्ठा (प्रति, ष्ठा=ठहरना) स्त्री० बड़ाई, गौरव, मान, यश, आदर, इज्जत, सन्मान, नाम, २ देवता के नये मंदिर को अथवा देवताकी नई मूरत को संस्कारों से पवित्र करना, स्थापना।

सं० प्रतिष्ठासूचक (प्रतिष्ठा + सूच=जताना) क० पु० इज्जत का जाहिर करनेवाला।

सं० प्रतिष्ठित--(प्रतिष्ठा) र्म० पु० नामी, नामवर, प्रतिष्ठावाला, यशस्वी, गौरवयुत, सन्मानित, आदरित, मुअज्ज़म, मुकर्रम, गिरामी, २ स्थापित, संस्कार क्रियाहुआ।

सं० प्रतिहत--(हन्=मारना) र्म० पु० नष्ट, हर्षहीन, उद्विग्न, तिरस्कृत, अपमानित।

सं० प्रतिहार--पु० द्वारपाल, ड्योढ़ीदार, सिपाह, द्वार, दरवाजा, त्याग, ग्रहण, उपाय।

सं० प्रतिहारक--(प्रति, हृ=हरना) पु० इन्द्रजाली, मायावी, बाजीगर, उद्योगी, उद्धारक।

सं० प्रतीकार--(कृ=करना) पु० उपाय, यत्न, तदबीर, चारा।

सं० प्रतिसर्ग--(सृज्=पैदा करना) पु० प्रलय, नाश, क़यामत।

सं० प्रतीक्षा--(प्रति=हर एक बार, ईक्ष्=देखना) स्त्री० बाट देखना, प्रत्याशा, इन्तजारी, अपेक्षा।

सं० प्रतीक्षक—कृ० पु० राहदेखने वाला, प्रत्याशी, मुन्तज़िर।

सं० प्रतीत—(प्रति, इण्=जाना) स्वी० पु० प्रसिद्ध, विख्यात, नामी, जाना हुआ, सिनासा, हर्षित।

प्रा० प्रतीत—(सं० प्रतीति पु० इण्=जाना) स्त्री० भरोसा, विश्वास।

प्रा० प्रतीतकरना—बोल० परीक्षा करना, २ भरोसा करना।

सं० प्रतीति—(प्रति+इति) भा० स्त्री० विश्वास, निश्चय, एतमाद, आदर, हर्ष।

सं० प्रतीप—(प्रति+अप्=जाना) गु० प्रतिकूल, नाफर्माबरदार, विपरीत, पु० शत्रु, राजाशंतनुका पिता।

सं० प्रत्यक्ष—(प्रति=सामहने, अक्ष =आंख) गु० सन्मुख, सामहने, आगे, प्रकट, प्रसिद्ध।

सं० प्रत्यय(प्रति=फिर, इण्=जाना) पु० भरोसा, विश्वास, प्रतीत, श्रद्धा, एतबार, २ ज्ञान, ३ व्याकरण में ऐसा शब्द जो धातु और शब्द के अन्तमें जोड़ा जाताहै इकरणानवां।

सं० प्रत्याख्यान (प्रति+आख्यान, [illegible]) पु० त्याग, निराकरण, खण्डन, नामंजूर करना, मना करना, जवाब देना।

सं० प्रत्याशा—(प्रति=फिर, आशा आश) स्त्री० आशा, भरोसा, उम्मेद। २ बाट देखना, इन्तज़ारी, प्रतीक्षा, ३ चाह, इच्छा।

सं० प्रत्याशी—कृ० पु० मुन्तज़िर, राह देखनेवाला।

सं० प्रत्याहार—(प्रति=फिर, आ= चारों ओर से, हृ=लेना) पु० व्याकरण में वर्णमाला के दो अथवा अधिक अक्षरों का समूह—जैसे अइउण्ऋलृक् आदि, २ समाधि, योग।

सं० प्रत्युत्तर—(प्रति=पीछा, उत्तर= जवाब) पु० उत्तर का उत्तर, पीछे जवाब।

सं० प्रत्यूह—(प्रति+ऊह=तर्क करना) पु० विघ्न, उपद्रव, हर्ज।

सं० प्रतीकार—(कृ=करना) पु० उपाय, यत्न, उद्धार, निर्वाह, तदबीर, चारा।

सं० प्रत्येक (प्रति+एक) गु० एक एक, हरएक, अलग अलग।

सं० प्रथम—(प्रथ्=नामवर होना) गु० पहला, प्रधान, उत्तम, मुख्य, आदि, क्रि० वि० पहले, पहलेही।

सं० प्रथा—स्त्री० ख्याति, यश, विस्तार, [illegible], रीति, नामवरी, [illegible] [illegible]।

सं० प्रथित—(प्रथ=प्रसिद्ध हो[illegible]) गु० ख्यात, प्रसिद्ध।

सं०प्रद—(प्र=बहुत, द=देनेवाला, दा=देना) गु० देनेवाला।

सं०प्रदक्षिण—(प्र=प्रारम्भ, दक्षिण=दाहिनी ओर से) स्त्री० दाहिनी ओर से देवता के चारों ओर फिरना, परिक्रमा, तवाफ़।

सं० प्रदर्शक (प्र=आगे, दर्शक=दिखानेवाला) पु० दिखानेवाला, शिक्षक, बतानेवाला।

सं०प्रदर्शनी--भा० स्त्री० नुमायश, शोभा, सजाव। [शगाह।

सं०प्रदर्शनस्थान— धि० पु० नुमाय-

सं० प्रदान—भा० पु० दान, खैरात।

सं०प्रदीप--(प्र=बहुत, दीप्=चमकना) पु० दीपक, दिया, चिराग, सूर्य, प्रकाश।

सं०प्रदेश-(प्र=मुख्य, देश=देस) पु० मुख्यदेश, मुल्क, ज़िला, परगना) २ परदेश, दूसरा मुल्क।

सं० प्रदोष (प्र=प्रारम्भ, दोष=रात, दुष्=बदलना वा बिगड़ना) पु० सन्ध्या, सायंकाल, सूर्य डूबने के पीछे दो घड़ीतक का समय, रजनीमुख, सफ़क़।

सं० प्रदोषकाल-- पु० सायंकाल, शाम का वक्त।

सं० प्रद्युम्न (प्र=बहुत, द्युम्न=बल, दिव=चमकना) पु० कामदेव का अवतार, श्रीकृष्ण का बेटा।

सं०प्रधान—(प्र=बहुत, धा=रखना) पु० प्रकृति, माया, २ ईश्वर, ३ मुखिया, राजा का मुख्यमंत्री सेनापति आदि, अधिपति गु० मुख्य, श्रेष्ठ, बड़ा।

सं०प्रधी—गु० श्रेष्ठ, प्रधान कर्म्मचारी, बड़ाबुद्धिमान्, मीरमुन्शी, बुद्धियुक्त।

सं० प्रध्वंस—(प्र=बहुत, ध्वंस्=नाश करना) पु० नाश, विध्वंस, हानि, विनाश, क्षय।

सं० प्रपंच—(प्र=बहुत, पचि=फैलाना) पु० विस्तार, फैलाव, २ विरोध, विपरीतता, ३ छल, धोखा, कपट, ठगाई, चूक, भूल, ४ संसार, जगत्, माया, दिखाव।

सं० प्रपा—(प्र=बहुत, पा=पान करना) स्त्री० पनघट, पानी का घर।

सं०प्रपात—(प्र=बहुत, पत्=गिरना) पु० निर्झर, कूल, किनारा, तटहीन, पर्वतस्थान, निरवलम्ब, बेसहारा, भृगु, पतन, गिरना।

सं० प्रपितामह—(प्र=पैदा हुआ है, पितामह दादा (जिससे) वा प्र=बड़ा, पितामह दादा) पु० परदादा, २ पुरखा, ३ ब्रह्मा।

सं० प्रपूर्ति—(पूर्=पूरा करना) स्त्री० संपूर्णता, तमाम, इख्तिताम।

सं०प्रपौत्र— (प्र=आगे वा उत्पन्न

हुआ, पौत्र पोता से) पु० पोते का बेटा, परपोता।

सं०प्रफुल्ल } (प्र=बहुत,फुल्ल्=विक-
प्रफुल्लित } सना, वा फूलना) गु० फूला हुआ, खिला हुआ, विकसा हुआ, २ प्रसन्न, आनंदित, हर्षित, ३ चमकता हुआ, दीप्तिमान्।

सं० प्रफुल्लवदन--(प्रफुल्ल=प्रसन्न, वदन=मुँह) गु० जिसके मुँह से खुशी प्रगट होती हो, जो प्रसन्न देखा जाय।

सं०प्रवञ्चक--(वञ्च्=छलना) क० पु० प्रतारक, छली, दगाबाज।

सं० प्रवञ्चना--भा० पु० प्रतारणा, छलना।

सं० प्रबन्ध--(प्र=बहुत, अथवा चारों ओरसे, बन्ध=बांधना) भा० पु० बन्दोबस्त, २ काव्यकी रचना, ३ प्रकार, उपाय, इन्तिज़ाम, क़ायदा।

सं० प्रबन्धक--क० पु० प्रबन्धकारी, मुन्तज़िम।

सं०प्रबोध--(प्र=बहुत, बुध्=जानना) पु० ज्ञान, उपदेश, समझ, चेतना, २ सावधानी, नींद से अथवा अज्ञानता से जागना वा चैतन्य होना।

सं० प्रबोधन--(प्र=बहुत, बुध्=जानना) भा० पु० जगाना, चिताना, सावधान करना, सिखाना, जतलाना, बताना।

सं०प्रभञ्जन-(प्र=बहुत, भञ्ज=तोड़ना) भा० पु० हवा, पवन, वायु, विदारण, तोड़ना, टूटना, गु० विदारक, तोड़नेवाला।

सं०प्रा०प्रभञ्जनजाया--(सं० प्रभञ्जन=पवन, प्रा० जाया=पैदाहुआ) पु० हनुमान्। [पु० हनुमान्।

सं०प्रभञ्जनसुत-(प्रभञ्जन+सुत)

सं०प्रभव--(प्र+भू=पैदाहोना, जिससे) पु० उत्पत्ति, जन्मकारण, जिससे पैदा होते हैं, जैसे माबाप, उत्पत्तिस्थान, २ ज़ोर, पराक्रम, ३ जन्म।

काल, फजर, सुबह ।

सं० प्रभाव-(प्र=बहुत, भू=होना) पु० तेज, प्रताप, बल, शक्ति ।

सं० प्रभास-(प्र=बहुत, भास्=चमकना) पु० एकतीर्थ की जगह ।

सं० प्रभु--(प्र=पहले वा बहुत, भू=होना) पु० नाथ, स्वामी, धनी, मालिक, पति, पालक, ईश्वर, २ विष्णु, गु० बड़ा, समर्थ, बलवान् ।

सं० प्रभुत्व भा० पु० } (प्रभु)
प्रभुता भा० स्त्री० } बड़प्पन ईश्वरता, स्वामीपन, बड़ाई, महत्त्व, महिमा, ऐश्वर्य, हकूमत ।

सं० प्रभृति--(प्र=बहुत, भृ=भरना) स्त्री० प्रकार, भांति, २ आदि, इत्यादि, और सब ।

सं० प्रमथ-(प्र=बहुत, मथ्=मथना) पु० महादेवके एक गणकानाम, २घोड़ा ।

सं० प्रमथाधिप--(प्रमथ+अधिप) पु० शिव, महादेव ।

सं० प्रमदा--(प्र=बहुत, मद्=प्रसन्न होना, जिसको देख कर) स्त्री० स्त्री, नारी, सुलक्षण स्त्री, रूपवती नारी, सुन्दर स्त्री, उत्तम स्त्री ।

सं० प्रमा--(प्र=बहुत, मा=नापना) स्त्री० यथार्थज्ञान, सच्चाज्ञान, ऐसा ज्ञान जिसमें किसी तरहका भ्रम न हो, प्रमाण, उपमा ।

सं० प्रमाण-- (प्र=बहुत, मा=नापना) पु० नाप, माप, तौल, अन्दाजा, परिणाम, २ साख, साक्षी, गवाही, सिद्धांत, सबूत, निश्चय, सच्चा ठहराना, निर्णय, निष्पत्ति, ३ कारण, ४ हद, सीमा, ५ उदाहरण, दृष्टान्त, ६ ऐसा शास्त्र जिसका पवित्र प्रमाण मिले, गु० सच्चा, सही, ठीक ठीक, यथार्थ, मानने योग्य ।

प्रा० प्रमाणिक--(सं० प्रमाणिक) गु० भरोसावाला, विश्वासपात्र, योग्य, प्रतिष्ठित, पु० सभापति ।

सं० प्रमातामह--(प्र=उत्पन्न हुआ है, मातामह=नाना जिससे) पु० परनाना ।

सं० प्रमाथ--(मन्थ्=मथना) पु० नाश, मरण, विलोडन, मथना, विघ्न हानि ।

सं० प्रमाद-- (प्र=बहुत, मद्=मस्त होना) पु० नशा, २ मतवालापन, मस्ती, उन्मत्तता, पागलपन, ३ असावधानी, भूल, चूक असावधानता ।

सं० प्रमादी--(प्रमाद) क० पु० उन्मत्त, बावला, बौड़हा, २ नशे में मस्त, ३ असावधान, अचेत, बेहोश, हठी, जिद्दी ।

सं० प्रमित--(प्र, मा=नापना) गु०

पु० नापा हुआ, मापाहुआ, जांचा हुआ, २ जाना हुआ। [समझ।

सं० प्रमिति–स्त्री० यथार्थज्ञान ठीक

सं० प्रमीला-(प्र.मील्=नेत्रमीचना) भा० स्त्री० तन्द्रा, उनींदा, उत्साह, शून्य, काहिल।

सं० प्रमुख–गु० मान्य,प्रधान,मुख्य, श्रेष्ठ, मुखिया, सन्मुख, पु० मुनि, आरम्भ।

सं० प्रमुदित–(प्र=बहुत,मुद्=प्रसन्न होना) क० पु० प्रसन्न, हर्षित, आनन्दित, प्रफुल्ल, खुश।

सं० प्रमेह–(प्र, मिह=सींचना) पु० धातु बिगाड़,रोग,वीर्य में का रोग यह रोग इक्कीस प्रकार का है जिरियान।

सं० प्रमोद–(प्र=बहुत, मुद्=प्रसन्न होना) पु० हर्ष, आनंद, सुख, खुशी, हुलास।

सं० प्रयत–(प्र=बहुत, यम्=शांति) गु० पवित्र, नियम. युक्त आचारी, पवित्र, शुद्ध, नियत, तैयार।

सं० प्रयत्न–(प्र=बहुत, यत=यत्न करना) पु० बहुत परिश्रम, लगातार मिहनत, बहुत सावधानी।

सं० प्रयाग–(प्र=बहुत, यज=यज्ञ करना) पु० हिंदुओं का एक बड़ा [illegible] जिस को इन दिनों में इलाहा-बाद भी कहते हैं जहाँ गंगा और [illegible] इन दोनों नदियों का भारी संगम हुआ है और कहते हैं कि तीसरी नदी सरस्वती का संगम धरती के नीचे गुप्त हुआ है उस जगह को त्रिवेणी कहते हैं और यहाँ ब्रह्मा ने शंखासुर राक्षस से वेदों को लाकर दशअश्वमेधयज्ञ किये,२यज्ञ।

सं०प्रयाण--(प्र=पहले वा दूर, वा बहुत या=जाना) पु० धावा, कूच, गवन,गमन, यात्रा, जाना, प्रस्थान।

सं०प्रयास--(प्र=बहुत, यस्=यतन करना वा परिश्रम करना) पु० परिश्रम, मेहनत, थकावट, यतन।

सं०प्रयोग--(प्र=बहुत, युज्=मिलना) पु० अनुष्ठान, वशीकरण, वशकरना, २ दृष्टान्त, उदाहरण, ३ कारण, प्रयोजन, फल, ४ काम, कार्य, व्यापार, ५ नियुक्त करना नियत करना, ठहराना, लगाना, इस्तअमाल करना, निदर्शना, उदाहरण, सूक्ष्म थोड़ा, अमल-दरामद बर्ताव करना।

सं०प्रयोजक--क० पु० प्रेरक, प्रेषक, नियोग करनेवाला, लगानेवाला उपाय करनेवाला।

सं०प्रयोजन-(प्र=बहुत, युज=मिलना) पु० कारण, अभिप्राय, मतलब, आशय, मनोरथ।

सं० प्ररोह-- ([illegible]) [illegible] पु० [illegible] [illegible], [illegible]।

खुश, २ कृपालु, दयावान्, अनुकूल, ३ निर्मल।

सं० प्रसन्नता-(प्रसन्न) भा० स्त्री० हर्ष, आनन्द, खुशी, २ कृपा, दया।

सं० प्रसन्नमुख, प्रसन्नवदन (प्रसन्न=हर्षित, मुख वा वदन मुंह) गु० जिस के मुंहपर खुशी बरसती हो, प्रसन्न, आनन्दित।

सं० प्रसर--(सृ=जाना) पु० प्रभव, वेग, समूह, युद्ध, प्रेम, फैला।

सं० प्रसव--(प्र, सू=पैदाहोना) र्म्म० पु० जन्मना, उत्पत्ति, जन्म।

सं० प्रसाद--(प्र, सद्=जाना वा बैठना) भा० पु० देवता का भोग, देवता का चढ़ाया, देवता का नैवेद्य, गुरुकी जूठन, २कृपा, अनुग्रह, प्रसन्नता, ३ निर्मलता, सफ़ाई, फ़ैज़, बरकत तबर्रुक, तुफैल।

सं० प्रसादित--र्म्म० पु० फैज़याब अनुगृहीत, मेहरबानी किया गया।

सं० प्रसाधक--क० पु० बनानेवाला।

सं० प्रसाधन--(साध्=सिद्ध करना) पु० बनाना, सँवारना।

सं० प्रसाधिका--स्त्री० शृंगारकराने वाली, वस्त्राभूषणादि पहराने वाली, मश्शाता।

सं० प्रसारण--(सृ=जाना) प्रउपसर्ग से अर्थ बदल गया भा० पु० फैलाना, जारी करना, पसारना।

सं० प्रसिद्ध--(प्र=पहले, वा बहुत, वा दूर, सिध्=जाना) गु० विख्यात, नामी, यशी, २ प्रकट, प्रकाशित, जाहिर, ३ शोभित, भूषित, सँवारा हुआ, सिंगार किया हुआ।

सं० प्रसिद्धि--(प्र, सिध्=जाना, वा पूरा करना) स्त्री० नाम, यश, नामवरी, विख्याति, कीर्त्ति, २ पूरा करना, ३ गहना, आभूषण, ४ प्रकट होना।

सं० प्रसू--(प्र, सू=पैदाहोना) स्त्री० मा, माता, जननी, घोड़ी, हरणी, लता।

सं० प्रसूति--स्त्री० प्रसव, अपत्य पुत्र, उदर, माता।

सं० प्रसूतिका--(प्र, सू=पैदाहोना) स्त्री० वहस्त्री जिसके बालक जन्माहो।

सं० प्रसून--(प्र=बहुत, सू=पैदाहोना) पु० फूल, पुष्प, २ फल, गु० जन्मा हुआ, पैदा हुआ।

सं० प्रस्तर--(प्र=बहुत, स्तृ=फैलाना) पु० पत्थर, पाषाण, २ रत्न, जवाहिर।

सं० प्रस्तार--भा० पु० फैलाव, तृण का वन, पत्तोंकीरची शय्या, छन्दों का ग्रन्थ।

सं० प्रस्ताव--(प्र=बहुत, स्तु=सराहना, कहना) पु० अवसर, प्रसंग, प्रकरण, बात, कथा, चर्चा।

सं० प्रस्तावना--भा० स्त्री० भूमि

का दीबाचा, आरम्भ, तमहीद, तजवीजकरना, स्तुति, प्रार्थना, प्रशंसा, वर्णन ।

सं० प्रस्ताविक- (प्रस्ताव) गु० समयपर, समयअनुसार ।

सं० प्रस्तावित- प्र्म० पु० प्रारंभित, विस्तारित ।

सं० प्रस्तुत-(प्र=बहुत, स्तु=सराहना) गु० सराहा हुआ, प्रशंसित, कहा हुआ, २ किया हुआ, पूरा किया हुआ, ३ उद्यत, उतारू, तैयार, उपस्थित ।

सं० प्रस्थ- (स्था=ठहरना) पु० विस्तार, आधसेर ।

सं० प्रस्थान- (प्र=आगे, वा दूर, स्था=ठहरना) पु० गमन, गवन, यात्रा, कूच, युद्ध के लिये कूच करना ।

सं० प्रस्फुटित- (स्फुट्=फूलना) गु० खिला हुआ, फूला हुआ ।

सं० प्रस्फुरित-गु० प्रकाशित, दीप्तिमान्, चमकनेवाला ।

सं० प्रस्नवण- पु० चुआन, बहाव ।

सं० प्रस्नाव-(स्नु=बहना) पु० मूत्र ।

सं० प्रहर- (प्र=बहुत, हृ=हरण) पु० दिनका आठवों भाग, पहर ।

सं० प्रहसन्-(हस=हसन, हस=हसना भा० पु० हास्य, हंसी, परिहास, व्यंग्य कथन ।

सं० प्रहस्त-(प्र+बहुत, हस्त=हाथ) भा० रावण का बेटा, गु० चौड़े प्रथवा, फैले हुए हाथवाला ।

सं० प्रहार-(प्र, हृ=लेना, पर प्र उपसर्ग के साथ आने से मारना अर्थ होता है) भा० पु० चोट, आघात, मार, मारना ।

सं० प्रहारी-(प्रहार) पु० मारनेवाला, नाश करने वाला, घातक, २ दूर करने वाला ।

सं० प्रहृष्ट- (प्र=बहुत, हृष्ट=प्रसन्न होना) पु० सन्तुष्ट, तुष्ट, पुष्ट, प्रसन्न ।

सं० प्रहेलिका-(प्र=बहुत, हेड् वा हेल्=अनादर करना) स्त्री० पहेली, दृष्टकूट, गूढ़प्रश्न, श्लेष, बुझव्वल ।

सं० प्रह्लाद- (प्र=बहुत, ह्लाद = प्रसन्न होना) पु० हिरण्यकशिपु का बेटा, और परमेश्वर का भक्त, २ हर्ष, आनन्द, खुशी ।

सं० प्रह्व- (ह्वे=बुलाना) गु० श्रेष्ठ, नम्र, भक्त, विख्यात ।

अं० प्राइवेटसेक्रेटरी- स्त्री० स्वकीयलेखक, जातीमीरमुन्शी ।

सं० प्राक-(प्र= पहले, अञ्च्=जाना) क्रि० वि० पहले, पूर्व, आगे आदि ।

सं० प्राक्तन-गु० पुराना, पहला, पूर्वदिशा ।

सं० प्रकार-(प्र=चारों ओर, कृ=फैलाना) पु० घेरा, चारदीवारी, भाग,

र आज़म, महामन्त्री।

सं० प्रार्थक—क० पु० याचकमांगने वाला, मुस्तदई।

सं० प्रार्थना—(प्र=बहुत अर्थ्=मांगना वा चाहना) स्त्री० बिनती, चाहना, याचना, मांगना, बांछना, परमेश्वरसे अपने पापों की माफी चाहना।

सं० प्रार्थनीय, प्रार्थित—कर्म० पु० याचित=याचनीय।

सं० प्रार्थयिता--क० पु० चाहने वाला, आशिक, आसक्त।

सं० प्रावृट्, प्रावृष्, प्रावृषा—(प्र=बहुत, वृष्=बरसना) स्त्री० बर्षाकाल, वर्षाऋतु, बरसात, जैसे,

"प्रावृट् शरद पयोद घनेरे"
"लरत मनहुं मारुत के प्रेरे"
(रामायण)

अं० प्राविंश—सूबा, खण्ड, प्रान्त।

अं० प्राविंशलसर्विस=सूबे की नौकरी।

सं० प्रास—(प्र+अस्=फेंकना) पु० भाला, आयुध, फांसी, क्रोच, त्याग।

सं० प्रासाद—(प्र=अच्छी तरह से सद्=बैठना) पु० महल, राजभवन, राजमंदिर, २ देवताका मंदिर।

सं० प्रिय--(प्री=प्यारकरना वा प्रसन्न होना) पु० प्रीतम, पति, स्वामी, भर्त्ता, गु० प्यारा, सनेही।

सं० प्रियतम--(प्रिय=प्यारा, तम=बहुतही बहुत) गु० बहुतप्यारा, अत्यन्त प्यारा, पु० प्रीतम, पति।

सं० प्रियभाषण--(प्रिय=प्यारा, भाषण=बोलना) पु० प्यार से बोलना, प्याराबोल, प्यारीबात।

सं० प्रियंवद--क० पु० प्रियवादी, शीरीं कलाम।

सं० प्रियंवदक, प्रियवक्ता—(वद्=कहना) क० पु० प्रियवादी, शीरींकलाम।

सं० प्रियवादिनी--(प्रिय=प्यारा, वद्=बोलना) गु० स्त्री० प्यारी बात बोलनेवाली, मीठी बात बोलने वाली।

सं० प्रियवादी--(प्रिय=प्यारा, वद्=बोलना) गु० पु० मीठी और प्यारीबाते बोलनेवाला, मिष्टभाषी।

सं० प्रिया--(प्रिय) स्त्री० गु० प्यारी स्त्री, भार्या, जोरू।

प्रा० प्रीत-(सं० प्रीति) स्त्री० प्यार, प्रेम।

प्रा० प्रीतम--(सं० प्रियतम) गु० बहुतप्यारा, अत्यन्तप्यारा पु० पति।

सं० प्रीति--(प्री=प्यार करना, तृप्त होना) स्त्री० प्यार, प्रेम, सनेह, मोह, दुलार, २ हर्ष, तृप्ति।

सं० प्रुष्ट--(प्रुष्=जलाना) कर्म० गु० दग्ध, जला।

सं० प्रेक्षक--(प्र+ईक्ष्+अक) क० पु० द्रष्टा, देखनेवाला, नाजिर।

सं० प्रेक्षण (प्र+ईक्ष्=देखना) पु० देखना, दर्शन, २ आंख, दृष्टि ।

सं० प्रेक्षणीय (प्र + ईक्ष् + अनीय) सर्व० पु० देखनेयोग्य, दृश्य ।

सं० प्रेत- (प्र=दूर, इण्=जाना) पु० भूत, पिशाच, मुर्दा, मृतक, गु० मरा हुआ, मरा ।

प्रा० प्रेतनी- (प्रेत) स्त्री० भूतनी, पिशाचनी ।

सं० प्रेम- (प्री = प्यारकरना, वा प्रसन्नहोना) पु० प्यार, प्रीति, सनेह, लाड़, दुलार, —प्रेमरंगराता=प्रेम में रंगाहुआ, वहुतप्यारमें डूवाहुआ ।

सं० प्रेमसागर (प्रेम=प्यार, सागर =समुद्र) पु० प्यार का समंदर, श्रीमद्भागवतके दशमस्कन्धका हिन्दी भाषा में उल्था, श्रीलल्लूजीलाल कवि का किया हुआ ।

सं० प्रेमसी--स्त्री० प्रिया, प्यारी ।

सं० प्रेमी (प्रेम) गु० प्यार करने वाला, प्यारा, प्रियतम, सनेही ।

सं० प्रेरक (प्र, ईर्=भेजना) पु० भेजनेवाला, पठैया, २ ताकीद करनेवाला, प्रेरणाकरनेवाला ।

सं० प्रेरण-पु० } (प्र.ईर्=भेजना) भेजना, २ आज्ञा करना, ताकीद
प्रेरणा-स्त्री० } करना, ३ [illegible] ।

प्रा० प्रेरना (सं० प्रेरण) क्रि० स० भेजना, [illegible], ३ [illegible] [illegible]

"धुआंदेखिखरदूषणकेरा"
"जाइसुपनखारावणप्रेरा"
(रामायण)

प्रा० प्रेरित (प्र+ईर्= भेजना) कृ० पु० भेजा हुआ, पठाया हुआ, प्रेरण किया हुआ, आज्ञा किया हुआ ।

सं० प्रोक्त (प्र=पहले, उक्त=कहा हुआ) गु० कहा हुआ ।

अं० प्रेस--पु० यंत्रालय, मतवऋ ।

अं० प्रेसीड्यण्ट= सभापति, मीर मजलिस ।

अं० प्रोक्लेमेशन=मुनादी, ढंढोरा ।

अं०प्रोविनशलक्लब=जनपद समूह ।

सं० प्रेषण (प्रेष्=जाना) भा० पु० प्रेरणा करना, पठावना । [गया ।

सं० प्रेषित--सर्व० पु० प्रेरित, भेजा

सं० प्रोषित (प्र=दूर, वस्=रहना) गु० जो विदेश में हो, विदेश गया हुआ, विदेशी ।

सं०प्रोषितपतिका } (प्रोषित+पति वा भर्ता) स्त्री०
प्रोषितभर्त्तृका }
नायिका जिसका पति परदेश में हो ।

प्रा० प्रोहित--(सं० पुरोहित) पु० पुरोहित, पुरोधा, [illegible]

सं० प्रोक्षण (प्र=दूर, [illegible]=सींचना) [illegible]

सं० प्रोक्षण-(प्र+उक्ष् + अण)
भा० पु० सींचना, वध, यज्ञार्थ
पशु को वधकरना।

सं० प्रोक्षित-र्म० पु० सिक्त, सींचागया।

सं० प्रौढ़- (प्र=बहुत, वह्=लेजाना)
गु० बड़ा, मोटा, पूरा जवान, पूरा
बढ़ा हुआ, २ साहसी, ३ निपुण।

सं० प्रौढ़ा- (प्रौढ़) स्त्री० जवान
स्त्री, तीस बरस से ५५ बरस तक
उमर की स्त्री।

सं० प्लक्ष-(प्लक्ष् = खाना) पु० पा-
करवृक्ष, पीपलवृक्ष, २ भोजन, ३ द
रवाजे की चौखट बाजू, ४ सात द्वी-
पों में का एक द्वीप।

सं० प्लव (प्लु=कूदजाना) क० पु०
डोंगा, मेढ़क, वानर, श्वपच, चां-
डाल, बगुला, सारस।

सं० प्लवक-(प्लु+ अक)क० पु० न-
र्तक, नाचनेवाला, खड्गधारी, नट।

सं० प्लवग } (प्लवन्=कूदता हुआ
प्लवङ्ग } प्लु=कूदना, और
गम्=जाना) पु० वानर, बंदर, २ ह-
रिन, मेढ़क। [मेंढ़क, मृगा।

सं० प्लवङ्गम-पु० मर्कट, वानर, भेक,

सं० प्लीहा (प्लिह्=जाना) स्त्री०
पिलही, तापतिल्ली।

सं० प्लुत-(प्लु=कूदना अथवा ऊंचा
जाना) पु० स्वरों का तीसराभेद,
जिसके बोलने में ह्रस्व से तिगुना
समय लगता है गु० कूदा हुआ,
उछला हुआ।

सं० प्लुष-(प्लुष्=जलाना) पु० दाह,
जलन, जलना, अग्नि, शोक, उ
ष्ण, नाश।

सं० प्लुष्ट-(प्लुष्+त) र्म० पु० दग्ध,
जला हुआ।

सं० प्लोप- भा० पु० दाह, जलना।

सं० प्लोषिता- (प्लुष्+तृ) क० पु०
जलानेवाला।

—:—

(फ)

सं० फ-पु० पकड़, फटकार, वृथावाणी
साधन, वायु का झकोरा।

प्रा० फंका- पु० मुट्ठी भर चीज़ जो
एक बार मुँह में डाली जावे।

प्रा० फंकामारना- बोल० मुट्ठी
भर चीज़ एक बार मुँह में लेजाना।

प्रा० फंदाना-(सं० पश्=बांधना)
क्रि० अ० फँसना, उलझना, अ
टकना, बझना।

प्रा० फंदा } (सं० पाश) पु० पाश,
फांदा } फांसी, जाल, फंदा
२ जंजाल, झंझट, कठिनाई।

प्र

प्रा० फक्कड़--गु० ओबाशरिन्द, ब-खेड़िया, लड़ाका ।

सं० फक्किका--(फक्क=बुरा व्यवहार करना, या धीरे धीरे चलना) स्त्री० फांकी, तर्क, लपेटकी बात, पेंच उलझेड़ेकीबात, चाल, कपट, छल ।

प्रा० फगुवा--(फागुन) पु० होली का पर्व, अथवा तिहवार ।

सं० फट--गु० प्रफुल्लित, विकसित, खिलाहुआ, अव्य० फटकार, मंत्र, स्त्री ।

प्रा० फटकना--(सं० स्फोटन, स्फुट् =जुदा २ करना) क्रि० स० पछोड़ना, उसाना, जुदा करना, नाज को पछाटना, छांटना, २ झाड़ना, ३ क्रि० अ० पासजाना, जा निकलना ।

प्रा० फटकी--स्त्री० चिड़ीमार का जाल, २ बड़ापिंजरा, ३ एक रस्सी जिसकी आवाज से पखेरुओं को डराते हैं ।

प्रा० फटना--(सं० स्फटन, स्फट्= फटना) क्रि० अ० चिरना, तड़कना, तार तार होना ।

प्रा० फटिक--(सं० स्फटिक) पु० बिल्लौर का पत्थर, स्फटिक ।

प्रा० फड़--स्त्री० जुआ खेलने की जगह, २ [illegible] जगह जहाँ बैठने से [illegible] [illegible] [illegible] रहता है, ३ [illegible] ।

प्रा० फड़कना } फरकना } (सं० स्फुर्=फटना वा विकसना) क्रि० अ० फड़फड़ाना, धड़धड़ाना, उछलना, हिलना (जैसे आंख का पपोटा) टीस मारना, तड़फना, २ बहुत खुश होना ।

प्रा० फड़फड़ाना--क्रि० अ० फड़कना, तड़फना, हिलना ।

प्रा० फड़िङ्ग--पु० झींगुर, एक प्रकार का पतङ्ग ।

सं० फण--(फण=जाना) पु० सांप का फैलाया हुआ शिर, वा टुड्डी ।

सं० फणधर--(फण, धृ=रखना) पु० सांप, सर्प ।

सं० फणिक--(फण) पु० सांप, सर्प ।

सं० फणिज्झक--पु० छोटे पत्ते, तुलसीदल ।

सं० फणी--(फण) पु० सांप, सर्प ।

सं० फणीन्द्र } फणीश्वर } (फणी=सांप, इन्द्र वा ईश्वर=राजा) पु० सर्पराज, अनन्त, २ वासुकी ।

अं० फण्ड-समूह, पुंज, पुंजी, सरमाया ।

प्रा० फनगा--(सं० पतङ्ग) पु० टिड्डा, आंखफोड़ा । [कीड़ा ।

प्रा० फफना--गु० [illegible], [illegible], २

प्रा० फफूंदी--स्त्री० [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ।

प्रा० फफोला--(सं० [illegible], [illegible]

सं० प्रोक्षण-(प्र+उक्ष् + अण)
भा० पु० सींचना, वध, यज्ञार्थ पशु को वधकरना।

सं० प्रोक्षित-स्म० पु० सिक्त, सींचागया।

सं० प्रौढ़- (प्र=बहुत, वह्=लेजाना) गु० बड़ा, मोटा, पूरा जवान, पूरा बढ़ा हुआ, २ साहसी, ३ निगुण।

सं० प्रौढ़ा- (प्रौढ़) स्त्री० जवान स्त्री, तीस बरस से ५५ बरस तक उमर की स्त्री।

सं० प्लक्ष-(प्लक्ष्=खाना) पु० पाकरवृक्ष, पीपलवृक्ष, २ भोजन, ३ दरवाजे की चौखट बाजू, ४ सात द्वीपों में का एक द्वीप।

सं० प्लव (प्लु=कूदजाना) क० पु० डोंगा, मेढ़क, वानर, श्वपच, चांडाल, बगुला, सारस।

सं० प्लवक-(प्लु+ अक)क० पु० नर्तक, नाचनेवाला, खड्गधारी, नट।

सं० प्लवग }
प्लवङ्ग } (प्लवन्=कूदता हुआ प्लु=कूदना, और गम्=जाना) पु० वानर, बंदर, २ हरिन, मेंढक। [मेंढ़क, मृगा।

सं० प्लवङ्गम-पु० मर्कट, वानर, भेक,

सं० प्लीहा (प्लिह्=जाना) स्त्री० पिलही, तापतिल्ली।

सं० प्लुत-(प्लु=कूदना अथवा ऊंचा जाना) पु० स्वरों का तीसराभेद, जिसके बोलने में ह्रस्व से तिगुना समय लगता है गु० कूदा हुआ, उछला हुआ।

सं० प्लुष-(प्लुष्=जलाना) पु० दाह, जलन, जलना, अग्नि, शोक, उष्ण, नाश।

सं० प्लुष्ट-(प्लुष्+त) स्म० पु० दग्ध, जला हुआ।

सं० प्लोष- भा० पु० दाह, जलना।

सं० प्लोषिता- (प्लुष्+तृ)क० पु० जलानेवाला।

—:—

(फ)

सं० फ-पु० पकड़, फटकार, वृथावार्ता साधन, वायु का झकोरा।

प्रा० फंका- पु० मुट्ठी भर चीज जो एक बार मुँह में डाली जावे।

प्रा० फंकामारना- बोल० मुट्ठी भर चीज एक बार मुँह में लेजाना।

प्रा० फंदाना-(सं० पश्=बांधना) क्रि० अ० फँसना, उलझना, अटकना, बझना।

प्रा० फंदा }
फांदा } (सं० पाश)पु० पाश, फांसी, जाल, फँसाई, २ जंजाल, झंझट, कठिनाई।

प्रा० फँसना }
फसना } (सं० पश्=बांधना) क्रि० अ० उलझना, बझना, पकड़ा जाना, दूसरे के बश में आना।

सं० फक्क (फक्क्=दुराचार) पु० अमदाचार, बदचलन, मन्दगति, रेंगना।

प्रा० फक्कड़--गु० ओबाशरिन्द, बखेड़िया, लड़ाका ।

सं० फक्किका--(फक्क्=बुरा व्यवहार करना, या धीरे धीरे चलना) स्त्री० फांकी, तर्क, लपटकी बात, पेंच उलझेड़ेकीबात, चाल, कपट, छल ।

प्रा० फगुवा--(फागुन) पु० होली का पर्व, अथवा तिह्वार ।

सं० फट--गु० प्रफुल्लित, विकसित, खिलाहुआ, अव्य० फटकार, मंत्र, स्त्री

प्रा० फटकना--(सं० स्फोटन, स्फुट्=जुदा २ करना) क्रि० स० पछोड़ना, उसाना, जुदा करना, नाज को पछाटना, छांटना, २ झाड़ना, ३ क्रि० अ० पासजाना, जा निकलना ।

प्रा० फटकी--स्त्री० चिड़ीमार का जाल, २ बड़ापिंजरा, ३ एक रस्सी जिसकी आवाज से पखेरुओं को डराते हैं ।

प्रा० फटना--(सं० स्फटन, स्फट्=फटना) क्रि० अ० चिरना, तड़कना, तार तार होना ।

प्रा० फड़कना } (सं० स्फुट्=फटना
फरकना } वा विकसना) क्रि० अ० फड़फड़ाना, थरथराना, उछलना, हिलना (जैसे आंख का पपोटा) टीस मारना, तड़फना, २ बहुत खुश होना ।

प्रा० फड़फड़ाना--क्रि० अ० फड़कना, तड़फना, हिलना ।

प्रा० फड़िङ्गा--पु० झींगुर, एक प्रकार का पतङ्गा ।

सं० फण--(फण्=जाना) पु० सांप का फैलाया हुआ शिर, वा टुड्डी ।

सं० फणधर--(फण, धृ=रखना) पु० सांप, सर्प ।

सं० फणिक--(फण) पु० सांप, सर्प ।

सं० फणिज्झक--पु० छोटे पत्ता, तुलसीदल ।

सं० फणी--(फण) पु० सांप, सर्प ।

सं० फणीन्द्र } (फणी=सांप, इन्द्र
फणीश्वर } वा ईश्वर=राजा) पु० सर्पराज, अनन्त, २ वासुकी ।

अं० फण्ड-समूह, पुंज, पुंजी, सरमाया ।

फटना)पु० फुलका, फाला, छाला।

प्रा० फफोलेफूटने--बोल० दिल दुख पाना, मन में चिंता होना, दुख पाना।

प्रा० फफोलेदिलकेफोडने--बोल० मनकी चाह पूरी करना।

प्रा० फब / फबन } स्त्री० शोभा, सजावट।

प्रा० फबतीकहना--बोल० चुटकुला कहना, चुहल करना, किसी के पहरावे की हँसी करना।

प्रा० फबना--क्रि० अ० सोहना, छाजना, खुलना, भला लगना, अच्छा लगना, ठीक होना।

प्रा० फरछा-गु० निर्मल, स्वच्छ, २ खरा।

प्रा० फरफन्द--(सं० प्रपंच) पु० छल, कपट, धोखा, दुष्टता।

प्रा० फरसा--(सं० परशु) पु० कुल्हाड़ी, बसूला।

प्रा० फरहरा-पु० / फरहरी-स्त्री० } ध्वजा, पताका, झंडी का कपड़ा जो हवा में उड़ता है, गु० अधसूखा।

प्रा० फरी--(सं० फर, फल्=जाना वा भेदना) स्त्री० ढाल।

प्रा० फराना--(सं० स्फुरण) क्रि० अ० हिलना, उड़ना, फहरना (जैसे झंडा)।

सं० फल--(फल्=फलना, सिद्धहोना, वा भेदना) पु० मेवा, २ कामकी सिद्धि, लाभ, फायदा, प्रयोजन, मतलब, परिणाम, नतीजा, ३ संतान, वंश, सन्तति, औलाद, ४ प्रतिफल, बदला, प्रतिकार, पारितोषिक, ५ बाण के आगे का लोहा, फाल, ६ (गणितमें) लब्धि, ७ ढाल, फरी, ८ भाले अथवा तलवार की नोक।

प्रा० फलपाना--बोल० भले या बुरे काम का पलटा मिलना, बदला मिलना।

प्रा० फलफलारी--बोल० नानाप्रकार के फल।

प्रा० फलफूल--बोल० वनस्पति।

सं० फलक--(फल्=जाना वा भेदना) पु० ढाल, २ ललाटकी हड्डी, ३ मूठि, तह, परत, कबजा, तख़्त, पटेरा।

सं० फलद--(फल, दा=देना) गु० फलदायक, फलदेनेवाला, पु० वृक्ष।

सं० फलदाता-(फल+दाता) गु० फल देनेवाला।

प्रा० फलना--(सं० फलन, फल्= फलना) क्रि० अ० फल लाना, फल देना, फल लगना (जैसे वृक्ष का) २ सफल होना, फलदायक होना, ३ भाग्यवान् होना, गुर्राना, फूलना, खुशरहना, ४ वंश बढ़ना

सं० फलप्राप्ति–(फल+प्राप्ति) स्त्री० मनोरथ सिद्धि, मतलब पूरा होना।

प्रा० फलनाफूलना-बोल० भागवान् होना, सुखी होना।

प्रा० फलबुझौवल– पु०एक खेल का नाम जिसको मन फेला भी कहते हैं जैसे–मन में कोई अंक मान लो फिर उसको दूना करो और उसमें दश जोड़ दो फिर उस में से पांच निकाल लो तो बाकी कितना रहा?—इक्कीस तो वह अंक आठ है—इत्यादि।

सं० फलवान्–(फल,वान=वाला) सफल, सार्थक, फलयुक्त।

सं० फलश्रेष्ठ– पु० आम्रवृक्ष।

सं० फलाध्यक्ष–(फल+अध्यक्ष) पु० ईश्वर।

प्रा० फलांग– (सं० लंघन, लघ्=लांघना, कूदना) स्त्री० कूद, उछलना, डग।

सं० फलित–(फल्=फलना) कर्म० पु० फला हुआ, सफल।

सं० फलितज्ञ–(फलित+ज्ञ=जानना) क०पु० ज्योतिषी, नजूमी।

सं० फलितार्थ-पु०तात्पर्य, सिद्धि।

प्रा० फली–(सं०फल) स्त्री०छीमी (जैसे मटर आदि की)।

सं० फलेग्रहि–(फले+ग्रह=लेना) क० पु० समयपरफलनेवाला।

सं० फलोत्तमा-(फल+उत्तमा) स्त्री० द्राक्षावृक्ष, मुनक्का।

सं० फलोदय–(फल+उदय) पु० लाभ, प्राप्ति, २ आनन्द, हर्ष।

सं० फल्गु–(फल्=फल देना) स्त्री० एक नदी का नाम जिस के तीर पर गया नाम शहर बसता है, २ एक प्रकार का अंजीर का पेड़, ३ गुलाल।

प्रा० फहराना फर्राना } (सं०स्फुरण,स्फुर्=हिलना) क्रि०अ० उड़ना, लहराना, हिलना(जैसेझण्डा)।

प्रा० फांक–स्त्री० टुकड़ा, चकती, ककड़ी आदि फल का टुकड़ा।

प्रा० फांकना-क्रि०स०फंकामारना।

प्रा० फांकी–(सं० फक्किका) स्त्री० लपेट की बात, उलझेड़ की बात, तर्क, फक्किका।

प्रा० फांदना–(सं० फालन, फल्=उछलना) क्रि० स० कूदना, उछलना, लांघना।

प्रा० फांस-स्त्री० बांस आदि का बहुतही छोटा टुकड़ा, अथवा कांटा अथवा सींक।

प्रा० फांसी– (सं०पाश) स्त्री०फंदा, फंसरी, एक रस्सी जो गले में डाल कर खींच लेते हैं तो गरदन की रग टूट कर आदमी मर जाता है।

प्रा० फांसी देना—बोल० गला द-बाना, मार डालना, आदमी का द-

एक सफेद बुन्दा सा होजाता है।

प्रा० फुसफुसाना—क्रि० अ० काना फूसी करना, काना कानी करना।

प्रा० फुसलाना—क्रि० स० दिलासा देना, भुलाना, झांसा देना, धोखा देना, बहकाना, दमदेना, बहलाना।

प्रा० फूंक—(फूंकना) स्त्री० दम, सांस

प्रा० फूंकदेना—बोल० आगलगादेना।

प्रा० फूंकना—(सं० फुत्कार) क्रि० स० मुँहसे हवा निकालना, २ आग लगाना, जलाना, सुलगाना, ३ बजाना, (जैसे तुरही, सींगी आदि)।

प्रा० फूंकफूंककरपांवधरना—बोल० बहुत सावधानी से काम करना या रहना।

प्रा० फूंकारना—(सं० फुत्कार) क्रि० अ० फनफनाना, फुंकार मारना, फुत्कारना (जैसे सांपका)।

प्रा० फूंही, फोंहार, फूहार—स्त्री० छोटी छोटी मेह की बूँदें, झींसी, मन्द मन्द वर्षा।

प्रा० फूट—(सं० स्फुटि, स्फुट्=फूटना वा टूटना) स्त्री० एक तरह की ककड़ी, पकी हुई ककड़ी, २ (स्फुट) बिगाड़, बैर, विरोध, बखेड़ा, झगड़ा, असम्मति, अनमेल, ३ जुदा होना, अलगाव, बिलगाव, ४ संदम, टूट, सँध, दरार।

प्रा० फूटपड़ना—बोल० बखेड़ा मचना, विरोध होना, झगड़ा उठना, बीच पड़ना।

प्रा० फूटफूटकररोना—बोल० उमंड उमंडकर रोना, बहुत रोना।

प्रा० फूटहोना—बोल० किसी की सम्मति नहीं मिलना, एक मता न होना।

प्रा० फूटरहना—बोल० अलग हो जाना।

प्रा० फूटना—(सं० स्फुटन, स्फुट्=फूटना) क्रि० अ० टूटना, २ छिन्नभिन्न होना, बिखरना, अलग होना, ३ फटना, चिरना, ४ उठना, फैलना (जैसे सुगंध), ५ कलीका खिलना, ६ भेद खुलजाना, ७ बैरीसे मिलजाना।

प्रा० फूटीसहैंपरकाजलनसहैं—कहावत—थोड़ी घटी नहीं सहना और सब का सब नुकसान सहना।

प्रा० फूफा—पु० फूफी का पति।

प्रा० फूफी, फूफू—स्त्री० बापकी बहिन।

प्रा० फूल—(सं० फुल्ल, फुल्ल्=फूलना) पु० पुष्प, पुहुप, कुसुम, सुमन, २ स्त्री का रज, निहानी, ३ मुर्दे की हड्डियां जो जल जाने के पीछे चुनी जाती है, ४ एक प्रकार का कांसा जो बहुतसाफ और सफेद होता है, ५ फुलाव, सूज, गु० बहुतहलका।

प्रा० फूलजाना--बोल० सूजजाना, २ प्रसन्न होना, आनंदित होना, ३ मोटा होना।

प्रा० फूलझड़ना--बोल० सुंदरताई से बोलना, मीठा बोलना, २ दीपक से जले हुए तेलके टपकों का गिरना।

प्रा० फूलपड़ना--बोल० आग लग जाना, जल जाना।

प्रा० फूलबैठना--बोल० खुशहोना, प्रसन्न होना, हर्षित होना, बहुत प्रसन्न होकर बैठना। [मकल्ला।

प्रा० फूलगोबी--स्त्री० गोबी, कर-

प्रा० फूलना--(सं० फुल्लन, फुल्ल्=फूलना) क्रि० अ० खिलना, विकसना, हहहहाना, २ प्रसन्न होना, खुश होना, हुलसना, निरोग रहना, बढ़ना, पनपना, फलना, ३ सूजना, मोटा होना, वायुसे भरना, वायु से फूलना, ४ घमंडकरना।

प्रा० फूलताफिरना--बोल० [illegible] प्रसन्न होना।

प्रा० फूला--(सं० फुल्ल) गु० फूला हुआ, खिला हुआ, २ [illegible], [illegible] हुआ, [illegible] हुआ।

प्रा० फूलानसमाना--बोल० प्रसन्न होना, अत्यन्त आनन्दित होना, आनन्द से फूल जाना।

प्रा० फूस--पु० पुराना और सूखा घास,

प्रा० फूसमेंचिनगारी डालना--बोल० बखेड़ा मचाना, झगड़ा उठाना।

प्रा० फूहड़--गु० अनसीखी, मूर्ख, धामड़, भौंड़ी (यह शब्द स्त्री के लिये बोला जाता है) स्त्री० मैली कुचैली स्त्री।

प्रा० फूहा--पु० रूई का फाहा जिस को दूध में भिगो कर बच्चे के मुंह में निचोड़ते हैं जब कि बच्चा अपनी मा की चूंची से दूध नहीं पीसकता हो।

प्रा० फेंकना--(सं० क्षेपण, क्षिप्=फेंकना) क्रि० स० डालना, बीगना, दूर गिराना, अलग करना, बगछूट दौड़ाना (घोड़े को) सरपट जाना।

प्रा० फेंकदेना--बोल० दूरगिरादेना।

प्रा० फेंट } स्त्री० कमरबंद, पटका,
फैंट } कटिबन्ध।

प्रा० फेंटबांधना--बोल० किसीकाम के करने के लिये तैयार होना, ठानना ठहराना, कमर बांधना।

प्रा० फेंटा } पु० स्त्री० कमरबंद,
फैंटा } २ छोटी सी पगड़ी।

सं० फेन--(स्फाय=बढ़ना) पु० झाग, कफ, फेना, समुद्रफेन।

सं० फेना[illegible]--पु० [illegible], [illegible] [illegible]।

प्रा० फेनी--(सं० फेन) स्त्री० एक भांत की मिठाई ।

सं० फेरु--पु० शृगाल, गीदड़ ।

प्रा० फेर--(फेरना) पु० घुमाव, बांका, चक्कर, पेंच, २ तबदील, बदली, विकार, ३ बुरे दिन, बुरा भाग, अभाग्य, ४ कठिनता, ५ दूरी, क्रि० वि० दूसरी बार, पीछा, फिर, उलटा।

प्रा० फेरखाना--बोल० घूमना, चक्कर खाना, २ दुखपाना, तकलीफ उठाना।

प्रा० फेरदेना--बोल० उलटा देना, पीछा दे देना, लौटा देना ।

प्रा० फेरपड़ना--बोल० फरक पड़ना, बीच रहना, २ चक्कर पड़ना, दुःख होना ।

प्रा० फेरफार--बोल० छल, फरेब, धोखा, दगा, २ ओसरा, ओसरी, परस्पर, फेराफेरी ।

प्रा० फेरफारकरना--बोल० अदल बदल करना, परिवर्त्तन करना, २ कपट करना, धोखा देना ।

प्रा० फेराफेरी--बोल० आपस में किसी चीजकोलेना औरपीछे देना ।

प्रा० फेरना--क्रि० स० उलटना, घुमाना, लौटाना, पीछा दे देना, हटाना, दूर करना, २ पोतना (जैसे चूना, कलई आदि)।

प्रा० सिरपरहाथफेरना-- बोल० फुसला कर ठगना ।

प्रा० हाथफेरना-बोल० प्यार करना, दुलारकरना, छोह करना ।

फा० फेअल
फेल } काम, क्रिया।

सं० फेलक-- (फेल्+अक, फेल=जाना) क० पु० उच्छिष्ट, जूंठ।

सं० फेलन--भा० पु० फेंकना।

सं० फेलित--कर्म० पु० फेंकाहुआ।

अं० फेलोज=मेम्बर, अंग।

प्रा० फैलना--क्रि० अ० बिछना, पसरना, बिथरना, बिखरना, २ चौड़ा होना, ३ प्रसिद्ध होना।

प्रा० फैलाना--क्रि० स० बिछाना, पसारना, छितराना, २ खोल देना, ३ चौड़ा करना, ४ प्रसिद्ध करना, प्रकट करना, ५ हिसाब करना।

प्रा० फैलाव--पु० प्रचार, बिछाव, पसराव, चौड़ाई।

प्रा० फोंफी--स्त्री० नली, छूछी, २ पोली चीज।

अं० फोटो--प्रतिबिम्ब, अक्स।

अं० फोटोग्राफर=चित्रलेखक, मुसव्विर।

प्रा० फोड़ना--(सं० स्फोटन, स्फुट=फटना)क्रि० स० तोड़ना, फाड़ना, चीरना, टुकड़े २ करना, २ प्रगट करना, भेद खोल देना।

प्रा० फोड़ा--(सं० स्फोटक, स्फुट=

फूटना) पु० घाव, ज़ख़म, फुनसी।

प्रा० फोला--पु० फफोला, छाला।

अं० फ़्रीटेड-- स्वाधीन, परदेशीय, वाणिज्य।

(ब)

सं० ब--पु० वरुण, २ घड़ा, ३ समुद्र ४ पानी।

प्रा० बंकाई--(सं० वङ्कना वङ्क,वकि= टेढ़ा होना) भा० स्त्री० टेढ़ापन, टेढ़ाई, तिरछापन, बांकापन, फेर, घुमाव।

प्रा० बंगड़ी--स्त्री० स्त्रियों के हाथ में पहनने का एक गहना।

प्रा० बंगला--पु० एकतरहका मकान जो चारों ओर से खुला रहता है, २ (सं० वङ्ग) एक तरह का पान, ३ बंगाली बोली।

प्रा० बंगाला--(सं० वङ्ग) पु० बंगाल देश का नाम।

प्रा० बंगाली--(सं० वङ्ग) पु० बंगाले का रहनेवाला, स्त्री० बंगाले की बोली।

प्रा० बंचना--(सं० वंचन, वंचु=छ- लना) क्रि० स० पढ़ना, बांचना।

प्रा० बंदनवार--(सं० बन्ध=बांधना, और [illegible]) स्त्री० फूल [illegible]

कोई उत्सव और पर्वके दिनदरवाज़े पर बाँधते हैं।

प्रा० बंदर-(सं० वानर) पु० एक जानवर जिस का डील डौल और मुंह आदमी से बहुत मिलता है।

प्रा० बंदरकीसीआंखबदलना-- बोल० तुरत रिसाना, जल्द गुस्से में होना।

प्रा०बंदरकीतरहनचाना---बोल० बड़ा कठिन काम करवाना।

प्रा०बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद--कहावत—मूर्ख आदमी अच्छी चीज़ोंका गुण नहीं जानता।

प्रा० बंदवा, बंधुवा (सं० बंध्=बांधना) पु० क़ैदी।

प्रा०बंदी--(सं०वन्दी, वदि=सराहना वा झुकना, नमस्कार करना) पु० बंधुवा, क़ैदी, २ भाट।

प्रा० बंदी--स्त्री० स्त्रियों के लिलाट पर पहननेका एकगहना, बन्दिया।

प्रा० बंदीगृह--(सं० बन्दीगृह,बन्दी =क़ैदी, गृह=घर) पु० जेलखाना, क़ैद खाना, कारागार।

प्रा० बंदीजन--(सं० बन्दी+जन) पु० भाट,चारण,यश [illegible]

प्रा० बंदोह--(सं० [illegible]) स्त्री० [illegible]

प्रा० बक--(सं० बक, [illegible]

-होना) पु० बगुला ।

प्रा० बकध्यानलगाना---बोल० पाषण्ड करना, कपट करना ।

प्रा० बक--(सं० वाक्) स्त्री०बकवाद, बकबक, गपसप, बड़बड़ाहट, झक, गुलगपाड़, वृथा बातें ।

प्रा० बक झक--बोल० बक बक, गपसप, बकवाद, वृथा बातें ।

प्रा० बकझककरना } बोल० टेंटें
बकबककरना } करना,

चेंचेंकरना, बकबक करना, बकवाद करना बड़बड़ाना, वृथाबकना ।

प्रा०बकलगाना--बोल०हूहाकरना, गुलमचाना, हुल्लड़ करना ।

प्रा० बकना--(सं० वाक्) क्रि०अ० बड़बड़ाना, बकझक करना, हुल्लड़ करना, गुल मचाना ।

प्रा० बकरा--(सं०बर्कर,वृक्=लेना) पु० छागल, अज ।

प्रा० बकरी--स्त्री० छेरी, अजा ।

प्रा० बकला } (सं० वल्कल, वल
बक्कल } =ढकना)स्त्री०छाल, छिलका, पोस्त ।

प्रा० बकवाद--(बक=बड़बड़ाहट, और वाद=झगड़ा) स्त्री० बकबक, बकझक, वृथा बातें ।

प्रा० बकवादी--(बकवाद) पु० झक्की, बक्की, बकवादकरने वाला ।

प्रा०बकासुर-(सं०बक=बगला असुर =राक्षस) पु०एक राक्षसका नामजो बगुला बनकर श्रीकृष्ण के मारनेको गया था उस को श्रीकृष्ण ने मारा ।

प्रा० बकिया--स्त्री० छूरी, चक्कू ।

सं०बकी-स्त्री०पूतना राक्षसीका नाम।

प्रा० बक्की-- (बकना) पु० गप्पी, झक्की, बकवादी, (सं० वक्ता) ।

प्रा०बक्रदन्त--(सं०वक्र=बांका दन्त =दांत)पु०शिशुपालके भाईका नाम।

प्रा० बखान--(सं० व्याख्यान) पु० वर्णन,व्याख्या,बयान, स्तुति,सराह।

प्रा० बखानना } क्रि० स० सरा-
बखानकरना } हना, स्तुति करना, तारीफ करना, वर्णन करना ।

प्रा० बखार पु० } अनाज रखने
बखारी स्त्री० } का भण्डार।

फ़ा० बख़िया-- पु० एक तरह का टांका, मज़बूत टांका, दृढ़ सीवन ।

प्रा०बखेड़ा--पु०झगड़ा,लड़ाई,दंगा, रौला । [गड़ामिटाना ।

प्रा० बखेड़ा चुकाना--बोल० झ-

प्रा० बखेड़ा मचाना-- बोल०दंगा करना, बलवा करना ।

प्रा० बखेड़िया--क० पु० झगड़ालू, लड़ाका, दंगई ।

प्रा० बखेरना--(सं० विकीर्ण, वि- कृ=बिखरना) क्रि० स० फैलाना, ... छितरना, छि-

तराना, बिथराना, छींटना ।

प्रा० बग-(सं० बक) पु० बगुला ।

प्रा० बगछूट-(बग=बागडोर, छूट =छूटना) स्त्री० सरपट, धावा ।

प्रा० बगछूटदौड़ना-बोल० सर्पट जाना, तेज़ दौड़ना ।

प्रा० बगला } (सं० बक) पु० एक
बगुला } जल का जीव, बग ।

प्रा० बगलाभक्त-बोल० कपटी, छली, पाषण्डी, कपटधर्मी, फरेबी ।

प्रा० बगलामारेपंखहाथआये-कहावत० गरीब को दुःख देने से बहुत लाभ नहीं होता है ।

प्रा० बगार-पु० चरागाह, रमना, दरख़्तों की कतार, बाग ।

प्रा० बगूला-(बाव, अथवा वायु से) पु० हवा का चक्कर जिस में धूल ऊंची उड़ती है बवण्डर, चक्रवात ।

प्रा० बघार-पु० छौंकना, घी और कुछ मसाला गर्म करके दाल आदि तरकारियों में डालना ।

प्रा० बग्घी } स्त्री० एक तरह की
बग्गी } अंगरेज़ी गाड़ी जिस में

प्रा० बचकाना-(फा० बच्चा से) गु० छोटा, पु० कथक का लड़का २ छोटा जूता, बच्चों का जूता ।

प्रा० बचत-स्त्री० शेष, बाक़ी बक़िया, बक़ाया, अवशेष ।

प्रा० बचन-(सं० वचन) पु० बात, वाक्य, कहना, २ क़ौल, क़रार, पण, होड़, शर्त ।

प्रा० बचनचूक-बोल० अविश्वासी, बेएतबार ।

प्रा० बचनछोड़ना-बोल० वचन तोड़ना, क़ौलछोड़ना ।

प्रा० बचनतोड़ना-बोल० कहीहुई बात से फिर जाना, शर्त से फिर जाना ।

प्रा० बचनदेना-बोल० पक्का क़ौल करना, पण करना, प्रतिज्ञाकरना ।

प्रा० बचननिभाना या पालना बोल० वादे को पूरा करना, अपनी बात पर पक्का रहना ।

प्रा० बचनबंधकरना-बोल० वचन लेना, इक़रार करना ।

प्रा० बचनबंधहोना-बोल० वचन देना ।

ना, इकरार कर लेना।

प्रा० बचना—क्रि० अ० रक्षापाना, २ अलग रहना, ३ बाकी रहना।

प्रा० बचपन—भा० पु० लड़कपन, लड़काई।

प्रा० बचाना—क्रि० स० रक्षाकरना, रखवालीकरना, २ जवाब देना, उत्तर देना।

प्रा०बचाव-भा० पु० रक्षा,रखवाली, उद्धार, २ हिमायत, आश्रय।

प्रा०बच्चा--(सं०वत्स और फ़ा=बच्चा) पु०छोटा लड़का वा लड़की,२ छोटी उमर का जानवर।

प्रा० बछड़ा } (सं० वत्स) पु०गाय
बछड़ू } का बच्चा।

प्रा० बछिया--स्त्री० गाय की बछड़ी।

प्रा०बछेरा-(वत्स)पु० घोड़ेका बच्चा।

प्रा० बच्छ--(सं० वत्स) गु० लाल, प्यारा, पु० बच्चा,लड़का, २ बछड़ा।

प्रा०बच्छल-(सं० वत्सल) क० पु० प्यारा, स्नेही, प्रेमी, दयालु,कृपालु।

प्रा० बच्छासुर-(सं० वत्स=बछड़ा, असुर=राक्षस) पु० एक राक्षस जो कंस के कहने से बछड़ा बनकर श्रीकृष्ण के मारने को गया था।

प्रा० बजना--(सं० वाद्य, वद्=शब्द करना) क्रि० अ० शब्द वा स्वर निकलना।

प्रा०बजन्त्री--(सं० वाद्य=बाजा, यन्त्री=बजानेवाला) पु० बाजा बजानेवाला समाजी।

प्रा०बजरबट्टू-पु० एक जङ्गली फल का नाम जो रीछ नचानेवाले बच्चों के लिये देते हैं इस लिये कि बुरी नज़र नहीं लगे।

प्रा०बजरा--पु० बड़ी नाव जिस पर बैठ कर बड़े आदमी नदी की सैर करते हैं।

अं०बजयट--स्त्री० आय०व्ययका लेखा, आमदनी और खर्चका हिसाब।

प्रा० बज्र--(सं० वज्र, वज्=जाना) पु० इन्द्र का अस्त्र, बिजली, गाज, २ हीरा, गु० कड़ा, कठिन।

प्रा०बजरङ्ग--(सं० वज्राङ्ग, वज्र+अङ्ग अर्थात् जिसका शरीर वज्रसा कड़ा है) पु० हनुमान् का नाम महावीर।

प्रा० बजरंगी--पु० एक प्रकार का तिलक जो हनुमान् के भक्त निकालते हैं।

प्रा० बझाना--क्रि० अ० फँसना, उलझना, पकड़ा जाना।

प्रा० बटखरा -(सं० वण्टक, वण्ट=बांटना) पु० बांट, तौलने का तौला।

प्रा०बटन स्त्री०बुनाम,२समेट,शिकना

प्रा० बटना—(सं० वट्=लपेटना) क्रि० स० बलदेना, ऐंठना, २ (वट्=बांटना) पाना, ३ क्रि० अ० बांटा जाना, हिस्सा होना।

प्रा० बटपाड़ } (बाट=रस्ता, पा-
बटपार } ड़ना=गिराना, अर्थात् लूटना) पु० लुटेरा, डाकू

प्रा० बटलोही—स्त्री० एक तरहका बरतन जिस में दाल भात आदि पकाते हैं, बटुवा, भरतिया, पतेली।

प्रा० बटवार—(सं० वट्=बांटना) पु० करउगाहने वाला।

प्रा० बटवारा—(सं० वट्=बांटना) पु० बांट, भाग, अंश।

प्रा० बटाऊ—(बाट) पु० बटोही, मुसाफ़िर, राही, पथिक, २ बटपार।

प्रा० बटुवा } (सं० वट्=घेरना) पु०
बटवा } कपड़े की एक छोटी थैली, २ बटलोही।

प्रा० बटेर—(सं० वर्त्तक, हन्=होना) स्त्री० एक पखेरू का नाम।

प्रा० बटोरना—क्रि० स० इकट्ठाकरना, चुनलेना।

प्रा० बटोही—(बाट) पु० मार्गी, मुसाफ़िर, रस्ते चलने वाला।

(लकड़ी वा पत्थर का) ५ डिब्बा।

प्रा० बट्टाढाल—गु० बराबर, सपाट।

प्रा० बट्टालगना—बोल० दागलगना, कलंकलगना।

प्रा० बड़ } (सं० वट) पु० एकवृक्ष
बर } का नाम जिसकी छाया गहरी और बड़ी चौड़ी होती है, बरगद।

प्रा० बड़--गु० बड़ा। [वाला।

प्रा० बड़बोला--बोल० शेखीबघारने

प्रा० बड़भकुवा--बोल० मूर्ख।

प्रा० बड़पेटा-बोल० बहुत खानेवाला।

प्रा० बड़ना--क्रि० अ० घुसना, पैठना।

प्रा० बड़बड़ाना--क्रि० स० मुंहही मुंह में कुछ कहना, कुड़कुड़ाना, बक बक करना।

सं० बड़वा--(वड़=बल, वा=जाना) स्त्री० ब्राह्मणी, सूर्य की स्त्री जिससे अश्विनी कुमार हुए हैं, कुंभदासी, अश्विनी, घोड़ी।

सं० बड़वाकृत } पु० दासीपुत्र,
बड़वाहृत } भक्त दास।

सं० बड़वामुख--पु० समुद्रकानल, समुद्राग्नि।

आग जो घोड़ी के मुंह से निकलती है (हिंदुओं के शास्त्र अनुसार)।

प्रा० बड़हल--पु० एक फल का नाम

प्रा० बड़ा / बरा (सं० बड़ा, वड्=विभाग करना, वा घेरना) पु० पीसी हुई दाल की टिकिया जिसको घी अथवा तेल में तलकर खाते हैं, चक्र।

प्रा० बड़ा--(सं० वड्ढ, वल्=घेरना) गु० जेठा, प्रधान, मुखिया, बड़ी उमर का, महा।

प्रा० बड़ाकरना--बोल० बढ़ाना, २ चिरागको बुझा देना। [बात।

प्रा० बड़ाबोल--बोल० घमण्ड की

प्रा० बड़ेबोलकासिरनीचा--बोल० घमण्ड से खराबी होती है।

प्रा० बड़ारास्तापकड़ना--बोल० मर जाना, क़ज़ाकरना।

प्रा० बड़ेपेटवालाहोना--बोल० संतोषी होना, धीर होना, क्षमा वान् होना।

प्रा० बड़ाई--(सं० वड्डता) भा० स्त्री० बड़ापन, बड़प्पन, महत्त्व, २ सराह, स्तुति, प्रशंसा, ३ घमंड, अभिमान।

प्रा० बड़ाईकरना / बड़ाईमारना बोल० सराहना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, २ घमंड करना, शेखी बघारना, डींग मारना, लंबी चौड़ी हांकना, अपनी सराहना करना।

प्रा० बड़ाई देना--बोल० आदर देना, इज्ज़त देना।

प्रा० बड़ी--(सं० वटी) स्त्री० एक तरह की खाने की चीज जो दालकी बनती है और उसकी तरकारी की जाती है २ (बड़ा) बड़ी उमर की स्त्री, ३ गु० बड़ाशब्द का स्त्रीलिंग

प्रा० बड़ीबातनहीं-- बोल० कुछ कठिन नहीं।

प्रा० बढ़ई-- (सं० वर्द्धकि, वृध्=बढ़ना) पु० खाती, सुतार, मिस्तरी।

प्रा० बढ़ती / बढ़ंती (सं० वृद्धता, वृध्=बढ़ना) स्त्री० अधिकाई, वृद्धि, सम्पदा का बढ़ना, तरक्की, उन्नति।

प्रा० बढ़ना--(सं० वर्द्धन, वृध्=बढ़ना) क्रि० अ० अधिक होना, बहुत होना, ऊंचाहोना, २ आगे चलना।

प्रा० बढ़बढ़ना--बोल० ढीठहोना, अभिमानी होना।

प्रा० बढ़जाना--बोल० अंदाज से बाहर होजाना।

प्रा० बढ़नी--स्त्री० झाड़, बुहारी।

प्रा० बढ़ाना--क्रि० स० अधिककरना, बहुत करना, बड़ा करना, २ ऊंचा करना, लम्बा करना, ३ आगे

लाना, ४ उठा ले जाना, अनग कर देना, ५ बन्द करना (दूकान को)।

प्रा० बढ़ाव—(बढ़ना) भा० पु० बढ़ती, अधिकाई, २ चढ़ाव, उभार।

प्रा० बढ़ावा—(बढ़ाना) पु० खुशामद, तारीफ़, बड़ाई, २ उभाड़।

प्रा० बढ़िया—(बढ़ना) गु० बहुत मोलका, महंगा, बहुमूल्य।

सं० वणिक्—(पण्=लेन देन करना) पु० बनियां, महाजन, व्योपारी, सौदागर।

सं० वणिक्पथ-पु० हट्ट, हाट, बाज़ार।

प्रा० बणिज—(सं० वाणिज्य) पु० व्योपार, लेन देन, सौदागरी।

प्रा० बणिया } (सं० वणिक्) पु०
बनिया } महाजन, व्योपारी, वैश्य, सौदागर, दूकानदार।

प्रा० बत=बात, कौल।

प्रा० बतबढ़ाव-बोल० बात बढ़ाना।

प्रा० बतबना-बोल० बातूनी, बात बनानेवाला।

प्रा० बतराना (सं० वार्ता) क्रि० अ० बतियाना, बातचीत करना।

प्रा० बतलाना } (सं० वद्=कहना) क्रि० स०
बताना } जताना, चिताना, सुझाना, बुझाना, दिखाना, सिखलाना, समझाना, संकेत करना, इशारा करना, व्याख्या करना, अर्थ करना।

प्रा० बतास—(सं० वात) स्त्री० हवा, पवन, बाव, बयार, वायु।

प्रा० बतासा } (बतास, हवा) पु०
बताशा } एक तरह की मिठाई, २ बुलबुला।

प्रा० बत्ती (सं० वर्ति, वृत=होना) स्त्री० बाती, २ पलीता, ३ बांस आदि की छड़, ४ लाख की डंडी, ५ पगड़ी जिसको सिपाही लपेट कर गोल कर लेते हैं।

प्रा० बत्तीजलाना—बोल० चिराग जलाना, दीया जलाना।

प्रा० बत्तीचढ़ाना-बोल० घाव में बत्ती रखना।

आग जो घोड़ी के मुंह से निकलती है (हिंदुओं के शास्त्र अनुसार)।

प्रा० बड़हल--पु० एक फल का नाम

प्रा० बड़ा / बरा } (सं० बड़ा, वट्=विभाग करना, वा घेरना) पु० पीसी हुई दाल की टिकिया जिसको घी अथवा तेल में तलकर खाते हैं, चक्र ।

प्रा० बड़ा--(सं० वड्र, वल्=घेरना) गु० जेठा, प्रधान, मुखिया, बड़ी उमर का, महा ।

प्रा० बड़ाकरना--बोल० बढ़ाना, २ चिरागको बुझा देना । [बात ।

प्रा० बड़ाबोल--बोल० घमण्ड की

प्रा० बड़ेबोलकासिरनीचा--बोल० घमण्ड से खराबी होती है ।

प्रा० बड़ारास्तापकड़ना--बोल० मर जाना, क़ज़ाकरना ।

प्रा० बड़ेपेटवालाहोना--बोल० संतोषी होना, धीर होना, क्षमावान् होना ।

प्रा० बड़ाई--(सं०वड्ता) भा०स्त्री० बड़ापन, बड़प्पन, महत्त्व, २ सराह, स्तुति, प्रशंसा, ३ घमंड, अभिमान ।

प्रा० बड़ाईकरना / बड़ाईमारना } बोल० सराहना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, २ घमंड करना, शेख़ी बघारना, डींग मारना, लंबी चौड़ी हांकना, अपनी सराहना करना ।

प्रा०बड़ाई देना--बोल०आदरदेना, इज्ज़त देना ।

प्रा०बड़ी--(सं० वटी) स्त्री० एकतरह की खाने की चीज जो दालकी बनती है और उसकी तरकारी की जाती है २ (बड़ा) बड़ी उमर की स्त्री, ३ गु० बड़ाशब्द का स्त्रीलिंग ।

प्रा०बड़ीबातनहीं--बोल० कुछ कठिन नहीं ।

प्रा० बढ़ई--(सं०वर्द्धकि,वृध्=बढ़ना) पु० खाती, सुतार, मिस्तरी ।

प्रा० बढ़ती / बढ़ंती } (सं वृद्धता, वृध्=बढ़ना) स्त्री० अधिकाई, वृद्धि, सम्पदा का बढ़ना, तरक़्क़ी, उन्नति ।

प्रा० बढ़ना--(सं० वर्द्धन,वृध्=बढ़ना) क्रि० अ० अधिक होना, बहुत होना, ऊंचाहोना, २ आगे चलना ।

प्रा० बढ़चलना--बोल०ढीठहोना, अभिमानी होना ।

प्रा० बढ़जाना--बोल० अंदाज़ से बाहर होजाना ।

प्रा० बढ़नी--स्त्री० झाड़, बुहारी ।

प्रा०बढ़ाना--क्रि०स० अधिक करना, बहुत करना, बड़ा करना, २ ऊंचा करना, लम्बा करना, ३ [illegible]

लाना, ४ उठा ले जाना, अलग कर देना, ५ बन्द करना (दुकान को)।

प्रा० बढ़ाव—(बढ़ना) भा० पु० बढ़ती, अधिकाई, २ चढ़ाव, उभार।

प्रा० बढ़ावा—(बढ़ाना) पु० खुशामद, तारीफ़, बड़ाई, २ उभाड़।

प्रा० बढ़िया—(बढ़ना) गु० बहुत मोलका, महंगा, बहुमूल्य।

सं० वणिक्—(पण्=लेन देन करना) पु० बनियां, महाजन, ब्योपारी, सौदागर।

सं० वणिक्पथ-पु० हट्ट, हाट, बाजार।

प्रा० बणिज—(सं० वाणिज्य) पु० ब्योपार, लेन देन, सौदागरी।

प्रा० बणिया } (सं० वणिक्) पु०
बनिया } महाजन, ब्योपारी, वैश्य, सौदागर, दूकानदार।

प्रा० बत=बात, क़ौल।

प्रा० बतबढ़ाव-बोल० बात बढ़ाना।

प्रा० बतबना-बोल० बातूनी, बात बनानेवाला।

प्रा० बतक—(अ० बतक) स्त्री० एक जल का जीव।

प्रा० बतराना (सं० वार्ता) क्रि० अ० बतियाना, बातचीत करना।

प्रा० बतलाना } (सं० वद्=कहना) क्रि० स०
बताना } जताना, चिताना, सुझाना, बुझाना, दिखाना, सिखलाना, समझाना, संकेत करना, इशारा करना, व्याख्या करना, अर्थ करना।

प्रा० बतास—(सं० वात) स्त्री० हवा, पवन, बाव, बयार, वायु।

प्रा० बतासा } (बतास, हवा) पु०
बताशा } एक तरह की मिठाई, २ बुलबुला।

प्रा० बत्ती (सं० वर्ति, वृत=होना) स्त्री० बाती, २ पलीता, ३ बांस आदि की छड़, ४ लाख की डंडी, ५ पगड़ी जिसको सिपाही लपेट कर गोल कर लेते है।

प्रा० बत्तीजलाना—बोल० चिराग जलाना, दीया जलाना।

प्रा० बत्तीचढ़ाना-बोल० घाव में बत्ती डालना।

प्रा० बत्तीस-(सं० द्वात्रिंशत्) गु०

और बत्तीस छुहारा और रुपया जो दुल्हा दुल्हन के ननिहाल को जाता है उसे बत्तीसी कहते हैं।

प्रा० बथुवा—(सं०वास्तूक)पु०एक तरह का साग।

प्रा० बदना—(सं० वदन, वद्=कहना) क्रि० स० दांव लगाना, मानना, २ रचना, भाग मे लिखा जाना।

सं० बदर—(वद्=कहना) पु० बेर का वृक्ष, बिनौला, कपासबीज।

सं० बदरि—(वद्=दृढ़ होना) पु० बेर, एक फल का नाम।

सं० बदरिकाश्रम—(बदरिका + आश्रम) पु० बदरिनाथ, बदरिनाथ का पहाड़।

प्रा० बदलना—(अ० बदल) क्रि० स० पलटना, बदला करना, उलटना, और तरह से बना देना।

प्रा० बदली—(बादल)स्त्री०बादल, मेघ।

प्रा० बदली—(बदलना) स्त्री०तबदीली, एक जगहसे दूसरी जगह जाना।

प्रा० बदा—(सं० वद्=कहना) गु० होनहार, भवितव्य।

सं० बदि } स्त्री० अँधेरा पाख, कृ-
बदी } ष्णपक्ष, महीने का पहिला पक्ष।

प्रा० बदरा—(सं० वारिद) पु० बादल, मेघ, घटा।

सं० बद्ध—(बन्ध्=बांधना) त्रि०पु० बांधा हुआ, रुका हुआ, दृढ़, रचित, वृत्तभेद।

सं० बध—(बध्=मारना) पु०मारना, हिंसा, हत्या, हनना।

प्रा० बधना—(सं० बधन, बध्=मारना) क्रि० स० मारडालना।

प्रा० बधना } पु० लोटे ऐसा ए-
बदना } क मिट्टी का छोटा बरतन।

प्रा० बधाई, स्त्री० } मंगलाचार,
बधावा, पु० } आनन्दमङ्गल, आनन्द के गीत, जयजयकार, मुबारकबादी।

सं० बधक } (बध्=मारना) त्रि०पु०
बधिक } शिकारी, बहेलिया,
बधी } आखेटकी, मारनेवाला।

सं० बधनीय—(बध् + अनीय) त्रि० पु० मारने योग्य।

प्रा० बधिया—(सं० बध्=बांधना) पु० नपुंसक बैल, आख्ता।

सं० बधिर—(बन्ध्=बन्द होना, अर्थात् जिसकी सुनने की इन्द्रिय बंधी हुई हो) गु० बहरा, कनफूटा।

सं० बधू—(बन्ध्=बांधना, वा वह= लेजाना) स्त्री० बहू, लड़केकी स्त्री, २ भार्या, पत्नी, जोरू, स्त्री, —कुलबधू=उत्तम घराने की स्त्री, —देव

वधू=देवी, देवता की स्त्री।

सं० वधूटी--(वधू) स्त्री० बहू, स्त्री, पत्नी, भार्या, जोरू, २ लड़के की स्त्री।

सं० वध्य--(वध्=मारना) कर्म० पु० मारने योग्य।

सं० वध्यस्थान--धि० फांसी देने की जगह, वधभूमि।

प्रा० बन-- (सं० वन) पु० जंगल, आपसे उगे वृक्ष।

प्रा०बनजात्रा--(सं० वनयात्रा) स्त्री० व्रजके ८४ वन की यात्रा।

प्रा० बनज }
बनिज } (सं० वाणिज्य) पु० व्योपार, लेन देन, सौदागरी।

प्रा० बनजर--(सं० वन्ध्या) स्त्री० पड़ती धरती, ऊसर, वह धरती जिसमें कुछ नहीं उपज सक्ता।

प्रा० बनजारा--(सं० वणिज्) पु० जो नाज आदि वणिज्की चीजों को बैलों पर लाद कर ले जाते हैं।

प्रा० बनठनके--क्रि० पु० सज धज के, सिंगार करके।

प्रा० बनत--स्त्री० गोटा किनारी का काम।

प्रा० बनमानुष--(सं० वनमानुष) पु० एक जानवर जिसका डील डौल आदमी का सा होता है, २ जंगली, गंवार।

प्रा० बनमाल-- [illegible]

फूलों की माला जो पैरों तक लंबी बनाई जाती है और बहुत बार तुलसी, कुन्द, मदार, पारिजात और कमल के फूलों से बनती है।

प्रा०बनरा }
बना } पु० दुलहा, वर।

प्रा० बनरी }
बनी } स्त्री० दुलहिन।

प्रा० बनसी-- (सं०वडिश) स्त्री० मछली पकड़ने का कांटा, २ (सं० वंशी) मुरली, बांसुरी।

प्रा० बनात--स्त्री० ऊनी कपड़ा जो दलदार मोटा होता है।

प्रा०बनाना--क्रि०स०रचना करना, तैयार करना, निर्माण करना, २ठीक करना, ३ उठाना (जैसे मकान, दीवार आदि) ४ इकट्ठा रखना, मिलाना, ५ ग्रंथ रचना, ६ सँवारना, सिंगारना, ७ मेल कराना, मिलाना, मनाना, ८ पकाना, ९ सुधारना, मरम्मत करना, १० निकालना, ११ शुद्ध करना, १२ निजन्ना-ना, चिढ़ाना, ठट्ठा करना, तुच्छ करना, १३ सिरजना, पैदा करना, १४ पूरा करना, १५ [illegible] [illegible] १६ [illegible] करना।

प्रा० बनाव--(बनाना) [illegible] [illegible] [illegible], २ [illegible], [illegible], —

बनाव करना, बोल० सँवारना, सिंगार करना।

प्रा० बनावट--(बनाना) भा० स्त्री० डौल, २ रचना, ३ कल्पना, झूठी दिखावट।

प्रा० बनिक-(सं० वणिक्) पु० बनिया, महाजन, ब्योपारी, सौदागर।

प्रा० बनेला / बनैला } (सं० वन्य) गु० जंगली।

प्रा० बनैटी / बनेटी } स्त्री० एक लकड़ी जिस के दोनों ओर मशाल बांध कर गोल गोल फिराते हैं जिससे आग का दोहरा चक्कर बन जाता है।

सं० बन्ध--(बन्ध्=बांधना) पु० बांधना, २ गांठ, पट्टी, ३ क़ैद।

प्रा० बन्धमें पड़ना या आना--बोल० क़ैदी होना, क़ैद में आना।

सं० बन्धक--(बन्ध्=बांधना) पु० धरोहर, थाती, गिरों, २ बांधना, क़ैद।

सं० बन्धकदाता--(बन्धक = ऋण, दाता=देनेवाला, दा=देना) क० पु० राहिन।

सं० बन्धकधारी-क० पु० मुरतहिन।

सं० बन्धनपत्र--रेहनामा।

सं० बन्धनालय-(बन्धन + आलय) षि० पु० क़ैदखाना।

सं० बन्धन--(बन्ध्=बांधना) पु० बांधना, २ गांठ, ३ क़ैद, ४ रोक, रुकाव, ५ लगाव, जुड़ाव।

प्रा० बन्धना--(सं० बन्धन) क्रि० अ० बंध होना, रुकना, अटकना, २ गिरह लगना, जोड़ा जाना।

सं० बन्धान--भा० पु० रोज़ाना, वज़ीफा।

सं० बन्धित--(बन्ध्+इत) कर्म० पु० बांधागया, मुक़य्यद।

सं० बन्धु--(बन्ध्= बांधना, जो स्नेह से आपसमें अपने मनों को बांधते हैं) पु० भाई, सगोत्र, नातेदार, नतैत, मित्र, सखा।

प्रा० बन्धुआ--पु० क़ैदी।

सं० बन्धूक-- (बन्ध्=बांधना) पु० एक तरहका लालफूल गुलदुपहरिया, लालबूटी, लालछींट।

सं० बन्धुर-पु० मुकुर, तिलकल्क, बधिर, हंस, विरंड, विहंग, गु० रम्य, नम्र, ऊंचनीच, स्त्री० वेश्या, सत्तू।

सं० बन्धुल-पु० असतीपुत्र, गु० रम्य, सुन्दर, नम्र।

प्रा० बन्धेज--(सं० बन्ध्=बांधना) पु० किफायत, कमखर्ची, २ दृढ़ता, ३ रोजीना, वज़ीफा।

सं० बन्ध्या--(बन्ध्=बांधना) स्त्री० बांझ स्त्री, अपुत्रवती।

प्रा० बन्ना / बनना } क्रि० अ० होना, तैयार होना, २ सुधरना

मरम्मतहोना, ठीकहोना, ३ सफल होना, सिद्धहोना, वन पड़ना।

प्रा० वनआना--वोल० हो सकना, २ भाग जागना, क़िस्मत खुलना।

प्रा० वनजाना--वोल० होजाना, सम्हल जाना।

प्रा० वनपड़ना--वोल० सुधारना, भला होना, बन्ना, होसकना, सफल होना, सिद्ध होना।

प्रा० वनवनकरविगड़ना--वोल० तैयार होकर खराव होजाना।

प्रा० वनाचुना--वोल०सँवाराहुआ, सिंगाराहुआ, सजाहुआ।

प्रा० वन्नाठन्ना--वोल० खूवसिंगार करना, आरास्ता होना।

प्रा० वनावनाया--वोल० तैयार, पूरा, सिद्ध, कामिल।

प्रा० वनारहना--वोल०ठहरारहना, क़ायमरहना। [कंगाल।

प्रा० वपुरा--गु० वेवश, अनाथ, दीन,

प्रा० वपौती--(वाप) स्त्री० पैतृक धन, विरासत, वाप की द्रव्य।

प्रा० वफारा--(सं० वाष्प=भाफ) पु० भाफ।

प्रा० वफारादेना--वोल० भाफकी [illegible] करके शरीर में लगने देना।

प्रा० [illegible] } (सं० [illegible]) पु० [illegible] [illegible]

सं० बभ्र--पु० गमन,चाल, मर्य्यादा, गु० चलनेवाला। [सुखदायी।

सं० बभ्रिक--पु० पालक, रक्षक,

सं० बभ्रु--(बभ्र=गमन करना) पु० शिव, विष्णु,नकुल, न्योला, वह्नि, मुनिभेद, देशभेद, गु० धूसरवर्ण, पीतवर्ण, सुन्दर।

सं० बभ्रुधातु-पु०सोना, धतूरा,गेरू

प्रा० वया--(सं०वयस्, अज्=जाना) पु०एक पखेरू जो सिखलानेसे स्त्रियों की टिकुली उतार लाता है।

प्रा० वयार--(सं० वायु) स्त्री०हवा, पवन, वाव, वतास, वायु, वयार।

प्रा०वयालीस--(सं०द्विचत्वारिंशत्) गु० चालीस और दो।

प्रा०वयासी-(सं०द्व्यशीति,द्वि=दो, अशीति=अस्सी)गु० अस्सी और दो।

प्रा० वर--(सं० वर,वृ=पसन्द करना) पु० वरदान, आशिष, चाही हुई चीज़, २ पति, स्वामी, दुल्हा, ३ जमाई, गु० सब से अच्छा, श्रेष्ठ, उम्दा।

प्रा० वरखना } (सं० वर्षण, वृष्=
वरसना } वरसना) क्रि० अ० पानी पड़ना, मेह गिरना, वर्षा होना।

प्रा० वरजना (सं० [illegible]) [illegible] क्रि० स० [illegible]

मनअ करना, निषेध करना ।

सं० बरट—पु० हंस, बर्र, भिड़ ।

प्रा० बरत—(सं० व्रत) पु० उपास, उपवास, रोज़ा ।

प्रा० बरतन, बर्तन—पु० बासन, पात्र, भांड़ा ।

प्रा० बरतना, बर्तना—क्रि० स० काम में लाना, इस्तअमाल करना ।

सं० बरदान (बर=चाही हुई चीज़, दा=देना) पु० आशिष, दुआ ।

प्रा० बरध—(सं० बलीवर्द) पु० बैल ।

प्रा० बरन (सं० वरम्) समुच्च० बल्कि, २ (वर्ण शब्द को देखो) ।

प्रा० बरनन (सं० वर्णन) पु० बखान, बयान, २ सराह, स्तुति ।

प्रा० बरननकरना, बरनना—क्रि० स० बखान करना, बयान करना, सराहना ।

प्रा० बरना—(सं० वृ=पसन्द करना) क्रि० स० ब्याह करना, विवाह करना, शादी करना ।

प्रा० बरबरी (बारबेरी Bar bary एक जगह आफ्रिका में है वहां की बकरी मोटी और बड़ी होती है) स्त्री० एक तरह की बकरी ।

प्रा० बरबस, पु०, बरयाई, स्त्री०—बरजोरी, जोरावरी, बल, ज़ोर, बड़ाई, क्रि० वि० ज़ोरावरी से, जबरदस्ती से, हठ से ।

प्रा० बरमा, बर्मा—पु० बढ़इयों का एक औज़ार जिससे लकड़ी छेदते हैं ।

प्रा० बरराना—क्रि० स० नींद में कुछ कहना ।

प्रा० बरवा—पु० एक छन्द का नाम, २ एक रागिणी का नाम । [संवत् ।

प्रा० बरस—(सं० वर्ष) पु० साल,

प्रा० बरसगांठ—(सं० वर्षग्रंथि, वर्ष=साल, ग्रन्थि=गांठ) स्त्री० सालगिरह, जन्मदिन ।

प्रा० बरसौढ़ी—(सं० वार्षिक) स्त्री० सालियाना महसूल, बरस का कर ।

प्रा० बरहा-पु० गायों के चरने का खेत चरागाह, २ खेत में पानी ले जाने की राह ।

प्रा० बरही-पु० मोर, मयूर ।

प्रा० बरात-(सं० व्रात, वृ=पसन्द करना) स्त्री० दूल्हे की सवारी की धूमधाम ।

प्रा० बराना—क्रि० स० बचाना, दूर हांकना, हरादेना, हटादेना ।

प्रा० बराह—(सं० वराह, वर=हित अर्थात् अपने हित के लिये और आ + हन्=मारना, या खोदना अर्थात् अपने खाने की चीज़ ढूंढने में जो ज़मीन को खोदता है) पु० सुअर, शूकर, २ विष्णु का तीसरा अवतार ।

प्रा० बरिवण्ड—गु० बलवान, तेजस्वी, ज़ोरावर, २ दुष्ट, मद ।

प्रा० वरी--(वर) स्त्री वह कपड़ोंका जोड़ा जो दुल्हाके घर से दुलहिन को भेजा जाता है, २ (वटी) वड़ी।

प्रा० वरु--(सं० वर) क्रि० वि० चाहे, परन्तु, लेकिन, भला, अच्छा।

प्रा० वरुण--(सं० वरुण, वृ=घेरना, वा पसन्द करना) पु० पानी का देवता और पश्चिम दिशा का दिक्पाल।

सं० वरुणालय-(वरुण+आलय) वि० पु० समुद्र, सागर।

प्रा० वरुणी--(सं० वरुणी, वृ=ढकना) स्त्री० पपनी, आंख परके बाल, बिरनि, मिजगाँ।

प्रा० वर्छी--स्त्री० सांग, सेल।

प्रा० वर्बर--(वर्व=जाना)पु० मूर्ख, जंगली, हबशी, वर्फी, चर्वजवान।

प्रा० वर्ष--(सं० वर्ष, वृष्=बरसना, या पैदाहोना) पु० साल, वरस, संवत्।

प्रा० वर्षा } (सं० वर्षा, वृष=बर-
बर्खा } सना) स्त्री० वरसात, मेह, २ वर्षाऋतु।

प्रा० वर्षात--(सं० वर्षा) स्त्री० वर्षा ऋतु, चतुर्मास) पावसऋतु, वर्षा- [illegible]

प्रा० वर्षी--(वरस) स्त्री० वरसके दिन का श्राद्ध।

सं० वर्हि--पु० [illegible]

सं० बल--([illegible]) पु० [illegible] शक्ति, सामर्थ्य, २ बलदेवजी का नाम, ३ सेना, ४ स्थूलता, मुटाई, ५ गन्धरस, ६ रूप, ७ शुक्र, वीज, वरुण वृक्ष, ८ दैत्यभेद, ९ काकपक्षी।

प्रा० बल--(सं० बलि) स्त्री० बलि, बलिदान, चढ़ावा।

प्रा० बल--स्त्री० ऐंठ, मरोड, बट।

प्रा० बलखाना--बोल० ऐंठाजाना, क्रोध करना, गुस्सा करना।

सं० बलज--पु० क्षेत्र, पुरद्वार, अन्न, संग्राम, दर्पण, शीशा, स्त्री० पृथ्वी, श्रेष्ठास्त्री, जाही जूही।

प्रा० बलदेना--बोल० मरोड़ना, ऐंठना

प्रा० बलबे--बोल० शाबाश, वाहवाह।

प्रा० बलजाना } बोल० बलिहा-
बलबलजाना } री जाना, निछावरि होना।

प्रा० बलदेना } बोल० बलिदान
बलकरना } करना, कुर्बानी करना।

प्रा० बलदाऊ--(सं० बलदेव) पु० श्रीकृष्ण का बड़ा भाई।

सं० बलदेव--(बल+देव) पु० श्रीकृष्ण का बड़ा भाई।

प्रा० बलना } क्रि० अ० जलना।
बरना }

सं० बलनिधि--(बल+निधि) पु० बलवान, बहुत बली, जोरावर।

सं० बलभद्र--(बल+ भद्र) पु०

बलराम, श्रीकृष्ण का बड़ा भाई।

सं० **बलराम**--(बल=जोर, रम्=खेलना) पु० बलदेव, शेषजी का अवतार और श्रीकृष्णकाबड़ाभाई।

सं० **बलवत्**--गु० बलयुक्त,बली,पुष्ट, मल्ल, बलवान्।

सं० **बलवन्त** } **बलवान्** } (बल=जोर,वत्=वाला)गु०जोरावर, बली, सामर्थी।

सं० **बलबीर**--(बल=बलदेव जी, बीर=भाई) पु० श्रीकृष्णकानाम।

प्रा० **बलवा**-पु० दंगा, झगड़ा, फसाद,बग़ावत।

सं० **बलानुज**--(बल=बलभद्र, अनुज=छोटा भाई) पु० श्रीकृष्ण।

सं० **बलाराति**--(बल=असुर, आराति=शत्रु) पु० इन्द्र, देवराज।

सं० **बलाका**--स्त्री० बकपंक्ति, बगुलाओं की कतार।

सं० **बलात्**-अव्यय०, हठात्।

सं० **बलात्कार**--पु० हठ, बरजोरी, ज़बरदस्ती।

सं० **बलाहक**--(बलाह=पानी,बल=जाना वा घेरना, अर्थात् जिसमे पानीहो अथवा बल=कंपन,हा=छोड़ना)पु०बादल, बदल, मेघ, घन।

सं० **बलि**--(बल्=जीना) पु०एक राजा का नाम जिसको विष्णु भगवान् ने वामनावतार लेके पाताल में भेज दिया, २ नैवेद्य, देवता का भोग, भेंट, कुर्बानी।

सं० **बलिदान**--(बलि+दान)पु० देवता के सामने बकरा आदि पशु को मारके चढ़ाना, देवता के लिये भोग, नैवेद्य।

सं० **बलिसद्म**--पु० अंकुश, चाबुक, कोड़ा, बन्दरों का समूह।

सं० **बलिष्ठ**--गु० बड़ा बलवाला।

प्रा० **बलिहारी**-- (सं० बलि)स्त्री० निछावर, तसद्दुक़, क़ुर्बान जाना।

प्रा०**बलिहारीजाना**-बोल० निछावर होना,बलजाना, बलबलजाना।

सं० **बली**--(बल) गु० जोरावर, बलवान्, पराक्रमी।

सं० **बलीबर्द**--पु० साण्ड, सांड़।

सं० **बलीमुख** } **बलिमुख** } (वली वा वलि=ढीलाचमड़ा, वल्=हिलना वा घेरना) मुख=मुहँ, अर्थात् जिसके मुहँ पर का चमड़ा ढीला हो) पु० वानर, बंदर, कपि, मर्कट।

सं० **बलीयस्** } **बलीयान्** } गु० अत्यन्तबली, बड़ा जोरावर।

प्रा० **बलुवा**-- (बालू) गु० बालूका, बालूमय, रेतला, करकरा। [नेज़ा।

प्रा० **बल्लम**--पु० भाला, सेल, बर्छा,

प्रा० **बल्ली**--स्त्री०नाव का डंडा,लग्गी, बल्ली मारना, बोल० नावचलाना।

प्रा० **बवासीर**-- पु० अर्शरोग,[illegible]

में मस्सों का रोग ।

प्रा० बस—(सं० वश, वश्=चाहना) पु० क़ाबू, बल, जोर, २ अधिकार, गु० आधीन,—वश करना, बोल० आधीन करना, दबाना,—वश में आना, क़ाबू में आना, आधीन होना ।

फ़ा० बस—(بس) गु० बहुत, पूरा, बहुतेरा,-चुप बस करना, बोल० ठहरना, करचुकना ।

प्रा० बसन--(सं० वसन, वस्=ढकना) पु० कपड़ा, जोड़ा, वस्त्र, लूगा ।

प्रा० बसना-(सं० वसन, वस्=रहना) क्रि० अ० रहना, टिकना, वासा करना, आबाद होना, घरबनाना ।

प्रा० बसन्त--(सं० वसन्त, वस्=रहना या सुगन्ध आना) स्त्री० एक ऋतु का नाम जो चैत और कुछ वैशाख के महीने तक रहती है, २ एक राग का नाम,—बसन्त फूलना, बोल० सरसों के फूलों का खिलना,—आंखों में बसन्त फूलना, बोल० [illegible]—बसन्त के घर की भी खबर है,—[illegible] यह जानने भी [illegible] है ।

प्रा० बसन्ती--(बसन्त) पु० एक प्रकार का पीला रंग, गु० पीला ।

प्रा० बसाना--(बसना) क्रि० स० [illegible]

प्रा० बसूला--पु० वह औजार जिस से बढ़ई लकड़ी छीलते हैं ।

प्रा० बसेरा—(सं० वास) पु० वासा, रहने की जगह, पखेरू का घोंसला अथवा अड्डा, पखेरू के रात को रहने का वासा ।

प्रा० बसुदेव—(सं० वसुदेव, वसु=धन दिव=चमकना) श्रीकृष्ण का बाप और शूरसेन का बेटा ।

प्रा० बस्ती-(सं० वसती, वस्=रहना) स्त्री० छोटा गांव, आबादी ।

प्रा० बस्त / बस्तु (सं० वस्तु, वस्=रहना या ढकना) स्त्री० चीज़, पदार्थ ।

प्रा० बस्त्र--(सं० वस्त्र, वस=पहनना) पु० कपड़ा, लूगा, बसन ।

प्रा० बहकना-क्रि० स० धोखा खाना, २ नशेमें कुछ करना, ३ नींद में कुछ बोलना, ४ बहका जाना ।

प्रा० बहकाना-क्रि० स० धोखा देना, भुलाना । [illegible]

प्रा० बहँगी—(सं० विहंगी) स्त्री० [illegible]

प्रा० बहत्तर--(सं० द्विसप्तति) गु० सत्तर और दो ।

प्रा० [illegible]—(सं० [illegible]) पु० [illegible], २ [illegible] ।

प्रा० [illegible] [illegible]

[illegible]

प्रा० बहना—(सं० वह्=बहना या ले जाना) क्रि० अ० चलना, पानी का जारी होना, २ हवाका चलना।

प्रा० बहतेपानीमेंहाथधोना—कहावत—जबतक अपना काम बना रहे तबतक अच्छा काम करलेना।

प्रा० बहनेऊ } (सं० भगिनी पति) पु०
बहनोई } बहिन का पति।

प्रा० बहरा } (सं० बधिर) गु० वह
बहिरा } आदमी जिस के सुनने की इन्द्री खराब होगई हो, कनफूटा।

प्रा० बहल } स्त्री० एक तरह की
बहली } गाड़ी।

प्रा० बहलाना-क्रि० स० प्रसन्नकरना, २ भुलाना, बहकाना, किसी बात में लगा रखना। [नुर्धारी।

प्रा० बहेलिया—पु० शिकारी, ध-

प्रा० बहाना—(बहना) क्रि० स० चलाना, पानी जारी करना, २ पु० छल, कपट, हीला। [करना।

प्रा० बहादेना—बोल० उजाड़ना, नाश

प्रा० बहाफिरना—बोल० भटकना फिरना, इधरउधरफिरना।

प्रा० बहाव-(बहना) भा० पु० पानीका जारी होना, बाढ़, चढ़ाव।

प्रा० बहिर्मुख-(सं० बहिर्=बाहर, मुख =मुंह) गु० धर्मविमुख, अधर्मी, बागी।

प्रा० बही—स्त्री० महाजनों के हिसाब रखने की किताब जो एक किनारेकी ओर सीं जाती है।

प्रा० बहीर } स्त्री० सेनाकी सामग्री,
बहीड़ } डेराडंडाआदि।

सं० बहु—(बाहि=बढ़ना) गु० बहुत, ढेर, बड़ा, अधिक।

प्रा० बहुत—(बहु) गु० अधिक।

प्रा० बहुतगईथोड़ीरही— बोल० उमर पूरी हो चुकी है।

प्रा० बहुतात } (सं० बहुता) स्त्री०
बहुतायत } अधिकाई।

सं० बहुतिथ—गु० बहुत दिन, बहुत बेर, अनेकबार, अनेक, बहुत।

प्रा० बहुतेरा—(सं० बहुतर) गु० बहुतसा, बहुतही बहुत।

सं० बहुधा—(बहु=बहुत, धा=प्रकार) क्रि० वि० बहुत प्रकारसे, बहुत भांति से, बहुत बार, अकसर।

सं० बहुबाहु—(बहु=बहुत, बाहु= भुजा) पु० रावण व सहस्र बाहु आदि।

सं० बहुमूल्य—(बहु=बहुत, मूल्य= मोल) गु० बहुत मोलका, बढ़िया, महंगा।

प्रा० बहुरि } समुच्च० फिर, पुनि, और।
बहोरी } [पु० भांड़, स्वांगी।

प्रा० बहुरूपिया—(सं० बहुरूपी)

सं० बहुवचन—(बहु+वचन) पु० बहुत को जनानेवाला, बहुवाची।

सं० बहुल—गु० प्रचुर, बहुत, दृ०

कृष्णवर्ण, अग्नि, आकाश।

सं० बहुलगंधा-स्त्री० एला, इलायची।

सं० बहुविधि--(बहु=बहुत, विधि=प्रकार) क्रि० वि० बहुत प्रकार से, अनेक भाँति से।

सं० बहुश्रुत--(श्रु=सुनना) गु० पण्डित, विद्वान्, शास्त्री।

प्रा बहू--(सं० वधू) स्त्री० दुलहिन, भार्या, जोरू, २ पतोहू, बेटेकीदुलहिन।

प्रा० बांक--(सं० वक्र, वकि=टेढ़ा होना) स्त्री० टेढ़ापन, तिर्छापन, २ झुकाव, ३ नदी का घुमाव, ४ दोष, अपराध, दुष्टता, ५ एक गहने का नाम जो बाजू पर पहनते हैं ६ एक शस्त्र का नाम जो कटार के ऐसा होता है।

प्रा० बांका } बांकुरा } (सं० वक्र) गु० टेढ़ा, तिर्छा, २ बहादुर, वीर ३ छैला, अकड़ैत, अकड़बेग।

प्रा० बांचना-(सं० वचन, वच्=बोलना) क्रि० स० पढ़ना, पाठकरना, बंचना।

प्रा० बांचना—क्रि० अ० बचना, जीता रहना।

प्रा० बांछा—(सं० वाञ्छा) स्त्री० इच्छा, चाह, अभिलाषा।

प्रा० बाञ्छित—(सं० वाञ्छित) गु० प्यारा, [illegible], इच्छित।

प्रा० बांझ—(सं० वन्ध्या) स्त्री० वह स्त्री जिसके लड़का बाला न होता हो।

प्रा० बांट (सं० वण्टन, वटि=बांटना) पु० भाग, हिस्सा, अंश, २ बटखरा, ३ गाय भैंस का दूहते समय का खाना।

प्रा० बांटना—(सं० वण्टन, वटि=हिस्सा करना) क्रि० स० हिस्सा करना, भाग देना।

प्रा० बांडा—(सं० वण्ड, वडि=काटना) गु० पूंछकटा, बेपूंछ, २ बेशरम, निर्लज्ज।

प्रा० बांदी—स्त्री० लौंडी, दासी, चेरी।

प्रा० बांध—(सं० बन्ध) पु० पानीकी रोक, तालाबकी पाल, सेतुबन्ध, आड़।

प्रा० बांधना—(सं० बन्धन) क्रि० स० जकड़ना, कसना, २ बंध करना, ३ पानी रोकना, ४ ठहराना, थामना, ५ लपेटना, ६ गांठ देना, गिरह देना।

प्रा० बांधनू—(सं० बन्ध्=बांधना) पु० एक तरह का रंगना जिसमें कपड़े को बहुत सी जगह बांध कर के रंग चढ़ाते हैं कि हर एक रंग जुदा २ दिखलाई दे।

प्रा० बांस—(सं० वंश) पु० एक पेड़ जिसकी लकड़ी पोली होती है।

प्रा० बांसपरचढ़ना--बोल० कलंकी होना, बदनाम होना।

प्रा० बांसफोड़—पु० [illegible] दे वस्तु आदि बनाने वाला।

प्रा० बांसरी } बांसली } बांसुरी } (सं० [illegible]) स्त्री० मुरली, बंसी, [illegible]

फ़ा०बाजू } पु० एक गहना जिसको
बाजूबंद } बाजू पर बांधते हैं, भुजबन्ध ।

प्रा०बाट--(सं०वाट,वट्=घेरना)पु० मार्ग, रस्ता, राह, डगर, पंथ ।

प्रा० बाटकाटना--बोल०रस्ता चलना, सफ़र तै करना ।

प्रा०बाटिका-(सं०वाटिका,वट्=घेरना) स्त्री० बाड़ी, फुलवाड़ी बगीचा, उपवन ।

प्रा० बाड़--(सं० वाट, वट्=घेरना) स्त्री० छूरी या तलवारकी धार, २ अहाता या घेरा जो कांटोंसे बनाते हैं, ३ सिपाहियों की कृतार ।

प्रा० बाड़उड़ाना--बोल० एकसाथ बंदूकचलाना,बन्दुकोंको फ़ैरकरना ।

प्रा० बाड़झाड़ना--बोल० बहुत आदमियोंका एकसाथ बंदूक दागना ।

प्रा० बाड़दिलवाना--बोल०सानपरचढ़ाना,तीखाकरना,तीक्ष्णकरना ।

सं०वाड़व--पु०नरक,समुद्रकी अग्नि, ब्रिज का नाम, घोड़ोंका समूह, ब्राह्मण ।

राले तब कोई चीज नहीं बचसक्ती ।

प्रा० बाड़ा--(वट्=घेरना) पु० अहाता, घेरा ।

प्रा० बाड़ी--(सं० वाटी, वट्=घेरना) स्त्री० छोटा बाग, बगीचा, उपवन, बगीचे में घर, बंगालीघरको बाड़ी कहते हैं ।

प्रा० बाढ़--(बाढ़ना) स्त्री० बढ़ती, अधिकाई, नदी के पानी का उभड़ना या अपनी हद्द से अधिक बढ़ आना ।

प्रा० बाढ़ना--(सं०वृध्=बढ़ना)क्रि० अ० बढ़ना, उमंडना ।

प्रा०बाण } (सं० वाण, वण्=शब्द
बान } करना)पु०तीर, २ मूंज की बनी हुई रस्सी, विरोचन का पुत्र बाणासुर ।

सं० बाणलिंग--पु० बाणासुर ने नर्मदा नदी के तट पर शिवमूर्ति स्थापन की उसको कहते हैं ।

प्रा० बाणि } (सं० वाणि, वण्=
बाणी } शब्द करना) स्त्री० बोली, सरस्वती, उक्ति, वचन ।

प्रा० बांह (सं० बाहु) स्त्री० भुजा, बाजू, २ आस्तीन ।

प्रा० बांहटूटना--बोल० कोई सहायक न रहना ।

प्रा० बांहचढ़ाना-बोल० लड़ाई को तैयार होना ।

प्रा० बांहदेना--बोल० सहायता देना, मदद करना ।

प्रा० बांहपकड़ना--बोल० सहायता करना, पक्षकरना, आश्रयदेना ।

प्रा० बांहबल--बोल० सहायक, साथी, हिमायती ।

प्रा० बांहगहना--बोल० सहायता [करना ।

प्रा० बांहगहेकीलाज--गु० जिसको सहायता करे उसको छोड़ना बड़ी लाज की बात है ।

प्रा० बाई--स्त्री० महारानी, (मरहठों में) २ कंचनी ।

प्रा० बाई--(सं० वायु) स्त्री० हवा, बादी, वात रोग ।

प्रा० बाई पचना--कहावत—शेखी उतारना, दबजाना, उदास होना ।

प्रा० बाईमेंभड़कना--बोल० बड़ बड़ाना, बकना ।

प्रा० बाईस (सं० द्वाविंशति) गु० बीस और दो ।

प्रा० बाखर } पु० आंगन, चौक,
बाखन } अंगनाई, कई एक घर जो एक हाते में होते हैं ।

प्रा० बाग } स्त्री० बागडोर, लगाम,
बागुरु } फंदा, जाल ।

प्रा० बागमोड़ना--बोल० शीतलाका ढल जाना ।

प्रा० बागछूटना--बोल० बेवशहोना, वश में न रहना ।

प्रा० बागडोर--स्त्री० वह रस्सी जिस को लगाम में लगा कर साईस घोड़े को ले चलता है ।

प्रा० बागा--(सं० वस्त्र) पु० जोड़ा, पहनने के बहुत अच्छे कपड़े, खिलअत ।

प्रा० बाघ } (सं० व्याघ्र) पु० नाहर, शेर ।
बाघा }

प्रा० बाघम्बर--(सं० व्याघ्राम्बर) पु० बाघकी खाल, शेर की पोस्त ।

प्रा० बाछना--(सं० वाञ्छ=चाहना) क्रि० स० छांटना, चुनना ।

प्रा० बाजन } (सं० वाद्य) पु०
बाजा } बजाने का यंत्र, जो चीज बजाने के लिये बनाई जाय,--बाजा गाजा, बोल० बहुत से बाजाओं की आवाज ।

प्रा० बाजना--(सं० वाद्य, बहुत शब्द करना) क्रि० अ० आवाज निकलना, २ प्रसिद्ध होना ।

प्रा० बाजरा--पु० एक प्रकार का नाज जो मारवाड़ में बहुत पैदा होता है ।

फ़ा०बाज़ू } पु० एक गहना जिसको
बाज़ूबंद } बाजू पर बांधते हैं, भुजबन्ध।

प्रा०बाट--(सं०वाट,वट्=घेरना)पु० मार्ग, रस्ता, राह, डगर, पंथ।

प्रा० बाटकाटना--बोल०रस्ता चलना, सफ़र तै करना।

प्रा०बाटिका-(सं०वाटिका,वट्=घेरना) स्त्री० बाड़ी, फुलवाड़ी बगीचा, उपवन।

प्रा० बाड़--(सं० वाट, वट्=घेरना) स्त्री० छूरी या तलवारकी धार, २ अहाता या घेरा जो कांटोंसे बनाते हैं, ३ सिपाहियों की क़तार।

प्रा० बाड़उड़ाना--बोल० एकसाथ बंदूक़चलाना,बन्दूक़ोंको फेरकरना।

प्रा० बाड़झाड़ना--बोल० बहुत आदमियोंका एकसाथ बंदूक़ दागना।

प्रा० बाड़दिलवाना--बोल०सानपरचढ़ाना,तीखाकरना,तीक्ष्णकरना।

सं०बाड़व--पु०नरक,समुद्रकी अग्नि, [illegible] का [illegible], घोड़ोंका समूह, ब्राह्मण।

प्रा०बाड़बांधना--बोल० कांटों से [illegible] या किसी [illegible] घेरना।

प्रा० बाड़रखना--बोल० [illegible] [illegible]।

प्रा० बाड़ही [illegible] तो [illegible]--[illegible] [illegible]

राले तब कोई चीज़ नहीं बचसक्ती।

प्रा० बाड़ा--(वट्=घेरना) पु० अहाता, घेरा।

प्रा० बाड़ी--(सं० वाटी, वट्=घेरना) स्त्री० छोटा बाग़, बगीचा, उपवन, बग़ीचे में घर, बंगालीघरको बाड़ी कहते हैं।

प्रा० बाढ़--(बाढ़ना) स्त्री० बढ़ती, अधिकाई, नदी के पानी का उभड़ना या अपनी हद्द से अधिक बढ़ आना।

प्रा० बाढ़ना--(सं०वृध्=बढ़ना)क्रि० अ० बढ़ना, उमंडना।

प्रा०बाण } (सं० वाण, वण्=शब्द
बान } करना)पु०तीर, २ मूंज की बनी हुई रस्सी, विरोचन का पुत्र बाणासुर।

सं० बाणलिंग--पु० बाणासुर ने नर्मदा नदी के तट पर शिवमूर्ति स्थापन की उसको कहते हैं।

प्रा० बाणि } (सं० वाणि, वण्=
बाणी } शब्द करना) स्त्री० बोली, सरस्वती, शक्ति, वचन।

सं०बाणिज्य---(पण्=लेनदेन करना) पु० व्योपार, वनिज, सौदागरी, लेन देन।

प्रा० बात--(सं० [illegible], [illegible]) स्त्री० बोल चाल, कथा, समाचार, [illegible], २ [illegible], ३ [illegible], [illegible], ४ [illegible], [illegible], ५ [illegible],

६ वृत्तान्त,दशा, अवस्था, ७ हठ।

प्रा० बातउठाना--बोल० बातसहना, बातचलाना।

प्रा० बातकरना--बोल० बोलना, बातचीत करना, कहना।

प्रा० बातकाटना--बोल० दूसरेकी बात को रद्द करना।

प्रा०बातकाबतक्कड़करना--बोल० छोटीसी बातपर बहुतसा बोलना।

प्रा० बातकीबात, बातकीबातमें -- बोल० दमभर में, पलभर में, थोड़ी सी देरमें, झटपट, तुरंत।

प्रा० बातगढ़ना--बोल० मतलब की बात करना, झूठी बात बनाना, किसी बातको इसतरह से बनाकर कहना कि दूसरे के मन में जमजाय।

प्रा० बातचबाना--बोल०बोलते २ चुप रहना, ठहर ठहर करबोलना।

प्रा० बातचलाना--बोल० कुछ कहना, शुरूअकरना। [गुफ्तगू।

प्रा० बातचीत--बोल० बोलचाल,

प्रा० बातटालना--बोल० असल बातका उत्तर न देना, और और बातें करना।

प्रा० बातपरबातयादआती है--कहावत० जिसतरहकी चर्चा हो उसी तरह की बातें आप से आप याद आजाती हैं।

प्रा० बातपीजाना--बोल० कड़वे वचनसहना, बातको बर्दाश्तकरना।

प्रा० बातफेंकना--बोल० ठट्ठा करना, २ बे सोचे विचारे कोई बात बोलना।

प्रा० बातफेरना--बोल० कहते २ बात का मतलब बदल देना।

प्रा० बातबढ़ाना--बोल० वाद करना, तकरार करना २ किसी बात को खूबफैलाकर कहना या लिखना।

प्रा० बातबनाना--बोल० मालब गांठना, झूठ कहना।

प्रा० बातबांधना--बोल० झूठी तर्क करना।

प्रा० बातबिगाड़ना--बोल० मतलब खोना, बिगाड़ करना।

प्रा० बातमानना--बोल० कहना मानना। [न लेना।

प्रा० बातरखना--बोल० कहनामा

प्रा० बातरहना--बोल० इज्जत और आबरू रहना, प्रतिष्ठा रहना।

प्रा० बातलगाना--बोल चुगली खाना, निंदा करना।

प्रा० बातेंकरना--बोल० इधरउधर की चर्चा करना।

प्रा० बातें बनाना--बोल० छल करना, खुशामद करना।

प्रा० बातेंमारना--बोल० शेखीकरना, डींग मारना।

प्रा० बातेंसुनना--बोल० कड़ुवी बात सहना।

प्रा० बातें सुनाना--बोल० कडुवी बात कहना । [चुहल में टालना ।

प्रा० बातोंमेंउड़ाना--बोल० हँसी

प्रा०बातोंमेंधरलेना-बोल०क़ायल करना, चुप कर देना ।

प्रा०बातोंमेंलपेटना--बोल०बातों मे धोखा देना ।

प्रा० बात--(सं० वात, वा जाना) स्त्री० हवा,पवन, वायु, २ वायु रोग।

प्रा० बाती--(सं० वर्त्ति,वृत्=होना) स्त्री० बत्ती ।

प्रा० बातूनिया } (बात) गु०बहुत बातूनी } बातें बनानेवाला, गप्पी, वाचाल, बाचाट ।

प्रा० बादर } (सं० वारिद) पु० बादल } बद्दल, मेघ ।

सं० बादरायण--(बदर+अयन) पु० वेदव्यास, व्यास महाराज पाराशर्य, पराशरके पुत्र । [लप्पा ।

प्रा०बादला--पु० सोने रूपेका तार,

प्रा० बादि--क्रि० वि० वृथा ।

सं० बाधक--(बाध=रोकना)गु०पु० रोकनेवाला, प्रति बन्धक, हानिकारी करनेवाला ।

२ दुःखित, पीड़ित ।

प्रा०बान--(सं०वर्ण रंग वा गुण)स्त्री० स्वभाव, प्रकृति, चाल,टेव,आदत ।

प्रा० बानगी--स्त्री० नमूना, अटकल, क़यास ।

प्रा० बानबे-- (सं० द्वानवति) गु० नव्वे और दो ।

प्रा० बाना-- (सं० वर्ण) पु० वेष, लिबास २ ढंग, चाल, ३ एकतरह का हथियार ४ वह सूत जिससे कपड़ेकी चौड़ाई बुनी जाती है, भर्नी ।

प्रा० बाना--क्रि० स० खोलना, पसारना ।

प्रा० बानी-स्त्री० राख, २ वह सूत जिससे कपड़ा बुना जाता है ।

फ़ा०बानी--(बिना) गु० बिना डालने वाला, जड़ डालनेवाला, नींव जमानेवाला,बुनियाद डालनेवाला ।

सं० बान्धव--(बंधु) पु० भाई, रिश्तेदार, सम्बन्धी, नातेदार, मित्र ।

प्रा० बाप--(सं० वप, वप=बोना) पु० पिता, जनक, बाबा, दादा ।

प्रा० बापकरना--बोल० डरके मारे [illegible]

[illegible]

प्रा० बापमारेकाबैर--बोल० बड़ा भारी वैर ।

प्रा० बापनमारीपीदड़ीबेटातीरन्दाज़-- यह कहावत वहां बोलते हैं जब किसीके बाप दादे कुछ योग्य नहीं हों और वह कुछ बढ़ कर किया चाहे या दिखाया चाहे ।

प्रा०बापड़ा } गु० बेबश, बेचारा,
बापुरा } अनाथ, दीन, कंगाल ।

प्रा०बाफ़-(सं०बाष्प)स्त्री०धूवां, भाफ।

प्रा० बाबा--पु० बाप, २ बड़ा आदमी ३ बेटा, लड़का, प्यारा ।

प्रा० बाबाजी--पु० योगी संन्यासियों की पदवी ।

प्रा० बाबू--पु० लड़का, बालक, २ छोटा राजा या राजकुमार, ३ बड़ा आदमी, रईस,—हिंदुओं में और विशेष करके बंगालियों में बड़े आदमी को बाबू कहते हैं जैसे दिल्ली आगरे की ओर बड़े आदमी को लाला साहिब या मुन्शी साहिब बोलते हैं, और अंगरेज़ अंगरेज़ी लिखनेवाले किरानियों को बाबू कहते हैं, ४ योगी और फ़ुकरों की बोल चालमें हरएक मर्द को बाबू और स्त्रीको माई कहते हैं।

प्रा० बाम--(सं० ब्राह्मी) स्त्री० एक मछली का नाम, २ (सं० वाम, वा जाना) गु० बायां, उलटा, ३ सुन्दर, ४ पु० महादेव, ५ कामदेव ५ (सं० वामा) स्त्री० ।

प्रा० बामअंग--(सं० वामाङ्ग) पु० बाईं ओर, बाईं तरफ़।

प्रा० बामा--(सं०वामा, वाम=बायां अर्थात् पुरुष के बाईं ओर बैठने वाली) स्त्री० लुगाई, स्त्री ।

प्रा० बाम्हण } (सं० ब्राह्मण) पु०
बाम्हन } ब्राह्मण, २ हिंदुओं मे ज़मीदारो की एक जाति जो विहार और बनारस की ओर बहुत होते हैं।

प्रा० बायब-- (सं० वायव्य) स्त्री० वायु कोण, पश्चिम उत्तर का कोना, २ हटना, अलग होना ।

प्रा० बायां— (सं० वाम) गु० बाईं ओर, २ उलटा ।

प्रा० बायांपांवपूजना--बोल० पाखंडी मनुष्य के छल और पाखंड को मान लेना ।

प्रा० बार—(सं०वार, वृ=ढकना) स्त्री० समय, अवकाश, अवसर, देरी, देर, विलम्ब, २ पु० अठवाड़े का दिन, ३ दरवाज़ा, ४ (सं०बाल) पु० लड़का, ५केश, ६ (सं०बाला) स्त्री० सोलह बरस की लड़की ।

प्रा० बारलगाना--बो०देरीकरना।

प्रा० बारण-- (सं० वारण, वृ=ढकना, बचाना) पु० रोकना, अटकाना, २ हाथी ।

प्रा० वारम्बार--(सं० वारंवार, वार) क्रि० वि० बार बार, फिर फिर, घड़ी घड़ी, मुकर्रर, लगातार। [और दो।

प्रा० वारह् (सं० द्वादश) गु० दश

प्रा० वारहवाँट-- १ मोह, २ दैन्य, ३ भय, ४ हास, ५ हानि, ६ ग्लानि, ७ क्षुधा, ८ तृषा, ९ मृत्यु, १० क्षोभ, ११ मृषा, १२ अपकीर्ति।

प्रा० वारहवाटहोना—बोल० उजड़ना, बिगड़ना, सत्यानाश होना, २ दुखपाना, सताया जाना।

प्रा० वारहदरी—(वारह+दर=दरवाजा)स्त्री० वह मकानजिसकेवारह दरवाजे हों, बंगला, हवादार मकान।

प्रा० वाराखरी--(सं०द्वादशाक्षरी) स्त्री० व्यंजनों में वारह स्वरों का मिलान।

प्रा० वारासिंगा } (सं० द्वादश
वारहसिंगा } =वारह, शृंग=सींग)पु० एक जानवर जो हरिण सा होता है जिसके सींग लंबे होते हैं और सींग में सींग होताहै।

प्रा० वाराह—(सं० वराह) पु० समय, पारी, नौवत, उसरी।

प्रा० वारीदार—पु० वह नौकर जिसकी नौकरी का समय नियत हो।

प्रा० वारी—स्त्री० झरोखा, दरीची, छोटा दरवाजा, २ हिंदुओं में एक जाति के लोग जो मशाल और वत्ती बनाते हैं, ३ एकगहनेका नाम जो नाक और कानमें पहनाजाताहै।

प्रा० वारुणी—(सं० वारुणी,वरुण अर्थात् जिस का देवता वरुण है) स्त्री० मदिरा, मद्य, शराब, २ पश्चिम दिशा, ३ शतभिषा नक्षत्र, ४ दूब।

प्रा० वारूत--स्त्री० दारू, शोरा, गंधक और कोयला आदि से बनी हुई चीज जो आग पड़ते ही भक से उड़ जाती है।

प्रा० वारो--(सं० वाल)पु०बालक।

सं० वाल-(वल्=जीना,दान,रहना) पु० लड़का, वालक, २ केश, ३ गु० मूर्ख, नासमझ,अज्ञान,बेदांत।

प्रा०वाला—(सं०वाला)स्त्री० सोलह वरस की लड़की, २ पु० सात आठ वरस का लड़का लड़की,—३ अनाज की फुनगी, ४ वह निशान जो कान और [illegible]

प्रा० बालबांधीकौड़ीमारना या उड़ाना--बोल० बेचूकके निशाना मारना, ठीक निशाना लगाना।

प्रा० बालबालवैरीहोना--बोल० हरएकअपने और परायेसे वैरहोना।

प्रा० बालबालगजमोतीपिरोना--बोल० खूब सँवारना।

प्रा० बालबच्चे--बोल० लड़के, बाले।

प्रा० बालबाँकानहोना } बोल०
बालबंकानहोना } किसी तरह का बिगाड़ न होना।

सं० बालक--(बाल) पु० लड़का, छोटी उमर का बच्चा, मूर्ख, घोड़ा, हाथी, अंगूठी, कंकण, वलय, हाहूबेर।

प्रा० बालका--(सं० बालक) पु० योगी या संन्यासियो का चेरा।

प्रा० बालना } क्रि० स० जलाना,
बारना } सुलगाना।

प्रा० बालभोग--(सं० बाल=बालक, भोग्य=खाने की चीज) पु० वह नैवेद्य जो देवताको सवेरे चढ़ातेहैं।

प्रा० बालम--(सं० वल्लभ) पु० प्रियतम, प्यारा, पति। [का खीरा।

प्रा० बालमखीरा--स्त्री० एक तरह

प्रा० बालरांड--(सं० बालरण्डा) स्त्री० वह स्त्री जो बालकपन में विधवा होजाय।

सं० बाललीला--(बाल+लीला) स्त्री० लड़कपनका खेल, बालचरित्र।

सं० बालवत्स--पु० कबूतर, २ गु० बालकों के ऊपर दयालु।

सं० बालसुख--(बाल+सुख) पु० बालकपने का सुख।

सं० बाला--(बाल) स्त्री० लड़की सोलह बरस से कम उमर की लड़की।

प्रा० बाला--(सं० बाल) पु० छोटी उमर का लड़का, २ एकतरह का सोने का गहना जो कानों में पहना जाता है और गोल होताहै।

प्रा० बालाचांद--(सं० बालचन्द्र) पु० द्वितीया का चन्द्र, दुइज का चांद, नया चांद।

प्रा० बालापन--भा० पु० बालकपन, लड़काई, लड़कपन।

प्रा० बालाभोला--बोल० वह लड़का जो कुछ छल कपट न जानताहो।

सं० बालि } (सं० बल=जोर) पु०
बाली } एकबंदर का नामजो इन्द्र का बेटा और सुग्रीव का भाई और अंगद का बाप था जिसको श्रीरामचन्द्र ने मारा।

सं० बालिकुमार--(बालि+कुमार) पु० अंगद।

सं० बालिश--(बाड्+इन) गु० अज्ञ, मूर्ख, बालक, पु० उपबर्हण, तकिया, मसनद, उपधान।

प्रा० बाली (सं० बालिका) स्त्री०

छोटी उमर की लड़की, २ एक गहने का नाम जो नाक और कान में पहना जाता है।

सं० बालु—(बल्+उ)पु० सुगन्धि-तद्रव्य, रेत। [रेत, रेती।

प्रा० बालू—(सं० बालुका) पु०

प्रा० बालूशाही—स्त्री० एक तरह की मिठाई।

सं० बाल्य—भा० पु० लड़कपन।

प्रा० बाव—(सं० वायु) स्त्री० हवा, पवन, बयार। [करना।

प्रा० बावबांधना--बोल० खुशामद

प्रा०बाववहना—बोल०हवाचलना।

प्रा० बावकेघोड़ेपरसवारहोना-बोल० घमंडी होना, शेखी करना।

प्रा० बावसुरना—बोल० पादना।

प्रा० बावगोला—पु० पेटकी पीड़ा, बावगूल।

प्रा० बावझक } पु० गप्पी, झ-
बावभक } क्की, बड़बड़िया, भूत, प्रेत।

प्रा० बावड़ी } स्त्री० बड़ा कुआं,
बावली } जिसके उतरनेकेलि

प्रा० बावरा } (सं० वातूल, वात
बावला } =हवा) पु० सिड़ी, पागल, दीवाना।

प्रा० बावगूल--(सं० वातशूल) पु० पेटकी पीड़ा, बावगोला।

सं० बाष्प--पु० नेत्रजल, आंसू, उष्मा, भाफ, लोहा।

प्रा० बास--(सं० वास, वास=सुगं-धितहोना)स्त्री० महक, सुगंध, गन्ध।

प्रा०बास } (सं० वास, वस=र-
बासा } हना) पु० रहने की जगह, डेरा, बसेरा।

प्रा० बासन--पु० बरतन, भांड़ा, पात्र।

प्रा०बासना--(सं० वासना, वास= सुगंधित होना) स्त्री० इच्छा, चाह, २ सुगंधि, क्रि० स० महकाना, सु-गंधित करना।

प्रा० बासी--(सं० वासी, वस=रह-ना) पु० बसनेवाला, निवासी, रहनेवाला।

प्रा०बासी--(सं० वास=सुगन्ध, मह-क आना) पु० रातका बना हुआ खाना, सौना, २ बदबूदार, जिस में [illegible]

प्रा० बासुदेव--(सं० वासुदेव, वसुदेव का) पु० वसुदेव का बेटा, श्रीकृष्ण ।

प्रा० बाहन--(सं० वाहन, वह=ले जाना) पु० सवारी, असवारी, घोड़ा, गाड़ी आदि जिस पर आदमी चढ़ते हैं ।

प्रा० बाहर } (सं० बाहिर) क्रि०
बाहिर } वि० बाहिर की ओर ।

प्रा० बाहर के खा जायें, घरके गीतगायें--कहावत—अपने सब धरे रहें और दूसरों को लाभ हो ।

सं० बाहु--(बाध्=रोकना) पु० बांह, भुजा, भुजदंड ।

सं० बाहुज--(बाहु+जन्=पैदाहोना) पु० बाहू राजन्याविति श्रुतिः क्षत्रिय, बाहु से पैदा हुये ।

सं० बाहुयुद्ध--(बाहु+युद्ध) पु० मल्लयुद्ध, कुश्ती ।

सं० बाहुल्यता--भा० स्त्री० आधिक्यता, अधिकाई, कसरत ।

प्रा० बिंजन--(सं० व्यञ्जन, वि=बहुत, खूब, अञ्ज्=साफ करना) पु० तरकारी भाजी ।

प्रा० बिंब } (सं० बिम्ब) पु० एकतरह
बिंबा } का लाल फल, कुन्दरू।

प्रा० बिकट--(सं० विकट, वि=बहुत, कट=जाना या घेरना) गु० डरावना, भयानक, भयंकर, कठिन ।

प्रा० बिकना--(सं० वि, क्री=लेन देन करना) क्रि० अ० खपना, उठना, बिक्री होना, बेची जाना ।

प्रा० बिकरार } (सं० विकराल)
बिकराल } गु० डरावना, भयानक, २ भोंड़ा, कुरूप ।

प्रा० बिकल--(सं० विकल, वि=नहीं, कला=अंश) गु० बेचैन, व्याकुल, अचैन, दुःखी, घबराया हुआ ।

प्रा० बिकसना--(सं० विकसन, वि, कस्=जाना) क्रि० अ० खिलना, फूलना, २ प्रसन्न होना, मुसकुराना ।

प्रा० बिकसित--(सं० विकसित, वि, कस्=जाना) गु० खिला हुआ, फूला हुआ, २ प्रफुल्ल, हर्षित, प्रसन्न, खुश ।

प्रा० बिकाऊ--(बिकाना) गु० बेचने के योग्य, जो चीज़ बेचने को हो ।

प्रा० बिकाना--(बिकना) क्रि० स० उठाना, खपाना, बेचना ।

प्रा० बिकाश--(सं० विकाश, वि, काश्=चमकना) पु० प्रकाश, चमक, गु० चमकता हुआ, प्रसन्न, आनन्दित, हर्षित ।

प्रा० बिक्री--(सं० विक्रय, वि=बहुत, क्री=मोल लेना) स्त्री० बिकाव, खपाव, उठाव, बिकना ।

प्रा० बिखरना--(सं० वि, कृ=छीटना) क्रि० अ० फैलना, छीटना,

तित्तर बित्तर होना, तीन तेरह होना, २ कोपना, क्रोध करना, गुस्सा करना ।

० बिगड़ना-(सं० विग्रह) क्रि० अ० खराब होना, नुक़सान होना, नहीं बनना, २ फूटरहना, अनबन रहना, फिर जाना, बाग़ी होना ।

० बिगाड़-(बिगाड़ना) पु० विघन, नुक़सान, उपाध, २ वैर, अनबन, तोड़फोड़ ।

ा० बिगाड़ना-(बिगड़ना) क्रि० स० खराब करना, नुक़सानकरना· २ मित्रों में वैर करवा देना ।

० बिघन-(सं० विघ्न, वि=पहले, हन्=मारना) पु० रोक, रुकाव, बाधा, बिगाड़ ।

०बिचार-(सं० विचार, वि, चर=चलना) पु० सोच, ध्यान, ख्याल, समझ, राय, न्याय ।

ा० बिचारना-(सं० विचरण, वि, चर्=चलना) क्रि० स० सोचना, ध्यानकरना, ख्याल करना, समझना, बूझना, निर्णयकरना ।

ा० बिचाली-स्त्री० पुआल ।

प्रा० बिचित्र-(सं० विचित्र, वि=बहुत, चित्र=भांति भांति का) गु० भांति भांति का, नाना प्रकार का, २ अद्भुत, अनोखा, अजीब ।

प्रा० बिच्छू-(सं० वृश्चिक) [illegible] जहरीला जानवर जो [illegible] डंक [illegible] है ।

प्रा० बिछड़ना, बिछरना, बिछुड़ना, बिछुरना-(सं० वि=बहुत, छुट्=काटना) क्रि० अ० अलग होना, जुदा होना, अलाहदा होना ।

प्रा० बिछना-(सं० विस्तर, वि, स्तृ=फैलना) क्रि० अ० फैलना, पसरना ।

प्रा० बिछाना-(बिछना) क्रि० स० फैलना, पसारना, २ पु० बिछौना, बिस्तरा ।

प्रा० बिछुवा-पु० एक तरह का हथियार जो टेढ़ा होता है, २ एक गहना जो पांव में पहनते हैं ।

प्रा० बिछोह, बिछोहा-(वि=बिन, छोर=प्यार या बिछुरना से) पु० विरह, वियोग, जुदाई ।

प्रा० बिछौना-(बिछना) पु० बिस्तरा, सेज ।

प्रा० बिजना-(सं० व्यजन, वि, अज्=चलना) पु० पंखा ।

प्रा० बिजली-(सं० विद्युत) स्त्री० दामिनी, चपला, वह आग जो बादलों में चमकती है ।

प्रा० बिज्जु-(सं० विद्युत्) स्त्री० बिजली, दामिनी ।

प्रा० बिजोग-(सं० वियोग) पु० जुदाई, बिछुड़ना ।

प्रा० बिडारना-क्रि० स० भगाना, बिचलाना ।

प्रा० बिताना-(बीतना) क्रि०स० गँवाना, काटना ।

प्रा० बितीत-(सं० व्यतीत) गु० बीताहुआ, गुज़रा हुआ, जो पूरा होचुका, मुनक़ज़ी ।

प्रा० बित्त-(सं० वित्त, विद्=छोड़ना, देना) पु० धन, दौलत, द्रव्य, २ गात, बूता ।

प्रा० बिथकना-क्रि० अ० चकित होना, अचंभेमेंहोना, हैरत में आना ।

प्रा० बिथरना } बिथुरना } (सं० विस्तरण) क्रि०अ०बिखरना, छिटकना, फैलना ।

प्रा० बिथा-(सं० व्यथा) स्त्री० पीड़ा, दुःख, दर्द ।

प्रा० बिदा } बिदाई } सं० विदू फाड़ना वा जुदा होना और अरबी में विदअ=रुखसत होना· स्त्री० छुट्टी, जाने की आज्ञा, रुखसत, रुखसती ।

प्रा० बिदाकरना-बोल० रुखसत करना ।

प्रा० बिदारना-(सं० विदारण, वि =बहुत, द=फाड़ना) क्रि० स० फाड़ना ।

प्रा० बिदेश-(सं० विदेश, वि=दूसरा, देश=मुल्क) पु० दूसरा देश, दूसरा मुल्क, परदेश ।

प्रा० बिदेशी-(विदेश) गु० परदेशी, गैर मुल्क का ।

प्रा० बिधना-(सं० विधि) पु० विधाता, ब्रह्मा, दैव ।

प्रा० बिधवा- (सं० विधवा, वि=बिन, धव=पति) स्त्री० राँड़, बेवा, जिस का पति मरगया हो ।

प्रा० बिन } बिना } (सं० विना, वि+ना) क्रि० वि० छोड़के, छुट, रहित, बिदून, सिवाय ।

प्रा० बिनआयेतरना-बोल० बे मौत मरना ।

प्रा० बिन रोये लड़का दूध नहीं पाता—कहावत० बिन मांगे कुछ नहीं मिलसकता ।

प्रा० बिनभयप्रीतनहीं--कहावत० बिनडराये कोई नहीं मानता ।

प्रा० बिनमांगे दूध बराबर मांगे सो पानी-- कहावत० बिनमांगे मिले वही अच्छा है

प्रा० बिनवना } बिनौना } (सं०विनमन, वि=बहुत, नम्=नमस्कारकरना) क्रि० स० नमस्कार करना, पूजना ।

प्रा० बिनसना-(सं०वि, नश=नाश होना) क्रि० अ० नाश होना, बिगड़ना ।

प्रा० बिनास--(सं० विनाश) पु० नाश, संहार, बिध्वंस ।

प्रा० बिनौला--पु० रूई का बीज।

प्रा० बिन्ती } (सं० विनीति, वा
बिनती } विनति, वा विनय।
वि=बहुत, नि=पाना वा चलाना वा नम्=नमस्कारकरना) स्त्री० विनय, नम्रता, प्रार्थना, अर्ज़।

प्रा० बिन्द } (सं० बिन्दु) स्त्री०
बिन्दी } शून्य, सिफर, बिन्दु।

प्रा० बिपत } (सं० विपत्ति) स्त्री०
बिपता } आपदा, दुःख, विपदा, तकलीफ।

प्रा० बिया--(सं० बीज)पु० बीज, [गुठली।

प्रा० बियालू--पु० रातका खाना।

प्रा० बिरद--पु० यश, नाम, ख्याति, २ हथियार।

प्रा० सं०बिरदावलि--(बिरद=यश, सं० अवलि=पांत)स्त्री०बहुत यश, बहुत ख्याति, बड़ी नामवरी।

प्रा० बिरमना--(सं० वि, रम्= रहना, चैन करना) क्रि० अ० ठहरना, रहना, विलमना।

प्रा० बिरहा--(सं० विरह, विरह) पु० स्त्री० वह स्त्री जो अपने पति से जुदी रहे।

प्रा० बिराजना--(सं० वि=बहुत, राज्=शोभना) क्रि० अ० शोभना, २ सुख भोग करना, चैनसे रहना।

प्रा० बिराना--पु० पराया, २ दूसरे का।

प्रा० बिरियां--(सं० वेला) स्त्री० समय, वक्त, काल, वेला।

प्रा० बिरोग--(सं० वियोग) पु० विरह, वियोग, जुदाई।

प्रा० बिरोगन--(सं० वियोगिनी) पु० स्त्री० वह स्त्री जो विरह से व्याकुल हो।

प्रा० बिल } (सं० बिल, बिल्=ढ-
बिला } कना या छिपना)पु० चूहे आदि जानवरों के रहने का छेद, छिद्र। [लड़के का रोना।

प्रा० बिलकना-क्रि० अ० सिसकना,

प्रा० बिलखना--(सं० विलक्षण, वि=बुरा, लक्षण=चिह्न) क्रि० अ० उदास होना, क्रि० स० देखना, उदास होकर देखना।

प्रा० बिलगाना--(बिलगना)क्रि० स० जुदा २ करना, अलगाना,क्रि० अ० फटना , फाटना ।

प्रा०बिलबिलाना-- क्रि० अ० व्याकुल होना, कूकना, तड़फना ।

प्रा० बिलम-(सं० विलम्ब) स्त्री० देरी, देर,ढील ।

प्रा० बिलमना, बिलंबना (सं० विलम्ब) क्रि० अ० देरी करना, ठहर जाना, रुकजाना ।

प्रा० बिलल्ला-पु० भोंदू, मूर्ख, बेढंगा, वेशऊर ।

प्रा० बिलसना--(सं० वि, लस्= खेलना) क्रि०अ०प्रसन्न होना,सुख भोगना, भोगना, आनन्दितहोना ।

प्रा० बिलस्त--(सं० वितस्ति) पु० बित्ता, बिलांद, बालिश्त, अंगूठे से कन अंगुली तक का नाप ।

प्रा० बिलाई-(सं० विडाली) स्त्री० बिल्ली, २ एक लोहे की चीज़ जिस पर कद्दू छीलते हैं, ३ किवाड़ बन्दकरने की लकड़ी ।

प्रा० बिलाना-(सं० विलय, वि= बहुत, ली=मिलना, पर वि उपसर्ग के साथ आने से इस धातुका अर्थ नाश होना होता है) क्रि० अ० मिट जाना, नाश होना ।

प्रा० बिलापना, बिलपना (सं० विलाप, वि=बुरी तरहसे लप्=बोलना अर्थात् रोना) क्रि० अ० बिलकना, रोना, विलाप करना, दुःख करना ।

प्रा०बिलार, बिलाव (सं०विडाल)पु०बिल्ला, मार्जार, गुर्बह।

प्रा० बिलावल-स्त्री० एक रागिणी का नाम ।

प्रा०बिलोना, बिलोवना (सं० विलोडन, वि, लुड्=मथना) क्रि० स० मथना, महना ।

प्रा० बिल्ली-(सं० विडाली) स्त्री० एक जानवर का नाम ।

प्रा० बिल्लीभीलड़तीहैतोमुँहपर पंजाधरलेतीहै-- कहावत० जो लड़ना चाहिये तो पहले अपना बचाव सोचना चाहिये ।

प्रा० बिल्लीकेभागोंछीकाटूटा- कहा० अयोग्य मनुष्य को संयोग से बड़ा काम मिला ।

प्रा० बिसन--(सं० व्यसन) पु० दोष, अवगुण, बुराई, बुरा काम, प्रेम, शौक़, रग़बत ।

प्रा० बिसरना-(सं० विस्मरण, वि= नहीं, स्मृ=याद रखना) क्रि० अ० भूल जाना ।

प्रा० बिसात-स्त्री० पूंजी ।

प्रा० बिसाती--पु० छोटीमोटी चीज़ें बेचनेवाला ।

प्रा० बिसाना, बिसाहना क्रि० स० मोल लेना, खरीदना, ...

प्रा० विसारना--(विसरना) क्रि० स० भुलाना, विसरना।

प्रा० विसूरना-क्रि० अ० धीरे २ रोना सिसकना।

प्रा० विसैला-(विष) गु० जहरीला।

प्रा० विस्तारना--(विस्तार) क्रि० स० फैलाना, वसीअ करना।

प्रा० विस्वा--(वीस) पु० वीघे का वीसवां भाग।

प्रा० विहरना--(सं० विहरण) क्रि० अ० विहार करना, खुशी करना, हुलसना, सैर करना, ऐश इशरत करना। [उगाहनी।

प्रा० विहरी--स्त्री० चन्दा, पागड़ी,

प्रा० विहरना--(सं० विदारण) क्रि० अ० फटना, छाती फटना, छाती दरकना।

प्रा० विहंसना-(सं० विहसन) क्रि० अ० हंसना, मुसकुराना।

प्रा० विहान-पु० भोर, तड़का, प्रातःकाल, प्रभात, भिनसार।

प्रा० विहाना--(सं० वि, हा= छोड़ना) क्रि० स० छोड़ना, त्यागना।

प्रा० बींधना--(सं० विद्ध, या वेधन, विध धातु=वेधना) क्रि० स० छेदना, बेधना।

प्रा० बीचपड़ना--बोल० अन्तरपड़ना फूट पड़ना।

प्रा० बीचबिचावकरना--बोल० दो आदमियों में मेल कराना।

प्रा० बीचमेंपड़ना--बोल० दो आदमियों में मेल कराने के लिये मध्यस्थ होना।

प्रा० बीचोबीच--बोल० ठीकबीच में, मध्य में।

प्रा० बीछा-पु०
बीछी-स्त्री
बिच्छी-स्त्री० } (सं० वृश्चिक) बिच्छू।

प्रा० बीजक--पु० माल की फहरिस्त, चलान चिट्ठी, २ टिकट जो माल की गठरी पर लगाया जाता है।

प्रा० बीजना--(सं० व्यजन) पु० तालवृन्तक, पंखा। [का गू।

प्रा० बीट(सं-विष्ठा) स्त्री० जानवरों

प्रा० बीड़ा
बीरा } (सं० वीटिका, वि, इट=जाना) पु० पान की खीली, चूना, कत्था, और सुपारी आदि लगाया हुआ पान का वह दोना जिस में तलवार वा [illegible]

कठिन काम के लिये सवाल कर-ना,—हिंदुस्तान में रीत है कि जब किसी सरदार को कठिन काम आ पड़ता है तो वह अपने नौकर चाकरों को इकट्ठा करके उस काम को कहता है फिर एक पान का बीड़ा रकाबी में रख कर सब के साम्हने फेरा जाता है जो उसको उठा के चबाले वह काम उसके जिम्मे हो जाता है।

प्रा० बीण } बीन } (सं० वीणा) स्त्री० वीणा, तन्त्री, एक बाजे का नाम जिसके दोनों ओर तूंबा और डंडी पर बहुतसी खूंटियां होती हैं जिसपर तार चढ़े रहते हैं।

प्रा० बीतना—(सं० व्यतीत) क्रि० अ० व्यतीत होना, हो चुकना, चला जाना, गुजरना, पूरा होना, कटना।

प्रा० बीबी--स्त्री० स्त्री, वहू, मेम।

सं० बीभत्स-स्म० पु० जुगुप्सित, निन्दित, घृणित पु० नवरस में एकरस।

प्रा० बीमा-स्त्री० जोखिम, हुंडा, भाड़ा।

प्रा० बीर--पु० भाई, भैया, २ कान में पहनने का एक गहना, ३ (सं० वीर) बहादुर, शूर वीर, ४ स्त्री० बहन।

प्रा० बीरबहूटी-स्त्री० एक प्रकार का लाल कीड़ा जो सावन में पैदा होता है, इन्द्रवधू।

प्रा० बीरा--पु० भाई, भैया।

प्रा० बीरी--(सं० वीटिका) स्त्री० पान की खीली। [दहाई।

सं० बीस--(सं० विंशति) गु० दो

प्रा० बीसी--स्त्री० अनाज नापने का परिमाण, २(सं० विंशति) बीस, कोड़ी।

प्रा० बुंदा--(सं० विन्दु) पु० विन्दी, शून्य, सिफर, बिंदु। [राजपूत।

प्रा० बुंदेला--पु० बुन्देल खण्ड का

प्रा० बुकनी- स्त्री० चूर्ण, बूरा, चूर।

सं० बुक्क--पु० हृदय का मांस, कलेजा, क्लेश, छिलका, वर्णन, देना० गु० दाता, वक्ता।

सं० बुक्कन--(बुक्क्+अन, बुक्क=कहना, भूंकना) पु० कुक्कुर शब्द, कुत्ता का भूंकना।

प्रा० बुक्का--पु० मुट्ठी भर, चुटकी।

सं० बुक्कार—पु० पृष्ठ मांस, पीठ का मांस, हृदय, कलेजा, सिंहनाद।

प्रा० बुझना--क्रि० अ० ठंढा होना, बुतना, चिराग गुल होना, आग ठंढी होना।

प्रा० बुझाना--क्रि० स० ठंढा करना, बुताना, चिराग गुल करना, आग ठंढी करना।

सं० बुड--(बुड=त्याग, आच्छादन) पु० संवरण, आवरण, आच्छादन,

ढापना गु० ढापने वाला ।

प्रा०बुडाना–क्रि०स०डुबाना,बोरना

प्रा०बुड्ढा– (सं० वृद्ध) गु० बूढ़ा ।

प्रा० बुढ़भस– गु० वह बूढ़ा जो जवानों की चाल चले ।

प्रा० बुढ़नसलगना--बोल० बुढ़ापे में जवानी की बातें करना ।

प्रा० बुढ़वा– (सं० वृद्ध) गु० बूढ़ा ।

प्रा० बुढ़ापा-(बूढ़ा) भा० पु० बूढ़ापन, वृद्धावस्था ।

प्रा० बुढ़ापाबिगड़ना– बोल० बुढ़ापे में दुःख होना ।

प्रा० बुढ़िया– स्त्री० बूढ़ी स्त्री ।

प्रा० बुत्ता– पु० ठगाई, छल, कपट, धोखा । [ना, धोखादेना ।

प्रा० बुत्तादेना–बोल० ठगना, छल-

सं० बुद्ध–(बुध्=जानना) पु० विष्णु का नवां अवतार,बौधमतका स्थापन करने वाला, २ बुद्धिमान, पंडित, ३ज्ञानितत्व र्म्म० विदित, जाना हुआ, जागता हुआ ।

सं० बुद्धि–(बुध्=जानना) स्त्री०

सं०बुद्धिहीन–(बुद्धि+हीन) गु० बेसमझ, मूर्ख, बेअक़्ल ।

सं० बुद्धीन्द्रिय–(बुद्धि + इन्द्रिय) पु० स्त्री० आंख, नाक, कान,जीभ, त्वचा अर्थात् शरीर परका चमड़ा ।

सं०बुध–(बुध्=जानना) पु० बृहस्पति की स्त्री के चांद से उत्पन्न हुआ बेटा, चौथा ग्रह, २ बुधवार, ३ पंडित, बुद्धिमान् ।

सं०बुधजन–(बुध+जन)पु० पंडित लोग, बुद्धिमान् ।

सं०बुधवार–(बुध+वार=दिन)पु० बुध का दिन, चौथावार ।

सं० बुधान–क० पु० गुरु, पंडित, अध्यापक, प्रज्ञा का पारपद ।

सं०बुधित–र्म्म०पु०ज्ञात,जानाहुआ ।

प्रा०बुन्ना–क्रि० स० बिन्ना ।

सं० बुभुक्षा–(भुज्=खाना) भा०स्त्री० क्षुधा, भूख, खाने की चाह ।

प्रा०बुभुक्षित-(बुभुक्षा)क०पु०भूखा ।

प्रा० बुरा–गु० खराब, दुष्ट, नीच, निकम्मा ।

प्रा० बुराकरना–बोल० बिगाड़ना...

निकम्मा भी हो तौभी किसी समय काम आताहै।

प्रा० बुरामानना--बोल० अप्रसन्न होना, नाराज़होना, नाखुश होना।

प्रा० बुरालगना--बोल० भला न मालूम होना।

प्रा० बुराई-भा०स्त्री० खराबी,दुष्टता।

प्रा० बुराईपरकमरबांधना-बोल० बुराई करने पर तैयार होना।

प्रा० बुलबुला--(सं बुद्‌बुद) पु० बुद्‌बुदा। [का गहना।

प्रा० बुलाक-स्त्री० नाक मे पहनने

प्रा० बुहारना--क्रि० स० झाड़ना।

प्रा० बुहारी--स्त्री० झाडू।

प्रा० बूआ--स्त्री० बहिन, २ फूफू।

प्रा० बूंद--(सं० बिन्दु) स्त्री० छींटा, टपका, टपकन, क़तरा।

प्रा० बूंदा--(सं० बिन्दु) पु० बड़ी बूंद, टपका। [ड़ीरबूंदे गिरना।

प्रा० बूंदाबांदी--बोल० मेह की थो-

प्रा० बूकना--क्रि० स० चूर चूर करना, बुकनी करना।

प्रा० बूचा-पु० कनकटा।

प्रा० बूझ--(सं० बोध, वा बुद्धि) स्त्री० समझ, बुद्धि, ज्ञान।

प्रा० बूझना--(सं० बुध्=जानना) क्रि०स०समझना,जानना,सोचना।

प्रा० बूटा--पु० छोटा पेड़, झाड़, २ कपड़ापर काढ़ाहुआ फूलआदि।

प्रा०बूढ़ा--(सं०वृद्ध) गु०वृद्ध,बुड्ढा, पुराना, बहुत उमर का, प्राचीन।

प्रा०बूढ़ाघाग, बूढ़ाखरांट } बोल०बहुतबूढ़ा।

प्रा० बूता--पु० बल, ज़ोर, शक्ति, सामर्थ्य। [चोकड़।

प्रा० बूर--स्त्री० भूसी, तुष, छिलका,

प्रा०बूरकेलड्डू---एक मिठाई जो गेहूं की चोकड़ से बनती है और उसके ऊपर शक्कर का गिलाफ चढ़ाते हैं और वह बहुत सस्ती बिकती है इस लिये काम देखने में बहुत अच्छा पर सचमुच निकम्मा हो उसको बोल चाल में बूर का लड्डू कहते हैं और जो लोग बूर का लड्डू बेचते हैं वे इस तरह पुकारते हैं कि "बूर का लड्डू जो खावे सो भी पछतावे, न खावे सो भी पछतावे"---और कोई कोई कहते हैं कि यह मिठाई कोई नहीं बेचता, न खाता है, न बनाता है पर इसी कहावत में बोलते हैं।

प्रा०बूरा--पु० साफ़ की हुई चीनी, २लकड़ी और हाथीदांत का चूरा।

प्रा० बे--अव्य०, अरे।

प्रा० बेंग--(सं० व्यङ्ग, वि=बुरा, अङ्ग=शरीर) पु० मेंढक।

प्रा०बेंट--पु० दस्ता, वह लकड़ी जो

कुल्हाड़ी आदि में लगाते हैं।

प्रा० बेंडा—पु० तिर्छा, टेढ़ा, बांका।

प्रा० बेग—(सं० वेग, विज्=कांपना) पु० उतावली, फुर्ती, शीघ्रता, प्रवाह, क्रि० वि० जल्दी से, ज़ोर से।

प्रा० बेगार—पु० सेंत, मुफ़्त, किसी मजदूर को जबरदस्तीपकड़ना और उसको मजदूरी नहीं देना या बहुत थोड़ी मजदूरी देना।

प्रा० बेगारपकड़ना—बोल० जबरदस्ती से किसी मजदूर को अथवा गाड़ीको बिनमजदूरी दिये या थोड़ी मजदूरी दिये पकड़ना।

प्रा० बेटा—पु० पुत्र, लड़का।

प्रा० बेड़ा—पु० घरनई, चौघड़ा।

प्रा० बेड़ापारकरनायालगाना—बोल० दुःख से छुटाना, दुःख दूर करना, २ उतारना, पारकरना।

प्रा० बेड़ापारहोना—बोल० दुःख से छुटना, २ सब चाह पूरी होना।

प्रा० बेण } (सं० वेणु, वेण=बाजा
बेणु } बजाना) स्त्री० बांसुरी मुरली, २ बांस।

विरुद्ध, माता=मा) स्त्री० सौतेली मा।

प्रा० बेर—(सं० बदरि) पु० एकप्रकार का फल।

प्रा० बेल—(सं० बिल्व) पु० एकफल का नाम, २ (सं० वल्लि) स्त्री० बेली, लता, ३ वंश, औलाद, सन्तान।

प्रा० बेला—पु० एक पेंड़ का नाम जिसका पुष्प फल सुगंधित होता है, २ कटोरा, ३ एक बाजेका नाम जो सारङ्गी कैसा होता है।

प्रा० बेलि } (सं० वल्लि, वल्=घेरना)
बेली } स्त्री० बेल, लता।

प्रा० बेवहरा } (सं० व्यवहारिक)
बेवहरिया } पु० लेन देन करने वाला, रुपये उधार देने वाला, महाजन।

प्रा० बेवहार—(सं० व्यवहार) पु० लेन देन, लेवा देई, २ रीति रस्म, ३ चाल चलन।

प्रा० बेसन—पु० चने का आटा।

प्रा० बेसर—स्त्री० एक गहना जोनाक में पहना जाता है।

प्रा० बैंगनी } (बैंगन) गु० कुछसि
बैंजनी } याही लिये लालरंग।

प्रा० बैंदी—(सं० विन्दु) स्त्री० टिकली, बिंदी, टीकी, २ एक गहना जिसको स्त्रियां ललाटपरपहनती हैं ।

प्रा० बैजंतीमाल— (सं० वैजयन्ती माला, वैजयन्ती=जीतनेवाली, माला =फूलोंका हार) स्त्री० पचरंगीमाला, विष्णुभगवान्के पहिननेकीमाला, जो नीलम, मोती, माणिक, पुखराज, और हीरा, इन पांचरत्नोंसे बनती है ।

प्रा० बैठक } (सं० बैठना) स्त्री०
बैठका } बैठने की जगह ।

प्रा० बैठना—(सं० उपविष्ट) क्रि० अ० आसन मारना, बैठ जाना, २ जमना, ३ दीवार आदि का गिर पड़ना, ४ मातमपुरसी को जाना ५ बेकाम होना ।

प्रा० बैठजाना—बोल० गिरपड़ना।

प्रा० बैठरहना—बोल० छोड़ देना, आश तोड़ना, सुस्त होना ।

प्रा० बैठाना } क्रि० स० बैठने
बैठारना } की आज्ञा देना,
बैठालना } बिठलाना, जमाना।

प्रा० बैद—(सं० वैद्य) पु० रोगियों का इलाजकरनेवाला, मिश्र, हकीम, चिकित्सक, दवादारू करनेवाला ।

प्रा० बैदक—(सं० वैद्यक) पु० इलाज करने की विद्या, चिकित्सा करने की विद्या, दवादारू करने की विद्या, इल्मे हिकमत, डाक्टरी ।

प्रा० बैन—(सं० वाणी, वा वचन) पु० बोल, वचन, कलाम ।

प्रा० बैना—पु० एक गहनाजो ललाट पर पहना जाताहै, २ बखरा, भाजी।

प्रा० बैपार—(सं० व्यापार) पु० वणिज, लेनदेन, सौदागरी ।

प्रा० बैपारी—पु० सौदागर, तज्जार, महाजन ।

प्रा० बैर—(सं० वैर) पु० दुश्मनी, शत्रुता, द्वेष, विरोध ।

प्रा० बैरपड़ना—बोल० दुश्मनी हो जाना, विरोध पड़ना ।

प्रा० बैरलेना—बोल० बदलालेना।

प्रा० बैरख—(फा० बैरक) पु० झंडा, ध्वजा, पताका ।

प्रा० बैरण—(सं० वैरिणी) स्त्री० दुश्मन स्त्री, विरोधनी ।

प्रा० बैरागण—(सं० वैरागिणी) स्त्री० योगन वैरागी स्त्री ।

प्रा० बैल—(सं० वलीवर्द) पु० एक चौपाये का नाम, वर्द, २ मूर्ख, अज्ञानी, भोंदू ।

प्रा० बैस—(सं० वयस, वय्=जाना वा अज्=जाना) स्त्री० उमर, अवस्था, किशोर बैस=जवानी की शुरूम अवस्था ।

प्रा० बैस—(सं० वैश्य) पु० तीसरा वर्ण, बनियां, २ राजपूतों की एक

जाति जिसके नाम से अवध के पास का बहुत सा देश बैसवाड़ा कहलाता है।

प्रा० बैसंदर--(सं० वैश्वानर, विश्व=संसार वा सब, नर=मनुष्य, अर्थात् जिसको सब मनुष्य चाहते हैं) पु० आग, आगी, अग्निदेवता।

प्रा० बैसाख--(सं० वैशाख) पु० एक महीने का नाम, दूसरा महीना।

प्रा० बोझ--पु० भार, बोझा।

प्रा० बोझसिरपरहोना-- बोल० कोई कठिन काम का आ जाना।

प्रा० बोझल--पु० भारी, वजनी।

प्रा० बोटी--स्त्री० मांस का छोटा टुकड़ा।

प्रा० बोटीबोटीफड़कना--बोल० बहुत चालाक होना, फरफंदी होना।

प्रा० बोदा--पु० निर्बल, नामर्द।

सं० बोध--(बुध्=जानना) पु० ज्ञान, समझ, बुद्धि।

सं० बोधक--(बुध=जानना) त्रि० पु० शिक्षक, समझानेवाला, जताने वाला, नासिह, नसीहत करनेवाला।

सं० बोधन--(बुध=जानना) भा० पु० जनाना, ज्ञान, बोध, शिक्षण।

सं० बोधनी, बोधिनी } (बुध=जानना) स्त्री० [illegible] वाली, बोध कराने वाली, नसीहत करने वाली।

सं० बोधनीय, बोधित, बोधितव्य, बोध्य } त्रि० बोधनार्ह, समझाया गया, समझाने योग्य, नसीहत किया गया।

प्रा० बोना--(सं० वपन, वप्=बोना) क्रि० स० बीज डालना।

प्रा० बोरना--क्रि० स० डुबाना, बुड़ाना।

प्रा० बोरा--पु० एक तरह का बड़ा [थैला, गोन।

प्रा० बोल--(सं० बोलना) पु० वचन, बात, २ गीत का शब्द।

प्रा० बोलचाल-- भा० पु० गुफ्तगू, बात चीत।

प्रा० बोलना--(सं० वद्, वा वच्=कहना) क्रि० अ० बात करना, कहना, २ बजना, आवाज़ निकलना।

प्रा० बोलबाला--(बोल=वचन और पारसी शब्द बाला का अर्थ ऊपर) पु० आशीर्वाद, बोलबाला होना, बोल० भला होना, फलना, बढ़ना।

प्रा० बोली--(बोलना) स्त्री० वाणी, भाषा, बात।

प्रा० बोलीठोलीसुनाना--बोल० ताना देना।

प्रा० बोहित--स्त्री० नाव, जहाज।

प्रा० बौछार, बौछाड़ } स्त्री० मेह की बूंदें [illegible] हवा के [illegible]

तिरछी पड़ती हैं।

सं० बौद्ध--(बुद्ध) पु० बौद्धमती, जैनी विष्णु का अवतार, जगन्नाथ जी।

प्रा० बौरहा, बौराहा, बौरा--(सं० वातूल) पु० दीवाना, पागल, सिड़ी, बावला।

प्रा० बौराना--क्रि० अ० पागल होना।

प्रा० ब्याना--(सं० वयन, वी=जनना) क्रि० स० बच्चा देना, जनना।

प्रा० ब्यापना--(सं० व्यापन, वि=बहुत, आप्=फैलना) क्रि० अ० सब जगह फैलना, फैल जाना।

प्रा० ब्यालू--पु० रात का खाना।

प्रा० ब्याह--(सं० विवाह) पु० शादी, विवाह, गंठबंधन, पाणिग्रहण।

प्रा० ब्याहरचाना--बोल० शादी की रीतें रसमें करना।

प्रा० ब्याहलाना--बोल० दुलहिन को घर में लाना।

प्रा० ब्याहता--(सं० विवाहिता) स्त्री० गु० ब्याही हुई स्त्री।

प्रा० ब्याहा--(सं० विवाहित) गु० ब्याहा हुआ।

प्रा० ब्योंत--पु० कपड़े का तराश, [छांट, २ डौल।

प्रा० ब्योंतना--क्रि० स० कपड़े को तराशना, या कतरना।

प्रा० ब्योपार--(सं० व्यापार) पु० बणिज, लेनदेन, सौदागरी।

प्रा० ब्योपारी--पु० महाजन, सौदागर।

प्रा० ब्योमासुर--(सं० व्योमासुर, व्योम=आकाश, असुर=राक्षस) पु० एक राक्षस का नाम जो कंस का मंत्री था।

प्रा० ब्योरा, ब्यौरा--पु० समाचार, वृत्तान्त, बात, २ पता, निशान, ३ भेद।

प्रा० ब्योहार, ब्यौहार--(सं० व्यवहार) पु० काम, धंधा, व्योपार, लेनदेन, २ रीत भांत, चलन।

प्रा० ब्रज--(सं० व्रज व्रज्=जाना) पु० मथुरा का जिला जिसमें गोकुल, वृन्दावन आदि हैं और १६८ मील के घेरे में है-व्रजमंडल=व्रज का जिला।

प्रा० ब्रजबाला--(सं० व्रजबाला) स्त्री० व्रजकी स्त्री, गोपी।

प्रा० ब्रजभाषा--(सं० व्रजभाषा) स्त्री० व्रजकी बोली।

प्रा० ब्रह्म, व्रह्म--(बृह्=बढ़ना) पु० परमेश्वर, सर्वशक्तिमान्, सर्वव्यापी, परमात्मा, आदि पुरुष, २ वेद, ३ तत्त्व, ४ तप, ५ ब्रह्म, ६ ब्राह्मण।

प्रा० ब्रह्मअस्त्र--(सं० ब्रह्मास्त्र) पु० ब्रह्मा का दिया हुआ अस्त्र, ब्रह्मबाण।

सं० ब्रह्मघातक, ब्रह्मघ्न--(ब्रह्म=ब्राह्मण, हन्=मारना) ब० पु० ब्राह्मण को मारनेवाला, ब्रह्म हत्यारा।

सं० ब्रह्मचर्य—(ब्रह्म=वेद, चर=चलना, अर्थात् वेद पढ़ने के लिये फिरना) पु० ब्रह्मचारी का धर्म ।

सं० ब्रह्मचारी—(ब्रह्म=वेद, चर=चलना, जो वेद पढ़ने के लिये फिरता है) पु० पहला आश्रमी, वेद पढ़नेवाला, विद्यार्थी,—मनुष्य की अवस्था के चार भाग किये हैं उनमें से पहली २५ वर्ष तक अवस्था को ब्रह्मचर्य कहते हैं और उस अवस्था में वह केवल वेद शास्त्र पढ़ता है और ब्याह नहीं करता ।

सं० ब्रह्मज्ञ—(ब्रह्म=परमेश्वर, ज्ञ=जानना) पु० परमेश्वर को जाननेवाला, ऋषि, मुनि ।

सं० ब्रह्मज्ञान—(ब्रह्म+ज्ञान) पु०

सं० ब्रह्मयोग—(ब्रह्म+योग) पु० परमेश्वर की प्रार्थना, भक्ति, उपासना आदि ।

सं० ब्रह्मरात्रि—(ब्रह्म=ब्रह्मा, रात्रि=रात) स्त्री० ब्रह्मा की रात जिसमें १००० युग अथवा मनुष्यों के २१६०००००० बरस बीत जाते हैं, छःमहीनेकीरात जिसमें श्रीकृष्ण ने रास किया था ।

सं० ब्रह्मर्षि—(ब्रह्म+ऋषि) पु० परमेश्वर का ध्यान करनेवाला और वेद जाननेवाला ऋषि जैसे वशिष्ठ आदि ।

सं० ब्रह्मर्षिदेश—पु० आर्यावर्त, कुरुक्षेत्र, मत्स्यदेश, पांचालदेश, मथुरादेश, शूरसेनदेश ।

सं० ब्रह्मस्वरूप--(ब्रह्म=परमेश्वर, स्वरूप=रूप) गु० परमेश्वरके बराबर, परमेश्वर का रूप।

सं० ब्रह्महा--(ब्रह्म+हन्) क० पु० ब्रह्मघाती, ब्राह्मण का मार डालने वाला।

सं०ब्रह्महत्या-(ब्रह्म=ब्राह्मण,हत्या=मारना) स्त्री० ब्राह्मणको मारना।

सं०ब्रह्मा-(बृह्=बढ़ना) पु० सृष्टिको पैदा करनेवाला देवता, विधाता, विधमा, ब्रह्मा के चार मुंह हैं जिन से चार वेद निकले हैं और ब्रह्मा का वाहन हंस है।

सं० ब्रह्माक्षर—(ब्रह्म+अक्षर)पु० तीनों देवताओं का मन्त्र, ओम्।

सं० ब्रह्माणी—(ब्रह्मा) स्त्री०ब्रह्मा की स्त्री।

सं० ब्रह्माण्ड—(ब्रह्म+अण्ड)पु० जगत्,सृष्टि,भूमण्डल,सबसृष्टि,रचादि. शिर का बिचला भाग, कासय सिर।

सं० ब्रह्मादिक—(ब्रह्म+आदिक) पु० ब्रह्मा और सब देवता।

सं०ब्रह्मावर्त—(ब्रह्म+आवर्त)पु० स्थान का नाम जो बिठूर के नाम से प्रसिद्ध है।

सं०ब्रह्मासन—(ब्रह्म+आसन)पु० परमेश्वर का ध्यान करते समय का आसन, ऋषिमुनियों का ध्यान करते समय बैठने का ढंग।

सं० ब्राह्मण--(ब्रह्म अर्थात् जो ब्रह्म का अथवा वेद का जानने वाला) पु० पहले वर्णके मनुष्य, विप्र, द्विज।

सं०ब्राह्मणी--स्त्री० ब्राह्मणकी स्त्री।

सं० ब्राह्म्य--(सं० ब्रह्म) पु० ब्रह्म की पूजा, परमेश्वर की पूजा।

सं०ब्राह्ममुहूर्त-(ब्राह्म+मुहूर्त) पु० प्रभात, भोर, बिहान,प्रातःकाल, पोह, सूर्य निकलनेकेपहलेका समय।

अं० ब्रिटिश--स्त्री० अंगरेजी।

—:o:—

(भ)

सं० भ--(भा=चमकना) पु० नक्षत्र, ग्रह, राशि, शुक्राचार्य्य, दीप्ति, भरद्वाज, भ्रमर।

प्रा० भंभोरना--क्रि० स० काट खाना, फाड़खाना (जैसे कुत्ता)।

प्रा० भंवर--(सं० भ्रमर, भ्रम्=घूमना) पु० भौंरा, २ चक्र, आवर्त्त।

प्रा० भंवरा--(सं० भ्रमर, भ्रम् घूमना) पु० एक प्रकारकी बड़ीमक्खी, भंवर, अलि, चंचरीक।

प्रा० भकसी--स्त्री० क़ैद करने के लिये एक बहुत छोटा और तंग और अंधेरा मकान।

प्रा० भकुवा--गु० मूर्ख, भोंदू, कुन्द, [निर्बुद्धि।

सं०भक्त--(भज्=सेवा करना) क० पु० भक्ति करनेवाला सेवक।

२ भात, ओदन।

सं० भक्तकार--क० पु० रसोई बनाने वाला, सूपकार, रसोईदार।

सं०भक्तवत्सल–(भक्त+वत्सल) पु० भक्तों पर दया करने वाला, परमेश्वर।

सं० भक्ति–(भज्=सेवाकरना, पूजा, आराधना, विश्वास, परमेश्वर में अथवा अपने राजा या मालिक में प्यार, नवधा भक्ति १ श्रवण २ कीर्तन ३ अर्चन ४ वन्दन ५ स्मरण ६ निवेदन ७ सख्य ८ दास्य ९ सेवन।

प्रा०भक्तिवन्त–(सं० भक्तिमत्) गु० जिसके मनमें भक्तिहो, भक्त, सेवक।

प्रा० भक्ष–(सं० भक्ष्य,भक्ष्=खाना) पु० खाना, गु० खाने योग्य।

सं० भक्षक–(भक्ष+णक) क० पु० खाने वाला, खाऊपेट्ट, खवैया।

सं० भक्षण (भक्ष्+अण) भा० पु० भोजन, आहार।

सं० भक्षणीय–(भक्ष+अनीय)

सं० भग–(भज्=सेवा करना) पु० योनि, स्त्रीचिह्न, २ सुभाग, ऐश्वर्य, ३ इच्छा, चाह, ४ शोभा, सुन्दरता, ५ सूर्य, ६ चांद।

प्रा०भगत-(सं०भक्त) क०पु०सेवक, भक्तिकरनेवाला, २नृतक, गानेवाला।

प्रा० भगतखेलना– बोल० स्वांग लाना, नकल बनाना।

प्रा० भगतन–(भगत) स्त्री० वेश्या, कंचनी, पतुरिया, नाचनेवाली।

सं० भगदत्त–पु० कामरूप देशाधिप, नाम राजा का जो महा भारतमें प्रसिद्ध था।

सं० भगवत, भगवन्त, भगवान (भग=ऐश्वर्य, वत्=वाला) पु० ईश्वर, परमेश्वर, गु० ऐश्वर्य आदि गुण युक्त।

सं० भगवती–स्त्री० चण्डी, देवी, ऐश्वर्यादि गुण युक्ता।

प्रा० भगवाँ–पु० गेरुवा कपड़ा, गेरू मिट्टी में रंगा हुआ कपड़ा।

सं०भगिनी–(भज्=सेवाकरना) स्त्री०

टूटा हुआ, फूटाहुआ, नष्ट, २हराया हुआ, जीता हुआ ।

सं० भग्नाश-(भग्न=टूटी, आश=आसा जिसकी गु० निराश, न उम्मैद।

सं० भग्नी-स्त्री० स्वसा, बहिन ।

सं० भङ्ग-(भंज्=तोड़ना) भा० पु० तोड़ना, खंडन, २लहर, तरंग, ३हार, पराजय, ४ छेद, ५डर, स्त्री० भांग, सबज़ी, एक प्रकारकी नशीली पत्ती।

प्रा० भंगन-स्त्री० मेहतरानी, पाखाना साफ़ करनेवाली ।

प्रा० भंगी—पु० मेहतर, पाखाना साफ करनेवाला, झाडूकश ।

सं० भंगुर-(भंज्=तोड़ना) गु० टेढ़ा, वांका, २ नाश होने वाला, नष्ट, पु० नदी की बंकाई ।

प्रा० भंगेरा-(भङ्ग) पु० बहुत भंग पीनेवाला ।

प्रा० भचकना-(सं० भयचकित) क्रि० अ० अचंभे में आना ।

सं० भजन-(भज्=सेवा करना) क्रि० स० माला फेरना, परमेश्वर का नाम रटना, जप ।

प्रा० भजना—(सं० भजन) क्रि० स० जपना, ध्यान, माला फेरना ।

प्रा०भजना } क्रि० अ० भगना, चला
भजिजाना } जाना, दौड़ जाना ।

सं० भज्यमान--म्मै० पु० सेव्यमान, पूजित, सेवा किया गया ।

सं०भञ्जक--(भंज्+अक, भंज्=तोड़ना) क० पु० तोड़नेवाला, खंडन करनेवाला ।

सं०भञ्जन-(भञ्ज्+अन)भञ्ज्=तोड़ना) भा० पु० तोड़न, फोड़न, खंडन, गु० तोड़नेवाला ।

सं०भञ्जनहार-(क० पु० तोड़नेवाला।

सं० भञ्जित--(भंज्+इत) म्मै० पु० खण्डित, टूटा हुआ ।

सं० भट--(भट्=पोषना) पु० वीर, योधा, लड़ाका, बहादुर, शूर, मल्ल ।

प्रा० भटकना--क्रि० अ० डांवा डोल फिरना, इधर उधर वृथा फिरना, भूलना, भ्रमना ।

प्रा०भटकाना--क्रि० स० भुलाना, भ्रमाना ।

सं०भटित्र-(भट्+इत्र) पु० शूल, पक मॉस, कबाब ।

प्रा० भटियारा } (भट्टी हारा)
भठियारा } पु० खाना पकाने वाला ।

सं० भट्ट--(भट्=पोषना) मरहटे ब्राह्मणों की एक पदवी, २ विद्यावान्, पण्डित, भाट ।

सं०भट्टार-- पु० पूज्य, पूज्य ।

सं० भट्टारक--(भट्ट+ऋ × अक ऋ=जाना) पु० देवता, तपस्वी, राजा, नर्त्त, विदूषक, और गु०

पापरहित, पुण्यवान ।

प्रा० भट्टी } (सं० भ्राष्ट्र, भ्रस्ज=भट्ठी } भूंजना) स्त्री० बड़ा चूल्हा, भाड़, २ पजावा । [नाव ।

प्रा० भड़—पु० एक तरह की बड़ी

प्रा० भड़क—स्त्री० चमक, दमक, झलक, दिखनौट, २ चौंक ।

प्रा० भड़कना-क्रि० अ० चमकना, चौंकना, २ आगका लूका उठना ।

प्रा०भड़भूंजा (सं० भ्राष्ट्र भर्जक, भ्राष्ट्र=भाड़, भर्जक=भूंजनेवाला, भ्रस्ज=भूंजना) पु० भाड़ झोंकने वाला, कांदू ।

प्रा० भणना-(सं० भण=बोलना,या कहना) क्रि०स० बोलना, पढ़ना ।

सं० भणित-(भण=बोलना)वि० पु० कहा हुआ, कहनाहुआ ।

प्रा० भंटा—(सं०भण्टाकी, भटि=बोपना) पु० बैंगन, वृन्ताक ।

सं० भण्ड—पु० १ मसखरा, भांड़ ।

सं० भण्डक-पु० मसखरी,खड़ेचा ।

रोकड़िया, खजांची ।

प्रा० भंडेला—(सं० भण्ड, भडि=ठट्ठा करना) पु० भांड ।

प्रा०भतार-(सं० भर्त्ता) पु० पति, स्वामी, भर्त्ता ।

प्रा०भतीजा(सं० भ्रातृज, भ्रातृ=भाई, जन्=पैदा-होना) पु० भाई का बेटा, भाईका लड़का ।

प्रा०भद्देशल } गु० भोंडा, कुडौल, भद्देशा } गवाँर,अनाड़ी ।

प्रा० भद्दा-गु० मूर्ख, अज्ञानी, भोंदू, गावदी,२बेरस,भ.टे कामकी चीज ।

सं० भद्र-(भदि=कल्याण होना)क० पु० नेक, दोस्त,भागवान , श्रेष्ठ, उत्तम, पु० कल्याण, मंगल, २ शिव, मुबारक ।

प्रा०भद्रहोना--बोल० शिरके बाल और डाढ़ी मूंछके बाल मुंडाना, (हिन्दुओं में एक रीतिहै कि जब कोई मरता है तब अथवा तीर्थ पर

श्रीकृष्ण की एक स्त्री का नाम, २ ज्योतिष में दूसरी, सातवीं, और बारहवीं तिथि, व्योमनदी, अशकुन।

प्रा० भनक--पु० आवाज़, शब्द।

प्रा० भबकी--स्त्री० धमकी, घुरकी, झिड़की, डाट।

प्रा० भभकना--क्रि० अ० आग लगना, २ आग का लूका उठना, ३ क्रोध में आना, जल मरना, ४ घोड़े का खूब वेग से दौड़ना।

प्रा० भभूका-पु० झल, ज्वाला, गु० खूब लाल (जैसे जलताहुआ कोयला) २ बहुत चमकदार, सुन्दर।

प्रा० भभूत, भभूती (सं० विभूति) स्त्री० राख, भस्म जिसको योगी संन्यासी अपने शरीर में मलते हैं। [खौफ त्रास।

सं० भय--(भी=डरना) पु० डर, शंका,

प्रा० भयखाना--बोल० डरना।

प्रा० भयकारक, भयंकर (भय=डर, कृ=करना) क० पु० डरावना, भयानक, भयजनक, खौफनाक।

प्रा० भयचक, भैचक (सं० भय चकित, भय=डर, चकित=अचंभित) गु० डराहुआ, घबराया हुआ, भयातुर, भयभीत।

सं० भयभीत--(भी=डरना) र्म० पु० डराहुआ, घबराया हुआ, भयातुर।

सं० भयवान् (भय=डर, वान्=वाला) गु० डरा हुआ, भयातुर।

प्रा० भया, भयौ (सं० भू=होना) क्रि० अ० हुआ।

सं० भयातुर-- (भय=डर, आतुर=घबराया हुआ) गु० डर से घबराया हुआ, भयचक।

सं० भयानक--(भी=डरना) गु० डरावना, भयंकर, नौरसों में से एक रसका नाम।

सं० भयापह--(भय + अप + हन् =नाशकरना) क० पु० भयनाशक, डर छुड़ानेवाला।

प्रा० भयावना-- (सं० भयानक) गु० डरावना, भयंकर, भयानक।

सं० भयावह--वह्=जाना) क० पु० भयंकर, भयानक, भयदायक, खौफनाक।

सं० भर (भृ=भरना) गु० पूरा, मुंहामुंह, सब, सारा, तमाम।

प्रा० उमरभर--बोल० सारी उमर।

सं० भरण--(भृ=पालना) भा० पु० भरना, पोषण, पालन, रक्षा, बचाव, तनख़्वाह।

सं० भरणी--(भृ=भरना) स्त्री० एक नक्षत्रका नाम, २ सांपकाभड़ाना।

सं० भरणीय--र्म० पु० पोषण, पालन योग्य।

सं० भरत (भृ=भरना, पालना) पु० राजा दशरथ का बेटा, २ एक राजा का नाम जिसके नामसे यह देश भरतखण्ड अथवा भारतवर्ष कहलाता है, दुष्यन्त का पुत्र ।

प्रा०भरत--पु०एक धातु जिसमें तांबा, जस्ता, और सीसा मिला होताहै ।

सं० भरताग्रज--(भरत + अग्रज) पु० श्रीरामचन्द्र जी ।

सं०भरतपुत्रक--पु० विदूषक, भांड़, बहुरूपिया, बाजीगर ।

सं० भरद्वाज--पु० एक मुनि का नाम जो बृहस्पति का बेटा था, २ एक पक्षी का नाम, खड़ैचा ।

प्रा० भरना--(सं० भरण) क्रि० स० पूरा करना, २ महसूल या ऋण चुका देना, ३ बन्दूक में गोली आदि डालना, ४ सहना, पानी मे दुःख भरना, बोल० दुःख किसी बात का संदेह होना ।

प्रा०भरमखुलना, पाखुलजाना-बोल०भेद खुल जाना, मर्य्यादा खुल जाना ।

प्रा०भरमखोलदेना--बोल० छिपी बातको प्रकट करदेना ।

प्रा० भरमगँवाना--बोल० अपने यश को बट्टा लगाना, आबरू खोना ।

प्रा० भरमनिकलजाना- बोल० भेद खुल जाना ।

प्रा० भरमाना--(सं० भ्रम=धोखा) क्रि० स० धोखा देना, भुलाना, फुसलाना, ललचाना । [मुंहा मुंह ।

प्रा० भरा--(भरना ,गु० पूरा, पूर्ण,

सं० भरित--(भृ=भरना) कर्म०पु० पूरित, पालित, पोषित, रक्षित ।

सं० भरु--क० पु० महादेव, विष्णु पिता, स्वामी ।

प्रा० भरोसा--(सं० भद्राशा, भद्र=अच्छी, आशा=आस) पु० आशा,

तिरस्कारक, निन्दक।

सं० भर्त्सन--भा० पु० कुत्सा, निन्दा।

सं० भर्तृहरि--पु० विक्रमादित्य राजा का भाई।

प्रा० भल--(सं० भद्र) गु० भला, उत्तम, श्रेष्ठ, अच्छा।

प्रा० भलमनसाई, भलमनसात, भलमनसी -- स्त्री० अच्छा आदमी होना, इन्सानियत।

प्रा० भल--पु० तरफ़, ओरसे, जैसे शिरके भल=शिर की तरफ।

प्रा० भला--(सं० भद्र) गु० अच्छा, उत्तम, श्रेष्ठ, २ चंगा।

प्रा० भलाकरभलाहो, सौदाकरनफ़ाहो--कहा० जैसा करेगा वैसा पावेगा। [आदमी।

प्रा० भलाआदमी--बोल० अच्छा आदमी।

प्रा० भलामानना--बोल० अहसान मानना, भलाई मानना।

भलाचंगा-बोल० निरोग, मोटा ताज़ा।

प्रा० भलेआये-बोल० बहुत देरमें आये।

प्रा० भलाई--भा० स्त्री० नेकी, नेकनामी, अच्छापन, क्षेम, कुशल।

प्रा० भलाईलेना--बोल० लोगो केसाथ अहसानकरना, नेकीकरना।

प्रा० भलाईरहना--बोल० सुयश रहना, नेक नाम रहना।

सं० भल्ल--पु० भाला, बरछा, रीछ।

सं० भल्लुक, भल्लूक -- पु० रीछ, भालू।

सं० भव--(भू=होना) पु० संसार। जगत्, २ जन्म, ३ कुशल, क्षेम, मंगल, ४ पाना, प्राप्ति, ५ शिव, महादेव। [आप का।

सं० भवदीय--गु० त्वदीय, तुम्हारा, आप का।

सं० भवन--(भू=होना) पु० घर, स्थान, बास, भाव, सत, चिन्तन।

सं० भवन्त--पु० आप का तुम्हारा, समय, काल, गु० पूज्य, श्रेष्ठ, उत्तम, प्रधान।

सं० भवन्ति--क्र० पु० समय वर्त्तमान काल, पूजा का समय, श्रेष्ठ, पूज्य।

सं० भवभूति--पु० नाटक, मालती माधव का वर्णन, नकुल, न्योला, स्त्री० संसार की विभूति, संसार का ऐश्वर्य।

सं० भवसमुद्र, भवसागर -- (भव=संसार, समुद्र वा सागर=समंदर) पु० संसार रूपी समुद्र, संसार सागर।

सं० भवादृश--(भव + आदृश) गु० आपके तुल्य, तुम्हारे समान, आप के योग्य।

सं० भवानी--(भव=शिव) स्त्री० शिव की स्त्री, शिवरानी, पार्वती, दुर्गा।

सं० भवार्णव--(भव=संसार, अर्णव

समुद्र) पु० संसार समुद्र, भवसागर।

सं० भवितव्य--(भू=होना) भा० स्त्री० होनेवाला, होनहार।

सं० भवितव्यता--(भवितव्य) भा० स्त्री० होनहार, दैभाग्य, भाग।

सं० भविता--क० पु० होनहार, होने वाला, गु० पूज्य, श्रेष्ठ।

सं० भविष्णु-क० पु० होने वाला।

सं० भविन--क० पु० वात करने वाला, मुतकल्लिम।

सं० भविष्य--(भू=होना) गु० होनहार, होनेवाला, जो होगा।

सं० भविष्यत--(भू=होना) पु०

ना) क० पु० बहुभख, रोग, बहुत भोजन करनेवाला। [जल गया।

सं० भस्मसात्- अव्य० सर्वभस्म, सब

सं० भा--(भा=चमकना) स्त्री० चमक, प्रकाश, शोभा, सुन्दरता, पु० सूर्य।

प्रा० भांग-(सं० भङ्गा, भञ्ज्=तोड़ना) स्त्री० बूटी, भंग, विजया, सब्जी।

प्रा० भांजना--(सं० भंजन, भंज्=तोड़ना) क्रि० स० तोड़ना, मिलाना, जैसे रस्सी का।

प्रा० भांजा } (सं० भगिनीज, भा
भान्जा } गिनेय) स्त्री० ब-

प्रा० भांतभांत--बोल० तरह तरह का, नाना प्रकार का, क़िस्म क़िस्म के।

प्रा० भांवर, पु० } (सं० भ्रम् =घूमना) ब्याह में दुलहिन को दूल्हे के चारों ओर सात बार घुमाना, या दुल्हा दुलहिन का वेदी की परिक्रमा देना, २ फेर, घुमाव।
भांवरी, स्त्री० }

प्रा० भाई--(सं० भ्राता) पु० एक बाप का बेटा, मां जाया भैया, २ संगी, साथी, मित्र।

प्रा० भाईचारा--पु० भयापा, भायप, नतैत, बिरादरी।

प्रा० भाईबंद--(भ्राता=बन्धु) पु० जाति के लोग, भयापा, बिरादरी।

प्रा० भाकसी--स्त्री० क़ैद करने के लिये एक बहुत छोटा तंग और अंधेरा मकान।

प्रा० भाखना } (सं० भाषण) क्रि० स० बोलना, कहना।
भाषना }

प्रा० भाखा--(सं० भाखा) स्त्री० बोली, भाषा, ज़बान।

सं० भाग--(भज्=हिस्सा करना) पु० हिस्सा, बांट, अंश, विभाग, खण्ड। [क़िस्मत, नसीब, भाग्य।

प्रा० भाग--(सं० भाग्य) पु० प्रारब्ध,

प्रा० भागखुलना } बोल० भाग्यवान होना, धनी होना।
भागजागना }

सं० भागग्राही--(ग्रह्=लेना) क० पु० भागी, हिस्सेदार।

प्रा० भागभरोसा- बोल० धीरज, ढाढ़स।

प्रा० भागना--क्रि० अ० पलाना, दौड़ना, २ अवज्ञा करना।

प्रा० भागचलना--बोल० निकल चलना, भागजाना, चला जाना।

प्रा० भागजाना-बोल० चला जाना, रफूचक्कर होजाना।

सं० भागधेय- (धा=लेना) पु० भाग्य, शुभकर्म्म० उपायन, राजा का कर, खिराज, दायाद, सपिण्ड बलि।

प्रा० भागनिकलना--पु० निकल चलना, भागचलना।

प्रा० भागाभाग- बोल० दौड़ादौड़, लगातार दौड़ना।

सं० भागवत-(सं० भगवत् अर्थात् जिस में परमेश्वर की कथा हो) पु० अठारह पुराणों में का एक पुराण जिसको वेदव्यास जी ने बनाया जिसमें बारह स्कन्ध हैं। और सब पुराणों से यह पुराण इन दिनों में बहुत पढ़ा पढ़ाया जाता है। इस में अठारह हज़ार श्लोक हैं। इसके दशवें स्कंध का उल्था हिन्दी भाषा में हुआ है जिसका नाम प्रेमसागर है।

सं० भागहार--(हृ=हरण) पु० भा-

जक, पु० भागहर्त्ता, मकसूम अलेह।

सं० भागी-(भाग=हिस्सा) पु० साझी, बंटैत, बटवैया।

प्रा० भागीरथी-(भागीरथ) स्त्री० गंगा—कहते हैं कि गंगा को राजा भगीरथ तपस्या करके स्वर्ग से पृथ्वी पर लाया इस लिये इसका नाम भागीरथी पड़ गया।

सं० भागुरि- पु० स्मृति व्याकरणादि का कर्त्ता धर्मशास्त्र और व्याकरण का आचार्य्य।

सं० भाग्य-(भज्=सेवा करना) पु० प्रारब्ध, भाग, क़िस्मत, नसीब।

सं० भाग्यवन्त, भाग्यवान्-(भाग्य=भाग, वत्=वाला) पु० भागवान, प्रारब्धी, क़िस्मतवाला, लक्ष्मीवान, धनवान।

सं० भाग्यशाली-क० पु० प्रारब्धी, क़िस्मतवर।

सं० भाग्यहीन-(भाग्य + हीन) पु० मन्दभागी, दरिद्री, बद क़िस्मत।

सं० भाग्यानुसार-(भाग्य + अनुसार) पु० प्रारब्धानुसार, मुक़द्दर व मुताबिक़।

सं० भाजक-(भाज=बांटना) पु० बांटने वाला, वह अंक जिससे भाग दिया जाय, मकसूम अलेह।

सं० भाजन-([illegible]) [illegible], [illegible], [illegible]।

सं० भाजना-[illegible]

सं० भाजित-(भाज्=बांटना) क्र्म० पु० बटा हुआ, जुदा किया हुआ।

सं० भाजी-(भाज्=बांटना) स्त्री० साग, तरकारी।

प्रा० भाजी-(सं० भाजित, भाज्=बांटना) स्त्री० खाने का हिस्सा, बखरा, बैना।

सं० भाज्य-(सं० भाज्=बांटना) क्र्म० पु० भाग देने योग्य पु० भाग हिस्सा, विभाग, २ गणित में वह संख्या जिस में भाग दिया जाता है, मक्सूम।

प्रा० भाट-पु० कवि, चारण, यश बखाननेवाला।

सं० भाटक (भट=वेतन) पु० भाड़ा, किराया क० भाड़ा देने वाला।

प्रा० भाठा-पु० समुन्दर के पानीका उतार या गिरना।

प्रा० भाड़-(सं० भ्राष्ट्र, भ्रस्ज=भूंजना) पु० एक तरहका बड़ा चूल्हा। जिस में चने आदि भूने जाते हैं।

प्रा० भाड़ा-पु० किराया।

प्रा० भाण्डीर- पु० एक बन का नाम जो वृन्दावन में है, २ बड़ का पेड़।

सं० भात-(भा=दीप्ति) क० पु० [illegible], [illegible], [illegible], २ [illegible]।

प्रा० भात (सं० भक्त, [illegible]

पु० पका हुआ चावल।

प्रा० भाथा-पु०तीर रखने का घर, तूण, तर्कस।

प्रा० भादौं- (सं० भाद्र, भद्र=भाद्रपदा नक्षत्र) पु० बरस का छठा महीना जिसमें पूरा चांद भाद्रपदा नक्षत्र के पास रहता है और इस महीने की पूर्णमासी को यह नक्षत्र होता है।

प्रा०भादौंकीभरन—बहुत भारी मेह जो भादौं में बरसता है।

प्रा० भाना-क्रि०स० अच्छालगना, मन चाहा होना, सोहाना, पसन्द होना।

सं० भानु- (भा=चमकना) पु०सूर्य, २ सूर्य की किरण।

सं० भानुज- (भानु+ज, जन्=पैदा होना) पु० अश्विनीकुमार, शनैश्चर, यमराज, राजा कर्ण।

सं० भानुजा-(भानु=सूर्य,जन्=पैदा होना) स्त्री० यमुना नदी, यमुना।

प्रा० भान्ना-(सं० भंजन) क्रि० स० तोड़ना, भांजना। [बाफ।

प्रा० भाफ़-(सं० बाष्प) स्त्री०धुवां,

प्रा०भाभी- (सं० भ्रातृवधू) स्त्री० भाई की स्त्री, भावज, भौजाई।

सं० भाम-पु० सूर्य, क्रोध, प्रकाश, बहनोई।

सं० भामा-स्त्री० क्रोधयुक्त स्त्री।

सं० भामी-क० पु० क्रोधी।

प्रा० भायप-भा०पु० भाईपन।

सं० भामिनी (भाम्=क्रोध करना) स्त्री० क्रोधकरनेवाली स्त्री, कर्कशा, लड़ाका स्त्री, लुगाईमात्र, स्त्रीमात्र।

सं० भार (भृ=भरना) पु० बोझ, बोझा, ६४ माषका पल, २००० पल का भार या ८००० तोले का।

सं० भारत (भरत एक राजा का नाम) पु० भरत राजा का वंश अथवा देश, भरतखंड, २ महाभारत ग्रन्थ जिसमें भरत वंशी राजा अर्थात् कौरव और पांडवों की लड़ाई का वर्णन है।

सं० भारती- (भृ=भरना) स्त्री०सरस्वती, वाणी।

सं० भारद्वाज-पु० मुनिभेद, द्रोणाचार्य्य, अगस्त्यमुनि, बृहस्पतिकापुत्र, खिड़िरिचपक्षी, हड्डी।

सं० भारवाह } (भार=बोझ, वह=लेजाना) क०
भारवाहक }
पु० बोझ लेजाने वाला पशु जैसे बैल,गधा आदि, मोटिया।[कहार।

सं० भारिक-(भृ=भरना) क० पु०

सं० भारी- (भार) गु० बोझल, गरू, २ बड़ा मोटा, ३ महँगा, बहुत मोल का।

प्रा० भारीभरकम- बोल०गंभीर, भला मानुष, सहनेवाला।

हुआ, चिन्ता करता हुआ।

सं० भावी (भू=होना) गु० होनहार, होने वाला, होतव्य, भविष्य, जो कुछ होने वाला हो, बदा हुआ।

सं० भावुक--(भू=होना) भा०पु० मंगल, कल्याण, प्रसन्नता, गु० प्रसन्न, नीरोग।

प्रा० भावें--(सं०भावे=होनेमें)लेखे विचार में, मन मे जानने में, पसन्द आवे।

सं० भाषण--(भाष्=कहना) पु० कहना, बोलना।

सं० भाषणीय-र्म०पु०कहनेयोग्य।

सं० भाषा--(भाष्=कहना) स्त्री० बोली, वाणी, जबान, भाखा।

सं० भाषान्तर--गु० अन्यभाषा, उल्था।

सं० भाषित--(भाष्=कहना) र्म० पु० कहा हुआ, कथित।

सं० भाषी--क० पु० वक्ता, वादी।

सं० भाष्य--(भाष्=कहना) पु० टीका, टिप्पणी, सूत्रार्थ, महाभाष्य नाम एक ग्रंथ जो संस्कृत व्याकरण की एक टीका है।

सं०भाष्यकार-क०पु० टीकाकारक, टीका बनानेवाला, शरहकरनेवाला।

सं० भासकार स्त्री० प्रकाश, दीप्ति, सम्पदा, प्रभा, शोभा, किरण, पु०, गृद्ध, मुर्गा, अहीर ग्राम।

सं० भासन्त-- गु० सुन्दराकार, रमणीक, मनोहर, प्रकाशवान्, पु० सूर्य, चन्द्रमा, कमल, मोर की चोटी, मुर्ग, गृद्ध, स्त्री० तारागण।

सं० भास्कर--(भास=प्रकार) भास् =चमकना) और कृ=करना) पु० सूर्य २ आग, ३ भास्कराचार्य जिसने सिद्धान्त शिरोमणि आदि ज्योतिष के ग्रन्थ बनाये हैं, ४ सोना, स्वर्ण, गु० चमकता हुआ, प्रकाशित।

सं० भास्वर(भास्=चमकना) पु० सूर्य, २ दिन, ३ अर्कवृक्ष, गु० तेजस्वी, दीप्तिमान्।

सं० भास्वान--पु० सूर्य, दिनमणि।

सं० भासु--पु० सूर्य, दिवाकर।

सं० भासुर--(भास्+उर) गु० वीर, दीप्तिमान्, शोभित पु० बिल्लौर पत्थर, कुष्ठ की औषध।

प्रा० भिकारी / भिखारी (सं० भिक्षाहारी, भिक्षा=भीख, आहारी =लेनेवाला, वा खाने वाला, हृ=लेना) पु० भीख मांगनेवाला, याचक, मंगता।

सं० भिक्षा--(भिक्ष=मांगना) स्त्री० भीख, मांगना, भिक्षित् वस्तु।

सं० भिक्षाटन-- (भिक्षा+अटन, अट्=जाना) भा० पु० भीख मांगने के लिये घूमना।

सं० भिक्षु--(भिक्ष्=मांगना) पु० संन्यासी, यती, भिखारी।

---

(१) [illegible] ॥

सं० भिक्षुक--(भिक्ष् =मांगना) क० पु० भिखारी, याचक, मंगता, संन्यासी।

प्रा० भिड़ना--क्रि० अ० वस्तुतही पास पास हो जाना, सट जाना, मिल जाना, २ मुठभेड़ होना, दो सेनाओं का लड़ाई में पास पास आजाना।

प्रा० भिड़ाना--क्रि० स० मिलाना दो चीजों को पास पास सटा देना, २ दो आदमियों को लड़ा देना।

प्रा० भिंडी--स्त्री० रामतरोई, एक तरकारी का नाम।

सं० भित्त--(भिद्=तोड़ना) कर्म० पु० खण्ड, विभाग, टुकड़ा, अर्द्ध, आधा।

सं० भित्ति--(भिद्=फोड़ना) स्त्री० भीत, दीवार, पगार।

सं० भिदक--(भिद्+अक) क० पु० वज्र, खड्ग, अस्त्र, शस्त्र।

सं० भिद्रक--क० पु० भेदक, तोड़ फोड़ करने वाला।

प्रा० भिनकना--क्रि० अ० मक्खियों

हथियार, ढेलवांस, गोफना, गोफनी।

सं० भिन्न--(भिद्=टुकड़े करना) गु० जुदा, अलग, न्यारा, पृथक्, पु० टुकड़ा, हिस्सा, बांटा, कसर, —भिन्न भिन्न, बोल० जुदा जुदा।

प्रा० भिनुसार, भिन्सार (सं० भानुसार, भानु=सूर्य, सृ=जाना) पु० सूर्य के निकलने का समय, भोर, बिहान, प्रभात, प्रातःकाल।

सं० भिषक, भिषज् (भिष्=रोग प्रतीकार) पु० वैद्य, रोगों का हटाने वाला अथवा जिस से रोग हटे, रोग प्रतीकारक।

प्रा० भीख--(सं० भिक्षा) स्त्री० भिक्षा मांगना, जाचना।

प्रा० भीड़--स्त्री० ठठ, जमघट।

प्रा० भीड़भाड़--बोल० ठट्ठ, भीड़।

प्रा० भीड़भड़क्का--बोल० बहुत से आदमियों का इकट्ठा होना।

सं० भीत--(भी=डरना) क० पु० डरा हुआ, भय युक्त।

सं० भीति--(भी=डरना) स्त्री० डर, भय, त्रास, शङ्का।

सं० भीम-(भी=डरना जिससे) गु० डरावना, भयानक, पु० राजा युधिष्ठिर का भाई, वायु देवता से उत्पन्न, २ भयानक रस, ३ शिव।

सं० भीमा-(भीम) स्त्री० दुर्गा।

सं० भीरु-(भी=डरना)क० डरपोकना, डरने वाला, कम हिम्मत, कादर, पु० शृगाल।

सं० भीरुक--क०पु० भय युक्त, कातर, डरपोकना, पु० उल्लू पक्षी, चिमगादर, कुहरा, नीहार।

सं०भीरुता--भा०स्त्री०भय,कादरपन।

प्रा० भील--(सं० भिल्ल, भिल्=भेदना)पु० एक पहाड़ी जात का नाम, चुहाड़, किरात।

सं० भीषण--(भी=डराना) भा० पु० सेंहुड़ वृक्ष,भटकटैया,बाजपक्षी, त्रास, भय, भयानकरस, २ शिव, गु० भयानक, भयंकर, डरावना।

सं० भीषा--गु० स्त्री० त्रास, भय, भयंकरता।

.सं० भीष्म--(भी=डरना जिससे) पु० पाण्डवों का दादा, शंतनु राजा और गंगा का पुत्र, २ भय, डर, भयानक रस, गु० डरावना, भयानक, भयंकर।

सं०भीष्मपञ्चक--पु० भीष्म से चलाये गये पांच दिन कार्त्तिक शुक्ल एकादशी से पूर्णमासी तक व्रतादिक करना।

सं० भीष्मसू-(सू=जनना) स्त्री० गंगा, भीष्म की जननी।

प्रा० भुआल } भुवाल } (सं० भूपाल)पु० राजा, नरपति।

सं० भुक्त-(भुज्=भक्षण करना) कर्म० पु० खादित, खाया हुआ।

सं० भुक्ति-(भुज्+ति)भा० स्त्री० भोजन, भोग, खाना।

प्रा० भुगतना-(सं० भोग, भुज्=खाना) क्रि० स० भोगना, सहना भले बुरे का फल पाना।

प्रा० भुगताना-क्रि० स० भले बुरे का फल देना, भोग करवाना।

सं० भुग्न (भुज्+त) क० पु० परेशान, कुटिल, बक्र, कुबड़ा।

प्रा० भुच्च } भुच्चा } गु० गंवार, जंगली, मूरख, अनगढ़, अनपढ़।

सं० भुज-ण०पु० } भुजा, स्त्री० } (भुज=खाना जिससे खाते हैं, या भुज्=टेढ़ाहोना) बांह, बाहु, दंड, २ तिखूंट और चौखूंट आदि खेतों की लकीर।

सं० भुजग-(भुज=टेढ़ा, गम्=जाना) पु० सांप, सर्प, नाग।

सं० भुजगान्तक-क० पु० गरुड़।

सं० भुजगाशन--(भुजग+अशन) क० पु० गरुड़।

सं० भुजङ्ग } (भुज=टेढ़ा, गम्=
भुजङ्गम } जाना) पु० सांप, सर्प।

सं० भुजगहन--पु० भुजवन, भुज समूह।

प्रा० भुजवन्ध--(भुज=बांह, वन्ध=बांधना) पु० बाजूबंद।

प्रा० भुजबीहा--(सं० भुजव्यूह) भुजसमूह, बीसभुजा।

सं० भुजान--क० भोगकारी।

सं० भुञ्जन--(भुज्=खाना) भा० भोजन, खादन।

सं० भुजि--क० पु० अग्नि।

सं० भुजिष्य--(भुज्+इष्य, भुज्=खाना) क० पु० दास, सेवक।

सं० भुजिष्या--स्त्री० दासी, टहलुई।

प्रा० भुट्टा--पु० मकईकी बाल।

प्रा० भुतना--(सं० भूत) पु० छोटा भूत, प्रेत, पिशाच।

प्रा० भुन्ना--(सं० भर्जन, भ्रस्ज्=भूनना) क्रि० अ० भुँजजाना, सि-

प्रा० भुरकाना-क्रि० स० पीसी हुई किसी चीज को किसी चीज पर छिड़कना।

प्रा० भुरकीडालना--बोल० जादू से वशमें करलेना।

प्रा० भुलाना-क्रि० स० भूलजाना, भुलादेना, याद न रखना, २ बहकाना, भरमाना, फुसलाना।

प्रा० भुलावा-पु० धोखा, छलावा।

प्रा० भुलावादेना--बोल० धोखा देना, छलना।

प्रा० भुवंग-(सं० भुजङ्ग) पु० सांप।

सं० भुवन-(भू=होना) पु० लोक, जगत्, सृष्टि।

सं० भुवर् (भू=होना) पु० आकाश, अन्तरीक्ष, दूसरा लोक।

प्रा० भुस (सं० बुस, बुस=छोड़ना) पु० अनाज के ऊपर का छिलका।

प्रा० भुसंड-पु० बहुत मोटा आदमी।

सं० भू-(भू=होना) स्त्री० धरती, पृथ्वी, भूमि, धरणी, २ स्थान, जगह, ३ यज्ञ की आग।

[illegible]

सं० भूकेश-पु० वट, बरगद, २शैवल, सिवार।

प्रा० भूख-(सं० बुभुक्षा) स्त्री० खाने की चाह, क्षुधा।

प्रा० भूखबन्दहोजाना-- बोल० भूख नहीं लगना। [होना।

प्रा० भूखलगना—बोल० भूखमालूम

प्रा० भूख भागना-बोल० सुख होना, आराम पाना, खाने पीने का कुछ दुःख नहीं रहना।

प्रा० भूखा (सं० बुभुक्षित) गु० जिसको खाने की चाह हो, २किसी चीज़ का चाहनेवाला, ३ कंगाल, गरीब। [मण्डल।

सं० भूगोल- (भू+गोल)पु०पृथ्वी-

सं० भूचक्र—पु० भूमण्डल।

सं० भूचर-(भू=धरती, चर्=चलना) पु० धरती पर चलनेवाला जीव।

प्रा० भूड- स्त्री० बलुवा धरती, रेतली धरती, रेगिस्तान।

प्रा० भूडल-पु० अभ्रक।

सं० भूत—(भू=होना) पु० पिशाच, प्रेत, २ प्राणी, जीवधारी, जन्तु, ३ शिव के गण, ४ अतीतकाल, बीताहुआ समय, भूतकाल, ५ तत्त्व (जैसे पृथ्वी, पानी, आग, हवा और आकाश) गु० हुआ, बीता हुआ, पाया हुआ, २ सच, ठीक, सुमार्गी, धर्मी।

सं० भूतघ्न (भूत+हन)पु० भोजपत्र, लस्सुन, लशुन, ऊंट, वायुभिडंग, हींग। [महादेव, २ भैरव।

सं० भूतनाथ- (भूत+नाथ) पु०

सं० भूतल-(भू+तल) पु० पृथ्वी, धरती, धरातल।

सं० भूति-(भू=होना) स्त्री०ऐश्वर्य, संपत्ति, विभूति, अष्टसिद्धि, २ भस्म, राख।

सं० भूतेश- (भूत+ईश)पु० महादेव, शिव।

सं० भूदार-(दृ=फाड़ना) क०पु० शूकर, सुअर।

सं० भूदेव- (भू=धरती, देव=देवता) पु० ब्राह्मण, विप्र, भूसुर।

सं० भूधर, भूध्र (भू=धरती, धृ=रखना) पु०पहाड़, पर्वत, गिरि।

प्रा०भून्ना-(सं० भर्जन, भृज्=या भ्रस्ज्=भून्ना) क्रि० स० आगपर रख कर भुलस लेना, जैसे मक्की आदि, २ गर्म घी या तेल में डाल कर खूब हिलाना, जैसे मांस आदि, ३ गर्म राख या बालू में पका लेना, जैसे चना आदि।

सं० भूप-(भू=पृथ्वी, पा=पालना) पु० राजा, नृप, बादशाह व ज्योतिष में १६ का नाम।

सं० भूपति-(भू+पति) पु०राजा, महीपाल, भूपाल।

सं० भूपाल- (भू=पृथ्वी, पाल=पालना) पु० राजा, भूप, नरपति, भूपति।

प्रा० भूभल—स्त्री० गर्म राख,अङ्गार।

प्रा० भूभुरि-पु० छोटे कोटा।

सं० भूभृत्-पु० पहाड़, राजा, शेष, कच्छपराज, दिग्गज।

सं० भूमि-(भू=होना, जिस पर मनुष्य होते हैं)स्त्री० पृथ्वी,धरती, २ जगह, स्थान।

सं०भूमिका—(भूमि)स्त्री० प्रसंग, प्रकरण, आभास, तमहीद।

सं० भूमिनाग-पु०केंचुआ,साधारण साँप, सँपोला।

सं० भूमिपति-(भूमि+पति) पु० राजा, भूपाल, भूपति।

सं० भूमिपाल-(भूमि=पृथ्वी,पाल =बचाना) पु० राजा।

सं० भूमिपिशाच—पु० ताड़वृक्ष, तालद्रुम।

ग्रा० भूमिया-(भूमि) पु० जमींदार, २ पृथ्वी का देवता।

प्रा०भूर } भूरसी } स्त्री०दक्षिणा,दान,भीख।

प्रा० भूरा-पु० एक तरह का रंग।

सं० भूरि-(भू=होना) गु० बहुत, अधिक, ढेर। [हल, स्वर्ण।

भूल कर इधर उधर फिरनेवाला।

सं० भूषक-(भूष्+अक) कृ० पु० अलंकारकारक, भूषणधारी।

सं० भूषण-(भूष्=शोभना) पु० गहना, आभूषण, आभरण।

सं० भूषित-(भूष्=शोभना) गु० शोभित, शोभायमान,अलंकृत।

प्रा० भूसा-(सं० बुस, बुस्=छोड़ना) पु०जानवरोंके खाने का चारा,तुस।

प्रा० भूसी—(सं०बुस,बुस्=छोड़ना) स्त्री० चोकर, अनाज के ऊपरका छिलका। [पु० ब्राह्मण, विप्र।

सं० भूसुर-(भू=पृथ्वी,सुर=देवता)

सं० भृकुटी-(भ्रू=भौं, कुट=टेढ़ा होना) स्त्री० त्योरी, त्रुकटी, भौं का चढ़ाना।

सं० भृगु-(भ्रस्ज=भूनना, अर्थात् सबके मन में धर्म की आग को प्रकाश करना) पु० एक प्रसिद्ध ऋषि का नाम जिसने विष्णु की छाती में लात मारी थी, ब्रह्मा का बेटा, एक प्रजापति।

सं० भृगुकुलकेतु—पु० परशुराम,

सं० भूकेश-पु० वट, बरगद, २शैवल, सिवार।

प्रा० भूख-(सं० बुभुक्षा) स्त्री० खाने की चाह, क्षुधा।

प्रा० भूखबन्दहोजाना-- बोल० भूख नहीं लगना।

[होना।

प्रा० भूखलगना—बोल० भूखमालूम

प्रा० भूख भागना-बोल० सुख होना, आराम पाना, खाने पीने का कुछ दुःख नहीं रहना।

प्रा० भूखा (सं० बुभुक्षित) गु० जिसको खानेकी चाह हो, २किसी चीज़ का चाहनेवाला, ३ कंगाल, ग़रीब।

[मण्डल।

सं० भूगोल- (भू+गोल)पु०पृथ्वी-

सं० भूचक्र—पु० भूमण्डल।

सं० भूचर-(भू=धरती, चर्=चलना) पु० धरती पर चलनेवाला जीव।

प्रा० भूड- स्त्री० बलुवा धरती, रेतली धरती, रेगिस्तान।

प्रा० भूडल-पु० अभ्रक।

सं० भूत— (भू=होना) पु० पिशाच, प्रेत, २ प्राणी, जीवधारी, जन्तु, ३ शिव के गण, ४ अतीतकाल, बीताहुआ समय, भूतकाल, ५ तत्त्व (जैसे पृथ्वी, पानी, आग, हवा और आकाश) गु० हुआ, बीता हुआ, पाया हुआ, २ सच, ठीक, कुमारी, धरणी।

सं० भूतघ्न (भूत+हन्)पु० भोजपत्र, लस्सुन, लशुन, ऊंट, वायुभिडंग, हींग।

[महादेव, २ भैरव।

सं० भूतनाथ- (भूत+नाथ) पु०

सं० भूतल-(भू+तल) पु० पृथ्वी, धरती, धरातल।

सं० भूति-(भू=होना) स्त्री०ऐश्वर्य, संपत्ति, विभूति, अष्टसिद्धि, २ भस्म, राख।

सं० भूतेश- (भूत+ईश)पु० महादेव, शिव।

सं० भूदार-(दृ=फाड़ना) क०पु० शूकर, सुअर।

सं० भूदेव- (भू=धरती, देव=देवता) पु० ब्राह्मण, विप्र, भूसुर।

सं० भूधर } भूध्र } (भू=धरती, धृ=रखना) पु०पहाड़, पर्वत, गिरि।

प्रा०भूना-(सं० भर्जन, भृज्=या भ्रस्ज्=भूना) क्रि० स० आगपर रख कर भुलस लेना, जैसे मक्की आदि, २ गर्म घी या तेल में डाल कर खूब हिलाना, जैसे मांस आदि, ३ गर्म राख या बालू में पका लेना, जैसे चना आदि।

सं० भूप-(भू=पृथ्वी, पा=पालना) पु० राजा, नृप, बादशाह व ज्योतिष में १६ का नाम।

सं० भूपति-(भू+पति) पु०राजा, महीपाल, भूपाल।

सं० भूपाल- (भू=पृथ्वी, पाल=पालना) पु० राजा, भूप, नरपति, भूपति।

प्रा० भूभल–स्त्री० गर्म राख,अङ्गारा।
प्रा० भूभुरि-पु० छोटे काँटा।
सं० भूभृति-पु० पहाड़, राजा, शेष, कच्छपराज, दिग्गज।
सं० भूमि-(भू=होना, जिस पर मनुष्य होते हैं)स्त्री० पृथ्वी,धरती, २ जगह, स्थान।
सं०भूमिका—(भूमि)स्त्री० प्रसंग, प्रकरण, आभास, तमहीद।
सं० भूमिनाग-पु०केंचुआ, साधारण साँप, सँपोला।
सं० भूमिपति-(भूमि+पति) पु० राजा, भूपाल, भूपति।
सं० भूमिपाल-(भूमि=पृथ्वी,पाल् =बचाना) पु० राजा।
सं० भूमिपिशाच—पु० ताड़वृक्ष, तालद्रुम।
प्रा० भूमिया-(भूमि) पु० जमींदार, २ पृथ्वी का देवता।
प्रा०भूर, भूरसी } स्त्री०दक्षिणा,दान,भीख।
प्रा० भूरा-गु० एक तरह का रंग।
सं० भूरि-(भू=होना) गु० बहुत, अधिक, ढेर। [वृक्ष, दरख़्त।
सं० भूरुह-(रुह्=उगना) क० पु०
प्रा० भूल-(सं०भ्रम)स्त्री० चूक, सहो।
प्रा० भूलना—क्रि० स० चूकना, याद न रखना।
प्रा० भूलाबिसरा, भूलाभटका } बोल० भटका हुआ, रस्ता भूल कर इधर उधर फिरनेवाला।
सं० भूषक-(भूष्+अक) क० पु० अलंकारकारक, भूषणधारी।
सं० भूषण-(भूष्=शोभना) पु० गहना, आभूषण, आभरण।
सं० भूषित-(भूष्=शोभना) गु० शोभित, शोभायमान, अलंकृत।
प्रा० भूसा-(सं० बुष, बुष्=छोड़ना) पु०जानवरोंके खाने का चारा, तुस।
प्रा० भूसी—(सं०बुष,बुष्=छोड़ना) स्त्री० चोकर, अनाज के ऊपरका छिलका। [पु० ब्राह्मण, विप्र।
सं० भूसुर-(भू=पृथ्वी, सुर=देवता)
सं० भृकुटी-(भ्रू=भौं, कुट=टेढ़ा होना) स्त्री० त्योरी, घुड़की, भौं का चढ़ाना।
सं० भृगु-(भ्रस्ज्=भूनना, अर्थात् सबके मन में धर्म की आग को प्रकाश करना) पु० एक प्रसिद्ध ऋषि का नाम जिसने विष्णु की छाती में लात मारी थी, ब्रह्मा का बेटा, एक प्रजापति।
सं० भृगुकुलकेतु–पु० परशुराम, भृगुवंशकेपताका।
सं०भृगुनाथ, भृगुपति } (भृगु=भृगुवंशियों के, नाथ वा पति= स्वामी) पु० परशुराम, परशुधर।
सं०भृङ्ग–(भृ=भरना, वा भ्रम=फि-

रना) पु० भौंरा, भ्रमर।

प्रा० भृङ्गी-(सं० भृङ्ग)स्त्री० भौंरी, लखेरी, शिवगण, पार्वती।

सं० भृति-(भृ=भरना)स्त्री०मूल्य, वेतन, भरण, पोषण।

सं० भृतिभुज- गु० वेतनोपजीवी, नौकरी से जीनेवाला।

सं० भृत्य-(भृ=भरना, अर्थात् जिसको मज़दूरी या तनख्वाह देना) पु०नौकर,चाकर,टहलू,खिदमतगार।

सं०भृश-अव्य० अतिशय, बहुत।

प्रा०भृष्टि-स्त्री० भूजना।

प्रा० भेंगा-गु० टेढ़ा देखने वाला, डेरा, ढेरा, स्वर्गपताली।

प्रा० भेंट } भेट } स्त्री० मिलाप, मुलाक़ात, २ सौगात, डाली, नज़र।

प्रा०भेंटना } भेटना } क्रि० स० मिलना, मि[illegible] करना, मुलाक़ात करना [illegible] दुर।

सं० भेक-([illegible]

प्रा० भेड़ा-(सं०भेड़)पु०मेढ़ा, मेष।

प्रा० भेड़िया-(सं० भेड़हा, भेड़=भेड़ी, हन्=मारना) स्त्री० हुंडार, ल्याली, एक फाड़नेवाला जानवर।

प्रा० भेड़ियाधसान- बोल० सब जानतेहैं कि जिस ओर एक भेड़ी जाती है सब उसी ओर चलती हैं इसलिये जब बहुत आदमी बेसमझे किसी के पीछे चलते हैं तब यह मुहावरा बोलाजाता है।

प्रा०भेड़ी-(सं० भेड़) स्त्री० भेड़, गाड़र, मेढ़ी।

सं० भेद-(भिद्=तोड़ना)भा० पु० छिपी बात, गुप्त बात, राज़, २ जुदा होना, भिन्नता,अलगाव, ३ अन्तर, फरक, ४ प्रकार, जाति, भांति, ५ विरोध, विच्छेद, अनमेल।

सं० [illegible] (भेद्+अक) क०पु० तो[illegible] विदारक।

प्रा०[illegible] बोल० छिपीहुईबात

सं० भेदित--र्म्म० पु० फाड़ा हुआ।

प्रा० भेदिया } (भेद) गु० भेदू,
सं० भेदी } भेद जानने वाला।

प्रा० भेदू—(भेदू) गु० भेद जानने वाला, भेदी।

सं० भेद्य—(भिद्=तोड़ना) र्म्म० पु० भेदने योग्य तोड़नेकेलायक़।

सं० भेरी—(भी=डर पैदाकरना, स्त्री० एक प्रकारका बाजा, तुरही, नफीरी, सहनाई।

प्रा० भेली—स्त्री० गुड़का ढेला।

प्रा० भेव—(सं० भेद, वा भाव) पु० भेद, भाव, स्वभाव, तरह।

प्रा० भेष—(सं० वेष) पु० भेष, रूप वदलना, स्वरूप बनाना।

प्रा० भेषबदलना—बोल० स्वांग भरना, रूप बदलना।

सं० भेषज—(भेष=रोगका डर, भेष् =डरना (जि=जीतना) या भिष् रोग दूर करना) भा० पु० दवा, दारू, औषध।

सं० भैषज्य—भा० पु० औषध, दवा।

प्रा० भैंस—(सं० महिषी) स्त्री० एक जानवर का नाम।

प्रा० भैंसा—(सं० महिष) पु० एक चौपाये का नाम।

प्रा० भैंसादाद } (सं० महिषदद्रु)
भैंसियादाद } पु० एक प्रकार का दाद।

प्रा० भैया—(सं० भ्राता) पु० भाई।

प्रा० भैयापा } (सं० भ्रातृता) पु०
भायप } भाईचारा, बिरादरी

सं० भैरव—(भी=डर पैदा करना) पु० शिव, दुर्गा के पास रहनेवाला देवता जो शिवका अवतार है, भैरव आठ हैं (१ असितांग, २ रुरु, ३ चण्ड, ४ क्रोध, ५ उन्मत्त, ६ कुपित, ७ भीषण, ८ संहार) २ भयानक रस, ३ एक रागकानाम, गु० डरावना, भयंकर।

सं० भैरवी—(भी=डर उपजाना) स्त्री० दुर्गा, काली, देवी, २ एक रागिणीका नाम।

प्रा० भौंकना } (सं० भष्=भौंकना,
भौंकना } क्रि० अ० भूकना) हौंहौं करना, कुत्तेका शब्दकरना।

प्रा० भोंडा-गु० कुडौल, कुरूप।

प्रा० भोंथा } गु० तीखा नहीं, कुं-
भोंथरा } ठित, कुंद, गोठिल।

प्रा० भोंदू—गु० गंवार, अनजान, सीधा।

प्रा० भोंपू--पु० नरसिंगा।

प्रा० भोई—पु० कहार, पालकीउठाने वाला।

सं० भोक्तव्य—(भुज्=खाना) र्म्म० पु० खाने के लायक़।

सं० भोक्ता—(भुज्=खाना) क० पु० खानेवाला।

सं० भोग—(भुज्=खाना) पु० खाना,

रना) पु० भौंरा, भ्रमर।

प्रा० भृङ्गी-(सं० भृङ्ग)स्त्री० भौंरी, लखेरी, शिवगण, पार्वती।

सं० भृति-(भृ=भरना)स्त्री०मूल्य, वेतन, भरण, पोषण।

सं० भृतिभुज- गु० वेतनोपजीवी, नौकरी से जीनेवाला।

सं० भृत्य-(भृ=भरना, अर्थात् जिसको मज़दूरी या तनख्वाह देना) पु०नौकर,चाकर,टहलू,खिदमतगार।

सं०भृश-अव्य० अतिशय, बहुत।

प्रा०भृष्टि-स्त्री० भूजना।

प्रा० भेंगा-गु० टेढ़ा देखने वाला, डेरा, ढेरा, स्वर्गपताली।

प्रा० भेंट } स्त्री० मिलाप, मुलाक़ात, २ सौगात, डाली, नज़र।
भेट

प्रा०भेंटना } क्रि० स० मिलना, मिलाप करना, मुलाक़ातकरना। [बेंग, दादुर।
भेटना

सं० भेक-(भी=डरना) पु० मेंड़क,

प्रा० भेख-(सं०वेष)पु० भेष, लिबास, रूपबदलना, स्वरूपबनाना।

प्रा० भेखधारी-क० पु० भेष बनानेवाला, अपना औररूपबनानेवाला। [पहुँचाना।

प्रा० भेजना-क्रि० स० पठाना,

प्रा० भेजा-पु० शिर का गूदा, शिर का मग़ज़। [भेड़ी।

सं०भेड़-(भि=डरना)स्त्री० गाड़र,

प्रा० भेड़ा-(सं०भेड़)पु०मेढ़ा, मेष।

प्रा० भेड़िया-(सं० भेड़हा, भेड़=भेड़ी, हन्=मारना) स्त्री० हुंडार, ल्याली, एक फाड़नेवाला जानवर।

प्रा० भेड़ियाधसान-बोल० सब जानतेहैं कि जिस ओर एक भेड़ी जाती है सब उसी ओर चलती हैं इसलिये जब बहुत आदमी बेसमझे किसी के पीछे चलते हैं तब यह मुहावरा बोलाजाता है।

प्रा०भेड़ी-(सं० भेड़) स्त्री० भेड़, गाड़र, मेढ़ी।

सं० भेद-(भिद्=तोड़ना)भा० पु० छिपी बात, गुप्त बात, राज़, २ जुदा होना, भिन्नता,अलगाव, ३ अन्तर, फरक़, ४ प्रकार, जाति, भांति, ५ विरोध, विच्छेद, अनमेल।

सं० भेदक-(भेद्+अक) क०पु० तोड़नेवाला, विदारक।

प्रा० भेदलेना-बोल० छिपीहुईबात को मालूम करना।

प्रा० भेदकहना-बोल०छिपानेयोग्य बात को कहदेना, राज़ खोलना।

प्रा०भेदखोलना- बोल० छिपी बात को प्रकट करना।

सं० भेदन-(भिद्=तोड़ना) भा० पु० तोड़ना, तोड़न, फोड़न।

सं० भेदि } क० विदारक, छेद करनेवाला, पु० वज्र।
भेदी

सं० भेदित--र्म्म० पु० फाड़ा हुआ।

प्रा० भेदिया } (भेद) गु० भेदू,
सं० भेदी } भेद जानने वाला।

प्रा० भेदू—(भेदू) गु० भेद जानने वाला, भेदी।

सं० भेद्य—(भिद्=तोड़ना) र्म्म० पु० भेदने योग्य, तोड़नेकेलायक।

सं० भेरी—(भी=डर पैदाकरना, स्त्री० एक प्रकारका बाजा, तुरही, नफीरी, सहनाई।

प्रा० भेली—स्त्री० गुड़का ढेला।

प्रा० भेव—(सं० भेद, वा भाव)पु० भेद, भाव, स्वभाव, तरह।

प्रा० भेष— (सं० वेष) पु० भेष, रूप बदलना, स्वरूप बनाना।

प्रा० भेषबदलना—बोल० स्वांग भरना, रूप बदलना।

सं० भेषज—(भेष=रोगका डर, भेष् =डरना (जि=जीतना) या भिष् रोग दूर करना) भा० पु० दवा, दारू, औषध।

सं० भैषज्य—भा०पु० औषध, दवा।

प्रा० भैंस—(सं० महिषी) स्त्री०एक जानवर का नाम।

प्रा० भैंसा—(सं० महिष) पु० एक चौपाये का नाम।

प्रा० भैंसादाद } (सं० महिषदद्रु)
भैंसियादाद } पु० एक प्रकार का दाद।

प्रा० भैया—(सं० भ्राता) पु०भाई।

प्रा० भैयापा } (सं० भ्रातृता)पु०
भायप } भाईचारा, बिरादरी

सं० भैरव—(भी=डर पैदा करना) पु० शिव, दुर्गा के पास रहनेवाला देवता जो शिवका अवतार है, भैरव आठ हैं (१ असितांग, २ रुरु, ३ चण्ड, ४ क्रोध, ५ उन्मत्त, ६ कुपित, ७ भीषण, ८ संहार) २ भयानक रस, ३ एक रागकानाम, गु० डरावना, भयंकर।

सं०भैरवी—(भी=डर उपजाना) स्त्री० दुर्गा, काली, देवी, २ एक रागिणीका नाम।

प्रा० भोंकना } (सं० भष्=भौंकना,
भौंकना } क्रि० अ० भूकना) हौंहौं करना, कुत्तेका शब्दकरना।

प्रा० भोंडा-गु० कुडौल, कुरूप।

प्रा०भोंथा } गु० तीखा नहीं, कुं-
भोंथरा } ठित, कुंद, गोठिल।

प्रा०भोंदू—गु० गंवार, अनजान, सीधा।

प्रा० भोंपू--पु० नरसिंगा।

प्रा० भोई—पु०कहार, पालकीउठाने वाला।

सं० भोक्तव्य—(भुज्=खाना)र्म्म० पु० खाने के लायक।

सं० भोक्ता—(भुज्=खाना) क०पु० खानेवाला।

सं० भोग—(भुज्=खाना)पु०खाना,

प्रसाद, नैवेद्य, २ सुख, हर्ष, विलास, ऐश, आराम ।

प्रा० भोगना—(भोग) क्रि० स० भुगतना, सहना, पाना, दुःख या सुख उठाना ।

सं० भोगपत्र-पु० वक़्फ़नामा, फ़र्मानजागीर, जागीरनामा ।

सं० भोगिवल्लभ—(भोगि=सर्प, वल्लभ=प्यारा) पु० चन्दन ।

सं० भोगी—(भोग) कृ० पु० भोग विलास करने वाला, सुखी, २ (भुज्=टेढ़ा चलना) पु० सांप, सर्प ।

सं० भोज—(भुज्=पालना) पु० उज्जैन के एक राजा का नाम जो विद्या के फैलाने से बहुत प्रसिद्ध है, २ भोजकट देश जो पटना और भागलपुर के पास है या जिसको अब भोजपुर कहते हैं जो शाहाबाद के ज़िले में है ।

सं० भोगीन्द्र--(भोगी+इन्द्र) पु० शेषनाग, वासुकि नागराज ।

प्रा० भोज--(सं० भोज्य, भुज्=खाना) पु० खाना, आहार ।

सं० भोजक—(भुज्+अक) कृ० पु० भक्षक, खाने वाला ।

सं० भोजकट—पु० भोजपुर, देशविशेष ।

सं० भोजन—(भुज्=खाना) भा० पु० खाना, आहार, भोजन करना, खाना खाना, जेवना ।

सं० भोजनीय—(भुज्+अनीय) र्म्म० पु० भोजन योग्य ।

प्रा० भोजपत्र--(सं० भूर्जपत्र) पु० एक वृक्ष की छाल ।

सं० भोजयिता--(भुज्+इ+तृ) कृ० पु० भोजन कराने वाला ।

सं० भोज्य—(भुज्=खाना) पु० खाने की चीज़, र्म्म० खाने योग्य ।

प्रा० भोडल—पु० अभ्रक, भूडल ।

सं० भोभो—अव्य० सम्बोधन संभ्रम, आदरार्थ सम्बोधन ।

प्रा० भोर--पु० विहान, पौह, प्रभात ।

प्रा० भोरहोना--बोल० बिहानहोना ।

प्रा० भोरा, भोला—गु० सीधा सादा, निष्कपट, कम अक़्ल ।

प्रा० भोलानाथ- बोल० महादेव, शिव ।

प्रा० भोलाभाला—बोल० सादा ।

प्रा० भोलीबातें—बोल० सीधीबातें, बे कपट बातें ।

प्रा० भौंह, भौं, भौंह—(सं० भ्रू) पु० आंख पर का बाल, भृकुटी ।

प्रा० भौंचढ़ाना--बोल० गुस्साहोना ।

प्रा० भौंटेढ़ाकरना-बोल० त्यौरी चढ़ाना । [चढ़ाना) ।

प्रा० भौंहेंतानना--बोल० त्यौरी

प्रा० भौंचाल (सं० भूमिचाल)

पु० भूईंडोल, भूकंप, ज़लज़ला ज़मीनका।

प्रा० भौंरा--(सं० भ्रमर) पु० एक तरहकी बड़ी मक्खी, मधुप, अलि।

प्रा० भौ-(सं० भय) पु० डर, खौफ।

प्रा० भौजाई } भौजी } (सं० भ्रातृजाया) स्त्री० भाई की स्त्री।

सं० भौतिक--(भूत) गु० भूत सम्बन्धी पृथिव्यादि वा पिशाचादि सम्बन्धी।

सं०भौम--(भूमि=पृथ्वी) गु०पृथ्वी का, पु० मङ्गल ग्रह, २ नरकासुर राक्षस।

सं०भौमवार--(भौम+वार) पु० मंगलवार।

सं० भौमावती--(भौम) स्त्री० भौमासुर की स्त्री।

सं० भ्रंश } भ्रंस } (भ्रश् वा भ्रस्=गिरना) पु० नीचे गिरना, नाश, ध्वंस, बिगाड़।

सं० भ्रंशित वा भ्रंसित--र्म० पु० च्युत, गिरा।

सं० भ्रम--(भ्रम्=फिरना)पु०भ्रान्ति, भूल चूक, २ संदेह,संशय,झूठाज्ञान।

सं०भ्रमण--(भ्रम्=फिरना) पु० फिरना, घूमना, विचरना।

सं० भ्रमर--(भ्रम्=फिरना) पु० भौंरा, मधुप, मधुकर, अलि।

सं० भ्रष्ट--(भ्रश्=नीचे गिरना) र्म० पु० गिरा हुआ, पतित, अधर्मी, धर्मसेगिराहुआ, भ्रष्टकरना, क्रि० स० बिगाड़ना, बुरेकाम में लगाना, भ्रष्टहोना, क्रि० अ० बिगड़ना, बुरेकाम में लगना।

सं०भ्राजना- (सं० भ्राज्=शोभना) क्रि० अ० शोभना, सोहना।

सं० भ्राजिष्णु-(भ्राज्+इष्णु) क० दीप्तिमान्, शोभायुक्त।

सं० भ्राता-- (भ्राज्=शोभना) पु० भाई, भैया, सहोदर।

सं०भ्रांत--क० पु० भूला हुआ।

सं०भ्रान्ति-(भ्रम्=फिरना)भा०स्त्री० भ्रम, भूल चूक, २ घूमना, भ्रमण।

सं०-भ्रामक--(भ्रम्+अक) क० पु०भ्रमजनक,अशुद्ध,घूमनेवाला।

सं०भ्राम्यमान-क०पु०घूमनेवाला।

सं० भ्राश--पु० प्रकाश, चमक।

सं० भ्रू-- (भ्रम्=फिरना) पु० आंखों पर का बाल, भौंह, भौं।

सं० भ्रूण--पु० गर्भ,हमल।

सं० भ्रूभङ्ग--(भ्रू=भौं, भञ्ज्=तोड़ना) पु०, घुरकी, त्यौरी, भौं चढ़ाना, कटाक्ष।

—०—

(म)

सं० म--(मा=नापना वा आदर करना) पु० ब्रह्मा, २ शिव, ३ चांद, ४ विष्णु, ५ यम, ६ समय, ७ विष।

प्रा० मंगता--(मांगना)पु० भिखारी, भिखमंगा।

प्रा० मंगनी--(मांगना) स्त्री० सगाई, निस्बत, २ उधार।

प्रा० मंगनीदेना--बोल० उधारदेना।

प्रा० मंगसिर } (सं० मार्गशिर)
मगशिर } पु० अगहन।
मगसिर }

प्रा० मंजना-(सं० मञ्जन, मञ्ज्=साफ होना) क्रि० अ० उजला होना, चिकना होना, साफ़ होना।

प्रा० मंजीरा } (सं० मञ्जीर, मञ्ज्=
मजीरा } शब्द करना) पु० एक बाजेका नाम, झांझ, करताल।

प्रा० मंडुआ--पु० एक अनाज का नाम।

प्रा० मंढना } (सं० मड्=संवारना)
मढ़ना } क्रि० अ० ढकना (जैसे किताब को पूठे से, या ढोल ढफ आदि को चमड़े से) लपेटना।

प्रा० मकड़ा--(सं० मर्कट, मर्क=जाना) पु० एक तरह का कीड़ा।

प्रा० मकड़ाना--क्रि० अ० टेढ़ा चलना, अकड़ के चलना, २ काम करने से जी चुराना।

प्रा० मकड़ी-(सं० मर्कटी) स्त्री० एक तरह का कीड़ा जिसके आठ पैर होते हैं।

सं० मकर- (म=मनुष्य, और कृ=मारना, जो मनुष्योंको मार डालता है यहां मनुष्य शब्द को म हो जाता है) पु० मगर, मच्छ, २ दशवीं राशि।

सं० मकरकेतु } (मकर=मगर, केतु
मकरध्वज } वा ध्वजा=झंडा) पु० कामदेव, जिसके झंडे पर मकर का चिह्न है।

सं० मकरन्द--पु० फूलों का रस, पुष्परस, पराग।

सं० मकराकृत--(मकर=मगर, आकृति=रूप) गु० जिस चीज़ का आकार मगरकैसा हो जैसे मकराकृत कुण्डल।

सं० मकरी--(मकर) स्त्री० मछली, एक पानी का जीव, २ जो जाला तानती है।

प्रा० मकरोना--क्रि० स० थोड़ासा गीला करना, करमोना।

सं० मकुट } (मकि=शोभना) पु०
मुकुट } किरीट, ताज, राजाओं के शिरका गहना।

सं० मकुर } (माकि=शोभना) पु०
मुकुर } दर्पण, कांच, आईना, आरसी, शीसा।

सं० मकुल } (मकि=जाना) स्त्री०
मुकुल } फूलकीकली, कोंपल।

प्रा० मकोड़ा--पु० कीड़ा।

सं० मक्षिका } (मक्ष=क्रोधकरना)
मक्षीका } स्त्री० मक्खी, माखी।

प्रा० **मक्खन** } (सं० मन्थज, मन्थ=
माखन } मन्थना, और जन्=
पैदा होना, जो मथनेसे निकलता है) पु० माखन, नैनू, नवनीत, हयङ्गवीन।

प्रा० **मक्खी** } (सं० मक्षिका) स्त्री०
माखी } एक तरह का उड़नेवाला कीड़ा, माछी।

प्रा० **मक्खीउड़ाना**--बोल० किसी की खुशामद या गुलामी करना।

प्रा० **मक्खीचूस**-बोल० कंजूस, सूम, कृपण।

प्रा० **मक्खीमारना**--बोल० सुस्त बैठा रहना, बेकार बैठा रहना।

सं० **मख**--(मख्=जाना) पु० यज्ञ।

प्रा० **मग**--(सं० मार्ग) पु० रस्ता, बाट, पैंड, डगर, मग देखना, बोल० बाट जोहना, राह निहारना।

सं० **मगध**--पु० सूबे बिहार का दक्खिनभाग।

प्रा० **मगन**--(सं० मग्न) गु० डूबा हुआ, प्रसन्न, आनंदित, हर्षित।

प्रा० **मगर**--(सं० मकर) पु० मगरमच्छ।

प्रा० **मगरा**--(अ० मगरूर) गु० ढीठ, घमंडी, गुस्ताख़।

प्रा० **मगराई**--स्त्री० ढिठाई, गुस्ताखी, घमंड, धृष्टता [घमण्ड।

प्रा० **मगरापन**--भा० पु० मगराई,

प्रा० **मगह**--(मगध) पु० सूबे बिहारका दक्खिन भाग जिसमें गया आदि शहर हैं।

प्रा० **मगही**--(सं० मागधीय) गु० मगहका (जैसे पान आदि)

प्रा० **मगहैया**--(सं० मागधीय) गु० मगध देश का वासी, २ब्राह्मणों की एक जाति।

सं० **मग्न**--(मस्ज्=डूबना, वा शुद्ध करना) क० डूबा हुआ, २ प्रसन्न, आनंदित, हर्षित, खुश।

सं० **मघवा** } (मह्=पूजना) पु०
मघवान् } इन्द्र, देवताओं का राजा, सुरपति।

सं० **मघा**--(मह्=पूजना) स्त्री० दशवां नक्षत्र।

सं० **मङ्गल**--(मगि=जाना) पु० कुशल, कल्याण, आनंद, २ तीसरा ग्रह, ३ मंगलवार, भौमवार, गु० शुभ, अच्छा, आनन्द देनेवाला।

सं० **मङ्गलवार**--(मङ्गल+वार) पु० मङ्गलका दिन, भौमवार।

सं० **मंगलसमाचार**--(मङ्गल+समाचार) पु० अच्छा समाचार, सुसमाचार, शुभसमाचार।

सं० **मंगलाचरण**--(मङ्गल+आचरण) पु० देवताओं को नमस्कार वन्दना।

सं० मंगलाचार-(मङ्गल+आचार) पु० बधावा, ब्याह आदि अच्छे काम में आनन्द के गीत।

सं० मंगलामुखी-(मङ्गल+मुख, अर्थात् जिसके मुंह में मङ्गल है) गु० गवैया, ब्याह आदि अच्छे कामों में गाने वाली।

प्रा० मंगली-(मंगल) गु० मंगल करनेवाला, मंगलामुखी, २ जिसके जन्म अष्टम, द्वादश स्थान में मंगल ग्रह पड़ा हो।

प्रा० मचना-क्रि० अ० होना, रचना, उठना, किया जाना।

प्रा० मचलना-क्रि० अ० मगराहोना, हठ करना, जिद करना।

प्रा० मचला-गु० मगरा, ढीठ, हठीला, जिद्दी, हठी। [ठाई, हठ।

प्रा० मचलाई-स्त्री० मगराई, ढि-

प्रा० मचलाना-क्रि० अ० मतलाना, कै किया चाहना, कै करने को जी चाहना, २ बहाना करना।

प्रा० मचान-(सं० मञ्च) पु० मांच, टांड, खेतों में बांसों से बनाई हुई ऊंची बैठक जिस पर एक आदमी खेतकी रखवाली करने के लिये बैठता है।

प्रा० मचाना-क्रि० स० करना, रचाना, उठाना, बनाना।

प्रा० मचिया-(सं० मञ्च) स्त्री० पीढ़ी, चौकी, कुरसी।

प्रा० मच्छ-(सं० मत्स्य) पु० बड़ी मछली, २ विष्णुका पहला अवतार।

प्रा० मच्छर-(सं० मशक) पु० माछर, कुटकी।

प्रा० मछली-(सं० मत्स्यी) स्त्री० पानी के एक जानवर का नाम।

प्रा० मछवा, मछुवा-(मत्स्य) पु० मछली पकड़ने वाला, धीमर, कहार।

प्रा० मजीठ-(सं० मञ्जिष्ठा) पु० एक लाल चीज जो रंगने के काम में आती है।

सं० मज्जन-(मस्ज्=न्हाना) पु० न्हाना, स्नान। [वाला।

सं० मज्जक-कृ० पु० स्नान करने-

सं० मज्जा-(मस्ज्=न्हाना) स्त्री० हड्डी के भीतर का गूदा, चर्बी।

प्रा० मझला-(सं० मध्य) गु० बिचला, मध्यम, वस्तु का।

प्रा० मझार-(सं० मध्य) पु० बीच, मध्य, बीच में।

प्रा० मझारी-गु० स्त्री० भीतरी, बीच की, मध्यकी।

सं० मञ्च-(मचि=ऊंचाकरना) पु० मांच, मचान, खेतों में बांसों से बनाई हुई ऊंची बैठक जिस पर एक आदमी खेत की रखवाली करने के

लिये बैठता है, २ पलंग, खाट, खटिया, मांचा।

सं० मञ्जन--(मञ्ज=साफ होना) पु० दांत धोने का चूरण, मिस्सी।

सं० मञ्जरी--(मञ्ज=साफ होना, वा शुद्धहोना) स्त्री० कली, कोंपल, तुलसी पुष्प, अखुआ।

प्रा० मञ्जार--(सं० मार्जार) पु० बिलाव, बिल्ला।

सं० मञ्जीर--(मञ्ज=शब्द करना) पु० नूपुर, पांव का गहना, २ मंजीरा, क्षुद्रघण्टिका, छोटी घंटी, घुंघुरू, पायजेब।

सं० मञ्जु, मञ्जुल--(मञ्ज=शुद्ध अथवा सुन्दरहोना) गु० मनोहर, सुन्दर, मधुर, मनमाना, मनचाहा।

सं० मञ्जूषा--(मञ्ज=सुन्दर होना) स्त्री० पिटारा, पिटारी, कपड़े रखने की सन्दूक, बक्स।

प्रा० मटक, मटकन--(मटकना) भा० स्त्री० चोचला, नखरा, हाव भाव, झांवली।

प्रा० मटकना--क्रि० अ० पलक मारना, झपकना, २ आंखें लड़ाना, आंख मारना, तिरछी चितवन से देखना, अठलाना, इतराना, भाव बताना, झांकना, ताकना।

प्रा० मटका--(मिट्टी) पु० गगरा, बड़ा घड़ा।

प्रा० मटकी--(मिट्टी) स्त्री० गगरी, २ मटकी।

प्रा० मटर--पु० एक अनाज का नाम।

प्रा० मटियाना--क्रि० अ० टालदेना, २ आंख झपकाना, २ सहना।

प्रा० मट्टी, मिट्टी--(सं० मृत्तिका) स्त्री० माटी, रेत, धूल।

प्रा० मट्टीकरना--बोल० नाशकरना, बरबाद करना, सत्यानाश करना।

प्रा० मट्टीखाना--बोल० मांसखाना।

प्रा० मट्टीडालना-बोल० दूसरे का दोष छिपाना, ऐबपोशी करना।

प्रा० मट्टीदेना--बोल० गाड़ना, मुर्दे को दफन करना।

प्रा० मट्टीपरलड़ना-बोल० धरती के लिये झगड़ना।

प्रा० मट्टीमेंमिलना--बोल० सत्यानाश होजाना, नष्ट होना, खराब होना, बरबादहोना, २ बेइज्जतहोना।

प्रा० मट्टीहोना--बोल० दुबलाहोना, निर्बल होना, २ सत्या नाश होना।

प्रा० मट्ठा--(सं० मन्थित, मन्थ्=मथना) पु० छाछ, मही।

सं० मठ-(मठ्=बसना) वि० पु० गुसाइयों के रहनेका घर, २ विद्यार्थियों के पढ़नेकी जगह, पाठशाला, देवागार।

प्रा० मठरी } (मिष्ट) स्त्री० एक
मठली } तरह का मीठा पकवान।

प्रा० मड़ोड़ } (मड़ोड़ना) स्त्री०
मरोड़ } ऐंठ, बल, पेंच।

प्रा० मड़ोड़ना } क्रि० स० ऐंठना
मरोड़ना } पेंचदेना, बलदेना।

प्रा० मढ़ा--(सं० मण्डप) पु० उस जगह का नाम जिसको ब्याह में फूलों आदि से संवारते हैं और जहां शास्त्र के अनुसार ब्याह का काम होता है।

प्रा० मढ़ी }
मढ़ैया } (सं० मठ) स्त्री० झोपड़ी, कुटी।
मंढी }

सं० मणि--(मण्=आवाज़ निकलना) स्त्री० हीरा पन्ना आदि रत्न, बहुत मोल का पत्थर।

प्रा० मणियारा--क० पु० मणि युक्त मणि वाला।

सं० मण्डन--(मडि=शोभना) भा० पु० गहना, ज़ेवर, अलङ्कार, भूषण, शोभा।

सं० मण्ड--पु० मांड, पीच, पिच्छ, फालूदा, २ कलार, कलवार, मदिरा।

सं० मण्डप--(मण्ड=शोभा, पा=बचाना) पु० एक खुला हुआ मकान जिसको ब्याह अथवा और किसी उत्सव में फूलों से संवारते हैं और जहां ब्याह का काम होता है, २ मंदिर, देवालय।

सं० मण्डल--(मडि=शोभना) पु० गोल जगह, चक्कर, गोला, २ चांद वा सूर्य का घेरा, ३ गोलतंबू, ४ देश, ज़िला, सूबा जो बीस अथवा चालीस योजन तक हर ओर फैलाव में हो,—जैसे व्रजमण्डल, कारोमण्डल आदि।

सं० मण्डलाकार--(मण्डल + आकार) गु० गोल, गोलाकार, चक्राकार।

सं० मण्डलाधिप--(मण्डल+अधिप) पु० चार सौ योजनका मालिक, कलक्टर, डिप्टी कमिश्नर छोटा राजा।

सं० मण्डलाना--(मण्डल) क्रि० अ० घिरआना, घूमना, फिरना।

सं० मण्डली--(मडि=शोभना) स्त्री० सभा, समाज, गिरोह।

सं० मण्डलीक--क० पु० दशलाख रुपये की आमदनी वाला।

प्रा० मण्डा-पु० एकपेड़े जैसी मिठाई।

सं० मण्डित-(मडि=शोभना) कर्म० शोभायमान, शोभित, भूषित।

प्रा० मण्डी-स्त्री० बाजार जहां अनाज और घी आदि बिकें।

सं० **मण्डूक**—(मडि=शोभा देना, (वर्षा ऋतु को) पु० मेंड़क, बेंग।

सं० **मत**—(मन्=जानना) पु० सलाह, सम्मति, २ अभिप्राय, चाह, ३ धर्म, मजहब, प्रतीत, विश्वास, ४ ज्ञान, सीग़ा, तरीका, गु० पु० जानाहुआ, २ मानाहुआ, ३ पूजा हुआ, पूज्य।

प्रा० **मत**—(सं० मा) क्रि० अ०न, नहीं, नकरो, निषेधवाचक।

सं० **मतंग**—(मद्=मस्त होना) पु० हाथी, गज, २ मेघ, बादल, ३ एक ऋषि का नाम।

सं० **मतमतान्तर**—गु० दूसरा धर्म, दूसरा मजहब, दूसरी राह।

प्रा० **मतवाला**--(सं० मत्तवत्)गु० मस्त, मदमाता, उन्मत्त।

सं० **मतविरुद्ध**--गु०मजहब के खिलाफ़, धर्मविरोधी।

प्रा० **मता**, **मतौ** } (सं० मत)पु०सलाह, विचार, सम्मति।

सं०**मतावलम्बी**--(मत=धर्म्म, वा सम्मति, अवलम्बी=रखनेवाला) क० पु० किसी धर्म को मानने वाला, पंथी, किसी के सलाह पर चलने वाला।

सं० **मति**--(मन्=जानना) स्त्री० बुद्धि, समझ, ज्ञान, २ इच्छा, चाह, ३ स्मृति, यादकरने की शक्ति।

सं० **मतिभ्रम**--(मति+भ्रम) पु० भूल, चूक, उलटी समझ, विपरीतबुद्धि।

सं० **मतिमन्द**—गु० मंद बुद्धि, कमअक्ल, कुन्द जेहन।

सं० **मतिधीर**- गु० दृढ़बुद्धि।

सं०**मतिमान्**—(मति=समझ, मत्-वाला) गु० बुद्धिमान, समझदार, चतुर, प्रवीण।

सं० **मतिहीन**—(मति+हीन)गु० बेसमझ, मूर्ख, बुद्धिहीन, निर्बुद्धि।

सं० **मत्त**—(मद्=मस्त होना) गु० मतवाला, मस्त, उन्मत्त, घमंडी।

सं० **मत्सर**-- (मद्=घमंडकरना, वा मस्त होना) पु० डाह, द्वेष, जलन, हसद, ईर्षा, परसन्ताप।

सं० **मत्स्य**--(मद्=खुशी करना, वा मस्त होना) पु० मछली, मच्छ, २ विष्णु का पहला अवतार, ३ हिंदुस्थान का एक भग-जिसको अवदिनाज पुर और रंगपुर कहते हैं, ४ एक पुराण का नाम।

सं० **मत्स्यगन्धा**--स्त्री० मच्छोदरी, व्यास की माता।

सं० **मथन**--(मथ्=मथना) पु० महना, मंथना, विलोवन।

प्रा० **मथना**—(सं० मंथन) क्रि० स० महना, बिलोना, बिलोड़ना।

प्रा०**मथनिया**, **मथनी** (सं० मन्थान, मन्थी,मथ्=मथन) स्त्री० दूध

की लकड़ी, मथानी, महानी।

सं॰ मथित--स्मि॰ पु॰ मथागया।

सं॰ मथुरा--(मथ्=मारना, या कुचलना जहां बहुत से राक्षस कुचले और मारे गये हैं) स्त्री॰ एक नगरी का नाम-जो श्रीकृष्ण की जन्मभूमि और हिंदुओं के तीर्थ की जगह है।

ग्रा॰ मथुरिया--(सं॰ माथुरीय) पु॰मथुराके ब्राह्मणों की एकजाति।

सं॰ मद--(मद्=प्रसन्न होना,वा मस्त होना, वा घमंड करना) पु॰ आनन्द, हर्ष,खुशी, २ हाथी की कनपटियों अथवा गालों से चूता हुआ पानी, ३ मदिरा, दारू, मद्य, शराब, ४ घमंड, गर्व, अहंकार, ५ मतवालापन, नशा, मस्ती, ६ वीर्य्य, ७ कस्तूरी।

सं॰ मदक--क॰ पु॰ अफीम के संयोग से बना हुआ नशा, नशा करनेवाली चीज।

सं॰ मदन--(मद्=प्रसन्न होना वा मस्तहोना) पु॰ कामदेव।

सं॰ मदनबाण--(मदन + वाण) पु॰ एक फूल का नाम।

ग्रा॰ मदमाता--(सं॰ मदमत्त)गु॰ मतवाला, मस्त।

ग्रा॰ मदार--(सं॰ मन्दार) पु॰ अकवन, अर्क।

सं॰ मदिर--पु॰ लालखदिर।

सं॰ मदिरा--(मद्=प्रसन्न होना, अथवा मस्त होना)ग॰ स्त्री॰ मद, मद्य,दारू,शराब, आसव, अर्क।

सं॰ मदोत्कट--पु॰ मत्तगज।

सं॰ मदोद्धत--गु॰ मतवाला।

सं॰ मदोन्मत्त-(मद्=घमंड,उन्मत्त=मस्त) गु॰घमंड से मस्त, मतवाला, मदमाता।

सं॰ मद्य--(मद्=प्रसन्नहोना, वा मस्त होना) ग॰ पु॰ दारू,शराब, मदिरा, मद।

सं॰ मद्यप--(मद्य + प, पा=पीना) क॰ पु॰ सुरापायी, शराबी।

सं॰मधु--(मन्=पूजना,वामद्=प्रसन्न होना)पु॰ शहद, फूलों का रस, २ मद, मदिरा, शराब,३वसन्तऋतु, ४ चैत का महीना, ५ एक राक्षसका नाम जिसको महामायाकी सहायता से विष्णुने मारा, ६ दूध, ७ पानी ८ मीठा रस, ९ महुआ, १० मिठास गु॰ मीठा।

सं॰ मधुकर-(मधु=शहद, कृ=करना) पु॰ भँवरा, भौंरा, भ्रमर।

सं॰ मधुप--(मधु=फूलों कारस, पा =पीना)पु॰ भौंरा, भँवरा, मधुकर।

सं॰ मधुपर्क--(मधु=शहद, पृच=मिलाना) पु॰ दही, घी, और शहद मिली हुई चीज़ अथवा आज्यभाग

पलंग्राह्यं दधित्रिपलमेवच, मधुना पलमेकंतु मधुपर्कस्सउच्यते । घी टकाभर, दही तीनटकाभर, शहद टकाभर इसको मधुपर्ककहते हैं ।

सं० मधुपुरी—(मधु=एक राक्षसका नाम, पुरी=नगरी) स्त्री० मथुरा ।

सं० मधुवन—(मधु=एक राक्षस, वा मधु=मीठा, वन=जंगल) पु० मथुरा के पास का वन, २ सुग्रीव के बाग का नाम ।

प्रा० मधुमक्खी } (सं० मधुमक्षिका)
मधुमाखी } स्त्री० शहद की मक्खी ।

सं० मधुमास--(मधु+मास) पु० [चैत का महीना ।

सं० मधुर--(मधु=मिठास,रा=लेना) गु० मीठा, २ मनमाना, मनचहीता, प्यारा । [मिठास ।

प्रा० मधुरता--(मधु) भा० स्त्री०

प्रा० मधुरी—(मधुर) गु० स्त्री० मीठी, रसीली, सुहानी ।

सं० मधुलिह् -(मधु=शहद, लिह्= चाटना) पु० भ्रमर, भौरा ।

सं० मधुव्रत—पु० भ्रमर ।

सं० मधुसूदन--(मधु=एक राक्षस का नाम, सूदन मारनेवाला सूद्= मारना) पु० विष्णु, भगवान् ।

सं० मध्य—(मन्=जानना, वा मा= शोभा, धा=रखना) पु० बीच, १ नित्य सं० २ बीचमें, में, मांझ, भीतर. अन्दर, दर्मियान ।

सं० मध्यदिवस—पु० दोपहर ।

सं० मध्यदेश—पु० मुल्क मुतवस्सित, स्यरटल् मार्विश ।

सं० मध्यम--(मध्य) गु० बिचला, बीचका, २ अच्छा न बुरा, उदासीन ।

सं० मध्यमलोक } (मध्य+लोक)
मध्यलोक } पु० बीच का लोक, पृथ्वी, मनुष्यलोक, मर्त्य लोक, यह दुनिया ।

सं० मध्यमा--(मध्यम) स्त्री० बीच की अंगुली, २ गु० बीचकी ।

सं० मध्यवर्त्ती—(मध्य=बीचमें,वर्त्ती =होनेवाला, वा रहनेवाला, वृत्= होना) क० पु० बिचवैया, मध्यस्थ ।

सं० मध्यस्थ--(मध्य=बीच में, स्था =ठहरना) क० पु० बिचवैया,मध्य वर्त्ती, साक्षी ।

सं० मध्याह्न—(मध्य=बीच, अहन्= दिन) पु० दोपहर, दिन का बीच ।

सं० मन--(मनस्,मन=जानना) पु० चित्त, हृदय, हिरदा,आत्मा, दिल ।

प्रा० मनचोर--बोल० मनको लुभाने वाला,जिसमें मनलगजाय,दिलगीर ।

प्रा० मनभाना--बोल० मन को अच्छा लगना, सुहाना लगना ।

प्रा० मनभानामुंडियाहिलाना-- बोल० जिस चीज़ को मन चाहे उसको नहींचाहनेकाबहानाकरना ।

प्रा० मनभावन } बोल० मनो
मनभावना } सुहावना

लचरप, दिलगीर।

प्रा० मनमानता } बो० सुहावना,
मनमाना } जो मनको अच्छालगे, मनचाहा, दिलख्वाह।

प्रा०मनमाररहना-बोल० संतोष के साथ दुःखको सहलेना। [रोकना।

प्रा०मनमारना-बोल० अपनीचाहको

प्रा०मनलाना--बोल०मन लगाना, ध्यानदेना, ग़ौरकरना।

प्रा० मन--पु० चालीस सेर।

प्रा० मनका-(सं० मणि) पु०माला का दाना, २ गरदन की हड्डी।

प्रा० मनकाढलकना--बोल०मरने परहोना, मराचाहना, अब तबहोना।

प्रा० मनकामना--(सं० मनोकामना) स्त्री० मन की इच्छा, मन का मनोरथ, दिलीख्वाहिश।

प्रा० मनघटा--पु० कुंए के आसपास का चबूतरा।

सं० मनन--(मन्=जानना) भा०पु० चिन्तन, सुमिरन, ध्यान, ज्ञान, अभ्यास, विचार।

प्रा० मनमोहन--(मन+मोहन)पु० श्रीकृष्ण, गु० मनभावन, मनोहर।

सं०मननशक्ति--स्त्री०विचारशक्ति, ग़ौरकरने की ताक़त।

प्रा० मनसा--(सं० मानस) स्त्री० मन, चाह, इच्छा, विचार, मतलब।

सं० मनसिज--(मनसि=मनमें, जन् =पैदा होना) पु० कामदेव, गु० मनका, मनसे जो पैदा हो।

सं० मनस्विन्--गु० वीर, मनमौजी, यथेच्छाचारी, प्रशस्त।

प्रा०मनहु } (सं० मन्य) क्रि०
मनहू } वि० मानो जानों
मानहु } जैसे।

सं० मनाक्--अव्य० ईषत्, स्वल्प, किञ्चित्, सूक्ष्म, बारीक, मन्द।

प्रा०मनि } (सं०मणि) स्त्री० रतन,
मन } जवाहिर, बहुत मोलका पत्थर।

सं० मनीषा--स्त्री० बुद्धि, अक़्ल।

सं०मनीषिन्-पु०पण्डित, बुद्धिमान्।

प्रा०मनिहार--(सं०मणिकार) पु० चूड़ी बेचनेवाला, बिसाती।

सं० मनु--(मन्=जानना) पु०ब्रह्मा का बेटा, मनुष्यों का पुरषा, मनुस्मृतिकाबनाने वाला,—(स्वयम्भू आदि चौदह मनु हैं)

सं०मनुज--(मनु, जन्=पैदाहोना)पु० मनु का वंश, मनुष्य, आदमी।

सं० मनुजाद--(मनुज=मनुष्य, अद् =खाना) पु० राक्षस, दैत्य।

सं० मनुष्य--(मनु) पु०मनु के वंश, पोते, आदमी, मनुज।

सं०मनुष्यगणना-स्त्री०मर्दुमशुमारी।

सं० मनुष्यता--स्त्री० इन्सानियत, आदमियत।

प्रा० मनुसाई (सं०मनुष्यता) स्त्री० पुरुषार्थ, मनुष्यपन।

प्रा० मनुहार--(सं०मनोहारि, मनस् =मन, हृ=लेना) गु० सुन्दर, मनोहर, मन हरनेवाली, २ स्त्री० आदरमान, मीठा बोलना।

सं० मनोज--(मनस्=मन, जन्= पैदा होना) पु० कामदेव गु० मन से जो पैदा हो।

सं० मनोजव--(मनस्+जव) गु० मन के समान जिसका वेग हो अतिवेगवान्, तेजरौ।

सं० मनोज्ञ--(मनस्=मन, ज्ञा=जानना) गु० सुन्दर, मनोहर, सुडौल।

सं०मनोभव, मनोभू, मनोभूत (मनस्=मन, भू=पैदा होना)क०पु०कामदेव, गु०जो मनसे पैदाहो।

सं० मनोभिलाषित (मनः+अभिलाषित) र्म० पु० मनोवांछित, मनचाहा, हस्बदिलख्वाह।

सं० मनोरथ (मनस्+रथ, अर्थात मन का रथ) पु० चाह, इच्छा, अभिलाष, कामना।

सं० मनोरम (मनस्=मन,रम्=प्रसन्न करना) गु० मनोहर, सुन्दर।

सं०मनोहत-गु०व्यग्रचित्त,व्याकुल।

सं०मनोहर-(मनस्=मन,हृ=लेना)गु० मनको लेलेनेवाला,सुन्दर,सुहाना।

सं० मन्तव्य (मन्+तव्य, मन्= विचारना) र्म० पु० माननीय, चिन्तनीय, सलाह, राय।

सं० मन्ता-क० पु० मंत्री।

सं० मन्त्र--(मन्त्रि=एकान्तमें कहना, वा सलाह करना) पु० वेद का एक भाग जिसमें देवताओं की स्तुति है, २ मंत्र यंत्र, जादू टोना, टटका, ३ सलाह, छिपी बात, सम्मति, उपदेश।

सं०मन्त्रण-भा०पु०सम्मति,विचार।

सं० मन्त्रणा--भा० स्त्री० परामर्श, विचार, युक्ति, सलाह, सम्मति।

सं० मन्त्रज्ञ-- पु०तांत्रिक, मन्त्र जाननेवाला, नीतिज्ञ, जासूस, दूत।

सं० मन्त्रवित् (मन्त्र+विद्=जानना) पु० तांत्रिक, मंत्रज्ञ, नीतिज्ञ।

सं० मन्त्रित--र्म०पु० मन्त्र से शुद्ध कियागया, संस्कार किया गया।

सं० मन्त्री--(मन्त्र) पु० प्रधान, उपदेशक, सचिव, सलाहकार, वज़ीर।

सं० मन्थन--(मन्थ्=विलोना) भा० पु० मथन, विलोवन, विलोड़न।

सं० मन्थनी--स्त्री० मथानी।

सं० मन्द--(मदि=आलसी होना,वा अचेत होना, वा सोना) गु० सुस्त, आलसी, धीमा, धीरा, मूढ, मूर्ख, ३ निकम्मा, नीच, बुरा, ४ अभा-

अभागी, ५ नीचा, ६ थोड़ा, कम, ७ पतला, पु० शनैश्चर, क्रि० वि० धीरे धीरे, मन्द मन्द, बोल० धीरे धीरे।

सं० मन्दगति–(मन्द=धीमी, गति =चाल) स्त्री० धीमी चाल, गु० धीरे चलनेवाला।

सं० मन्दबुद्धि, मन्दमति }(मन्द=सुस्त, वा कम बुद्धि वा मति =अक्ल) गु० मूर्ख, अज्ञानी, अनाड़ी, अल्पबुद्धि, बुद्धिहीन।

सं० मन्दभाग्य-(मन्द=सुस्त, वा कम, भाग्य=भाग) गु० अभागा, कमबख्त।

सं० मन्दर–(मदि=सराहना, वा प्रसन्न होना) पु० एक पहाड़ का नाम जिससे देवता और राक्षसों ने समुद्र मथा था, २ स्वर्ग का पेड़ पारिजात, ३ स्वर्ग, गु० भारी, मोटा।

प्रा० मन्दा–(सं० मन्द) गु० धीमा, धीरा, कोमल, ठंढा, २ सस्ता।

सं० मन्दाकिनी (मन्द=धीरे, अक्=जाना) स्त्री० स्वर्ग की गंगा।

सं० मन्दादर (मन्द+आदर) गु० निरादर, कमकदर।

सं० मन्दार–(मदि=सराहना) पु० स्वर्ग का एक पेड़, कल्पवृक्ष।

सं० मन्दिर (मदि=सराहना, वा सोना, जिसमें) पु० घर, २ देवालय, देवस्थान, देहरा।

सं० मन्दोदरी–(मन्द=पतला, उदर=पेट, जिसका पेट पतला हो) स्त्री० मयतनया, रावण की स्त्री।

सं० मन्मथ–(मत्=ज्ञान, मथ्=बिगाड़ना, नाश करना या डुलाना) पु० कामदेव। [पु० महादेव।

सं० मन्मथारि–(मन्मथ+अरि)

सं० मन्यु–पु० शिव, यज्ञ, क्रोध, शोक, दीनता, अहंकार।

सं० मन्वन्तर-पु० इकहत्तर चौयुगीका वा (३११४४८०००) वर्षका, चौदह मनु हैं उनमेंसे एकका अधिकार।

सं० मम–(अस्मद्) सर्वना० मेरा।

सं० ममता–(मम) भा० स्त्री० मोह, माया, प्रेम, प्यार, स्नेह, २ अभिमान, घमंड, मेरापन, मेरा जानना।

सं० मय–(मय्=जाना) यह शब्द दूसरे के साथ आताहै तब इसका अर्थ मिला हुआ, या बना हुआ, होताहै जैसे मणिमय=मणियोंसे बनाहुआ।

सं० मय–(मय्=जाना) पु० एक राक्षस का नाम, ऊंट, खच्चर।

प्रा० मयंक–(सं० मृगाङ्क) पु० चांद।

सं० मयतनया–(मय=एक राक्षस का नाम, तनया=बेटी) स्त्री० मन्दोदरी, रावण की स्त्री।

प्रा० मयत्री (सं० मैत्री) भा० स्त्री० मित्राई, मिताई, प्रीति, प्यार, दोस्ती।

प्रा० मयन (सं० मदन) पु० काम-

देव, मवक्किलशहरत।

सं० मयूख--(मा=नापना, वा मय्=जाना) पु० किरण, तेज, शोभा, शिखा, चोटी।

सं० मयूर-(मी=मारना, जो सांप आदि जानवरों को मारता है) पु० मोर, एक पखेरू का नाम

सं० मरक--(मृ=मरना) पु० मरी, सब में फैलनेवाला रोग।

सं० मरकत--(मृ=नाश होना, जिससे अंधेरा नष्ट होजाता है) पु० पन्ना, हरीमणि, जमुर्रद।

प्रा० मरखपना -बोल० मर जाना, मर मिटना।

प्रा० मरघट--(सं० मरघट्ट, मर=मरना, घट्ट=घाट) पु० मसान, वह जगह जहां मुर्दा जलाया जाता है।

सं० मरण--(मृ=मरना) भा० पु० मरना, मौत, नाश, विनाश।

प्रा० मरना--(सं० मरण) क्रि० अ० जी निकलना, प्राण छूटना, २ किसी चीज को बहुत चाहना।

प्रा० मरपचना--बोल० बहुत दुख सहना, बहुत मिहनत करना।

सं० मरणप्राय-- गु० संनिकटमृत्यु, करीबुल्मर्ग।

प्रा० मरम--(सं० मर्म) पु० भेद, छिपी बात, अभिप्राय, मार बात, २ हृदय आदि अङ्ग।

सं० मराल--(मृ=मारना) पु० हंस, राजहंस, २ मेघ, गु० साफ़, स्वच्छ।

प्रा० मरी-- (सं० मारी, मृ=मरना वा मारना) पु० महामारी, मारनेवाला रोग हैजा व ताऊन।

सं० मरीचि- (मृ=नाश करना, अंधेरे को या अज्ञान को) पु० सप्त ऋषियों में का एक ऋषि, ब्रह्मा का बेटा, स्त्री० किरण।

सं० मरीचिमाला-स्त्री० किरणसमूह।

सं० मरीचिमाली--पु० सूर्य।

सं० मरु--(मृ=मरना, जहां पानी बिन लोग मरते हैं) पु० निर्जलदेश, मरुस्थल, मारवाड़, २ बिन पानी का जङ्गल।

सं० मरुत्-- (मृ=मरना, जिन को इन्द्र ने दिति के गर्भ में मार कर उनचास टुकड़े किये थे उनके नाम यह हैं १ एकज्योति २ द्विज्योति ३ त्रिज्योति ४ ज्योति ५ एकशक्र ६ द्विशक्र ७ त्रिशक्र ८ इन्द्र ९ मगदृश्य १० ततः ११ पतिसकृत् १२ पर १३ मित १४ सम्मित १५ सुगति १६ ऋतजित् १७ सत्यजित् १८ सुषेण १९ सेनजित् २० अन्तिमित्र २१ अनमित्र २२ पुरुमित्र २३ अपराजित २४ ऋत २५ ऋतवाह २६ धर्ता २७ धरुण २८ ध्रुव २९ विधरण ३० देवदेव ३१ ईदृक्ष ३२ अदृक्ष ३३ एतादृक् ३४ अमदृश ३५ समर ३६ धाता ३७ दुर्ग ३८ मिति ३९ भीम

४० अभियुक्त ४१ अयात् ४२ सह ४३ द्युति ४४ द्युपु ४५ अनाय्य ४६ अथवास ४७ काम ४८ जय ४९ विराट्। इसकी कथा श्रीमद्भागवत में इस तरह से लिखी है कि एक बार दैत्योंकी मा दिति इस विचारसे अपने पति कश्यप जीके बतलाने से अगहन का व्रत करने लगी कि मेरे ऐसा बेटा हो कि इन्द्र को मार डाले इन्द्र को इस बात के सुनने से बड़ा डर हुआ। तब इन्द्र ब्राह्मण का रूप बन कर दिति की टहल करने लगा। एक दिन दिति शिर का बाल खुला छोड़ कर जूठे मुँह सो गई। ये दोनो बातें व्रत में अशुद्ध होने से इन्द्र अपना छोटा रूप बना के वज्र लिये दिति के पेट में घुस गया और वहां जाकर गर्भ में जो बालक था उसके सात टुकड़े कर डाले। तब वे सातों रोनेलगे। फिर इन्द्र ने एक एक के सातसात टुकड़े किये। पर परमेश्वर की इच्छा से और दिति के व्रत के प्रतापसे कोई नहीं मरा। उन सातों के उनचास बालक होकर रो कर के बोले कि इन्द्र अब हमको मत मारो। हम तुम्हारी सहायता करेंगे यह दशा देख कर इन्द्र उन लड़कों से बोला कि अब तुम मत रोओ। मरुत नाम होकर मेरे साथ रहो। फिर इन्द्र उन उनचासों बालकों समेत गर्भ की राह बाहर निकल आया। इस लिये, मरुतनाम पड़ा) पु० हवा, पवन, वायुदेवता।

सं० मरुस्थल--(मरु+स्थल) पु० निर्जलदेश, मारवाड़, मरुभूमि, रेगिस्तान।

सं० मर्कट--(मर्क्=जाना) पु० वानर, बन्दर।

सं० मर्कटी--स्त्री० वानरी, २ अपामार्ग, लटजीरा।

सं० मर्त / **मर्त्य**--(मृ=मरना) र्म० पु० मनुष्य, आदमी।

सं० मर्त्यलोक--(मर्त्य+लोक) पु० पृथ्वी, मनुष्यलोक, यह संसार।

सं० मर्दक--(मर्द्+अक) क० पु० प्रेपक, लोढ़ा, शिल का बट्टा।

सं० मर्दन--(मृद्=चूर चूर करना) भा० पु० मलना, रगड़ना, चूर करना, नाश करना।

सं० मर्दित--र्म० पु० चूर्णित।

प्रा० मर्दनियां--(सं० मर्दनीया) पु० नौकर जो शरीर का मैल उतारने के लिये तेल आदि मलते हैं।

सं० मर्म्म--(मृ=मरना) पु० भेद, छिपी बात, मतलब, २ शरीर के जोड़, शरीरके वे अंग जिनके टूटने

से आदमी जी नहीं सक्ता ।

सं० मर्म्मी—क० पु० भेदी, भेद जाननेवाला, राज़दाँ ।

सं०मर्म्मज्ञ—(मर्म्म=भेद,ज्ञ=जानना) पु० भेद जाननेवाला, बुद्धिमान् ।

सं०मर्यादा—(मर्या=सीमा, आ+दा =लेना, वा रखना) स्त्री० मान, पत, प्रतिष्ठा,इज्जत,२ सींव, सीमा, हद ।

सं० मर्श / मर्शन } (मृश्=छूना, ध्यान करना) भा० पु० स्मरण, विचार,सम्मति, निश्चय ।

सं० मर्ष / मर्षण } (मृष्=सहना, क्षमाकरना) पु० तितिक्षा, सहना, शान्ति, बर्दाश्त ।

सं० मल—(मृज्=शुद्ध करना) पु० मैल, तलछट, गाद, २ गूह, ३ पाप गु० मैला ।

सं० मलग्राही / मलापकर्षी } क० पु० भंगी, खाकरोब।

प्रा० मलना—(सं० मर्दन) क्रि० स० रगड़ना, मसलना, मींजना, घिसना । [कपड़ा ।

प्रा० मलमल—स्त्री० एक तरह का

प्रा० मलमास—पु० अधिक महीना, लौंद का महीना । [करना ।

प्रा० मलमेटकरना— बोल० नष्ट

सं० मलराशि—स्त्री० पापकीराशि ।

सं० मलय / मलयगिरि } (मल्=रखना) पु० एक पहाड़ जो दक्षिण में है और जहां बहुत अच्छा चन्दन होता है ।

प्रा०मलयागीरी / मलागीरी } (सं०मलयगिरि) पु०चन्दनकारंग।

प्रा० मलार-(सं० मल्लार) स्त्री० एक रागिणीका नाम जो बरसात में गाई जाती है ।

सं० मलिन / प्रा० मलीन } (मल=मैल) गु० मैला, अशुद्ध, अपवित्र, बुरा, २ उदास,घबरायाहुआ ।

सं० मलिनचित्त-क० पु० कपटी, दगाबाज़, बुरेदिलका ।

सं० मलिन्द पु०भ्रमर, भौंरा ।

प्रा० मलेछ-(सं म्लेच्छ) पु०मैली जाति के लोग, जंगली, असभ्य, वे लोग जिनकी बोली संस्कृत नहीं है और न वे हिन्दुओं के शास्त्रको मानते हैं ।

सं० मल्ल-(मल्ल्=रखना, वा पकड़ना) पु० बलवान, पहलवान,कुश्ती करनेवाला ।

सं० मल्लयुद्ध—(मल्ल+युद्ध) पु० कुश्ती, पहलवानो की लड़ाई, भिड़ाभिड़ी, बाहुयुद्ध ।

सं० मल्लिका--(मल्ल्=रखना) चमेली ।

सं० मशक--(मश्=गूंजना) पु० मच्छर, मच्छड़, मसा, डांस।

फ़ा० मशक—(मश्क) स्त्री० एक तरह का चमड़े का थैला जिस में पानी लाया जाता है।

प्रा० मशहरी (सं० मशक=मच्छर, हरी=दूरकरनेवाली, हृ=दूरकरना) स्त्री० एक कपड़ा जिसको मच्छरों से बचाके लिये पलंग पर तानते हैं।

प्रा० मष्ट--स्त्री० चुप, मौन।

प्रा० मष्टमारना—बोल० चुप रहना, मौन रहना, खामोश रहना।

प्रा० मसकाना--क्रि० स० चीरना, फाड़ना, दरकाना।

प्रा० मसलना--(सं०मर्दन, मृद् =मलना) क्रि० स० कुचलना, मलना, मींजना।

प्रा० मसान-- (सं० श्मशान) पु० मरघट, श्मशान, मुर्दाघाट।

सं० मसी--(मस्=बदल जाना वा नापना) स्त्री० स्याही, काली रोशनाई। [दवात।

सं० मसीपात्र--(मसी+पात्र) पु०

प्रा० मसूड़ा / **मसोड़ा** } (मांस) पु० दांतों के ऊपर का मांस।

सं० मसूर-- (मस=नापना, या बदलना) पु० एक अनाज जिसकी दाल बनती है।

सं० मसें--स्त्री० ब० व० मोछें निकलने के पहले के बहुत छोटे रवाल।

प्रा० मसोसना—क्रि० स० मरोड़ना, ऐंठना, २ निचोड़ना, ३ कुढ़ना, कलपना।

सं० मस्तक—(मस् = बदलना, वा नापना) पु० शिर, माथा, कपाल।

प्रा० मस्तूल—(पोर्तुगाली भाषा के शब्द Masto या Mastro से) पु० नाव का डंडा जिस पर पाल ताना जाता है।

प्रा० महंगा—(सं० महार्घ, महा= बड़ा, अर्घ=मोल) गु० बड़े मोल का, बहुत मोल का, बेशक़ीमत।

प्रा० महंगी— (महंगा) स्त्री० काल अकाल, गरानी, कुसमय, गु० महंगा शब्द का स्त्रीलिंग।

प्रा० महक—स्त्री० सुगन्ध, सुबास, गन्ध, खुशबू।

सं०महत्-(मह्=पूजना, वा बढ़ना) गु० बड़ा, श्रेष्ठ, उत्तम, माननेयोग्य, पूजने योग्य, स्त्री० बड़ाई, मान, प्रतिष्ठा।

प्रा० महतारी—(सं०महत्तरा बड़ी) स्त्री० मा, माता।

प्रा० महतो—(सं० महत) वह आदमी जो ज़मींदार की तरफ से गांव में महसूल उगाहने के लिये नियत कियाजाय, चौधरी, सरगरोह।

सं० महत्त्व--(महत्) भा० पु० बड़प्पन, बड़ाई।

प्रा० महना—(सं०मथन) क्रि०स० मथना, बिलोना।

सं० महन्त—(महत्) पु० मठधारी, गुसाईं अथवा वैरागियों का प्रधान।

प्रा० महर—(सं० महत्तर, बहुत बड़ा) पु० प्रधान। [उठानेवाला।

प्रा० महरा—पु० कहार, भोई, पालकी

प्रा० महरि, महरी—(सं० महिला, मह्=पूजना) स्त्री० भार्या, स्त्री, पत्नी, लुगाई।

सं० महर्षि—(महा+ऋषि) पु० परमऋषि, वेदव्यास आदि बड़े ऋषि।

सं० महा—(महत्, मह्=पूजना वा बढ़ना) गु० बड़ा, उत्तम, श्रेष्ठ, बहुत।

सं० महाकाय—(महा=बड़ा, काया =शरीर) पु० शिव का द्वारपाल, नन्दि, २ हाथी, गु० बड़ामोटा शरीरवाला।

सं० महाकाल—(महा=बड़ा, काल =काला, वा समय, वा मौत अर्थात् सब को नाश करनेवाला) पु० प्रलयके समयमें महादेव का रूप।

सं० महाकाली—(महाकाल) स्त्री० दुर्गा, देवी। [बड़ा कोढ़।

प्रा० महाकोढ़—(सं० महाकुष्ठ) पु०

सं० महाघोर—(महा=बहुत, या बड़ा, घोर=डरावना) गु० बड़ा भयानक, बहुत डरानेवाला, पु० एक नरकका नाम।

सं० महाजन—(महा+जन) पु० बड़ा आदमी, कोठीवाल, साहूकार

प्रा० महाजनी—(महाजन) स्त्री० महाजन का काम, कोठीवाली।

प्रा० महाजान—(सं० महाज्ञानी) गु० बहुत बुद्धिमान्।

प्रा० महातम—(सं० माहात्म्य) पु० बड़ाई, प्रतिष्ठा।

सं० महात्मा—(महा=बड़ा, आत्मा =जीव) गु० महाशय, सज्जन, उत्तम, बुजुर्ग, श्रेष्ठ।

सं० महादेव—(महा=बड़ा, देव=देवता) पु० शिव, महेश।

सं० महान्—(महत्) पु० महत्तत्त्व, गु० बड़ा, श्रेष्ठ।

सं० महानस—पु० पाकस्थान, चूल्हा गु० २ अतिप्रसन्न, हर्षद।

सं० महानुभाव—गु० प्रतापी, २ तजस्वाकार।

सं० महापातक—(महा+पातक) पु० बड़ापाप जैसे ब्रह्महत्या आदि।

सं० महापाप- (महा+पाप) पु० बड़ा पाप, महापातक।

सं० महापुरुष—(महा+पुरुष) पु० बड़ा आदमी, महात्मा, साधु, सज्जन।

सं० महाप्रभु—(महा+प्रभु) पु० परमेश्वर, २ शिव, ३ महाराजा, ४ पवित्र मनुष्य।

सं० महाप्रलय—(महा+प्रलय) पु० सृष्टि का नाश जो हर एक

४३२०००००००बरसों पीछे होता है, २ सारी सृष्टि का नाश जो ब्रह्मा के १०० बरसके पीछे होता है, जिस वर्षका हर एक दिन ऊपर लिखेहुए बरसों के बराबर होता है और ब्रह्मा की राति भी इतनेही बरसों की होती है । और इस महाप्रलयमेंऋषि मुनि देवता और ब्रह्मा समेत सातों लोक नष्ट होजाते हैं ।

सं० महाप्रसाद--(महा=बड़ा, प्रसाद=भोग या नैवेद्य) पु० देवताका भोग या नैवेद्य, जगन्नाथकाप्रसाद ।

सं० महाबली--(महा+बली) गु० बड़ा बलवान्, बड़ा पराक्रमी ।

सं० महाभटमानी--क० पु० बड़ा योद्धा माननेवाला ।

सं० महाभारत--(महा+भारत) पु० एक बहुत बड़ा इतिहास जो पद्यमें लिखाहुआ है, २ भरतवंशी राजाकौरवों और पांडवों की बड़ी लड़ाई जो कुरुक्षेत्रके मैदानमेंहुईथी।

सं० महाभूत--पु० पंचतत्त्व, पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश ।

सं०महामाया--(महा+माया) स्त्री० दुर्गा, देवी, शक्ति ।

सं० महाराज--(महा+राजा) पु० बड़ा राजा, राजाधिराज ।

सं० महाराजाधिराज--(महाराज+अधिराज)पु०सबसे बड़ा राजा ।

प्रा०महारानी--(सं०महाराज्ञी, महा=बड़ी, राज्ञी=रानी) स्त्री० राजा की बड़ी रानी, पाटरानी ।

सं० महार्घ--(महा+अर्घ) गु० बड़े मोलका, बहुमूल्य ।

सं० महालक्ष्मी--(महा+लक्ष्मी) स्त्री० संपदा, संपत्ति, ऐश्वर्य, २ अठारह भुजा की देवी, लक्ष्मी ।

प्रा० महावट--(माघ) स्त्री० माह महीने का मेह ।

प्रा० महावत--पु० हाथीवान ।

प्रा० महावर-- पु० लाखीरंग ।

सं० महावीर--(महा+वीर) पु० बड़ा शूरवीर, हनुमान् ।

सं० महाशय--(महा+आशय) गु० सज्जन, महात्मा, उदार, बड़ा और भला आदमी ।

सं० महाश्वेता-- स्त्री० सरस्वती ।

सं० महि / मही (मह्=पूजना, वा बड़ा होना) स्त्री०धरती धरणी, जमीन, पृथ्वी ।

सं० महिदेव-(महि+देव) पु० भूमिदेव, ब्राह्मण ।

सं० महिपाल / महीपाल (महि=धरती, पाल्=बचाना) पु० राजा, महाराजा ।

सं० महिमन्-पु० महत्त्व, बड़ाई, कीर्ति ।

सं०महिमा--(मह्=पूजना, वा बड़ा होना) स्त्री० बड़ाई, सराह ।

सं० महिला—स्त्री० नारी, स्त्री, २ माल कँकुनी।

सं० महिष—(मह्=पूजना, जो यज्ञ में वा बलिदान के समय पूजा जाता है) पु० भैंसा।

सं० महिषासुर-(महिष+असुर) पु० एक राक्षस का नाम जिसको दुर्गा ने मारा।

सं० महिषी-(मह्=पूजना या मानना) स्त्री० भैंस, २ रानी। [राज।

सं० महिषेश-पु० महिषासुर, २ यम-

प्रा० मही / मह्यो (सं० मथित, मथ्=मथना) पु० छाछ, मट्ठा।

सं० महीधर-(मही=धरती, धृ=रखना) पु० पहाड़, पर्वत, डूंगर।

प्रा० महीना-(सं० मास्) पु० तीस दिन, २ तनख्वाह, मासिक, तीस दिन की मजदूरी। [पु० राजा।

सं० महीप-(मही=धरती, पा=पालना)

सं० महीपति- (मही=धरती, पति =मालिक) पु० राजा, भूपति।

सं० महीरुह-पु० वृक्ष, वनस्पति।

सं० महीसुर-(मही+सुर) पु० ब्राह्मण

प्रा० महुआ-(सं० मधूक, मधु=मीठा) पु० एक पेड़ जिसका फल मीठा होता है और उसकी मदिरा बनाई जाती है। [दोपहरी।

प्रा० महूरत (सं० मुहूर्त) पु०

सं० महेन्द्र-(महा+इन्द्र) पु० इन्द्र, २ महाराजाधिराज, ३ एक पहाड़ का नाम।

सं० महेश / महेश्वर (महा=बड़ा, ईश वा ईश्वर=मालिक) पु० महादेव, शिव।

सं० महोक्ष-पु० बड़ा बैल, नन्दिकेश्वर

सं० महोत्सव-(महा + उत्सव) पु० बड़ा तिहवार, बड़ा पर्व, बड़ा दिन।

सं० महोदय-- पु० कान्यकुब्ज देश कन्नौज गु० २ प्रतापी, नामवर।

सं० मा-(मा=शोभना या आदर करना) स्त्री० शोभा, लक्ष्मी, २ माता, क्रि० वि० मत, नहीं।

प्रा० मा / माई (सं० माता) स्त्री० मैया, महतारी।

प्रा० मांग-स्त्री० लुगाइयों के शिर में एक लकीर सी होती है जहां से बाल जुदे किये जाते हैं, २ वह कुँवारी लड़की जिसकी सगाई हुई हो।

प्रा० मांगना- (सं० मार्गण, मृग्=खोजना) क्रि० स० चाहना, जाचना २ सगाई करना, निस्बत करना, सम्बन्ध करना।

प्रा० मांजना- (सं० मार्जन, मृज=शुद्ध करना, वा मज्जन, मज्ज=स्नान करना) क्रि० स० मलना, [illegible] करना, उजालना, [illegible]

प्रा० मांझा / मांझा पु० [illegible] नियों के [illegible]

२ वर्षा के नवीन जल का फेना।

प्रा० मांझ-(सं० मध्य) पु० बीच, मध्य,—मांझधार=नदीकेबीचमें।

प्रा० मांझा-पु०पतंगकी डोर, जिस मे कांच पीस कर और लेई या गोंद से मिला कर लगाया जाता है जिससे दूसरे की पतंग की डोर को काटते हैं।

प्रा० मांझी-(मध्य) पु० नाविक, नाव का मालिक।

प्रा० मांड-(सं० मण्ड, मन्=रखना) पु० भात का पानी।

प्रा० मांडना-(सं० मर्दन) क्रि० स० मलना, मींजना, मसलना, २ करना, रचना, बनाना।

प्रा० मांद- स्त्री० जंगली जानवरकी गुफा, गु० हलका, २ फीका, सीठा।

सं० मांस-(मन=रखना वा पूजना, जो शक्ति की पूजा और यज्ञ आदि में पूजा जाता है)पु०गोश्त, सालन।

सं० मांसल-गु० स्थूल, मोटा।

सं० मांसाद-(मांस+अद) क० पु० मांसखानेवाला, गोश्तख़्वार।

सं० मांसाहारी (मांस+अहारी= खानेवाला) क० पु० मांस खाने वाला, मांसभक्षी।

सं० मांसभक्षक } (मांस भक्ष्= मांसभक्षी } खाना) क०पु० मांस खाने वाला, मांस आहारी।

प्रा० मांह } (सं० मध्य) में, भीतर, मांहि } बीच।

प्रा० माखना-क्रि० अ० क्रोध करना, कोपना, खिसियाना।

प्रा० माखित-(माखना) गु० क्रोधित, खिसियाना हुआ, २ ईर्षा या द्वेष या डाह करता हुआ।

सं० मागध-(मगध) गु० मगध देश का, पु० भाट या कड़खैत जिनका काम राजाओं की और बड़े आदमियों की बड़ाई करने का है।

सं० माघ-(मघा एक नक्षत्रकानाम इस महीने में पूरा चांद इस नक्षत्र के पास रहता है और इस महीने की पूनौं के दिन यह नक्षत्र होता है) पु० बरस का ग्यारहवां महीना।

प्रा० माछी (सं० मक्षिका)स्त्री० मक्खी, माखी।

प्रा०माजूफल } पु० एक फल जो मांजूफल } दवाई में काम आता है।

[मिट्टी, मट्टी।

प्रा० माटी (सं० मृत्तिका) स्त्री०

प्रा० माठा-गु० नटखट, ढीठ, मगरा, सुस्त, २ (सं० मन्थित, मन्थ=मथना) पु० मट्ठा, छाछ।

प्रा० माणिक-(सं० माणिक्य, मणि) पु० लाल, एक लाल रङ्ग का बहुत मोल का पत्थर।

प्रा० मात-(सं० माता) स्त्री० मा-

त्रा, लगमात, स्वरों का व्यञ्जनों के साथमिलान, २ (सं० माता)मा, माता । [तना, शहमात ।

फा० मात--स्त्री० बाजी हराना, जी-

प्रा० मातकरना-बाज़ी जीतना ।

सं० मातङ्ग--(मद्=मस्त होना)पु० हाथी, हस्ती, गज ।

सं० मातलि--(मत+सलाह,ला=लाना अर्थात् सलाह बतलाना) पु० इन्द्रका रथवान्,इन्द्रकासारथी।

प्रा० माता--(सं० मत्त) गु० मस्त, मतवाला, उन्मत्त ।

सं० माता-- (मान्=पूजना, या मन् =आदर मान करना) स्त्री० मा, मैया, माई २ शीतला ।

सं० मातामह--(माता) पु०माका बाप, नाना । [भाई, मामा ।

सं० मातुल--(मातृ=मा)पु० माका

सं०मातुलानी } स्त्री० मामी,
मातुली } माई ।

सं० मातृष्वसा--स्त्री० मौसी, खाला, माकी बहिन ।

सं० मातृष्वस्रेय--पु० मौसीका वेटा, खालाजाद ।

सं० मात्र--(मा=नापना) क्रि०वि० केवल, अल्प, थोड़ा, कुछ,उतनाही, वहीभर ।

सं० मात्रा--(मा=नापना) स्त्री० नाप, परिमाण,२ह्रस्वदीर्घप्लुतस्वर ३दवाका नाप, ४समयकापरिमाण।

प्रा० माथा--(सं० मस्तक) पु० शिर, कपाल, मस्तक, २ नाव का अगला भाग ।

प्रा० माथाठनकना-बोल० किसी कामके बिगड़ने का हाल पहले से मालूम होजाना ।

प्रा० माथारगड़ना--बोल० बहुत गरीबी से प्रार्थना करना, या देवता,मुनि,अथवा राजासेगरीबी के साथमांगना, २ बहुत मिहनत करना ।

प्रा० माथेपरचढ़ना-बोल०अन्याय करना, जुल्म करना, प्रजाको बहुत दुःख देना, सताना ।

सं० माथुर--(मथुरा) पु० मथुरा का रहने वाला, २ कायथोंकी एक ज़ात, ३मथुराकेब्राह्मणोंकीएकज़ात ।

सं० मादक--(मद्=मस्त होना)क्र० पु० मस्तकरने वाला, नशेकीचीज़ ।

सं० मादन--क्र० पु० हर्ष कारक, फा० खानसे निकलीचीजें (खानि)

सं०माधव--(मा=लक्ष्मी,धव=पति) पु० लक्ष्मीपति, विष्णु ।

सं० माधव--(मधु) पु० श्री कृष्ण, २ वसंत ऋतु,३ वैशाखका महीना, ४ महुआ, गु० शहदका ।

सं० माधुर्य्य--(मधुर) भा० पु० मिठास, मधुरता ।

सं० माध्वी--(मधु) स्त्री० महुवे मदिरा, २ एक तरहकी मछली

२ वर्षा के नवीन जल का फेना।

प्रा० मांझ-(सं० मध्य) पु० बीच, मध्य,—मांझधार=नदीकेबीचमें।

प्रा० मांझा-पु०पतंगकी डोर, जिस मे कांच पीस कर और लेई या गोंद से मिला कर लगाया जाता है जिससे दूसरे की पतंग की डोर को काटते हैं।

प्रा० मांझी-(मध्य) पु० नाविक, नाव का मालिक।

प्रा० मांड-(सं० मण्ड, मन्=रखना) पु० भात का पानी।

प्रा० मांडना-(सं० मर्दन) क्रि० स० मलना, मींजना, मसलना, २ करना, रचना, बनाना।

प्रा० मांद- स्त्री० जंगली जानवरकी गुफा, गु० हलका, २ फीका, सींठा।

सं० मांस-(मन्=रखना वा पूजना, जो शक्ति की पूजा और यज्ञ आदि में पूजा जाता है)पु०गोश्त, सालन।

सं० मांसल-गु० स्थूल, मोटा।

सं० मांसाद-(मांस+अद) क० पु० मांसखानेवाला, गोश्तख्वार।

सं० मांसाहारी (मांस+अहारी= खानेवाला) क० पु० मांस खाने वाला, मांसभक्षी।

सं० मांसभक्षक } (मांस भक्ष=
मांसभक्षी } खाना) क० पु० मांस खाने वाला, मांस आहारी।

प्रा० मांह } (सं० मध्य) में, भीतर,
मांहि } बीच।

प्रा० माखना-क्रि० अ० क्रोध करना, कोपना, खिसियाना।

प्रा० माखित-(माखना) गु० क्रोधित, खिसियाना हुआ, २ ईर्षा या द्वेष या डाह करता हुआ।

सं० मागध-(मगध) गु० मगध देश का, पु० भाट या कड़खैत जिनका काम राजाओं की और बड़े आदमियों की बड़ाई करने का है।

सं० माघ-(मघा एक नक्षत्रकानाम इस महीने में पूरा चांद इस नक्षत्र के पास रहता है और इस महीने की पूनौं के दिन यह नक्षत्र होता है) पु० बरस का ग्यारहवां महीना।

प्रा० माछी (सं० मक्षिका) स्त्री० मक्खी, माखी।

प्रा० माजूफल } पु० एक फल जो
मांजूफल } दवाई में काम आता है।

प्रा० माटी (सं० मृत्तिका) स्त्री० [मिट्टी, मट्टी।

प्रा० माठा-गु० नटखट, ढीठ, मगरा, सुस्त, २ (सं० मन्थित, मन्थ=मथना) पु० मट्ठा, छाछ।

प्रा० माणिक-(सं० माणिक्य, मणि) पु० लाल, एक लाल रङ्ग का बहुत मोल का पत्थर।

प्रा० मात- (सं० माता) स्त्री० मा-

त्रा, लगमात, स्वरों का व्यञ्जनों के साथमिलान, २ (सं० माता)मां, माता। [तना, शहमात।

फा० मात--स्त्री० बाज़ी हराना, जी-

प्रा० मातकरना-बाज़ी जीतना।

सं० मातङ्ग--(मद्=मस्त होना)पु० हाथी, हस्ती, गज।

सं० मातलि--(मत+सलाह,ला=लाना अर्थात् सलाह बतलाना) पु० इन्द्रका रथवान्,इन्द्रकासारथी।

प्रा० माता--(सं० मत्त) गु० मस्त, मतवाला, उन्मत्त।

सं० माता--(मान्=पूजना, या मन्=आदर मान करना) स्त्री० मा, मैया, माई २ शीतला।

सं० मातामह--(माता) पु०माका बाप, नाना। [भाई, मामा।

सं० मातुल--(मातृ=मा)पु० माका

सं०मातुलानी } स्त्री० मामी, मातुली } माई।

सं० मातृष्वसा--स्त्री० मौसी, खाला, माकी बहिन।

सं० मातृष्वस्रेय--पु० मौसीका बेटा, खालाजाद।

सं० मात्र--(मा=नापना) क्रि० वि० केवल, अल्प, थोड़ा, कुछ,उतनाही, वहीभर।

सं० मात्रा--(मा=नापना) स्त्री० नाप, परिमाण,२ह्रस्वदीर्घप्लुतस्वर ३दवाका नाप, औषधकापरिमाण।

प्रा० माथा--(सं० मस्तक) पु० शिर, कपाल, मस्तक, २ नाव का अगला भाग।

प्रा० माथाठनकना-बोल० किसी कामके बिगड़ने का हाल पहले से मालूम होजाना।

प्रा० माथारगड़ना--बोल० बहुत गरीबी से प्रार्थना करना, या देवता,मुनि, अथवा राजासेगरीबी के साथमांगना, २ बहुत मिहनत करना।

प्रा० माथेपरचढ़ना-बोल०अन्याय करना, जुल्म करना, प्रजाको बहुत दुःख देना, सताना।

सं० माथुर--(मथुरा) पु० मथुरा का रहने वाला, २ कायथोंकी एक ज़ात, ३मथुराकेब्राह्मणोंकीएकज़ात।

सं० मादक--(मद्=मस्त होना)क० पु० मस्तकरने वाला, नशेकीचीज़।

सं० मादन--क० पु० हर्ष कारक, फा० खानसे निकलीचीज़ें (खानि)

सं०माधव--(मा=लक्ष्मी,धव=पति) पु० लक्ष्मीपति, विष्णु।

सं० माधव--(मधु) पु० श्री कृष्ण, २ वसंत ऋतु,३ वैशाखका महीना, ४ महुआ, गु० शहदका।

सं० माधुर्य--(मधुर) भा० पु० मिठास, मधुरता।

सं० माध्वी--(मधु) स्त्री० महुवेकी मदिरा, २ एक तरहकी मछली।

ों के नवीन जल का फेना।

ांझ-(सं० मध्य) पु० बीच, ,—मांझधार=नदीकेबीचमें।

मांझा-पु०पतंगकी डोर, जिस ांच पीस कर और लेई या से मिला कर लगाया जाता नससे दूसरे की पतंग की डोर काटते हैं।

ांझी-(मध्य) पु० नाविक, का मालिक।

ांड-(सं० मण्ड, मन्=रख-) पु० भात का पानी।

ाडना-(सं० मर्दन) क्रि० मलना, मींजना, मसलना, रना, रचना, बनाना।

मांद- स्त्री० जंगली जानवरकी ,गु० हलका, २ फीका, सीठा।

ांस-(मन्=रखना वा पूजना, शक्ति की पूजा और यज्ञ आदि पूजा जाता है)पु०गोश्त, सालन।

मांसल-गु० स्थूल, मोटा।

मांसाद-(मांस+अद) क० मांसखानेवाला, गोश्तख्वार।

मांसाहारी (मांस+अहारी= ानेवाला) क० पु० मांस खाने ला,मांसभक्षी।

मांसभक्षक } (मांस भक्ष= मांसभक्षी } खाना)क०पु० ंस खाने वाला, मांस आहारी।

प्रा० मांह } (सं० मध्य) में, भीतर, मांहि } बीच।

प्रा० माखना-क्रि०अ०क्रोध करना, कोपना, खिसियाना।

प्रा० माखित-(माखना) गु०क्रोधित, खिसियाना हुआ, २ ईर्षा या द्वेष या डाह करता हुआ।

सं० मागध-(मगध) गु० मगध देश का, पु० भाट या कड़खैत जिनका काम राजाओं की और बड़े आदमियों की बड़ाई करने का है।

सं० माघ-(मघा एक नक्षत्रकानाम इस महीने में पूरा चांद इस नक्षत्र के पास रहता है और इस महीने की पूनौं के दिन यह नक्षत्र होता है) पु० बरस का ग्यारहवां महीना।

प्रा० माछी (सं० मक्षिका) स्त्री० मक्खी, माखी।

प्रा०माजूफल } पु० एक फल जो माजूफल } दवाई में काम आता है।

[मिट्टी, मट्टी।

प्रा० माटी (सं० मृत्तिका) स्त्री०

प्रा० माठा-गु० नटखट, ढीठ,मगरा, सुस्त, २ (सं० मन्थित, मन्थ=मथना) पु० मट्ठा, छाछ।

प्रा० माणिक-(सं० माणिक्य, मणि) पु० लाल, एक लाल रङ्ग का बहुत मोल का पत्थर।

प्रा० मात-(सं० माता) स्त्री० मा-

, लगमात, स्वरों का व्यञ्जनों साथमिलान, २ (सं० माता)मा, ता। [तना, शहमात।

मात--स्त्री० बाजी हराना, जी-

मातकरना-बाज़ी जीतना।

ातङ्ग--(मद्=मस्त होना)पु० थी, हस्ती, गज।

ातलि--(मत+सलाह,ला= ना अर्थात् सलाह बतलाना) इन्द्रका रथवान,इन्द्रकासारथी।

ाता--(सं० मत्त) गु० मस्त, ाला, उन्मत्त।

ाता-- (मान्=पूजना, या मन् ादर मान करना) स्त्री० मा, , माई २ शीतला।

ातामह--(माता) पु०माका , नाना। [भाई, मामा।

ातुल--(मातृ=मा)पु० माका

ातुलानी } स्त्री० मामी,
मातुली } माई।

ातृष्वसा--स्त्री० मौसी, खा- माकी बहिन।

ातृष्वस्रेय--पु० मौसीका बे- ालाज़ाद।

ात्र--(मा=नापना) क्रि०वि० , अल्प, थोड़ा, कुछ,उतनाही, ार।

ात्रा--(मा=नापना) स्त्री० परिमाण,२हृस्वदीर्घप्लुतस्वर ाका नाप, औषधकापरिमाण।

प्रा० माथा--(सं० मस्तक) पु० शिर, कपाल, मस्तक, २ नाव का अगला भाग।

प्रा० माथाठनकना-बोल० किसी कामके बिगड़ने का हाल पहले से मालूम होजाना।

प्रा० माथारगड़ना--बोल० बहुत ग़रीबी से प्रार्थना करना, या देवता,मुनि,अथवा राजासेगरीबी के साथमांगना, २ बहुत मिहनत करना।

प्रा० माथेपरचढ़ना-बोल०अन्याय करना, ज़ुल्म करना, प्रजाको बहुत दुःख देना, सताना।

सं० माथुर--(मथुरा) पु० मथुरा का रहने वाला, २ कायथोंकी एक ज़ात,३मथुराकेब्राह्मणोंकीएकज़ात।

सं० मादक--(मद्=मस्त होना)क० पु० मस्तकरने वाला, नशेकीचीज़।

सं० मादन--क० पु० हर्ष कारक, फा० खानसे निकलीचीज़ें (खानि)

सं०माधव--(मा=लक्ष्मी,धव=पति) पु० लक्ष्मीपति, विष्णु।

सं० माधव--(मधु) पु० श्री कृष्ण, २ वसंत ऋतु,३ वैशाखका महीना, ४ महुआ, गु० शहदका।

सं० माधुर्य--(मधुर) भा० पु० मिठास, मधुरता।

सं० माध्वी--(मधु) स्त्री० महुवेकी मदिरा, २ एक तरहकी मछली।

सं० मान-(मा=नापना) पु० नाप, माप, अंदाज़, परिमाण, २ (मन्=घमंड करना वा बड़ा जानना) आदर, सन्मान, प्रतिष्ठा, नाम, पत, ३ घमंड, अभिमान, ४ चोंचला नावभाव, नाज़ नखरा, गु० बराबर

सं० मानन--(मान्+अन) भा० पु० पूजा करना, आदर करना।

सं० मानव-(मनु) पु० मनुके बेटे पोते, मनुष्य, आदमी, २ बालक।

सं० मानस-(मनस्=मन) गु० मनका, मानसिक, पु० मन, मनसा, २ हिमालय पहाड़के पास मानसरोवर नामझील।

सं० मानसिक--(मनस्=मन) गु० मनका, मनसे पैदाहुआ, दिली।

सं० मानहानि-स्त्री० अपमान, निरादर, बेकद्री, बेइज्जती।

सं० मानिनी-(मान=घमंड) स्त्री० गु० घमंडकरनेवालीस्त्री, मानवती स्त्री।

सं० मानी--(मान) गु० घमण्डी, अभिमानी। [आदमी।

सं० मानुष--(मनु) पु० मनुष्य,

प्रा० मानना--(सं० मान्=विचारना) क्रि० स० सन्मान करना, आदर करना, चाहना, जानना, २ प्रतिमाना, भरोसा करना, ३ स्वीकार करना, कबूल करना, इकरार करना, ४ ठहराना, अनुमान करना, कल्पना करना।

सं० मान्य-(मान्=पूजना) सर्व० पु० पूजने योग्य, मानने योग्य, माननीय। [परिमाण।

सं० माप-(मा=नापना) पु० नाप,

सं० मापक-(मा=नापना) क० पु० नापने वाला, २ नाप विद्या में दो बराबर खेतो में कोई आध काट से कटे हुए खेत और बाक़ी दो बराबर खेतों के मिलने से मापक बनताहै, ३ पैमाना, ४ अमीन।

प्रा० मापा-सर्व० पु० व्यापा, असरकिया, लगा।

प्रा० मामा-(सं० मामक, मम=मेरा) पु० मा का भाई, मामू।

सं० माया-(मा=नापना, या बनाना) स्त्री० ईश्वर की शक्ति, कुदरत, २ इन्द्रजाल, कुहक, ३ कृपा, दया, ४ मोह, प्यार, नेह, मुहब्बत, ५ छल, दम्भ, कपट, ६ धन, संपदा, दौलत,—मायापात्र, गु० धनवान्।

सं० मायापति-(माया+पति,पु० विष्णु, ईश्वर।

सं० मायावी--(माया=छल) पु० एक राक्षस का नाम जो मय का बेटा था जिसको बालिने मारा, गु० छली, फरेबी।

सं० मार--(मृ=मरना या मारना) पु० मरना, २ कामदेव।

र--(मारना) स्त्री० मारना,
, २ लड़ाई, युद्ध, ३ चोट।
रक-- क्र० पु० कामदेव, २
, हिंसक।
रकुटाई-- बोल० मारना,
कुचलना, मारपीट।
रकेश--जन्म पत्र में लग्न से
व सातवें घर का स्वामी।
ारखाना } बोल० पिटना,
ारखानी } मार पड़ना।
ारगिराना-बोल०पछाड़ना,
देना।
ारपड़ना-- बोल० पिटना,
ाना। (ना, पीटना।
ारपीट-बोल०मारकुटाई मार-
ारमरना-- बोल० आपघात
ा, आत्म हत्या करना, २लड़ाई
ी को मारके मरना।
ारलाना--बो० लूट लाना।
ारलेना--बोल० मारना, जी-
ना।
ारहटाना--बोल०जीतलेना,
ना और निकाल देना।
ारग--(सं० मार्ग) पु०रस्ता,
, पंथ, वाट, डगर, पैंड़ा।
ारना--(सं० मारण, मृ=
ा या मारना) क्रि० स० जी
ा, मार डालना, माण निका-
ा, २ पीटना, ठोंकना, टकरा
३ दण्ड देना, सजा देना, ४
ा करना, बिगाड़ना।

प्रा०मारापड़ना-बोल०माराजाना।
प्रा०मारामाराफिरना-बोल० भट-
कना फिरना, डाँवाँ डोल फिरना,
इधर उधर फिरना।
प्रा० मरामारी--बोल० आपस में
मार पीट, धौल धप्पा, लातमुक्की।
सं० मारात्मक-- (मार = मारना
आत्मा=जीव) गु० मारने वाला,
हिंसक, घातक, शत्रु।
सं० मारी--(मृ=मरना,वा मारना)
स्त्री० मरी, मौत, महामारी।
सं० मारीच--(मृ=मरना, वा मा-
रना) पु० एक राक्षस का नाम जो
ताड़का राक्षसी का बेटा और सुबा-
हु का भाई और रावण का नौकर
था जिसको श्रीरामचन्द्र ने मारा।
सं० मारुत--(मृ = मारना) पु०
हवा, बाव, बयार, पवन, वायु
देवता (मरुत् शब्द को देखो)।
सं० मारुतसुत--(मारुत+सुत)पु०
हनुमान्, पवन का पूत।
सं० मारुतात्मज--(मारुत+आ-
त्मज) वायु पुत्र, हनूमान्।
सं० मारू--(मृ=मारना)पु०लड़ाई
का बाजा, २ एक रागिणी का
नाम जो लड़ाई में गाई जाती है।
सं० मार्कण्डेय-- पु० एक मुनि का
नाम, मृकण्ड मुनि का पुत्र।

सं० मार्ग- (मृज्=साफ करना वा मृग् वा मार्ग=खोजना) पु० रस्ता मार्ग, बाट, पंथ।

सं० मार्गित--म्पं० पु० तलाश किया गया, ढूंढ़ा गया।

सं० मार्ग्य-- म्पं० पु० ढूंढ़ने योग्य।

सं० मार्गण--(मार्ग् + अन, मार्ग =ढूंढ़ना) पु० बाण, अन्वेषण, याच्ञा, भिक्षा, तलाश।

सं० मार्गव-- पु० व्याध, अहेरी।

सं० मार्गशिर } मार्गशीर्ष } (मृगशिरा एक नक्षत्र का नाम इस महीने में पूरा चांद इस नक्षत्र के पास रहता है और इस महीने की पूर्णमासी के दिन यह नक्षत्र होता है) पु० अगहन, मँगसर, मंगसिर।

सं० मार्जन--(मृज्= शुद्ध करना) पु० शुद्ध करना, पवित्र करना, साफ़ करना, २ संध्यापूजा आदि करने के पहले पवित्रता के लिये शरीर आदि में पानी की छींट डालना।

सं० मार्जनी--ए० स्त्री० झाड़ू, बढ़नी।

सं० मार्जनीय--म्पं० पु० साफ़ करने योग्य।

सं० मार्जार--(मृज्=शुद्ध करना वा मलना) पु० बिलाव।

सं० मार्त्तण्ड--(मृतण्ड सूर्य का बाप) पु० सूर्य, ठाकुर।

सं० मालका } मालिका } (माला) स्त्री० माला, हार, २ पांत, पांति, श्रेणी, पंक्ति।

सं० मालती--(माल=विष्णु, अत्= जाना, अर्थात् विष्णु को चढ़ना वा मा=शोभा ला=लेना) स्त्री० एक फूल का नाम, चमेली।

प्रा० मालपूवा- पु० मीठा पूवा।

सं० मालव--पु० मालवा देश।

सं० माला-- मा=शोभा ला=लेना) स्त्री० फूलों का हार, सोने या मोती आदि का हार, २ सुमरना, जपमाला ३ पांत, पंक्ति, श्रेणी, कतार।

सं० मालाकार-- (माला=हार, कार =करने वाला, कृ=करना) पु० माली, बागवान। [भेद।

सं० मालादीपक-क० पु० अर्थालङ्कार

सं० माली-(माला) पु० बागवान, मालाकार।

सं० माल्य-(माला) म्पं० माला के योग्य, पु० फूल, २ माला, हार।

प्रा० मावस-(सं० अमावस्या) स्त्री० अंधेरे पख की पंद्रहवीं तिथि, अमावस।

प्रा० माष--पु० कोप, कोप, रंजरद।

प्रा० माषा-(सं० माष, मष्=अंदाज करना) पु० आठ रत्ती की तौल।

सं० मास-(मा=नापना) पु० महीना २ चांद।

प्रा० मासकबार-(पोर्तुगाल की भाषा का शब्द (mes महीना, acabar पूरा होना) से बिगड़ा हुआ) पु० महीने के अन्त का दिन, २ माहवारी नक़शा और यह शब्द,मास एकबारसे भी बना मालूम होता है क्योंकि माहवारी नक़शे आदि महीने में एक बार भेजे जाते हैं।

सं० मासान्त--(मास+अन्त) पु० पूर्णमासी, संक्रान्ति ।

सं० मासिक--(मास) गु० महीने का जो महीने में मिले, पु० तनख़्वाह, वेतन, २ हर एक महीने में अमावस के दिन का श्राद्ध ।

प्रा० मासी--(सं० मातृस्वसृ मातृ= मा, स्वसृ=बहिन) स्त्री० माकी बहिन, मौसी ।

सं० माहेश्वरी--(महेश) स्त्री० दुर्गा, देवी, पार्वती, शिवराणी ।

प्रा० माहुर--पु० जहर,विष ।

प्रा० मिचना--क्रि० अ०बन्द होना मुंदना।

प्रा०मिटना-- (सं० मृष्ट,मृज्=साफ करना) क्रि० अ० बिगड़ना, साफ होना, दूर होना, चला जाना, सिलपट होना।

प्रा० मिटिया--(मिट्टी) गु० एक तरह का रंग, ख़ाकी रंग, स्त्री० मिट्टीका बरतन ।

प्रा० मिठाई--(सं० मिष्टान्न, मिष्ट= मीठा, अन्न=अनाज) भा० स्त्री० शीरीनी, मीठी चीज़, मीठा पकवान, २ मिठास, मधुरता ।

प्रा० मिठास--(सं० मिष्टांश, मिष्ट+अंश) भा०पु०मिठाई, मीठापन ।

सं० मित--(मा=नापना) कर्म०पु० नापा हुआ, मापा हुआ, परमित ।

सं०मितव्यय-पु०कंजूस,किफायती।

सं० मितप्रद-क०पु०थोड़ादेनेवाला।

सं० मिति-स्त्री० परिमाण, तादाद, अन्त, मर्यादा ।

प्रा० मिती-(सं० मिति,मा=नापना) स्त्री० तिथि, २ व्याज, सूद ।

सं० मित्र-(मिद्=प्यार करना) पु० दोस्त, सनेही, प्यारा, हितू, बन्धु, सखा, सुहृद्, २ सूर्य ।

सं०मित्रता-(मित्र) भा० स्त्री० मिताई, मित्राई, दोस्ती,प्यार, हेत ।

सं० मित्रद्रोही-क०पु० मित्रकावैरी।

सं० मित्रवर्ग-पु० सुहृद्गण ।

प्रा० मित्राई, मिताई (सं० मित्रता)भा० स्त्री०दोस्ती,प्यार ।

सं० मिथस्-(मिथ्=मिलना, वा समझना) क्रि० वि० आपस में, एक दूसरेको, परस्पर, बाहम ।

सं० मिथिला--(मिथ्=नाश करना

वैरियों को) स्त्री० तिरहुत, जनक राजा की नगरी, जनकपुर।

सं० मिथिलेश-(मिथिला+ईश) पु० जनक राजा।

सं० मिथिलेशकुमारी-(मिथिलेश +कुमारी) स्त्री० जानकी, सीता वैदेही।

सं० मिथिलेशि--(मिथिलेश) स्त्री० जनकराजाकी राणी।

सं० मिथुन-(मिथ्=मिलना वा समझना) पु० जोड़ा, स्त्री०पुरुष २ ज्योतिष में एक राशिका नाम।

सं० मिथ्या-(मिथ्=मारना वा हानि पहुंचाना) क्रि० वि० अथवा गु० दरोग, झूठ, असत्य अनर्थ।

प्रा० मिरगी-स्त्री० एकरोगकानाम।

प्रा० मिर्च-(सं० मरिच, मृ=मरना) स्त्री० एक मसालेका नाम,—गोल मिर्च=काली मिर्च।

सं० मिलक--क० पु० संधिकारी, मेल करनेवाला।

सं० मिलन-(मिल=मिलना) भा० पु० मिलना, मेल, मिलाप, संयोग।

प्रा० मिलनसार-(मिलन) गु० मेली, मिलापी।

प्रा० मिलना-(सं० मिलन) क्रि० अ० मिलाप होना, भेटना, मिला रहना, २ पचमेल होना, गड़बड़ होजाना, ३ पाना, ४ एक होना, बराबर होना।

प्रा० मिलनाजुलना बोल० सदा मिलारहना, सच्चाई से मिलना।

प्रा० मिलनाहिलना-बोल० इकट्ठा रहना, शामिलरहना।

प्रा० मिलेजुलेरहना-बोल० मेल से रहना, मिलाप से रहना।

प्रा० मिलाप-(मिलना) पु० मेल, बनाव, भेंट, योग, संयोग।

सं० मिलित-(मिल्=मिलना) कर्म० पु० मिला हुआ, लगा हुआ।

सं० मिश्रक-(मिश्र+अक) क० पु० मेलक, मिलाने वाला, देवोद्यान, देवबन।

सं० मिश्र (मिश्र =मिलना) गु० मिला हुआ, पु० ब्राह्मणों की पदवी २ प्रतिष्ठित मनुष्य, ३ हिंदू वैद्य।

सं० मिश्रकेशी—स्त्री० स्वर्गवेश्या।

सं० मिश्रित--(मिश्र्=मिलना) कर्म० पु० मिलाहुआ, जुड़ाहुआ, यौगिक।

सं० मिष--(मिष्=हिंसा वा बराबरी करना) पु० छल, कपट, बहाना, हीला, बनावट, २ हिंसा।

सं० मिष्ट—(मिष्=सींचना) गु० मीठा, मधुर।

सं० मिष्टान्न-- (मिष्ट+अन्न) पु० मिठाई, शीरीनी, पकवान।

प्रा० मिस्सी--स्त्री० काले रंग का चूरण जिसको स्त्रियां दांतों में लगाती हैं।

प्रा० मिहदी। (सं० मेन्धी मा- मेंहदी) [illegible]

ना) स्त्री० एक पौधा जिस के पत्तों से स्त्रियां अपने हाथ रचाती हैं।

प्रा० मिहना—पु० बोलीठोली, ताना।

प्रा० मिहरारू / मिहरिया / मिहरी—(सं० महिला, मह्=पूजना) स्त्री० लुगाई, नारी, स्त्री।

सं० मिहिका—स्त्री० नीहार, कुहिरा, हिम, बर्फ।

सं० मिहिर—पु० सूर्य्य, आफताब।

प्रा० मींजना—(सं० मृज्=साफ करना) क्रि० स० मसलना, मलना, रगड़ना।

प्रा० मीचु—(सं० मृत्यु) स्त्री० मौत, [क़ज़ा।

प्रा० मीचना—क्रि० स० आंखबन्द करना, मूंदना।

प्रा० मीठा—(सं० मिष्ट) गु० मधुर, मिष्ट, २ धीमा, पु० चुम्बा, बोसा।

प्रा० मीणा / मीना—पु० जंगली आदमियों की एकज़ात जो चोर और डाकू होते हैं।

प्रा० मीत—(सं० मित्र) पु० मित्र, दोस्त, सुजन, सुहृद्, सखा।

सं० मीन—(मी=मारना) स्त्री० वा पु० मछली, २ एक राशिकानाम।

सं० मीनकेतन—(मीन=मछली, केतन=पताका) पु० कामदेव।

सं० मीमांसक—(मीमांसा) कु० पु० मीमांसाशास्त्र का जाननेवाला, २ विचार करने वाला।

सं० मीमांसा—(मान्=विचारना) स्त्री० छः शास्त्रों में का एक शास्त्र, २ सिद्धांत विचार।

सं० मीमांसित—र्म० पु० विचारित, विचारागया।

प्रा० मिमियाना / मीमियाना—क्रि० अ० में में करना, बकरी के बच्चे का बोलना।

सं० मीलन—(मील्=पलक मारना) पु० टिमकाना, टमटमाना।

सं० मीलित—र्म० पु० संकुचित, बंधित।

प्रा० मुंह / मूंह—(सं० मुख) पु० मुखड़ा, मुख, वदन, चेहरा, २ बल, शक्ति, ज़ोर, योग्यता।

प्रा० मुंहअंधेरा—बोल० संध्या, सांझ, शाम, कुछ कुछ अंधेरा।

प्रा० मुंह अपनासा लेके फिरजाना—बोल० निराशहोकरचलाजाना।

प्रा० मुंहआना—बोल० मुंह फलना, मुंह में छाले हो जाना।

प्रा० मुंहामुंह—बोल० खूब पूरा भरा हुआ, लबालब। [होजाना।

प्रा० मुंहउतरजाना—बोल० उदास

प्रा० मुंहकरना—बोल० साम्हने होना, भिड़ाना, बराबरी देना, २ गाली देना, ३ फोड़े को छेद करना, फोड़े या घाव का फूटना, ४ सब से पहले हमला करना (जैसे शिकारी कुत्ता या और जानवर दूसरे कुत्ते या जानवर पर करते हैं) ५

किसी चीज़ या जगह की ओर देखना या उसतरफ पांव उठाना।

प्रा० मुंहकाफूहड़--बोल० बुरीबात बोलनेवाला, बदज़बान, निन्दक।

प्रा० मुंहकाला--बोल० कलंक, अपमान, अनादर, बुरा।

प्रा० मुंहकालाकरना-बोल० कलंक लगाना, दाग़ लगाना, आबरू उतारना, २ सज़ा देना।

प्रा० मुंहकेकौवेउड़जाने--बोल० उदास दिखाई देना, व्याकुल दिखाई देना।

प्रा० मुंहखोलना--बोल० गाली देना, निंदा करना।

प्रा० मुंहचढ़ाना--बोल० हिलमिल जाना, मुंह लगना, २ साम्हना करना, सन्मुख होना।

प्रा० मुंहचलाना--बोल० काटना, काटा चाहना (जैसे घोड़ा)।

प्रा० मुंहचोर--बोल० शरमीला, लजीला, डरपोकना।

प्रा० मुंहचोरी--बोल० लाज, शरम।

प्रा० मुंहछिपाना--बोल० लाज से मुंह ढकना।

प्रा० मुंहठठाना--बोल० किसी के मुंह पर तमाचा मारना, थप्पड़ मारना।

प्रा० मुंहडालना-बोल० मांगना, मांगना, चाहना, २ काटना (जैसे घोड़ा)।

प्रा० मुंहतकना--बोल० चकित रह जाना, भैचक रहना, घबराना, व्याकुल होना।

प्रा० मुंहतोड़ना--गु० खिझाना, मुंहमें मारना, तकलीफ देना।

प्रा० मुंहतोदेखो--बोल० यह मुहावरा उस जगह बोला जाता है जब कोई आदमी अपनी ताक़त या योग्यता से अधिक कोई काम करने का बहाना करता हो।

प्रा० मुंहथुथाना--बोल० मुंहबनाना।

प्रा० मुंहदिखाई--स्त्री० जब कि नई दुलहिन आती है तब उसको उसकी सास ननँद आदि सुसराल की लुगाइयां मुंह देख कर रुपया अथवा गहना आदि देती हैं उसको मुंहदिखाई कहते हैं।

प्रा० मुंहदेखकर बातकरना--बोल० खुशामद करना, ऐसी बात कहना जो सुनने वाले के मनभाये।

प्रा० मुंहदेखना-बोल० मदद चाहना, सहायता मांगना, २ किसी का बहुत आदर सन्मान करना, ३ घबराना, या बेवश होना।

प्रा० मुंहदेखरहना-बोल० अचंभे में किसी का मुंह ताकना।

प्रा० मुंहदेखेकीप्रीति-बोल० किसी के साम्हने प्यार की बातें करना

और उसके पीठ पीछे उसका कुछ ध्यान नहीं करना, दिखाऊ मित्राई अथवा प्यार।

प्रा० **मुंहपरगर्महोना**-बोल० बड़े आदमी के अथवा अपने अफसर के साम्हने बे अदबी, अथवा ढिठाई से बोलना।

प्रा० **मुंहपरलाना**- बोल० कहना, जताना।

प्रा० **मुंहपरहवाईउड़ना**- बोल० मुंह का रङ्ग बदलजाना।

प्रा० **मुंहपसारना**-बोल० अचंभे में होके मुंह फाड़ना, जमुहाना।

प्रा० **मुंहफेरना**-बोल० किसी काम के करने से रुक जाना।

प्रा० **मुंहफैलाना**-बोल० घमंडकरना २ बहुत चाहना, ३ जमुहाना, जमुहाई लेना।

प्रा० **मुंहबन्दकरना**- बोल० किसी को चुप करना, जीभ पकड़ना।

प्रा० **मुंहबनाना**- बोल० मुंह थुथाना, भौं टेढ़ी करना, त्यौरी चढ़ाना।

प्रा० **मुंहबना**-बोल० मुंह खोलना, मुंह फाड़ना, जमुहाना, जमुहाई लेना।

प्रा० **मुंहबिगड़ना**-बोल० अप्रसन्न होना, नाराज़ होना, बुरा मानना, रिसाना, २ कोई कड़वी या बुरी चीज के खाने से मुंह का स्वाद बिगड़ जाना।

प्रा० **मुंहबिगाड़ना**-बोल० भौं टेढ़ी करना, त्यौरीचढ़ाना, मुंह बनाना।

प्रा० **मुंहबोला**- बोल० माना हुआ, किया हुआ, धर्म का,—जैसे मुंह बोला भाई=धर्म का भाई, वह आदमीजिसकोअपनाभाईकरमाने।

प्रा० **मुंहभरी**-बोल० रिशवत, घूस, अकोर।

प्रा० **मुंहमांगा**-बोल० जैसा चाहा वैसाही, जैसा मुंहसेमांगा वैसाही।

प्रा० **मुंहमारना**-बो० चुप करना, जीभ पकड़ना, मुंह बन्द करना, २ काटना।

प्रा० **मुंहमेंपानीआना**--या **भर आना**-बो० किसी चीज को बहुत चाहना, किसी चीजके लिये मन बहुत ललचाना।

प्रा० **मुंहमोड़ना**-बो० फिर जाना, चला जाना, किसी कामके करने से रुक जाना।

प्रा० **मुंहलगना**-बोल० मरिचआदि चरपरी चीज से मुंह जलना या चरपराना, २ हिल मिल जाना, मुसाहिब होना, पक्कादोस्त होना।

प्रा० **मुंहलगाना**-बो० छोटे आदमी से मेल करना, हिलाना, मुसाहिब बनाना।

प्रा० मुंहलेके रहजाना– बोल० शर्मसे चुप होजाना ।

प्रा० मुंहसुकड़ना-बो० मुंह का रङ्ग बदलना ।

प्रा० मुंहसेफूलझड़ना-बो०गाली देना, धिक्कारना, झिड़कना ।

प्रा० मुकरना-क्रि० स० नकरना, इनकार करना, नटना ।

प्रा० मुकरी-(मुकरना) स्त्री० एक तरह का छोटा छन्द जो व्रजभाषा में बहुत आता है और उस में चार पद होते हैं उस में से पहले तीन पदों से ऐसा जाना जाता है कि बोलने वाली स्त्री अपने प्रीतम की बात करती है पर चौथे पद में वह स्त्री अपनी सखी से पूछती है कि क्यों सखी ‘ सज्जन, हुआ उस पर वह सखी मुकरती है और किसी दूसरी चीज को बताती है जैसे“ वा बिन चित्त चहूं दिशि डोलै । चातक ज्यों पुनि पिय २ बोलै ॥ मलय होय आवै नहिं गेह । क्यों सखि सज्जन ना सखि मेह ॥

सं० मुकु-पु० मोक्ष, उत्सर्ग, छोड़ना ।

सं० मुकुट-(मक + उट, शक्ति= भूषण) पु० शिरोभूषण, ताज, कलँगी ।

सं० मुकुन्द–(मुकु=मुक्ति को (मुक् में धातु मुच=छूटना) द=देना, पु० मुक्तिदाता विष्णु भगवान् ।

सं० मुकुम्-अव्य० निर्वाण, मोक्ष ।

सं० मुकुर-(मुक् + उर, शक्ति=भूषणे) पु० दर्पण, वकुलवृक्ष, मौलश्री, कुम्हारका डंडा, मल्लिकावृक्ष ।

सं० मुकुल-पु० थोड़ीखिली कली ।

सं० मुकुलित-र्म० पु० कलियाना, कलिकायुक्त, पुष्पित ।

प्रा० मुक्का- (सं० मुष्टिका) पु० घूंसा, धौल, चपेट ।

सं० मुक्त-(मुच्=छोड़ना, या छूटना) र्म० छोड़ा हुआ, छूटा हुआ, २ जिस की मुक्ति हुई हो, ३ प्रसन्न, आनंदित, रिहा, बरी, फ़रागत पाया हुआ ।

प्रा० मुक्तमाल-(सं० मुक्तामाला) पु० मोती की माला ।

सं० मुक्तहस्त- गु० बड़ादानी, फैय्याज ।

सं० मुक्ता-(मुच्=छूटना या छोड़ना, जो सीपी से छूटता है) पु० मोती ।

प्रा० मुक्ता–गु० बहुत व घना ।

सं० मुक्ताफल–(मुक्ता+फल)पु० मोती ।

सं० मुक्तावली-(मुक्ता + अवली) स्त्री० मोती की माला, मोती का हार, नाम एक पुस्तक का ।

प्रा० मुक्ताहल } (सं० मुक्ताफल)
मुकुताहल } पु० मोती ।

सं० मुक्ति-(मुच्=छूट जाना) स्त्री० छुटकारा, संसार के दुःख अथवा पाप से छूट जाना, मोक्ष, गति, उद्धार, त्राण ।

सं० मुख-(खन्=खोदना जो ब्रह्मा का खोदाहुआहै)पु० मुंह, मुखड़ा, वदन, चिहरा, गु० पहला,प्रधान ।

प्रा० मुखड़ा-(सं० मुख) पु० मुंह, वदन ।

सं० मुखभूषण-(मुख=मुँह, भूषण =शोभा) पु० पान,बीड़ा ।

सं० मुखर-(मुख=मुँह की बात, रा=लेना अर्थात् मुँह में बुरी बात, वा चाल, बहुत बोलनेवाला) गु० कड़ुवी बात बोलने वाला, दुर्वचन बोलने वाला, पु० प्रधान, मुखिया, २ शब्द, ३ काक,४ शंख।

सं० मुखलांगल-(मुख=मुँह, लांगल=हर) पु० शूकर, सुअर ।

सं०मुखवल्लभ-पु०दाडिम,अनार।

प्रा० मुखागर-(सं० मुखाग्र, मुख= मुँह,अग्र=अनी वा अगला भाग) पु० जबानी, मुँह से कहना, २ लगाम ।

प्रा० मुखिया-(सं० मुख्य) गु० प्रधान, मुख्य, पहला ।

सं० मुख्य-(मुख) गु० प्रधान, मुखिया, पहला, श्रेष्ठ ।

सं० मुग्ध-(मुह्=अचेत होना) गु० मूर्ख, अज्ञानी, २ सुन्दर, मनोहर, कमसिन ।

सं० मुग्धा-(मुग्ध) स्त्री०जवान और सुन्दर स्त्री, एक प्रकारकीनायिका ।

सं० मुचकुन्द- पु० सूर्यवंशी राजा, मान्धाता का बेटा, जिसको श्री कृष्णने मुक्तिदी ।

प्रा० मुजरा- पु० सलाम, राम राम, प्रणाम, नमस्कार,—राजपूताने में 'सलाम, या 'आदाब, की जगह छोटा बड़े को और बराबरीवाला बराबरी वाले को 'मुजरा' करते हैं, २ मिनहाकरना, काटना, ३ वेश्याकागान ।

सं० मुञ्ज-(मुजि=शब्द करना) स्त्री० मूंज,कांसके छिलके जिसकी रस्सी बनती है ।

प्रा० मुटाई भा० स्त्री० } (मोटा)
मुटापा भा० पु० } मोटापन, स्थूलता ।

प्रा० मुट्ठी-(सं० मुष्टि) स्त्री० मुकी । बुक्का,बुकटा, मुका । [मिलजाना ।

प्रा० मुठभेड़-बोल० साम्हनाहोना,

प्रा० मुठिया-(सं० मुष्टिका) स्त्री० मुट्ठीभर, हाथभर ।

प्रा० मुड़ना-क्रि० अ० पीछे हट जाना, २ झुकजाना, बलखाना, टेढ़ा होना ।

(१) विषयाशामहापाशाद्योविमुक्तः सुदुस्त्यजात् । सएवकल्पतेमुक्त्यैनान्य षट्शास्त्रवेद्यपि ॥ १ ॥

प्रा० मुश्कैंबांधना } बोल० हाथ मुश्कैंचढ़ाना } पीठ पीछे बांधना, जकड़ना।

सं० मुष्क-पु० वृषण, अण्डकोश, फोता, २ चोर, ३ समूह, ४कस्तूरी,५ स्थूल, मोटा।

सं० मुष्ट--र्म० पु० हृत, चौरित, चोरी, चौरकर्म्म।

सं० मुष्टि-(मुष्=लेना, या मारना जिस्से) स्त्री० मुट्ठी, मुक्की, मुठी।

प्रा० मुसकान--(मुसकाना) स्त्री० मुसकुराहट, मुसकुराई, धीरे धीरे हँसना। [धीरे धीरे हँसना।

प्रा०मुसकाना-क्रि०अ०मुसकुराना,

सं० मुसल } (मुस्=टुकड़े२ करना) मूसल } पु० चांवलआदिनाज कूटने का सोंटा।

अ०मुसल्मान-(अ०मुसलमान) पु० मुहम्मद का मत माननेवाला।

सं० मुसली-रू० पु० बलभद्र।

फ़ा० मुस्ताजिरी-पु० ठेका।

प्रा० मुहाना-(मुँह) पु०नदीका मुँह।

सं० मुहिर--(मुह+इर,)मुह=मोह-ना) पु० कामदेव, मूर्ख, खल्वाट, चण्डमुण्डा, गंजा।

सं० मुहुर्मुहुः—अव्य० पुनः २ वारंवार।

सं० मुहूर्त्त-(मुहुर=वारवार) पु० दोघड़ी, दिन रातका तीसवांभाग ४८ मिनटका समय।

प्रा० मूंग-(सं० मुद्ग, मुद्=प्रसन्न होना) पु० एक तरहका अनाज जिसकी दाल बनती है।

प्रा० मूंगा-पु० एक चीज़ जो समुद्र में मिलतीहै और जिसकी माला बनती है और उसको नौरत्नों में एक रत्न गिनते हैं जिसको सं-स्कृतमें विद्रुम और प्रवाल कहतेहैं।

प्रा० मूंगिया--(मूंगा) पु० मूंगा के ऐसा रंग। [मोछ।

प्रा० मूंछ—स्त्री० होठ पर के बाल,

प्रा० मूंज--(सं० मुञ्ज) स्त्री० एक तरहकी घासके छिलके जिन की रस्सी बनती है।

प्रा० मूंड } (सं० मुण्ड)पु० माथा, मूड } शिर, मस्तक, कपाल।

प्रा० मूंड़फिकारना—बो० शिर नङ्गा करना।

प्रा०मूंड़ना-(सं० मुण्डन) क्रि० स० बाल काटना या कतरना, हजामत करना, २ चेला करना, शिष्य बनाना, ३ फुसलाना, ठग-ना,—उलटे उस्तरे से मूंड़ना, बोल० किसी को ठगना, छलना, धोखा देना।

प्रा० मूंड़ी--(सं० मुण्ड)स्त्री०शिर।

प्रा०मूंदना--(मुँदना) क्रि०स० बंद करना, मींचना, ढांपना।

प्रा० मूंदरी--(सं० मुद्री, वा मुद्रिका) स्त्री० अंगूठी, छल्ला, मुंदरी।

सं० मूक--(मू=अंधे होना) गु० गूंगा जो नहीं बोल सका हो, अवाक्, मौन, पु० मत्स्य, दैत्य, दीन, मेत।

प्रा० मूकना--(सं० मुच्=छोड़ना, वा मू=वधकरना) क्रि०स० छोड़ना, त्यागना, जैसे रामायण में 'जीवन आश दशानन मूकी'। [मुट्ठी।

प्रा० मूकी--(सं० मुष्टि) स्त्री० मुक्की,

प्रा० मूछ--स्त्री० मूंछ, मोंछ, होठ पर के बाल।

प्रा० मूठ--(सं० मुष्टि) स्त्री० बेंट, कबजा, दस्ता, २ मुक्की, मुट्ठी, मुट्ठीभर।

प्रा० मूठा--(सं० मुष्टि) पु० भरमूठ, हाथभर, मुक्का, २ कबजा।

प्रा० मूठी--(सं० मुष्टि) स्त्री० मुक्की, मुट्ठी, घूंसा, मूका, मूकी।

सं० मूढ--(मुह्=अचेत होना, वा अज्ञानी होना) क० पु० मूर्ख, अनपढ़, अज्ञानी।

प्रा० मूत--(सं० मूत्र, मूत्र्=मूतना) पु० पिशाव, लघुशंका।

सं० मूत्रकृच्छ्र--पु० अश्मरीरोग, पथरीरोग, मूत का बन्द होना।

प्रा० मूर } मूरि } (सं० मूल) पु० जड़।

प्रा० मूरख--(सं० मूर्ख) गु० अज्ञानी, अनाड़ी, मूढ़, बेवकूफ।

प्रा० मूरत--(सं० मूर्ति) स्त्री० पत्थर अथवा लकड़ी की बनी हुई सूरत, प्रतिमा, पूतली, २ आदमी, जैसे साधु या बैरागियों में बोला जाता है कि 'कितनी मूरत हैं' अर्थात् कितने आदमी हैं।

सं० मूर्ख--(मुह्=अज्ञानी होना) गु० अज्ञानी, अनाड़ी, मूढ़, बेवकूफ।

सं० मूर्च्छा--(मूर्च्छ्=अचेत होना। भा० स्त्री० झंव, गश, बेहोशी, मोह, अचेत होना।

सं० मूर्च्छित--(मूर्च्छा) गु० अचेत, बेसुध, बेहोश, मोहित।

सं० मूर्त्ति--(मूर्च्छ्=मोहित होना जिसको देखने से) स्त्री० मूरत, सूरत, पुतली, प्रतिमा।

सं० मूर्द्धन्य--(मूर्द्धन्=शिर) गु० शिरका, शिरसंबंधी, (वे अक्षर) जो तालू से ऊपर जीभ लगाने से बोले जायँ, जैसे ऋ ॠ ट ठ ड ढ ण र ष।

सं० मूर्द्धा--(मुर्व्=बांधना, या मुह्=अचेत होना अर्थात् जिसमें चोट लगने से आदमी अचेत होजाता है) पु० शिर, मस्तक, शीश, कपाल।

सं० मूल--(मूल्=ठहराना, या रोपना या मू=बांधना) पु०

असल, २ वंश, कुल, सन्तान, ३ असल धन, पूंजी, ४ मूलग्रन्थ, किसी पुस्तक का सूत्र अथवा श्लोक (पर टीका नहीं) ५ उन्नीसवां नक्षत्र ।

सं० मूलक—(मूल=जमाना, रोपना) पु० मूली, मुरई ।

सं० मूलकारिका—स्त्री० महानस, रसोई, चूल्हा, चूल्ही । [पूंजी ।

सं० मूलधन--पु० मूलद्रव्य, असल

सं० मूलभूत—पु०जड़, असलियत ।

सं० मूल्य—(मूल) पु० मोल, क़ीमत, भाव, निरख, दर, दाम ।

सं० मूष
मूषक
मूषिक } (मूष्=चुराना) क्र०पु० मूसा, चूहा, २ चोर ।

सं० मूषिका—क्र० स्त्री० मुसरिया ।

प्रा० मूसना—(सं० मुष्=चुराना) क्रि०स० चुराना, खोसना, लूटना ।

प्रा० मूसला—(सं० मुस्=टुकड़े २ करना) पु० असल जड़ ।

प्रा० मूसलाधारबरसना—बोल० बहुत जोर से मेह बरसना ।

प्रा०मूसा—(सं० मूषक) पु० चूहा ।

सं०मृग-(मृग्=खोजना)पु०पशुमात्र, सब चौपाये जानवर, २ हरिण, कुरंग, ३ हाथी, ४ पांचवां नक्षत्र, ५ खोजना ।

प्रा० मृगछाला (मृग=हरिण, छाला =चमड़ा) स्त्री० हरिणका चमड़ा, हरिणकी खाल ।

सं० मृगणा—भा० स्त्री० अपहृत द्रव्यका अन्वेषण, जातीरही द्रव्य का खोजना, पतालगाना ।

सं०मृगतृषा
मृगतृष्णा
मृगतृष्णिका } (मृग=पशु, तृषा =तृष्णा और तृष्णिका=प्यास) स्त्री० एक तरहकी भाफ जो रेतके मैदानों में वालू रेतके कणों पर पड़ती है तब दूर से पानीके ऐसी जानी जाती है । अथवा रेतले देशों में वालू के कणों पर सूर्य की किरण के पड़ने से दूर से पानी ऐसी दिखाई देती है तब प्यासे हरिण उस ओर पानी के लिये जातेहैं पर पानी न पाकर उलटे फिर आते हैं इस लिये ऐसा नाम पड़ा, आबसुराब ।

सं० मृगनयनी—(मृग=हरिण, नयन =आंख) गु० स्त्री० वह स्त्री जिस की आंखें हरिणीकी ऐसीहों, सुन्दर स्त्री, रूपवती ।

सं० मृगनाभि—(मृग=हरिण, नाभि नाभ में पैदा हुई चीज) स्त्री० कस्तूरी, मृगमद ।

सं० मृगपति— (मृग+पति) पु० पशुओं का राजा, सिंह, शेर ।

सं० मृगमद--(मृग=हरिण, मद=घमंड, अर्थात् जिससे हरिण को घमंड रहताहै)-पु० कस्तूरी ।

सं० मृगया--(मृग=खोजने को, या=जाना) स्त्री० शिकार, अहेर ।

सं० मृगयु--क० पु० व्याध, शिकारी ।

सं० मृगराज--(मृग+राजा) पु० पशुओं का राजा, सिंह, मृगपति ।

सं० मृगलोचनी--(मृग=हरिण, लोचन=आंख) गु० स्त्री० वह स्त्री जिसकी आंखें हरिण की ऐसी हों, मृगनयनी ।

सं० मृगशिरा--(मृग=हरिण, शिरस्=शिर अर्थात् जिसका आकार हरिण के शिर ऐसा है) पु० एक नक्षत्र का नाम ।

सं० मृगाङ्क--(मृग=हरिण, अङ्क=चिह्न, अर्थात् जिस में हरिण के ऐसा चिह्न हो) पु० चांद, चंद्रमा ।

सं० मृगित--(मृग्+इत, मृग्=खोजना) र्म० पु० अन्वेषित, दर्शित ।

सं० मृगी--(मृग) स्त्री० हरिणी ।

सं० मृगेन्द्र--(मृग+इन्द्र) पु० पशुओं का राजा, सिंह, मृगपति ।

सं० मृग्य-- र्म० पु० अन्वेषणीय, दर्शनीय या ढूंढ़ने लायक ।

सं० मृजा--(मृज्=शुद्धकरना, मांजना) भा० स्त्री० मार्जन, मांजना ।

सं० मृड-- (मृड=प्रसन्न करना) पु० शिव, स्त्री० मृड़ानी, पार्वती ।

सं० मृण (मृण=मारना) पु० क्लेश, शोक, २ मट्टी, गु० क्लेशद ।

सं० मृणाल--(मृण=नाशकरना) पु० कमलनाल, कमलकी जड़ व भसींड़ा ।

सं० मृत--(मृ=मरना) र्म० पु० मरा हुआ, मुआ, मरा, मुर्दार, पु० मरण, मरना, मौत ।

सं० मृतक-(मृ=मरना) क० पु० मुर्दा, मरा, लोथ, मरा हुआ शरीर ।

सं० मृतसंजीवनी--स्त्री० विद्याभेद, औषधभेद ।

सं० मृत्तिका--(मृद्=चूर २ करना वा मलना) स्त्री० मिट्टी, मट्टी ।

सं० मृत्यु-- (मृ=मरना) स्त्री० मौत, मरण, काल, २ यम, जम, क़ज़ा ।

सं० मृत्युञ्जय--(मृत्यु=मौत को, जय=जीतनेवाला, जि=जीतना) पु० शिव, महादेव ।

सं० मृत्युनाशक--क० पु० अमृत, पाराधातु का रस ।

सं० मृत्युपुष्प--पु० इक्षु, ऊंख, जिसके फूलने से खराब जाता है ।

सं० मृत्सा / **मृत्स्ना** स्त्री० प्रशस्तमृत्तिका, श्रेष्ठ मट्टी, २ तुम्बी, लौकी ।

सं० मृदंग--(मृद्=पीटना) पु० स्त्री० ढोलक, तबल्क, गफ नरह

का बाजा, पटह ।

सं० मृदु--(मृदु=मलना) गु० कोमल, नर्म, नम्र, मुलायम ।

सं० मृदुता--(मृद्) भा० स्त्री० कोमलता, नरमाई, मुलायमियत ।

सं० मृदुल--(मृद्=मलना) गु० कोमल, नर्म, नम्र ।

सं० मृषा--(मृष्=सहना) क्रि० वि० झूठ, मिथ्या, वृथा, झूठमूठ, वेफायदह ।

सं० मृष्ट-- शोधित, निर्मल, साफ ।

प्रा० मेंड--स्त्री० बांध, आड़, घेरा, पुस्ता ।

प्रा० मेंडक--(सं० मण्डूक) पु० दादुर, बेंग ।

प्रा० मेंडुकीकोजुकामहोना--बोल० यह बोलचाल छोटे और नीचे आदमी का घमण्ड जतलाने के लिये बोला जाता है ।

प्रा० मेंढा, मेढ़ा--(सं० मेण्ढ वा मेढ्र, मिह्=सींचना) पु० भेड़ा, मेष ।

प्रा० मेंह, मेह--(सं० मेघ) पु० वरषा, पानी, झड़ी, वृष्टि, बरसात ।

सं० मेकलकन्यका, मेकलसुता--(मेकल एक पहाड़, कन्यका वा सुता=बेटी) स्त्री० नर्मदा नदी ।

सं० मेखला--(मि=फेंकना) स्त्री० क्षुद्रघंटिका, करधनी, २ जनेऊ, ३ तलवार का परतला, ४ पहाड़ का उतार या ढाल, ५ नर्मदा नदी ।

सं० मेघ--(मिह्=सींचना) पु० बादल, घन, २ एक राक्षस का नाम, ३ एक राग का नाम ।

सं० मेघध्वनि--(मेघ+ध्वनि) स्त्री० बादलों का शब्द, गर्ज, गाज, बादलों का ऐसा शब्द ।

सं० मेघनाद--(मेघ+नाद, अर्थात् जिस का शब्द बादल कैसा हो) पु० रावण का बेटा, इन्द्रजित्, २ बादलोंका शब्द, ३ पलाश का पेड़, ४ वरुणदेवता ।

प्रा० मेघपति--(मेघ+पति) पु० बादलों का राजा, २ इन्द्र ।

प्रा० मेघबरण--(सं० मेघवर्ण, मेघ=बादल, वर्ण=रंग) गु० जिसका रंग बादलों के ऐसा हो ।

सं० मेघमाला--(मेघ+माला) स्त्री० बादलों का समूह ।

सं० मेचक--(मेच्=पाखण्ड करना) गु० काला, श्याम, पु० श्यामवर्ण, कालारंग, २ मेघ, ३ सुरमा, अञ्जन, ४ धुआं, ५ अन्धेरा, अन्धकार ।

प्रा० मेचकताई--(सं० मेचकता) भा० स्त्री० कालापन, कलास, श्यामता ।

सं० मेट--पु० गर्व, उन्मत्तता ।

अं० मेट--पु० कुलियोंका सर्दार ।

प्रा० मेटना—(मिटना) क्रि० स० मिटा डालना, धो डालना, छील डालना, उड़ा देना, मलमेट करना, नष्ट करना, सत्यानाश करना, लोप करना, काट डालना।

अं० मेट्रीक्युलेशन—पु० इन्ट्रन्सका इम्तिहान।

सं० मेढ्र—(मिह् = सींचना)पु० मेघ, २ बकरा, भेड़ा, ३ लिंग।

सं० मेथी—(मेथ्=काटना) स्त्री० एक सागका नाम।

प्रा० मेद—(सं० मेदस्, मेद = मारना) स्त्री० गूदा, मज्जा, वसा, चर्बी, २ एक बीमारी जिसमें गले का अथवा और किसी जगह का मांस बहुत मोटा होकर लटक जाता है या एक गांठ सी होजाती है।

सं० मेदिनी--(मेदस्=मेद, अर्थात् जो मधु कैटभ के मेद से बनी हुई है इसी से इसका नाम मेदिनी हुआ) स्त्री० धरती, पृथ्वी, भूमि, ज़मीन।

सं० मेदुर—(मिद् + उर) गु० बहुत स्निग्ध, २ सांद्र, सघन, निविड़, घना, आच्छन्न, ढपाहुआ, ३ शीतल।

सं० मेध—(मेध्=मारना) पु० यज्ञ, बलिदान।

सं० मेधा—(मेध् = समझना) स्त्री० धारणवती बुद्धि, समझ, बूझ।

सं० मेधाविन्, मेधावी—(मेधा) गु० बुद्धिमान्, पण्डित, निपुण।

सं० मेध्य—गु० पवित्र, पूत, पु० २ बकरा, ३ खैर, ४ जौ, ५ हल्दी, ६ गोरोचन।

प्रा० मेमना--पु० बकरी का बच्चा।

अं० मेमोरियल--गु० याददास्त, अर्ज़दास्त, स्मारक।

सं० मेरु—(मि=फेंकना, अर्थात् प्रकाश को फैलाना) पु० सुमेरु पहाड़ जो हिंदुओं के मत के अनुसार धरती के बीच में है।

सं० मेल—(मिल्=मिलना) पु० मिलाप, एका, मिलना, संयोग, सम्बन्ध।

सं० मेलक—क० पु० मेलकर्ता।

सं० मेला--(मिल्=मिलना) पु० किसी जगहपर बहुत से आदमियों का इकट्ठा होना।

प्रा० मेलाठेला--बो० बहुतसे आदमियों का इकट्ठा होना, भीड़ भाड़, रौला।

सं० मेली--(मेल) क० पु० मिलापी, साथी, साझी, २ डालदी, पहराई।

प्रा० मेवाती---पु० मेवात का रहने वाला।

सं० मेष--(मिष्=सींचना) पु० मे- २ पहली राशि।

फ़ा० मेहतर-पु० भंगी, भा[illegible] गु० बुज़ुर्ग।

फ़ा० मेहतरानी--स्त्री० भङ्गन, २ भठियारी।

सं० मेहन--(मिह्+अन, मिह्=सींचना) भा० पु० लिङ्ग, शिश्न, मुत्रेन्द्रिय, २ वीर्यपात, मनीका गिर जाना, पेशाबकरना।

प्रा० मेहना--पु० ठठोली, ताना।

प्रा०मेहनामारना--क्रो०ताना देना, बोलबोलना।

प्रा० मैका--(मायका) पु० मा का घर, नहिहर, पीहर।

सं० मैत्र--पु० मित्रता, २ अनुराधा नक्षत्र, ३ शौचक्रिया, गु० सफ़ाई।

सं० मैत्री--(मित्र) स्त्री० मित्राई, दोस्ती, प्यार, स्नेह।

सं० मैथिली--(मिथिला) स्त्री० तिरहुत के राजा जनक की बेटी, सीता, जानकी।

सं० मैथुन--(मिथुन = जोड़ा) पु० स्त्री पुरुषका मिलाप, रति, सङ्गम, स्त्रीसंग, हमागोशी।

प्रा० मैना--स्त्री० एक पखेरूका नाम, शारिका, २ पार्वती की माता।

सं० मैनाक--(मेनका=हिमालय पहाड़ की स्त्री) पु० हिमालय पहाड़ का बेटा, एक पहाड़ का नाम जो इन्द्र के डर से समुद्र में जा रहा था (इसकी कथा रामायण में है)।

प्रा०मैया--(सं० माता) स्त्री० मा, माई, महतारी, माता।

प्रा० मैल--(सं०मल)पु०मल, झाग, गाज, २ मुर्चा।

प्रा० मैला--(सं०मलिन)गु०गँदला, गंदा, अशुद्ध, अपवित्र, खराब।

प्रा० मो--सर्वना० मुझको, मुझे।

सं०मोक्ष--(मोक्ष्=छूटजाना या मुक्ति पाना) स्त्री० मुक्ति, छुटकारा, संसार के दुःख से अथवा पापसे छूटजाना।

प्रा० मोखा--(मुख=मुँह) पु० एक छोटा छेद जिसकी राह से धुआं निकलता है और रोशनी और हवा आती है।

प्रा० मोगरा-- (सं० मुद्गर मुद्=खुशी, गृ=निकालना) पु० एकतरह का फूल, नीलोफ़र, कुमोदनी।

प्रा०मोगरी--(सं०मुद्गर)स्त्री०एक लकड़ी की बनी हुई भारी चीज जिसको कसरत करनेवाला उठाताहै, २ छत या कपड़ा कूटने की लकड़ी।

सं० मोघ--(मुह्=अचेत होना)गु० वृथा, बेफ़ायदा, निष्फल, झूठ।

प्रा०मोच-स्त्री०लचक, कचक, मचक।

सं०मोचन-(मुच्=छोड़ना) भा० पु० छुटकारा, छुड़ाना, उद्धार, मुक्ति, क० पु० छुड़ानेवाला।

प्रा० मोचना--(सं०मोचन) क्रि० स० छोड़ना, त्यागना, २ [illegible]

डालना । [चमार ।

प्रा० मोची—पु० जूता बनानेवाला,

प्रा० मोट } स्त्री० गठरी, बस्ता, मो-
मोठ } टरी, पुलिंदा, गट्ठा, बोझा, २ जोड़, कुलजमा, ३ पानी निकालने का चमड़े का डोल ।

प्रा० मोटा--गु० स्थूल, पुष्ट, जिसके शरीर में बहुत मांस हो, भारी, बड़ा, २ गाढ़ा । [कुली ।

प्रा०मोटिया--पु० बोझाढोनेवाला,

प्रा०मोठ-पु०एकतरहकाअनाज जिस की दाल बनती है, घोड़ोंकादाना ।

प्रा० मोतिया—पु०एकफूलकानाम।

प्रा० मोतियाबिन्द—(सं० मुक्ता-बिन्दु) पु० आंख की एक बीमारी जिसके होनेसे दिखाई नहीं देता।

प्रा०मोती-(सं०मौक्तिक)पु० एक रत्न जो समुद्रमें सीपीके मुँहमें पैदाहोताहै।

प्रा० मोतीकीसीआबउतरना—बोल० बेइज्जत होना, किसी का अपमान होना, अनादर होना ।

प्रा०मोतीकूटकरभरने-बोल०खूब चमकीला होना, (यह मुहावरा आंख के लिये बोला जाताहै) ।

प्रा० मोतीपिरोने--बोल० माला गूंधना, २ मिठासके साथ बोलना, ३ रोना । [मिठाई ।

प्रा० मोतीचूर-- पु० एक तरह की

सं० मोद--(मुद्=प्रसन्न होना) पु० आनन्द, हर्ष, खुशी ।

सं० मोदक--(मुद्=प्रसन्न होना) क० पु० आनन्द करनेवाला, २ एक प्रकार का लड्डू ।

सं०मोदी—क०पु० बनियां, दूकान-दार, बैपारी, महाजन, आनन्द करने वाला । [पखेरू का नाम ।

प्रा० मोर— (सं० मयूर) पु० एक

प्रा० मोरपंखी—स्त्री० एक तरह की नाव, बजरा ।

प्रा० मोरमुकुट—पु० मोरके ऐसा मुकुट, मोरपंख का मुकुट ।

प्रा० मोर } सर्वना० मेरा ।
मोरा }

प्रा०मोरचंग-स्त्री०एक बाजेका नाम।

प्रा० मोरछल—पु० एक तरह का चँवर जो मोरके पंखोंका बनता है ।

प्रा० मोरी—स्त्री० नाली, पनाली ।

प्रा० मोल—(सं० मूल्य) पु० भाव, कीमत, दाम,-मोल ठहराना, बोल० क़ीमत लगाना, निरख ठहराना, दाम ठहराना,-मोल तोल, बोल० भाव, निरख, क़ीमत—मोल बढ़ाना, बोल० कीमत चढ़ाना, भावबढ़ाना—मोल लेना बोल० बिसाहना, खरीदना—बिन मोल की चेरी, बोल० बेमोल लीहुई दासी, (यह बोल०

अधीनी जतलाने के लिये बोला जाता है।

सं० मोह—(मुह्=अचेत या अज्ञानी होना) पु० मूर्च्छा, बेहोशी, ग़शी। २ अज्ञानता, अविद्या, बेवकूफी, ३ प्यार, माया, दया, दुलार, लाड़, स्नेह, छोह।

प्रा० मोहमेंआना—बोल० अपने मित्र अथवा अपनी प्यारी के अचानक मिलने से अचेत होजाना।

प्रा० मोहलेना--बोल० रिझाना, किसीका मन अपनीओर खींचलेना, लुभाना, वश करना, मंत्र फूंकना।

सं० मोहन--(मुह्=मोहना) गु० मोहनेवाला, जिस के देखने से शरीर की सुधि न रहे, मनमाना, प्यारा, पु० श्रीकृष्ण का नाम, २ मोहना, वश करना।

सं०मोहनभोग—(मोहन=मनमाना। भोग=खाना) पु०शीरा, उत्तम भोजन।

सं० मोहनमाला—(मोहन+माला) स्त्री० एक तरह की माला जो सोने के दाने और मूंगेकी बनती है।

प्रा० मोहना--(सं० मोहन) क्रि० स० वश करना, मन हरना, लुभाना, मन्त्र फूंकना, मसन्न करना।

सं०मोहनी—(मोहन) क० स्त्री०मन हरनेवाली स्त्री, मोहनेवाली, रूपवती, मनोहर, सुन्दर।

सं०मोहमय—गु० मिथ्या व झूठा।

प्रा०मोहि-- सर्वना० मुझको, मुझे।

सं०मोही--क० पु० मुग्ध, अवाच्य।

प्रा०मौ--(सं० मधु) पु० शहद, मधु।

सं० मौक्तिक—(मुक्ता) पु० मोती।

सं० मौञ्जी—स्त्री० मूंजकी करधनी, मेखला।

प्रा० मौड़--(सं० मौलि) पु०सिहरा, मुकुट, मौर जो दुलहा के शिरपर बांधा जाताहै।

सं० मौन--(मुनि) पु० चुप, चुप्पी, अवाक्, नहीं बोलना,—स्मृति में लिखाहै कि (१ पाखाने जाते, २ पिशाब करते, ३ स्त्रीप्रसंग करते, ४ दँतवन करते, ५ स्नान करते, ६खाना खाते) इन छः जगह मौन रहना चाहिये।

सं०मौनी--(मौन) पु०एक तरह के मुनि जो सदा चुप रहतेहैं, ऋषि, योगी।

प्रा० मौर--पु० आम की मंजरी।

प्रा० मौराना-- क्रि० अ० आम के मौर का खिलना।

सं० मौर्वी--स्त्री० ज्या, रोदा, धनुष की डोरी, चिल्ला।

प्रा०मौलसरी-- स्त्री० एक तरह के गुलबूदार फूलके पेड़ का नाम।

सं० मौलि-(मूल) पु० किरीट, मुकुट, २ शिखा, चोटी, ३ शिर, ४ स्त्री० धरती, पृथ्वी।

प्रा० मौसी-स्त्री० मा की बहिन, (मौसी शब्द को देखो)

सं० म्लान-क० पु० ग्लानियुक्त, उदासीन, लज्जित, मलीन, शुष्क, मुरझाया।

सं० म्लानि-(म्लै=उदास होना,वा मुरझाना) स्त्री० थकावट, थकान, २ मलिनता,मैलापन, ३ कुम्हलाना, मुरझाना, उदास होना।

सं० म्लिष्ट-गु० मलीन,ग्लानि युक्त, पु० अव्यक्तवचन, गद्गद वाक्।

सं० म्लेच्छ(म्लेच्छ्=अशुद्ध वा,बुरा बोलना या गंवारू बोली बोलना) पु० नीच जाति, वे लोग जिनकी बोली संस्कृत नहीं है और न वे हिन्दुओं के शास्त्र को मानते हैं, यह शब्द जंगलियों और दूसरी विलायत के लोगों के लिये बोलाजाता है, २ पापी।

—:o:—

(य)

सं० य--(य=जाना) पु० हवा, २ यश, कीर्ति, ३ मेल, योग, ४ सवारी, ५ गति गु० जाने वाला।

सं० यकृत्-पु० उदररोग, तापतिल्ली, प्लीहा, पिलही रोग।

सं० यक्ष-(यक्ष्=पूजना,) पु० गुह्यक देवता, कुबेर के नौकर।

सं० यक्ष्मन् } यक्ष्मा } क्षयीरोग, राजरोग, तपेदिक।

सं० यजन--(यज्=पूजना) भा०पु० यज्ञ, पूजा।

सं० यजमान-(यज्=पूजना, या यज्ञ करना) क० पु० यज्ञ करने वाला, यजमान।

सं० यजुः—(यज्=पूजना) ण०पु० यजुर्वेद, दूसरा वेद।

सं० यज्ञ—(यज्=पूजना) पु०बलिदान, पूजा, होम, हवन, याग, २ विष्णुभगवान्।

सं० यज्ञसूत्र--(यज्ञ + सूत्र) पु० [जनेऊ।

सं० यज्ञोपवीत—(यज्ञ+उपवीत) पु० जनेऊ।

सं० यत्-अव्य० जो, जितना।

सं० यज्वा--(यज्=पूजना)क०पु० यज्ञ करनेवाला।

सं० यतः—अव्य० क्योंकि, यस्मात्।

प्रा० यतन-(सं० यत्न) पु० यतन, उपाय, तदबीर, हिकमत।

सं० यति } यती } (यत्=यतन करना मुक्ति के लिये) पु० संन्यासी, वैरागी, जैनियों का भिखारी।

सं० यन्ता } यन्तार } क०पु० सारथी,सूत, रथहांकनेवाला।

सं० यत्न-(यत्=यत्न करना) पु०

यतन, उपाय, उद्योग, कोशिश, मिहनत, सावधानी।

सं० यन्त्रित—र्म० पु० बद्ध, कैद।

सं० यत्र-(यद्=जो)क्रि० वि० जहां, जिस जगह।

सं० यथा- (यद्=जो) क्रि० वि० जैसे, जिस प्रकार से, ज्यों, जिस रीति से, २ बराबर, तुल्य।

सं० यथाकाम-क्रि० वि० यथेच्छम् २ अभिलाषा से अधिक।

सं० यथायोग्य- (यथा=जैसा, योग्य=ठीक) क्रि० वि० जैसा चाहिये, जैसा ठीक है, जैसा उचित, यथोचित।

सं० यथार्थ-(यथा=जैसा, अर्थ, अभिप्राय, मतलब) गु० ठीक, सत्य, सच, क्रि० वि० ठीक ठीक, हक़ीक़तन्, जैसा चाहिये।

सं० यथाशक्ति-(यथा=जैसी, या अनुसार, शक्ति=बल) क्रि० वि० जैसी सामर्थ्य हो, अपने बल के अनुसार, जितना हो सके, हत्तुल् इम्कान।

सं० यथासाध्य-क्रि० वि० इच्छा पूर्वक, हत्तुल इम्कान।

सं० यथेच्छा } **यथेच्छ** } क्रि० वि० इच्छानुसार, दिल्ख़्वाह

सं० यथेच्छाचारिता-स्त्री० इच्छानुसार, मर्ज़ी मालिक।

सं० यथेप्सितक्रि०वि०यथेच्छ,इच्छानुसार,मनचाहा, हस्बदिलख़्वाह।

सं० यथोचित-(यथा + उचित) क्रि० वि० जैसा चाहिये, यथायोग्य।

प्रा० यदपि (सं० यद्यपि) समुच्च० जोभी, जो।

सं० यदा- (यद्=जो) क्रि० वि० जब, जिससमय।

सं० यदि-(यद्=जो) क्रि०वि०जो।

सं० यदु-पु० एक राजा का नाम जो राजा ययाति का बड़ा बेटा और श्री कृष्ण का पुरुषा और चंद्रवंशी राजाओं में पांचवां राजा था।

सं० यदुकुल-(यदु + कुल)पु०यदु राजा का घराना, यदुवंश।

सं० यदुनाथ } **यदुपति** } (यदु=यदुवंशियों का, नाथ या पति मालिक) पु० श्रीकृष्ण।

सं० यदुवंश- (यदु + वंश) पु० यदुकुल, यदु राजा का घराना।

सं० यदुवंशी-(यदुवंश) पु० यदु के वंश के लोग, यादव।

सं० यदृच्छा (यत् + ऋच्छ + आ) स्त्री० स्वातंत्र्य, ख़ुदराय।

सं० यद्यपि (यदि जो, अपि=भी) समुच्च० जोभी, यदपि। [ज्यां।

सं० यद्वा- अव्य० पक्षान्तर बोधक,

सं० यन्त्र-(यन्त्रि, या यम्=रोकना)

कल, हर एक तरह का औज़ार या हथियार, २ बाजा, ३ तंत्र शास्त्र में अपने इष्ट देवता का चक्र, ४ टोटका, यंत्र, मंत्र, ५ताला, कुफल।

सं० यन्त्रणा-(यन्त्रि=रोकना या यम्=दंडदेना) स्त्री० दुःख, पीड़ा, क्लेश।

सं० यन्त्रस्थ-गु० जेरतब्अ जो छप रहा हो, मुद्रित हो रहा।

सं० यन्त्रिका--(यन्त्रि=रोकना, बन्द करना) पु० ताला, कुफल।

सं० यन्त्रित-(यन्त्रि=रोकना) कर्म० पु० रोका हुआ, बंध किया हुआ, मुकैय्यद।

सं० यम--(यम्=रोकना, दंडदेना, वश करना या दबाना) पु० यमराज, धर्मराज, दक्षिण दिशा का दिक्पाल, काल, २ इन्द्रियों को रोकना, गु० जोड़ा।

सं० यमक--(यम्=मिलना) पु० जोड़ा २ एक शब्दालंकार जहां एकही पद दो तीन बार आते हैं पर वहां उस पद का अर्थ हर एक जगह जुदा २ होता है।

प्रा० यमगुफा-(सं० यमगुहा) स्त्री० मौत का घर, काल की गुफा।

सं० यमज--(यम=जोड़ा, ज=पैदा) पु० जो दो लड़के एक साथ जन्मे हों, तौअम।

सं० यमदग्नि-पु० परशुराम जी का बाप।

प्रा० यमदिया--(सं० यमदीपक) पु० वह दीपक जो कार्तिक बदी १३ के दिन यम के नाम से जला या जाता है।

सं० यमदूत--(यम+दूत) पु० यम [केदूत।

सं० यमधार--(यम+धार) स्त्री० कटार, छुरा, तेगा, तलवार।

सं० यमल-(यम=जोड़ा, ला=लेना) पु० जोड़ा।

सं० यमलार्जुन--(यमल=जोड़ा, अर्जुन एक प्रकार का पेड़) पु० एक तरह के दो पेड़ जो वृन्दावन में थे कुबेर के दो लड़के जो वारुणी मादिरा को पीकर गंगा में वेश्याओं के साथ नग्नस्नान करते थे नारद के शाप से वृक्ष हो गये थे कृष्ण जी महाराज ने उन को वृक्षत्व से मुक्त किया।

सं० यमुना--(यम) स्त्री० यमुना नदी जो यमराजकी बहिन और सूर्य की बेटी है।

सं० ययाति--(य=हवा, या=जाना जो हवा के तरह सब जगह जासक्ता हो) पु० नहुप राजा का बेटा।

सं० यव--(यु=मिलना) पु० जौ, एक तरह का अनाज, २ वेग, तेज़ी

सं० यवन--(यु=मिलना, वा जुं=उतावला होना) पु० पहले समय में यूनान या (आयोनिया) के रहने वालों को यवन कहते थे पर अब मुसलमान और फरंगी आदि सब विदेशियों को यवन कहते हैं, म्लेच्छ, मलेच्छ।

सं० यवीयान् } गु० अतियुवा,
यविष्ठ } अति शीघ्रगामी, तेजरौ।

सं० यश--(यशस्, अश्=फैलना) पु० कीर्त्ति, नामवरी, नाम, ख्याति, शुहरत।

सं० यशस्वी--(यशस्) गु० नामी, नामवर, प्रतिष्ठित, मुअज्जिज़।

सं० यशोदा--(यशस्=यश, दा=देना) स्त्री० जसोदा शब्द को देखो।

प्रा० यहां--(सं० इह) क्रि० वि० इस जगह, इस ठौर, इधर।

प्रा० यहांकायहीं--बोल० ठीक इसी जगह।

प्रा० या--सर्वना० यह, २ इसका।

सं० याग-(यज्=पूजना) भा० पु० यज्ञ, होम, हवन, पूजा, बलिदान।

सं० याचक--(याच्=मांगना) क० पु० मांगनेवाला, मंगता, याचक, भिखारी।

सं० याचना--(याच्=मांगना) भा० स्त्री० भीख मांगना, चाहना, अर्थना, दरख़्वास्त करना।

सं० याञ्चा--भा० स्त्री० याचना, मांगना, दरख़्वास्त।

सं० याचित--(याच्=मांगना) र्म० पु० मांगा हुआ, चाहता हुआ।

सं० याजक--(यज्=यज्ञ करना, वा पूजना) पु० यज्ञ कराने वाला, पुजारी, पुरोहित। [पूजा कराना।

सं० याजन--भा० पु० यज्ञ कराना,

सं० यात-र्म० पु० गत, गया।

सं० यातना--(यत्=दंड देना, दुःख देना) स्त्री० नरक का दुःख, पीड़ा, क्लेश, बड़ा भारी दुःख।

सं० याता-क० पु० जाने व चलनेवाला।

सं० यातु--(या=चलना) पु० राक्षस, गु० चलने वाला।

सं० यातुधान--(यातु=ऐसा, धा=रखना, अर्थात् कहलाना) पु० राक्षस, निशाचर, दैत्य, असुर।

सं० यात्रा--(या=जाना) स्त्री० यात्रा तीर्थ को जाना, २ सफर जाना, जियारत, कूच, प्रस्थान, विदा, ३ कोई पर्व अथवा उत्सव जिसमें देवताकी मूर्त्तिकोरथआदिमें बैठाकर बाहर लेजातेहैं जैसे रथयात्राआदि।

सं० यात्रिक } (यात्रा) क० पु०
यात्री } यात्रा करनेवाला, यात्री, जियारती, तीर्थ करनेवाला।

सं० यादव--(यदु) पु० यदुवंश के लोग, यदुवंशी, २ श्रीकृष्ण।

सं० यादवपति--(यादव+पति) पु०

श्रीकृष्ण, यदुनाथ, यदुपति।

सं० यादृश-क्रि० वि० जैसा, जैसी, जिसके समान।

सं० यान-(या=जाना) स० पु० वाहन, सवारी, असवारी जैसे हाथी घोड़ा रथ, पालकी आदि।

सं० याम-(यम्=बीतना, रोकना) पु० पहर, रात्रि दिनका अष्टमांश।

सं० यामिक कृ० पु० पहरू, चौकीदार।

सं० यामिनी-(याम) स्त्री० रात, रात्री, रजनी, शर्ब, निहार।

सं० यामिनीपति-(यामिनी + पति) पु० चांद, चन्द्रमा, चन्द्र।

सं० यावज्जीवन-(यावत् + जीवन) क्रि० वि० जीने तक, जीने के अन्त तक।

सं० यावत्-(यत्=मो) क्रि० वि० जबतक, जब लग, २ जितना।

सं० यावनीभाषा-(यावनी =यवनों की, भाषा = बोली) स्त्री० यवनों की बोली।

प्रा० याहि
याही } सर्वना० इसको, इसे।

सं० युक्त-(युज्=मिलना) कृ० पु० मिला हुआ, जुड़ाहुआ, लगाहुआ, २ योग्य, उचित, ठीक।

सं० युक्ति-(युज्=मिलना) भा० स्त्री० मिलना, मेल, २ योग्यता, ३ चतुराई, गुण, रीति, हथौटी, लोक व्यवहार।

सं० युग(युज्=मिलना, वा मिलाना) पु० जोड़ा, २ समय, युग,—हिन्दू चार युगमानते हैं, (१ सत्ययुग १७२८००० बरसों का, २ त्रेता युग १२९६००० बरसों का, ३ द्वापर ८६४००० बरसों का, और ४ कलियुग ४३२००० बरसोंका)

सं० युगल-(युग=जोड़ा, ला=लेना) पु० जोड़ा, दो।

सं० युगान्त-(युग + अन्त) पु० युगका अन्त जिस में सृष्टिका नाश होजाता है।

सं० युगपत्-गु० दो, दोनों या एकदा, एकसमय।

सं० युग्म-(युज्=मिलना वा मिलाना) पु० जोड़ा, युगल, दो।

सं० युत-(यु=मिलना वा मिलाना) गु० मिलाहुआ, युक्त, संयुक्त, शामिल, विशिष्ट,—जैसे श्रीयुत, धर्मयुत।

सं० युद्ध
युध् } (युध्=लड़ना) पु० लड़ाई, संग्राम, विवाद, जंग, कारज़ार।

सं० युद्धनिदेश-पु० पैगाम जंग, लड़ाई का संदेसा।

सं० युद्धशय्या-स्त्री० जंगकी तैयारी, लड़ने को उद्यत होना।

सं० युधान-कृ० पु० संग्रामकारी, जं[illegible]

सं० युधिष्ठिर-(युधि = लड़ाई स्थिर = ठहरनेवाला) पु०

पांडवों में का वड़ा, कुन्ती और पांडु का वड़ा बेटा।

अं० युनाइटेडस्टेट्स, युनाइटेडकिङ्गडम — स्त्री० सम्मिलित राज्य, सल्तनत मुश्तरिका।

सं० युवक, युवाक — पु० तरुण, जवान नवीन अवस्थावाला।

सं० युवती—(युवन्, यु=मिलना) स्त्री० जवान स्त्री, यौवनवती, तरुणी, सोलह बरस से तीसबरस तककी स्त्री।

सं० युवराज (युवन्=जवान, राजा) पु० राजा का वड़ा बेटा जो उसके पीछे राजा होता है, राजकुमार, राजका वारिस, वली अहद।

सं० युवा—(युवन्, यु=मिलना) पु० जवान, तरुण, सोलह बरस से अधिक उमरका।

सं० युस्मद्--सर्वना० त्वत्, तुम।

प्रा० यूं, यों — क्रि० वि० इसतरहसे, ऐसे, योंहीं, बोल० इसीतरह से, ऐसेही, संयोग से, २ वृथा, बेफायदह, विन कारण, सहज में, आसानी से।

सं० यूथ-(यु=मिलना) पु० झुण्ड, समूह, जत्था।

सं० यूथप-(यूथ=समूह, पा=पालना) पु० सेनापति, सेनाका मालिक।

प्रा० यूहा--(सं० यूथ, पु० समूह, झुण्ड)

सं० यूप-पु० स्तम्भ, खंभा।

सं० योग--(युज्=मिलना) भा० पु० मेल, मिलाप, मिलाव, संबंध, लगन, संयोग, जोड़, २ अच्छासमय, शुभ घड़ी, ३ समाधि, ध्यान, परमेश्वर में मनलगाना, तप, तपस्या।

सं० योगनिद्रा—(योग = ध्यान, निद्रा=नींद) स्त्री० विष्णुकी नींद, महामाया, दुर्गा।

सं० योगमाया--(योग, ध्यान, माया =ईश्वर की शक्ति) स्त्री० विष्णुकी माया, महामाया, कुदरत खुदाई।

सं० योगरूढ, योगरूढि — पु० जो शब्द दो शब्दों से बनाहो और सामान्य अर्थ को छोड़ विशेष अर्थ को बतावे जैसे पङ्कज, त्रिशूलपाणि।

सं० योगिनी--(युज्=मिलना, वा मिलाना) स्त्री० शक्ति, नारायणी, गौरी, शाकम्भरी, भीमा, चामुण्डा-पार्वती, भद्रकाली, रुद्राणी, दुर्गाआदि ६४ योगिनी प्रसिद्ध हैं, २ ज्योतिष में अच्छे बुरे को जतलाने वाली।

सं० योगी -- (योग) कृ० पु० ध्यानी, तपस्वी, संन्यासी।

सं० योगेश्वर—(योग=ध्यान वा तप ईश्वर=स्वामी अर्थात् जिसके लिये योगी तपस्या करते हैं) पु० परमेश्वर, ईश्वर, ब्रह्म आदि, सिद्ध, योगीश, तपस्वी।

सं० योग्य--(युज्=मिलना, वा मिलाना) गु० ठीक, उचित, चाहिये, उपयुक्त, संभव, २ निपुण, प्रवीण, लईक, लायक, चतुर, गुणी, ३ समर्थ।

सं० योग्यता--(योग्य) भा० स्त्री० लियाक़त, प्रवीणता, निपुणता, सामर्थ्य।

सं० योजक--(युज्+अक) क० पु० मिलानेवाला।

सं० योजन--(युज्=मिलना, वा मिलाना) पु० चार कोस।

सं० योजना--(युज्=मिलना) भा० स्त्री० मिलाना, जोड़ना, मेल।

सं० योधन--भा० पु० अस्त्र।

सं० योद्धा--(युध्=लड़ना) क० पु० लड़ाका, शूरमा, सावंत, भट, वीर, बहादुर, लड़नेवाला।

प्रा० योधा--(सं० योध, युध्=लड़ना) पु० लड़ाका, वीर।

सं० योनि--(यु=मिलना) स्त्री० भग, पैदा होने की जगह, उत्पत्तिस्थान, जायतवल्लुद।

सं० योषा, योषित्, योषिता--(युष=सेवना, जो पुरुषों से पोषणकी जाती है) स्त्री० नारी, लुगाई, स्त्री, अवला, अंगना।

सं० यौगिक--(योग) गु० दो शब्दों से बना हुआ शब्द, प्रकृति और प्रत्यय के योगसे बना हुआ शब्द।

सं० यौतक, यौतुक--(युतक, यु=मिलना) पु० दहेज, दैजा, व्याह में बेटी का बाप अपनी बेटी को जो धन और कपड़ा आदि देताहै।

सं० यौवनदशा--स्त्री० यौवनावस्था, जवानी की हालत।

सं० यौवन--(युवन्=जवान) भा० पु० जवानी, तरुणाई।

सं० यौवनवती--(यौवन=जवानी, वती=वाली) स्त्री० जवान स्त्री।

—०—

(र)

सं० र--(रा=देना, या=लेना) पु० आग, २ कामदेव की आग, कामाग्नि, ३ तीक्ष्ण, तेज़, तीखा, ४ वेग, ५ क्रोध।

प्रा० रई--स्त्री० दही मथनेकी लकड़ी मथनी, विलोनी।

प्रा० रँहट, रहट--पु० पानी निकालने की चर्खी।

सं० रक्त--(रञ्ज=रंगना) पु० लोहू, रुधिर, शोणित, कुंकुम, केसर, तांवा, गु० लाल।

सं० रक्तकन्द- पु० पलाण्ड, प्याज, २ गाजर, ३ प्रवाल, मूंगा।

प्रा० रक्तकोढ़--(सं० रक्तकुष्ठ) प

एक तरह का कोढ़ जिससे शरीर लाल हो जाता है।

सं० रक्तघ्न--पु० लोहितक वृक्ष, लोध औषध, २ दूब।

सं० रक्तचन्दन--(रक्त+चन्दन) पु० लाल चन्दन। [सिन्दूर।

सं० रक्तचूर्ण--(रक्त+चूर्ण) पु०

सं० रक्तप--(पा=पीना) क० पु० राक्षस, खटमल, मच्छड़।

सं० रक्तपा--(रक्त=लोहू, पा=पीना) स्त्री० जोंक, जलौका।

सं० रक्तपात--(रक्त=लोहू, पत=गिरना) पु० लोहू का गिरना, हत्या, खून।

सं० रक्तबीज--(रक्त=लोहू, बीज=पैदा होना) पु० एक राक्षस का नाम जो शुम्भ निशुम्भका सेनापति था जिसको दुर्गाने मारा, २ (रक्त लाल, बीज=दाना) दाड़िम, अनार।

सं० रक्षक--(रक्ष्=बचाना)क० पु० रक्षा करनेवाला, पालनेवाला, पालक, पोषक, स्वामी, मालिक, मुहाफ़िज़।

सं० रक्षण--(रक्ष=बचाना) भा० पु० रक्षा, पालन, पोषण, बचाव।

सं० रक्षस्--(रक्ष=बचाना, जिससे होम की सामग्री को बचाना, या जिससे अपनेको बचाना) पु० राक्षस निशाचर, भूत।

सं० रक्षा--(रक्ष्=बचाना) स्त्री० बचाव, पालन, उद्धार, २ राख, ३ राखी।

सं० रक्षापेक्षक--(रक्षा+अपेक्षक) क० पु० द्वारपाल, डेवढ़ीदार, सिपाही।

सं० रक्षित--(रक्ष्=बचाना) कर्म० पु० रक्षा कियाहुआ, बचाया हुआ, रक्खा हुआ।

प्रा० रखना--(सं० रक्षण) क्रि० स० धरना, लगाना, खड़ा करना, टिकाना, बिठलाना, २ पकड़ना, अधिकारी होना, मालिक होना, ३ बचाना, रक्षा करना, ४ बिचारना, सोचना।

प्रा० रखवाला--(रखना) क० पु० रखवाली करनेवाला, बचाने वाला, गड़रिया, चरवाहा।

प्रा० रखवाली--(रखना) भा० स्त्री० बचाव, रक्षा, खबरदारी।

प्रा० रखैया--(रखना) क० पु० रखने वाला।

प्रा० रगड़--(रगड़ना) भा० स्त्री० घिसाव, संघर्ष, मलाव। [घिसना।

प्रा० रगड़ना--क्रि० स० मलना,

प्रा० रगड़ा--पु० झगड़ा, २ घिसाव।

प्रा० रगड़ाझगड़ा--बोल० लड़ाई, दंगा, बखेड़ा, फ़साद।

प्रा० रगेदना-- क्रि० स० खदेड़ना, पीछा करना, भगादेना।

सं० रघु—(रघि वा लघि=जाना,जो धरती के अन्त तक अपनी जीत को फैलाता है) पु० एक सूर्य वंशी राजा का नाम जो दिलीप राजा का बेटा, और श्रीरामचन्द्रका पर दादा था, २ रघु का वंश।

सं० रघुनन्दन—(रघु=रघुवंशियोंको, नन्दन=आनन्द देने वाला) क० पु० श्रीरामचन्द्र ।

सं० रघुनाथ—(रघु+नाथ) पु० श्रीरामचन्द्र ।

सं० रघुपति—(रघु+पति) पु० श्रीरामचन्द्र । [श्रीरामचन्द्र।

सं० रघुराज—(रघु+राजा) पु०

सं० रघुवंश—(रघु+वंश) पु०रघु राजा का कुल, २ कालीदास कवि का बनाया हुआ एक प्रसिद्ध काव्य जिस में राजा दिलीप से लेकर राजा अग्निवर्ण तक का वर्णन किया है।

सं० रघुवंशतिलक, रघुकुलतिलक (रघुवंश,रघु राजाके कुल में तिलक=श्रेष्ठ) पु० राजा दशरथ २ श्रीरामचन्द्र ।

सं०रघुवर—(रघु=रघुवंशियों में, वर =श्रेष्ठ) पु० श्रीरामचन्द्र, रघुनाथ।

सं० रङ्क-(रक्=स्वाद लेना, या पाना)गु० ग़रीब, कंगाल, दरिद्री, २ कृपण, लालची, लोभी ।

सं० रङ्ग—(रञ्ज्=रंगना) पु० वर्ण,२ डौल, रीत, ढंग, ढब, ३ खेल, खुशी, आनन्द, ४ (रगि=जाना, वा पाना) रांगा धातु ।

प्रा० रंगउड़जाना—बोल० रङ्ग बदल जाना, डरना ।

प्रा० रंगउतरजाना—बोल० पीला होजाना, फीका होना, २ शोच में होना, कुढ़ना, कलपना ।

प्रा० रंगकरना--बोल० खुशीकरना, विलसना, समय को आनन्द में बिताना ।

प्रा० रंगचढ़ना--बोल० शराब के नशे में मगन होना ।

प्रा० रंगदेखना--बोल० किसी चीज़ की हालत को, या उसके फल अथवा अन्त या परिणाम को जानना ।

प्रा० रंगबरंग(सं०रङ्गविरङ्ग) बोल० रंग रंग का, कई रंग का, चित्र विचित्र, तरह २ का, भांति भांति का।

प्रा० रंगबिगड़ना--बोल० किसी चीज़ की हालत बदलना।

प्रा० रंगभंग--बोल० आनन्द में विगाड़ होना, खेल का विगाड़, खुशी में शोच होजाना ।

प्रा०रंगमहल--पु० भोग विलासकरने का महल । [खेल जीतना ।

प्रा० रंगमारना--बोल० चौपड़ का

प्रा०रंगरलियां—स्त्री० व० व०

नन्द, हर्ष, खुशी, रंगरस, हँसी खुशी, हुलास, भोगविलास।

प्रा० रंगरस--(सं० रङ्ग + रस) बोल० आनन्द, हर्ष, सुख, खुशी।

प्रा० रंगरातना--बोल० खूब गहरा प्यार होना।

प्रा० रंगराता--बोल० रंग में रंगा हुआ, प्रसन्न, आनन्दित।

प्रा० रंगरूप--(सं० रङ्ग + रूप) बोल० चमक दमक, छवि, हुस्न, जमाल।

प्रा० रंगलगाना--बोल० रंगना, रंग चढ़ाना, २ झगड़ा उठाना, बखेड़ा मचाना। [शोभा, हुस्न।

प्रा० रंगत--(रङ्ग) स्त्री० रंग, वर्ण,

प्रा० रंगना--(सं० रञ्जन) क्रि० स० रंग चढ़ाना, रंग देना।

सं० रंगभूमि--(रङ्ग + भूमि) स्त्री० नाच घर, अखाड़ा, नाट्यशाला, रंगशाला, धनुषयज्ञ की भूमि।

प्रा० रंगवाई } (रंगाना) स्त्री०
रंगाई } रंगनेकी मजूरी।

प्रा० रंगीला--(रङ्ग) गु० चटकीला, भड़कीला, रसीला, रसिया, रसिक, छैला।

प्रा० रचना--(सं० रचन, रच्=बनाना) क्रि० स० बनाना, नई बात निकालना, सिरजना, पैदा करना, तैयार करना, २ क्रि० अ० बनना, पैदा होना, तैयार होना।

सं० रचक--(रच्+अक) क० पु० बनानेवाला, मुसन्निफ, उत्पादक।

सं० रचना--(रच्=बनाना) स्त्री० तसनीफ़, बनावट, सजावट, तैयारी, २ पैदाकी हुई चीज़, ३ ग्रन्थ।

सं० रचयिता--क० पु० निर्म्माणक, रचनेवाला, मुसन्निफ़।

प्रा० रचाना--(सं० रच्=बनाना, या रञ्ज=रंगना) क्रि० स० करना, बनाना, २ मेंहदी से अथवा अलता आदि और किसी चीज से हाथ पैर रंगना, ३ व्याह आदि शुभ काम को शुरूम करना।

सं० रचित--(रच्=बनाना) कर्म० पु० बनाया हुआ, सिरजा हुआ, पैदा कियाहुआ, निर्मित।

सं० रज } (रञ्ज=रंगना) स्त्री०
रजस् } रेत, धूलि, २ पराग, फूलों की सुगंधित धूलि, ३ स्त्रीका कँवल या फूल, ४ रजोगुण। [पु० धोबी।

सं० रजक--(रञ्ज=रंगना) क०

सं० रजकी--(रजक) स्त्री० धोबिन।

सं० रजकण--पु० धूलिकण।

सं० रजत--(रञ्ज=रंगना, या चमकना, या राज्=शोभना) पु० चांदी, रूपा, २ हाथी दांत, ३ हार, ४ सोना, गु० धौला, शुक्ल वर्ण, स्वेत, सफेद।

सं० रजतद्युति—पु० महावीर गु० गौरवर्ण, श्वेतवर्ण।

सं० रजन—भा० पु० रागोत्पादन, रंगना, रँगसाज़ी।

सं० रजनि } (रञ्ज्=प्यार करना)
रजनी } स्त्री० रात, रात्रि।

सं० रजनिकर } (रजनी=रात, कृ=
रजनीकर } करना) पु० चांद, चंद्रमा।

सं० रजनिचर } (रजनी=रात,
रजनीचर } चर्=चलना) पु० राक्षस, असुर, निशाचर, २ भूत, प्रेत, ३ चोर, ४ रातको फिरनेवाला।

सं० रजनीजल—पु० तुषार, ओस, नीहार, कुहरा।

सं० रजनीमुख—(रजनी=राति, मुख=मुँह) पु० सांझ, संध्या, प्रदोष, राति का प्रारम्भ, सफ़क़।

प्रा० रजवाड़ा—(राजा) पु० राज, राजपूताना।

सं० रजस्वला—(रजस्) स्त्री० वह स्त्री जो कपड़ों से हो, ऋतुमती।

[illegible]० रजाई } (सं० राजादेश, राज
रजायसु } =राजा, आदेश=आज्ञा) स्त्री० राजा की आज्ञा, राजा का हुक्म।

[illegible]० रजोगुण—(रजस्+गुण) पु० दूसरागुण जिससे मोह, क्रोध, प्यार, अहंकार आदि पैदा होते हैं।

सं० रजोग्राहि—कृ० पु० वायु, वात, हवा।

सं० रज्जु—(सृज्=पैदा होना, या बनाया जाना) स्त्री० रस्सी, रास, डोरी, जेवरी।

सं० रञ्जक—(रञ्ज्=प्यार करना, वा रंगना) कृ० पु० प्यार करने वाला, प्रीति करनेवाला खुश करनेवाला, प्रसन्न करनेवाला, २ रंगनेवाला, चित्रकार, ३ पु० रंग।

सं० रञ्ज—पु० रंजन, रंगना, रंगसाज़ी, रंग, राग।

सं० रञ्जन—(रञ्ज्=प्यार करना, वा रंगना) भा० पु० प्रसन्नता, प्यार, अनुराग, २ रंगना, रँगावट, चित्रकारी, ३ लालचन्दन, गु० प्रीति करनेवाला, प्रसन्नकरनेवाला, खुश करनेवाला, हर्ष देनेवाला।

सं० रञ्जित—(रञ्ज्=प्यारकरना, वा रंगना) कर्म० पु० प्रसन्न, प्यार किया हुआ, २ रंगा हुआ।

सं० रटन—भा० पु० घोषणा, रटना, यादकरना।

प्रा० रटना—(सं० रटन, रट्=बोलना) क्रि० स० बोलना, कहना, बराबर बोलना, दोहराना, तिहराना।

सं० रटित—कर्म० पु० घोषित, याद किया हुआ।

सं० रण—(रण्=शब्द करना)

लड़ाई, युद्ध, जंग, संग्राम, ध्वनि, शब्द, पर्यटन, भ्रमण।

सं० रणभूमि--(रण+भूमि) स्त्री० रणक्षेत्र, लड़ाईका खेत, लड़ाई का मैदान।

सं० रणित--(रण्=शब्द करना) र्म्म० बजता हुआ, बजती हुई।

प्रा० रण्डापा--(राण्ड) भा० पु० वेवापन, विधवापन।

सं० रत-(रम्=खेलना) पु० मैथुन, स्त्री प्रसंग, कामकेलि, र्म्म० लगा हुआ, तत्पर, आसक्त।

सं० रततालिन्--पु० अध्यापक, उस्ताद, २कामुक, भडुआ, परस्त्रीगामी।

सं० रतताली--स्त्री० कुटनी, पुंश्चली।

प्रा० रतन--पु० रत्न शब्दको देखो।

प्रा० रतनार--(सं० रक्त) पु० लाल रंग, गु० लाल।

सं० रतहिण्डक-- पु० वेश्यापति, लंपट, कामुक।

प्रा० रतालू--(सं० रक्तालु, रक्त=आलू) पु० एक तरकारी का नाम।

सं० रति--(रम्=खेलना) स्त्री० कामदेव की स्त्री, २ प्यार, प्रेम, अनुराग, ३ मैथुन, सम्भोग, स्त्रीसंग, क्रीड़ा। [कामदेव।

सं० रतिपति--(रति+पति) पु०

प्रा० रती-(सं० रति) स्त्री० कामदेव की स्त्री, २ भाग्य, भाग, किस्मत, नसीब।

प्रा० रतीचमकना--बोल० बढ़ना, फलना फूलना, भाग्यवान् होना।

प्रा० रतीवन्त-गु० भाग्यवान्, भालब्धी, अच्छी किस्मतवाला।

प्रा० रतौंधा--(रत=रात, औंधा=अन्धा) पु० एक बीमारी जिस में रात को नहीं दीखता।

प्रा० रत्ती--(सं० रक्तिका, रक्त) स्त्री० आठ जौ का तौल, २ लाल घुंगची।

सं० रत्न--(रम्=खेलना जिस से वा प्रसन्न होना, जिस को देखकर) पु० रतन, जवाहिर, मणि, बहुत मोल का पत्थर,—रत्न नौ हैं-(१ हीरा, २ पन्ना, ३ नीलम, ४ माणिक, ५ लहसुनियां, ६ पुखराज, ७ गोमेद, ८ मोती, ९ मूंगा) २ आंख की पुतली।

सं० रत्नकन्दल--पु० प्रवाल, मूंगा।

सं० रत्नगर्भ--पु० समुद्र, कुबेर, परमेश्वर, स्त्री० पृथिवी।

सं० रत्नजटित--(रत्न+जटित) र्म्म० पु० रत्नों से जड़ा हुआ।

सं० रत्नसानु--पु० सुमेरु पर्वत।

सं० रत्नसिंहासन--(रत्न+सिंहासन) पु० रत्नों से जड़ा हुआ तख्त।

सं० रत्नसू--(सू=उत्पन्न करना) स्त्री० मेदिनी, पृथिवी, ज़मीन।

सं० रत्नाकर--(रत्न=जवाहिर, अथवा मोती, आकर=खानि) पु० समुद्र, २ रत्नों की खानि।

सं० रत्नावली--(रत्न+आवली) स्त्री० रत्नों की माला, रत्नमाला, २ एक नाटक।

सं० रथ--(रम्=खेलना,प्रसन्न होना) पु० एक तरह की चार पहियों की गाड़ी।

सं० रथकार--क० पु० रथ बनाने वाला, बढ़ई, सूत्रधार, वर्णसंकर, क्षत्री से वैश्य कन्या में उत्पन्न उस को माहिष्य कहते हैं वैश्य से शूद्र कन्या में जन्मा उसे करण कहते हैं माहिष्य से करण संज्ञावती कन्या में उत्पन्न पुत्र उसे रथकार कहते हैं।

सं० रथगर्भक--क० पु० काँधे की सवारी, शिविका, पालकी, डोली।

सं० रथगुप्ति--स्त्री० रथ का परदा, रथ का ओहार, पोशिश, परदा।

सं० रथवान्--पु० सारथी।

सं० रथवाहक--क० पु० सारथी, यंतार।

सं०रथाङ्ग-(रथ+अङ्ग) पु० पहिया, चक्र, चाका, २ चकवा पक्षी, चक्रवाक।

सं० रथिक } (रथ) क० पु० रथ का
रथी } स्वामी, रथ पर चढ़ने वाला, रथपर चढ़कर लड़ने वाला, जनाज़ा, ताबूत मुर्दा की टिकटी।

सं० रद } (रद्=टुकड़े करना) पु०
रदन } दांत, दन्त, दशन, ३२ संख्या।

सं० रदनी--क० पु० हाथी।

सं० रदच्छद } (रद वा रदन=दांत
रदनच्छद } छद्=ढकना) पु० होंठ, ओष्ठ, लब।

सं० रदपट--(रद=दांत, पट=आड़) पु० होंठ, लब।

प्रा० रद्दी--(अ० रद) स्त्री० निकम्मे और पुराने काग़ज़।

प्रा० रनवास } (रानीवास) पु०
रनिवास } रानियों के रहने के महल।

सं० रन्ति--स्त्री० क्रीड़ा, प्रसन्नता, रमण, प्रीति। [२ कुक्कुर, कुत्ता।

सं० रन्तिदेव--पु० चन्द्रवंशी राजा,

प्रा० रन्धना--(सं० रन्धन, रध्=पकना) क्रि० अ० पकना।

सं० रन्ध्र--(रध्=नाश होना, या पूरा होना) पु० छेद, छिद्र, सूराख, २ दोष, दूषण, ऐब।

प्रा० रपटना--क्रि० अ० फिसलना, खिसलना।

प्रा० रबड़ी--स्त्री० गाढ़ा दूध, खोवा।

सं०रभस--पु० हर्ष, वेग, तेज़ी, उत्सुकता।

सं० रमक--(रम् + अक, रम्=क्रीड़ा करना) क० पु० कामुक पति, परस्त्रीगामी, जार, गु० थोड़ा, कम।

प्रा० रमचेरा / रामचेरा पु० दास, गुलाम।

सं० रमण--(रम्=खेलना) भा० पु० खेल, क्रीड़ा, २ मैथुन, भोगविलास, रति, ३ रमने वाला, पति, प्रियतम, प्यारा, ४ कामदेव, जार, ५ मनोहर, ६ गर्दभ, पटोल की जड़।

सं० रमणी--(रम्=खेलना) स्त्री० सुन्दर और मनोहर स्त्री।

प्रा० रमणीक--(सं० रमणीय) गु० मनभावन, सुन्दर, सुहावना, दिलचस्प।

सं० रमणीय--(रम्=खेलना) कर्म० पु० सुन्दर, मनोहर, रम्य, दिलरुबा।

सं० रमति--क० पु० नायक, पति घूमनेवाला, घूमताहै।

प्रा० रमना--(सं० रमण) क्रि० अ० खेलना, क्रीड़ा करना, भोग करना, आनन्द करना, २ फिरना, घूमना, ३ पु० शिकार करने की जगह।

सं० रमल--(अ० रमल) पु० एक तरह का ज्योतिष शास्त्र।

सं० रमा--(रम्=खेलना) स्त्री० लक्ष्मी, विष्णुपत्नी, २ स्त्री, लुगाई।

सं० रमापति--(रमा + पति) पु० विष्णु, नारायण, भगवान।

सं० रम्भा--(रभि=शब्द करना) स्त्री० एक अप्सरा का नाम, वेश्या, २ केला, कदली, ३ पार्वती, ४ बिलचा, खंता।

सं० रम्य--(रम्=खेलना) क० पु० सुन्दर, मनोहर, रमणीय।

सं० रम्या--स्त्री० रात्रि, सुन्दरी, पद्मिनी। [णोदय, शोभा।

सं० रम्र--पु० प्रारम्भ, पूर्वभाग, अरु

सं० रय--(रय्=जाना) पु० वेग, प्रवाह, जल्दी, साहस। [करना।

प्रा० ररना--भा० पु० बोलना, शब्द

प्रा० रलना--क्रि० अ० मिलना, २ पिसना, बुकनी होना।

सं० रल्लक--कम्बल, पक्ष्मकम्बल।

सं० रव--(रु=शब्द करना) पु० शब्द, ध्वनि, आवाज, आहट।

प्रा० रवा--पु० सोने या चांदी का छोटा छोटा दाना, २ बालू, और मिसरी आदि का दाना, ३ गेहूंकी मैदा से छाना हुआ दाना।

सं० रवि--(रु=शब्द करना, अर्थात् स्तुति करना) पु० सूर्य।

सं० रवितनया--(रवि + तनया) स्त्री० यमुना नदी।

सं० रविनन्दिनी--(रवि + नन्दिनी) स्त्री० यमुना नदी।

सं० रविपुत्र--पु० कर्ण, सुग्रीव।

सं० रविमणि-स्त्री० सूर्य कान्तिमणि, सूर्य की मणि।

सं०रविमण्डल—(रवि + मण्डल) पु० सूर्य मण्डल, सूर्यलोक।

सं०रविवार—(रवि=सूर्य,वार=दिन) पु० एतवार, इतवार, आदित्यवार, सूर्य का दिन।

सं० रशना—(रश्=शब्द करना) स्त्री० जीभ, २ स्त्रियों के पहनने की करधनी।

सं०रश्मि—(अश्=फैलाना, वा रश्=शब्दकरना) स्त्री० किरण, तेज, कान्ति, २ रास, घोड़े की बागडोर।

सं० रस—(रस्=स्वाद लेना, प्यार करना) पु० अर्क़, किसी पौधे का दूध, सार, २ स्वाद, सवाद, मज़ा, चाट, रुचि,—(रस छः प्रकार के हैं) १ मीठा, २ खट्टा, ३ खारा, ४ कड़ुवा, ५ तीता वा चरपरा, ६ कसैला, ३ साहित्य वा इल्म अदब में नौ रस हैं (१ शृङ्गार, २ हास्य, ३ करुणा, ४ रौद्र, ५ वीर, ६ भयानक, ७ वीभत्स ८ अद्भुत, ९ शान्त वा वात्सल्य) ४ पारा, ५ मेल, मिलाप, आपस की प्रसन्नता, प्यार, ६ द्रव पदार्थ, बहने वाली चीज़।

प्रा० रसरस—क्रि० वि० धीरे धीरे।

सं०रसज्ञ—(रस=स्वाद,ज्ञा=जानना) क० पु०रसिक, रसका जाननेवाला, भाव जाननेवाला, सारजाननेवाला, पु० कवि, २ पंडित, ३ रसायनी।

सं० रसज्ञा—(रस=स्वाद, ज्ञा=जानना) स्त्री० जीभ।

सं० रसन—भा०पु० स्वाद,लज्जत।

सं०रसना—(रस्=स्वाद लेना) स्त्री० जीभ, जिह्वा, रसज्ञा।

सं० रसराज—पु० पाराधातु।

सं० रसा—(रस) स्त्री० पृथ्वी, धरती, ज़मीन, २ जीभ।

सं० रसातल—(रसा=धरती, तल =नीचे) पु० पाताल, नीचे का सातवां लोक जहां नाग, असुर, दैत्य और राक्षसरहते हैं, और शेषजी, और राजाबलि आदि राज करते हैं।

सं० रसायन—(रस=अर्क़, या पारा अयन=राह, वा जाना)पु० दो तीन चीज़ोंको मिलाकर एक चीज बनाने की अथवा दोतीन चीज़ोंको जुदा २ करने की विद्या, कीमिया।

सं० रसायनविद्या—स्त्री० इल्म कीमिया, किमिस्ट्री।

सं०रसाल—(रस=स्वाद, आ=चारों ओर से, ला=लेना)पु०आम, २ पनस, ३ ऊख।

सं०रसिक—(रस)क०पु०रस जानने वाला, रसीला, रसिया, रसज्ञ, २ लम्पट, लुच्चा, ऐयाश।

प्रा० रसिया—(सं० रसिक) गु० लुच्चा,लम्पट,विषयी, भोगी,ऐयाश।

प्रा० रसीला--(रस) गु० रसभरा। सुस्वादु, मजेदार, २ विषयी, व्यसनी, भोगी, लम्पट।

सं० रसेन्द्र----(रस + इन्द्र) पु० पारा धातु, रसराज।

सं० रसोत्पल--(रस + उत्पल) पु० मुक्ताफल, मोती, २ पारसमणि, पारसपत्थर।

प्रा० रसोइया--(रसोई) पु० रसोई बनाने वाला, खाना पकानेवाला।

प्रा० रसोई--(सं० रसवती) वि० स्त्री० खाना बनाने की जगह, २ खाना, भोजन।

प्रा० रस्सी--(सं० रश्मि) स्त्री० डोरी, जेवरी।

प्रा० रहकला--पु० एक तरह की तोप, २ तांगा, एकतरहकीगाड़ी।

प्रा० रहडू--पु० छोटीगाड़ी।

प्रा० रहन, रहनि--(सं० रहण, रह्=जाना) स्त्री० चाल, चलन, रीति।

सं० रंहस्--पु० वेग, तेजी।

सं० रहस्--पु० एकान्त, गोप्य, गुह्य, तत्त्व, अव्य० निर्ज्जन, जनरहित, एकान्त, तनहाई, खिलवत।

प्रा० रहस, रहसि--(सं० रहस्य) क्रि० वि० एकान्तमें, तनहाई।

सं० रहस्य-(रह्=छोड़ना) गु० एकान्त, निर्जन, गुप्तवस्तु, गोपनीय, तत्त्व।

सं० रहित--(रह्=छोड़ना) स्त्री० पु० विना छोड़ा हुआ, खाली, हीन, शून्य, वर्जित, त्यक्त, पृथक्, भिन्न।

प्रा० राई--(सं० राजिका, राज् =चमकना) स्त्री० सरसोंकेऐसीचीज।

प्रा० राई, राऊ, राय--(सं० राजा) पु० राजा, स्वामी, प्रधान, जैसे रघुराई, या रघुराऊ, और नन्दराय)

प्रा० राउत--(सं० राजपुत्र) पु० सरदार, मालिक।

प्रा० रांग, रांगा--(सं० रङ्ग) पु० एक धातु का नाम।

प्रा० रांझन, रांझा--(सं० रंजन) पु० प्रियतम, सज्जन, २ एक मनुष्य का नाम जो हीरका आशिक अर्थात् प्रियतम था जिस का राजपूताने में होली के दिनों में स्वांग बनता है।

प्रा० रांड--(सं० रण्डा) स्त्री० विधवा, जिस स्त्री का पति मर गया हो।

प्रा० रांडकासांड--बोल० विधवा लुगाई का बेटा, विगड़ा हुआ लड़का।

प्रा० रांधना--(सं० रन्धन, रन्ध् =पकाना) क्रि० स० पकाना, रींधना।

प्रा० रांपी--स्त्री० खुर्पी, करणी।

प्रा० रांभना--(सं० रम्भण, रभि=

शब्दकरना) क्रि० अ० गायका शब्द करना, डकारना, विंबियाना।

सं० राका-(रा=देना, सुख अथवा आनन्द को) स्त्री० पूनों, पूर्णमासी, २ नदी, ३ खजुली ४ प्रथम रजोवती स्त्री।

सं० राकापति (राका+पति) पु० पूर्णमासी का चाद।

सं० राकेश-(राका+ईश) पु० पूर्णमासी का चन्द्रमा।

सं० राक्षस (रक्ष्=बचाना जिससे होम की सामग्री को, अथवा अपने को) पु० असुर, निशिचर, रजनीचर।

प्रा० राख-(सं० रक्षा, रक्ष्=बचाना) स्त्री० भस्म, भभूत, खाक।

प्रा० राखना-(सं० रक्षण) क्रि० स० रखना, धरना, बचाना।

प्रा० राखी-(सं रक्षिका, रक्ष्=बचाना) स्त्री० रँगे हुये सूतका तार जिस को हिन्दू पूजा आदि उत्सव में अपने हाथ में बाँधते हैं २ सावन सुदी १५ का तिहवार जिसमे ब्राह्मण और जातिके लोगों के हाथ में रँगे हुये सूत का तार या रेशम का डोरा बांधते है।

सं० राग-(रञ्ज्=रंगना, वा प्यार करना) पु० क्रोध, २ प्यार, ३ रंग, ४ गान, सुर,—गानविद्या में राग छः है (१ भैरव, २ मल्लार, वा मेघ, श्री राग वा ३ सारंग, ४ हिंडोल, ५ वसन्त, ६ दीपक)।

प्रा० रागछाना-बोल० राग रंग होना, गाना बजाना होना, तान मिलना।

प्रा० रागरंग-बोल० गाना बजाना।

प्रा० रागना-(राग) क्रि० स० गाना शुरू करना।

सं० रागिणी-(राग) स्त्री० गान भेद, तान, सुर, (छ राग और ३६ रागिणी हैं) १ राग, भैरव—उत्पत्ति शिव के मुख से निकला है शिव का ध्यान, शरद् ऋतु में पिछली राति को गाना। उस की रागिणी (१ भैरवी २ बंगाली ३ बरारी ४ मधुमाधवी ५ सिन्धवी ६ गुर्जरी) २ मल्लार वा मेघ—वर्षाऋतु में सब समय मे विशेष करके शृङ्गार रस मे गाना इस के गान मे मेघवृष्टि अनायास हो रागिणी (१ वेलावली २ वर्षा ३ कानड़ा ४ माधवी ५ क्रीडा ६ पटमंजरी) ३ श्रीराग वा सारंग—हेमन्तऋतु में सिंहासनारूढ़ सुन्दर पुरुष का ध्यान करके गाना। रागिणी (१ गान्धारी २ सुभगी ३ गौरी ४ कौमारिका ५ वैरागी ६ काफी) ४ हिंडोल— ब्रह्मा के शरीर से उत्पत्ति, वसन्तऋतु में दिन के प्रथम भाग में हिं

का ध्यान करके गाना इसके गानेमें हिंडोला आपसे आप चलने लगता है। रागिणी (१ मायूरी २ दीपक ३ देशवारी ४ पाहिडा ५ बराड़ी ६ मोरहारी) ५ वसन्त—वसन्त पंचमी से राम नौमी तक आठों पहर गाना वीररस में रागिणी (१ टोड़ी २ पंचमी ३ ललिता ४ पटमंजरी ५ गुर्जरी ६ विभासा) ६ दीपक—सूर्य के नेत्र से उत्पत्ति, गजारूढ़ पुरुष का ध्यान करके ग्रीष्मऋतु में मध्याह्न समय गाना। रागिणी (१ देशी २ कामोदा ३ केदारा ४ कान्हड़ा ५ कर्णाटकी ६ गुर्जरी) इसके गाने पर बुझा दीपक जल उठता है।

सं० राघव—(रघु) पु० रघुनाथ, रघुराज, रघुनन्दन, श्रीरामचन्द्र।

प्रा० राचना—(सं० रचन, रच=बनाना) क्रि० स० प्यार के वश होना, मिलना, मन लगना, लीन होना।

प्रा० राछ—पु० बढ़ई अथवा राज अथवा और कारीगरों के औज़ार।

प्रा० राज—(सं० राज्य) पु० बादशाहत, हकूमत, बादशाही, अमल, राजा का अधिकार, राज्य।

प्रा० राज—पु० कारीगर, मेमार, संगतराश।

सं० राजकन्या—(राजन्=राजा, कन्या=बेटी) स्त्री० राजा की बेटी, राजकुँवारी, राजकुमारी।

सं० राजकर—पु० राजस्व, लगान, चुंगी, महसूल, सरकारी मालगुज़ारी।

सं० राजकीय—पु० सरकारी बादशाही।

सं० राजकीयमहासभा—स्त्री० शाही दरबार, पारलीमेण्ट।

सं० राजकुटुम्ब—पु० शाही खानदान, राजवंश, राजाका घराना।

सं० राजकुमार—(राजन् + कुमार) पु० राजा का बेटा, राजपुत्र।

सं० राजकृत्य— पु० कारसल्तनत, राजकाज। [न०, रायलट्रेज़री।

सं० राजकोश—पु० बादशाही खज़ा-

प्रा० राजगादी—(राजा + गादी) स्त्री० राजगद्दी, राजा का आसन, पायह तख्त। [दण्ड।

सं० राजदण्ड—पु० राजसम्बन्धी

सं० राजदत्त—त्रि० पु० राजा का दिया हुआ, राजा से मिला।

सं० राजद्रोही—क० पु० राजा का वैरी, राजविमुख, बागी।

सं० राजद्वार—(राजन + द्वार) पु० राजा की डेवढ़ी।

सं० राजधानी—(राजन=राजा, धा=रखना या रहना) स्त्री० राजस्थान,

राजपुर, वह नगर जहा राजा रहे और राज का काम काजहो, दारुलूसलतनत।

प्रा० राजना—(सं० राजन, राज्=शोभना, चमकना) क्रि०अ०शोभना, चमकना, विराजना।

सं०राजनीति—(राजन् + नीति) स्त्री० राज करनेकीरीति, राजप्रबंध, २ एक ग्रन्थ का नाम।

सं० राजन्य—पु० क्षत्रिय, राजपुत्र।

सं०राजपत्नी—(राजन्+पत्नी) स्त्री० राणी।

सं० राजपुत्र--(राजन्+पुत्र) पु० राजा का बेटा, राजकुमार, २ राजपूत, क्षत्री। [क्षत्री।

प्रा० राजपूत- (सं० राजपुत्र) पु०

सं० राजभवन—(राजन् +भवन) पु० राजा का महल।

सं० राजमन्दिर (राजन् +मंदिर) पु० राजा का महल।

सं० राजमार्ग—(राजन्+मार्ग) पु० बादशाही रस्ता।

सं०राजरोग—(राजन +रोग) पु० रोगों का राजा अर्थात् वड़ा रोग, जैसे क्षयरोग आदि।

सं० राजशासन—(राजन्+ शासन) पु० राजा का दण्ड।

सं० राजस-(रजस्) पु० रजोगुण से पैदाहुआ, पु०रजोगुण, अहंकार, क्रोध, मोह आदि।

सं०राजसभा— (राजन्+सभा) स्त्री० राजा का दरबार।

सं० राजसूय--(राजन्=राजा, सू= सींचना, या किया जाना) पु० एक यज्ञ जिसको केवल चक्रवर्ती राजा ही करता है और इस यज्ञ का सारा काम काज केवल उसके अधीन और राजा करते हैं।

सं०राजहंस—(राजन् +हंस, अर्थात् हंसों का राजा) पु० एक तरह का हंस जिसके पैर और चोंच लाल होती है।

सं०राजा—(राजन, राज्=शोभना, चमकना) पु० नरपति, भूपति।

सं०राजाधिराज— (राजा+अधिराज) पु० बड़ाराजा, महाराजा, राजेश्वर, चक्रवर्ती, शाहन्शाह।

सं०राजिका } (राज्=शोभना, वा
राजी } चमकना) स्त्री०, पंक्ति, पांति, श्रेणी, कतार, पांती, राई, नाली, नहर, केदार, क्यारी, वन, ऊसर भूमि।

सं०राजित-(राज्=शोभना, चमकना) क० पु० शोभित, शोभाय

सं०राजीव—(राज्=चमक० कमल, कमल, पद्म।

सं०राजेन्द्र—(राजन्+इन्द्र) पु० महाराजा, राजाधिराज।

सं० राजेश्वर--(राजन् + ईश्वर) पु० राजाओं का राजा, महाराजा, राजाधिराज, शाहन्शाह।

सं० राज्य--(राज्=शोभना, चमकना) पु० राज शब्द को देखो।

सं०राज्याङ्ग—(राज्य + अंग) पु० राजा, मंत्री, मित्र, कोप, देश, दुर्ग, सेना।

प्रा०राणा—(सं०राजन्) पु०राजा (उदयपुरके राजाको राणा कहतेहैं)।

प्रा० राणी } (सं० राज्ञी, राज्=
रानी } शोभना, चमकना) स्त्री० राजा की स्त्री, राजपत्नी।

प्रा० रात } (सं०रात्रि,स्त्री०रजनी,
राती } रैन, निशा, निशि।

प्रा० रातथोड़ी और सांगबहुत- यह कहावत उस जगह बोली जाती है जहां काम तो बहुत हो और समय थोड़ाहो, या थोड़ी आमदनी हो और बहुत खर्च हो।

प्रा० रातोंरात-बोल० रातही में।

प्रा० रातना-(राता) क्रि०स०रंगना, रंग देना,क्रि० अ० किसी से बहुत प्यार होना, किसी पर जी लगना।

प्रा० राता--(सं० रक्त) गु० लाल, २ रंगा हुआ, ३ लगा हुआ।

प्रा०राते—गु० रक्त, लाल।

सं० रात्रि } (रा=देना सुख को)
रात्री } स्त्री० रात, रजनी।

सं० रात्रिचर-- (रात्रि + चर) पु० राक्षस, २ भूत, ३ चौर, ४ रात को फिरनेवाला, चौकीदार।

सं०रात्रिमणि—पु० चन्द्र, चांद।

प्रा० राद }
राध } स्त्री० पीव, मवाद।

सं०राद्ध-- (राध्=सिद्ध करना) कृ० पु० सिद्ध, कामयाब।

सं० राधन--भा० पु० साधन।

सं० राधा--(राध्=सिद्ध करना, पूरा करना) स्त्री० एक गोपी जो श्रीकृष्ण को बहुत प्यारी थी, २ एक नक्षत्र, विशाखानाम नक्षत्र।

सं०राधाकान्त--(राधा +कान्त) पु० श्रीकृष्णचन्द्र।

सं०राधाकुण्ड--(राधा+कुण्ड)पु० गोवर्द्धन पहाड़के पास एक कुण्ड जिस को श्रीकृष्णने खुदवायाथा और उसमें सब तीर्थ आकर पानी डालगये थे।

सं०राधावल्लभ-- (राधा+वल्लभ) पु० श्रीकृष्णचन्द्र।

सं०राधिका--(राध्=सिद्ध करना)

स्त्री० राधा गोपी ।

प्रा० राब--स्त्री० ऊख आदिका रस।

प्रा० राब } स्त्री० जुवार या बाजरे
राबड़ी } को छाछ में मिलाकर पकाया हुआ खाना ।

सं० राब_(रु=शब्द) पु० शब्द ध्वनि ।

सं० राम (रम्=खेलना, जिसमें योगी रमते हैं, अर्थात् जिसके ध्यान मे लगे रहते हैं) पु० परशुराम (यह विष्णु का अवतार जमदग्निऋषि के घर त्रेतायुग के शुरूश्र में अन्यायी क्षत्रियों को दण्ड देने के लिये हुआ था) २ रामचन्द्र, दशरथ राजा का बेटा (यह विष्णु का अवतार अयोध्याके राजा दशरथ के घर त्रेतायुग के अन्तमें लंका के राजा रावण को मारने के लिये हुआ) ३ बलराम, श्रीकृष्ण का बड़ा भाई जो द्वापर युग के अन्तमें रोहिणी के पैदा हुआ, ४ गु० सुन्दर, मनोहर, शुभ, ५ सुख दायी, ६ सर्वव्यापक । .

प्रा० रामकहानी—बोल० बड़ी लंबी बात, लंबीकथा, २ स्त्री० रामायण ।

प्रा० रामराम—बोल० सलाम, प्रणाम, नमस्कार (गँवार लोग सलाम की जगह राम राम करते हैं) ।

प्रा० रामकली } स्त्री० एक रागिणी
रामकेली } का नाम ।

सं० रामगिरि-(राम+गिरि) पु० चित्रकूट पहाड़ जो बुन्देलखण्डमें है जहां वनवास के समय रामचन्द्र पहले पहल रहे थे ।

प्रा० रामजनी-- (सं० रामाजनी, रामा=मनभावन, जनी=स्त्री) स्त्री० कंचनी, पतुरिया, नौची, वेश्या ।

सं० रामचन्द्र--(राम+चन्द्र, अर्थात् चांद के ऐसे सुखदायी राम) पु० विष्णु का सातवां अवतार, श्रीरघुनाथ, राजा दशरथ के बड़े बेटे ।

प्रा० रामतुरई--स्त्री० एक तरकारी का नाम ।

सं० रामदूत--(राम+दूत) पु० रामचन्द्र का दूत, हनुमान् ।

प्रा० रामदोहाई—स्त्री० राम की सौगन्द, परमेश्वर की शपथ ।

प्रा० रामानन्दी—(सं० रामानन्दीय) पु० रामानन्द के मत को माननेवाला, वैष्णव ।

सं० रामा--(रम्=खेलना) स्त्री० सुन्दर स्त्री, मनोहर नारी, सुघर लुगाई, गु० सुन्दर, मनोहर, मनभावन ।

सं० रामायण--(राम=रामचन्द्र, अयन=जगह या रस्ता, अथवा चरित्र) स्त्री० रामचरित्र, रामकथा ।

प्रा० रामावत--पु० एक तरह के वैष्णव साधु, साध ।

प्रा० राय } (सं० राजा) पु०
राव } २ राय, हिंदु[illegible]

विशेष करके कायथों में एक पदवी होती है ।

प्रा० रायता—पु० एक तरह की तरकारी जो दही में कद्दू आदि मिलाने से बनती है ।

प्रा० रायमुनि--पु० एक प्रकार का लाल पखेरू ।

अं० रायलकमीशन=राजा की ओर से कुछ मनुष्य किसी कार्य के निर्णयार्थ नियत किये जावें ।

अं० राय लफैमिली=राजवंश, राजकुटुम्ब, शाहीघराना, शाही खानदान ।

प्रा० रार, रारि, राड़—स्त्री० लड़ाई, झगड़ा, कलह, दंगा, फ़साद ।

सं० राल--(रा=देना) स्त्री० धूना, एक तरह का गोंद ।

प्रा० रावचाव—पु० रागरंग, विलास, आनंद, हर्ष, भोगविलास, २ प्यार, प्रीति, लाग, लगाव ।

प्रा० रावती--स्त्री० एक तरह का डेरा ।

सं० रावण--(रु=शब्द करना या रुलाना, वैरियों को) पु० लंका का राजा जिसको श्रीरामचन्द्र ने मारा ।

सं० रावणारि--(रावण + अरि) पु० श्रीरामचन्द्र ।

प्रा० रावत, राउत—पु० वीर, बहादुर, शूरमा, सावन्त, लड़ाका, शूरवीर, २ एक नीच जाति जो भंगी के बराबर है ।

प्रा० रावरा, रावरो, राउर, रौरा—सर्वना० तुम्हारा, आपका ।

सं० राशि--(अश्=फैलना, वा फैलाना) स्त्री० धान आदि का ढेर, समूह, २ ज्योतिष में मेष, वृष, मिथुन आदि बारह, ३ हिसाब में एक प्रकार का अंक ।

सं० राशिचक्र--(राशि + चक्र) पु० ज्योतिश्चक्र, लग्नमण्डल, द्वादशभाव ।

सं० राष्ट्र--(राज्=शोभना, चमकना) पु० बसा हुआ देश, मुल्क ।

प्रा० रास--(रश्मि) स्त्री० डोर, बाग, जैसे घोड़े की रास ।

सं० रास—(रास्=शब्द करना) पु० खेल, क्रीडा, नाच, जैसे श्रीकृष्ण ने गोपियों के साथ कियाथा ।

सं० रासन--भा० पु० रसनाजन्म-ज्ञान, जीभकास्वाद ।

सं० रासभ—(रास=शब्द करना) पु० गधा, खर, गर्दभ । [ग्रह ।

सं० राहु—(रह=छोड़ना) आठवां

सं० राहुग्रस्त, राहुग्रास—(राहु + ग्रस्त वा ग्रास) पु० चांद सूर्य का ग्रहण ।

सं० रिक्त--(रिच्+त, रिच्=खाली करना) गु० खाली, छूंछा, शून्य, छिन्न, भिन्न।

अं० रिग्युलेशन=मंजूरी कानून, व्यवस्था स्वीकार कराना, प्रस्ताविक विषय।

प्रा० रिझाना--(सं० रञ्जन) क्रि० स० प्रसन्न करना, खुशकरना।

सं० रिपु--(रप्=बुरी बात कहना) पु० वैरी, शत्रु, दुश्मन।

सं० रिपुञ्जय--(रिपुवैरी= को जि=जीतना) पु० एक राजाका नाम, गु० वैरी को जीतनेवाला।

सं० रिपुता--स्त्री० शत्रुता, दुश्मनी, अदावत।

सं० रिपुसूदन--(रिपु=वैरी, सूद्=नाश करना) क० पु० शत्रुघ्न, श्रीरामचन्द्र का भाई, लक्ष्मण का छोटा भाई।

अं० रिप्रिज़ेण्टेटिवसिस्टम=साधारण प्रजाजन अपने समूह से सज्जनों को अपने अनुशासन के हेतु अनुशासक नियत करते हैं।

अं० रिफार्मर--(री=दुवारा, फार्मर=सुधारनेवाला) क० पु० संशोधक, देशदशा का दुवारा सूधा करनेवाला।

प्रा० रिस--(सं० रोष) स्त्री० कोप, क्रोध, गुस्सा, खिसियाहट।

प्रा० रिसाना } रिसियाना } (सं० रुष्=कोप करना) क्रि० अ० कोपना, खिसियाना, क्रोधित होना, गुस्सा होना, अप्रसन्न होना।

सं० रिष्ट--(रिष्+त,) पु० मंगल, कल्याण, २ अशुभ, पाप, नाश, गु० पुष्ट, दृढ़, कठोर।

सं० रिष्टि--(रिष्+ति) स्त्री० शुभ, अशुभ, नाश पु० खड्ग, तलवार।

प्रा० रींगना--(सं० रिग्=जाना) क्रि० अ० चलना, रेंगना, धीरे धीरे चलना।

प्रा० रींछ } रीछ } (सं० ऋक्ष, ऋष्=जाना) पु० भालू, एक जङ्गली जानवर का नाम।

प्रा० रींधना--(सं० रन्धन, रन्ध्=पकना) क्रि० स० पकाना, रांधना।

प्रा० रीझना--(सं० रञ्जन) क्रि० अ० प्रसन्न होना, खुश होना, प्यारकरना।

प्रा० रीढ़--पु० पीठके बीचकी हड्डी।

प्रा० रीता--(सं० रिक्त, रिच्=खाली करना) गु० खाली, छूंछा, शून्य।

प्रा० रीत } सं० रीति } (री=जाना) स्त्री० चाल, ढाल, प्रकार, प्रचार, रसम, कायदा, स्वभाव, पीतल, प्रस्ताव, टपकना, लोहकिट्ट, सीमा गति, स्वभाव, लोकाचार।

प्रा० रीस--(सं० रोष) स्त्री० क्रो

कोप, गुस्सा।

सं० रुक्‌--(रुच्=चाहना) पु० रोग, २ उदार, दाता, ३ दीप्ति, प्रकाश।

सं० रुकना--(सं० रुध्=रोकना) क्रि० अ० अटकना, बंद होना।

प्रा० रुक्म--(सं० रुक्मी, रुच्=चमकना, वा प्यार करना) पु० राजा भीष्मकका बड़ा बेटा और रुक्मिणी का भाई और श्रीकृष्ण का साला जिसको बलदेवजीने मारा।

सं० रुक्मिणी--(रुच्=चमकना, वा प्यार करना) स्त्री० लक्ष्मी का अवतार, कुण्डिनपुर के राजा भीष्मक की बेटी जो श्रीकृष्ण को व्याही गई थी और पहले जन्म में सीता थी।

सं० रुक्ष, रूक्ष--(रुक्ष्=रूखा होना) गु० अचिक्कण, निस्स्नेह, कठोर, रूखा।

प्रा० रुख--पु० सन्मुख, क्रोध, मुंह, सतरंज का प्यादा, इशारा, दयदृष्टि, मेहरबानी की नजर।

प्रा० रुखाई--(रूखा) भा० स्त्री० रुखावट, गुस्सावट, २ घुरकी, झिड़की, धमकी।

सं० रुचक--(रुच्=प्रीति करना) पु० सज्जीखार, मगल्य द्रव्य, उत्कट, आभूषण, माला, हींग, काला नोन, बीजपूर नीबू, दन्त, निष्क, कपोत, गु० रुचिर, सगन्ध।

प्रा० रुचना--(सं० रोचन, रुच्=प्यार करना, वा चाहना) क्रि० अ० भाना, अच्छा लगना, पसंद आना।

सं० रुचि--(रुच्=चमकना, वा प्यार करना) भा० स्त्री० चाह, इच्छा, अभिलाष, स्पृहा, चोप, शौक, २ खाने की इच्छा, भोजन करनेकी इच्छा, ३ चमक, शोभा, ४ प्यार, अनुराग।

सं० रुची--कृ० स्त्री० पसंद, प्रवृत्ति।

सं० रुचिर--(रुचि=चाह वा प्यार रा=देना) गु० सुन्दर, मनोहर, मनभावन, २ मीठा, सुस्वादु।

सं० रुच्य, रुचिष्य--गु० सुन्दर, रुचिकर, मधुर, स्वादुयुक्त, मनोहर, पसंदीदा।

सं० रुज्, रुजा--(रुज्=बीमार होना) पु० रोग, बीमारी।

सं० रुण्ड--(रुड् या रुद्=मारना) पु० धड़, बिन शिरकी देह।

सं० रुदन--(रुद्=रोना) पु० रोना, आंसू बहाना, विलाप, गिरियाज़ारी करना।

सं० रुद्ध--(रुध्=रोकना) भा० पु० रुकाहुआ, छेकाहुआ, अटकाहुआ, बँधाहुआ।

सं० रुद्र--(रुद्=रोना, वा शब्द करना) पु० शिव, महादेव की ग्यारह मूर्ति, अजैकपाद, अहिर्बुध्न्य, विरूपाक्ष, सुरेश्वर, जयन्त, बहुरू-

त्र्यम्बक, अपराजित, सावित्र, हर, रुद्र, ११ संख्या।

सं० रुद्राक्रीड़-पु० श्मशान।

सं० रुद्राक्ष--(रुद्र=शिव, अक्ष=आंख अर्थात् जिसका रूप शिव की आंखों के ऐसा होताहै) पु० एक वृक्ष जिसकेदानोंकी माला बनतीहै।

सं० रुद्राणी--(रुद्र) स्त्री० शिवा, दुर्गा, पार्वती।

सं० रुधिर--(रुध्=रोकना) पु० लोहू, लोहू, खून, रक्त, मंगलग्रह, रक्तवर्ण।

प्रा० रुपया } (रूपा) पु० रूपे का
रुपैया } एक सिक्का जो सोलह आने के बराबर होता है।

सं० रुमा--स्त्री० सुग्रीव की स्त्री।

सं० रुरु--पु० मृगभेद, दैत्य, सर्प, अतिक्रूर।

सं० रुष् }
रुषा } स्त्री० क्रोध, कोप, आमर्ष।

सं० रुषित--कृ० पु० क्रोधभरा हुआ।

सं० रुष्ट--कृ० पु० क्रुद्ध, क्रोधभराहुआ।

प्रा० रूङ्टा--(सं० रोम) पु० रोआं, बाल, रूंवा,—रूंगटे खड़े होना, बोल० डरसे या जाड़े के मारे बाल खड़े होना, डरना।

प्रा० रूख--(सं० रुक्ष, रुक्ष्=कड़ा होना) पु० पेड़, वृक्ष, तरवर, तरु, दरख्त।

प्रा० रूखा-(सं० रुक्ष, या रुक्ष्=कठोर) गु० सूखा, फीका, बेरस, २ जो चिकना न हो, खुड़खुड़ा, कड़ा ३ निर्दय, कठोर, क्रूर।

प्रा० रूखासूखा-बोल० सादा, बे स्वाद खाना, २ कड़ा, कठोर बात।

प्रा० रूखानी } स्त्री० टांकी, छेनी।
रुखानी }

प्रा० रूठना--(सं० रुष्ट, रुष्=क्रोध करना) क्रि० अ० अप्रसन्न होना, नाराज होना, बिगड़ना।

सं० रूढ़-(रुह्=पैदा होना) कृ० पु० पैदा हुआ, जमा हुआ, उत्पन्न २ प्रसिद्ध।

सं० रूढ़ि-(रुह्=पैदा होना) स्त्री० उत्पत्ति, पैदा होना, जन्म, २ प्रसिद्धि, ३ ऐसा शब्द जो किसी से बना न हो और उसका अर्थ उसी पद में रहे जैसे "त्रिफला" यहरूढ़िहै।

सं० रूप-(रूप्=डौल बनाना) पु० आकार, डौल, सूरत, शकल, २ शोभा, स्वरूप, सुन्दरता, ३ रीति, ढब, प्रकार, भांति, चाल, तरह।

सं० रूपक--(रूप्=डौल बनाना) पु० नाटक, २ रूप, मूरत, ३ एक अलंकार का नाम।

सं० रूपनिधान-(रूप+निधान) पु० सुन्दरताका घर, अर्थात् बहुतही सुन्दर।

सं० रूपराशि--स्त्री० पु०

समूह, मखज़नुल जमाल, रूपका खज़ाना ।

सं०रूपवती--(रूप+वती) स्त्री० सुन्दर स्त्री, मनोहर स्त्री ।

सं० रूपसागर--(रूप+सागर) पु० रूप का समुद्र, बहुतहीसुन्दर ।

प्रा० रूपा--(सं०रूप्य,रूर)पु०चांदी।

सं० रूपी--कृ० स्त्री० रूपवाली ।

प्रा० रूरी--गु० स्त्री० सुन्दर।

प्रा० रूसना-(सं० रोषण, रुष्= क्रोध करना) क्रि० अ० क्रोधित होना, रिसाना, २ अप्रसन्न होना, नाराज होना, रूठना ।

प्रा० रेंकना--क्रि० अ० गधे का बोलना ।

प्रा० रेंगना--(सं०रिग्=जाना)क्रि० अ० धीरे २ चलना, रींगना ।

प्रा०रेंड, पु० } रेंडी, स्त्री० } (सं० एरण्ड) एरण्डका पेड़ ।

प्रा० रेख--(सं० रेखा) स्त्री० लकीर, खत ।

सं०रेखा--(लिख=लिखना) स्त्री० लकीर, रेख, २ लिखना, ३ प्रारब्ध, भाग ।

सं० रेचक--(रिच्+अक, रिच्= जुदा करना) कृ० पु० दस्तकारक, जुलाब, पु० निशोथ, भटकटैया, जयपाल, जमाल गोटा ।

सं० रेचन-(रिच्+अन) भा० पु० मलशोधन, दस्त कराना, जुलाब देना ।

अं० रेज़ीड्यण्ट--राजदूत, वकील शाही, सफीर ।

सं०रेणु--(रि=जाना) स्त्री०रेत,धूल।

सं० रेणुका-(रि=जाना) स्त्री० सुगंधित चीज़, २ जमदग्नि ऋषि की लुगाई और परशुरामजीकी मा ।

प्रा० रेत--स्त्री० धूल, रज, बालू, २ चूर, रेतन ।

प्रा० रेतना-(रेत) क्रि० स० घिसना, सोहन करना, रद्दा फेरना, २ घोटना, चिकना करना, ओपना ।

सं० रेतस-पु० पाराधातु,वीर्य, शुक्र ।

प्रा० रेती--(रेत) स्त्री० नदीके तीर पर की रेतली धरती, बालू, २ सोहन, रेतने का औजार ।

सं० रेप -(रेप=शब्द करना) गु० निन्दित, क्रूर, कृपण ।

सं० रेफ--(र) पु० रकार,र् अक्षर जो दूसरे व्यञ्जन के साथ मिलता है तब उसका रूप (ॅ) ऐसा होता है जैसे र्क २ कुत्सित, अधम ।

प्रा० रेलना--क्रि० स० ठेलना, पेलना, ढकेलना ।

प्रा० रेलपेल--स्त्री० भीड़, धूम धाम, २ बहुतायत ।

प्रा० रेवड़ी--(एकतरह की खानेकी मीठी चीज,गुटिया ।

अं० रेवन्यु--मालका काम ।

अं० रेवन्युबोर्ड--इस सम्बन्धी

सभा, चुंगी के हाकिमों का दरबार।

प्रा० रेवड़ीके फेर में पड़ना-बोल० कठिनता में फंसना, पेच में आना।

सं०रेवती-(रेवत) स्त्री० रेवत राजा की बेटी और बलदेवजी की स्त्री०, २ (रेव्=जाना) सत्ताइसवां नक्षत्र।

सं० रेवतीरमण-(रेवती+रमण) पु० बलदेव, बलराम, श्रीकृष्णके बड़े भाई।

सं० रेवा-(रेव्=बहना, या उछल के चलना) स्त्री० नर्मदा नदी।

प्रा० रेह-स्त्री० एक तरह का खार जो कपड़ों के धोने और साबुनके बनाने में काम आता है।

सं० रै-पु० धन, स्वर्ण अर्थ, विभव।

प्रा० रैन-(सं० रजनि) स्त्री० रात।

प्रा० रोआं } रोवां } (सं० रोम) पु०शरीर परकेबाल, रऊन,रोएं।

सं० रैवत-पु० द्वारिका के समीप पर्वत, महादेव चौदह मनु मे का एक मनु रेवतीका पिता, बलदेव का श्वसुर।

प्रा०रोंगटी-स्त्री० छलसे झूठ को सच और सच को झूठ बताना, हथफेर, छलविद्या।

प्रा० रोक } रोकड़ } (सं० रोक, रुच्=चाहना, वा प्यार करना) पु० नकद, नकदी।

प्रा० रोकड़िया-(रोकड़)पु० खजानची, कोठारी।

प्रा० रोकना-(सं० रोधन, रुध्=रोकना) क्रि० स० अटकाना, घेर-लेना, बंद करना, थामना, २ मना करना, ३ बात काटना।

सं० रोग-(रुज्=बीमार होना) पु० बीमारी, पीड़ा, व्याधि, दुःख।

सं०रोगी-(रोग) क० पु० बीमार, दुःखी, पीड़ित, मरीज।

सं० रोचक-(रुच्=चाहना, प्यार करना)गु०चाहकरानेवाला, रुचि करानेवाला, पाचक,पु० भूख,क्षुधा।

सं० रोचन-भा० पु०तरगीब, पसंद।

सं० रोचनीय-र्म० पु० मरगूब,पसंदीदा, स्पृहाजनक।

सं० रोचिष्णु-क० पु० दीप्तिमान्, प्रकाशित।

प्रा० रोझ-(सं० ऋष्य, ऋष्=जाना) पु० एक जानवर का नाम।

प्रा० रोट-(सं० रोटिका या रोटी) पु० मोटी रोटी, जो हनुमान् को चढ़ाते है। [पु० मोटी रोटी।

प्रा० रोटा-(सं० रोटिकाया रोटी)

सं० रोटिका } रोटी } (रुट्=ठोंकना, या काटना) स्त्री० गेहूं के आटे की बनी हुई खाने की चीज, फुलका।

अं० रोड=मार्ग, सड़क।

प्रा० रोड़ा-पु० बड़ा कंकर, ईंटका बड़ा टुकड़ा।

सं० रोदन-(रुद्=रोना) भा० पु० रोना, रुदन।

सं० रोद्धा-(रुध्=रोकना, ढापना) क० पु० रोकनेवाला।

सं० रोध-भा० पु० तट, किनारा।

प्रा० रोना-(सं० रोदन) क्रि० अ० आंसू बहाना, विलाप करना, बिलकना, चिल्लाना, २ उदास होना, नाराज़ होना, ३ पु० विलाप, रुदन, दुःख, शोच।

प्रा० रोपना—(सं० रोपण, रुह्=जमना) क्रि० स० बोना, जमाना, उगाना। [जमानेवाला।

सं० रोप्ता-क० पु० लगाने वाला,

सं० रोम-(रु=शब्दकरना या रुह्=उगना, जो देह पर उगते हैं) पु० लोम, बाल, केश, रोवां, २ छेद।

सं० रोमाञ्च-भा० पु० रोमाखड़ाहोना।

अं० रोमनकैथोलिक-क० पु० ईसाके चित्रके पूजनेवाले।

सं० रोमन्थ-पु० रांउथ, पगुराना, खाई वस्तु को चाबना।

सं० रोमपाट-पु० दुशाला, कम्बल।

सं० रोमहर्षण-पु० रोमाञ्च, रोमा खड़े होना, सूत, व्यासशिष्य, बहेड़ावृक्ष।

सं० रोमाञ्चित-(रोम=बाल, अञ्च=जाना) पु० बहुत खुशी या डरसे शरीरके रोएं खड़े होना, पुलकित, हर्षित।

सं० रोमावली--(रोम+आवली) स्त्री० रोएंकी धारी जो नाभिके बीच में से होकर जाती है।

प्रा० रोली-स्त्री० कुमकुम या जिसका रोचनाकिया जाताहै।

सं० रोष--(रुष्=क्रोध करना) पु० कोप, रिस, क्रोध, गुस्सा, खिसियाहट।

सं० रोह-पु० कली, कुड्मल, रोहण, ऊपर जाना। [रुह=चढ़ना।

सं० रोहण-भा० पु० चढ़ाव, वृद्धि,

सं० रोहिणी-(रुह्=पैदा होना) स्त्री० चौथा नक्षत्र, २ चांद की स्त्री, ३ रोहण राजा की बेटी, वसुदेव जी की स्त्री और बलदेव जी की मा।

सं० रोहिणीपति-(रोहिणी+पति) पु० चांद, २ वसुदेव जी।

सं० रौद्र—(रुद्र, अर्थात् जिसका देवता रुद्र है) गु० डरावना, भयानक, पु० क्रोध, कोप, २ धूप।

प्रा० रौताई-भा० स्त्री० ठकुराई, शूरता

प्रा० रौना—पु० (त्रिरागमन) गौने के पीछे अपनी स्त्री को उसके बाप के घर से अपने घर में लाना।

सं० रौप्य-पु० रजत, चांदी।

प्रा० रौर--(सं० रव) पु० शब्द, रोना, शोर, गुल, पुकार, २ यश,

नामवरी।

सं० रौरव-(रु=शब्द करना, या रोना जहां पापी रोते हैं) पु० एक नरक का नाम, गु० भयानक।

प्रा० रौला-(सं० राव, रु=शब्द करना) पु० धूमधाम, हुल्लड़, बखेड़ा, गुल, गपाड़।

—::—

(ल)

सं० ल-(ला=लेना, वा लू=काटना) पु० इन्द्र, २ मंत्र, ३ काटना, ४ दीप्ति, प्रकाश, ५ आल्हाद ६ वायु।

प्रा० लकड़-(सं० लगुड़) पु० लकड़ी, लाठी, लट्ठ।

प्रा० लकड़ी-(सं० लगुड़) स्त्री० काठ, ईन्धन, जलावन, २ सोंटा, लट्ठ, लाठी, लठिया।

प्रा० लकीर-(सं० लेखा, लिख्=लिखना) स्त्री० रेखा, लीक, धारी, डंडीर।

प्रा० लकुट-(सं० लगुड़, लग्=मिलना, वा पाना) पु० लाठी, लकड़ी, छड़ी।

सं० लक्त-पु० लाही, महावर।

सं० लक्ष-(लक्ष्=देखना, चिह्नकरना) पु० एक लाख, सौहज़ार, २ छल, बहाना, ३ चिह्न।

सं० लक्षक-(लक्ष् + अक) क० पु० दर्शक, दिखानेवाला।

सं० लक्षण-(लक्ष्=देखना, या चिह्न करना) पु० चिह्न, पहचान, तारीफ़, नाम, गुण, २ श्री रामचन्द्र का छोटा भाई, लक्ष्मण, सुमित्रा का बेटा।

सं० लक्षित-(लक्ष्=चिह्न करना, देखना) कर्म० पु० देखा हुआ, जाना हुआ, २ चिह्न किया हुआ।

सं० लक्षणा-भा० स्त्री० अध्याहार, जो ऊपर से लिया जाय।

सं० लक्ष्मण-(लक्ष=देखना, चिह्न करना) पु० दशरथ राजा का बेटा जो सुमित्रा से पैदा हुआ, श्रीराम चन्द्र का छोटा भाई।

सं० लक्ष्मणा-(लक्ष्=देखना, चिह्न करना) स्त्री० भद्र देशके राजा की बेटी और श्रीकृष्ण की पत्नी, २ दुर्योधन की बेटी जो श्रीकृष्ण के बेटे साम्ब को व्याही थी।

सं० लक्ष्मी-(लक्ष्=देखना, चिह्न करना) स्त्री० विष्णुपत्नी और धन की देवता, हरिप्रिया, पद्मा, कमला, श्री, इन्दिरा, लोकमाता, रमा, हरिवल्लभा, २ सम्पदा, सम्पत्ति, धन, ऐश्वर्य्य, ३ शोभा, सुन्दरता।

सं० लक्ष्मीकान्त-(लक्ष्मी + कान्त) पु० विष्णु, नारायण, रमेश।

सं० लक्ष्मीनाथ(लक्ष्मी + नाथ) पु० विष्णु, नारायण, माधव।

सं० लक्ष्मीपति(लक्ष्मी + पति) पु० विष्णु, नारायण, रमानाथ।

सं० लक्ष्मीवान्-(लक्ष्मी+वत्)गु० धनवान्, संपदावाला, दौलतमन्द, श्रीमान्, श्रीयुत।

सं० लक्ष्म-भा० पु० चिह्न, निशान।

सं० लक्ष्य-(लक्ष्=देखना, चिह्न करना वा निशान करना) पु० निशाना, ताक, कर्म० जो जाना जाय, जो देखा जाय, देखने योग्य, साजिश।

प्रा० लखन-(सं० लक्षण) पु० लक्ष्मण,श्रीरामचन्द्रका छोटा भाई।

प्रा० लखना-(सं० लक्षण, लक्ष्=देखना) क्रि० स० देखना, भालना, ताकना, २ जानना, समझना, पहचानना।

प्रा० लखपति-(सं०लक्षपति) पु० धनी, धनवान, जिस के घरमें लाख रुपये हों, लखिया।

प्रा० लखेरा-(लाख) पु० लाख की चूड़ी आदि बनानेवाला।

सं० लग-(सं०लग्=मिलना) नित्य, सं० तक, लौं, पास, जबतक।

प्रा० लगभग- बोल० आस पास, अनुमान, क़रीब।

प्रा० लगना-(सं० लग्=मिलना) क्रि० अ० जुड़ना, चिपकना, मिलना, सटना, २ किसी काम का शुरूअ, होना या करना, ३ नियुक्त होना, किसी काम में तत्पर होना, ४ पहुंचना, फैलना, ५ सोहना, फबना, ठीक होना, ६ मालूम होना, ७ सम्बन्ध रखना, लगाव रखना।

प्रा० लगातार-क्रि० वि० या गु० बराबर, निरन्तर, एक पर एक।

प्रा० लगाव-(लगना) भा० पु० मेल, लाग, जोड़।

प्रा० लगि=लिये, वास्ते, २ तक, तलक।

प्रा० लग्गा-पु० लाग, मेल, प्यार, प्रेम, प्रीति, २ एक डंडा जिस से नाव चलाई जाती है।

प्रा० लग्गा नखाना- बोल०बराबर न होना, उपमा या बराबरी के योग्य न होना।

प्रा० लग्गी-स्त्री० बांस का डंडा।

सं० लग्न-(लग्=मिलना, वा पास होना) पु० मेष आदि राशियों का उदय, मुहूर्त, सायत, क०लगा हुआ, मिला हुआ।

सं० लग्नक-पु० प्रतिभू, जामिन।

सं० लघिमा स्त्री०, **लघिमन्** पु० (लघु)छोटापन, हलकापन, लघुता, लाघव, २ आठ सिद्धि में की एक सिद्धि।

सं० लघिष्ठ-गु० लघु, छोटा।

सं० लघु-(लघि=जाना, छोटा होना) गु० हलका, २ छोटा, ३ शीघ्र।

उतावला, ४ सुन्दर, मनोहर, ५ नीचा, नीच, ६ पु० ह्रस्व स्वर, एक मात्रिकस्वर।

सं० लघुकाय-(लघु=छोटा, काय=शरीर)पु० छाग,बकरा,सूक्ष्मशरीर।

सं०लघुता-(लघु)भा०स्त्री०हलकाई, छोटापन, छुटाई, निचाई।

सं० लघुहस्त--पु० अल्पहस्त, सुबुकदस्त।

सं० लघ्वी--स्त्री० सूक्ष्माङ्गी,नाजनी।

सं० लङ्का--(लक्=स्वाद लेना, या पाना) स्त्री० रावण की राजधानी।

सं० लङ्कापति--(लङ्का+पति)पु० रावण, २ विभीषण।

सं० लङ्केश } (लङ्का + ईश, वा
लङ्केश्वर } ईश्वर)पु० रावण, २ विभीषण।

फा० लंगर--पु० जहाज़ आदि को ठहरानेके लिये एक लोहे की चीज़।

प्रा० लंगूर-- (सं० लांगूली) पु० बन्दर की जाति का एक जानवर जिसकी पूंछ लम्बी होती है और मुंह काला होता है, लखुवाबादर।

प्रा० लंगोट, पु० }
लंगोटा, पु० } कोपीन,कछनी
लंगोटी, स्त्री० }

प्रा० लंगोटबंद--बोल० वह आदमी जो ब्याह न करे।

प्रा० लंगोटियायार-बोल०बालक-पन का पुराना मित्र।

सं० लङ्घक--(लंघ्+अक) क०पु० नांघनेवाला, पारहोनेवाला।

सं० लङ्घन--(लघि=पार होना, या लांघना) पु० लांघना, पार होना, उछलना,२उपास, कड़ाका,फाका।

सं० लङ्घित--(लंघ् + इत) स्त्री० पु०अतिक्रांत,उल्लंघित, पारहोगया।

प्रा० लचक--(लचकना) भा०स्त्री० लचीलापन, झुकाव।

प्रा० लचकना--क्रि० अ० ज़ोर पड़ने से झुक जाना और जब वह ज़ोर न रहे तब पीछे उभर आना।

प्रा० लच्छन--पु० लक्षण शब्दको देखो। [आंटी।

प्रा० लच्छा--पु० रँगे हुए सूत की

प्रा० लछन--(सं० लक्षण) पु० लक्ष्मण।

प्रा० लछमण--(सं० लक्ष्मण)पु० लक्ष्मण,श्रीरामचन्द्र का छोटाभाई।

प्रा० लछमी } (सं०लक्ष्मी)स्त्री०
लछि } लक्ष्मीशब्दकोदेखो।

प्रा० लजाना--(लज्जा) क्रि०अ० शर्माना,लाजकरना, संकोचकरना।

प्रा० लजालू--(सं०लज्जालु)गु० शर्मीला, लज्जित, पु० छुई मुईका पेड़, जिसके पास अंगुली ले जाने से उसके पत्ते सुकुड़ जाते हैं।

सं०लज्जा--(लस्ज्=शरम।

लाज, शर्म, संकोच।

सं० लज्जारहित(लज्जा+रहित) गु० निर्लज्ज, बेशर्म।

सं० लज्जाशील-गु० लज्जायुक्त।

सं० लज्जित--(लज्जा)क० पु० शर्मीला, शर्मिन्दा, लजालू, संकोची।

सं० लञ्जिका--(रञ्ज्=भासना)स्त्री० वेश्या, पुंश्चली पु० २ मस्तक, कपाल, ३ चोर, ४ वेणी, ४ पिण्ड, ५ उक्ति।

प्रा० लट-स्त्री० लटूरी, उलझे बाल, जटा, २ एक जानवर का नाम।

प्रा० लटक- भा० स्त्री० मटक, चटक, नखरा, आन, मान, चोंचला।

प्रा० लटकचाल-स्त्री० नखरेकीचाल

प्रा० लटकन--(लटकना)स्त्री० लटकती हुई चीज, झूला, २ झूमका, कुण्डल, ३ एक फूल जिससे कपड़े पीले रंगे जाते हैं, ४ एक हरे रंगके पखेरूका नाम जो अपने पैरोंसे बहुत बार लटका रहता है, ५ लकड़ी की एक चीज जिस पर पानी का लोटा झारी आदि रखते हैं बोल० पुछल्ला, झुलझुल जो पतंग और कनकौआ में नीचे लटका करती है।

प्रा० लटकना--क्रि० अ० झूलना, टंगना, २ पीछे रह जाना।

प्रा० लटका--पु० मंत्र, झाड़फूंक, टोना, टोटका, चुटकुला, जादू।

प्रा० लटपटा--गु० खिलाड़, चंचल, २ उलट पुलट, लपेटी हुई (पगड़ी)

प्रा० लटूरिया, लटूरी } स्त्री० लट, जुल्फ, छोटे छोटे उलझे बाल।

प्रा० लट्टू--पु० लड़कों के एक खिलौनेकानाम,—लट्टू होना, बोल० मोहितहोना, किसीकेप्यारमें फंसना।

प्रा० लठ (सं० यष्टि)पु० सोंटा, लाठी।

प्रा० लठियाना-क्रि० स० लाठी से मारना, लाठीमारना।

प्रा० लड़-स्त्री० लड़ी (मोती आदि की) पांत, २ जत्था, दल, धड़ा, टोली।

प्रा० लड़का--(सं० लड्=खेलना) पु० बालक, छोहरा, छोकरा, २ बेटा।

प्रा० लड़काबाला, लड़कालड़की } बोल० बाल, बच्चा, बेटाबेटी।

प्रा० लड़काई--(लड़का) भा० स्त्री० लड़कपन, बालकपन।

प्रा० लड़खड़ाना- क्रि० अ० डगमगाना, डिगना, २ हकलाना।

सं— लड़न--भा० स्त्री० लड़ाईकरना, झगड़ा करना।

प्रा० लड़ना--(सं० लस्=मीस हिलाना) क्रि० अ० लड़ाई करना, झगड़ना, बखेड़ाकरना, युद्ध करना।

प्रा० लड़ाई-- भा० स्त्री० झगड़ा, बखेड़ा, युद्ध, जंग।

प्रा० लड़ाईकरना—बोल० झगड़ना, लड़ना, बखेड़ाकरना, युद्ध करना।

प्रा० लड़ाक } (लड़ना) गु० लड़ने
लड़ाका } वाला, लड़ाई करने वाला, झगड़ालू, बखेड़िया।

प्रा० लड़ियाना—क्रि० स० पिरोना, गूथना, पोना।

प्रा० लड़ी—स्त्री० मोतियों की पांति।

प्रा० लड्डू—(सं० लड्डुक, लड्=चाहना, विलास करना) पु० लाडू, मोदक, मोतीचूर,—मन के लड्डू खाना, बोल० मनही मन में ऐसी बातों का विचार बांधना जो हो नहीं सक्ती।

प्रा० लंठ--गु० मूर्ख, गँवार, अनपढ़।

प्रा० लंडूरा—गु० बांड़ा, विन पूंछ का, २ बेमित्र, मित्रों से छोड़ा हुआ, तनहा, अकेला।

प्रा० लत--स्त्री० बुरीचाल, कुटेव, २ लहर, तरंग, ३ लात।

प्रा० लत--(सं० लता) स्त्री० बेल, बेली।

सं० लता—(लत्=उलझना, वा चोट करना) स्त्री० बेल, बेलड़ी, बेली, माधवी, निवाड़ी, बेला, दूर्वा।

सं० लतातरु--पु० शालवृक्ष, नारंगीवृक्ष, तालवृक्ष, खजूर।

सं० लतापनस—पु० कलिंज, तरबूज, खरबूजा।

सं० लतामणि—पु० मवाल, मूंगा।

प्रा० लत्ता—(फ़ा० लत्तह) पु० चीथड़ा, फटापुरानाकपड़ा, २ ज्योतिष में एक योग का नाम।

प्रा० लथड़ना--क्रि० अ० कीचड़ से भीगना या कीचड़ लगजाना।

प्रा० लदना—क्रि० अ० लादाजाना।

प्रा० लप—स्त्री० मुट्ठीभर, मुक्काभर।

प्रा० लपकना—क्रि० अ० लहकना, तेज़चलना, चमकना, २ उछलना, कूदना।

सं० लपन—(लप्+अन, लप्=कहना) पु० कथन, मुख, आस्य, वचन।

प्रा० लपका—पु० झपट, २ फुर्ती, ३ चाट, बुरीचाल, चसका।

प्रा० लपट—स्त्री० महक, बास, सुगन्ध, २ दहक, लहर, भभक, लूका।

सं० लपित—र्म० पु० कहाहुआ।

प्रा० लप्पा—पु० पट्ठा, गोटा, किनारी।

प्रा० लबार—(सं० लप्=बकना) पु० झूठा, गप्पी, बहुत बोलनेवाला।

सं० लब्ध—(लभ्=पाना) र्म० पु० पाया हुआ, प्राप्त।

सं० लब्धवर्ण—पु० पण्डित, शास्त्री, विचक्षण।

सं० लब्धि—स्त्री० प्राप्ति, लाभ, [क़िस्मत।

सं० लभ्य--(लभ्=पाना) र्म पु० पानेयोग्य, मिलनेयोग्य, ह[illegible]

प्रा० लमकाना } (सं०
लमहा } पु०
लम्भा } स्त्री० [illegible]

सं० लम्पट—(रम्=खेलना) गु० व्यभिचारी, कुकर्मी, रंडीबाज़, लुच्चा, २ झूठा।

सं० लम्फ--भा० पु० प्लुतगति, लपकना, तेज़चाल।

सं० लम्ब--(सं० लम्ब्=ठहराना, या नीचे लटकाना) गु० ऊंचा, लम्बा, बड़ा, फैलाहुआ, पु० नर्तक, नचैया, कान्त, उत्कोच, लोलुप, आसक्त, २स्त्री० (नापविद्यामें खड़ी लकीर) अमूद। [सारथी।

सं० लम्बक--पु० विभाग, समय,

सं० लम्बन—भा० पु० मालाकार, कंठा, हार, लम्बाई। [बड़ा।

प्रा० लम्बा--(सं०लम्ब) गु०ऊंचा,

प्रा०लम्बाकरना—बोल० फैलाना, बढ़ाना, २ पीटना, मारना।

प्रा०लम्बीसांसभरना—बोल० रोना, विलाप करना।

सं० लम्बोदर—(लम्ब+उदर) पु० गणेशजी, गु० लम्बे पेटवाला।

सं० लम्बोष्ट्र--पु० उष्ट्र, ऊंट।

सं० लय—(ली=मिलना)पु०लीन, मिलना, मगन होना, २ नाश, मलय, ३ टेर, ताल, स्वर।

सं० लयपालक—क०पु०राशिवेत्ता, मुनब्बा।

प्रा० ललकना--क्रि० अ० चढ़ना, धावा मारना, क्रि० स० चाहना।

प्रा०ललकारना--क्रि०स० पुकारना, हांकना, बुलाना, साम्हने करना, लड़ाई मांगना।

प्रा०ललचाना--(लालच) क्रि०अ० तरसना, बहुत चाहना, लालसा करना। [केलिकला।

सं० ललन—भा०स्त्री० नारी, जिह्वा,

सं०ललना--(लल्=चाहना) स्त्री० लुगाई, नारी, स्त्री, कामनी, सुन्दरी।

प्रा० लला—(सं०लल्=चाहना) पु० लाल, बालक, गु० प्यारा, दुलारा, लाड़ला।

सं०ललाट--(लल्, वा लड्=चाहना या खेलना) पु० शिर का अगला भाग, भाल, २ कपाल, प्रारब्ध।

सं० ललाम—(लल्=चाहना) गु० सुन्दर, मनोहर, २ पु० लांक्षण, चिह्न, ३ ध्वजा, पताका, ४ शृंग, ५ प्रधान, ६ भूषण, ७ घोड़ा।

सं० ललित—(लल्=चाहना) गु० सुन्दर, मनोहर, मनभावन, २ चंचल, ३ कोमल, ४ प्यारा, ५ स्त्री० एक रागिणी का नाम।

सं०ललिता—(लल्=चाहना) स्त्री० एक गोपी का नाम जिस ने उद्धव जीसे बात चीत की थी।

प्रा० लल्लोपत्तो— पु० चापलूसी, खुशामद।

सं० लव--(लू=काटना) पु० क्षण,

पल, निमेष, २ हिसाब में भिन्न का अंश, भाग, ३ श्रीरामचन्द्र का बड़ा बेटा, ४ लौंग।

सं० लवङ्ग—(लू=काटना) स्त्री० लौंग, एक तरह की औषध।

सं० लवण--(लू=काटना)पु०लोन, नोन, निमक, नमक, गु० खारा।

सं० लवणसमुद्र, लवणसागर—(लवण+समुद्र, वा सागर) पु० खारा समुद्र।

प्रा०लवा—(सं० लाव, लू=काटना) पु० बटेर, एक तरह का पखेरू।

सं० लशुन—पु० लहसन, लस्सुन।

सं० लषित—(लष्=चाहना, वा भला दीखना) र्म्म०पु० विलोकित, दर्शित, चाहा हुआ, २ शोभायमान।

प्रा० लसना—(सं० लस्=मिलना वा खेलना, वा चमकना) क्रि० अ० सोहना, चपकना, फबना, सजना, २ चमकना।

प्रा० लसलसा—गु० चिपचिपा, लसीला। [टा हुआ।

सं०लसा—स्त्री०हरिद्रा, हल्दी, २ चिप-

सं० लस्त—क० पु० थकित, श्रमित।

प्रा० लहँगा—पु० घेंघरा।

प्रा० लहकना—क्रि० अ० चमकना, झलकना, २ लहरना, लूका उठना, तपकना, ३ हिलना।

प्रा० लहना—(सं० लभ्=पाना) क्रि० स० लेना, पाना, जानना, मालूम करना, २ पु० क़र्ज़, ऋण, ३ भाग, नसीबा, क़िस्मत।

प्रा० लहर—(सं० लहरि) स्त्री० तरंग, हिलोरा, ढेऊ, हिलकोर, २ मन की तरंग या मौज, ललक, ३ सांप के ज़हर चढ़ने से देह लहराना, ४ रंगने में अथवा कारचोबी में निकली हुई धारी।

प्रा० लहरना—क्रि० अ० हिलकोरना, हिलना, डोलना, २ जलन होना, ३ जल उठना।

प्रा० लहराना—क्रि० स० ललचाना, तरसाना, २ क्रि० अ० हिलकोरना, लहर उठना।

प्रा०लहरिया—(लहर) पु०एकतरह का रंगाहुआ कपड़ा। [ओछा।

प्रा०लहरी—गु०तरंगी, चंचल, मौजी,

प्रा०लहलहाना-क्रि०अ० फफकना, सरसब्ज़ होना, खिलना, विकसना, फूलना, हरा होना, डहडहाना।

प्रा० लहसन—(सं० लशुन, लश्=मिलना) पु० एक तरह का कन्द।

प्रा० लहसनियां— एक तरहका चड़िया पत्थर।

प्रा० लहू, लेहू, लोहू—(सं० लोहित, रुह्=रोहोना) पु० खून, रुधिर, रक्त।

प्रा० लहूलुहान—बोल० लोहूसे भरा हुआ, रक्त में डूबा हुआ।

प्रा० लाई=लिये, वास्ते।

प्रा० लांक } स्त्री० कटि, कमर, २ लासा, ३ भूसी, भूसा।
लंक }

प्रा० लांघना—(सं० लङ्घन) क्रि० स० कूदना, फांदना, चढ़ना, २ पार होना, तैरना।

सं० लाक्षा—(लक्ष=चिह्न करना) स्त्री० लाख, लाह।

सं० लाक्षणिक-- कं० पु० लक्षण युक्त, अर्थ बोधक शब्द, यौगिक।

सं० लाक्षण्य--कं० पु० शुभाशुभ, लक्षणज्ञ, बुराई भलाई का बोधक।

प्रा० लाख-(सं० लक्ष) गु० सौ हजार।

प्रा० लाख—(सं० लाक्षा) स्त्री० लाह जिससे कागज पत्र बंध किये जाते हैं, २ जिस के रंग से महौरिया महावर बनता है।

प्रा० लाग—(सं० लङ्ग=मिलना) स्त्री० मारना, चोट, २ लगान, लगाव, ३ वैर, द्वेष, द्रोह, ईर्षा, डाह, ४ प्यार, छोह, मोह, ५ मेल, सम्बंध, ६ लागत, खर्च, ७ कपट, चूक।

प्रा० लागत—स्त्री० खर्च, उठान।

सं० लाघव—(लघु) भा० पु० हल्काई, छोटापन, लघुता, छुद्रता, अपमान, २ फुर्ती, निरोगता, तन्दुरुस्ती।

सं० लाघवेन—संक्षेपत, मुख्तसरन्, क़िस्सा कोताह।

सं० लाङ्गल-(लगि=मिलना) पु० हल।

सं० लांगूल } (लगि=मिलना या लगारहना) स्त्री० पूंछ।
प्रा० लंगूल }

प्रा० लाज—(सं० लज्जा) स्त्री० शर्म, हया, संकोच, लज्जा। [लाई।

सं० लाज-पु० उशीर, २ खस, लावा,

सं० लाजावर्त्त—(लाज+आवर्त) पु० सायबान, रावटी, छोलदारी।

सं० लाञ्छन (लाञ्छ्=चिह्न करना, दाग लगाना) पु० चिह्न, २ कलंक, दाग, ३ नाम।

सं० लाञ्छना- भा० स्त्री० निन्दा, बुराई, तिरस्कार। [स्कृत, निन्दित।

सं० लाञ्छित--कर्म० अपमानित, तिर-

सं० लाट—पु० देशान्तर, २ वस्त्र, पट वस्त्र, गु० जीर्ण, प्राचीन, पुराना।

प्रा० लाटी--स्त्री० कैटी, फेफड़ी, जो होठ और तालू के सूखने से होंठों पर पड़जाती है।

प्रा० लाठ--(सं० यष्टि) स्त्री० खंभा, मीनार, २ सोंटा, ३ कोल्हू का लाठा।

प्रा० लाठी--(सं० यष्टि) स्त्री० लकड़ी, सोंटा, छड़ी।

प्रा० लाड़--(सं० लड्=खेलना) पु० प्यार, मोह, छोह, खेल।

प्रा० लाड़लड़ाना--बोल० दुलार-

ना, प्यार करना।

प्रा० लाड़ला—(लाड़) गु० प्यारा, दुलारा, लड़ैतालाल।

प्रा० लात—स्त्री० पांव की मार।

सं० लाभ--(लभ्=पाना) पु० फायदा,फल,प्राप्ति,पाना,मिलना,नफा।

प्रा० लाल--(सं० लल्=चाहना, या लड़्=खेलना) गु० प्यारा, प्रिय, लाड़ला, दुलारा, २ लालरंग, रक्त वर्ण, ३ पु० छोटाबालक, बेटा, ४ (सं० लाला) स्त्री० लार, थूक।

प्रा० लालबुझक्कड़--पु० बुद्धिमान् मनुष्य जो हर बात को झट समझ जाय, या जो होनेवाला हो उस को सोच विचार के पहले से कहदे पर यह शब्द ठट्ठे से या तानासे ऐसे मूर्ख आदमीके लिये बोलाजाता है जो और सब आदमियों से अपनेतईं अधिक बुद्धिमान् समझता हो और सच मुच निरा गँवार हो जैसे ऐसे आदमियोंने कि जो कभी हाथीनहीं देखाथा, उसके पांवोंके निशान कीचड़ में देखकर लाल बुझक्कड़ से पूछा कि ये क्या हैं तब उसने उत्तर दिया कि "यह तो बूझे लाल बुझक्कड़, और न बूझे कोय। पायन चक्की बांध कर कहिं हरना कूदा होय।" अर्थ– यह बात सिवाय लाल बुझक्कड़ के और कोई नहीं समझ सक्ता है क्या हरिन तो अपने पैरों में चक्की बांध कर यहां नहीं कूदा है।

प्रा० लालच--(सं० लालसा) पु० लोभ, चाहना, तृष्णा, तमअ़।

प्रा०लालची-- गु० लालच करनेवाला,लोभी,आपस्वार्थी, खुद्गरज़।

सं० लालन—(लल्=चाहना) पु० बहुत सनेह करना, बहुत प्यार से बालक को पालना, खिलाना, फुसलाना, दुलारना।

प्रा०लालना--(सं० लालन) क्रि० स० लड़ाना, बहुत प्यार से बालक को पालना।

सं०लालसा—(लस्=चाहना) स्त्री० बहुत चाह, इच्छा, अभिलाष।

प्रा० लाला--पु० साहिब, बाबू, २ गुरु, पढ़ानेवाला, मास्टर, ३ कायथों की और महाजनों की पदवी।

सं० लालित--(लाल्+इत, लल्=स्नेह सहित प्यार) र्कम० पु० पालित, लाड़ित।

सं० लाला-- स्त्री० मसेव, पसेउ, मुंह कीलार, थूक।

सं० लालाटिक-- पु० प्रभुभाग्योपजीवी, भाग्याधीन, भाग्य का भरोसा करनेवाला।

सं० लालित्य--(ललित) भा० पु० सुन्दरता, मनोहरता, कोमलता।

प्रा० लाली--(लालना) क्रि० स० लड़ाई, प्यार किया, दुलारकिया, २ (सं०लल्=चाहना) गु० दुलारी, प्यारी, ३ स्त्री० ललाई, सुर्खी ।

सं० लाल्य--र्म्म० पु० लालनाई, प्यारयोग्य, लालनीय ।

सं० लावण्य--(लवण) भा० पु० देह सौन्दर्य्य, सुन्दरता, शोभा, २ नमकीनी, नमक का स्वाद ।

सं० लास--पु० नृत्य, नाच, मोद ।

सं० लासक--क० पु० मयूर, मोर, २ नर्तक, नाचनेवाला ।

प्रा०लाह--(सं०लाक्षा)स्त्री०लाख।

प्रा० लाह, लाहा, लाहू--(सं लाभ) पु० लाभ, फायदा, फल ।

प्रा० लिखतं--(सं० लिखित)र्म्म० पु० लिखाहुआ कागज़ जैसे क्रि-वाला, तमस्सुक आदि ।

सं० लिखक--(लिख्+अक) क० पु० लिखनेवाला, कातिब ।

प्रा० लिखना--(स० लिखन, लिख=लिखना) क्रि० स० लिखाई करना, लिख देना ।

प्रा० लिखलेना--बोल०नक़ल करना, लिख रखना ।

प्रा० लिखा--(लिखना) पु० भाग, प्रारब्ध, कर्म, होनी, होनहार, २ लेख, लिखावट, र्म्म० लिखाहुआ ।

प्रा०लिखाई--(लिखना) भा०स्त्री० लिखने के दाम, २ लिखने की मिहनत, ३ लिखनेका काम,लेखकी ।

प्रा० लिखावट--भा० स्त्री० लिखने का या लिखाई का काम, तहरीर ।

सं० लिखित--(लिख्=लिखना) र्म्म० लिखाहुआ, २ पु० लेख, चिट्ठी, पत्र, लिपि ।

सं० लिखितव्य--र्म्म० पु० लिखने योग्य, लेखनीय, लिखनेलायक़ ।

सं०लिङ्ग--(लिगि=जाना,वा चित्र या चिह्न करना,) पु० पुरुष चिह्न, इन्द्री, २ शिव की मूरत, ३ (व्याकरणमें) जाति, जैसे पुल्लिंग,स्त्रीलिंग आदि ।

सं० लिङ्गित--र्म्म० पु० चिह्नित ।

प्रा० लिट्टी--स्त्री० वाटी, अँगाकड़ी, आटे का गोला जिसको अँगारों में पकाकर खाते है ।

प्रा० लिपटना-क्रि०अ० चिपकना, सटना, मिलना ।

सं० लिपि, लिपी--(लिप्=लेपना) भा० स्त्री० लिखा हुआ काग़ज, लिखित, लेख, हस्ताक्षर, हाथका लिखहुआ, नक़ल ।

सं० लिपिक, लिपिकार--क० पु० लेखक, चित्रकार।

सं०लिपिमज्जा—स्त्री० क़लमदान ।

सं०लिप्त--(लिप्=लेपना) कृ०लिपा हुआ, पोता हुआ, मिला हुआ, लेसा हुआ, चर्चा हुआ ।

सं० लिप्सा——स्त्री० लाभकांक्षा, लाभवासना, आग्रह, ख़्वाहिश ।

सं० लिप्सित—कर्म० पु० वाञ्छित ।

सं० लिप्सु—क० पु० वाञ्छक, ख़्वाहिशमन्द ।

[चिह्न ।

प्रा० लिम—पु० कलङ्क, दाग, २ [कपड़े का टुकड़ा ।

प्रा० लिलाट, लिलाड, लिलार (सं० ललाट) पु० शिर का अगला भाग, ललाट, भाल, २ कपाल, प्रारब्ध, भाग ।

प्रा०लिवैया—(लेना)क०लेनेवाला ।

प्रा० लीक, लीका (सं० लेखा) स्त्री० गाड़ी के पहिये का निशान, पगडंडी, लकीर, २ कलंक, दाग ।

प्रा० लीख—स्त्री० जूंका अंडा ।

प्रा० लीचड़--गु० सूम, कंजूस, कृपण, लोभी ।

प्रा० लीची—स्त्री० एक फल जो चीन देश से फैला है ।

सं० लीढ़—(लिह्=स्वाद लेना) कर्म० पु० आस्वादित, स्वादयुक्त ।

प्रा० लीतरा—पु० पुराना जूता ।

सं० लीन—(ली=मिलना वा गलना) क० लय, लगाहुआ, मिलाहुआ, डूबाहुआ, मग्न, २ गलाहुआ, ३ सोखाहुआ ।

प्रा० लीपना—(सं० लेपन) क्रि० स० पोतना, लेसना, थोपना ।

प्रा० लीमू--(सं० निम्बु, निम्ब्=सींचना) पु० नींबू, लेमू, एक खट्टा फल ।

प्रा० लीर--स्त्री० धज्जी, कतरन,

प्रा० लील—(सं० नील) स्त्री० नील, गु० नीला ।

प्रा० लीलना--क्रि० स० निगलना ।

सं०लीला-(ली=मिलना, या ला=लेना) स्त्री० खेल, क्रीड़ा, विहार, विलास, कामकेलि, शृंगारभाव ।

सं० लीलावती--(लीला) स्त्री० विलास करनेवाली स्त्री, २ भास्कराचार्य्य की बेटी का नाम, ३ संस्कृतमें एक गणित विद्याकी पुस्तकका नाम ।

सं० लीलहि--स्त्री० विनाश्रम, बे मेहनत, २ खाय, निगल जाय ।

प्रा० लुकना--क्रि० अ० छिपना ।

प्रा० लुकाना--क्रि० स० छिपाना ।

प्रा० लुगाई, लोगाई (लोग) स्त्री०नारी, स्त्री ।

सं० लुञ्चन—(लुच=ऊपर जाना, नोचना) भा० पु० उत्पाटन, उखाड़ना, नोचना ।

प्रा० लुटना--(सं० लुट=लुटना ष

लूटना) क्रि० अ० लुटजाना, छिनजाना।

प्रा० लुटिया—स्त्री० छोटा लोटा।

प्रा० लुटेरा, लुटेरू (लूटना) क० पु० लूटने वाला।

सं० लुठन—(लुठ=लुण्ठन) भा० पु० घोड़ादिका धरती पर श्रम दूर करने के लिये लोटना।

सं० लुण्ठक—(लुण्ठ=चोरीकरना) क० पु० चोर, स्तेयकारक।

सं० लुण्ठित—र्म० पु० अपहृत, चोरित, चुराया हुआ।

प्रा० लुढ़कना, लुढ़ना (सं० लुठन, लुठ्=ढुलकना) क्रि० अ० ढुलकना, गिरना, ढनमनाना।

प्रा० लुढ़कजाना—बोल० मरजाना।

प्रा० लुढ़ाना—(लुढ़ना) क्रि० स० ढुलकाना, लुढ़काना, गिरा देना।

प्रा० लुपरी-स्त्री० एक तरहकी लपसी।

सं० लुप्त-(लुप्=काटना) क० पु० नष्ट, बरबाद, छिपजाना, अदृश्य, गुप्त।

सं० लुब्ध, लुब्धक (लुभ्=लोभकरना, या मोहना) क० पु० लोभी, लालची, २शिकारी, ३लुच्चा, लंपट।

प्रा० लुभाना--(सं० लोभन) क्रि० स० ललचाना, मोहना, तरसाना, चाहना।

सं० लुभित--र्म० पु० आकांक्षित, ख़्वाहिशमन्द।

प्रा० लुहाँगी (लोह) स्त्री० ऐसी लाठी जिसपर लोहा जड़ा रहताहै।

प्रा० लुहार, लोहार (सं० लोहकार) पु० लोहे का काम बनानेवाला।

प्रा० लू—स्त्री० गर्महवा, लूक, लपट।

प्रा० लूक, लूका (सं० उल्का) पु० आगकी चिनगारी, पतङ्गा, लपट।

प्रा० लूकालगाना--बोल० आग लगाना, जलाना, २ झगड़ाउठाना, बखेड़ामचाना।

प्रा० लूट--(सं० लुट्=लूटना) भा० स्त्री० डकैती, लूटपाट।

सं० लूटक—पु० कमरबंद, २ लूटने वाला, ठग।

प्रा० लूटपूट--बोल० लूटना और उजाड़ना।

प्रा० लूटना--(सं० लुट्=लूटना) क्रि० स० छीनलेना, लूटपाट करना।

प्रा० लूटपाट--बोल० लूटना और मारलेना।

प्रा० लूटालूट--बोल० लूट, छीना, झपटी।

प्रा० लूणी, लूनी (लवण) गु० लोना, खारा, २ (सं० नवनीत) मक्खन, माखन।

प्रा० लून--(सं० लवण) पु० निमक, नमक, नोन।

सं० लून--(लू=छेदना, काटना)

कर्म० पु० काटागया, लुनागया।

प्रा० **लूनिया**--(सं० लवण) गु० खारा, २ पु० एक पौधा, ३ बेलदार, वह आदमी जो और के लिये रस्ता साफ करता है, ४ नमक बनाने वाला, ५ बनियों की एक जाति।

सं० **लूम**--पु० लांगूल, पुच्छ, पूंछ।

प्रा० **लूला**--गु० विन हाथ का, टुंडा, लुंजा।

प्रा० **लेई**--स्त्री० आटे का कलप या माड़ी जिससे कागज़ आदि साटते हैं।

प्रा० **लेंडी**-स्त्री० बकरी की मेंगनी, २ एक तरह का कुत्ता गु० नामर्द, असमर्थ।

सं० **लेख**--(लिख्=लिखना) भा० पु० लिखा हुआ कागज़, पत्र, लिपि।

सं० **लेखक**--(लिख्=लिखना) कृ० पु० लिखने वाला, मोहर्रिर।

सं० **लेखनी**-(लिख्=लिखना) क० स्त्री० लिखने की चीज़, कलम।

सं० **लेखनीय**--कर्म० पु० लेख्य, लिखितव्य, लिखनेलायक़।

सं० **लेखा**-(लिख्=लिखना) पु० हिसाब, गणित, २ स्त्री० लकीर, रेखा।

सं० **लेख्य**--(लिख्=लिखना) कर्म० पु० लिखने योग्य, २ पु० चिट्ठी, पत्री, लिखा हुआ कागज़।

सं० **लेख्यगृह**-धि० पु० दफ्तर, कचहरी।

प्रा० **लेटना**--क्रि० अ० सोना, आराम करना।

प्रा० **लेनदेन** भा० पु० }
लेवादेई भा० स्त्री० } (लेना देना) व्यौपार, व्यवहार।

प्रा० **लेना**--(सं० ला=लेना) क्रि० स० लेलेना, ग्रहण करना, गहना, पकड़ना, स्वीकार करना, चुनना, खरीदना।

सं० **लेप**--(लिप्=लेपना) पु० लेपन, मरहम, मलहम।

सं० **लेपक**--कृ० पु० जर्राह [मरहम।

सं० **लेपन**--भा० पु० लेसने की वस्तु,

सं० **लेप्य**--कर्म० पु० लगाने के योग्य, लेसने के लायक़।

प्रा० **लेपालक**--(लें=पालना) पु० गोद लिया हुआ बेटा, धर्मका बेटा, पोष्यपुत्र, मुतबन्ना। [२ थन।

प्रा० **लेवा**--(लेना) पु० लेनेवाला

सं० **लेश**--(लिश्=थोड़ाहोना) गु० थोड़ा, छोटा, अल्प, किंचित्, पु० छोटाई, अल्पता, कण।

सं० **लेशमात्र**-गु० थोड़ाभी, लघुतर।

सं० **लेह्य**--(लिह्=स्वाद लेना, चाटना) कर्म० चाटने योग्य, पु० अमृत।

अं० **लैस**--तैय्यार कपड़ा के किनारे का फीता।

प्रा० **लोई**--(सं० लोमीय, लोम) स्त्री० एक तरहका ऊनी कपड़ा, दो कम्बल, २ मुंहकी चमक, लावण्य

प्रा० लौं } लौं } नित्य सं० तक, तलक, लग, अवधि।

प्रा० लौंग } लौंग } (सं० लवंग) स्त्री० एक तरह का गर्म मसाला

प्रा० लौंदा--पु० मिट्टी का ढेला।

सं० लोक--(लोक्=देखना) पु० लोग, मनुष्य, २ भुवन, सृष्टि के विभाग, —तीन लोक प्रसिद्ध है (१ स्वर्ग लोक अथवा देवलोक अर्थात् देवताओं के रहने की जगह, २ मर्त्य लोक यह संसार जिसमें मनुष्य रहते हैं, ३ पाताल लोक अर्थात् नीचे का लोक) कितने एक ग्रन्थों में सात लोक लिखे हैं (१ भूर्लोक, पृथ्वी, २ भुवर्लोक जिसमें ऋषि मुनि और सिद्ध आदि रहते हैं और वह सूर्य और पृथ्वी के बीच में है जिसको अन्तरिक्ष भी कहते हैं ३ स्वर्लोक अथवा स्वर्ग जिसमें इन्द्र और देवता रहते हैं और वह सूर्य और ध्रुव के तारे के बीच में है, ४ महर्लोक जिसमें भृगु आदि ऋषि रहते हैं जो ब्रह्मा के जीने तक जीते रहते हैं और जब तीन लोक में प्रलय होजाता है और उसकी लपट महर्लोक तक पहुंचती है तब वे सब ऋषि ५ जन लोक में चढ़ जाते हैं जिसमें ब्रह्मा के बेटे सनक, सनन्दन, सनातन और सनत्कुमार रहते हैं, ६ तपोलोक जहां तपस्वी रहते हैं, ७ सत्यलोक अथवा ब्रह्मलोक अर्थात् ब्रह्मा का लोक इन में के पहले तीन लोक हर एक कल्प अर्थात् ब्रह्मा के दिन के अन्त में नाश हो जाते हैं, और पिछले तीन लोक ब्रह्मा के जीने तक अर्थात् ब्रह्मा के १०० बरस तक रहते हैं और चौथा महर्लोक भी उसी समय तक रहता है पर नीचे के तीन लोक प्रलय के समय में जलते हैं तब उसकी तपन के कारण वहां कोई नहीं रहता बहुत से ग्रन्थों में १४ लोक लिखे हैं—७ लोक यही जो ऊपर लिखे गये और ७ पाताल हैं जिनको पाताल शब्द के वर्णन में देखो।

लोकखंड-अथवा कतिपय देशों और प्रदेशों के प्राचीन, संस्कृत और आधुनिक नाम पाठकों के सुभीते के हेतु उद्धृत किये जाते हैं।

आधुनिक प्रचलित एशिया का संस्कृत नाम अमेसनक अथवा विष्णु क्रान्त अनुमित है इसी प्रकार यूरोप का इषुगात वा अश्वक्रान्त है यथा

भविष्यपुराणे।

इषुगाते नराः शुक्लाः
शूरः[illegible]

वाणिज्यादिरताः क्रूरा
मायामोहविमिश्रिताः।
अफ्रीका का संस्कृत नाम सूर्यारिका
वा रथक्रान्त है यथा भविष्यपुराणे।
रथक्रान्ते नराः कृष्णाः
मायशोविकृताननाः।
आममांसभुजः सर्वे
शूराः कुञ्चितमूर्द्धजाः॥

प्राचीननाम–	आधुनिकनाम
आर्वस्तान	ब्रिटेन
इन्द्रद्वीपिका, इन्दुद्वीप	इङ्गलैण्ड
रोम वा रूम	रोम
पटचर	इटली
पशुशील	पोर्टुगाल
क्रौंच	जरमनी
सैनिक वा कुकुर	हालैण्ड, नेदर्लैण्ड बेलजियम
ऋश्यक वा अश्वीया	आस्ट्रीया
मलियाँ, कुरुक	गॉल वा फ्रांस
ताम्रप्रदेश	स्पेन
माठक वा मारक	डेन्मार्क स्कैण्ड नेविया
बर्बर	बारबरी
वारिधान, वारुण	अफ्रीका का उपद्वीप
शक तुरुष्क	एशियाई तुर्की
रूस	रसिया
रैव	सैबीरिया
सुखारा	बुखारा
पारद, महाचीन	चीन
तान्तुवायक	तिब्बत
पार्वत	तातार
बाह्लीक	बलख
आवर्त	अरब
पारस्य	ईरान
यवन	यूनान
नर्दिनाश, कारस्कार	मदीना
पद्मनगर	काबुल
गान्धार	कन्धार
अपवाह, अपरान्त	मस्कत
सिंहलद्वीप	सीलोन
उपमल्लका	मलाका
ब्रह्मोत्तर, ब्रह्मदेश	ब्रह्मा
कुमारिका	हिन्दुस्थान
कुमारद्वीप, स्वर्णभूमि	अमेरिका
उत्तरकुमार	उत्तर अमेरिका
दक्षिणकुमार	दक्षिणअमेरिका
नलह	ब्राजील
हिरण्यपुर	पेरू
रमणक	अस्ट्रेलेशिया
स्वर्णमत्स्य	पालिनेशिया

कुमारिका नाम हिन्दुस्थानान्तर्गत प्रदेशों के नाम

दरद	भूटान
दरदान्तिक	दारजिलिङ्ग

पंजनद	पंजाब
गैरिककाश्मीर	काश्मीर
उत्तर कोशल	फ़ैज़ाबाद, नव्वाबगंज
काशी	बनारस
कुरुजाङ्गल	कुरुक्षेत्र
इन्द्रप्रस्थ	दिल्ली
अवन्ति, विशाला	उज्जैन
गुर्जराट	गुजरात
काञ्ची	करनाट
पाण्ड्य	मलाबार
किष्किन्धा	दक्षिणदेश
केकय	हिरात
माहिषक	मैसूर
उतकल, ओड्र	उड़ीसा
सुराष्ट्र	महाराष्ट्र
सिन्धुसौवीर	सिन्धदेश
विदेह, मिथिला	तिरहुत
महोदय, कान्यकुब्ज	कन्नौज
मगध, कीकट	गया
पाटलिपुत्र	पटना
अङ्ग	राजमहल, आरा
चम्पा	भागलपुर
पुण्ड्र	मेदिनीपुर
वङ्ग, गौड़	बंगाला
प्राग्ज्योतिष	कामरूप
शूरसेन	मथुरा
आन्ध्र	तिलिंगाना
कलिंग	उत्तरीयसरकार
कुलूत	कूलू
चेदि	चन्देरी
चोल	कर्नाटक
अश्मक	ट्रावंकोर
विदर्भ	बरार
श्रावस्ती	(सहेट महेट) एकौना
सौराष्ट्र	काठियावाड़

सं० लोकनाथ--(लोक+नाथ) पु० राजा, २ शिव, ३ ब्रह्मा, ४ विष्णु।

सं० लोकप-(लोक=सृष्टि, वा भुवन, पा=बचाना) पु० लोकपाल।

सं० लोकपाल--(लोक, पाल=पालना) पु० राजा, दिक्पाल।

सं० लोकबांधव-पु० सूर्य।

सं० लोकलोचन--पु० सूर्य।

सं० लोकमाता--(लोक+माता) स्त्री० संसार की मा, लक्ष्मी।

सं० लोकयात्रा--स्त्री० संसृति, जन्म मरण, लोकव्यवहार, प्राणरक्षा, रोजी, आजीविका।

अं० लोकल=देशीय, मुकामीस्थानीय

अं० लोकलसेल्फगवर्नमेण्ट=स्थानीय आत्मशासन प्रणाली, खुद इख्तियारी मुकामीहुकूमत, मेंग आनरेरी मजिस्ट्रेट।

सं० लोकालोक--(लोक=देखना, अलोक=नहीं देखना) पु० एक

पहाड़ की श्रेणी जिसको सोचते हैं कि सातों समुद्रों को घेरे हुये है और इस संसार की सीमा है।

सं० **लोकेश**-(लोक + ईश) पु० ब्रह्मा, २ राजा।

प्रा० **लोग**--(सं० लोक) पु० मनुष्य, आदमी, जन।

सं० **लोकापवाद**--पु० अपकीर्ति, लोकनिन्दा, अगुश्तनुमाई।

सं० **लोचक**--(लोच्+अक) पु० मांसपिण्ड, नेत्रतारा, काजल, वेदी, टीका, नीलवस्त्र, कर्णफूल, कदली, साँपकी केंचुली।

सं० **लोचन**--(लोच्=देखना) ण० पु० आंख, नेत्र, नयन २ संख्या।

प्रा० **लोटना**--(सं० लुट्=फिरना, घूमना) क्रि० अ० घूमना, फिरना, रोलना, २ तड़फना, छटपटाना।

प्रा० **लोटपोटहोना**--बोल० मोहित होना, किसीके प्यार में डूबना।

प्रा० **लोटा**--पु० गड़वा, पानी डालने का बरतन।

प्रा० **लोढ़ा**--(सं० लोष्ट, लोष्ट्=इकट्ठा होना) पु० सिल वट्टा, २ ओसवाल महाजनों की एक जात।

प्रा० **लोणा** } (लवण) पु० खारा, २ सुन्दर।
लोना }

प्रा० **लोथ**--(सं० लोचक, लोच्=देखना) स्त्री० मरा शरीर, लाश, मृतक। [मांस का पिंड।

प्रा० **लोथरा**- (सं० लोचक) पु०

प्रा० **लोदी**--पठानों की एक जाति।

प्रा० **लोन**-(सं० लवण) पु० नमक, निमक, नून।

प्रा० **लोनमिर्चलगाना**--बोल० अपनी तरफ़से बहुत बढ़ाके कहना।

प्रा० **लोनाई**--(सं० लावण्य) भा० स्त्री० सुन्दरता, शोभा।

सं० **लोप**--(लुप्=काटना) पु० काटना, मिटाना, व्याकरण में अक्षर अथवा पद को उड़ा देना या निकाल देना, २ छिपा, अदृश, गुप्त, ३ नाश, ४ छीलछाल, काटकूट।

सं० **लोपामुद्रा**--स्त्री० अगस्त्यऋषि की धर्म पत्नी।

सं० **लोपी**-क० पु० नाशक, नाशकर्ता।

सं० **लोप्य**--कर्म० नाशनीय, नाश्य।

प्रा० **लोबान**--(अ० लुबान) पु० एक तरह की सुगन्धित चीज़ जिसको धूपकी तरह देवता के साम्हने आग पर रखते हैं।

सं० **लोभ**--(लुभ्=लालच करना) पु० लालच, पराये धनके पाने की चाह, तृष्णा, तमअ।

सं० **लोभी**--(लोभ) क० पु० लालची।

सं० **लोम**--(लू=काटना) पु० देह परके बाल, रोम, रोंगटे।

प्रा० **लोमड़ी**--(सं० लोमशा,

स्त्री० एक जानवर का नाम।

सं० लोमश--(लोम अर्थात् जिसके शरीर पर बहुत बाल हों) पु० एक ऋषि का नाम, जिसके गले में राजा परीक्षित ने मरा हुआ सांप डाला था और उसके चेले शृंगी ऋषि ने उसको शाप दिया कि सातवें दिन राजा को तक्षक सांप डसेगा, तब श्रीशुकदेव जी ने आकर राजा परीक्षित को श्रीमद्भागवत सुनाकर उसका उद्धार किया, गु० जिस के बहुत बाल हों।

प्रा० लोयन--(सं० लोचन) पु० आंख।

प्रा० लोर--(सं० लोल) पु० झुमका, २ आंसू।

सं० लोल--(लुल्=हिलना) गु० हिलता हुआ, चंचल, २ पु० आंसू, ३ स्त्री० जीभ, ४ लक्ष्मी।

सं० लोलुप--(लुप्=नाश करना अर्थात् सिवाय लोभ के और सब चाह को नाश करना, या लुभ=लोभ करना यहां भ को प होजाता है) गु० बहुत लोभी, बड़ा लालची।

सं० लोलुभ--(लुभ्=लालच करना) गु० बहुत लोभी, बड़ा लालची।

सं० लोह } (लुह=चाहना, या लू=काटना) पु० लोहा, एक तरह की धातु।
लौह }

सं० लोहकार--क० पु० लुहार।

प्रा० लोहा--(सं० लोह) पु० एक प्रकार की धातु।

प्रा० लोहा बजाना--बोल० तलवार से लड़ना।

सं० लोहित--(रुह्=पैदा होना) गु० लाल, पु० लोहू, २ लाल रंग।

सं० लोहिताक्ष--(लोहित+अक्ष) पु० लाल आंख, रक्तनेत्र, विष्णु, २ कोकिला पक्षी।

प्रा० लोहिया--(लोह) गु० लोह का।

प्रा० लौंडा--पु० लड़का, छोकरा, दास, गुलाम।

प्रा० लौंडिया } स्त्री० दासी,
लौंडी } छोकरी।

प्रा० लौंद पु० मलमास, अधिक महीना।

प्रा० लौ--(सं० लय) स्त्री० जलती हुई बत्ती की शीखा या ज्वाला, २ ध्यान, मन, लगन।

प्रा० लौ लगाना--बोल० ध्यान करना, ईश्वर की उपासना या प्रार्थना में स्थिर होना।

प्रा० लौ लगना--बोल० ध्यान लगाना ध्वनि लगना, किसी को बार बार याद करना।

सं० लौकिक--(लोक) गु० सांसारिक जो संसार में प्रसिद्ध हो, जो लोक व्यवहार में आता हो, दुनियाबी दुनियवी।

प्रा० लौटना--क्रि० अ० पलट आना, फिरना, घूमना, उलट फिरना।

प्रा० लौना-(सं० लवण, लू=काटना) क्रि० स० काटना, कुटनी करना, २ कमबांट मे दूसरा बांट लगाकर उसे पूरा करना, लगना।

अं० ल्यजिसलेटिवकौन्सिल= न्यायोत्पादनसभा, क़ानून इजराई-दरबार।

प्रा० ल्यारी-पु० भेड़िया, हुंडार।

—::—

(व)

सं० व- (सं० वा=बहना, जाना) पु० हवा, २ राहु, ३ कल्याण, ४ समुद्र, ५ बाघ, ६ वरुण, ७ मन्त्रण, सलाह, इस अक्षर की जगह हिंदी में बहुत बार ब लिखा जाता है इस लिये जो शब्द इस में नहीं मिले उसको ब में देखनेसे मिलेगा।

सं० वंश-(वश्=चाहना) पु० बेटे पोते, कुल, सन्तान, सन्तति, २ बास।

सं० वंशभोज्य- पु० पितृपितामह प्रभृतिरर्जिता भूम्यादि संपत्, पितृ सम्पत्, पुरुषाओं से चली आती जो जीविका, पितरों की संपदा।

सं० वंशलोचन- (वंश=बांस, रुच्= चमकना) पु० बांस में से निकली हुई कपूर सी धौली चीज जो बहुतसी औषधियों में काम आती है।

सं० वंशावली-(वंश+आवली) स्त्री० पुरुषों की नामावली, पीढ़ी, परंपरा, वंशक्रम, वंशश्रेणी।

सं० वंशिका-स्त्री० अगर, सुगन्धकाष्ठ, मुरली, वंशलोचन।

सं० वंशी--(वंश=बांस) स्त्री० बांसका बना हुआ एक बाजा, बांसुरी, मुरली।

सं० वंशीधर--(वंशी=बांसुरी, धर= रखने वाला, धृ=रखना) पु० श्री कृष्ण, मुरलीधर।

सं० वंशीवट--(वंशी+वट) पु० एक वड़ का पेड़ जिस के नीचे बैठकर श्रीकृष्णचन्द्रजी वंशी बजाया करते थे।

सं० वंश्य--गु० कुलीन, श्रेष्ठकुलोत्पन्न पु०- पुत्र, सप्तम पुरुषाद्भिन्नः वंशभवः।

सं० वक--बक शब्द को देखो।

सं० वकवृत्ति- स्त्री० पु० पाखंडी, धूर्त, दगाबाज।

सं० वकुल--पु० मौरश्री वृक्ष।

सं० वक्तव्य--(वच्=बोलना) कर्म० पु० कहने योग्य, बोलने योग्य।

सं० वक्ता--(वच्=कहना, बोलना) क० पु० बोलने वाला, कहनेवाला, गोया, स्पीचर।

सं० वक्त्र--(वच्=बोलना) पु० मुंह, मुख।

सं० वक्तृता--भा० स्त्री० कथन, व्याख्यान, स्पीच, वाज़ कहना।

सं० वक्र--(वक्=टेढ़ा होना) गु०

टेढ़ा, बांका, कुटिल, पु० शनैश्चर, जलका भ्रमर, मंगलग्रह ।

सं० वक्रनक्र--पु० शुकपक्षी, सुग्गा, २ पिशुन, दुर्जन ।

सं० वक्राङ्ग--पु० हंस, चक्रवापक्षी, सारस, गु० कुब्ज, टेढ़ा अंग ।

सं० वक्रोक्ति--(वक्र=टेढ़ा, उक्ति=कहना) स्त्री० टेढ़ा कहना, टेढ़ी बात, व्यंग वचन, कुटिलोक्ति, काकोक्ति, काकुवचन, ताना, २ एक अलंकार जिस में टेढ़ीबात कही जाती है जैसे
" हम कुल घालक सत्य तुम "
" कुल पालक दश शीश "
अथवा
" मैं सुकुमारि नाथ वन योगू "
" तुमहिंउचित वन मोकहँ भोगू "

सं० वक्षःस्थल--(वक्षस्=छाती (वह्=लेजाना) और स्थल=जगह) पु० छाती, हृदय, उरस्थल ।

सं० वक्षोज--(वक्षस्+ज) पु० उरोज, स्तन, कुच । [कुटिल ।

सं० वङ्क--(वकि=टेढ़ाकरना) गु० बांका,

सं० वङ्किल--क० पु० कण्टक, काँटा, त्रिशूल ।

सं० वङ्ग--(वगि=जाना) पु० रांगा, एक धातु, २ बंगाला देश ।

सं० वचन--वचन शब्दको देखो ।

सं० वचनव्यक्ति--स्त्री० बात की सफ़ाई, बात में सफ़ाई ।

सं० वज्र--=वज्र शब्द को देखो ।

सं० वज्रदन्त--पु० शूकर, मूषक, मूस ।

सं० वज्राघात--पु० वज्रपात, वज्रसे मारना ।

सं० वञ्चक--(वञ्च्=ठगना) क० पु० ठग, ठगने वाला, धूर्त, दगाबाज़, २ गीदड़, सियार, ३ बभ्रु, नकुल, न्योला ।

सं० वञ्चित--(वञ्च्=ठगना) र्म० पु० ठगाहुआ, ठगागया, महरूम ।

सं० वट--(वट्=घेरना) पु० बड़कापेड़ ।

सं० वटर--(वट्=लपेटना) पु मुर्गा, २ चोर, ३ पगड़ी, ४ आसन, चटाई ५ लकुट, ६ छड़ी गु० धूर्त, दुर्जन कुरूप, आलसी ।

सं० वटी--र्म० स्त्री० औषध की गोली, २ रस्सी ।

सं० वटु--(वट्=बोलना) पु० ब्रह्मचारी, २ बालक, विद्यार्थी, ब्राह्मण कुमार ।

सं० वटुक--(वट्=बोलना) पु० बालक, २ बालक रूप भैरव ।

सं० वड--गु० बड़ा, विस्तीर्ण पु० विस्तार, दीर्घता ।

सं० वडिश--पु० कटिया, वंशी, मछलियों के पकड़ने का यन्त्र ।

सं० वण्टक--(वण्ट=बाँटना, विभागक) क० पु० बांट लोहा या पत्थर के, बांटने वाला, विभाजक ।

सं० वत्--बराबर, समान तुल्य, नाईं ।

सं०वत्स-(वद्=बोलना, जिससे प्यार से बोलते हैं) पु० बच्चा, बालक, २ बछड़ा, ३ छाती, ४ बरस, ५ प्यार का शब्द। [संवत।
सं० वत्सर--(वस्=रहना) पु०बरस,
सं०वत्सल-(वत्स=प्यार, ला=लेना) गु० प्यारा, प्रेमी, छोही, मोही, दयालु, कृपालु, रहीम।
सं० वदन--(वद्=बोलना) पु०मुंह, मुख, चिहरा। [प्रिय।
सं० वदान्य--पु० दानशील, वक्ता,
सं० वन--(वन्=सेवना, मांगना या शब्द करना) पु०जंगल, विपिन, अटवी, २ पानी, ३ जगह, स्थान।
सं० वचनर / वनेचर--(वन=जंगल, चर=चलने वाला, चर्=चलना) पु० जंगली, वनमानुष, ३ वानर, बन्दर।
सं० वनज--(वन=जंगल, वा पानी जन्=पैदा होना) पु०कँवल, कमल।
सं०वनपांशुल-पु०व्याध, बहेलिया।
सं० वनमाला--स्त्री० तुलसीकुन्दमन्दार, पारिजाताब्जपुष्पकैः निर्मिता दीर्घमाला या, वनमाला प्रकीर्तिता। अर्थ तुलसी, कुन्द, मन्दार, पारिजात, कमल इन से बनी हुई।[1]
सं०वनस्पति-(वन=जंगल, पति=मालिक) स्त्री० वनस्पति, जमीनसे उगने वाली चीज।
सं० वनित--(वन्+इत) र्म० पु० याचित, मांगाहुआ।
सं०वनिता--(वन्=मांगना, याचना) स्त्री० लुगाई, नारी, पत्नी, प्यारी।
सं०वन्दनचरित--पु० काबिल तारीफ, प्रशंसा योग्य।
सं० वन्दन, भा०पु० / वन्दना, भा० स्त्री० (वदि=प्रणाम करना, पूजना, वा सराहना) सराह, स्तुति, प्रणाम, नमस्कार, आदाब, सिजदा।
सं० वन्दनीय / वन्द्य (वदि=प्रणामकरना, वा सराहना) र्म० पु० सराहने योग्य, प्रणाम या नमस्कार करने योग्य।
सं० वन्दि / वन्दित र्म० प्रणामकृत, नमस्कार किया गया।
सं० वन्दीजन--पु० भाट, प्रशंसक।
सं० वन्य--(वन) गु० जंगली, वनवासी, वनैला, वनका।
सं० वपन--(वप्=बोना) भा० पु० बीज बोना, बीज डालना, २ केश मुण्डन, क्षौरकर्म्म, बालबनाना।
सं० वपनी--धि०स्त्री०नापितशाला, हज्जामों का अड्डा।
सं० वपिल--क० पु० पिता, बाप।
सं० वपुस्--(वप्=बोना) पु०शरीर, देह, काय।
सं० वप्र--पु० प्राचीर, खावाँ परि-

(१) आनन्दलम्बिनीमालावनमाला विदुर्बुधा इति।

खा खांई, शहरपनाह, धुस्स, मट्टी का टीला, २ बाप।

सं० वमन--(वम्=रद्द करना, कै करना) स्त्री० उलटी, कै, रद्द।

सं० वमनी--स्त्री० जोंक, जलौका, रक्तपा।

सं० वमित--(वम्=रद्द करना) क्र्म० पु० रद्द किया हुआ, वमन करता हुआ, वान्त, उगिला हुआ।

सं० वयस्--(वय् अथवा अज्=जाना) स्त्री० उमर, अवस्था।

सं० वयस्थ-क० पु० समरस्थ, बालिग।

सं० वयस्य--गु० बराबरवाला, हमउमर।

सं० वर--(वृ=पसन्द करना) पु० आशिष, आशीर्वाद, वरदान, चाही हुई चीज़, २ पति, स्वामी, ३ जंवाई, गु० सबसे अच्छा, श्रेष्ठ, बड़ा।

सं० वरण--पु० वेष्टन, लपेटना, पूजना, आमंत्रण।

सं० वरणा--(वृ=पसन्द करना) स्त्री० एक नदी का नाम जो वनारस के उत्तर बहती हुई गंगा में मिलती है।

सं० वरद--(दा=देना) क० पु० अभीष्ट दाता, अभयदाता।

सं० वरदा--क० स्त्री० दुर्गा, शिवा।

सं० वरदान--(वर + दान) पु० आशिष देना, वर देना, दुआ देना।

सं० वरदायक--(वर + दायक) क० पु० वर देने वाला, वरदाई, चाहे हुए को देने वाला।

प्रा० वररहना--बोल० अच्छा रहना, श्रेष्ठ रहना, सरस रहना, जयवन्त होना।

सं० वरवरणी--(वर=श्रेष्ठ + वरणी =रङ्ग) स्त्री० गौरी, गोरी स्त्री।

सं० वराङ्गना--(वर=सब से अच्छी अङ्गना=स्त्री) स्त्री० सुन्दर स्त्री।

सं० वराटक--पु० बीजकोश, बीज का स्थान, कमल का बीज।

सं० वराटिका-स्त्री० कौड़ी, कपर्दिका।

सं० वराणसी } वाराणसी } (वरणा एक नदी, और असी एक नदी ये दोनों नदियां बनारस के पास मिलती हैं इसी लिये ऐसा नाम हुआ) स्त्री० बनारस, काशी, शिवपुरी।

सं० वरासन--(वर+आसन) पु० विष्टर, श्रेष्ठासन, राज्यासन, २ द्वारपाल।

सं० वराह--पु० शूकर, विष्णु का [अवतार।

सं० वरुण--पु० जल, जलेश, जलपति, २ सूर्य, ३ पक्का मकान।

सं० वरूथ--(वृ=ढकना) पु० रथके ढकने का कपड़ा, २ समूह, झुण्ड।

सं० वरूथिनी--स्त्री० पृतना, सेना।

सं० वरेण्य--(वृ+एन्य) गु० श्रेष्ठ, मुख्य, उत्तम, प्रार्थनीय, वरदाता।

सं० वरोरुह--गु० श्रेष्ठ जांघवाली।

सं० वर्ग—(वृज्=ढकना) पु० एक जातिका समूह, गण, २ दर्जा, किलास, ३ गणित में एक अंक को उसी अंक से गुना करने से जो फल निकले जैसे ४ का वर्ग सोलह और पांच का पच्चीस आदि, मज जूर, स्कायर।

सं०वर्गमूल—(वर्ग+मूल) पु० वर्ग का मूल अर्थात् वह अंक जिसका वर्ग कियाहो, जैसे १६ का वर्ग मूल ४ और पच्चीसका वर्ग मूल ५ जजर स्कायर रूट।

सं० वर्गीय—(वर्ग) गु० वर्ग में का उसी समूह मे का।

सं०वर्ज्जक—(वृज्+अक) क०पु० परिहारक, रोकनेवाला, मानेअ।

सं० वर्ज्जन-(वृज्=छोड़ना) भा० पु० त्याग, छोड़ना, रोकना, मना करना।

सं० वर्ज्जनीय—(वर्ज्ज्+अनीय) र्म० पु० रोकने योग्य, मना करने के लायक।

सं० वर्ज्जित } (वृज्=छोड़ना) र्म०
वर्ज्य } पु० छोड़ाहुआ, रोका हुआ, मना किया हुआ।

सं०वर्ण—(वर्ण्=रंगना, फैलाना, सराहना) पु० रंग, २ जाति, कौम जैसे (१ ब्राह्मण, २ क्षत्री, ३ वैश्य, ४ शूद्र) ३ अक्षर, हर्फ।

सं० वर्णक—क० पु० प्रशंसक, तारीफ करनेवाला।

सं०वर्णन—(वर्ण्=रंगना, सराहना, फैलाना) पु० वखान, वयान, २ स्तुति, सराह, ३ रंगना।

प्रा० वर्णना } (सं० वर्णन) क्रि०
वर्णनकरना } स० वयान करना, गुण कहना, सराहना, स्तुतिकरना।

सं०वर्णमाला-(वर्ण=अक्षर, माला =पंक्ति) स्त्री० ककहरा, स्वरव्यञ्जन, हरूफतहज्जी=ऐलफाबिट।

सं० वर्णसङ्कर—(वर्ण=जात, सङ्कर मिला हुआ) पु० दोगला, जिसका वाप और मा जुदी जुदी जात के हों।

सं० वर्णिका--स्त्री० वर्णोंकी लिखने वाली, लेखनी, क़लम।

सं० वर्णित--र्म० पु० स्तुति किया गया, तारीफ किया गया, कहागया।

सं० वर्त्तन--(वृत्=होना) पु० जीविका, आजीविका, जीने का उपाय रोजी, मआश।

सं० वर्त्तमान-(वृत्=होना) पु० जो समय वीत रहा है, गु० विद्यमान, मौजूद।

प्रा०वर्ताव-भा०पु०व्योहार, राहरस्म।

सं० वर्ति--(वृत्+इन) स्त्री० वत्ती, नयनांजन, इतर, फुलेल, औषध, दीपक, चिराग।

सं० वर्तुल—गु० गोल, गोलाकार।

सं० वर्त्म } पु० पथ, अध्वा, राह,
वर्त्मन् } २ पलक, निमेष।

सं० वर्द्धन--(वृध्=बढ़ना) पु० बढ़ना, बढ़ती, वृद्धि।

सं० वर्द्धित-क० पु० उन्नत, बढ़ाहुआ।

सं० वर्म्म--(वृ=ढकना) पु० कवच, बखतर।

सं० वर्बर-(वर्व्+अर, वर्व=कहना) क० पु० बहुत बातूनी, फजूलगो, मूर्ख, २ पीला चन्दन ३ हींग ४ केशभेद ५ बावरी।

सं० वर्ष-(वृष्=बरसना, या पैदा करना) पु० साल, संवत्, बारह महीने, २ वर्षा, मेह, ३ जम्बूद्वीप का एक खंड।

सं० वर्षण--भा० पु० बरसना।

सं० वर्षा-(वृष्=बरसना) स्त्री० मेह, बरसात, वर्षाकाल, प्रावृट्काल।

सं० वर्षाकाल-(वर्षा+काल) पु० बरसात, चौमासा, चतुर्मास।

सं० वर्हिण } (वर्ह=मोर की पूंछ
वर्ही } वर्ह्=ऊंचा होना, या सब से अच्छा होना) पु० मोर, मयूर।

सं० वल--(वल्=घेरना) पु० सेना, फ़ौज, २ बल, ताक़त।

सं० वलभी--स्त्री० बरण्डा, गृहचूड़ा, बराम्दा।

सं० वलय-(वल=ढकना, या घेरना) पु० कंकण, बाला कड़ा।

सं० वला--स्त्री० सेना, २ लक्ष्मी ३ धरणी, ४ बरियारा औषधि।

सं० वलाका--(वल्=घेरना) स्त्री० बगुला, बगुले के ऐसा पखेरू।

सं० वलाहक--पु० मेघ, बद्दल।

सं० वलि--स्त्री० पूजोपहार, पूजा की सामग्री, २ पशुवध, कुर्बानी।

सं० वल्कल--(वल्=ढकना) पु० छाल, छिलका, बकला।

सं० वल्गु--पु० छाग, चन्दन, पण, वन गु० २ मनोहर।

सं० वल्मीक--(वल्=घेरना, ढकना) पु० दीमक, बिम्बोट, दीपककी वाँबी।

सं० वल्लभ--(वल्ल=ढकना) गु० प्यारा, प्रिय, प्रियतम, पु० पति, २ अधिकारी।

सं० वल्लभा--(वल्लभ) स्त्री० प्यारी स्त्री, प्रिया।

सं० वल्ली-(वल्=घेरना) स्त्री० लता, बेली, २ पृथ्वी, ३ अजमोद।

सं० वशिष्ठ-(वशी=वश करनेवाला जो अपनी इन्द्रियों को अपने वश में रक्खे या अव और शास् सिखाना, जो मनुष्यों को धर्म की बात सिखलावे) पु० एक ऋषि जो ब्रह्मा का बेटा और सूर्यवंशियों का गुरु था, सात प्रजापतियों में का एक प्रजापति।

सं० वश--(वश=स्पृहा, इच्छा) पु०

आधीन, क़ाबू, इख़तियार।

सं० वशी--क० पु० जितेन्द्रिय।

सं० वशीभूत--(वश=अधीन, भू=होना) गु० अधीन, दूसरे के वशमें।

सं० वश्य--र्म० पु० वशमें, काबूमें।

सं० वसति / वसती (वस्=बसना) स्त्री० वास, वासा, बस्ती, आबादी, रहने की जगह, २ रात।

सं० वसन-पु० वस्त्र, छादन, २निवास।

सं० वसन्त--(वस्=रहना, वा ढकना, या महकाना, सुगंधित करना) पु० २ एक ऋतु जो चैत और कुछ वैशाख के महीने तक रहती है, ऋतुराज, २ एक रागका नाम, ३ शीतला, गोटी।

सं० वसन्तदूत--पु० कोकिला, आम्रवृक्ष, माधवीलता।

सं० वसा--स्त्री० चर्बी, मेदा।

प्रा० वसीठ--पु० दूत, हलकारा, वकील।

प्रा० वसीठी--स्त्री० दूत का काम, दूतपन।

सं० वसु--(वस्=रहना, वा ढकना) पु० एक प्रकार के देवता जो आठ है (१ धर, २ ध्रुव, ३ सोम, ४ सावित्र, ५ अनिल, ६ अनल, ७ प्रत्यूष, ८ प्रभास) २आग, ३ किरण, ४ एक वृक्ष, ५ धन, ६ सोना, ७ रत्न, जवाहिर, ८ पानी, गु० मीठा, २ सूखा।

सं० वसुदा (वसु=धन, दा=देना) स्त्री० धरती, ज़मीन, धरणी, पृथ्वी, भूमि।

सं० वसुधा--(वसु=धन, धा=रखना) स्त्री० धरती, ज़मीन, पृथ्वी।

सं० वसुन्धरा (वसु=धन, धृ=रखना) स्त्री० पृथ्वी, धरती, ज़मीन।

सं० वस्तव्य--क० पु० वासयोग्य, रहने के लायक़।

सं० वस्तु--पु० पदार्थ, द्रव्य।

सं० वहित्र--(वह्=लेजाना वा पहुंचाना) पु० जलयान, जहाज़।

सं० वहिर्मुख--गु० विमुख, बागी।

सं० वह्य--पु० काँवर, वहँगी, वहँगा, वाहन, डोला, डोली।

सं० वह्ल--गु० भूत, प्रभूत, बहुत।

सं० वह्नि (वह्=लेजाना, वा पहुंचाना) स्त्री० आग, अग्नि।

सं० वा--समुच्च० अथवा, या, विकल्प, सादृश्य, अवधारण, वितर्क, पादपूरण।

सं० वाक्य--(वच्=बोलना,) पु० बोल, वाक्, वचन, वाणी, २ पदों का इकट्ठा होना, जुमला।

सं० वाग--पु० वाक्, वाणी, स्त्री० लगाम।

सं० वागीश--(वाच्=बोली, ईश=मालिक) पु० बृहस्पति, २ [illegible] ३ कवि, ४ गु० अच्छा बो[illegible]।

सं०वागीशा-स्त्री०सरस्वती, शारदा।

सं०वागीश्वरी—(वाच्=बोली, ईश्वरी=देवी) स्त्री० सरस्वती।

सं० वागुरा—स्त्री० मृगपाश, फांसी, फंदा।

सं० वागडम्बर—पु०वाचालता,वाक्यस्तोम, बहुत बातें, प्रलापी, धूर्त।

सं० वाग्दण्ड—(वाच्=बोली, दण्ड =सज़ा) पु० मुंह से भला बुरा कहना, धमकाना।

सं० वाग्मी—(वाच्=बोली) गु०सुन्दर बोलनेवाला, पु० बृहस्पति।

सं० वाङ्मय—गु० शास्त्र, वाक्य स्वरूप, वाणी का रूप, गोया, वक्ता।

सं० वाच्, वाचा—(वच्=बोलना) स्त्री० बोली, वचन, वाक्, वाणी, वाक्य।

सं० वाचक—(वच्=कहना) क०पु० सार्थक शब्द, ऐसा शब्द जिसका अर्थ हो, २ बोलने वाला।

सं० वाचन—भा० पु० पठना, कहना।

सं०वाचस्पति—(वाच्=बोली, पति =स्वामी) पु० बृहस्पति, देवताओं का गुरु।

सं० वाचा—स्त्री० वाणी, सरस्वती, वचन, ज़बान।

सं० वाचाट—गु० कुत्सितभाषी, बदकलाम, दुष्टवचनी।

सं० वाचाल—(वच्=बोलना) क० पु० बातूनी, बहुत बोलने वाला, गप्पी, बक्की।

सं० वाचित--र्म्म० पु० उक्त, कथित।

सं० वाच्य--(वच्=कहना) र्म्म० पु० बोलने योग्य, जो बोला जाय, जो कहा जाय, पु० वाक्य, अर्थ।

सं० वाच्यता--स्त्री० अपमान, हजो।

सं० वाज--पु० अन्न, घृत, जल, यज्ञ, बाजपक्षी, तीरमें पंख, वेग।

सं० वाजपेय--(वाज=यज्ञ की सामग्री, अथवा घी (वज्=जाना) और पेय पीना, पा=पीना) पु० एक प्रकार का यज्ञ।

सं०वाजी--(वाज=वेग, वज्=जाना) पु० घोड़ा, २ तीर।

सं० वाञ्छा—स्त्री० स्पृहा, कांक्षा, इच्छा, ख़्वाहिश, अभिलाष।

सं०वाट--पु०पथ,राह,जीविकास्थान।

प्रा० वाटी--स्त्री० भौरिया, २ गृह।

सं०वात—(वा=जाना, बहना) स्त्री० हवा, बाव, बतास, पवन, वायु, २ गठिया बाव, एकरोग।

सं० वातापिसूदन--क० पु० अगस्त्य मुनि।

सं० वातायन--पु० झरोखा, रोशनदान।

सं० वात्सल्य--(वत्सल) भा० पु० प्यार, प्रेम, स्नेह, दयालुता।

सं० वाद—(वद्=बोलना) पु० शास्त्रार्थ, बहस, चर्चा, बातचीत, विवाद, झगड़ा, २ वचन, वाक्य, ३ दावा,

मुकद्दमा, पुकार, फर्याद ।

सं० वादव–भा०पु०कहना, बजाना ।

सं०वादरायण–पु०व्यासमुनि बदरिकाश्रमवासी ।

सं० वादी--(वाद) क० पु० बोलनेवाला, वाद करनेवाला, शास्त्रार्थ करनेवाला, पु० मुदई, दावा करनेवाला, नालिशकरनेवाला ।

सं० वाद्य--(वद्=शब्द करना) पु० बाजा ।

सं० वानप्रस्थ--(वन=जंगल, प्रस्थ=रहनेवाला, प्र, स्था=ठहरना) पु० तीसरे आश्रमका मनुष्य जो ब्रह्मचर्य्य और गृहस्थाश्रम के पीछे वन में रहकर तपस्या करता है, तपस्वी, वनवासी ।

सं० वानर--(वान=वन के फल आदि, रा=लेना, अथवा वा=कुछ कुछ, नर=मनुष्य, अर्थात् जिसका डील डौल कुछ कुछ मनुष्य से मिलता है) पु० बन्दर, कपि, मर्कट, कीश ।

सं० वानरेन्द्र–(वानर+इन्द्र) पु० सुग्रीव, २ हनुमान् ।

सं० वापी--(वप्=बोना, अर्थात् जिस में कमल आदि उगने हैं) स्त्री० बावड़ी, बावली ।

सं० वाम--पु० महादेव, वामदेव, २ धन, ३ वास्नूक, बथुवा, वेदाचारविरुद्ध, गु० ४ वल्गु, मनोहर, ५ सव्य, ६ कुटिल ।

सं०वामन--(वाम, वा=जाना) पु० बावना, नाटा ।

सं० वायन--पु० बैना, न्योता ।

सं० वायव्य--(वायु) पु० वायुकोन, पश्चिम उत्तर का कोना, गु० हवाका ।

सं० वायस--(वयस्=उमर, अर्थात् बड़ी उमर वाला) पु० कौआ, काग, २ एक वृक्ष का नाम ।

सं०वायु--(वा=बहना, जाना) स्त्री० हवा, पवन, बयार, बतास ।

सं० वायुपुत्र--(वायु+पुत्र) पु० वातजात, हनुमान्, रामदूत ।

सं० वायुवाह--पु० धूम्र, धूम, धुआँ ।

सं० वार–पु० द्वार, २ अवसर, ३ शिव, ४ क्षण, दिन, ५ यज्ञपात्र ।

सं०वारण–(वृ=ढकना) पु० रोक निषेध, अटकाव, बाधा, २ हाथी ३ बखतर, कवच ।

प्रा० वारना–क्रि० स० उतारना, भेट चढ़ाना, २ घेरना ।

प्रा० वारपार
वारापार } (सं० अवारपार अवार इस पार, पार उस पार) क्रि० वि० इस उस पार, वर्ले पर्ले पार पु० हद्द, सीमा ।

सं० वाराणसी[1]--स्त्री० वरणानदी और असी नदी के मध्य की बस्ती, काशी । [जन्त ।

सं० वारि--(वृ=ढकना) पु० पानी

सं० वारिचर--(वारि=पानी चर

(१) यहां वरणाशब्द के स्थान में वाणमंक्षितहुआ है ।

=चलना) पु० जलचर, जलका जीव, मछली, गु० पानी में रहनेवाला।

सं० वारिचरकेतु--(वारिचर+केतु) पु० कामदेव, मकरध्वज, मीनकेतन।

सं० वारिज--(वारि=पानी, जन्=पैदा होना) पु० कमल, कँवल।

सं० वारिजनयन--(वारिज+नयन) गु० जिसकी आंखें कमलसी हों।

सं० वारिद--(वारि=पानी, दा=देने वाला, दा=देना) पु० बादल, मेघ।

सं० वारिदनाद--(वारिद+नाद) मेघनाद, रावण का बेटा।

सं० वारिधि--(वारि=पानी, धा=रखना) पु० समुद्र, सागर।

सं० वारिनाथ--(वारि+नाथ) पु० समुद्र, सागर।

सं० वारिनिधि--(वारि+निधि) पु० समुद्र, सागर।

सं० वारिवाह--क० पु० मेघ, वारिद।

सं० वारीश--(वारि+ईश) पु० समुद्र, सागर, सिंधु।

सं० वारुणी--स्त्री० पश्चिमादिशा, २ मदिरा ३ शतभिषानक्षत्र ४ दूब ५ वरुण की स्त्री।

सं० वार्त्ता--(वृत्=होना) स्त्री० बात, २ वृत्तान्त, समाचार, ३ गप्प।

सं० वार्त्तिक--(वृत्ति, अथवा वार्त्ता से, वृत्=होना) पु० सूत्र का टीका, व्याख्या, २ गद्य, नसर।

सं० वार्द्धक--पु० वृद्धावस्था, वृद्ध समूह जैसे (वार्द्धके मुनि वृत्तीनां)।

सं० वार्य्य }
वार्यमान } र्म० पु० निवार्य, रोका गया।

सं० वार्षिक--(वर्ष=साल) गु० बरसौड़ी, सालियाना, संवती, बरसका।

सं० वाल्मीक }
वाल्मीकि } (वल्मीक=दीमक, अर्थात् जो दीमक में से निकला इसकी कथा रामायण में देखो) पु० एक मुनि जिसने रामायण बनाई। [ने वाला।

सं० वावदूक--क० पु० वक्ता, बोल-

सं० वाष्प }
वास्प } (वा=बहना) स्त्री० भाफ, धूआँ, उष्मा।

सं० वासन--पु० सुरभीकरन, सुगंधित करना, २ पात्र, बरतन ३ वस्त्र।

सं० वासना--स्त्री० इच्छा, मत्याशा २ निवास, स्थान।

सं० वासर--(वस्=रहना) पु० दिन, दिवस।

सं० वासव--(वसु=धन, सम्पदा अर्थात् जिसके बहुत धन सम्पदा हो) पु० इन्द्र, शुक्र, देवताओं का राजा।

सं० वासित--र्म० पु० गंधयुक्त।

सं० वासुदेव--(वसुदेव) पु० वसुदेव का बेटा, श्रीकृष्ण।

(१) [illegible]

सं० वास्तव } (वस्तु) गु० ठीकठीक,
वास्तविक } यथार्थ, सचमुच, निश्चय, स्थिर। [बन्धु, रिश्तेदार।
सं० वास्तव्य—गु० बसनेयोग्य, पु०
सं० वाहन—(वह्=लेजाना) गु० पु० सवारी।
सं० वाहिनी—(वह्=लेजाना)स्त्री० सेना जिसमें ८१ हाथी, ८१ रथ, २४३ घोड़े ४०५ पैदल हों, दल, कटक, फौज, २ नदी, ३ गु० ले जानेवाली।
सं० वाहु--गु० पु० भुजा, बाजू।
सं० वाह्य--(बहिस्=बाहर) गु० बाहर का, बाहरी।
सं० वि—अव्य० वियोग, विशेष, निश्चय, असहन, निग्रह, हेतु, अव्याप्त, ईषत्, थोड़ा, शुद्ध, अवलम्बन, ज्ञान, गति, आलस्य, पालन।
सं० विकल--गु० विह्वल, व्याकुल, घबराया।
सं० विकराल--(वि=बहुत, कराल. डरावना) गु० बहुत डरावना, बहुतभयानक।
सं० विकल्प--पु० भ्रम, भ्रान्ति, पसोपेश, आगा पीछा।
सं० विकार--(वि, कृ=करना, पर वि उपसर्ग के साथ आने से अर्थ बदलना हुआ) पु० स्वभाव या बदलना, बदल जाना, अन्यरूप होना, बीमारी। [खिलना।
सं० विकास--भा० पु० प्रकाश,
सं० विकीरण—भा० पु० फेरना, फैलाना, २ ज्ञान।
सं० विकृत--(वि, कृ=करना)गु० बदला हुआ, २ उलटा, विरुद्ध, ३ बीमार, रोगी, ४ मलीन।
सं० विकृति-स्त्री० बदलना, रूपान्तर।
सं० विक्रम--(वि=बहुत, क्रम्=जाना) भा० पु० पराक्रम, बल, जोर, शक्ति, शूरता, वीरता, २ उज्जैन का राजा विक्रमादित्य, ३ विष्णु।
सं० विक्रमादित्य--(विक्रम+आदित्य अर्थात् बल या शूरवीरता का सूर्य) पु० उज्जैन नगरी का प्रसिद्ध राजा जिसने संवत् चलाया।
सं० विक्रमी--(विक्रम) गु० बलवान्, शूरवीर, पराक्रमी, बहादुर, पु० सिंह।
सं० विक्रय--(क्री=मोललेना) भा० पु० बेचना, नीलाम करना।
सं० विक्रयी } क० पु० बेचनेवाला।
विक्रेता }
सं० विक्रिया-- भा० स्त्री० विकार, बदलजाना, फिरजाना, पलटजाना।
सं० विक्लव } गु० विह्वल, परे-
विक्लान्त } शान, थका, श्रमित।

सं० विक्लिन्न--गु० जीर्ण, जरजर।

सं० विक्लेद--भा०पु० नमी, आर्द्रता, रतूबत, तरी।

सं० विक्षेप--(वि = बहुत, क्षिप्=फेंकना) पु० घबराहट, व्याकुलता, २ फेंकना, दूर करना, छोड़ना, त्यागना, अंतर।

सं० विख्यात--(वि=बहुत, ख्यात=प्रसिद्ध) कर्म० पु० बहुत प्रसिद्ध, नामवर, नामी, यशी, यशस्वी।

सं० विख्याति-- स्त्री० प्रसिद्धता, शुहरत, नामवरी।

सं० विगत--(वि=बहुत, गम्=जाना) कर्म० जो चला गया, गत, जुदा हुआ, रहित, विना, हीन।

सं० विगतश्रम--(विगत=चलीगई है श्रम=थकावट) गु० जिसकी थकावट चली गई हो, विन मिहनत।

सं० विगर्हण--भा०पु० निन्दाकरना।

प्रा० विगोये--गु० छिपे हुये।

सं० विग्रह--(वि, ग्रह् = लेना वि उपसर्ग के साथ आने से लड़ना अर्थ भी होता है) पु० लड़ाई, युद्ध, विगाड़, २ शरीर, देह, ३ फैलाव, ४ भाग, ५ आकार, ६ समास।

सं० विघटन--भा० पु० रचना, २ तोड़ना, विगाड़ना।

सं० विघटित--(घट्=रचना) कर्म० पु० मिलाया गया, रचा गया, जोड़ा गया। [पु० नाश करना।

सं० विघात--(हन्=मारना) भा०

सं० विघातक--क० पु० नाशक।

सं० विघ्न--(वि, हन्=मारना) पु० रोक, रुकाव, अटकाव, विगाड़, बाधा।

सं० विचक्षण--(वि, = बहुत, चक्ष बोलना या देखना) गु० चतुर, प्रवीण, पण्डित, बुद्धिमान्, स्याना।

सं० विचरण-भा० पु० भ्रमण, इधर उधर घूमना।

सं० विचलना--(सं० विचल, वि= बहुत, चल् = चलना) क्रि० अ० तित्तर वित्तर होना, अधीर होना, हिम्मत हारना, मचलना, रूठना।

सं० विचार--पु० तत्त्वनिर्णय, अभिप्राय, मनका भाव, दिलीख्याल।

सं० विचित्र--गु० रंग वरंग, अद्भुत, अजीब।

सं० विच्छिन्न--(छिद् = काटना) कर्म० पु० विभक्त, विदीर्ण, बटा, कटा फटा।

सं० विच्छेद--(छिद्=काटना) पु० वियोग, जुदाई, अंतर।

सं० विजय--(वि=बहुत, जि=जीतना) स्त्री० जीत, फतह, जय।

सं० विजया--(वि = बहुत, जि= जीतना) स्त्री० विजया दशमी,

कुंवार सुदी १०—२ दुर्गा, देवी, ३ भांग, बूंटी।

सं० विजयी--(वि=बहुत, जयी=जीतनेवाला) क० पु० बहुत जीतने वाला।

सं० विजाति—(वि=दूसरी, जाति=भांति) स्त्री० और जाति, दूसरी जाति, दूसरी भांति। [इच्छा।

सं० विजिगीषा—स्त्री० जीतने की

सं० विज्ञ—(वि=बहुत, ज्ञा=जानना) क० पु० प्रवीण, पण्डित, चतुर, ज्ञानवान्, बुद्धिमान, विद्वान्।

सं० विज्ञता—(विज्ञ) स्त्री० पण्डिताई, बुद्धिमानी, प्रवीणता, लियाक़त।

सं० विज्ञान—(वि=बहुत, ज्ञा=जानना) पु० बहुतज्ञान, शास्त्रज्ञान, शिल्पविद्या।

सं० विज्ञापन—(वि=बहुत, ज्ञापन=जताना, ज्ञा धातुका प्रेरणार्थक में ज्ञाप रूप होता है) पु० जताना, शिक्षा, २ प्रार्थना, विनती, इश्तिहार, नोटिस, इश्तिहार।

सं० विटप—(विट=विस्तार, या पेड़की नई डाली, पा=पालना या विट्=शब्द करना) पु० वृक्ष, पेड़, २ नई डाली और नये पत्ते आदि।

प्रा० विडरि—गु० विशेष भय से, बिचराना, छितराना।

सं० विडम्बक--(विड=निन्दा करना) क० पु० निन्दक मतारक।

सं० विडम्बना--स्त्री० तिरस्कार करना, अपमान करना।

सं० विडम्बित--र्म० पु० अपमानित, निन्दित, तिरस्कृत।

सं० विडाल--(विड्=बुरा बोलना) पु० बिलाव।

सं० वितण्डा--(वडि=मारना) स्त्री० मिथ्यावाद, वाक्प्रपंच, पक्षपात करना, तत्रस्तुव करना।

सं० वितर्क--(वि+तर्क) स्त्री० बड़ी तर्क, अनुमान, विचार, वाद।

सं० वितत--र्म० पु० प्रसारित, फैलाया गया, ताना गया।

सं० वितान--(वि=बहुत, तन्=फैलाना) पु० चँदवा, मंडप, २ यज्ञ, ३ फैलाव, विस्तार।

सं० वितरण--(तृ=पारजाना) पु० दान, निस्सरण, ख़ैरात, प्रतरण, निर्वाह, संवरण, उद्धार, बाटना, खर्च करना। [सखी।

सं० वितरणशाली--गु० दानी,

सं० वित्त--(वित्त=त्यागना) पु० धन, द्रव्य, गु० ख्यात, ज्ञात, विचारित, लब्ध, गात, बल।

सं० विकथहिं--गु० चकित होंइ।

सं० विदर्भ--(वि=बिन, दर्भ=एक

प्रकार का घास, जो इस देश में एक ऋषि के शाप से, कि जिसका बेटा इस घास से घायल होकर मर गया था, नहीं पैदा होती है) पु० बंगाले के दक्षिण पश्चिम का एक जिला और एक शहर जिस को अब नागपुर अथवा बरार कहते हैं।

सं० विदा--(विद्=विभाग, ज्ञान) स्त्री० ज्ञान, बुद्धि, २ जुदाई, रुखसत।

प्रा० विदाई--भा० स्त्री० जाने की भेंट, रुखसती नज़र।

सं० विदारण--(वि=बहुत, दृ=फाड़ना) पु० फाड़ना, चीरना, भेदन, लड़ाई, युद्ध, २ गु० चीरनेवाला, फाड़नेवाला।

सं० विदित--(विद्=जानना) स्म० पु० जानाहुआ, समझाहुआ, २ प्रसिद्ध, प्रार्थनाकियागया, निवेदित।

सं० विदिश्--(वि=बीच, दिश्=दिशा) स्त्री० दिशा का बीच, कोन, गोसा।

सं० विदीर्ण--(दृ=फाड़ना) स्म० पु० फाड़ा, चीरा, फाड़ा हुआ।

सं० विदुर--पु० कौरवों का मंत्री, दासी पुत्र धृतराष्ट्र का भाई, गु० धीर, ज्ञानी।

सं० विदूषक--(दुष=बुरा कहना) क० पु० निन्दक, भांड।

सं० विदुष--पु० पण्डित।

सं० विदुषी--स्त्री० पण्डिता।

सं० विदेह--(वि=नहीं, देह=शरीर अर्थात् जिसको अपने शरीर का कुछ ध्यान नहीं था, केवल परमेश्वर का ध्यान था) पु० जनक राजा, मिथिला का राजा और सीता का बाप।

सं० विद्ध--(व्यध्=छेदना) स्म० पु० छेदा हुआ, पार किया हुआ, फाड़ा हुआ, ताड़ित।

सं० विद्यमान--(विद्=होना)गु० वर्त्तमान, जो हाज़िर हो, मौजूद।

सं० विद्या--(विद्=जानना) स्त्री० ज्ञान, शास्त्र का ज्ञान, इल्म, चौदह विद्या प्रसिद्ध हैं (चार वेद और छः वेदों के अंग, ११ वीं पुराण, १२ मीमांसा, १३ न्याय, १४ धर्मशास्त्र) २ देवीका मंत्र, ३ दुर्गा।

सं० विद्याधर--(विद्या मंत्र आदि धर रखनेवाला, धृ=रखना) पु० एक प्रकार के देवता।

सं० विद्यार्थी--(विद्या, अर्थी=चाहनेवाला, अर्थ्=चाहना) क० पु० विद्या पढ़नेवाला, छात्र।

सं० विद्यालय--(विद्या+आलय) षि० पु० पाठशाला, स्कूल, कालिज।

सं० विद्यावान्--(विद्या+वान्) गु० पण्डित, ज्ञानवान्, विद्वान।

सं० विद्युत्--(वि=बहुत, द्युत्=चमकना) क० स्त्री० बिजली, दामिनी, तड़ित।

सं० विद्रावक--(द्रु=जाना) क० पु० चुआनेवाला, टपकानेवाला।

सं० विद्रुम--(वि=विशेष, खास, और द्रुम=वृक्ष) पु० मूंगा, मवाल।

सं० विद्रोह--भा०पु० वैर,दुश्मनी।

सं० विद्रोही--(द्रुह्=अशुभचिन्तक) क० पु० वैरी, दुश्मन।

सं० विद्वान्--(विद्=जानना)क० पु० पण्डित, विद्यावान्, ज्ञानी।

सं० विद्वेष--(द्विष्=शत्रुता करना) पु० वैरभाव,शत्रुता,विरोध,वैर।

सं० विद्वेषक, विद्वेषी, विद्वेष्टा } क० पु० हिंसक, वैरी, दुश्मन।

प्रा० विध--(सं०विधि) स्त्री० रीति, प्रकार,ढव,भांति, रूप, चाल।

सं० विधातव्य-- कर्म० विधेय, धरने योग्य।

सं० विधाता--(वि=बहुत, धा=रखना) पु० ब्रह्मा, सृष्टि बनाने वाला, ईश्वर, भाग, क़िस्मत।

सं० विधात्री--स्त्री० ब्रह्माणी,मुद्रूपा ई्‍वानी।

सं० विधान--(वि=बहुत, धा=रखना) पु० विधि, रीति, शास्त्र में कहीहुई रीति।

सं० विधायक--क० पु० मुन्सिफ।

सं० विधि--(वि=बहुत,धा=रखना) पु० ब्रह्मा, २ ईश्वर, सृष्टि बनाने वाला, ३ भाग, किस्मत, ४ रीति, शास्त्र में कहीहुई रीति। [वाणी।

सं० विधिगिरा--स्त्री० ब्रह्मा की

सं० विधिवत्--अव्य० यथायोग्य, रीत्यनुसार, बाक़ायदा।

सं० विधु--(व्यध्=छेदना, विरही लोगों के हिरदे को) पु० चांद, चंद्रमा, २ कपूर, ३ विष्णु, ४ एक राक्षस, ५ ब्रह्मा।

सं० विधुन्तुद--(विधु=चांद को, तुद्=दुःख देना) पु० राहु।

सं० विधूत-- (धू=कंपाना) कर्म० कम्पित, त्यक्त।

सं० विध्वंस--(वि=बहुत,ध्वंस्=गिरना) पु० नाश, विनाश।

सं० विध्वस्त--कर्म० पु० विनष्ट, नाशकृत, हराया गया।

सं० विनत--(नम्=झुकना) क० पु० प्रणत, नम्र।

सं० विनता--स्त्री०गरुड़ की माता।

सं० विनति--भा०स्त्री०विनय,स्तुति।

सं० विनय--(वि=बहुत, नी=ले जाना, या पाना) स्त्री० विनती, शिष्टाचार, नम्रता।

सं० विनश्वर--क० पु० नाश वाला, फ़ानी।

सं० विनायक--(वि,नी=लेजाना, वा पाना) पु० १गणेश,२बुध,३गरुड़।

सं० विनाश--(वि=बहुत, नश्=नाश होना) पु० बहुत नाश,बरबादी।

सं० विनाशित--कर्म० पु० नष्ट, विध्वंसित।

सं० विपात--(पत्=जाना,गिरना) पु० निपात, वज्रपात, नाश, व्यसन, अपमान।

सं० विनिमय--(वि+नि+मि+अ, मि=फेंकना) पु० विलोम, अस्तव्यस्त, विपरीत, परिवर्तन, अदला बदली करना,ग्रहण, बन्धन।

सं० विनीत--(वि=बहुत, नी=ले जाना, वा पहुंचाना) क० पु० नम्र, विनयी, सुशील।

सं० विनेता--क० पु० राजा।

सं० विनोद--(वि,नुद्=प्रेरणाकरना, चलाना पर वि उपसर्ग के साथ आने से इसका अर्थ हँसी करना होता है) पु० खेल, हँसी ठट्ठा, कौतुक,क्रीड़ा,खुशी, हर्ष,आनन्द।

सं० विन्दु--(विद्=जुदा जुदा होना) पु० बिंदी, बूंद, शून्य,२ अनुस्वार, ३ पानी का कन, गु० ४ ज्ञाता, ५ दागा, जानने योग्य।

सं० विन्ध्य--(विध्=छेदना) पु० विन्ध्याचल पहाड़।

सं० विन्ध्यवासिनी--(विन्ध्य=विन्ध्याचल, वासिनी=रहनेवाली, वस्=रहना) स्त्री० दुर्गा, देवी, भगवती,योगमाया।

सं० विन्ध्याचल--(विन्ध्य+अचल) पु० एक पहाड़ का नाम।

सं० विन्न--(विद्=जानना)कर्म० पु० प्राप्त, ज्ञात, जानागया, स्थित।

सं० विन्यस्त--कर्म० पु० यथाक्रम, स्थापित कियागया, तरतीबवार रक्खागया।

सं० विन्यास--पु० स्थापन करना, रचना करना।

सं० विपक्ष--(वि=विरुद्ध या उलटा, पक्ष=ओर, तरफ) पु० शत्रु, वैरी, दुश्मन।

सं० विपत्ति--(वि=बुरी तरह से, पद्=जाना) स्त्री० आपदा, विपदा, विपत, दुःख, तकलीफ़।

सं० विपद्, विपत्, विपदा--(वि=बुरी तरह से, पद्=जाना) भा० स्त्री० विपत्ति,आपदा,आफ़त।

सं० विपरीत--(वि, परि=उलटा, इण्=जाना) गु० उलटा, विरुद्ध।

सं० विपर्यय(वि+परि+इण+अ,इण्=जाना) पु० व्यतिक्रम, विपरीत, उलटा पलट।

सं० विपर्यस्त-क० पु० व्यतिक्रान्त, विपरीत, लौट पौट करनेवाला।

सं० विपर्य्यास--भा० पु० विलोम, विपरीत, विपर्यय।

सं० विपल--पु० क्षण, लहमा।

सं० विपश्चित--पु० बुद्धिमान्।

सं० विपाक--पु० कर्मभोग, फल, नतीजा। [जंगल।

सं० विपिन--(वप्=बोना) पु० वन,

सं० विपुल--(वि=बहुत, पुल्=बढ़ना, या फैलना) गु० बड़ा, बहुत, फैला हुआ, गंभीर।

सं० विप्र--(वि=बहुत, प्रा=भरना, वा वप्=बोना) पु० ब्राह्मण।

सं० विप्रलब्ध--कर्म० वंचित, धोखा दियागया।

सं० विप्लव--(प्लु=जाना) पु० देशोपद्रव, राष्ट्रोपद्रव।

सं० विप्लुत--कर्म० व्यसन, गदर।

सं० विफल--(वि=बिन, फल=लाभ) गु० निष्फल, वृथा, वेफायदह।

सं० विबुध--(वि=बहुत, बुध्=जानना) पु० देवता, २ पण्डित, ३ चांद।

सं० विबुधनदी--(विबुध+नदी) स्त्री० देवताओंकी नदी, श्रीगंगाजी।

सं० विबुधान--क० पु० पण्डित।

सं० विबोधन--भा० पु० समझाना, प्रबोध करना।

सं० विभक्त--कर्म० पृथक् कृत, बाँटागया, मुन्कसिम।

सं० विभक्ति--(वि, भज्=टुकड़े करना, अलग करना) स्त्री० अंश, बाँट, टुकड़ा, हिस्सा, २ व्याकरण में कारकों के चिह्न।

सं० विभव--(वि=बहुत, भू=होना) पु० संपदा, धन, संपत्ति, ऐश्वर्य, एक संवत्सरका नाम।

सं० विभाग--(वि=बहुत, भज्=टुकड़े करना) पु० भाग, टुकड़ा, बांट, हिस्सा, अंश, प्रकरण, सरिश्ता, सीग़ह्, मद्द, भेद, फ़र्क तक़सीम, बांट।

सं० विभाजक--क० पु० अंशकारी, हिस्सेदार। [गया।

सं० विभाजित--कर्म० बंटित, बाँटा-

सं० विभावना--(भू=होना) स्त्री० प्रसिद्ध कारण के अभाव से कार्य्य कीउत्पत्ति युक्तलक्षण, अलंकारभेद।

सं० विभावसु--पु० सूर्य, मदारवृक्ष, वह्नि, चंद्र, हारभेद।

सं० विभीषण--(वि=बहुत, भी=डराना वैरियों को) पु० रावण काभाई, गु० डरानेवाला, भयानक।

सं० विभीषा-भा० पु० भय, भयानक।

सं० विभीषिका--भा० स्त्री० भयप्रदर्शन, भयदिखाना।

सं० विभु-(वि=बहुत, भू=होना। गु० समर्थ, प्रभु, सर्वव्यापी, पु० मालिक २ शिव ३ ब्रह्मा ४ विष्णु,

सं० विभुक्त--(वि = बहुत भुज्=खाना) कर्म० पु० बहुत खाया हुआ भोजन किया।

सं० विभूति--(वि=बहुत,भू=होना) स्त्री० सम्पदा, ऐश्वर्य, सिद्धि, संपत्ति, धन, दौलत आदि सुख, २ राख, भस्म।

सं० विभूषण--(वि=बहुत, भूष्=सिंगार करना) गु० पु० गहना, अलंकार, जेवर, शोभा, आभूषण।

सं० विभूषित--(वि=बहुत, भूष्=सिंगारना) कर्म०पु० शोभित,सँवाराहुआ, शोभायमान, फबता हुआ, मुज़ैयन।

सं० विभेदक--(भिद् + अक भिद्=तोड़ना) क० पु० विच्छेदक, तोड़नेवाला।

सं० विभ्रम--(वि=बहुत भ्रम्=भूलना) पु० चेष्टाभेद, सन्देह, कटाक्ष, एक अंगका आभूषण) दूसरे अंगमें धारणकरना,भ्रान्ति,भ्रमण,शोभा।

सं० विभ्राज--क० पु० शोभायमान, भ्राजिष्णु, शृङ्गारसे सुशोभित।

सं० विमर्श }
विमर्शन } (मृश=छूना, ध्यान करना) पु० विचार, परामर्श।

सं० विमर्ष--(मृष्=क्षमा करना) क० पु० गौनी, विचारी, क्रोधी।

सं० विमल--(वि=बिन,मल=मैल) गु० निर्मल, स्वच्छ, साफ, शुद्ध।

सं० विमाता--(वि=दूसरी, माता=मा) स्त्री० सौतेली मा।

सं० विमान--(वि=बहुत मा=आदर करना या मन्=पूजना) पु० देवताओं का रथ।

सं० विमुक्त--(मुच्=छूटना,छोड़ना) कर्म० छूटाहुआ, रिहा।

सं०विमुख--(वि=उलटा,मुख=मुंह) गु० विरोधी, फिरा हुआ।

सं० विमुग्ध--गु० अज्ञान, मूढ़।

सं० विमूढ़--(वि=बहुत,मूढ़=मूर्ख) गु० बहुत अज्ञानी, बड़ा बेवकूफ।

सं० विमोचन--(वि,मुच्=छुड़ाना) पु० छोड़ना, मुक्तकरना, क० दूर करनेवाला, छुड़ानेवाला।

सं०विम्ब-(वी=चमकना,या=जाना) पु० सूरत, छवि, तसवीर, छाया, प्रतिबिम्ब, २ सूर्य अथवा चन्द्रमा का मंडल, ३ बिम्बाफल, एक लालफल, कुंदरू।

सं० वियोग--(वि=नहीं,योग=मेल) भा० पु० विरह, जुदाई, बिछुरा, बिछड़ना, जुदा रहना।

सं०वियोगी-(वियोग)क०पु०विरही, जुदा रहनेवाला, बिछड़ाहुआ।

सं० विरक्त--(वि=नहीं,रञ्ज्=रंगना) क० पु० वैरागी, उदासी।

सं० विरचित--(वि, रच=बनाना) कर्म०पु० बनायाहुआ, रचाहुआ।

सं० विरञ्च } (वि=बहुत, रच्=
विरञ्चि } बनाना) पु० सृष्टि बनाने वाला, ब्रह्मा ।

सं० विरज-गु० क्रोधरहित, वेतमकनत ।

सं० विरत-(वि=नहीं, रम्=खेलना) कृ० पु० वैराग्यवान्, जिसने संसार छोड़ दिया हो, रिहा, वेगम ।

सं० विरति-(वि=नहीं, रम्=खेलना) भा० स्त्री० वैराग्य, त्याग, संसार को छोड़ देना ।

सं० विरद--(वि=नहीं, रद्=खोदना) पु० यश, नामवरी, बाना, लिबास, हथियार, अस्त्र शस्त्र ।

प्रा० विरदैत--गु० वीर, बाना वाले ।

सं० विरह--(वि=बहुत, रह्=छोड़ना) पु० जुदाई, बिछोह, बिछुड़ना, वियोग ।

सं० विराग-(वि=नहीं, रञ्ज्=रंगना) पु० वैराग, लोभ मोह को छोड़ना ।

सं० विराज--पु० क्षत्रिय, आदि पुरुष, विष्णु का स्थूल रूप ।

सं० विराजमान--(वि=बहुत, राज्=शोभना) कृ० पु० शोभायमान, सोहता हुआ ।

सं० विराजित--कृ० पु० दीप्त, रोशन ।

सं० विरुज--गु० नीरोग, तन्दुरुस्त, रोगरहित ।

सं० विराट्--(वि=बहुत, राज्=शोभना) पु० विष्णु की बड़ी मूरत, विश्वरूप, २ एक देश का नाम ।

सं० विराध--(वि=बुरी तरहसे, राध्=पूरा करना, सिद्ध करना) पु० एक राक्षस का नाम ।

सं० विराम-(वि=बहुत, रम्=आनन्द करना) पु० ठहराव, विश्राम, शान्ति, अन्त, अवसान, निवृत्ति, समाप्ति ।

सं० विराम--(वि=नहीं, रम्=चैन करना) गु० व्याकुल, दुःखी, बेचैन ।

सं० विरामक-कृ० पु० लौटानेवाला ।

सं० विरुद्ध--(वि=बहुत, रुध्=रोकना) गु० उलटा, विपरीत, खिलाफ ।

सं० विरूप--(वि=बुरा, रूप=डौल) गु० कुरूप, भोंडा, अनसुहावना, बदसूरत ।

सं० विरेचक--(रिच्=गिराना) कृ० पु० दस्तावर, मलभेदक ।

सं० विरेचन--भा० पु० जुलाब, मलनिस्सारण ।

सं० विरेचित--र्म० मुसहिल, रेचित ।

सं० विरोचन--(वि=बहुत, रुच्=चमकना) पु० प्रह्लादकाबेटा और राजा बलिका बाप, २ सूर्य, ३ चांद ।

सं० विरोध-(वि, रुध्=रोकना) भा० पु० वैर, द्वेष, शत्रुता, दुश्मनी, २ झगड़ा, लड़ाई ।

सं० विरोधक--कृ० पु० विवादी, वैरी ।

सं० विरोधी--(विरोध) कृ० पु० वैरी, शत्रु, दुश्मन, २ झगड़ालू ।

सं० बिल--(बिल्=छेद करना) स्त्री० पु० छिद्र, गर्त, गड़हा।

सं० विलक्षण--(वि=बहुत, लक्ष=देखना, या चिह्न करना) गु० विचक्षण, अनूप, उत्तम, भला, श्रेष्ठ, २ जुदा, भिन्न।

प्रा० विलगावना--क्रि० स० अलग करना, निकाल देना।

प्रा० विलपना-क्रि० अ० रोदन, रोना।

विलपत--गु० रोते हुये।

सं० विलम्ब--(वि=बहुत, लवि=ठहरना) स्त्री० देरी, अबेर, टालमटोल, अर्सा।

सं० विलाप--(वि=बुरी तरहसे लाप्=बोलना, अर्थात् रोना) पु० रोना, बिलकना, शोच, शोक, सन्ताप, दुःख।

सं० विलास-(वि=बहुत, लस्=खेलना) पु० खेल क्रीड़ा, केलि, विहार, भोग, सुख, आनन्द, हर्ष, ऐश।

सं० विलासिन--गु० पु० भोगी, ऐयाश, पु० सर्प २ कृष्ण ३ वह्नि ४ कामदेव ५ महादेव ६ चन्द्र।

सं० विलासिनी—स्त्री० नारी, वेश्या।

सं० विलासी-क० पु० भोगी, ऐय्याश।

सं० विलीन—(ली=लगना) क० पु० विरत, नष्ट, लयप्राप्त।

सं० विलुप्त—(लुप्=अदृश्य होना) क० पु० अदृष्ट, नष्ट, गुप्त। [का।

प्रा० विलूलन-पु० बुद्‌बुद बुल्लापानी-

सं० विलोकन—(वि, लो=देखना) पु० दृष्टि, दीठ, नज़र, ताक।

सं० विलोकना—(सं० विलोकन) क्रि० स० देखना, ताकना।

सं० विलोकित—स्त्री० देखा हुआ।

सं० विलोचन—(वि, लोच्=देखना) गु० पु० आँख, नयन, नेत्र।

सं० विलोप—भा० पु० अदर्शन, नाश।

सं० विल्व—(विल्=ढकना) पु० बेल का पेड़ या फल।

सं० विवर-(वि=नहीं, वृ=ढकना) पु० बिल, छेद, गढ़ा, सेंध, २ दोष।

सं० विवरण—(वि, नहीं, वृ=ढकना अर्थात् शब्द के अर्थ आदि का खोलना) पु० टीका, व्याख्या, बखान, २ हिज्जा, ३ रिपोर्ट, बहस।

सं० विवर्ण-गु० अधम, नीच, २ रंगहीन, रूप रहित, निश्चेष्ट।

सं० विवस्वत्—पु० सूर्य, अर्क वृक्ष, अरुण, लाल।

सं० विवाद—(वि=बहुत, वाद=झगड़ा) पु० वाद, झगड़ा, उलटा कहना, विरोध।

सं० विवाह—(वि=आपस में, वह=ले जाना) व्याह, पु० गठ बंधन, शादी।

सं० विवाहित—(विवाह) स्त्री० पु० व्याहा हुआ, जिसकी शादी होगई हो।

सं० विवाहिता—(विवाहित) स्त्री० पु० स्त्री० व्याही हुई।

सं० विविक्त--(वि, विच्=जुदा करना) गु० छोड़ा हुआ, २ एकान्त, निर्जन, ३ पवित्र।

सं०विवृत्ति-स्त्री०विस्तार,व्याख्यान।

सं० विविध--(वि=बहुत, विध=प्रकार) गु० नाना प्रकारका, भांति २ का।

सं० विवेक--(वि=बहुत,विच्=जुदा करना, विचारना,)पु०विचार,ज्ञान।

सं० विवेकी--(विवेक) क० पु० विचारकरनेवाला,ज्ञानवान, ज्ञानी।

सं० विवेचना--(वि=बहुत, विच्=जुदा जुदा करना, विचारना) स्त्री० झूठ सचका विचार,विवेक,तमीज।

सं० विवेचित, विवेचितव्य, विवेच्य } स्म० विचारित, विचारनेयोग्य।

सं० विवोढा--पु० जामाता, दामाद, वर, दूल्हा, नौशा।

सं० विशद--(वि, शद्=जाना)गु० धौला, सफेद, श्वेत, निर्मल, साफ़, उज्वल।

सं० विशाखा--(वि=बहुत,शाखा=प्रकार) स्त्री० सोलहवां नक्षत्र।

सं० विशारद--(विशाल=बहुत, द=देनेवाला, दा=देना यहां विशाल के ल को र हो गयाहै) गु०पण्डित, विद्वान, निपुण, श्रेष्ठ, प्रसिद्ध।

सं० विशाल--(वि=बहुत,शल=जाना) गु० बड़ा, बहुत, चौड़ा, फैला हुआ।

सं० विशिख--(वि=बहुत, अर्थात् तीखी, शिखा=चोटी अथवा अणी, या वि=नहीं, शिखा=चोटी) पु० तीर, बाण, शर,गु० विन चोटीका, शिखारहित।

सं०विशिखासन--(विशिख+आसन) पु० धनुष, कमान।

सं० विशिप--धि०पु० मंदिर।

सं०विशिष्ट--(वि=बहुत, शिष्=गुण सहित होना) क०पु० साथ,संयुक्त, सहित, जुड़ा हुआ, २ उत्तम, बड़ा।

सं० विशुद्ध-(वि=बहुत,शुद्ध=पवित्र) गु० बहुत पवित्र, निर्मल, विमल, उज्ज्वल, उज्जल।

सं० विशुद्धि--भा०स्त्री०शोधन, दोष दूर करना।

सं० विशेष--(वि=बहुत,शिष्=गुणके साथ होना) पु० प्रकार, भेद, जाति, गु० मुख्य, खास, निज, २ बहुत, अधिक।

सं०विशेषोक्ति-स्त्री०वक्रोक्ति,विशेष वाक्य, अर्थालङ्कार भेद।

सं०विशेषण--(वि=बहुत,शिष्=गुण के साथ होना) क० पु० गुण, धर्म, स्वभाव, तारीफ़।

सं०विशेष्य--(वि+शिष्)पु०नाम, संज्ञा, स्म० खास, प्रधान।

सं० विशोक--(वि=बिन, शोक=शोच) गु० जिसको किसी बात का शोच न हो।

सं० विश्रम्भ--पु० विश्वास, प्रत्यय, निश्चय, एतबार।

सं० विश्रान्त--(वि=नहीं, श्रान्त=थका हुआ) क० चैन से, सुस्थिर, अराम किया हुआ, बेथका हुआ।

सं० विश्रान्तघाट--(विश्रान्त+घाट) पु० यमुना नदी पर का एक घाट जहां श्रीकृष्ण और बलदेव जी ने कंस को मार के आराम किया था।

सं० विश्राम--(वि=नहीं, श्रम्=थकना) भा० पु० चैन, आराम, ठहराव।

सं० विश्लिष्ट--(श्लिष्=मिलना) क० पु० अयुक्त, शिथिल।

सं० विश्लेष--पु० वियोग, विच्छेद, विभाग, शैथल्य। [विभाजक।

सं० विश्लेषक--क० पु० विच्छेदक,

सं० विश्व--(विश्=घुसना) पु० जगत्, संसार, जग, दुनिया, २ एक प्रकार के देवता जिन को श्राद्ध में पिण्ड और बलि आदि देते हैं, गु० सब, सम्पूर्ण।

सं० विश्वकर्म्मा--(विश्व=संसार, कर्म्म, काम, अर्थात् जिसका काम सब संसार में है) पु० देवताओं का राजा, और ब्रह्मा का बेटा, ३ सूर्य।

सं० विश्वक्सेन } (विश्वक्=सब
विष्वक्सेन } संसार में जाने वाली (विश्व=संसार, अञ्च्=जाना) सेना, फौज (है जिसकी) पु० विष्णु, नारायण।

सं० विश्वनाथ--(विश्व+नाथ) पु० शिव, महादेव जिनका मंदिर बनारस में है।

सं० विश्वप--(विश्व=संसार, पा=रक्षा करना) क० पु० विश्वपालक।

सं० विश्वम्भर--(विश्व=संसार को भर=पालने वाला, भृ=पालना) पु० विष्णु, २ इन्द्र।

सं० विश्वरूप--(विश्व+रूप) पु० विष्णु, सर्वव्यापी।

सं० विश्वसित--क० पु० विश्वासपात्र, मुअतमिद।

सं० विश्वस्त--क० पु० प्रत्ययित, विश्वासकर्त्ता, मुअतमिद, जातविश्वास।

सं० विश्वामित्र--(विश्व=संसार, अथवा सब, मित्र=प्यारा, जिसके सब संसार मित्र है)-पु० गाधि राजा का बेटा जो राजऋषि से ब्रह्मऋषि होगया।

सं० विश्वास--(वि, श्वस्=जीना, पर वि, उपसर्ग के साथ आने से इसका अर्थ भरोसा करना हो जाता है) पु० भरोसा, प्रतीत, एतमाद।

सं० विश्वासी--क० पु० भरोसा करने वाला, विश्वासक।

सं० विश्वासघातक--(विश्वास+

घातक) क० पु० कपटी, छली, दगाबाज, ठग ।

सं० विश्वासपात्र (विश्वास+पात्र) पु० भरोसावाला, क़ाबिलएतमाद ।

सं० विश्वासविशिष्ट गु० विश्वास योग्य, प्रतीति योग्य, जिस पर भरोसा किया जाय ।

सं० विश्वेश, विश्वेश्वर (विश्व=संसार, ईश वा ईश्वर=मालिक) पु० महादेव, शिव ।

सं० विष (विष्=फैलना) पु० जहर, माहुर, हलाहल, गरल ।

सं० विषरम--क० दुःखी, विषादप्राप्त ।

सं० विषधर--(विष=जहर, धृ=रखना) पु० सांप, सर्प, भुजंग ।

सं० विषम--(वि=नहीं, सम=बराबर) गु० ना बराबर, असमान, अतुल्य, बराबर नहीं, २ कठिन, कठोर, दुःखदाई, ३ भयंकर ।

सं० विषमज्वर--(विषम+ज्वर) पु० कठिन तप, एक प्रकारकी तप ।

सं० विषमता--स्त्री० राग, द्वेष, मुखालिफत, बे एतदाली, २ कठिनता, सख़्ती ।

सं० विषमबाण--(विषम+बाण, अर्थात् जिस का तीर कठिन है) पु० कामदेव ।

सं० विषय--(वि=बहुत, षि=बांधना अर्थात् जिस में मन लगना) पु० चीज, वस्तु, पदार्थ, जो चीज इंद्रियों से जानी जाय, (जैसे रंग रूप, रस, सुगन्ध, शब्द, छूना) २ काम, ३ बात, ४ भोगविलास, ५ बाबत, वास्ते, लिये । [ऐय्याश ।

सं० विषयिण--क० पु० भोगी,

सं० विषयी--(विषय) क० पु० संसारी, भोगी ।

सं० विषाण--(वि=बहुत, षो=नाश करना, अथवा विष्=फैलना) पु० सींग, २ हाथीदांत, ३ सूअरकादांत ।

सं० विषाद--(वि=बहुत, षद्=दुःख देना) भा० पु० शोक, दुःख, ताप, उदासी ।

सं० विषादक--क० पु० दुःखदाता ।

सं० विषादित-र्म० पु० कष्टित, दुःखी

सं० विषुव, विषुवत् (विषु=बराबर (विषु=फैलना) और वा जाना अर्थात् जिस में दिन रात बराबर होते हैं पु० वह समय जब दिन रात बराबर होते है ।

सं० विषुवतरेखा-(विषुवत्+रेखा) स्त्री० धरती के बीच की लकीर, मध्य रेखा, मध्यसूत्र, भूमध्यरेखा, खत उस्तवा ।

सं० विष्टब्ध--र्म० प्रतिरुद्ध, अवरुद्ध ।

सं० विष्टम्भ गु० सम्हार कर

सं० विष्टा--(वि, स्था=ठह

गूह, मल, पुरीष।

सं० विष्णु--(विष्=फैलना, जो सब सृष्टि में फैला हुआ है) पु० परमेश्वर भगवान्, सृष्टि को पालने वाला, व्यापक।

सं० विष्णुवल्लभा--(विष्णु=भगवान् वल्लभा=प्यारी) स्त्री० तुलसी, २ लक्ष्मी, हरिप्रिया।

सं० विसर्ग--(वि, सृज्=छोड़ना) पु० स्वर के आगेकीदो बिंदी, २दान, ३ छोड़ना।

सं० विसर्जन--(वि, सृज्=छोड़ना) भा० पु०बिदा, भेजना, छुट्टीकरना, जानेदेना, २ छोड़ना, ३ देना।

सं० विसर्ज्जित--र्म० पु० रुखसत किया, बरखास्तहुआ, भेजा गया।

प्रा० विसासिनि--स्त्री०हासिदा डाहिनि, सौतिनी।

सं० विसूचिका (वि=कठोर, सूची =सुई जो सुई के ऐसाकठोर अथवा तीखा अर्थात् वहुत दुःख देने वाला रोग) स्त्री० एक प्रकार का हैजे का रोग।

सं० विस्तर--(स्तृ=ढापना) पु० प्रचुर, वहुत, समूह, विस्तार, २ आधार, पीढ़ा बिछौना।

सं० विस्तार (वि=बहुत, स्तृ=ढकना, फैलाव, चौड़ाई, स्तम्भ, काण्ड, शाखा, आखा।

सं० विस्तारक } क० पु० फैलाने विस्तारी } वाला। [गया।

सं० विस्तारित र्म० पु० फैलाया-

सं० विस्तीर्ण क० पु० फैलाहुआ, विस्तृत।

सं० विस्तृत--(वि=वहुत, स्तृ=ढकना, फैलाना) क० पु० फैला हुआ, विस्तीर्ण।

सं० विस्फुलिंग--पु० चिनगारी।

सं० विस्फोट--(वि, बहुत स्फुट्=फूटना, याफटना) पु० फोड़ा, घाव।

सं० विस्फोटक--क० पु० फूटनेवाला अर्थात् बहुतफोड़ा, शीतला, चेचक।

सं० विस्मय--(वि=कुछ, स्मि=मुसकुराना) पु० अचरज, आश्चर्य्य, अचंभा, चमत्कार, तअज्जुब।

सं० विस्मरण--(वि=नहीं, स्मरण =याद) भा० पु० भूलना, बिसरना।

सं० विस्मित--(वि, स्मि=मुसकुराना) क० पु० अचंभे में चकित, अचंभित।

सं० विस्मृत--(वि=नहीं, स्मृ=याद रहना) क० भूला हुआ।

सं० विस्मृति--स्त्री० भूल, ग़फ़लत।

सं० विस्मृतता--भा० स्त्री० बेहोशी, बे सुधी, बे खबरी।

सं० विहग } (विहायस्=आकाश विहङ्ग } वि=बीच में, हा छोविहङ्गम } ड़ना, वा गम्=जाना)

और गम्=जाना अर्थात् आकाश में उड़नेवाला) पु० पखेरू, पक्षी, २ बादल, ३तीर, ४ सूर्य, ५ चांद, ६ ग्रह।

सं० विहरण—(वि, हृ=लेना, पर वि उपसर्ग के साथ आने से इस धातु का अर्थ खेल करना, या आनंदकरना होताहै) भा० पु० विहार करना, खेलकरना, क्रीड़ा करना, घूमना, सैरकरना।

सं० विहार—(वि, हृ=लेना, पर वि उपसर्ग के साथ आने से इस धातु का अर्थ खेल करना होताहै) भा० पु० विलास, खेल, क्रीड़ा, २ आनंद से फिरना।

सं० विहारी—(विहार)कृ०पु०विहार करनेवाला, आनंद करनेवाला,पु० श्रीकृष्ण ।

सं० विहित—(वि=बहुत,धा=रखना म्भ० ठीक, उचित, करने योग्य, ठहराया हुआ ।

सं० विहीन—(वि=बहुत, हा=छोड़ना) म्भ० विना, जुदा, रहित, छोड़ा हुआ।

सं० विह्वल—(वि=बहुत, ह्वल्=हिलना, चलना) कृ० पु० व्याकुल, घबराया हुआ, चंचल।

सं० वी—पु० विचार,दीर्घ, एका ।

सं० वीक्षण—(वी+ईक्ष+घञ्, ईक्ष=देखना) पु० दर्शन, देखना।

सं०वीक्ष्य—गु०देखकर, निहारकर।

सं० वीक्षित—म्भ० देखा हुआ,दृष्ट।

सं० वीचि—(वे=फैलना)स्त्री०लहर, तरङ्ग, मौज, ढङ्ग।

सं० वीज—(वि=बहुत,जन्=पैदा होना) पु० व्यथा, दाना जो बोया जाता है, २ मूल, कारण, ३ अंकुर, ४ वीर्य्य, ५ मंत्र, ६ वीजगणित, गणित का एक भाग जिस में अङ्कों, की जगह अक्षर लिखकर हिसाब बनाते हैं इसको संस्कृत में अव्यक्तगणित कहते हैं।

सं० वीणा—(अज्=जाना,वा वी=जाना) स्त्री० एक प्रकार का बाजा जिसको नारदजीने निकाला,—वीण शब्द को देखो।

सं० वीत—(वी=जाना, या वि,इण्=जाना) गु० बीता हुआ, गुज़रा हुआ, चलागया।

सं० वीथि—(वी=जाना, वा विथ्=मांगना) स्त्री० गली, रस्ता, २ पंक्ति, श्रेणी।

सं० वीप्सा—(वि=बहुत, आप्=फैलना, लाभ) भा० स्त्री० व्याप्तीच्छा, फैलना, २ आदर।

सं० वीर—(वीर्=पराक्रम करना वा, अज्=जाना) पु० शूर, बहादुर, शूरमा, योद्धा, काव्य के नौरस में से एक रस।

सं० वीरप्रसू-(प्र,सू=पैदाकरना) स्त्री० वीरजननी, वीर पुत्रकी माता।

सं० वीरण } (ईर्=कहना) पु०
प्रा० वीरन } वेना, गाँडर, खस, गु० प्यारा, प्यारा भाई।

सं० वीरता--(वीर) स्त्री० बहादुरी, शूरमापन।

सं० वीरभद्र--(वीर्=बहादुर, भद्र=बहुत अच्छा) पु० महादेव के एक गण का नाम जिसने यज्ञसमेत दक्ष का विनाश किया।

सं० वीरवृत्ति--स्त्री० शूरों का बाना, शूरों का पैंवाड़ा।

सं० वीरा--स्त्री० वीर पुत्र की माता, पीपर औषध।

सं० वीर्य्य--(वीर)पु० बीज, धातु, पुरुषार्थ, २ बल, जोर, ३ प्रताप, प्रभाव, तेज।

सं० वृक--(वृक्=लेना) भेड़िया, हुंडार, लयारी।

सं० वृकोदर--पु० भीमसेन, ब्रह्मा।

सं० वृक्ष--(वृश्च्=काटना) पु० पेड़, रूख, गाछ, तरवर, पादप।

सं० वृत्त--(वृत्=होना या ढकना)पु० घेरा, मंडल, चक्कर, गोलखेत, २ छंद, ३ रीत गु० हुआ, पैदा हुआ।

सं० वृत्तान्त--(वृत्=पैदा हुआ, अन्त=निर्णय अथवा निश्चय अर्थात् जिस के सुनने से किसी बात का निर्णय होजाताहै) पु० समाचार, बात, हाल हक़ीक़त, पता।

सं० वृत्ति--(वृत्=होना या पैदाहोना) स्त्री० आजीविका, जीविका, रोजगार, रोज़ी, वज़ीफा।

सं० वृत्य--गु० वर्णनीय, कहनेयोग्य।

सं० वृत्र } (वृत्=होना) पु० एक
वृत्रासुर } राक्षस जिसको इन्द्रनेमारा।

सं० वृथा--(वृ=ढकना) क्रि० वि० बेफ़ायदह, निरर्थक, निष्फल, व्यर्थ, योंहीं। [पुराना।

सं० वृद्ध-- (वृद्ध=बढ़ना) गु० बूढ़ा,

सं० वृद्धि--(वृध्=बढ़ना)स्त्री० बढ़ती, बढ़न्ती, तरक्की, २ लक्ष्मी, ऋद्धि, सिद्धि।

सं० वृन्द--(वृण्=प्रसन्न होना) पु० समूह, भीड़ भाड़, ढेर, थोक।

सं० वृन्दा--(वृण्=प्रसन्नहोना) स्त्री० तुलसी, २ राधिका, ३ एक देवी का नाम। [मनोहर।

सं० वृन्दारक--पु० देवता गु० मुख्य,

सं० वृन्दावन--(वृन्दा+वन) पु० मथुरा के पास एक वन जहां वृन्दा देवी का मंदिर था और जहांगोकुल से नन्द जी और श्रीकृष्ण आदि सब ग्वाल जा बसे थे।

सं० वृश्चिक--(वृश्च्=काटना)पु० बिच्छू, २ आठवीं राशि।

सं० वृष--(वृष=सींचना या पैदा कर

ना) पु० बैल, २ दूसरी राशि।

सं० वृषकेतु—(वृष+केतु) पु० महादेव, शिव।

सं० वृषण—पु० अण्डकोष, फोता।

सं० वृषभ—(वृष्=सींचना, या पैदा करना) पु० बैल।

सं० वृषल—पु० शूद्र, २ गञ्जन, गाजर, प्याज, ३ घोड़ा, ४ अधार्मिक, ५ चन्द्र गुप्त नृप।

सं० वृषली—स्त्री० शूद्री, जो पिता के घर में कन्या रजोधर्म को प्राप्त हुई उसे भी कहते हैं।

सं० वृषाकपि—(वृष=धर्म, अ=नहीं कपि=कँपाना) जोधर्मकोनकँपावे, महादेव, विष्णु, अग्नि, इन्द्र।

सं० वृषोत्सर्ग—(वृष्+उत्सर्ग) पु० मृतक के हेतु बैल को दाग के छोड़ देना, सांड़।

सं० वृष्टि—(वृष्=सींचना, बरसना) स्त्री० मेह, वर्षा, पानी का गिरना।

सं० वृहत्—(वृह्=बढ़ना) गु० बड़ा।

सं० वृहत्पाद—पु० वटवृक्ष, बर्गद।

सं० वृहस्पति—(वृहती=बोली, पति=मालिक अथवा वृहत्=बड़ा अर्थात् देवता, पति=मालिक या गुरु) पु० देवताओं का गुरु पांचवां ग्रह, २ वृहस्पतिवार, बीफै, जुमेरात।

सं० वेग—(विज्=कँपाना) पु० प्रवाह, धारा, जय, महाकाल।

प्रा० वेगि—स्त्री० शीघ्र, जल्दी।

सं० वेणी—(वेण्=जाना) स्त्री० चोटी, बालों को सँवारना, २ नदियों के मिलने की जगह, जैसे त्रिवेणी आदि।

सं० वेणु—पु० बांस, बांसुरी का बाजा, मुरली, २ राजा का नाम।

सं० वेतन—(अज्=जाना, या वी=जाना) पु० मजदूरी, महीने की तनख्वाह, मासिक, जीविका।

सं० वेताल—(अज्=जाना) पु० वह मुर्दा जो भूत के घुसने से जीता सा जाना जाय, पिशाच, २ शिव के नौकर।

सं० वेत्ता—(विद्=जानना) कृ० पु० जानेवाला, पण्डित।

सं० वेत्र—पु० बेत, बेतवृक्ष।

सं० वेद—(विद्=जाना) पु० श्रुति, हिन्दुओं की पवित्र पुस्तक,—मुख्य वेद तीन हैं (१ ऋग्वेद, २ सामवेद, ३ यजुर्वेद) और कहते हैं कि चौथा अथर्व वेद पीछे से मिलाया गया है और इतिहास और पुराणों को पांचवां वेद भी कहते हैं, ज्ञान, शास्त्र ज्ञान, चारकी संख्या, चतुर्थांश।

सं० वेदगर्भ—पु० ब्रह्मा, ब्राह्मण।

सं० वेदना—(विद्=जानना) स्त्री० पीड़ा, दुःख, व्यथा, २ जानना, सुख दुःख का ज्ञान।

[illegible]

सं० वेदपारग—पु० सर्ववेद ज्ञाता।

सं० वेदमाता—(वेद+माता) स्त्री० गायत्री।

सं० वेदव्यास—(वेद, वि+अस्=फैलाना अर्थात् वेदों को फैलाने वाला) पु० व्यासजी।

सं० वेदाङ्ग—(वेद=अङ्ग) पु० वेद के अङ्ग अथवा भाग जो छः हैं (१ शिक्षा जो अक्षरों का स्पष्ट उच्चारण सिखलाता है, २ कल्प जिस में यज्ञ आदि कर्म्मों की विधि लिखी है, ३ व्याकरण, ४ छन्द, ५ ज्योतिष, ६ निरुक्त, जिस में वेद के कठिन और गूढ़ शब्द और वाक्यों का अर्थ है)

सं० वेदान्त—(वेद+अन्त) पु० वेदव्यासजी का बनाया हुआ शास्त्र।

सं० वेदि } (विद्=जानना) स्त्री०
वेदिका } होम करने की चबूतरी, यज्ञ अथवा बलिदान करने की जगह, २ पीठि।

सं० वेद्य—र्म्म० पु० जानने योग्य।

सं० वेधक—(विध्=छेदना) क० पु० छेदक, वर्म्मा।

सं० वेपथु-(वेप्+अथु) कंपना, हिलना।

सं० वेला—(वेल्=जाना) स्त्री० समय, वक्त, काल।

सं० वेश—(विश्=घुसना) पु० गहना, कपड़ा, भेष, भूषण, शोभा।

सं० वेशर } पु० अश्वतर, खच्चर।
वेसर }

सं० वेश्म } धि० पु० गृह, घर।
वेश्मन }

सं० वेश्या—(वेश) स्त्री० नगरनारी, गणिका, कंचनी, पतुरिया।

सं० वेष—(विष्=फैलना) पु० कपड़ा, गहना, २ स्वरूप, डौल, चाल।

सं० वेष्टन-(वेष्ट=लपेटना) भा० पु० उष्णीष, पगड़ी, मुकुट।

सं० वेष्टित—र्म्म० पु० लपटा हुआ, लपेटा गया।

सं० वैकुण्ठ—(वि, कुण्ठा=सुभ्र ऋषि की स्त्री० और विष्णु की किसी अवतार में मा उसी के नाम से वैकुण्ठ हुआ या वि=कई प्रकार की, कुण्ठा माया जिसकी) पु० विष्णु, २ विष्णुलोक, परमपद।

सं० वैखानस—(वि, खन्=खोदना, जो संसार की सब इच्छा को छोड़ देता है) पु० वानप्रस्थ, तपस्वी, (आश्रम शब्द को देखो)।

सं० वैतरणी-(वितरण=दान, अर्थात् जो दान पुण्य करने से लांघी जाती है या वि=बुरीतरह से, वा कठिनता से, तॄ=पार होना) स्त्री० नरक की नदी।

सं० वैदिक-(वेद) पु० वेद पढ़ा हुआ ब्राह्मण, वेदपाठी ब्राह्मण, गु० वेद में कहा हुआ, वेद के अनुसार, वेद की रीति से।

सं० वैदेही—(विदेह) स्त्री० जनक राजा की बेटी, सीता, जानकी ।

सं० वैद्य—(विद्=जानना)पु० हकीम, वैद, दवा दारू करनेवाला, चिकित्सक ।

सं० वैद्यक—(वैद्य)पु०वैदकविद्या।

सं० वैद्यनाथ—(वैद्य+नाथ) पु० वैद्यराज, धन्वन्तरि, २ शिव, वैजनाथ, महादेव जिनका मंदिर झाड़ खण्ड में है।

सं० वैनतेय--(विनता कश्यपमुनि की स्त्री, वि=बहुत, नम् नवना) स्म० पु० विनता का बेटा, गरुड़, पखेरुओं का राजा ।

सं० वैभव--(विभव) भा० पु० ऐश्वर्य, सम्पदा, धन, दौलत।

सं० वैमनस्य—भा०पु०उदासीनता, बिगाड़, रंज, नाइत्तिफाकी ।

सं०वैयाकरण--(व्याकरण) भा० पु०व्याकरण पढ़ा हुआ पण्डित।

सं० वैयात्य—भा० पु० निर्लज्जता, बेहयाई, बेशर्मी ।

सं० वैर--(वीर) पु० दुश्मनी, शत्रुता, द्वेष, विरोध ।

सं० वैराग } (विराग)भा०पु०संसार
वैराग्य } की विषय वासना का छोड़ना, बेमुहब्बती ।

सं० वैरागी--(वैराग) गु० जिस ने [illegible] दियाहै, उदासीन, साधु। [शत्रु ।

सं० वैरी--(वैर) कृ० पु० दुश्मन,

सं० वैशाख--(विशाखा, एकनक्षत्र का नाम इस महीनेमें पूरा चांद इस नक्षत्र के पास रहता है और इस महीने की पूर्णमासी के दिन विशाखा नक्षत्र होता है) पु० बरस का दूसरा महीना ।

सं० वैश्य—(विश्=घुसना, अपने खेती, वनिज आदि धंधे में) पु० बनिया,महाजन, तीसरेवर्णके लोग।

सं० वैश्वानर--पु० अग्नि गु० कृपण, स्थूल, सब, वक्ता ।

सं० वैष्णव--(विष्णु)पु०विष्णुका भक्त, विष्णु उपासक,गु० विष्णुका।

सं० व्यक्त--(वि, अञ्ज्=जाना,पर वि उपसर्ग के साथ आने से इस का अर्थ प्रकटहोना होताहै) स्म० पु० जाना हुआ, स्पष्ट, प्रकट ।

सं० व्यक्ति--(वि, अञ्ज्=जाना) स्त्री० पृथकता, एक एक करके, २ जन, मनुष्य। [विकल ।

सं० व्यग्र--गु० व्याकुल, परेशान,

सं० व्यङ्ग--गु० अंगहीन, व्याकुल ।

सं० व्यजन--(वि,अञ्ज्=जाना)पु० ताल वृन्तक, पङ्खा, बेना ।

सं०व्यञ्जक--कृ०पु०प्रकाशक, नर्तक, भावबोधक ।

सं० [illegible]

वा मिलना, या प्रकट करना) पु० तरकारी, साग, २ खाने की अच्छी चीज़, ३ चिह्न, ४ वह अक्षर जिसमें स्वर न हो, जैसे क से ह तक।

सं० व्यञ्जना--भा० स्त्री० श्लेष, शब्द, शक्तिभेद, शब्दके अर्थ से विशेष अर्थ को बोधकरे जैसे जहांधुआँ है वहां अग्नि अवश्य होगी।

सं० व्यतिक्रम-पु० विलोम, विपर्यय, विपरीत, उलटा पुलटा।

सं० व्यतिरिक्त--(रिच्+त, रिच् =छोड़ना) क० भिन्न, जुदा जुदा, अलावा, सिवाय।

सं० व्यतिरेक--(रिच्=त्यागना) भा० पु० वियोग, भिन्नता, पृथक्त्व, विशेष, अतिक्रम, अलङ्कारभेद।

सं० व्यतीत-(वि, अति, इण्=जाना) गु० बीता हुआ, गुज़रा हुआ।

प्रा० व्यतीपात--(वि, अति, पत्= गिरना) पु० बड़ा भारी उपद्रव, २ ज्योतिष में सत्तरहवां योग।

सं० व्यथक--क० पु० दुःखदाता, तकलीफ देऊ।

सं० व्यथा--(व्यथ्=पीड़ा देना) स्त्री० पीड़ा, तिर, दर्द, दुःख।

सं० व्यथित-क० पु० पीड़ित, दुःखित।

सं० व्यधन--(व्यध्=ताड़ना) भा० पु० वेधन, ताड़न, पीड़न।

सं० व्यपदेश--(वि+अप, दिश्+अ) पु० संज्ञा, नाम, आरम्भ, मिष, छल, क़िस्सा।

सं० व्यभिचार--(वि=बुरी तरह से, अभि=चारों ओर से, चर्=चलना) भा० पु० पुरुषका पराई स्त्री के पास जाना, स्त्री का पराये पुरुष के पास जाना, बुरा काम, भ्रष्टाचार, निन्दितकाम, रण्डीबाज़ी।

सं० व्यभिचारी--क० पु० कुमार्गी, गुमराह।

सं० व्यय--(वि=बहुत, इण्=जाना) पु० खर्च, लागत, २नाश, क्षय।

सं० व्यर्थ--(वि=नहीं, अथवा चला गया है, अर्थ, मतलब, या प्रयोजन) गु० वृथा, निरर्थक, वेफ़ायदह, विफल, निष्फल, निकम्मा।

सं० व्यवकलन--(वि=अव, कल्= गिनना और इन दोनों उपसर्ग के साथ आने से अर्थ घटाना हुआ) पु० घटाना, बाकी निकालना।

सं० व्यवकलित--क्म० वियोगित, घटाया गया।

सं० व्यवधान--(धा=रखना) पु० आच्छादन, आड़, अन्तर्द्धि, बीच में रोक।

सं० व्यवसाय--(सै=नाश होना) पु० उद्यम, अनुष्ठान, अवधारण, विचार, अभिप्राय, उद्योग।

सं० व्यवस्था--(वि, अव, स्था=ठह

रना) स्त्री० धर्म, निर्णय, शास्त्र, क़ानून, हाल।

सं०व्यवस्थित-क० व्यवस्थाप्रमाण-क, पाबन्द क़ानून।

सं० व्यवहार-(वि, अव, हृ=लेना) पु० काम, धंधा, व्यौहार, लेन देन, चाल चलन।

प्रा० व्यवहरिया-(व्यवहारी) क० पु० व्यवहारकर्त्ता, महाजन, व्योहरा।

सं० व्यवहित--र्म्म० पु० व्यवधानयुक्त, रोंक, रोंकागया।

सं० व्यसन--(वि=बहुत, अस्=फेंकना) पु० विपत् २ दोष, बुरा काम (जैसे जूआ खेलना, दिनको बहुत सोना, झूठ बोलना, शराब पीना अथवा और अफ़ीम आदिनशा करना, डांवाडोल फिरना, दांत पीसना आदि व्यसन हैं) चस्का।

सं० व्यस्त--क० व्याकुल, व्याप्त, विपरीत, बिलोम, हीन, असमग्र।

सं० व्याकरण--(वि=बहुत, आ=चारों ओर से, कृ=करना) पु० शब्दों का शास्त्र, शब्द और धातुका बोधक।

सं० व्याकुल--(वि=बहुत, आकुल घबरायाहुआ) गु० घबराया हुआ, दुःखी।

सं० व्याख्या-(वि=बहुत, आ=चारों ओर से, ख्या=प्रसिद्ध करना) स्त्री० वर्णन, व्याख्यान, टीका।

सं० व्याख्यात--र्म्म० पु० कथित, कहा हुआ।

सं० व्याख्यान--भा० पु० कथन, वर्णन, टीका।

सं० व्याघ्र--(वि=बहुत, आ=चारों ओर से, घ्रा=सूंघना) पु० बाघ, शेर, नाहर, लालरेड़वृक्ष, करंजावृक्ष।

सं० व्याज--(वि, अज्=जाना) पु० कपट, छल, मिष, बहाना।

सं० व्याध--(व्यध्=ताड़ना, दुःख देना) पु० शिकारी, अहेरी, बहेलिया, जानवरों को मारने वाला।

सं० व्याधि--(व्यध्=दुःख देना) स्त्री० रोग, पीड़ा, बीमारी, दुःख, सन्ताप।

सं०व्यापक, व्यापी--(वि=बहुत, अप्=फैलना) क० पु० फैलने वाला, प्रभु, सर्वव्यापी, परमेश्वर।

सं०व्यापकता-(व्यापक) भा० स्त्री० प्रभुता, फैलाव।

सं०व्यापादन-भा० पु० मारण, क़तल।

सं० व्यापादित--र्म्म० पु० मारा हुआ, मक़तूल।

सं० व्यापार-(वि=बहुत, आ=चारों ओर से, पृ=काम में लगना) पु० व्यौपार, धंधा, सौदागरीकाम।

सं० व्याप्त--(वि=बहुत, आप्=फैलना) गु० फैला हुआ।

सं० व्याप्य--र्म्म० पु० व्यापनीय,

फैला हुआ।

सं० व्यायाम-(वि=बहुत, आ=चारों ओर से, यम्=रोकना) पु० परिश्रम, कुश्ती करना, मुद्गर, मोगरी उठाना आदि कसरत।

सं० व्याल--(वि=बहुत, अड्=फैलना, वा वि=बहुत, आ=चारों ओर से, ला=लेना) पु० सांप, सर्प, नाग, भुजंग, २ दुष्ट, हाथी, ३ मारने वाला जानवर, ४ धूर्त्त, दुष्ट।

सं० व्याली--क० पु० सर्पधारी, वेगी, महादेव।

सं० व्यास--(वि=बहुत, अस्=फैलाना) पु० एक प्रसिद्ध मुनिका नाम जिसने वेद पुराणोंको इकट्ठा किया, और वेदान्त शास्त्र को बनाया, २ विस्तार, फैलाव, ३ चक्कर का आध कांट, गोल खेतके बीच की लकीर, विस्तार।

सं० व्याहति-भा० स्त्री० आघात, चोट।

सं० व्याहृति-(हृ=लेना) स्त्री० उक्ति, कथन, वर्णन, व्याहृतयःसप्त भूः भुवः स्वः महः जनः तपः सत्यम्।

सं० व्युत्पत्ति--(वि=बहुत, उद्=ऊपर, पद्=जाना) स्त्री० शास्त्र के समझने की शक्ति, शास्त्रज्ञान, वजह तस्मिया।

सं० व्युत्पन्न-(वि=बहुत, उद्=ऊपर पद्=जाना) गु० शास्त्र में प्रवीण, पण्डित, विद्वान्।

सं० व्यूढ--(वह्=प्राप्त करना) गु० विस्तृत, दीर्घ, संहति, विपुल, विन्यस्त, समूह, सन्नद्ध, तैय्यार।

सं० व्यूह--(वि, उह्=तर्क करना, पर वि उपसर्ग के साथ आने से इसका अर्थ सेना को संवारना होता है) पु० सेना की रचना, २ भीड़, समूह, तर्क, बल, विन्यास, निर्माण।

सं० व्यूहन--भा० पु० सैन्यस्थान, किलाबन्दी। [आकाश, आसमान।

सं० व्योम--(व्ये=ढकना, घेरना) पु०

सं० व्योमयान--पु० विमान।

सं० व्रज-(व्रज=जाना) पु० गोस्थान, मार्ग, ३ वृन्द, ४ ग्राम।

सं० व्रजन--भा० पु० पर्य्यटन, भ्रमण, घूमना।

सं० व्रज्या—स्त्री० पर्य्यटन, प्रस्थान, वर्ग, संग्राम भूमि, क्रीड़ा स्थान, संन्यास।

सं० व्रण—(व्रण्=घाव करना) पु० घाव, फोड़ा।

सं० व्रत—(व्रज्=जाना, अथवा वृ=पसन्द करना) पु० उपास, उपवास, पवित्र काम, नियम, पुण्यकर्म।

सं० व्रात—(वृ=ढकना, घेरना या व्रत + घञ्) पु० समूह, भीड़।

सं० व्रीड़ा (व्रीड्=लजाना) स्त्री० लाज, लज्जा, शर्म, संकोच ।

सं० व्रीड़ित—कृ० पु० लज्जित, शर्माया हुआ ।

—:o:—

(श)

सं० श—(शी=सोना) पु० शिव, २ शस्त्र, हथियार, ३ कल्याण, मंगल, ४ शयन, ५ हृदय ।

सं० शंयु--(शम्=दमनकरना) गु० प्रसन्न, हर्षित ।

सं० शंव-- गु० सुकृती, पुण्यात्मा ।

सं० शंवर--पु० जल, शंख ।

सं० शंसा--स्त्री० प्रशंसा, स्तव ।

सं० शंसित-र्म० कथित, निश्चित, स्तुत

सं० शंस्य -र्म० स्तुत्य, प्रशंसनीय ।

सं० शक (शक्=समर्थ होना) पु० एक म्लेच्छ जाति के लोग, २ एक देश का नाम, ३ संवत् जो शालिवाहन राजा ने चलाया ४ सामर्थ्य ।

सं० शकट—(शक्=सकना, या सहना, अथवा लेजाना) पु० गाड़ी, छकड़ा ।

सं० शकटासुर--(शकट+असुर) पु० एक राक्षस जिसको श्रीकृष्ण ने मारा ।

सं० शकल--पु० खण्ड, टुकड़ा, २ त्वचा, चर्म, छिलका, वल्कल, मछली का सेहरा या छिलका ।

सं० शकारि--(शक + अरि) पु० विक्रमादित्य राजा ।

सं० शकुन--(शक्=समर्थ होना) पु० बुरे भले का जतलानेवाला, सगुन, २ एक पखेरू का नाम ।

सं० शकुन्त--पु० भासपक्षी ।

सं० शकुन्तला--स्त्री० दुष्यन्तराजा की स्त्री, नाटक विशेष । [एक बार ।

सं० शकृत्-पु० विष्ठा, मलमूत्र, अव्य०

सं० शक्त पु० समर्थ, दृढ़, पुष्ट ।

सं० शक्ति--(शक्=बलवान् या समर्थ होना) स्त्री० बल, जोर, पराक्रम, पुरुषार्थ, २ बर्छी, सांग, ३ देवी, माया, लक्ष्मी, गौरी आदि आठ शक्ति (१ इन्द्राणी, २ वैष्णवी अथवा लक्ष्मी, ३ ब्रह्माणी, ४ कौमारी, ५ नारसिंही ६ वाराही, ७ माहेश्वरी, अथवा गौरी ८ भैरवी)।

सं० शक्तिमान् (शक्ति=बल, मत्=वाला) गु० बलवान्, जोरावर ।

सं० शक्तिहीन--(शक्ति+हीन) गु० दुबला, दुर्बल, निर्बल, कमज़ोर ।

सं० शक्तु--पु० सतुआ, सत्तू ।

सं० शक्न गु० समर्थ, पुष्ट ।

सं० शक्य--र्म० पु० समर्थ, पुष्ट, योग्य, भविष्य, होनहार, मुमकिन ।

सं० शक्र--(शक्=बलवान्, अथवा समर्थ होना) पु० इन्द्र, देवताओं

का राजा, सुरपति।

सं० शक्रजित्—(शक्र=इन्द्र, जि=जीतना)पु० रावण का बेटा, इन्द्रजित, मेघनाद।

सं० शक्रसुत—(शक्र+सुत)पु० इन्द्र का बेटा, जयन्त, २ बालिवानर।

सं०शक्राणी--स्त्री०पुलोमजा, शची।

सं०शङ्कर--(शम्=कल्याण या भला, कर=करनेवाला, कृ=करना) पु० महादेव, शिव, २ शङ्कराचार्य।

सं० शङ्का--(शकि=संदेह करना या डरना) स्त्री०सन्देह,शक,२ डर,भय।

सं० शङ्कित--क०पु०डराहुआ,भीत, २ संदिग्ध, वितर्कित।

सं० शङ्कु—पु० आठ अंगुल की लकड़ी, ठूंठ वृक्ष, खूंटा, भाला, गांसी, शल्य, पाप, महादेव, अंश।

सं० शङ्ख—(शम्=ठंढा करना) पु० एक जल के जीव की हड्डी जिसको हिंदू पवित्र समझते हैं और देवता के साम्हने और लड़ाई में बजाते हैं २ सौ पद्म (गिनती में)।

सं० शङ्खध्मा--(ध्मा=बजाना) क० पु० शंखबजानेवाला।

सं०शचि--(शच्=बोलना) स्त्री० इन्द्र की स्त्री, इन्द्राणी।

सं० शचीपति—(शची+पति)पु० इन्द्र देवताओं का राजा।

सं० शठ—(शठ्=छल करना) गु० छली, कपटी, दुष्ट, धूर्त, ठग।

सं० शठता—(शठ)भा० स्त्री० दुगना, कपट, छल, ठगाई, मूर्खता।

सं०शण—पु० सनका वृक्ष,पटुआ।

सं०शण्ठ-पु०नपुंसक,हिजड़ा,२साँड़।

सं० शत—गु० एकसौ, १००।

सं० शतक—(शत)गु० सैकड़ा।

सं० शतकोटि—पु० इन्द्र का वज्र, स्त्री० सौकरोड़, अरब संख्या।

सं० शतक्रतु—पु० इन्द्र, सौ यज्ञ करनेवाला।

सं०शतघ्नी-(शत=सौ,हन्=मारना) स्त्री० एक तरह का हथियार, तोप अथवा,धनुष, २ एक रोग का नाम।

सं० शतद्रु—(शत=सौ, द्रु=जाना अथवा बहना जो सौ अर्थात् बहुत सी धारा से बहती है) स्त्री० सतलज नदी जो पंजाब में है।

सं० शतपत्र—(शत=सौ, पत्र=पत्ती या पंखड़ी) पु० कमल। [वैद्य।

सं० शतमारी(मृ=मरणा) क० पु०

सं० शताब्द—पु० सौवर्ष।

सं० शताब्दी--गु० सदी।

सं० शत्रु—(शद्=नाश करना)पु० वैरी, दुश्मन, रिपु, अरि, द्वेषी, विरोधी। [जीतने वाला।

सं० शत्रुविजयी—क० पु० शत्रु का

सं० शत्रुघ्न-(शत्रु=वैरी हन्=मारना) पु० लक्ष्मण का छोटा भाई, रिपुसूदन। [विरोध, दुश्मनी।

सं० शत्रुता-(शत्रु) भा० स्त्री० वैर,

सं० शनि-(शो=तीखा होना, या तेज होना) पु० सातवां ग्रह, शनैश्चर, ग्रहनायक, छायापुत्र, सूर्य का बेटा।

सं० शनिवार-(शनि + वार) पु० सातवां दिन, शनीचर।

सं० शनैश्चर-(शनैस्=धीरे, चर्=चलना) पु० शनिग्रह, शनिवार।

सं० शप-भा० पु० तिरस्कार, निरादर, शाप।

सं० शपथ-(शप्=सौगंद खाना, या सरापना) स्त्री० सौगंद, किरिया, सोंह, दुहाई, प्रतिज्ञा, २ सराप, शाप।

सं० शब्द-(शब्द्=शब्द करना, या शप्=पुकारना) पु० ध्वनि, आहट, आवाज जो कान से सुना जाय, २ (व्याकरण में) जो मुंह से बोला जाय, बोल, वचन, पद, लफ़्ज़।

सं० शब्दशास्त्र-(शब्द + शास्त्र) पु० व्याकरण आदि शास्त्र जिनसे शब्द का ज्ञान होता है।

सं० शम-(शम्=शान्त होना, या ठंढा होना) पु० मन की शान्ति, दम, २ इन्द्रियों को और मन को रोकना।

सं० शमन-(शम्=ठंढा करना) पु० शान्ति, ठंढा करना, २ यमराज, गु० दूर करनेवाला, ठंढा करनेवाला।

सं० शमित-क० पु० शान्त, मुतहम्मिल, सहनेवाला।

सं० शम्बल-पु० कूल, किनारा, २ पाथेय, राह खर्च, ३ मत्सर।

सं० शम्बुक-स्त्री० सीपी पु० घोंघा, शूद्र तपस्वी, शंख, दैत्य।

सं० शम्भु-(शम्=कल्याण रूप, भू=होना) पु० महादेव, शिव।

सं० शयन-(शी=सोना) पु० सोना, नींद लेना, नींद, २ सेज, बिछौना।

सं० शय्या-(शी=सोना) स्त्री० सेज, बिछौना, पलंग, खाट।

सं० शर-(शृ=मारना) पु० तीर, वाण, २ सरकंडा।

सं० शरण-(शृ=मारना जो शरण में आवे उसके वैरी को मारना) पु० बचाव, रक्षा, २ बचानेवाला, रक्षक, ३ घर, आसरा।

सं० शरणागत (शरण + आगत) क० पु० शरण में आया हुआ, जो बचाव के लिये आवे, शरणार्थी, आश्रित। [रक्षक

सं० शरण्य-क० रक्षक, शरणागत-

सं० शरण्यु-पु० मेघ, वायु, रक्षक।

सं० शरद् (शृ=नाश करना, बादल

और गर्मी को) स्त्री० एक ऋतु का नाम जो कुंआर और कार्तिक में रहती है। [आहट।

प्रा० शराटा- पु० शब्द, आवाज़,

प्रा० शराबोर-पु० खूब भीगा हुआ।

सं० शराव-पु० संपुट, डब्बा, डबिया, परई, सरवा, कोसा।

सं० शरासन- (शर=तीर, आसन =ठहरनेकी जगह)पु० धनुष, कमान।

सं० शरीर— (शॄ=नाश होना) पु० देह, तन, काया, जिस्म।

सं० शरि-क० पु० धूर्त, मूर्ख।

सं० शर्करा- (शॄ=नाश करना, अर्थात् गन्ने को पेरना) स्त्री० शक्कर, चीनी, खांड़।

सं० शर्म्मा- (शॄ=नाश करना, दुःख को) पु० सुख, २ ब्राह्मणों की पदवी।

सं० शर्व्वरी- (शॄ=नाश करना थकावट को) स्त्री० रात, रात्री, २ स्त्री, ३ हल्दी।

सं० शलभ- (शल्=जाना) पु० टिड्डी, पतंगा।

सं० शलाका- (शल्=जाना) स्त्री० सुर्मा की सलाई, कूंची, तुली, शूल।

प्रा० शलीता-पु० टाट का बोरा या थैला जिसमें चीज वस्तु बांधी जाती है।

सं० शल्य- (शल्=जाना) पु० एक राजाका नाम जिसका वर्णन महाभारत में है, २ सेल, ३ बाण, गांसी।

सं० शव- (शव्=बदलना, या नाश होना) पु० मुर्दा, मरा, लोथ, लाश, बिन जीवकी देह, मराशरीर।

सं० शवर- (शव्=जाना, या बदलना) पु० भील, वनवासी, जंगली आदमियों की एक जात, पहाड़ी, २ शिव, महादेव।

सं० शबरी- (शबर) स्त्री० भीलनी, नीच जात की स्त्री।

सं० शवाधार—(शव+आधार) धि० पु० टिकटी, रथी।

सं० शश, शशक (शश्=उछल कर चलना) पु० ससा, खरहा, खर्गोश, २ चांद में का दाग जो खर्गोशके ऐसा दिखाई देता है।

सं० शशाङ्क--(शश्=खर्गोश, अङ्क चिह्न, अर्थात् जिस में खर्गोश के ऐसा दाग़ है) पु० चांद, चंद्रमा।

सं० शशि, शशिन्, शशी (शश) पु० इन्दु, चांद, चन्द्रमा।

सं० शश्वत्- (शश्=खर्गोश, वत् =बराबर) क्रि० वि० बारबार, फिर फिर, पुनः पुनः, लगातार, निरन्तर, हमेशा।

सं० शस्त--म्म० पु० स्तुत, प्रशंसा किया गया।

सं० शस्त्र--(शस्=मारना) पु० हथियार, आयुध, ऐसा हथियार जिसको हाथ में रखकर मारें जैसे तलवार आदि ।

सं० शस्त्रधारी--(शस्त्र=हथियार, धारी=रखनेवाला, धृ=रखना) क० पु० हथियारबन्द, शस्त्ररखनेवाला ।

सं० शस्त्रशम्मार्जन--भा० पु० सैक़िल करना, हथियारों का साफ़ करना ।

सं० शस्त्राधार-- (शस्त्र+आधार) पु० अस्त्रगृह, सिलाखाना ।

सं० शस्य--(शस्=नाश करना जो चौपायों से नाश किया जाता है) पु० धान, फल आदि ।

सं० शाक-- (शक्=सकना) पु० साग, तरकारी, भाजी, फल, मूल फूल पत्ते आदि, २ एक द्वीप का का नाम, ३ सालिवाहन राजा का संवत्, शाका ।

सं० शाकम्भरी--(शाक=साग वनस्पति आदि, भरी भरनेवाली, भृ=भरना) अर्थात् पृथ्वी पर सब चीज पैदा करनेवाली स्त्री० दुर्गा, देवी, भगवती जिसका मंदिर साम्भर नाम नगर के पास पहाड़ पर है और राजपूताने के लोगों का विश्वास है कि इसी देवी के दरशन से साम्भर नाम झील में नमक पैदा होता है दुर्गा पाठ में लिखा है कि " भविष्यामि सुराः शाकैरावृष्टेः प्राणधारकैः, शाकम्भरीति विख्याता" अर्थ--दुर्गा कहती है कि हे देवता ! जब तक पानी नहीं बरसे तब तक प्राण को बचाने वाले साग से सब को पालूंगी तब मेरा नाम शाकम्भरी होगा ।

प्रा० शाकल्ल--(सं० शाकल्य) पु० तिल, जौ, घी, शक्कर, फल आदि मिली हुई होम की सामग्री ।

सं० शाकिनी--(शक्=बलवान्, या समर्थ होना) स्त्री० दुर्गा के साथ रहनेवाली, योगिनी, पिशाचिनी ।

सं० शाक्त--(शक्ति) पु० शक्ति उपासक, देवी को पूजनेवाला, दुर्गापूजक ।

सं० शाखा--(शाख्=फैलना) स्त्री० पेड़ की डाली, टहनी, डाल, २ वेद का विभाग, ३ भांति, प्रकार, ४ भाग, हिस्सा ।

सं० शाखामृग--(शाखा + मृग) पु० वानर, बन्दर ।

सं० शाखी--क० पु० वानर, गवांही ।

सं० शाटिका / शाटी --(शट्=जाना, या सराहना) स्त्री० साड़ी, स्त्रियों के ओढ़ने का एक भांति का कपड़ा ।

सं० शाठ्यता--भा० स्त्री० मूर्खता,

जाहिली, अहमकी।

सं० शाणन--(शाण=पैनाना) भा० पु० तीक्ष्णकरना, शाणयंत्र, जिस पर हथियार पैने किये जाते हैं।

सं० शाणित--र्म्म०पु० तीक्ष्णकृत, पैनाया गया।

सं० शाण्डिल्य--पु० शण्डिल मुनि का पुत्र, शक्तिशास्त्र कारक, बेल, एक अग्नि का नाम।

सं० शात--पु० सुख, गु० २ छिन्न, कृश, दुर्बल, निशित।

सं० शान्त--(शम्=ठंढा होना) गु० ठंढा, स्थिर, २ नम्र, ३ चुप, बंद, मुतमैय्यन (जैसा हवा) ४ साहित्य में नौ रसों में का एक रस।

सं० शान्तन--पु० चन्द्रवंशी प्रतीप का पुत्र, भीष्मपितामह का पिता।

सं० शान्ति-(शम्=ठंढा होना) स्त्री० ठंढाई, थिरता, चैन, सुख, काम क्रोध आदि को जीत लेना अर्थात् काम क्रोध आदि नहीं रखना।

सं० शाप--(शप्=शाप देना) पु० शाप, धिक्कार, दुराशीष, बुरीदुआ, कोसना, २ शपथ, सौगंद।

सं० शाब्दिक--गु० शब्द से हुआ, वैयाकरण।

सं० शामित--(शम्=शान्त होना) र्म्म० शान्त कियागया।

सं० शाम्बरी--स्त्री० माया, करशमा, इन्द्रजाल, फ़रेबपन।

सं० शाम्भव--(शम्भु) पु० शिव का भक्त, महादेव का उपासक, शिवको पूजनेवाला, गुग्गुल, गूगुर, कपूर, शम्भुपुत्र।

सं० शाम्य--क० पु० समायुक्त।

सं० शायक--(शो=नाश करना, या तीखा करना अथवा शी=सोना, अर्थात् जिसके लगने से मनुष्य सो जाता अर्थात् गिर पड़ता है) पु० तीर, बाण, २ तलवार, खड्ग।

प्रा० शायर--पु० शूर, बहादुर।

सं० शायी--(शी=सोना) क० पु० सोनवाला।

सं० शारदी--(शरद्) स्त्री० गु० शरदृतु की।

सं० शारीरिक--(शरीर) गु० शरीर का, दुःखादिक।

सं० शारङ्ग--पु० पपीहा, २ मृग, ३ गज, ४ भ्रमर, भौंरा, ५ मयूर, ६ धनुष, ७ मधुमक्खी, दीपक।

सं० शार्ङ्ग--(शृङ्ग) गु० सींग का बना हुआ, पु० धनुष, २ विष्णु का धनुष, ३ एक पखेरूका नाम।

सं० शार्दूल--पु० व्याघ्र, पक्षीभेद, पशुभेद, सिंह, श्रेष्ठ।

सं० शाल--(शल्=जाना) पु० एक तरहकी मछली, २ एक पेड़का नाम।

सं० शालग्राम--(शाल एक गांव

का पेड़, ग्राम समूह जहां बहुत से शाल वृक्ष हैं) पु० एक पहाड़ का नाम, २ उसी पहाड़ पर एक पत्थर होता है जिसको हिन्दू विष्णु की मूरत मान कर पूजते हैं।

सं० शाला-(शल्=जाना, या शाल्=बोलना या सराहना)स्त्री० घर, कमरा, स्थान, जगह।

सं० शालार--पु० हाथी का नख, सोपान, सीढ़ी, पिंजरा।

सं० शालि--(शल्=जाना) पु० धान।

सं० शालूर--पु० मंडूक, मेढ़क।

सं० शाल्मली-(शाल्=जाना, या शाल् = सराहना) पु० सेमल का पेड़, २ एक द्वीप का नाम।

सं० शावक—(शव् =जाना,या बदलना) पु० बच्चा, बालक।

सं० शाबर—(शबर) पु० शिव का बनाया हुआ मंत्र, पु० पाप, अपराध, २ लोध का पेड़।

सं० शाश्वत—(शश्वत्)क्रि० वि० लगातार, निरन्तर, २ नित, हमेशह, सदा।

सं० शासन—(शास्=सिखाना, आज्ञा देना, या राज करना) पु० आज्ञा, हुक्म, २ राज करना, ३ दंड, सज़ा, ४ शिक्षा, सीख, -नसीहत- हुकूमत।

सं० शासनपत्र— पु० फ़र्मान।

सं० शासित—र्म्म० सिखाया गया, महकूम।

सं० शासिता } क० पु० हाकिम,
शास्ता } शिक्षक।

सं० शास्य--र्म्म० पु० शिक्षणीय, सिखाने योग्य, महकूम।

सं० शास्ति--(शास्=सिखाना, आज्ञा देना, या राज करना) स्त्री० आज्ञा, २ राज करना, हकूमत करना, ३ दंड, सज़ा।

सं० शास्त्र--(शास्=सिखाना) पु० किसी देवता या मुनि का बनाया हुआ ग्रंथ, पुस्तक, पोथी, पवित्र पुस्तक, (वेदान्त, न्याय, साङ्ख्य, मीमांसा, पातञ्जल, और वैशेषिक आदि षट् शास्त्र) काव्य और कानून और और विद्याओं की पुस्तकों को भी शास्त्र कहते हैं (जैसे काव्यशास्त्र, धर्मशास्त्र, शिल्पशास्त्र, और अलंकारशास्त्र आदि)।

सं० शास्त्रार्थ--(शास्त्र+अर्थ) पु० चर्चा, वादविवाद।

सं०शास्त्रज्ञाता-क०पु०शास्त्री,पंडित।

सं० शास्त्री--(शास्त्र) पु०शास्त्र जाननेवाला पण्डित, २ ब्राह्मणों की एक पदवी।

सं० शिंशपा--(शिशु=बालक, पा= पालना) पु० एक पेड़ का नाम।

सं०शिक्य-पु०सिकहर, छींका, छींका।

सं० शिक्षक--(शिक्ष्=सीखना, या सिखाना) क० पु० सिखानेवाला, पढ़ानेवाला, गुरु, अध्यापक, उपदेशक।

सं० शिक्षा--(शिक्ष् = सीखना या सिखाना) भा० स्त्री० सीख, सिखाई, तालीम, नसीहत, उपदेश, २ वेद का एक भाग, वेदाङ्ग।

सं० शिक्षापत्र--पु० वसीयतनामा।

सं० शिक्षाप्रकरण--पु०शिक्षा विभाग, सरिश्तातालीम।

सं० शिक्षित--(शिक्ष्=सीखना, या सिखाना) कर्म० पु० सीखा हुआ, पढ़ा हुआ, निपुण, प्रवीण।

सं० शिखर--(शिखा) पु० पहाड़ की चोटी, शृङ्ग।

सं० शिखा--(शी = सोना) स्त्री० चोटी, शिर के बीच के बाल, जो हिंदूलोग रखते हैं, २ आग की ज्वाला।

सं० शिखी--(शिखा) पु० मोर, मयूर, २ आग, ३ एक पेड़ का नाम।

सं० शिञ्जा } शिञ्जिनी } स्त्री० रोदा, धनुषकी डोरी।

सं० शिथिल--(श्लथ्=ढीला या दुबला होना) गु० ढीला, खुला, २ धीमा, सुस्त, आलसी, ३ दुबला, निबल, कमज़ोर।

सं० शिर } शिरस् } (शॄ=नाश होना)पु०मस्तक, माथा, शिर, कपाल।

प्रा० शिरधरा--क०पु०जिम्मादार, वारिस। [नाड़ी, नस।

सं० शिरा--(शॄ=नाश होना) स्त्री०

सं० शिरोमणि--(शिरस्+मणि) स्त्री० शिर का गहना, शिर में पहननेका रतन, गु०उत्तम, सबसे बड़ा, श्रेष्ठ, प्रधान, मुखिया।

सं० शिरोरुह--(रुह=जमना, निकलना) क० पु० बाल, केश।

सं० शिला--(शिल्=कण, कण २ इकट्ठा करना, या चुनना) स्त्री० सिल, चट्टान, पत्थर, पाषाण, २ साफ़ और बराबर, पत्थर जिसपर लोढ़े से मसाला पीसा जाता है।

सं० शिलाजित् } शिलाजीत } (सं० शिलाजतु शिला पहाड़ की चट्टान में पैदाहुई, जतु लाख, या लाल रंग की धातु) पु० शिलारस, कहते हैं कि पहाड़ों की चट्टानों का रस चूकर जम जाता है और पत्थर सा कड़ा हो जाता है उसको शिलाजीत कहते हैं और उसके खानेसे शरीरमें ज़ोर आताहै।

सं० शिलीमुख-(शिली=तीखीनोक, मुख=मुंह, जिसके मुंह पर तीखा फल लगा रहता [illegible] बाण, भ्रमर, भौंरा। [illegible]

सं० शिलोच्चय--

सं० शिल्प--([illegible] [illegible] कारीगरी का

कलाविद्या, हुनर, गुण, कारीगरी ।

सं० शिल्पशाला--स्त्री० कारीगरों का कारखाना ।

सं० शिल्पक }
शिल्पित } क० पु० कारीगर ।

सं० शिव--(शी=सोना, या शो=नाश करना दुःख को, या मलय में सब सृष्टि को) पु० महादेव, महेश, २ मंगल, कल्याण, शुभ, सुख, ३ वेद ।

सं० शिवपुरी--(शिव+पुरी) स्त्री० काशी, बनारस ।

सं० शिवरात्री-(शिव+रात्री) स्त्री० शिवचतुर्दशी, फागुन वदी १४ ।

सं० शिवसेनानी-स्त्री० स्वामिकार्तिकेय, कीर्तिमुख ।

सं० शिवा--(शिव) स्त्री० पार्वती, उमा, दुर्गा ।

प्रा० शिवाला--(सं० शिवालय, शिव+आलय) पु० शिवका मन्दिर ।

सं० शिवि }
शिबि } पु० एक राजाका नाम ।

सं० शिविका }
शिबिका } (शिव=सुख, अर्थात् जिस में बैठने से सुख मिले, या शी=सोना जिसमें) स्त्री० पालकी, डोली । [डान्डी ।

सं० शिविर }
शिबिर } पु० सैन्यनिवासस्थान,

सं० शिशिर--(शश=टपकना वा चलना, अर्थात् पत्तों का झड़ना) स्त्री० एकऋतु जो माघ और फागुन में रहती है ।

सं० शिशु-(शी=पतलाहोना, या श्वि=बढ़ना) पु० बालक, बच्चा ।

सं० शिशुपाल--पु० चँदेरीकाराजा, जिसको श्रीकृष्ण ने मारा ।

सं० शिष-(शिष्=अन्तहोना) भा० स्त्री० सिखाना, शिक्षा, उपदेश ।

सं० शिश्न-पु० मेढ़, लिङ्ग, पुरुषचिह्न ।

सं० शिष्ट--(शास्=शिखाना) स्पं० सीखने योग्य, सभ्य, २ आज्ञाकारी, ३ अच्छा, उत्तम, भला, काफी ।

सं० शिष्टाचार-(शिष्ट+आचार) पु० अच्छाचलन, सन्मान, आदर, विनय, विनती ।

सं० शिष्टि-स्त्री० आज्ञा, शासन, राजा ।

सं० शिष्य--(शास्=सिखाना) पु० उपदेश्य, चेला, विद्यार्थी, छात्र, पढ़नेवाला, २ किसी धर्म को माननेवाला ।

सं० शीकर-(शीक=सींचना, या गीला करना) पु० जलकन, फुहारा, सरलद्रव्य, वायु ।

सं० शीघ्र-(शीघ=सूंघना) पु० उतावला, जल्द, फुर्तीला, क्रि० वि० तुरंत, झटपट, जल्दी से ।

सं० शीघ्रगामी-(गम्=चलना) क० पु० जल्दी चलनेवाला ।

सं० शीघ्रता-(शीघ्र) भा० स्त्री०

जल्दी, उतावली, फुर्ती ।

सं० शीत--(श्यै=जाना)गु०ठंढा,सर्द, २ सुस्त, पु० जाड़ा, सर्दी, ठंढ, ३ हिम, पाला ।

सं० शीतकर--(शीत=ठंढी, कर= किरण) पु० चांद, २ कपूर ।

सं० शीतकाल--(शीत+काल) पु० जाड़ा, सर्दी, हिमंतऋतु ।

सं० शीतज्वर--(शीत+ज्वर)स्त्री० जाड़ा, जाड़ेकी तप ।

सं० शीतल--(शीत=ठंढ, ला=लेना) गु० ठंढा, सर्द ।

सं० शीतलता--(शीतल) भा० स्त्री० ठंढाई, ठंढापन ।

प्रा० शीतलताई } शीतलाई } (सं० शीतलता) भा० स्त्री० ठंढाई, ठंढापन ।

सं० शीतला--(शीतल)स्त्री०देवी, माता, चेचक ।

सं० शीतांशु--(शीत=ठंढी, अंशु= किरण, जिसकी किरणें ठंढी हैं) पु० चांद, २ कपूर ।

सं० शीताङ्ग--(शीत+अङ्ग) पु० पक्षाघात, अर्द्धांग, एक बीमारी का नाम । [दुर्बल,शुष्क, सूखा ।

सं० शीर्ण--(शॄ=मारना)गु०कृश,

सं० शीर्ष--(शॄ=नाश होना)पु०शीस, सिर, माथा, मस्तक ।

सं० शील--(शील्=सोचना, या अभ्यास करना) पु० अच्छा स्वभाव, अच्छा चाल चलन ।

सं० शीलवान्--(शील+वान्) गु० अच्छे स्वभाववाला, जिसका चाल चलन अच्छा हो, सुशील, नेक चलन ।

सं० शीलचक्षु--गु० मुरौवतदार ।

सं० शीलित--स्त्री० अभ्यस्त, रक्त, रत, रचित ।

प्रा० शीशम--(सं० शिंशपा) पु० एक पेड़ और उसकी लकड़ीका नाम।

प्रा० शीस } सीस } (सं०शीर्ष) पु०शिर, माथा,मस्तक,कपाल।

सं० शुक--(शुक्=जाना,या शुभ्= चमकना) पु० तोता, सूगा, सूआ, २ शुकदेव मुनि जिन्होंने राजा परीक्षितको श्रीमद्भागवत सुनाई ।

सं० शुक्ति--स्त्री० सीपी, सूती, चक्षु, रोग, अर्शरोग ।

सं० शुक्र--(शुच्=पवित्र होना, या सोचना) पु० छठा ग्रह, २ एक मुनिका नाम जो भृगु ऋषि का बेटा और राक्षसों का गुरु था, ३ आग, अग्नि, ४ वीर्य, बीज ।

सं० शुक्रवार--(शुक्र+वार) पु० छठा दिन, शुक्रवार, जुमा ।

सं० शुक्राचार्य--(शुक्र+आचार्य)

पु० एक मुनिका नाम जो राक्षसों का गुरु था।

सं० शुक्ल—(शुच्=साफ होना) गु० धौला, उजला, सफेद, श्वेत, पु० धौलारंग, श्वेतवर्ण।

सं० शुक्लपक्ष—(शुक्ल+पक्ष) पु० उजाला पक्ष, सुदी।

सं०शुचा-भा०स्त्री० पवित्रता,सफ़ाई।

सं० शुचि—(शुच्=पवित्र होना,साफ होना) स्त्री० पवित्रता, सफ़ाई, शुद्धता, गु० साफ़, स्वच्छ, शुद्ध, धौला सफेद।

सं० शुण्ड--पु० सूंड़।

सं०शुद्ध—(शुध्=साफ होना, या करना) गु० पवित्र, साफ़, स्वच्छ, सफ़ेद, उज्ज्वल,२ निर्दोष,३सही।

सं० शुद्धता—(शुद्ध) भा० स्त्री० पवित्रता, सफाई, स्वच्छता।

सं० शुद्धि--स्त्री०पवित्रता,शुद्धता,शोधन, सफाई।

सं० शुद्धिपत्र-पु० मुआफ़ीनामा, साफ़ीनामा।

सं० शुन्य } (श्वि=बढ़ना) गु० खाली,
शून्य } स्त्री० या पु० बिंदी, सिफ़र, २ आकाश, आसमान।

सं०शुभ—(शुभ्=चमकना) गु० अच्छा, भला, कल्याणकारी, मंगलदायक।

सं०शुभग—(शुभ=भाग्य, गम्=जाना) गु० कल्याणकरनेवाला,सुखदायी, मंगलीक, २ सुन्दर।

सं० शुभगता—भा०स्त्री० मनोहरता, सुन्दरता, उम्दगी।

सं० शुभचिन्तक--कृ० पु० भला चाहनेवाला, खैरख़्वाह।

सं० शुभचिन्तकता--भा० स्त्री० भलाई, खैरख़्वाही।

सं० शुभलग्न--(शुभ+लग्न)पु० अच्छासमय, मंगलीक समय।

सं० शुभाकांक्षी--कृ० पु० मंगलाभिलाषी, भलाई चाहनेवाला, खैरख़्वाह।

सं० शुभ्र--(शुभ्=चमकना) गु० उजला, सफ़ेद, धौला, निर्मल, २ चमकीला, चमकदार, ३ पु० धौला रंग, श्वेतवर्ण।

सं० शुम्भ--(शुम्भ=मारना) पु० एक राक्षसकानाम जिसको दुर्गाने मारा।

सं० शुल्क--पु० चुंगी, फीस।

सं० शुश्रूषक--(श्रु=सुनना) कृ० पु० सेवक, परिचारक, टहलू।

सं० शुश्रूषा--स्त्री० सेवा, टहल।

सं० शुष्क--(शुष्=सूखना) गु० सूखा, नीरस, रूखा।

सं० शुष्म--पु० सूर्य, अग्नि, वायु, पराक्रम, शौर्य, [illegible], दीप्ति, शोभा।

सं० शूकर--([illegible] कृ=करना) पु० सूअर, वराह।

सं० शूद्र--(शुच्=साफ़ करना, जो बड़ोंको नहलाते, धुलाते हैं) पु० चौथे वर्ण के लोग जिन का काम नौकरी करना है।

सं० शून्य--गु० निर्जनस्थान, आकाश, बिन्दु, सैफर, अभाव, असम्पूर्ण, ऊन, तुच्छ, उदासीन।

सं० शून्याकार--गु० उदासीन की सूरत, खालीसा।

सं० शूर--(शूर्=बहादुरी करना) पु० वीर, सूरमा, रावत, बहादुर, साहसी, २ शूरसेन, जो श्रीकृष्ण का दादा था, ३ सिंह, ४ सूर्य, ५ सूअर, ६ साल का पेड़।

सं० शूरण--पु० जमींकंद, वर्तुलाकारमूल।

सं० शूरता--(शूर) भा० स्त्री०बहादुरी, वीरता, शूरमापन।

सं० शूरसेन--(शूर्=बहादुर, सेन=सेना) पु० मथुरा के एक राजा का नाम, २ मथुरा। [छाज।

सं० शूर्प--(शूर्प्=मापना) पु० सूप,

सं० शूर्पनखा--(शूर्प+नख, अर्थात् जिसके नख सूप ऐसे हैं) स्त्री० रावण की बहिन।

सं० शूल--(शूल्=बीमार होना) पु० पीड़ा, दुःख,रोग, २ लोहेका तीखा कांटा, त्रिशूल।

सं० शृगाल--(असृज्=लोहू, ला=लेना, यहां असृज् के अ का लोप होजाताहै) पु० सियार, गीदड़।

सं० शृङ्खला--(शृ=नाशकरना)स्त्री० सांकल,संकली, सिकरी,२करधनी।

सं० शृङ्ग--(शृ=नाश करना) पु० सींग, २ शिखर, पहाड़ की चोटी, पहाड़ के ऊपर का भाग, ३ चिह्न, ४ बड़ाई, प्रभुत्व, प्रधानता, ५ कामदेव का बढ़ना।

सं० शृङ्गबेर--पु० श्रीरामचन्द्रके मित्र गुह निषाद के नगर का नाम।

सं० शृङ्गार--(शृङ्ग=कामदेव का अर्थात् प्यार का बढ़ना, और ऋ=जाना, जिससे मन में काम बढ़ता है) पु० साहित्य विद्यामें एक रस का नाम, २ शोभा,सिंगार, गहना, भूषण--१६ शृङ्गार।

दो० अंग शुची मज्जन वसन
मांग महावर केश।
तिलक भाल तिलचिबुक में
भूषण मेंहदी वेश।
मिस्सी काजल अर्गजा, बीरी
और सुगन्ध।
पुष्प कली युत होयकर, तब
नव सप्त प्रबन्ध।

शरीर का मैल उतारना, २ न्हाना, ३ साफ़ कपड़े पहनना, ४ काजल लगाना,५ अलता से हाथ पैर रचाना, ६ बाल सँवारना, ७ सिंदूर से

मांग भरना, ८ लिलाड़ में केशर चन्दन की खौरी या तिलक निकालना, ९ ठुड्डी पर तिल बनाना, १० मेंहदी लगाना, ११ देह में अरगजा या इतर आदि सुगंधित चीज लगाना, १२ गहना पहनना, १३ फूलोंकी माला आदि पहनना, १४ पान चबाना, १५ दांत रंगना, १६ होठों को लाल करना।

सं० शृङ्गी--(शृङ्ग) गु० सींगवाला, पु० एक ऋषिका नाम जो लोमश ऋषिका चेला था जिसके शाप से राजा परीक्षित को तक्षक सांप ने डसा।

सं० शेखर--(शिख्=जाना) पु० फूलोंकी माला जो मुकुट के ऊपर पहनते हैं, मुकुट, किरीट, २ शिखा, चोटी।

सं० शेष--(शिष्=बाकी रहना) पु० अनन्त, सर्पराज, सांपों का राजा जिस के १००० फण बतलाते हैं और जिसपर विष्णु सोते हैं और जिसके एक फण पर हिन्दूलोग पृथ्वी को ठहरी बतलाते हैं और लक्ष्मण जी और बलदेव जी को शेषजी के अवतार कहते हैं गु० बाकी, बचाहुआ।

सं० शेषशायी--(शेष सांपोंका राजा, शायी=सोनेवाला, शी=सोना) पु० विष्णु भगवान् जो शेषजी पर सोते हैं।

सं० शैल--(शिला)पु०पहाड़,पर्वत, गु० पहाड़ी, पथरीला।

सं० शैलराज--पु०हिमालय। [पुर।

सं० शैलशिविर-पु० समुद्र,पर्वतीय

सं० शैलाट--(शैल+अट्=घूमना) पु० सिंह, किरात, श्वेत कांच।

सं० शैव--(शिव)पु०शिवका भक्त, शिवको पूजनेवाला, गु० शिव का।

सं० शैवाल--पु० सिवार।

सं० शोक--(शुच्=चिंता करना) पु०शोच, चिन्ता, फ़िक्र, दुःख,खेद, सन्ताप, पछतावा।

सं० शोकाकुल } (शोक=शोच,
शोकार्त्त } आकुल या आर्त्त घबराया हुआ) गु० शोच से व्याकुल, विकल, दुःखी।

सं० शोकापह-(शोक+अप+हन=नाश करना) क० पु० शोकनाशक, शोकहारी।

सं० शोचक--(शुच+अक, शुच्=चिन्ता करना) क० पु० शोच करनेवाला, फ़िक्रमंद।

सं० शोचनीय--गु० शोचनेयोग्य।

सं० शोणित--(शोण=लाल होना) पु० लोहू, रक्त, रुधिर, २ कुंकुम, गु० लाल।

सं० शोधक-क०पु०शुद्धकरनेवाला।

सं० शोधित--र्म० शुद्ध की हुई।

सं० शोधन--(शुध्=पवित्र करना) पु० पवित्र करना, शुद्ध करना, २ सही करना।

सं० शोधनी-ण०स्त्री०बढ़नी,झाडू।

सं० शोधनीय--र्म० शोध्य,शोधने योग्य, इस्लाहतलब।

सं० शोभा--(शुभ्=चमकना) स्त्री० सुन्दरता, खूबसूरती, छवि, कांति, २ चमक, झलक।

सं० शोभायमान--क० पु० सुशोभित, खूबसूरत।

सं० शोभित--(शुभ्=चमकना) गु० सुन्दर, शोभायमान, चमकीला।

सं० शोषक--(शुष्+अक, शुष्=सोकना) क० पु० रसाकर्षक, वायु, सूर्यादि।

सं० शौच--(शुचि) भा० पु० पवित्रता,शुद्धता, सफाई,स्नान आदि।

सं० शौण्डिक--क० पु० कलवार।

सं० शौर्य--(शूर)भा० पु० शूरमापन, बहादुरी, वीरता। [चुंगी।

सं० शौल्किक--क० पु० दारोगा

सं० श्मशान--(श्मन्=मुर्दा, और शी=सोना जहां मुर्दा सुलाया जाता है, अर्थात् जलाया जाता है) पु० मसान, मरघट, मुर्दाघाट।

सं० श्याम--(श्यै=जाना) गु० काला काला, नीला मिला हुआ, पु० श्रीकृष्ण का नाम।

सं० श्यामता--(श्याम)भा०स्त्री० कालासा, कालापन, कृष्णता।

सं० श्यामल--(श्याम=कालारंग, ला=लेना) गु० काला, श्यामवर्ण।

सं० श्यामा--(श्याम) स्त्री० काली, दुर्गा, देवी, २ एक काले रंगकी गानेवाली चिड़िया, षोड़श वर्ष की स्त्री, सोलह वर्ष की औरत, पीपरि, काले रंग की स्त्री।

सं० श्येन--पु० शाहीन, बाजपक्षी।

सं० शृङ्खला--स्त्री० जंजीर,सांकरि, बिलाई, भेलन।

सं० श्रद्धधान--क० पु० श्रद्धायुक्त, मुअतकिद।

सं० श्रद्धा--(श्रत्=विश्वास,धा=रखना) स्त्री० विश्वास, भरोसा, भक्ति, गुरु और शास्त्र के वचन में पक्का भरोसा, २ आदर, ३ इच्छा, चाह, ४ बल, ताकत।

सं० श्रम--(श्रम्=मिहनत करना) स्त्री० वा पु० मिहनत, थकावट, क्लांति, दौड़ धूप, कष्ट, परिश्रम, २ तप, तपस्या।

सं० श्रमजीवी--क० पु० मजदूर, भारवाहक। [दुःखा।

सं० श्रमित--क० पु० थकित, थका

सं० श्रमी—क० पु० मेहनती।

सं० श्रय }
श्रयण } (श्रि=सहारा लेना) पु० अवलम्ब, सहारा, भरोसा।

सं० श्रवण—(श्रु=सुनना) पु० कान, सुनने की इंद्री, २ सुनना।

सं० श्रवणा—(श्रु=सुनना) स्त्री० बाईसवां नक्षत्र।

सं० श्राद्ध—(श्रद्धा) पु० पितरों को शास्त्रकी रीतिसे जल और पिंडदेना।

सं० श्रान्त—(श्रम्=थकना) क० पु० क्लान्त, थका हुआ।

सं० श्रान्ति—भा० स्त्री० थकावट, थकवाई।

प्रा० श्राप—(सं० शाप) पु० धिक्कार, दुराशिष, बददुआ।

सं० श्रावक—(श्रु=सुनना अपनेधर्मको) पु० जैनी, जिन मतको माननेवाला, २ श्रोता, सुननेवाला।

सं० श्रावण—(श्रवण एक नक्षत्र का नाम. इस महीने में पूरा चाद इस नक्षत्र के पास रहता है और पूर्णमासी को यह नक्षत्र होता है) पु० इसी से एक महीनेका नाम श्रावन हुआ।

सं० श्रावणी—(श्रावण) स्त्री० श्रावन की पूर्णी, राखी।

सं० श्री—(श्रि=सेवा करना जो विष्णु की सेवा करती है, या जिस को हर संसार सेवता है) स्त्री० लक्ष्मी, विष्णुपत्नी, २ सम्पदा, धन, दौलत, ३ शोभा, सुन्दरता, यह शब्द देवताओं और बड़े आदमियों और पवित्र पोथियों आदि के साथ बड़ाई और मान के लिये लगाया जाता है और कभी कभी दो श्री अथवा पांच छः आदि १०८ श्री तक लिखते हैं, जैसे श्रीरामचन्द्र, श्रीकृष्ण, श्रीयज्ञदत्त पण्डित श्रीभागवत् पुराण आदि—यहां मत् या युक्त, या युत शब्द छिपा हुआ है और कभी २ इन शब्दों के साथ भी बोलते हैं, जैसे श्रीमान्, श्रीयुत, श्रीयुक्त आदि।

सं० श्रीखण्ड—(श्री=शोभा, खण्ड=टुकड़ा) पु० चन्दन।

सं० श्रीचक्र—(श्री+चक्र) पु० त्रिपुरा, सुन्दरी देवीकी पूजाका यंत्र।

सं० श्रीनिवास—(श्री=लक्ष्मी, निवास=जगह, जो लक्ष्मी के पास रहते हैं या जिनके पास लक्ष्मी रहती है) पु० विष्णु, भगवान।

सं० श्रीपति—(श्री+पति) पु० विष्णु, भगवान।

सं० श्रीफल—(श्री+फल) पु० नारियल, २ बिल्व।

सं० श्रीमत् }
श्रीमान् }
श्रीमन्त } (श्री=शोभा, मतु=वाला,) पु० भाग्यवान, धनवान, नामवर, श्रीयुत।

सं० श्रीयुक्त } (श्री=शोभा, लक्ष्मी,
श्रीयुत } युक्त वा युत मिला
हुआ) गु० भाग्यवान्, धनवान्, श्रीमान्।

सं० श्रीवत्स--(श्री=शोभा, वत्स= चिह्न) पु० विष्णु।

सं० श्रुत--(श्रु=सुनना) कर्म० पु० सुनाहुआ, समझाहुआ, पु० शास्त्र।

सं० श्रुति-- (श्रु=सुनना) स्त्री० वेद, २ कान, ३ सुनना।

सं० श्रुवा } (श्रु=चूना या टपकना)
स्रुवा } स्त्री० होम का चाटू, खैर का बना हुआ चम्मच हाथ के आकारका।

सं० श्रेणि } (श्रि=सेवा करना)
श्रेणी } स्त्री० पांत, पंक्ति, क़तार।

सं० श्रेष्ठ--(प्रशस्य शब्द को श्र हो जाता है प्र=बहुत, शंस्=सराहना) गु० बहुत अच्छा, सब से अच्छा, उत्तम, सब से बड़ा।

सं० श्रेष्ठाचार--(श्रेष्ठ + आचार) पु० उत्तम रीति, उम्दा तरीक़ा।

सं० श्रोता-- (श्रु=सुनना) क० पु० सुननेवाला, सुनवैया।

सं० श्रोत्र--(श्रु=सुनना) पु० कान, सुनने की इन्द्रिय।

सं० श्रोत्रिय--क० पु० वैदिक, वेद पाठक, वेदपाठी, वेद पढ़नेवाला।

सं० श्लाघा--(श्लाघ्=सराहना) स्त्री० सराह, प्रशंसा, तारीफ़, २ चाह, इच्छा।

सं० श्लाघ्य--कर्म० प्रशंसा योग्य, क़ाबिलतारीफ़।

सं० श्लेष--(श्लिष्=मिलना) पु० मिलाव, संयोग, २ एक अलंकार जिस में एक शब्द के बहुत अर्थ होते हैं, जैसे, "कीकर पाकर तार,
जामन फलसा आमिला"
"सेव कदम कचनार,
पीपल रची तून तज"
इस में बहुत से पेड़ों के नाम दिखाई देते हैं पर इसका अर्थ यह है कि परमेश्वर ने तुझ पर कृपा की कि जिसको तू चाहती थी सोही आमिला, सो हे कची स्त्री अब उसके पैरों की तू सेवा कर और अब अपने प्यारे को एक पल भर भी मत छोड़। [जुकाम।

सं० श्लेष्मा--पु० कफ, खखार,

सं० श्लोक--(श्लोक=बढ़ना, या इकट्ठा करना) पु० चार पद का संस्कृत छंद, २ यश, कीर्ति, कीरति, नामवरी।

सं० श्वपच--(श्वन्=कुत्ता, पच्=पकाना, अर्थात् कुत्तेको खानेवाला) पु० चंडाल।

सं० श्वशुर--(शु = जल्दी, अश=पाना) पु० ससुर, पति या पत्नीकाबाप।

सं० श्वश्रू--(श्वसुर) स्त्री० सास, ससुर की लुगाई।

सं० श्वान--(शिव=बढ़ना, या जाना) पु० कुत्ता, कुक्कुर।

सं० श्वास--(श्वस्=सांस लेना) पु० सांस, प्राण, दम।

सं० श्वेत--(श्वित्=धौला होना) गु० धौला, सफेद।

सं० श्वेतद्वीप--(श्वेत+द्वीप) पु० वैकुण्ठ, २ एक द्वीप का नाम।

(ष)

सं० ष--पु० केश, हृदय, गु० श्रेष्ठ, विज्ञ।

सं० षट्--(षष्) गु० छः ६।

सं० षट्ऊर्म्मि-(बुभुक्षा च पिपासा च प्राणस्य मनसः स्मृतौ। शोकमोहौ शरीरस्य जरामृत्यु षडूर्म्मयः) प्राण को भूख, व प्यास व मनकी स्मृति में शोक, मोह व शरीर को जरा और मृत्यु ये छः ऊर्म्मियां होती हैं।

सं० षट्कर्म--(षट्+कर्म) पु० स्नान, संध्या, जप, तर्पण, देवता का पूजन आदि, (१ वेद पढ़ना, २ दूसरे को पढ़ाना, ३ यज्ञ करना, ४ दूसरे को कराना, ५ दान देना, और ६ दान लेना ये ब्राह्मण के छः काम हैं)।

सं० षट्कोण--(षट्+कोण) पु० छःकोना खेत छः खूंट खेत, २ वज्र।

सं० षट्पद--(षट्+पद) पु० भौंरा।

सं० षट्प्रयोग--१ शान्ति, २ वशीकरण, ३ स्तम्भन, ४ विद्वेषण, ५ उच्चाटन, ६ मारण।

सं० षट्रसभोजन--(षट्=छः, रस =स्वाद, भोजन=खाना) पु० मीठा, खट्टा, खारा, कडुआ, कसैला, और तीता, इन छः रसों से मिला हुआ खाना।

सं० षट्वदन, षडानन (षट्=छः, वदन या आनन=मुंह) पु० कार्तिकेय, महादेव का बेटा।

सं० षट्वर्ग—पु० काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मात्सर्य।

सं० षट्शास्त्र--(षट्+शास्त्र) पु० न्याय, वैशेषिक, मीमांसा, वेदान्त, सांख्य और पातञ्जल, ये छः शास्त्र इनको षट्दर्शन भी कहते हैं (दर्शन शब्दको देखो)।

सं० षडङ्ग—(षट्+अङ्ग) पु० शरीर के छः भाग, जैसे दो हाथ, दो पांव, शिर, और कमर, २ वेद के छः अंग, (जैसे १ शिक्षा, २ कल्प, ३ व्याकरण, ४ निरुक्त, ५ ज्योतिष, ६ छन्द, वेदाङ्ग शब्द को देखो)।

सं० षडङ्घ्रि--(षट्=छः, अंघ्रि=पांव) पु० भौंरा, भ्रमर।

सं० षण्ड--(षण् ...) ... बैलका समूह, ...

सं० षण्ढ– पु० नपुंसक, हिजड़ा, मुखन्नस ।

सं० षष्टि–(षष्=छः, पर आगे ति-प्रत्यय के आने से उसका अर्थ दश गुना होता है) गु० साठ ।

सं० षष्ठ–(षष्) गु० छठा ।

सं० षष्ठी–(षष्) स्त्री० छठ, छठी तिथि, षष्ठीदेवी ।

सं० षोडश–(षट्=छः, दश=दस) गु० सोलह, १६ ।

सं० षोडशदान-(षोड़श + दान) पु० सोलह चीज़ों का दान, जैसे १ धरती, २ आसन, ३ पानी, ४ कपड़ा, ५ दीपक (या दीपक के लिये तेल) ६ अनाज, ७ पान, ८ छत्र, ९ सुगन्धित चीज़, १० फूलों की माला, ११ फल, १२ सेज, १३ खड़ाऊं, १४ गाय, १५ सोना, १६ रूपा या चांदी ।

सं० षोडशभुजा–(षोड़श=सोलह भुजा=हाथ) स्त्री० सोलह हाथकी दुर्गा, देवी की मूरत ।

सं० षोडशसंस्कार या कर्म (१ गर्भाधान, २ पुंसवन, ३ सीमन्त, ४ जातकर्म, ५ नामकरण, ६ निष्क्रमण, ७ अन्नप्राशन, ८ चूड़ाकर्म, अर्थात् मुण्डन, ९ कर्णवेध, १० उपनयन अर्थात् यज्ञोपवीत, ११ वेदारंभ, १२ समावर्तन अर्थात् ब्रह्मचर्य, १३ विवाह, १४ गृहाश्रम १५ द्विरागमन, १६ वानप्रस्थ, १७ महावाक्यपरिसमाप्ति, १८ संन्यासविधि, १९ सर्वसंस्कार होम विधिः, २० मृतककर्म ।

सं० ष्णुषा–स्त्री० बहू, पुत्रभार्य्या जैसे " स्नुषेयं तवकल्याण" ।

(स)

सं० स–(सो=नाश करना) पु० विष्णु, २ सांप, ३ शिव, ४ पखेरू, भृगु, ५ समुच्च० साथ, सहित, समेत, (जैसे सजीव, जीवसहित) २ बराबर, वही, एकही (जैसे सधर्म एकही धर्म का) ३ साम्हने ।

सं० संक्षिप्त–सर्म० कम की हुई, मुख्तसिर की हुई ।

सं० संक्षेप--(सम्=साथ, क्षिप्=फेंकना) पु० सारअंश, सारभाग, मुख्तसर ।

प्रा० संगत--(सं० सङ्गति) स्त्री० मेल, साथ, सोहबत, २ वह जगह जहां सिख अपने धर्म की रीति रसम करते हैं ।

प्रा० संचना } सांचना } (सं० सञ्चयन, सम्=अच्छीतरह से, चि=इकट्ठा करना) क्रि० स० इकट्ठा करना ।

सं० संज्ञा--(सम्=अच्छी तरह से, ज्ञा=जानना) स्त्री० इस्म, नाम, चीज का नाम, २ बुद्धि, ३ चेतना, ४ गायत्री, ५ सूर्य की स्त्री ।

प्रा० संजोवना--(सं० संयोजन, सम्, युज्=मिलना) क्रि० स० तैयार करना।

सं० संन्यासी-सन्यासीशब्दकोदेखो।

प्रा० संपत--(सं० सम्पद्) स्त्री० सम्पदा, धन, दौलत।

प्रा० संभलना--क्रि० अ० थंभना, ठहरना, सहारापाना, खड़ा होना, गिरते २ थंभजाना।

प्रा० संभालना, संभारना (सं० सम्भारण सम, भृ=पकड़ना) क्रि० स० थांभना, पकड़ना, सहारा देना, मदद देना, सहायता देना।

सं० संयम--(सम्=अच्छीतरह से, यम्=रोकना) भा० पु० नेम, नियम, व्रत के दिन कितनी चीजों के खाने पीने की रुकावट, इन्द्रियनिग्रह, परहेज, बन्धन।

सं० संयमी-क० पु० मुनि, इन्द्रियरोधक।

सं० संयुक्त--(सम्=साथ युज=मिलना) गु० मिला हुआ, लगा हुआ, जुड़ा हुआ।

सं० संयुग--(सम्=साथ, युज्=मिलना) पु० लड़ाई, युद्ध, संग्राम।

सं० संयुत--(सम्,यु=मिलना) त्रि० मिला हुआ, लगा हुआ।

सं० संयोग--(सम्, युज्=मिलना) पु० मेल, मिलाप, सम्बन्ध, दैव योग, संयोग, इत्तिफाक़।

सं० संयोजित--कर्म० मिलायागया।

सं० संरम्भ--(रभ्=कोसना) पु० कोप, आक्रोश, वेग।

सं० संराधन-(सम्,राध=सेवाकरना) भा० पु० सब प्रकार से सेवाकरना, चिन्तन करना।

सं० संराव--(सम्+रु=बोलना) पु० ध्वनि, शब्द।

सं० संलग्न--(सम्, लग्=मिलना) क० पु० मिलित, संयुक्त।

सं० संलाप--(सम्, लप्=कहना) भा० पु० परस्पर कहना, बाहमगुफ्तगू करना।

सं० संवत्--(सम्, वत्=जाना) पु० विक्रमादित्य राजाका चलाया हुआ साल, बरस, सन्।

सं० संवत्सर--(सम्+वत्सर) पु० बरस, संवत्, साल, सन।

सं० संवाद--(सम्, वद=कहना) पु० बात चीत, चर्चा, झगड़ा, कथा, संदेश=संदेसा, समाचार।

प्रा० संवारना--क्रि० स० सजाना, सुधारना, निखारना, तैयार करना।

सं० संशय--(सम्, शी=सोना, यह सम्=उभयों के साथ सोने से इसका अर्थ सन्देह करना हो जाता है) पु० सन्देह, शक।

सं०संशयात्मन्—पु०संदिग्ध अन्तःकरण, संशयात्मा, अस्थिरचित्त, डामा डोलमन ।

सं० संशोधन--(शुध्=शुद्ध करना) भा०पु० संशुद्धि, नज़रसानी, दुबारा देखना, ध्यान से देखना ।

सं० संसर्ग--(सम्=साथ, सृज्=पैदा होना) पु० संगत, सोहबत, सम्बन्ध, मेल ।

सं० संसार--(सम्=साथ,सृ=जाना) पु० जगत्, जग, दुनिया ।

सं०संसारी--(संसार) गु० संसार का,दुनियाका, लौकिक,दुनियादी ।

सं० संसृति-- सम्=साथ,सृ=जाना) स्त्री० संसार, जगत्, आवागमन ।

सं० संस्कार--(सम्=शुद्ध, कृ=करना) पु० पवित्रता, सफ़ाई, शुद्ध करनेकी रीति,२ मरम्मत,३प्रारब्ध।

सं० संस्कृत-(सम्=शुद्ध,कृ=करना) गु० अच्छी भांति से सुधारा हुआ, उत्तम, पवित्र, पु० एक बोली जिसको हिंदू पवित्र समझते हैं और देववाणी अर्थात् देवताओं की बोली कहते हैं और जिस में हिंदुओं के वेद शास्त्र लिखे हुए है और इस बोली का व्याकरण और सब बोलियों से बहुत पूरा और अच्छा है ।

सं० संहार--(सम्, हृ=लेना, पर सम्=उपसर्ग के साथ आने से अर्थ नाश करना होता है) पु० नाश, विनाश, २ प्रलय, संसार का नाश, ३ एक नरक का नाम, ४ एकभैरव का नाम ।

प्रा०संहारना—(सं० संहारण) क्रि० स० नाश करना, मार डालना ।

सं०संहिता--(सम्=अच्छी भाँतिसे, धा=रखना)स्त्री०मनु आदि आचार्यों के बनायेहुये धर्मशास्त्र, पुराण, इतिहास आदि,कर्मकाण्ड,वेदका भाग ।

प्रा० सकट } (सं०शकट)पु०गाड़ी,
सगड } छकड़ा ।

प्रा० सकत } (सं०शक्ति) स्त्री०
सगत } ज़ोर, बल, ताक़त, (शक्ति शब्द को देखो) ।

प्रा०सकना--(सं०शक्=समर्थहोना) क्रि० समर्थ होना, किसी काम के करने का बल रखना ।

प्रा० सकरा } (सं० संकीर्ण) गु०
संकड़ा } तंग, संकेत, छोटा ।

सं० सकर्म्मक--(स=साथ,कर्म=कर्म कारक) पु० ऐसीधातु अथवाक्रिया जिसमें कर्म हो, जैसे खाना, पीना, लेना, देना आदि ।

सं० सकल--(स=साथ,कला=अंश, कल्=गिनना) गु० सब, सारा, सिगरा, पूरा, संपूर्ण, समग्र, तमाम ।

सं० सकाम-(स=साथ, काम=इच्छा) गु० कामना सहित, चाहनेवाला, २ सफल।

प्रा० सकार--(सं० सकाल) पु० सवेरा, भोर, प्रभात, प्रातःकाल।

प्रा० सकारना--(सं० स्वीकरण) क्रि० स० सही करना, मानना, अंगेजना, मंजूर करना।

प्रा० सकुचना-(सं० सङ्कोचन, सम्=साथ, कुच्=सिकुड़ना) क्रि० अ० लजाना, शर्माना, संकोच करना, २ डरना। [वह, एकदफम्‌।

सं० सकृत्-अव्य० एकबार, एकमर्त-

प्रा० संकेत-गु० सकड़ा, तंग, छोटा।

प्रा० सकोड़ना--(सं० सङ्कोचन)। क्रि० अ० सिमटना, सिकुड़ना, २ क्रि० स० पीछे खेंचलेना, समटलेना।

सं० सखा-(स=बराबर, ख्या=कह-लाना) पु० मित्र, दोस्त, साथी, बन्धु, संगी।

सं० सखी--(सखा) स्त्री० सहेली, सथिनी, संगिनी, आली।

सं० सगर-(स=साथ, गर=विष, जहर, जो जहर के साथ पैदा हुआ) पु० अयोध्या के एक राजा का नाम जिस से समुद्र का नाम सागर हुआ, गु० जहरीला, विषैला।

सं० सगा-(सं० स्वकीय, स्व=अपना) गु० अपना, संबन्धी, समधी, नातेदार, रिश्तेदार,—सगाभाई=अपना भाई, एक बाप का बेटा।

प्रा० सगाई } (सं० स्वकीयता) स्त्री०
सगावत } भाई चारा, नाता, अपनायत, रिश्ता, २ मंगनी, निस्बत, ३ नीच जात की लुगाई का दूसरा व्याह।

सं० सगुण--(स+गुण) गु० गुण सहित, रजोगुण, सतोगुण, तमोगुण सहित।

सं० सघन-(स+घन) गु० गहरा, घना, गहन।

सं० सङ्कट-(सम्=साथ, कट=घेरना) पु० दुःख, कष्ट, आपदा, विपत्, तकलीफ, आफत।

सं० सङ्कर--(सम्=मिला हुआ, कृ=फैलना) पु० मिली हुई जात, और जात के पुरुष से और जात की स्त्री से पैदा हुआ मनुष्य, दोगला, वर्णसंकर, खिचड़ी, दोजानका।

सं० सङ्कर्षण-(सम्, कृष=खींचना) पु० श्रीकृष्ण का बड़ा भाई, बलदेव जो पहले देवकी के गर्भ से निकल कर दूसरी मा रोहिणी के पेट में आ लिया इस लिये इनका नाम हुआ

सं० सङ्कलन-(सम्, कल=गिनना) पु० जोड़, जोड़ना।

सं० सङ्कलित--क्र्मि० जोड़ा हुआ, जमा, संगृहीत।

सं० सङ्कल्प--(सम्=साथ, कृप्=समर्थ होना) पु० मन की इच्छा, कामना, मनोरथ, २ प्रतिज्ञा, नियम, नेम, प्रहर। [दीहुई।

सं० सङ्कल्पित--क्र्मि० दत्त, अभिप्रेत,

सं० सङ्काश--गु० सदृश, समान।

सं० सङ्कीर्ण--(सम्=साथ, कृ=बिखरना) गु० बहुत मनुष्यों का मिलाव, भीड़ भाड़, घनाघन, तंग।

सं० सङ्कीर्णता--भा० स्त्री० तंगी, सकराई, कोताही। [यशगाना।

सं० सङ्कीर्तन-भा० पु० वर्णन करना,

सं० सङ्कुल-(सम्=खूब, कुल=इकट्ठा होना) गु० खूब भरा हुआ, बहुत आदमियों या जीवों से भरा हुआ।

सं० सङ्केत--(सम्, कित्=जानना) पु० सैन, इशारा, चिह्न, २ वचन।

सं० सङ्कोच-(सम्, कुच=सिकुड़ना) पु० लाज, शर्म, २ सिमटाव, तकल्लुफ़।

सं० सङ्कोचन--भा० पु० लपटाव, सिकुरना, यंत्रण।

सं० सङ्कोचित } क० सकुचा हुआ,
सङ्कुचित } सिकुरा हुआ, लज्जित।

सं० सङ्कोची--क० पु० शर्मिन्दा, पसोपेश करनेवाला, दब्बू, लज्जालु।

सं० संक्रम-(क्रम्=जाना) पु० दुर्गमार्ग, क़िला की राह, आक्रमण, हिसार, घिराव, जलबाँध।

सं० संक्रमण--भा० पु० संक्रान्ति, पर्य्यटन, राशियों का बदलना।

सं० संक्रान्त--पु० मेल, मिलाप।

सं० संक्रान्ति (सम्=साथ, क्रम्=जाना) स्त्री० सूर्य अथवा और ग्रहों का एकराशिसे दूसरी राशि पर जाना।

सं० संक्रामक--क० पु० पर्य्यटक, घूमनेवाला।

सं० सङ्ख्या (सम्, ख्या=प्रसिद्ध होना) स्त्री० गिनती, शुमार।

सं० सङ्ग--(सम्=साथ, गम्=जाना, अथवा सञ्ज=मिलना) पु० मेल, संबन्ध, संयोग, साथ।

सं० सङ्गति-(सम्=साथ, गम्=जाना) स्त्री० मेल, साथ, सङ्गत, सोहबत।

सं० संगम--(सम्=साथ, गम्=जाना) पु० मिलना, मेल, मिलाव, संयोग, २ एक नदी का दूसरी नदी के साथ अथवा समुद्र के साथ मिलना, ३ मैथुन, स्त्रीसंग।

सं० सङ्गर--(सम्=साथ, गृ=निगलना

वा निकालना) पु० लड़ाई, युद्ध, झगड़ा, २ आपदा, ३ विष, ४ समी का पेड़, ५ प्रतिज्ञा ।

सं० सङ्गी--(सङ्ग) गु० साथी, संगी, मिलापी, मित्र ।

सं० सङ्गीत--(सम्=अच्छी तरह से, गै=गाना) पु० गाने की विद्या, गाना, गाने नाचने की विद्या, गु० वर्णित, कथित ।

सं० संगृहीत--(सम्=अच्छी तरह से, ग्रह्=लेना) कर्म० पु० इकट्ठा किया हुआ, संग्रह किया हुआ, संकलित, तालीफशुदः ।

सं० संग्रह--(सम्=अच्छी तरह से, ग्रह्=लेना) पु० इकट्ठा, एकट्ठा, संचय, तालीफ ।

सं० संग्रहण--भा० पु० संग्रह, संचय ।

सं० संग्रहणी—स्त्री० बहुतदस्त आना, नाम रोग ।

सं० संग्रहीता--(सम्=अच्छी तरह से, ग्रह्=लेना) क० पु० संग्रह कर्ता, जोड़नेवाला ।

सं० संग्राम--(संग्राम=लड़ाई करना) पु० लड़ाई, युद्ध, रण, जंग ।

सं० संग्राहक--क० पु० संग्रहकर्ता ।

सं० संग्राही--क० पु० संग्रहकर्त्ता, जमाकरनेवाला, इकट्ठाकरनेवाला ।

सं० सङ्घट्टक--(सम् + घट्ट=रगड़ना) क० पु० जोड़, मिलानेवाला, रगड़नेवाला, रचनेवाला ।

सं० सङ्घट्टन--(घट्ट=चलना) भा० पु० मेलना, गढ़ना, रचना, साथ ।

सं० सङ्घर्ष--(घृष्=घिसना) पु० रगड़ा, परस्पर रगड़ना, स्पर्द्धा, प्रभंजन ।

प्रा० सच--(सं० सत्य) गु० सत्य, ठीक, सांच, हां, निश्चय, २ पु० सत्य, सचाई, सचावट, क्रि० वि० ठीक ठीक, यथार्थ ।

प्रा० सचमुच--बोल० ठीक ठीक, यथार्थ ।

सं० सचराचर--(स=साथ, चर=चलने वाला, अचर=नहीं चलने वाला) गु० जीव, जन्तु, पेड़, पत्थर आदि सब समेत ।

प्रा० सचाई } (सं० सत्यता)
सच्चाई } भा० स्त्री० सच, सांच, सचावट, ईमानदारी, खराई शुद्धता ।

सं० सचि } (सच्=बांधना, या
सची } सींचना) स्त्री० इन्द्राणी, इन्द्र की पत्नी ।

सं० सचिव--(सच्=बांधना, या सींचना) पु० मंत्री, सलाह देनेवाला ।

सं० सचेत--(स=साथ, चेत=बुद्धि या होश) पु० चौकस, सावधान, होशियार ।

सं० सचेतन--(स=साथ, चेतन=बुद्धि

ज्ञान) गु० ज्ञानवान्, बुद्धिमान्।

प्रा० सचौटी—(सच) स्त्री० सचाई, सचावट।

सं० सच्चा—(सं० सत्य) गु० ठीक, सत्य, यथार्थ, ईमानदार, विश्वासी, धार्मिक, खरा, शुद्ध, सात्त्विक।

सं० सच्चिदानन्द—(सत्=सदा, या सत्=सच्चा) चित्=चैतन्य, आनन्द=प्रसन्न) पु० ब्रह्म, परमेश्वर, परमात्मा, परब्रह्म।

प्रा० सज—(सं०सज्ज सज्स्=जाना) स्त्री० डौल, रूप, धज, शोभा।

प्रा० सजधज—बोल० बनाव, तैयारी, रूप, शोभा।

प्रा० सजग—(स=साथ, जागना=होशियार होना) गु० सावधान, सचेत, होशियार, खबरदार।

प्रा० सजन } (सं० सज्जन) पु०
सजना } बड़ा आदमी, २ प्यारा, पति, ३ स्त्री० प्यारी, प्रिया।

प्रा० सजना-- (सं०सज्ज, सज्स्=जाना) क्रि० अ० तैयार होना, २ बनना, बनाव करना, फबना, सोहना।

प्रा० सजनी--(सं०सज्जन) स्त्री० सखी, सहेली।

सं० सजल--(स+जल)गु० पानी से भराहुआ, गीला, भीगा, तर, नम।

प्रा० सजला--पु० चार भाइयों में तीसरा स्त्री० पानी से भरी हुई।

प्रा०सजाई--(सजाना) स्त्री० तलवारके म्यान, या परतले की बनाई, २ तैयारी।

सं०सजाति—(स=बराबर, या एकही जाति=जात) गु० एक जाति का।

सं० सजातीय—(स+जाति) गु० एक जाति का, एक तरह का।

प्रा० सजाना—(सजना) क्रि०स० तैयार करना, बनाना, सुधारना।

प्रा० सजावट—भा० स्त्री० तैयारी, बनावट।

प्रा० सजीला--गु० सुडौल, सुन्दर।

सं०सजीव—(स+जीव) गु० जीता हुआ, जीव सहित, जिन्दा।

सं० सजीवनी—(सजीव)स्त्री०गु० प्राण देनेवाली।

सं०सज्जन-(सत्=सच्चा, जन=मनुष्य) गु० सत्पुरुष, साधु, भला आदमी कुलवान्, बड़ा आदमी, भद्रपुरुष।

सं० सञ्चय--(सम्=अच्छी भांतिसे चि=इकट्ठा करना) पु०ढेर, इकट्ठा, संग्रह, राशि।

सं० सञ्चारक—(सम्, च =चलना) क० पु० नायक, रहबर, रहनुमा।

सं० सञ्चारण—भा०पु० प्रकाशन, विकाशन, संचालन, संचार, फैलाव।

सं० सञ्चारिका—(सम्.चर्=जाना) स्त्री० दूती जो नायक का संदेशा नायिका को या नायिका का संदेशा नायक को पहुंचाती है, २ घ्राण, नासिका, ३ युग्म, युगल, जोड़ा।

सं० सञ्चालन-(सम्.चल्=जाना) भा० पु० चलाना, फैलाना।

सं० सञ्चित—(सम्.चि=इकट्ठा करना) म्पै० इकट्ठा किया हुआ, बटोरा हुआ, संग्रह किया हुआ।

सं० सज्ञान—(स+ज्ञान) गु० ज्ञान सहित, ज्ञानी, ज्ञानवान्, बुद्धिमान्।

सं० सट--स्त्री० जटा, शिखा, चोटिया, केशर, अयाल, २ मिलाव, गझिन।

प्रा० सटक--स्त्री० लचीली छड़ी जो एक ओर मोटी होती है और दूसरी ओर पतली होती है।

प्रा० सटकना—क्रि० अ० भागजाना, खसकना, दौड़ जाना, चलाजाना।

प्रा० सटना--(सं० सम्बद्ध, सम्=अच्छी तरह से, नद्=बांधना) क्रि० अ० मिलना, जुड़ना, चिपकना।

प्रा० सटपटाना—क्रि० अ० घबराना, अचंभे में होना, चिहुंकना।

प्रा० सड़क—स्त्री० राजपथ, बादशाही रस्ता, रोट।

प्रा० सड़क--गु० मस्त, मतवाला।

प्रा० सड़ना--क्रि० अ० गलना, पचना, बिगड़ना, खराब होना।

प्रा० सँड, सँडा } गु० मोटा, जोरावर, बलवान्, मजबूत, हृष्ट पुष्ट।

प्रा० सँडमुसँड--गु० खूब मोटा ताजा और जोरावर।

प्रा० सँड़सी, सँड़ासी, सँड़सी } (सं० सन्दंशिनी, सम् खब, दंश्=काटना) स्त्री० [illegible], संगसी।

प्रा० संडास—पु० [illegible], पाखाना।

सं० सत्—(अस्=होना) गु० सच, ठीक, सत्य, २ ब्रह्म, परमेश्वर, ३ पु० आदर, ४ विद्यमानता।

प्रा० सत—(सं० सत्त्व) पु० जोर, बल, २ सार, हीर, रस, शक्ति, ३ सतोगुण।

सं० सततं--(सम्=साथ, तन्=फैलाना) क्रि० वि० लगातार, निरंतर।

प्रा० सत्तमी—(सं० सप्तमी) स्त्री० सातवीं तिथि।

प्रा० सतरह—(सं० सप्तदश) गु० सात और दश।

प्रा० सतलड़ी—(सात+लड़) स्त्री० सात लड़ की माला।

प्रा० सतसठ—(सं० सप्त षष्टि) गु० साठ और सात, सरसठ।

प्रा० सतसई स्त्री०, सतसैया पु० } (सं० सप्त शती) दश दोहों का नाम जिसमें सात सौ [illegible]

ने (जो कि ग्वालियर का रहने वाला था) बनाई, इसमें ७००दोहे व्रजभाषा में लिखे हैं।

प्रा० सतहत्तर--(सं० सप्त सप्तति, सप्त=सात, सप्तति=सत्तर) गु० सत्तर और सात।

प्रा० सताना--(सं० सन्तापन, सम् =साथ, तप्=तपाना) क्रि० स० दुःखदेना, छेड़ना, खिजाना, तकलीफ़ देना।

प्रा०सतानन्द--(सं०शतानन्द) पु० गौतम ऋषि का बेटा और जनक राजा का पुरोहित।

सं० सती (सत) स्त्री० पतिव्रता स्त्री धर्मात्मा स्त्री, २ वह स्त्री जो अपने पति की लाश के साथ जल जाती है, ३ दक्ष की बेटी और महादेव की पत्नी जो अपने बाप के अपमान करने से उसके यज्ञ कुंड में गिर कर जल मरी और कहते हैं कि वही सती फिर हिमाचल के घर में पार्वती होकर जन्मी।

प्रा० सतुआ } सत्तू } (सं० शक्तु या सक्तु) पु० भूंजे अनाज का चून, सातू।

सं०सत्कर्म--(सत्=सच्चा या अच्छा कर्म=काम) पु० भलाकाम, अच्छा काम, पुण्य, पवित्र काम, नेककाम, सच्चाकाम।

सं० सत्कार--(सत्=आदर, कृ= करना) पु० आदर, सन्मान, खातिर।

सं० सत्क्रिया--(सत्=अच्छा, कृ= करना) स्त्री० सत्कार, सन्मान, पूजन, उत्तम काम।

प्रा० सत्तर--(सं० सप्तति) गु० दश गुना, सात, सात दहाई। [सीधा।

सं० सत्तम--गु० बड़ा साधु, अति

सं० सत्र--(सद्=चल्) पु० स्थान, यज्ञ, सदा दान, आच्छादन, ढापना, अरण्य, कैतव, कपट, धन, गृह, सर, तालाब।

सं० सत्रशाला--स्त्री० अन्नजलादि के देने का स्थान, धर्मशाला।

सं० सत्राजित--पु० श्रीकृष्ण का श्वशुर, सत्यभामा का पिता।

सं० सत्रिन्--पु० गृहस्थ, यजमान, दानी।

प्रा०सत्ता-(अस्=होना) स्त्री० होना विद्यमानता, २ बल, पराक्रम, ज़ोर, ३ भलाई, उत्तमता।

प्रा० सत्ताईस--(सं० सप्तविंशति) गु० बीस और सात।

प्रा० सत्तान्बे-(सं० सप्तनवति) गु० नब्बे और सात।

प्रा० सत्तावन--(सं० सप्त पञ्चाशत) गु० पचास और सात।

सं० सत्तासी--(सं० सप्ताशीति) गु०

(१) अस्मीतिमनुजोभव-सत्ता=आत्मधारणहेतुव्यापार।

अस्सी और सात।

सं० सत्त्व--(सत) पु० सतोगुण, २ अतिबल, ज़ोर, ३ जीववस्तु, ४ सार, ५ प्राण, ६ व्यवसाय, उद्यम, ७ हृदय, ८ सारल्य, नेचर।

सं० सत्पुरुष--(सत्=अच्छा, पुरुष =आदमी) पु० साधु, सज्जन, भला आदमी।

सं० सत्य--(सत्) गु० सच, ठीक, सही, यथार्थ, निश्चय, २ सच्चा, खरा, ईमान्दार, पु० सांच, सचाई, सचौट, २ सत्ययुग, पहलायुग, ३ शपथ, ४ ब्रह्मलोक।

सं० सत्यता--(सत्य) भा० स्त्री० सचाई, सचौटी।

सं० सत्यभामा--(सत्य=सच, भामा=कोपिनी स्त्री) स्त्री० श्रीकृष्ण की एकपत्नी और सत्राजितकीबेटी।

सं० सत्ययुग--(सत्य+युग) पु० पहला युग,(युग शब्द को देखो)।

सं० सत्यलोक--(सत्य+लोक)पु० ब्रह्मलोक, ऊपर का सातवां लोक।

सं० सत्यवादी--(सत्य=सच, वादी =बोलनेवाला) गु० पु० सच बोलनेवाला, सत्यभाषी।

सं० सत्यव्रत--पु० सत्य=[illegible], [illegible] पु० [illegible]।

सं० सत्यसन्ध--पु० सन्ध=[illegible], [illegible]।

सं० सत्यानाश--(सं० सत्व=सच, नाश=बरबादी) पु० नाश, विनाश, बरबादी।

ग्रा० सत्यानाशकरना--बोल० नष्ट करना, बरबाद करना, खराब करना, बिगाड़ डालना।

ग्रा० सत्यानाशजाना } बोल०
सत्यानाशहोना } नष्ट होना, बरबाद होना, खराब होना, बिगड़ जाना।

सं० सत्वर--(स=साथ, त्वरा=जल्दी) गु० जल्द, उतावला, क्रि० वि० शीघ्र, तुरन्त, झटपट, जल्दी से।

सं० सत्सङ्ग-पु० } (सत्=अच्छा,
सत्सङ्गति-स्त्री० } सङ्ग या सङ्गति साथ) अच्छी सङ्गत, भले आदमी का साथ, अच्छी सोहबत।

सं० सदन--(सद्=जाना, या बैठना जिस में) पु० घर, मकान, जगह, २ पानी।

सं० सदनुमति--(सत्+अनुमति) स्त्री० अच्छी सम्मति, अच्छी सलाह।

सं० सदय--(स=साथ+दया=दया) गु० दयालु, कृपालु, कोमल।

सं० [illegible]--(सत्+[illegible]) पु० [illegible]।

सं० सदा--क्रि० वि० [illegible]

ने (जो कि ग्वालियर का रहने वाला था) बनाई, इसमें ७००दोहे ब्रजभाषा में लिखे हैं।

प्रा० सतहत्तर--(सं० सप्त सप्तति, सप्त=सात, सप्तति=सत्तर) गु० सत्तर और सात।

प्रा० सताना--(सं० सन्तापन, सम्=साथ, तप्=तपाना) क्रि० स० दुःखदेना, छेड़ना, खिजाना, तकलीफ़ देना।

प्रा० सतानन्द--(सं० शतानन्द) पु० गौतम ऋषि का बेटा और जनक राजा का पुरोहित।

सं० सती (सत) स्त्री० पतिव्रता स्त्री धर्मात्मा स्त्री, २ वह स्त्री जो अपने पति की लाश के साथ जल जाती है, ३ दक्ष की बेटी और महादेव की पत्नी जो अपने बाप के अपमान करने से उसके यज्ञ कुंड में गिर कर जल मरी और कहते हैं कि वही सती फिर हिमाचल के घर में पार्वती होकर जन्मी।

प्रा० सतुआ }
सत्तू } (सं० शक्तु या सक्तु) पु० भूंजे अनाज का चून, सातू।

सं० सत्कर्म--(सत्=सच्चा या अच्छा कर्म=काम) पु० भलाकाम, अच्छा काम, पुण्य, पवित्र काम, नेककाम, सच्चाकाम।

सं० सत्कार--(सत्=आदर, कृ=करना) पु० आदर, सन्मान, ख़ातिर।

सं० सत्क्रिया--(सत्=अच्छा, कृ=करना) स्त्री० सत्कार, सन्मान, पूजन, उत्तम काम।

प्रा० सत्तर--(सं० सप्तति) गु० दश गुना, सात, सात दहाई। [सीधा।

सं० सत्तम--गु० बड़ा साधु, अति

सं० सत्र--(सद्=चल्) पु० स्थान, यज्ञ, सदा दान, आच्छादन, ढापना, अरण्य, कैतव, कपट, धन, गृह, सर, तालाब।

सं० सत्रशाला--स्त्री० अन्नजलादि के देने का स्थान, धर्मशाला।

सं० सत्राजित--पु० श्रीकृष्ण का श्वशुर, सत्यभामा का पिता।

सं० सत्रिन्--पु० गृहस्थ, यजमान, दानी।

प्रा० सत्ता-(अस्=होना) स्त्री० होना विद्यमानता, २ बल, पराक्रम, ज़ोर, ३ भलाई, उत्तमता।

प्रा० सत्ताईस--(सं० सप्तविंशति) गु० बीस और सात।

प्रा० सत्तान्बे-(सं० सप्तनवति) गु० नब्बे और सात।

प्रा० सत्तावन--(सं० सप्त पञ्चाशत) गु० पचास और सात।

सं० सत्तासी--(सं० सप्ताशीति) गु०

(१) अन्तर्निमग्नोभावःसत्ता=आत्म आरणानुकूलव्यापारः।

अस्सी और सात।

सं० सत्त्व--(सत) पु० सतोगुण, २ अतिबल, ज़ोर, ३ चीजवस्तु, ४ सार, ५ प्राण, ६ व्यवसाय, उद्यम, ७ हृदय, ८ साख्य, नेचर।

सं० सत्पुरुष--(सत्=सच्चा, पुरुष =आदमी) पु० साधु, सज्जन, भला आदमी।

सं० सत्य--(सत्) गु० सच, ठीक, सही, यथार्थ, निश्चय, २ सच्चा, खरा, ईमान्दार, पु० सांच, सचाई, सचौट, २ सत्ययुग, पहलायुग, ३ शपथ, ४ ब्रह्मलोक।

सं० सत्यता--(सत्य) भा० स्त्री० सचाई, सचौटी।

सं० सत्यभामा--(सत्य=सच, भामा=क्रोधिनी स्त्री) स्त्री० श्रीकृष्ण की एकपत्नी और सत्राजितकीबेटी।

सं० सत्ययुग--(सत्य+युग) पु० पहला युग,(युग शब्द को देखो)।

सं० सत्यलोक--(सत्य+लोक)पु० ब्रह्मलोक, ऊपर का सातवां लोक।

सं० सत्यवादी--(सत्य=सच, वादी =बोलनेवाला) क० पु० सच बोलनेवाला, रास्तगो।

सं० सत्यव्रत--गु० सत्य=संकल्प, सत्यप्रतिज्ञ, पु० त्रिशंकुराजा।

सं० सत्यसन्ध--गु० सत्य=वादी, सादिक़, सच्चा।

सं० सत्यानाश-(सं० सत्य=सच, नाश=बरबादी) पु० नाश, विनाश, बरबादी।

प्रा० सत्यानाशकरना--बोल० नष्ट करना, बरबाद करना, खराब करना, बिगाड़ डालना।

प्रा० सत्यानाशजाना } बोल०
सत्यानाशहोना } नष्ट होना, बरबाद होना, खराब होना, बिगड़ जाना।

सं० सत्वर-(स=साथ, त्वरा=जल्दी) गु० जल्द, उतावला, क्रि० वि० शीघ्र, तुरन्त, झटपट, जल्दी से।

सं० सत्सङ्ग-पु० } (सत्=अच्छा,
सत्सङ्गति-स्त्री० } सङ्ग या सङ्गति साथ) अच्छी सङ्गत, भले आदमी का साथ, अच्छी सोहबत।

सं० सदन--(सद्=जाना, या बैठना जिस में) पु० घर, स्थान, जगह, २ पानी।

सं० सदनुमति--(सत्+अनुमति) स्त्री० अच्छीसम्मति, अच्छी सलाह।

सं० सदय--(स=साथ=दया=कृपा) गु० दयालु, दयासहित, कोमल।

सं० सदसत्--(सत्+असत्) गु० सच झूठ, रास्तदरोग।

सं० सदा-- क्रि० वि० नित, हमेशह, नित्य, रोज रोज।

सं० सदाचार--(सत्+आचार) पु० सनातन धर्म्म, उत्तमाचरण, नेकचलन।

सं० सदानन्द--(सदा+नन्द)पु० सदाशिव, महादेव, २ गु० हमेशह, प्रसन्न।

सं० सदाव्रत--(सदा+व्रत) पु० खाना जो भूखोंको सदा दियाजाय।

सं० सदाशिव--(सदा+शिव) पु० महादेव, शंभु, शिव, शंकर।

सं० सदृश } (स=बराबर, दृश्=देखना) गु० बराबर,
सदृक्ष } समान, तुल्य, एकसा।

सं० सद्गति--(सत्=अच्छी, गति=दशा) स्त्री० उत्तम गति, मुक्ति, मोक्ष, निस्तार, छुटकारा, २ धर्म, नेकी, ३ सम्पदा, सम्पत्ति।

सं० सद्भाव--गु० प्रतिष्ठा,श्रेष्ठता,निष्कपटता, वेमक्र।

सं० सद्म--पु० गृह, मकान।

सं० सद्यः-(स=साथ,दिव्=चमकना) क्रि० वि० तुरन्त, फौरन्, उसीदम, तत्काल, तत्क्षण।

प्रा० सधना-(सं०सान) क्रि०अ० बनना, खूब सिखाया जाना, अच्छी तरह से शिक्षा पाना।

सं० सधवा—(स=साथ,धव=पति) स्त्री० वह लुगाई जिसका पति जीता हो, सुहागिन।

प्रा० सधाना—(सं०साधन) क्रि० स० सिखाना, २बनाना, ३हिलाना।

सं० सध्र्यच—क० पु० सहचर।

सं० सध्रीची—क० स्त्री० सहचरी।

प्रा० सन—(सं० शण शण्=देना) स्त्री० एक पौधा जिस के तारों की रस्सी बनती है।

प्रा० सन=से साथ।

सं० सनक—(सन्=सेवाकरना,देना) पु० एक मुनि का नाम, ब्रह्मा का बेटा, जो सदा बालक रूप रहताहै।

सं० सनत्कुमार—(सनत्=सदा,या ब्रह्मा, कुमार=बालक) पु० ब्रह्मा का बेटा,एक मुनि, जो सदा बालक रूप रहता है।

सं० सनन्द } (स=साथ,नन्द=आनंद) पु० ब्रह्मा का
सनन्दन } बेटा, एक मुनि, जो सदा बालकरूप रहताहै।

प्रा० सनसनाना—क्रि० अ० सनसन ऐसा शब्द करना।

सं० सनातन—(सना=सदा) पु० ब्रह्मा का बेटा, एकमुनि, जो सदा बालक रूप रहता है, गु०नित्य, सदा, हमेशह, अनादि, सदा का, हमेशह का, परम्परा।

सं० सनाथ—(स+नाथ)गु०जिसके मालिक और सहायक हो, सपक्ष।

प्रा० सनाह—(सं० सन्नाह,सम्=अच्छी तरह से, नह्=बांधना) पु० बख़्तर जिरह, कवच ।

प्रा०सनीचर —(सं० शनैश्चर)पु० सातवां ग्रह, २ शनिवार । [गा।

प्रा०सनीचरा—(सनीचर) गु० अभा-

प्रा० सनेह--(सं० स्नेह) पु० प्यार, प्रीत, नेह, छोह, मोह, प्रेम ।

सं० सन्त-(सत्) पु० साधु, सत्पुरुष, सज्जन, धर्मात्मा ।

सं० सन्तत-(सम्=साथ, तन्=फैलना) क्रि० वि० लगातार,निरन्तर, सदा, नित, हमेशह, गु० विस्तीर्ण, फैला हुआ ।

सं० संतति--(सम्=साथ, तन्=फैलना) स्त्री० लड़का बाला, बेटा पोता, सन्तान, वंश ।

सं० सन्तप्त—(सम्=अच्छी तरह से तप्=तपना या तपाना) र्म० पु० तपाहुआ, श्रान्त, थका हुआ, गर्म, २ दुःखी ।

सं०सन्तान--(सम्=साथ,तन्=फैलना) पु० लड़काबाला, वंश,कुटुम्ब।

सं०सन्तापक—क० पु०दुःखदाता।

सं०सन्ताप—(सम्=अच्छी तरहसे तप्=तपना) पु० शोक, शोच, फिक्र, चिन्ता, पीड़ा, दुःख ।

सं०सन्तुष्ट—(सम्=अच्छी तरह से, तुष्=प्रसन्न होना) क० पु० प्रसन्न, तृप्त, हर्षित,मनभरा,सन्तोष के साथ।

सं० सन्तुष्टि--(सम्+तुष्+ति) भा० स्त्री० सन्तोष, प्रसन्नता, सब्र, क़नाअत। [कर।

सं०सन्तोषक—क० पु० तुष्टिकर, तृप्ति

सं० सन्तोष-(सम्=अच्छी भांति से, तुष्=प्रसन्न होना) भा० पु० सब्र,तृप्ति, आनन्द, सुख । [न्दित।

सं० सन्तोषित--र्म० हर्षित, आन-

सं० सन्तोषी—(सन्तोष) क० पु० सन्तोषरखनेवाला, सब्रवाला ।

सं०सन्था—(सं० संस्था सम्=अच्छी तरह से, स्था=ठहरना) स्त्री० पाठ, सबक़, पढ़ना ।

सं० सन्दर्भ—(सम्=अच्छीतरहसे, दृभ्=बनाना) पु० रचना, प्रबन्ध, गुहना, इन्तिज़ाम, गूढ़ार्थप्रकाश।

सं० सन्दिग्ध—(सम्=साथ, दिह्=बढ़ना) क० सन्देहयुक्त, जिस में सन्देह पाया जाय ।

सं० सन्देश—(सम्=साथ, दिश्=देना) पु० संदेशा, समाचार, खबर, वृत्तांत ।

सं०सन्देह—(सम्=साथ, दिह्=बढ़ना, या इकट्ठा करना) पु० शक, संशय, शुबहा, शंका ।

सं०सन्देहक—क० पु० शकी,शुबही, संशयी, सन्देही ।

सं० सन्दोह-(सम्,दुह्=दुहना, पर सम् उपसर्ग के साथ आने से इकट्ठा होना अर्थ होजाता है) पु० समूह, बहुत गिरोह, मजमुआ।

सं० सन्ध-(सम्+धा=रखना) स्त्री० प्रतिज्ञा, मर्यादा, स्थिति,गु० उपविष्ट, बैठा हुआ, मिलित, युक्त।

सं० सन्धान-(सम्=अच्छीभांतिसे, धा=रखना) भा० पु० भेद लेना, खोज, अन्वेषण, पता, २ जोड़ना, मिलाना, ३ युक्ति, ४ परामर्श, ५ कार्य्यप्रवृत्ति, ६ आचरण।

सं० सन्धि-(सम्=साथ,धा=रखना) स्त्री० मेल, मिलाव, व्याकरण में दो अक्षरों का मिलाव, २ सुलह, मेल करना, दो राजाओं के आपस में मेल होना, ३ शरीर में दो हड्डियोंका जोड़, ४ सेंध, ५ दरार, छेद।

सं० सन्ध्या-(सम्=अच्छी तरह से, ध्यै=ध्यान करना) स्त्री० सांझ, सायंकाल, शाम, २ प्रभात, दोपहर, और सांझ इन तीन समय की पूजा जप ध्यान आदि।

सं० सन्नद्ध—गु० लगाहुआ तय्यार।

प्रा० सन्ना-(सं० सन्धान) क्रि० अ० मिलना, जुड़ना, सटना।

प्रा० सन्नाटा-पु० पानी या हवा से जो शब्द होता है।

सं० सन्नाह--पु० कवच, बख्तर।

सं० सन्निधान-(सं०+निधान)पु समीप, निकट।

सं० सन्निधि--पु० समीप, निकट नजदीक, पास।

सं० सन्निपात--(सन्=साथ, नि नीचे, पत्=गिरना) पु० एकतर का रोग जो कफ, वात, और पि के बिगड़ने से होता है, सन्निपात त्रिदोष, सरसाम।

सं० संन्यास-(सम्, नि,अस,=फेंक ना) पु० चौथा आश्रम, संन्यास का धर्म, संसारकी चीजों का त्याग

सं० संन्यासी- (संन्यास) पु०चौथ आश्रमी जो संसार को छोड़ देत है, परमहंस।

प्रा० सन्मान-(सं० सम्मान, सम् साथ, मान=आदर) पु० आदर सत्कार।

प्रा० सन्मुख--(सं० सम्मुख, सम् साथ, या साम्हने, मुख=मुंह) गु साम्हने, आगे, प्रत्यक्ष।

सं० सपक्ष-(स=साथ, पक्ष=पांख या सहायता) गु० सहायक, साथी २ पाँखोंवाला, पाँखों के साथ।

सं० सपदि--(स=साथ, पद=जाना क्रि० वि० तुरंत, झटपट, शीघ्र।

प्रा० सपना-(सं०स्वप्न)पु०नींद जो कुछ देखा जाय, नींद में ज कुछ ज्ञान उपजे, जागने में जो

देखते सुनते मन में चिन्ता करते हैं उन्हीं खयालातको सोतेमें देखना।
सं० सपल्लव--(स+पल्लव) गु० नये २ पत्ते टहनी के साथ।
प्रा० सपुत्र } (सं० सुपुत्र) पु०
सपूत } अच्छालड़का,सुशील बेटा, २ बेटेके साथ, पुत्रसहित।
प्रा० सपोला } (सं०सर्पपोत, सर्प
सपोलिया } =सांप,पोत=बच्चा) पु० सांप का बच्चा।
सं० सप्त--(सप्=मिलना)गु०सात,७।
सं० सप्तचत्वारिंशत्-(सप्त+चत्वारिंशत्) गु० सात और चालीस, सैंतालीस।
सं० सप्तमी--(सप्त) स्त्री० सत्तमी, सातवीं तिथि। [सत्रह।
सं० सप्तदश--(सप्त+दश) गु०
सं० सप्तर्षि--(सप्त+ऋषि) पु० १ कश्यप, २ अत्रि,३ भरद्वाज, ४ विश्वामित्र, ५ गौतम, ६ जमदग्नि, ७ वशिष्ठ।
सं० सप्तसागर--पु०सातसमुद्र, क्षार अर्थात् लवण २ इक्षु, ३ दधि, ४ क्षीर अर्थात् दूध, ५ मधु, ६ मदिरा, ७ घृत।
सं० सप्ताह-(सप्त=सात, अहन्=दिन) पु० सात दिन, हफ्ता, अठवाड़ा।
सं० सप्रीति--(स+प्रीति) गु० प्यारसे,प्यारसहित,प्यार के साथ।
सं० सप्रेम--(स+प्रेम) गु० प्यार, प्यार के साथ।
सं० सफर-पु० } मत्स्य, मछरी,
सफरी-स्त्री० } पुँटी।
सं० सफल--(स+फल) गु० फल सहित, सिद्ध, फल देनेवाला, कृतार्थ, सार्थक, कामयाब।
प्रा० सब--(सं० सर्व) गु०सर्वना० सारा, पूरा, समूचा, संपूर्ण, समस्त।
सं० सबल--(स=साथी, बल=ज़ोर या सेना) गु० बलवान्, ज़ोरावर, सामर्थी, प्रौढ़, २ सेना के साथ।
प्रा० सबेरा } (सं० सुवेला, सु=
सुबेरा } अच्छा,वेला=समय) पु० भोर, बिहान, पोह, तड़का, प्रभात, प्रातःकाल।
सं० सभय--(स=साथ, भय=डर) गु० डरा हुआ, डर के साथ, सशंक, भीतियुक्त।
सं० सभा--(स=साथ, भा=चमकना) धि० स्त्री० समाज, मंडली, २ राजदरबार, दरबार, ३ पंचायत, ४ मजलिस, जलसह।
सं० सभापति--(सभा+पति) पु० सभा का मालिक, मीरमजलिस, प्रेसीडेंट, चेयरम्यन।
सं० सभासद--(सभा=. =बैठना) क० पु० सभा वाला, सभा का मेम्बर,

सं० सभिक—क० पु० मजलिसी, सभ्य, म्यम्बर ।

सं० सभ्य--(सभा) गु० सभा के योग्य, चतुर, बुद्धिमान् ।

सं० सभीत—(स+भीत) म्भ०डरा हुआ, सभय ।

सं० सम्—उपस० अच्छी तरह से, भले प्रकार से, सुन्दरता से, भली भांति से, २ साथ से, ३ बहुत, ४ सब तरह से,५पास,साम्हने,६शुद्ध।

सं० सम—गु० बराबर,तुल्य, समान, सदृश, २ सब, पूरा, ३ साधु, ४ दो, चार, छः आदि की संख्या ।

सं० समक्ष—अ०य० समीप गु० सन्मुख, प्रत्यक्ष, नेत्रगोचर, साम्हने।

सं० समग्र--(सम्=सब तरहसे, अग्र =आगे या सम=सब, ग्रह्=लेना) गु० सब, सारा, पूरा, संपूर्ण ।

सं० समज्या--(सम्=सब, अज्= जाना) धि० स्त्री० सभा, २कीर्ति।

प्रा० समझ—स्त्री० बुद्धि, ज्ञान, अकल, बूझ, २ सम्मति, राय,विचार, ध्यान ।

प्रा० समझना—क्रि० स० जानना, बूझना, विचारना ।

सं० समता–(सम) भा० स्त्री० बराबरी,तुलना,सादृश्य,मुताबिक़त।

सं० समदर्शी—(सम्=बराबर,दर्शी देखनेवाला, दृश=देखना) गु० दोनों ओर बराबर देखनेवाला, पक्षपात नहीं करनेवाला, पक्ष नहीं करनेवाला, अपक्षपाती, वेतअस्सुब।

प्रा० समधन—(समधी) स्त्री० बेटे की या बेटी की सास।

प्रा० समधियाना--(समधी) पु० समधी का घराना ।

प्रा० समधी--(सं० सम्बन्धी) पु० बेटे का या बेटी का ससुर, सगा, नातेदार । [चारों ओर।

सं० समन्तात्—अ०य० सब,सर्वत्र,

सं० समन्वित—गु० संयुक्त, समेत, सहित, साथ ।

सं०समबल—गु० बराबरबलवाला ।

सं०समय--(सम्=साथ,या सबतरफ से, इण्=जाना) पु० काल, वक्त, वेला, समा, २ अवसर, फ़ुर्सत ।

सं० समर--(सम्=साथ,ऋ=जाना) पु० लड़ाई, युद्ध, रण ।

सं० समर्थ--(सम्=साथ,अर्थ=धन) गु० बलवान, योग्य, लायक ।

सं० समर्थन--(सम्=सब, अर्थन= माँगना, याचना) पु०प्रमाण करना, ताईद करना ।

सं० समर्थना—स्त्री० सिफारिश, करना ।

सं० समर्थाधिकारी-क०पु० हाकिम मजाज ।

प्रा० समर्पना—(सं० समर्पण, सम्+ऋ+इ+अन, सम्=साथ, अर्पण=भेंट देना) क्रि० स० देवता को भेंट देना, सौंपना, अर्पण करना।

सं० समवाय—(सम्+अव+इण्=जाना) पु० मिलावट, मेल, इत्तिफाक, सम्बन्ध।

सं० समस्त—(सम्=साथ, अस्=फेंकना, या होना) गु० सब, सारा, सम्पूर्ण, पूरा, तमाम।

सं० समस्या—(सम्, अस्=फेंकना पर सम् उपसर्ग के साथ आने से मिलना या संक्षेप होना अर्थ होता है) स्त्री० श्लोक या दोहे चौपाई आदि संस्कृत और हिंदी छन्दों का एक पद जो उस छन्द को पूरा करने के लिये दिया जाता है, तर्ज, तरह, इशारा।

प्रा० समा } (सं० समय) पु० समय,
समाँ } वक्त, २ बहुतात, ३ दशा, अवस्था, ४ एक ताल, एक लय, एक स्वर, ५ शोभा,—समा बंधना, बोल० राग छाना।

प्रा० समाई—(समाना) भा० स्त्री० समाव, फैलाव, चौड़ाई, गुंजायश, २ सं० साम्य, सन्तोष, धीरज।

सं० समाकुल—(सम्=सब प्रकार से, आकुल=परेशान) गु० व्याकुल, दुःखी, परेशान।

सं० समागम—(सम्=साथ, आगम=आना) पु० आगमन, आना, अवाई, २ मिलना, मुलाकात, मिलाप, संयोग, मजमा, भीड़भाड़, मेला।

सं० समाचार—(सम्=साथ, आ=चारों ओर से, चर्=चलना) पु० संदेशा, खबर, वृत्तान्त, हाल।

सं० समाकर्षण-(सम्+आकर्षण, कृष=खींचना) पु० संचय, तहसील।

सं० समाज—(सम्=साथ, अज्=जाना) पु० सभा, साथ, समूह, झुंड।

प्रा० समाजी—(सं० समाजीय) पु० बजंत्री, तबलची, जो नाच में तबला बजाता है, २ सभासद।

सं० समाधान-(सम्, आ, धा=रखना) पु० किसी शङ्का अर्थात् दलील का ठीक उत्तर, दो आदमी जो किसी बात पर वाद करते हों उनका निबेड़ा करना, शक रफा करना, २ दमदिलासा, ढारस, इत्मीनान, धीरज, शान्ति, ३ परमेश्वर का ध्यान।

सं० समाधि-(सम्, आ, धा=रखना) स्त्री० गहरा और मन से ध्यान, योगाभ्यास, हबसदम करना, इन्द्रियों को रोकना और मन को परमेश्वर के ध्यान में लगाना, २ वह जगह जहां योगी संन्यासियों को ...

सं०समान--(स=बराबर, मा=नापना) गु० बराबर, तुल्य, एकसा, सदृश, एकही, २ (सम्=अच्छी तरह से, अन्=जीना) पु० पांच प्राणों में एक प्राण ।

ग्रा० समाना--(सं०सम्मान, सम्=अच्छी तरह से, मा=नापना) क्रि० अ० अटना, अमाना, भरना, पूरना ।

सं० समाप्त-- (सम्=साथ, आप्=पाना, या फैलना) गु० पूरा, संपूर्ण, होचुका, सिद्ध, इति, ख़त्म, तमाम, अन्त, आख़िर ।

सं० समाप्ति--स्त्री० अवसान, पूर्ति, पूर्णता, खातमा ।

सं०समाप्य-म्र्म० खातमा किया, पूर्ण किया, पूरा करके ।

सं० समारोह--(रुह=चढ़ना) पु० भीड़ भाड़, धूम धाम, जमाव, मेला ।

सं० समास--(सम्, अस्=फेंकना, पर सम् उपसर्ग के साथ आने से इसका अर्थ मिलना, या संक्षेप होना होता है, पु० संक्षेप, अविग्रह, २ व्याकरण में दो तीन आदि पदोंका मेल, व्याकरण में समास छः हैं (१ तत्पुरुष, २ कर्मधारय ३ द्विगु, ४ बहुव्रीहि, ५ अव्ययीभाव, ६ द्वन्द्व)।

सं० समाहित-(सम्+आ+धा=रखना) स्त्री० स्थिर, अचल, मुनमैश्रन, समाधिस्थ । [पुकारना ।

सं० समाह्वान—भा० पु० बुलाना,

सं० समिध—(सम्, इन्ध्=जलना, या चमकना) स्त्री०होमकी लकड़ी।

सं० समीकरण—(सम्=बराबर,कृ=करना) पु० बराबर करना, बीजगणित में एकतरह का गणित जिस में दो राशि बराबर होती हैं ।

सं० समीचीन—(सम्=अच्छी भांति से, अञ्च्=जाना) गु० सच, यथार्थ, ठीक, उत्तम, योग्य, बहुत अच्छा ।

सं० समीप—(सम्=साथ,आप्=फैलना) गु० पास, नगीच, निकट ।

सं०समीर—(सम्=अच्छी भांति से, ईर्=जाना) पु० हवा, पवन, वायु ।

सं० समीहा—(सम्+ईह्=चेष्टा करना) स्त्री० लज्जा, शर्म ।

सं० समुच्चय—(सम्=साथ, उत्=ऊपर, चि=इकट्ठा करना) पु० इकट्ठा, ढेर, राशि, संग्रह, समूह, २ वाक्यों का मेल, अत्फ ।

सं०समुज्झित--(सम्+उज्झ्=त्यागना) म्र्म० त्यक्त, छोड़ा हुआ ।

सं० समुदाय—(सम्=उत्, इण्=जाना) पु० ढेर, समूह, इकट्ठा, राशि, सब, गिरोह ।

सं०समुद्र—(सम्=सबतरहसे, उन्द्=भिगोना, या सम् सब तरह से उद्=ऊपर अथवा बहुत, दा=देना) पु०

सागर, समंदर, जलनिधि (सागर शब्द को देखो)।

प्रा० समूचा--(सं० समुच्चय) गु० सारा, पूरा, सब का सब, तमाम।

सं० समूह--(सम्, ऊह्=तर्क करना पर सम् उपसर्ग के साथ आने से इसका अर्थ इकट्ठा होना होता है) पु० भीड़ भाड़, झुण्ड, थोक, समुदाय, ढेर गिरोह।

सं० समृद्ध--(सम्=सब तरह से, ऋध्=बढ़ना) गु० भागवान्, संपदा-वाला, धनवान्, समर्थ, दौलतमंद।

सं० समृद्धि--स्त्री० बड़ी उन्नति, बड़ी बढ़ती, बड़ी तरक्की।

प्रा० समैं, समै, समैया--(सं० समय) पु० समय, वक्त, २ अवकाश, फुर्सत, अवसर, मौका।

प्रा० समेटना-क्रि० स० इकट्ठा करना, बटोरना, २ सकोड़ना।

सं० समेत--(सम्, आ, इण्=जाना) क्रि० वि० साथ, सहित, संयुक्त, मये।

प्रा० समोना--(सं० शमन, शम्=ठंढा करना) क्रि० स० गर्म पानी में ठंढा पानी डालकर कुछ ठंढा करना।

सं० सम्पत्ति--(सम्=अच्छी तरह से, पद्=जाना) स्त्री० धन, दौलत, सुख, संपदा, सुभाग, बढ़ती, न्यामत।

सं० सम्पद्, सम्पदा--(सम् = अच्छी तरह से, पद्=जाना) स्त्री० संपत्ति, धन, दौलत, विभव, न्यामत, अशिया।

सं० सम्पन्न--(सम्, पद्=जाना) कृ० युक्त, शामिल, पूरा, परिपूर्ण, सम्पूर्ण, सिद्धि, भागवान्, संपदावाला।

सं० सम्पर्क--(सम्+पृच्=मेल) पु० संसर्ग, लगाव, सम्बन्ध।

सं० सम्पात--(सम्, पत् =गिरना) पु० गिरना, २ रेखागणित में छूती लकीर जो चक्रके घेरे को छूने पर बढ़ानेसे उस को काटे नहीं, खतममास।

सं० सम्पाति--(सम्, पत्=गिरना) पु० जटायु गीध का भाई, जिसकी कथा रामायण में है।

सं० सम्पादक--(सम्=अच्छी तरह से, पद्= चलना अर्थात् किसी काम को चलानेवाला, या पूरा करने वाला) कृ० पु० पूरा करनेवाला, प्रबन्धकरने वाला, पानेवाला, कार्य वाहक, निरूपक, समापक, कहने वाला, बयान करने वाला।

सं० सम्पादन--भा० पु० निरूपण, कथन, समाप्ति करना, निष्पादन।

सं० सम्पुट--(सम्=साथ, पुट्=मिलना) पु० डब्बा, २ मिलना।

सं सम्पुटक-- कृ० पु० पिटारा, डब्बा।

सं० सम्पूर्ण--(सम् = सब तरह से, पूर्ण=पूरा) गु० पूरा, परिपूर्ण, सारा, समाप्त।

सं० सम्प्रदान–(सम्=अच्छीतरह से, प्र=बहुत, दा=देना) पु० दान देना, व्याकरण में चौथा कारक, मफऊललहू ।

सं० सम्प्रदाय(सम्, प्र+दा=देना) स्त्री० परम्परा का धर्म, कुल धर्म, परिपाटी, रसूमातक़दीम ।

सं० सम्प्रेषित--(सम्+प्र+इष्=जाना) स्पं० पठया गया, खारिज हुआ, भेजागया ।

सं० सम्बन्ध–(सम्=साथ, बंध्=बांधना) पु० मेल, लगाव, योग, नाता, रिश्ता, २ व्याकरण में छठा कारक या विभक्ति ।

सं० सम्बन्धी--(सम्बन्ध) क० सम्बन्ध रखनेवाला, समधी, नातेदार, रिश्तेदार, मुज़ाफ ।

सं० सम्बल--(सम्ब्=जाना, या सम्=से, वल्=जीना) पु० रस्ता खर्च, २ तोशाराह, मार्गव्यय, ३ पानी ।

सं० सम्बलित-(सम्+वल्=जाना) क० समेत, सहित, मये ।

सं० सम्बुद्ध--(सम्+बुध्=समझाना) स्पं० समझायागया ।

सं० सम्बोधक--(सम्+बुध्=जतलाना) क० पु० जतानेवाला, मुनादी ।

सं० सम्बोधन--(सम्, बोधन=जतलाना, बुध्=जानना) पु० जतलाना, चिताना, सामहने करना, पुकारना, व्याकरण में आठवां कारक या विभक्ति, हर्फनिदा ।

सं० सम्बोधित--स्पं० पुकारागया, जतायागया, मुनादा ।

सं० सम्भव--(सम्, भू=होना) पु० उत्पत्ति, पैदा होना, हो सकना, २ कारण, ३ मिलना, गु० होनहार, होने योग्य, २ उचित, योग्य ।

सं० सम्भावना-(सम्, भू=होना) स्त्री० संभव होना, इच्छा, चाह, ३ संदेह, ४ दुविधा, वह फेल जिससे वर्तमान और भविष्यत् काल जाना जाय ।

सं० सम्भाषण--(सम्=अच्छीतरह से, भाष्=कहना) पु० बोलचाल, बात चीत ।

सं० सम्भोग–(सम्+भुज्=जाना) पु० हर्ष, सुख, सुरति, मैथुन, शृङ्गार भेद ।

सं० सम्भ्रम–(सम्=साथ, भ्रम्=घूमना) पु० घबराहट, हड़बड़ी, वेग, उतावली, घूमना, डर, २ आदर, सन्मान, खातिरदारी ।

सं० सम्मत–(सम्=सबतरह से, मन्=समझाना) स्पं० अनुमत, स्वीकृत, राय के मुवाफ़िक़ ।

सं० सम्मति–(सम्=अच्छीभाँतिसे, मन=जानना) स्त्री० सलाह, विचार, राय, २ चाह, इच्छा ।

सं० सम्मतिपत्र--पु० राज़ीनामा, सुलहनामा ।

सं० सम्मार्जनी--(सम्, मृज्=साफ करना) ण० स्त्री० बढ़नी, झाड़ू, कूंची, बुर्स, कुचरा ।

सं० सम्यक्--(सम्=अच्छीभातिसे अञ्च्=जाना) क्रि० वि० अच्छी भांति से, भले प्रकारसे, ठीक, योग्यता से, २ सब तरह से, सब भांतिसे, लियाक़त के साथ ।

सं० सम्राज् } सम्राट् } (राज्=शोभादेना) पु० सब भूमि का मालिक, राजसूययज्ञकर्ता, सर्वभूमीश्वर, चक्रवर्ती राजा ।

प्रा० सयाना } सियाना } स्याना } (सं०सज्ञान) गु० समझवान्, चतुर, प्रवीण, निपुण, बुद्धिमान्, पक्का ।

सं० सर--(सृ=जाना) पु०सरोवर, तालाब, झील, २ तीर, बाण, ३ पानी, जल ।

प्रा०सरकंडा--(सं०शरकाण्ड) पु० नरकट, नरसल ।

प्रा० सरकना--(सं० सृ=जाना) क्रि० अ० हटना, टलना, चलना, भागना, खिसकना ।

सं० सरघा--(सर=रस, हन्=जाना मारना) स्त्री० मधुमक्षिका, शहदकी मक्खी । [गिरगिट ।

सं० सरट--(सृ=जाना) पु०

प्रा० सरदा--पु० खर्बूज़ा ।

प्रा० सरन } सरना } (सं० शरण) पु० आसरे की जगह, बचाव की जगह, बचाव, पनाह ।

प्रा० सरना—क्रि० अ० बनना, चलना, निकलना, पूरा होना, २ सड़ जाना ।

प्रा०सरपट--स्त्री० बगछूट दौड़, घोड़े की बड़ी दौड़ ।

प्रा० सरपटफेंकना-बोल० घोड़ेको बगछूट दौड़ाना ।

प्रा० सरबरि } सरवरि } स्त्री० बराबरी ।

सं० सरयु } सरयू } (सृ=जाना) स्त्री० एकनदी जो अयोध्या के पास बहती है और उसको घाघरा, घर्घरा, देविका और देवा भी कहते हैं ।

सं०सरल--(सृ=जाना) गु० सीधा, सोझा, २ सच्चा, ईमान्दार, धर्मात्मा, ३ भोला, जो छल कपट न जानताहो, निष्कपट, सीधा सादा, पु० एक पेड़ का नाम जिसको सरो कहते हैं ।

प्रा० सरवर--(सं० सरोवर) पु० ताल, तलाब, झील, पोखरा, तालाब ।

सं० सरस्--(सृ=जाना) पु०तलाव, सरोवर, २ पानी, जल ।

प्रा० सरस } (सं० श्रेयस्) गु०
सरसा } श्रेष्ठ, उत्तम, बहुत अच्छा, २ अधिक, बहुत।

सं० सरस--(स=साथ, रस=स्वाद, या पानी) गु० रसीला, रसवाला, पु० सरोवर।

प्रा० सरसाई-(सरस) भा० स्त्री० अधिकाई, बहुतायत, कसरत, २ उत्तमता।

सं० सरसिज--(सरसि=तलाव में जन्=पैदाहोना) पु० कमल, कँवल।

सं० सरसीरुह-(सरसी=तलाव, रुह् =पैदाहोना) पु० कमल, पद्म, कँवल।

प्रा० सरसों--(सं० सर्षप, सृ=जाना) पु० राई के ऐसी चीज़।

सं० सरस्वती--(सरस्=पानी, वती =वाली, अथवा स=साथ, रस= स्वाद, या पानी, वती=वाली) स्त्री० एक नदी का नाम, २ वाणी, बोली, राग और विद्या गुण आदि की देवी, वागीश्वरी, शारदा, भारती, वाग्देवता।

प्रा० सराप--(सं० शाप) पु० शाप, फिटकार, दुराशिष, बददुआ।

प्रा० सरापना--(सं० शापन) क्रि० स० सराप देना, कोसना, बद- दुआ देना।

प्रा० सरावक--(सं० श्रावक) पु० जैनी, जैन धर्म को मानने वाला।

प्रा० सराह--स्त्री० बड़ाई, तारीफ़, स्तुति, प्रशंसा।

प्रा० सराहना--क्रि० स० बड़ाई क- रना, स्तुति करना, तारीफ़ करना।

सं० सरित् } (सृ=जाना, बहना)
सरिता } स्त्री० नदी, दरिया।

सं० सरित्पति--पु० समुद्र।

सं० सरित्सुत--पु० गंगापुत्र, भीष्म पितामह, २ घाटिया।

प्रा० सरिस } (सं० सदृश या सदृक्ष)
सरीखा } गु० बराबर, समान।

सं० सरीसृप--पु० सर्प, बिच्छू।

सं० सरुज--(स=सहित, रुज्=रोग) गु० रोगी, बीमार, मरीज़।

सं० सरूप-(स=बराबर, रूप=डौल) गु० बराबर, समान।

प्रा० सरूप--स्वरूप शब्दको देखो।

प्रा० सरेखा--(सं० श्लेषा) स्त्री० नवां नक्षत्र।

फा० सरेश--(सरेस) पु० एक लसलसीचीज़ जिससे लकड़ी आदि की चीज़ें जोड़ते हैं सींग, और खुर के छीलन से बनता है।

सं० सरोज--(सरस्=तालाब, जन्= पैदाहोना) पु० कमल, कँवल, पद्म।

सं० सरोजभव--(सरोज=कमल, भू=जन्मना) पु० ब्रह्मा।

प्रा० सरोता--ग्रा० पु० सुपारी का- टने का औज़ार।

सं० सरोरुह—(सरस्=तालाब, रुह=पैदा होना) पु० कमल, कँवल, पद्म।

सं० सरोवर—(सरस्=तालाब, वर =बड़ा) पु० बड़ा तालाब, सरवर झील। [कोपित, गुस्से में।

सं० सरोष—(स+रोष) गु० क्रोधित,

प्रा० सरौकरे—क्रि० स० दण्ड करना, कूदना, कला करना, उरझना, सुरझना।

सं० सर्ग—(सृज्=पैदा होना, या छोड़ना) पु० उत्पत्ति, सृष्टि, २ छोड़ना, ३ निश्चय, ४ अध्याय, बाब चयपृटर, स्वभाव।

प्रा० सर्गुण—(सं० सगुण अथवा सर्व गुण) गु० सब गुणों समेत, २ सगुण ब्रह्म।

सं० सर्जक—(सृज्+अक, सृज्=पैदाकरना, त्यागना) क० त्यागी, उत्पत्ति कारक, २ शालवृक्ष।

सं० सर्प--(सृप्=जाना) पु० सांप, नाग।

सं० सर्पराज--(सर्प+राजा) पु० सांपोंका राजा, शेषजी, २ वासुकी।

सं० सर्पिष--(सृप्=इष) पु० घी, घृत, रोगनजर्द।

सं० सर्व--(सर्व् या सृ=जाना) गु० सर्व, सारा, सकल, समस्त, पु० शिव, विष्णु।

सं० सर्वग--(सर्व=सब जगह, गम्=जाना) गु० सब जगह जाने वाला, सबमें जानेवाला, सबमें फैलनेवाला, सर्वव्यापी, पु० शिव, २ परमेश्वर, ३ पानी, ४ हवा, ५ आत्मा, जीव।

सं० सर्वज्ञ--(सर्व=सब, ज्ञा=जानना) क० सब जाननेवाला, पु० परमेश्वर, २ शिव।

सं० सर्वतोभद्र--पु० यज्ञ में प्रधान देवतों का आसन, सिंहासन २ विष्णु का रथ, मण्डलविशेष।

सं० सर्वत्र- (सर्व=सब, त्र=जगह अर्थ में प्रत्यय) क्रि० वि० सब जगह, सब ठौर, सब स्थान में।

सं० सर्वथा--(सर्व=सब, था प्रकार अर्थ मे प्रत्यय) क्रि० वि० सबप्रकार से, सब भांति से, सब तरह से, सब रीतिसे, २ निश्चयकरके, निस्सन्देह, बिनचूक, सचमुच, अवश्य।

सं० सर्वदमन--(सर्व=सब, दम्=दबाना) पु० दुष्यन्त का पुत्र, भरतनृप।

सं० सर्वदा--(सर्व=सब, दा=समय अर्थमें प्रत्यय) क्रि० वि० सदा, सब समय में, नित्य, दिन दिन।

सं० सर्वनाम--(सर्व+नाम) पु० वह शब्द जो नाम के बदले में बोला जाय, जैसे मैं, तू, वह ज़मीर।

सं० सर्वभूत--पु० सब प्राणी, सब मनुष्य, सर्वजन।

सं० सर्वमङ्गला--(स्त्री०) पार्वती

सं० सर्वरस--पु० राधा, धूप, गन्ना।

प्रा० सर्वस } सर्वसु } (सं० सर्वस्व सर्ववसु सर्व=सब स्व वा वसु =धन) पु० सब धन, सब सम्पदा, सब चीज, सबकुछ, कुल शय।

सं० सर्वेश } सर्वेश्वर } (सर्व=सब, ईश या ईश्वर=मालिक) पु० सबका मालिक, परमेश्वर, विष्णु, शिव, सब का ईश्वर।

सं० सर्वोपरि--(सर्व+उपरि) गु० सब से बड़ा।

प्रा० सर्सुराहट--स्त्री० खुजलाहट।

सं० सलज्ज--(स=साथ, लज्जा=लाज) गु० लजालू, शर्मीला, लज्जावान्।

सं० सलभ--पु० पतंगा, टिड्डी, टीड़ी।

प्रा० सलाई--(सं० शलाका) स्त्री० पतले तारका टुकड़ा जिससे आंख में सुरमा डालते हैं, और सलाई उस लोहे के पतले तार के टुकड़े को भी कहते हैं कि जिसको आग में खूब लाल करके अपने वैरी की आंखों में डालते हैं जिस से आंख फूटकर अन्धा हो जाता है, २ सुरमई पेंसिल।

सं० सलिल--(सल्=जाना) पु० पानी, जल, आपः, आब, २ आसान, महल।

प्रा० सलूना } सलोना } (सं० सलवण, स=साथ लवण=निमक) गु० नमकीन, नोन सहित, २ सुस्वाद, मज़ेदार, रोचक, स्वादिष्ठ, ३ सुन्दर, सांवला, सुहावना, खूबसूरत।

प्रा० सलूनो--(सं० श्रावणी) स्त्री० राखीपूनौ, सावन की पूनौ।

प्रा० सल्लू--पु० जूता सीनेका चाम।

सं० सवर्ण-गु० समानवर्ण, एकजाति वाले, सजातीय, हमजिन्स।

प्रा० सवा--(सं० सपाद, स=साथ, पाद चौथा हिस्सा) गु० एक और चौथाई, $1\frac{1}{4}$।

प्रा० सवाई--(सवा) पु० जैपुर के राजाओं की पदवी, गु० सवा, एक और चौथाई।

प्रा० सवांग } स्वांग } (सं० स्वाङ्ग, स्व=अपना, अङ्ग=शरीर, अर्थात् अपने शरीरको और तरह से बनाना) पु० भँडैती, नकल बनाना, वेषबदलना, २ खेल, तमाशा।

प्रा० सवांगलाना } स्वांगलाना } बोल० नकल बनाना, वेष बदलना।

प्रा० सवाद--(सं० स्वाद) पु० रस, मज़ा, लज्जत, २ खुशी।

प्रा० सवाया } सवैया } (सवा) गु० एक और चौथाई, सवा,

सवाका पहाड़ा सवैया । [संख्या ।
सं० सविता--पु० सूर्य्य, बारह की
सं० सव्य-- (सू=पैदा होना) गु०
बायाँ, दहना, प्रतिकूल, विष्णु ।
सं० सव्यसाचिन्-- पु० अर्जुन,
पाण्डुसुत ।
सं०सशङ्क-- (स=साथ, शङ्का=डर या
सन्देह) गु० डराहुआ, सभय,
२ जिस में सन्देह हो ।
प्रा० सस्ता--गु०सौंघा,मन्दा,अर्ज़ां ।
प्रा० सस्ताई--भा० स्त्री० सौंघाई,
अर्ज़ानी ।
प्रा० ससा--(सं० शश) पु० खर्गोश।
प्रा० ससुर--(सं० श्वशुर) पु०पति
का या स्त्री का बाप ।
सं० सह--(सह = सहना) अव्य०
साथ, सहित, संग, समेत, २ बरा-
बर, एकही, वही । [सहायता ।
सं० सहकार-- पु० सुगंधित आम,
सं० सहगामिनी--(सह=साथ गा-
मिनी जानेवाली, गम् = जाना)
स्त्री० सती, अपने पति के साथ
जलनेवाली स्त्री ।
सं० सहचर--(सह=साथ चर्=चल-
ना) पु० साथी, हमराही ।
सं० सहचरी--(सह=साथ चरी=च-
लनेवाली, चर् = चलना) स्त्री०
साथ रहनेवाली, साथनी, संगिनी,
सहेली,२स्त्री, पत्नी,अपनी लुगाई ।

सं० सहज-- (सह=साथ, जन्=पैदा
होना) गु० जो साथही पैदा हो,
स्वाभाविक, जो स्वभावही से पैदा
हो, २ सुगम, आसान, सहल ।
सं० सहदेव--(सह= साथ, दिव्=खे-
लना,या चमकना)पु० पांच पांडवों
में सब से छोटा जो पांडु राजा की
दूसरी रानी माद्री का बेटा था ।
सं० सहन--(सह=सहना) पु०सहना,
बर्दाश्त,सहिष्णुता, गमख्वारी, क्षमा,
गु०सहनेवाला, सन्तोषी, सहनहार ।
प्रा० सहना--(सं० सहन) क्रि०स०
भोगना, उठाना, पाना, भुगतना,
सन्तोष करना ।
प्रा०सहनाई-- (फा०शहनाई)स्त्री०
बांसुरी के ऐसा एक बाजा जिस
को सुनाई भी कहते हैं ।
प्रा० सहमना--(फा० सहमसे बना
है जिसका अर्थ डर है) क्रि० अ०
डरना, घबराना ।
सं० सहमरण--(सह=साथ,मरण=
मरना) पु० पति की लाश के साथ
जलना, सती होना । [हमसर ।
सं० सहयोगी-- गु० साथी,संगती,
प्रा० सहराना } क्रि० अ० सह-
सहिराना } लाना, चुलचुला-
ना, धीरे २ मलना ।
सं० सहवास-- (सह=साथ,वस्=र-
हना) पु० पड़ोस, एकत्रवास ।

सं० सहवासी-- क० पु० पड़ोसी, हमसाया ।

सं० सहसा-(सह=साथ, सो=नाश करना, या सह=सहना) क्रि० वि० झटपट, बिना विचारे, एकाएकी, उतावली से, दफअतन् ।

सं० सहस्र } गु० एक हज़ार, दश
प्रा० सहस } सौ, १००० ।

सं० सहस्रनयन } (सहस्र=हज़ार,
सहस्रनेत्र } नयन वा नेत्र आंख) पु० देवताओं का राजा इन्द्र जिसके हज़ार आंखें हैं ।

सं० सहस्रपाद--पु० विष्णु, सूर्य ।

सं० सहस्रबाहु } (सहस्र=हज़ार,
प्रा० सहसबाहु } बाहु=भुजा) पु० एक राजा का नाम जिसके हज़ार हाथ थे जिसको परशुरामजीने मारा ।

प्रा० सहसाखी--(सं० सहस्राक्ष) पु० इन्द्र, देवताओं का राजा, २ सहसाक्षी, गवाहों के साथ, मये गवाह ।

प्रा० सहसानन--(सं० सहस्रानन, सहस्र=हज़ार, आनन=मुंह) पु० शेष नाग जिसके हज़ार मुंह है ।

सं० सहस्राक्ष--(सहस्र=हज़ार, अक्ष =आंख) पु० इन्द्र, २ विष्णु, ईश्वर, गु० हज़ार आंखवाला ।

प्रा० सहाई--(सं० सहाय) स्त्री० मदा-यत, मदद, गु० मदद करनेवाला ।

सं० सहानुभूति-स्त्री० अनुवेदना, हमदर्दी, दुःख सुख का साथी होना ।

सं० सहाय--(सह=साथ, इण्=जाना) पु० मदद, सहारा, सहाई, अनुकूल, क० पु० सहायक, मददगार, मदद करनेवाला ।

सं० सहायक--(सह=साथ, इण्=जाना) क० पु० मदददेनेवाला, मददगार, रक्षक, उपकार करनेवाला ।

सं० सहायता--(सह=साथ, इण्=जाना) स्त्री० सहाय, मदद, सहारा ।

प्रा० सहारा--(सं० सहायता) पु० मदद, सहायता, आसरा ।

प्रा० सहित-(सह=साथ, इण्=जाना, अथवा सह=सहना) नित्य सं० साथ, संग, समेत, संयुक्त, मेल ।

सं० सहिदानी-स्त्री० निशानी, चिह्न ।

सं० सहिष्णु-- (सह्+इष्णु, सह=सहना) क० पु० सहनशील, क्षमावान्, बरदाश्ती ।

प्रा० सही--(अरबी सहीह) क्रि० वि० सच, बहुत अच्छा, हां, निश्चय ।

प्रा० सहेजना-- क्रि० स० सौंप देना, सिपुर्दकरना, जाँचना, सैंतना, इकट्ठा करना, बटोरना ।

प्रा० सहेली--(स=साथ, आली=सखी) स्त्री० साथ रहनेवाली, सखी, सजनी ।

सं० सहोदर--(सह=एकही, उदर

पेट, जो एकही पेटसे पैदा हो) पु० एकही मासे पैदा हुआ, भाई, सगा भाई।

सं० सह्य--(सह्=सहना) गुण० सहने योग्य, जो सहाजाय।

प्रा० सा--(सं० समान, या सदृश) बराबरी को जतलानेवाला, अव्यय, (जैसे तुमसा) २ कुछ,कुछेक,थोड़ा, (जैसे कालासा=कुछेक काला) ३ कभी २ इसका अर्थ कुछ नहीं दिखाई देता है पर कहीं कहीं जिस शब्द के साथ लगाया जाता है उसके अर्थ में अधिकता जतलाता है (जैसे 'बहुत सा')।

प्रा० सांई--(सं० स्वामी) पु० मालिक, नाथ, स्वामी, २ ईश्वर, परमेश्वर, प्रभु, ३ फकीर।

प्रा० सांईं--पु० हवा के धीरे धीरे चलने का शब्द।

प्रा० सांकर, सांकरी--(सं० शृङ्खला) स्त्री० सिकली, साँकल, २ करधनी, ३ (सं० सङ्कीर्ण) सँकड़ीगली, नाका, घाटा, ४ कठिनता, दुःख, झंझट, ५ गुण० संकड़ा, संकेत, तंग।

प्रा० सांकल--(सं० शृङ्खला) स्त्री० सिंकली, साँकली।

प्रा० सांखू--पु० पुल, सेत, २ एक तरह की लकड़ी।

प्रा० सांग, सांगी--(सं० शङ्कु, या शक्ति) स्त्री० बर्छी, सेल।

प्रा० सांग--सर्वांग शब्द को देखो।

प्रा० सांच--(सं० सत्य) स्त्री० सचाई, सचावट, सत्य, २ गुण० ठीक, सही, सच।

प्रा० सांचा--पु० मिट्टी की एक चीज जिस में कोई चीज ढाली जाती है या उसका रूप बनाया जाता है।

प्रा० सांझ--(सं० सन्ध्या) स्त्री० शाम, सन्ध्या, सायंकाल।

प्रा० सांझा, सांझी--(सं० सन्ध्या) स्त्री० गोबर की मूरते जिनको लड़के लड़कियां आश्विन के कृष्णपक्ष में भीतों पर बनाते हैं।

प्रा० सांड, सांड़--(सं० षण्ड) पु० बैल।

प्रा० सांडनी--स्त्री० ऊंटनी, सांडनीसवार, ऊंट पर चढ़नेवाला।

प्रा० सांडा--पु० एक जानवर जो छिपकली सा होता है और कहते हैं कि उसके तेल में बहुत जोर होता है।

प्रा० सांप--(सं० सर्प) पु० सर्प, नाग, भुजंग।

प्रा० सांभर--(सं० शाकम्भरी) पु० एक शहर जो जैपुर और जोधपुर के राज में है और वहां एक झीन या सर है जिसमें बहुत अच्छा

निमक पैदा होता है, और उस के पास एक पहाड़ पर शाकम्भरी देवी का मंदिर है।

प्रा० सांवला--(सं० श्यामल) गु० कुछेक काला, श्यामवर्ण।

प्रा० सांस--(सं०श्वास) पु० स्त्री० दम, प्राण।

प्रा०सांसउलटीलेना--बोल०हांपना दम नाक में आना (जैसे मरने के समय में होता है)।

प्रा० सांसना--क्रि० स० डाटना,धमकाना, ताड़ना।

प्रा० सांसभरना--बोल० आहभरना,लम्बी सांस लेना, ठंढी सांस लेना, पछतावा करना।

प्रा० सांसरुकना--बोल० दम बन्द होना, गला घुटना।

प्रा० सांसरोकना--बोल०गलाघोटना, दम बन्द करना, गला दावना।

प्रा०सांसा--(सं०संशय)पु० संदेह, शंका, डर, चिंता।

सं० सांसारिक--(संसार) गु० संसारका, संसारी, दुनियावी।

सं० साकं / साकम् } अव्य० सह, साथ।

प्रा० साकबनिक--(सं०शाकवणिक)पु० साग बेचनेवाला, कुंजड़ा।

प्रा० साका--(सं०शाक)पु० संवत्।

प्रा० साकाकरना--बोल० नया संवत् चलाना, बहादुरी के काम करके नामी होना।

प्रा० साकेबंध--बोल० वह राजा जो नया संवत् जारी करता है।

सं० साकार--(स+आकार) गु० आकार सहित, मूर्तिमान्, जिस की मूरतहो।

सं०साक्षात्--(स=साथ, या साम्हने, अक्ष=आंख) क्रि० वि० साम्हने, आंखों के आगे, प्रत्यक्ष, प्रकट, प्रसिद्ध, २ गु० आप, खुद, ३ बराबर, समान।

सं० साक्षी--(स=साथ,या साम्हने, अक्षि=आंख) गु० गवाह, जिसने अपनी आंखों से देखाहो, साखी, शाहिद, २ स्त्री० गवाही, साख, शाहिदी।

प्रा० साख--(सं० साक्ष्य, साक्षी) स्त्री० गवाही, शाहिदी, २ यश, धाक, कीर्ति, नाम, भरम, ३ (सं० शाखा) ऋतु, फस्ल, अनाज काटने का समय।

प्रा० साखी--(सं० साक्षी) स्त्री० गवाही, साख२गु० गवाह, शाहिद।

प्रा० साग--(सं० शाक) पु० हरी तरकारी, भाजी।

प्रा० सागपात--बोल० तरकारी।

सं० सागर--(सगर एक राजा का नाम) पु० समुद्र, समुंदर,—हिन्द

सात समुद्र मानते हैं (१ निमक का, २ दूध का, ३ घीका, ४ दही का, ५ शराब का, ६ ऊखके रस का, ७ शहदका)।

प्रा० सागू—पु० सागूदाना जो बहुत हलका होता है इस लिये बीमार को बहुत बार दूध में या पानी में पकाकर खिलाते हैं।

सं०सागून—पु० एकतरहकीलकड़ी।

सं० सांख्य—(संख्या, सम्=अच्छी तरह से, ख्या=प्रसिद्ध होना) गु० संख्या का, पु० कपिलमुनि का बनाया हुआ एक दर्शनशास्त्र, तत्त्वपरामर्शः।

प्रा०साज—(सं० सज्ज, षस्ज्=जाना) पु०समान,तैयारी,सरंजाम।

प्रा० साजन—(सं० सज्जन) पु० सजन, प्यारा, पति।

प्रा०साजना—(सं० सज्जन, षस्ज्=जाना) क्रि० स० तैयार करना, सजाना, सँवारना, पहनाना।

प्रा०साझा—(सं० साहाय्य, सहाय अथवा साह्य, सह्=सहना) पु० हिस्सा, शराकत, शामिलात।

प्रा० साझी—(साझा) पु० साथी, हिस्सेदार, शरीक, संगी। [र्व।

सं०साटोप—गु० विकट घमण्डी, सग-

प्रा० साठ—(सं०षाष्टि) गु० छः गुना दश, ६०।

प्रा० साठी—(साठ) पु० एक तरह के चांवल जो बरसात के दिनों में पैदा होते हैं और बोने के ६० दिन पीछे पक जाते हैं इस लिये साठी कहलाते हैं।

प्रा० साड़ी—(सं० साटी) स्त्री० लुगाइयों के ओढ़ने का कपड़ा।

प्रा०साढ़ू—(सं० श्याली वोढ़ा,श्याली अपनी लुगाई की बहन, वोढ़ा=पति, वह्=लेजाना) पु० साली का पति, हमजुल्फ।

प्रा० साढ़े—(सं० सार्द्ध स=साथ, अर्ध आधा, गु० आधा के साथ, (जैसे साढ़े तीन=तीन और आधा)।

प्रा० सात—(सं० सप्त) गु० चार और तीन, ७—सात पांच करना, बोल० दुविधा में होना,—सात समुन्दर=एक खेल का नाम।

प्रा०सात्त्विक—(सं०सत्त्व=सतोगुण) गु० सतोगुणी, साधु, सीधा, सच्चा, सरल।

प्रा०साथ—(सं० सार्थ, अथवा सह) संग, सहित, समेत, २ पु० संग, संगति, सोहवत।

प्रा० साथदेना--बोल० मिलना, मेल रखना, शामिल होना।

प्रा०साथवाला--गु० साथी, सखी।

प्रा०साथरी--स्त्री० चटाई, आसनी।

प्रा०साथिन—स्त्री० संगिनी, सहेली, सखी।

प्रा०साथी-(साथ) गु० सङ्गी, मेली। मिलापी, मित्र, दोस्त।

प्रा० साद / साध—(सं०श्रद्धा) स्त्री० इच्छा, चाह, अभिलाषा।

सं० सादर--(स=साथ, आदर=सन्मान) क्रि० वि० आदर से,सन्मान से, खातिर से।

सं० सादृश्य--(सदृश) भा० पु० बराबरी, समानता, तुल्यता।

प्रा० साधु--(सं० साधु) पु० सन्त, सत्यपुरुष, सज्जन, भला आदमी, २ वैरागी।

सं० साधक--(साध्+अक, साध= सिद्धकरना, पूरा करना) क० पु० साधनेवाला, अभ्यास करनेवाला, मन्त्र साधनेवाला, तपस्वी, २ मददगार।

सं० साधन--(साध=सिद्ध करना, पूरा करना) भा० पु०उपाय, यत्न, काम सिद्ध करने की तदबीर, २ अभ्यास, ३ व्याकरण में करण कारक।

प्रा० साधना--(सं० साधन) क्रि० स० सिद्ध करना, पूरा करना, पक्का ठहराना, साबित करना, बनाना, ठीक ठाक करना, २ अभ्यास करना, स्वभाव डालना, बान डालना, सीखना।

सं० साधनीय--(साध्+अनीय) कर्म० सिद्ध करने योग्य, पूरा करने लायक, निष्पाद्य।

सं० साधारण--(स=साथ, धारण= रखना) गु० सामान्य, सहज, २ बराबर, समान।

सं० साधारणधर्म--पु० अहिंसासत्यमस्तेयं शौचमिंद्रियनिग्रहः। दमक्षमार्ज्जवं दानं धर्म्मं साधारणंविदुः १अहिंसा, २सत्य, ३अस्तेय चोरी न करना, ४ शौच, पवित्र रहना, ५ इन्द्रियों को रोकना, ६ दम, मनको रोकना, ७ क्षमा ८ आर्जव, कोमलता, ९ दान यह साधारण धर्म हैं।

सं०साधित--कर्म० निष्पादित, सिद्ध किया गया, पूरा किया गया।

सं०साधु--(साध्=सिद्ध करना, पूरा करना) गु० सन्त, उत्तमजन, सत्य पुरुष, सज्जन, सीधा, सच्चा, २ पु० साध, वैरागी, भला आदमी।

सं०साध्य-(साध्=पूरा करना) कर्म० पूरा होने योग्य,सिद्ध होने के योग्य, जो होसके, २ सुगम, सहज, आसान, ३ चंगा होने के योग्य, जिसका इलाज होसके, ४ पु० जो बात सिद्ध की जाय, जो बातपक्की ठहराई जाय।

प्रा०सान--(सं० शाण, शान् या शो तीक्ष्ण करना) स्त्री० सिल्ली, पथरी, लोहे के हथियारों पर धार चढ़ाने

का पत्थर, एक चक्राकार यंत्र।

सं० सानन्द–(स+आनन्द) गु० आनन्द के साथ, हर्षित, खुश।

सं० सानुकूल–(स+अनुकूल)गु० कृपालु, दयालु, सहायक, मिहरबान।

प्रा० सान्ना–(सं०सन्धान)क्रि०स० मिलाना, गूंदना, २ (सं० शानन, शान्=तीखा करना) चोखा करना, तीखा करना, तेज़ करना, सन लगाना।

प्रा० साबर, सांबर–(सं०शम्बर,या शाम्बर, शम्ब्=जाना) पु० एक तरह का बारह सींगा, २ बारह सींगा का चमड़ा।

सं० साम–(सो=नाश करना पापों का) पु० तीसरा वेद, जिसकी ऋचा गाई जाती हैं।

सं० सामग्री–(सामग्र=सब) स्त्री० सामा,सामान, असबाब, चीजवस्तु।

सं०सामन्त–पु०वीर, बहादुर, पराक्रमी, योद्धा, मल्ल, २ उपराज, जमीदार, एक लाख रुपये साल की आमदनी जिसको है।

सं० सामयिक–गु० समय पर,कालोचित, औसर की, वेरापर की।

सं० सामर्थ्य, प्रा० सामर्थ–(समर्थ)स्त्री बल, शक्ति, पराक्रम, योग्यता।

प्रा० सामर्थी–(सं० समर्थ) गु० बलवान, पराक्रमी, प्रतापी, योग्य।

प्रा० सामा–(सं० सामग्री) पु० स्त्री० नाना प्रकार के भोजन, सामान, सामग्री।

सं० सामाजिक-पु० सभासद,सभ्य।

फ़ा०सामान-(सामान)पु०असबाब, अटाला, सामा, सामग्री।

सं० सामान्य–(समान) गु० मध्यम, साधारण, चलनसार, चलनीक, प्रचलित, आम।

सं० सामान्यतः–गु० साधारण से आमतौर पर।

सं० सामान्या–(सामान्य) स्त्री० साधारण नायिका, धन के लालच से पराये आदमी के पास जाने वाली, वेश्या, व्यभिचारिणी, सामान्या नायिका तीन तरह की हैं, (१ अन्य संभोगदुःखिता, २ वक्रोक्तिगर्विता, ३ मानवती)।

सं० सामीप्य–(समीप) भा० पु० समीपता, समीपी, नजदीकी, निकटता, पड़ोस।

सं० सामुद्रिक–(स=साथ, मुद्रा=चिह्न) भा० पु० एक विद्या जिससे स्त्री पुरुष के हाथ पैर के चिह्नों से उनके भले बुरे भागको बतलाते हैं।

प्रा० सामना, साम्हना–(सं० सन्मुख) पु० सन्मुख, आगा, अगवाड़ा।

सं० साम्प्रत—अव्य० अधुना, इदानीं, योग्य, उचित, अब।

प्रा०साम्हनाकरना—बोल० लड़ाई करना, लड़ना, चढ़ाई करना, मुक़ाबिला करना।

सं०सायङ्काल—(सायम्=सांझ, सो=नाश करना और काल=समय) पु० सांझ, संध्या का समय, दिन का अन्त।

सं०सायुज्य—(स=साथ,युज्=मिलना) पु० एक प्रकार की मुक्ति, परमेश्वर में मिल जाना, एक हो जाना, एकत्व, अभेद।

सं० सार—(सृ=जाना) पु० गूदा, मज्जा, हीर, सत, सत्त्व, रस, जल मूल, २ बल, ज़ोर, ३ मूलबात, असलमतलब, खुलासा, ४ क़ीमत, मोल, ५ खाद, खात, ६ लोहा, ७ धन, ८ लाभ, फायदा, फल, ९ गु० बहुत अच्छा, उत्तम, श्रेष्ठ।

प्रा० सार—(सं० शार, अथवा शारि शृ=मारना) स्त्री० चौपड़कीगोटी।

सं० सारङ्ग—(सृ=जाना) पु० एक राग का नाम, २ मोर, ३ सांप, ४ बादल, ५ मोर की बोली, ६ हरिन, ७ पानी, ८ एक देश का नाम, ९ चातक, पपीहा, १० हाथी, ११ राजहंस, १२ सिंह, १३ कोकिला, १४ एक देश का नाम, १५ कामदेव, १६ कई प्रकार के रंग, १७ भौंरा, मधुमक्खी, १८ धनुष्, १९ स्त्री, २० दीपक, २१ वस्त्र, २२ शंख, २३ चंदन, २४ कपूर, २५ कमल, २६ आभरण, शोभा, सुवर्ण, २७ केश, २८ पुष्प, २९ छत्र, ३० रात्रि ३१ भूमि, ३२ दीप्ति।

“ **सारँगने सारँग गह्यो।**
मोर सांप
“ **सारँग बोल्यो आय॥**
बादल।
“ **जोसारँग सारँग कहै।**
मोर मोर की बोली।
“ **सारँग मुंह ते जाय॥**
सांप।

अर्थ—मोर ने सांप को पकड़ा और बादल गर्जा, जो मोर अपनी बोली बोले, तो सांप मुंह से निकल कर भागे। (कहते हैं कि मोर का यह स्वभाव है कि जब बादल को गर्जते सुनता है तो बहुत खुशी से बोलता है और नाचता है)।

सं०सारङ्गी—(सृ=जाना) स्त्री०एक बाजे का नाम, किंगिरी।

सं० सारण—(सृ=जाना) पु०रावण के एक मंत्री कानाम,२अतिसार रोग।

सं० सारथि—(सृ=जाना, या स+रथ) पु०रथवान, रथके घोड़े हांकने वाला, गन्ता, सूत।

सं० सारदा—(सार=तत्त्व, दा=देने वाली, दा=देना) स्त्री० सरस्वती, गु० सार देने वाली।

प्रा० सारना--(सं० साधन) क्रि० स० बनाना, करना, पूरा करना, सिद्ध करना।

सं० सारस--(सरस्=तलाव) पु० एक तरह का पखेरू, २ चांद, ३ कमल, ४ कमर में पहनने का गहना, ५ गु० सरोवर की चीज़।

सं० सारस्वत--(सरस्वती)पु०एक देश का नाम, २ उस देश का मनुष्य, पंचगौड़ (१ सारस्वत, २ कान्यकुब्ज, ३ गौड़ ४ उत्कल, ५ मैथिल) ये विन्ध्याचल के उत्तर वासी हैं पंचद्राविड़ (१ महाराष्ट्र २ कार्नाटक, ३ गुरजर, ४ द्राविड़, ५ तैलङ्ग) ये विन्ध्याचल के दक्षिणवासी हैं ब्राह्मणों में एक जात, गु० सरस्वती देवी का, सरस्वती नदी का।

प्रा०सारा—(सं०सर्व)गु०पूरा,सम्पूर्ण, सब,समस्त,२(सं०श्याल,श्यै=जाना) पु० अपनी लुगाई का भाई, साला।

सं० सारिका--(सृ=जाना) स्त्री० मैना पखेरू।

प्रा० सारी--(सं०शाटी) स्त्री०साड़ी स्त्रियों के पहनने अथवा ओढ़ने का कपड़ा, २ (सं० सार) दूध का सार, मलाई।

सं० सार्थक--(स+अर्थ)गु० अर्थ सहित, २ सफल, सिद्ध, मौजूच्म।

सं० सावर्ण, सावर्णि पु०सवर्णा, सूर्य पत्नी में जन्मा या सूर्य का पुत्र, १४ मनु में अष्टममनु।

सं० सावित्र--पु० रुद्र, महादेव, सूर्य, वसुदेवता, ब्राह्मण।

सं० सार्वभौम--(सर्वभूमि) पु० सब संसार का राजा,चक्रवर्त्ती राजा, २ उत्तर दिशा का हाथी।

सं० साल--(सल्=जाना) पु० एक पेड़ और उसकी लकड़ी का नाम, साखू।

प्रा० साल--(सं०शल्य,शल्=जाना) पु० गांसी, कांटा, शूल, २ छेद, ३ (सं० शाला) स्त्री० जगह, घर, ४ पाठशाला, स्कूल, ५ (सं० शृगाल) पु० सियार, गीदड़।

प्रा० सालन, सालना पु० मांस, मांस की तरकारी, २ साग, तरकारी।

प्रा० सालना--(सं० शल्य, शल्=जाना) क्रि० स० छेदना, वेधना, धसाना,पैठाना, वर्मा से छेदकरना, वर्माना,पारकरना, चुभाना, २ क्रि० अ० दुखना; पिराना, खटकना, दुखपाना।

प्रा० सालसा--पु० एक तरह की औषध जिसका अर्क पीने से शरीर

का लोहू साफ होता है और इस को अरबी में 'उशबह और अंगरेज़ी में सार्सा पैरिल्ला' कहते हैं।

प्रा० साला--(सं०श्याल, श्यै=जाना) पु० स्त्री का भाई, २ (सं० शाला) स्त्री० जगह, घर।

प्रा० साली--(सं० श्याली) स्त्री० स्त्री की बहिन।

[कपड़ा।

प्रा० सालूर--पु०एक तरह का लाल

सं० सालू--(पु० मंडूक, मेढ़क।

प्रा०सालोतरी--(शालि=घोड़ा,होत्र =वैद्य पु० घोड़ों का वैद्य। [बालक।

प्रा० सावक--(सं०शावक) पु०बच्चा,

प्रा० सावकरन --(सं० श्यामकर्ण पु० काला कान का घोड़ा।

सं० सावकाश--(स=साथ,अवकाश =अवसर)पु० अवसर, अवकाश, समय, मौका, फुर्सत, सुभीता, काम से छुट्टी।

सं० सावधान--(स=साथ, अवधान =चौकसी, अव्, धा=रखना) गु० चौकस, सचेत, खबरदार, सुचेत, अग्रसोची, होशियार, सजग।

सं० सावधानी--(सावधान) स्त्री० चौकसी, चौकसाई, सुचेती, सुरता, खबरदारी, होशियारी, चेतौनी, अग्रसोच।

प्रा० सावन--(सं० श्रावण) पु० चौथा हिन्दी महीना।

प्रा० सावनहरेनभादौंसूखे--बोल० सदा सरीखे, सदा एक से।

प्रा० सावन्त--(सं० सामन्त) गु० बीर, बहादुर, योद्धा, पराक्रमी।

प्रा० सास, सासू--(सं०श्वश्रू) स्त्री० पति या पत्नी की मा।

प्रा० साह--(सं०साधु) पु० महाजन, बड़ासौदागर, कोठीवाल, दूकानदार, भला आदमी।

सं० साहस--(सहसा) पु० बल, जोर, वेग, २ ढारस, हिम्मत, वीरता, पराक्रम, जुरअत।

सं० साहसी--(साहस) गु० तेज, सबल, २ हिम्मतवाला, निडर, पराक्रमी, वीर, ढीठ।

सं० साहित्य--(सहित=मेल) पु० मेल, मिलान, साथ, २ एक विद्या जिससे बोली के बोलने और लिखने की सुन्दरता जानी जाती है और इस विद्या के अंग अर्थात् हिस्से अलङ्कार, रस, छंद आदि हैं।—और कवियों के बनाये हुए काव्यों को भी साहित्य कहते हैं, जैसे भट्टि रघुवंश, कुमारसंभव, माघ, किरातार्जुनीय, मेघदूत, विदग्धमुखमण्डन, और शान्तिशतक आदि, इल्म अदब।

प्रा० साही } (शल्लकी,शल्ल्=जाना)
सेही } स्त्री० कंटकी,एकजानवर जिसकी पीठपर कांटे कांटे होते हैं।

प्रा० साहूकार--(सं० साधुकार,साधु = सच्चा, कार =करनेवाला, कृ=करना) पु० महाजन, बैपारी, हुण्डी वाला,कोठीवाला, बड़ा दुकानदार, २ईमानदार,सच्चा और भलाआदमी।

प्रा० साहूकारी--स्त्री० बैपारी, लेनदेन,सौदागरी, वणिज, व्यवहार, हुण्डी का व्यवहार।

प्रा० सिंगा--(सं० शृङ्ग) पु०तुरही, रणसिंगा।

प्रा० सिंगार--(सं० शृङ्गार) पु० शोभा, गहने कपड़ों की सजावट, २ नौरसों में का एक रस।

प्रा० सिंगारना--(शृङ्गार) क्रि०स० सजाना, सवाँरना, शोभितकरना।

प्रा० सिंघाड़ा--(सं० शृङ्गाट शृंग=बड़ाई, अट्=जाना) पु० एकतरह का फल जो पानी में पैदा होता है, पानी फल।

सं० सिंह-- (हिंस्=मारना) पु०सेर, केशरी, मृगराज, मृगेन्द्र पशुओं का राजा, २ पांचवीं राशि, ३ हिंदुओं में एक पदवी, हिंस् का वर्ण विपर्य्यय होने से सिंह बनगया।

सं० सिंहद्वार--पु० पुरद्वार, फाटक।

सं० सिंहनाद--(सिंह+नाद) पु० शेर का गर्जना, २ लड़ाई का शब्द, सिंहके ऐसा शब्द, भयानक शब्द।

सं० सिंहनी--(सिंह) स्त्री०शेरनी।

प्रा० सिंहपौर--(सिंह+पौर) स्त्री० बड़ा दरवाजा अथवा फाटक जहां बहुत बार सिंह की मूरत रक्खी रहती है।

सं०सिंहलद्वीप--पु०लङ्का,सीलोन।

सं० सिंहविक्रान्त-पु०घोड़ा,अश्व।

सं० सिंहासन--(सिंह+आसन) पु० राजा का आसन, तख्त, पाट।

सं० सिंहिका--स्त्री० राहु की माता, कश्यपपत्नी, २ सिंहनी।

सं०सिकता--स्त्री० बालू, रेत।

प्रा० सिकना--क्रि०अ०सेंकाजाना, भूना जाना।

प्रा० सिकरी--(सं० शृङ्खला) स्त्री० सांकल, संकल, सिकली।

सं०सिक्त--(सिच्=सींचना) ग्मं० सींचा हुआ, कृतसेचन।

प्रा० सिख-(सं० शिष्य) पु०चेला, २ नानकके मतको माननेवाला।

प्रा० सिखर--(सं० सिखर) पु० पहाड़ की चोटी, २ मन्दिरों के ऊपर का गुम्बज।

प्रा० सिखरन-(सं० शिखरिणी) पु० दही में चीनी और किशमिश मिली हुई खाने की चीज।

प्रा० सिखाई—(सिखाना) भा० स्त्री० पढ़ाई, शिक्षा।

प्रा० सिखाना, सिखलाना—(सं० शिक्षण, शिक्ष्=सिखाना) क्रि०स० पढ़ाना, बतलाना, शिक्षादेना, उपदेश देना, २ डाटना, धमकाना, दंडदेना, ताड़नाकरना।

प्रा० सिगरा, सिगरौ, सगरा—(सं० समग्र) गु० सब, सारा, संपूर्ण, हर एक।

प्रा० सिझाना—(सिद्ध) क्रि० स० पकाना, रींधना, उबालना, २ मारडालना। [मंदताई।

प्रा० सिठाई—(सीठा) स्त्री० फिकाई,

प्रा० सिड़—स्त्री० बौड़ाहट, बावलापन, पागलपन, उन्मत्तता।

अं० सिण्डिकेट—थोड़े मेम्बर जिनको सिनेट नियत करती है काम होने के लिये।

प्रा० सिड़ा, सिड़ी—गु० बावला, बौड़हा, पागल, उन्मत्त, मस्त।

सं० सित—(सो=नाश करना) गु० धौला, सफेद, श्वेत, शुक्लवर्ण।

सं० सिद्ध—(सिध्=सिद्ध करना, पूरा करना) पु० एक प्रकार के देवता, २ योगी, व्यासआदि मुनि, ऐसा मनुष्य जिसके वश में अष्ट सिद्धि हों और जिसको भूत, वर्तमान, भविष्यत् की बातें मालूम हों, ज्ञानी, तपस्वी, सन्त, ३ ज्योतिष में एक योग का नाम, ४ गु० पूरा, समाप्त, पक्का, बना, तैयार, २ प्रसिद्ध, विख्यात, ज़ाहिर, ३ सफल, ४ साबित किया हुआ, पक्का ठहराया हुआ, सच्चा ठहराया हुआ, ५ निश्चय किया हुआ, निर्णय किया हुआ।

सं० सिद्धान्त—(सिद्ध+अन्त) पु० सच ठहराई हुई बात, सिद्ध की हुई बात, तर्क अर्थात् दलील से जो बात सच ठहराई जाय, फल, परिणाम, नतीजा, २ सूर्य सिद्धान्त आदि ज्योतिष के शास्त्र।

सं० सिद्धि—(सिध्=सिद्ध करना, पूरा करना) स्त्री० मन के मनोरथ का पूरा होना, मनवांछित फल का मिलना, मन चाही बात का पूरा होना, २ अणिमा आदि आठ सिद्धि (अष्टसिद्धि शब्द को देखो)

सं० सिद्धयोग—पु० कार्यसिद्धि हेतु योग, शुक्रेनन्दा बुधेभद्रा शनौरिक्ता कुजेजया। गुरौपूर्णाचसंयुक्ता सिद्धियोगः प्रकीर्तितः। अर्थ शुक्रवार परिवा, बुधवार दुइज, शनिवार तीज, मङ्गलवार चौथ, बृहस्पतिवार पंचमी, ज्योतिष मतसे उक्तवारों में उक्त तिथि होवें तो सिद्धियोग कहलाते हैं।

प्रा० सिधारना—(सं० सिध=जाना)

क्रि० अ० जाना, बिदा होना, रवाने होना, चलाजाना, क्रि० स० दुरुस्त करना, सवाँरना, ठीकठाक करना, तरतीब देना।

प्रा० सिनकना--क्रि०स० नाकझाड़ना, नाक साफ़ करना।

अं० सिनेट--युनीवरसिटीकेम्यम्बरों की मण्डली।

सं० सिन्दूर--(स्यन्दू=चूना, या टपकना) पु० एक तरह का लाल चूरण जिससे स्त्रियां मांग भरती हैं।

सं० सिन्धु--(स्यन्दू=चूना, या टपकना) पु० समुद्र, समंदर, सागर, २ एक नदी जिसको इंडस और अटक भी कहते हैं, ३ सिंधका देश, ४ हाथी का मद, ५ एक रागिणी का नाम।

सं० सिन्दुर, सिन्धुर--(सिन्धु=हाथी का मद, अर्थात् मद=वाला) पु० हाथी, हस्ती।

सं० सिन्धुरगामिनी--(सिन्धुर=हाथी, गामिनी=चलनेवाली, गम्=चलना) स्त्री० वह स्त्री जिसकी हाथी सी चाल हो, गजगामिनी।

सं० सिप्र--(सप्=मिलना) पु० निदाघजल, पसीना, पांद, घाम।

सं० सिप्रा--(सप्=मिलाना) स्त्री० एक नदी जो उज्जैन के पास है, २ महिषी, भैंस, कुट्टनी, कुटनी, रजस्वला, कपड़ों से हुई स्त्री।

प्रा० सिमटना-क्रि०अ० सिकुड़ना, इकट्ठा होना, बटुरना।

प्रा० सिय, सिया--(सं० सीता) स्त्री० सीता, जानकी, श्री रामचन्द्र की पत्नी और राजा जनक की बेटी।

प्रा० सियपी--(सं० सीताप्रिय) पु० सीतापति श्रीरामचन्द्र, रघुनाथ।

प्रा० सियार, सियाल--(सं०शृगाल)पु० गीदड़।

प्रा० सिर--(सं० शिर) पु० माथा, मस्तक।

प्रा० सिरउठाना--बोल० अपने मालिकसे फिरजाना, बगावतकरना।

प्रा०सिरकरना-बोल०शुरूअकरना।

प्रा० सिरकाढ़ना--बोल० नामी होना, प्रसिद्धहोना, मशहूर होना।

प्रा० सिरकेज़ोर-बोल०अपनेजोरसे।

प्रा० सिरकेभल--बोल०औंधा सिर, मुंहभरा।

प्रा० सिरखुजलाना--बोल० मार खायाचाहना, सज़ाचाहना, पिटाना चाहना।

प्रा० शिरचढ़ा--बोल० घमण्डी, अभिमानी।

प्रा० सिरचढ़ाना-बोल० बड़ाई करना, बड़ा जानना, माथे पर रखना, पवित्र समझना, २ इतराना, [illegible]

होना, ३ आदर मान करना ।

प्रा० सिरझुकाना-बोल० नमस्कार करना, प्रणाम करना ।

प्रा० सिरडुलाना, सिरधुनना } बोल० दुःखसे सिरहिलाना, घबराना, दुःखी होना ।

प्रा० सिरतोड़ना--बोल० वश में करना, अधीन करना, दबाना ।

प्रा० सिरधरना--बोल० वशमेंहोना, अधीन होना, ताबे होना, आज्ञाकारी होना ।

प्रा० सिरनवाना-बोल० गरीबहोना, अधीन होना, वशमें होना, २ नमस्कार करना, शिर झुकाना ।

प्रा० सिरपरधूलडालना--बोल० रोना, विलाप करना ।

प्रा० सिरपरचढ़ाना--बोल० लड़के को बिगाड़ना, इतराना, २ छोटे आदमी को बड़ा करना, ३ आदर मान करना ।

प्रा० सिरपीटना--बोल० रोना, विलाप करना, दुःख करना ।

प्रा० सिरफिराना--बोल० बेफायदहमिहनतकरना, वृथापरिश्रमकरना ।

प्रा० सिरफेरना--बोल० हुक्म नहीं मानना, आज्ञा नहीं मानना ।

प्रा० सिरमारना--बोल० बहुत मिहनत उठाना, मिहनतसे खोजना ।

प्रा० सिरमुंडाना--बो० सबसे मेल छोड़कर फकीर बनजाना ।

प्रा० सिरकी--स्त्री० एक तरह का सरकण्डा जिसकी चटाई बनती है और झोंपड़ों की छावनी होती है, २ एक तरह की चटाई सी चीज़ जिसको मेह के बचाव के लिये गाड़ी पर डालते हैं ।

प्रा० सिरजना--(सं० सर्जन, सृज् =पैदा करना) क्रि० स० पैदा करना, रचना, बनाना ।

प्रा० सिरसींग--पु० दंगा करने वाला, उपद्रवी, बागी, फसादी, बलवाई ।

प्रा० सिरहाना--(शिर) पु० सिर की ओर, सिरकी तरफ, २ तकिया ।

प्रा० सिरा--(सिर) पु० सिर, नोक, अन्त ।

प्रा० सिराना--(शीत) क्रि० अ० ठंढाहोना, २ क्रि० स० ठंढा करना, ३ (सं० सृ = जाना) क्रि० अ० बीतना, चलाजाना, ४ बहना, ५ क्रि० स० भेजना, पठाना ।

प्रा० सिरसि--(सं० शिरीष, शृ=काटना, नाश करना) पु० एक पेड़ का नाम, अथवा उसका फूल ।

प्रा० सिल, सिला } (सं० शिला) स्त्री० पत्थर, चट्टान, साफ और बराबर पत्थर जिस पर सिल बट्टे से मसाले पीसे जाते हैं ।

प्रा० सिलपट--गु० चौपट, उजाड़, २ चौरस, बट्टाधार।

प्रा० सिलबट्टा--(सं० शिलापट्ट,शिला=सिल, पट्ट=पीसने का पत्थर) पु० सिल लोढ़ा।

प्रा० सिल्ली } **सिल्ली** } (सं० शिला) स्त्री० लोहे के हथियारों पर धार चढ़ाने का पत्थर, पथरी, सान।

प्रा० सिवाना--(सं० सीमा) पु० हद्द, सींव, सीमा, अन्त, छोर।

प्रा० सिवार--(सं० शैवाल, शी=सोना) पु० हरी हरी काई सी चीज़ जो तलावों के पेंदों में उगती है।

अं० सिविल--स्त्री० दीवानी का मोहकमा।

अं० सिविलसर्विस--स्त्री० दीवानी की नौकरी।

प्रा० सिसकना--क्रि० अ० सिसकी भरना, ठुनकना, बिसुरना।

प्रा० सिहरना--क्रि० अ० कांपना, थरथराना।

प्रा० सिहरा--(फा० सेह=तीन, और स० हार माला) पु० मौर, मुकुट, माला, जो ब्याह में दुलहा और दुलहिन के शिर पर पहराई जाती है।

प्रा० सिहराना--क्रि० अ० थरथराना सनसना, बालों का खड़ा होना, २ क्रि० स० सहलाना, चुलचुलाना, धीरे २ मलना, ३ थकाना, उचाटना।

प्रा० सिहाना--क्रि० अ० देख के संतुष्ट होना, २ किसी अच्छी चीज़ को देख कर उसके मिलने के लिये मन ललचाना, डाह करना।

प्रा० सींक--स्त्री० एक तरह की घास जिसकी झाड़ू बनती है।

प्रा० सींग--(सं० शृङ्ग) पु० एक कड़ी चीज़ जो चौपायों के शिर में उगती है, शृङ्ग, विषाण।

प्रा० सींगड़ा--(शृङ्ग) पु० बारूद रखने का बरतन, बारूतदान।

प्रा० सींगा--(शृङ्ग) पु० नरसिंगा।

प्रा० सींचना--(सं० सेचन, सिच्=सींचना) क्रि० स० पानी देना, पनियाना, पाटना।

प्रा० सींव--(सं० सीमा) स्त्री० हद, सिवाना।

सं० सीकर--(सीक्=सींचना) पु० जलकण, पानी के कण।

प्रा० सीख } **सिखावन** } (सं० शिक्षा) स्त्री० उपदेश, समझ की बात, नसीहत।

प्रा० सीखना--(सं० शिक्षण, शिक्ष्=सीखना) क्रि० स० पढ़ना, विद्या का अभ्यास करना, पाना।

प्रा० सीजना--(सं० स्विद्=पसीना होना) क्रि० अ० पसीजना, पसीना-

निकलना, २ उबलना, गलना।

प्रा० सीटी--स्त्री० मुंह से सीसीऐसी आवाज निकालना।

प्रा० सीठा—गु० फीका, बेरस, असार।

प्रा० सीढ़ी—(सं० श्रेणि) स्त्री० सोपान, नसेनी, ज़ीना।

प्रा० सीतला—(सं० शीतला, शीत= ठंढा, ला = लेना) स्त्री० माता, चेचक, गोटी।

सं० सीता—(सि=बांधना) स्त्री० जानकी, वैदेही, मिथिला के राजा जनक की बेटी और श्रीरामचन्द्र की पत्नी, २ हलके नीचे एक लोहे का फल लगा रहता है उसे भी सीता कहते हैं—(और जब राजा जनक यज्ञ के लिये हल जोत कर धरती को साफ़ कर रहे थे तब धरती में से एक घड़ा निकला उसमें से एक लड़की निकली, इसी कारण से उसका नाम सीता रक्खा)।

सं० सीतापति—(सीता+पति) पु० श्रीरामचन्द्र।

प्रा० सीताफल--पु० सरीफा खिरीसागर, कुम्हड़ा।

प्रा० सीधा--(सं० साधु) गु० सोझा, सरल, २ साम्हन, सन्मुख, ३ सादा, भोला, निष्कपट, शुद्ध, ४ सच्चा, साधु, खरा, साफ़दिल, धर्मी, ईमानदार, नेक, ५ दाहिना, ६ (सं० सिद्ध) पु० कोरा अन्न, बेपका खाना।

प्रा० सीना—(सं० सीवन, सिव्=सीना) क्रि० स० टांकना, टांका लगाना, टांका मारना, गांठना।

प्रा० सीप, सीपी—स्त्री० समंदर के एक जानवर की हड्डी जिसमें से मोती निकलता है, २ पकाआम।

सं० सीमन्त--पु० केश रचना, मांग काढ़ना, गर्भवती का छठे या आठवें महीने का संस्कार।

सं० सीमा—(सि=बांधना) स्त्री० सिवाना, हद, सींव, २ मर्यादा, अवधि।

सं० सीमाविवाद—पु० अठारह प्रकार के न्याय का एक न्याय, सरहदी झगड़ा।

प्रा० सीय—(सं० सीता) स्त्री० जानकी, वैदेही।

प्रा० सीरा—पु० मोहन भोग, हलुवा।

प्रा० सीरा, सीला—(सं० शीतल) गु० ठंढा, शीतल, गीला।

प्रा० सीस=शीस शब्द को देखो।

प्रा० सीसा—(सं० सीस, या सीसक, सि=बांधना) पु० एक धातु का नाम।

प्रा० सीसों—(सं० शिंशपा) पु० शीशम का पेड़ या उसकी लकड़ी।

सं० सु— गु० उपस० अच्छा, भला, सुन्दर, उत्तम, बहुत, क्रि० वि० अच्छी तरह से, सुख से, सुन्दरता से, २ सुगमता से, सहज में, बे-

मिहनत, ३कभी कभी,४ पूजा और आदर और संपदा आदि अर्थों में भी बोला जाता है।

प्रा० सुकचाना } (सं० सङ्कोच) सुकुचाना } क्रि० अ० लजाना, शर्माना, २ डरना, क्रि० स० किसी को लजाना, चशाना।

प्रा० सुकड़ना—(स० सङ्कोचन) क्रि० अ० सिमटना, इकट्ठा होना।

सं० सुकण्ठ—(सु=अच्छा, कण्ठ=गला) पु० वानरों का राजा सुग्रीव।

सं० सुकर्करा—स्त्री० कठोर मार्ग।

सं० सुकर्म्म—(कृ=करना) पु० उत्तम काम, सप्तम योग, विश्वकर्म्मा।

सं० सुकाल—(सु=अच्छा, काल=समय) पु० अच्छा समय, अच्छी ऋतु, २सौंघाई, सस्ताई, ३बहुतायत।

सं० सुकुमार—(सु=सुन्दर, कुमार=बालक) गु० कोमल, मनोहर, सुन्दर, नाजुक।

सं० सुकृत—(सु=भला कृ=करना) बोल० धर्म, पुण्य, अच्छाकाम, अच्छी करनी, गु० पुण्यात्मा, धर्मात्मा, सुशील, भाग्यवान्।

सं० सुकेत—(सु=अच्छा, केतु=झंडा) पु० एक राक्षस या यक्ष का नाम जो ताड़का का बाप था।

सं० सुकेतुसुता—(सुकेतु+सुता) स्त्री० ताड़का।

सं० सुख—(सुख=सुखीहोना, अथवा सु=अच्छी तरह से, खन्=खोदना (दुःख को) पु० चैन, आनन्द, आराम, कल, शान्ति, हर्ष।

प्रा० सुखचैन— बोल० आराम, चैनचान।

प्रा० सुखपाना—बोल० आराम करना, चैन करना।

सं० सुखद—(सुख=चैन, द=देनेवाला, दा=देना) क० पु० सुखदायी, सुख देनेवाला, सुखदायक।

प्रा० सुखदाई } (सुख=चैन, दा= सं० सुखदायक } देना) क० पु० सुख देनेवाला

सं० सुखधाम—(सुख=चैन, धाम=घर) पु० सुख के घर, सुखदाई।

सं० सुखपाल—(सुख चैन, पाल्=पालना) पु० पालकी, डोली।

सं० सुखमा—(सुख=चैन, मा=नापना) स्त्री० परमशोभा, बहुतही सुन्दरता। [सुखी।

प्रा० सुखारी—(सं० सुख) गु०

सं० सुखावह—(सुख+वह=प्राप्त करना) क० पु० सुखजनक, सुखदाता।

सं० सुखी—(सुख) गु० सुखपानेवाला, सुखभोगनेवाला, सुखिया, सुखारी।

सं० सुगति—(सु=अच्छी, गति=च

ल)स्त्री०अच्छीगति,मुक्ति,छुटकारा।

सं० सुगन्ध-(सु=अच्छी, गन्ध=वास)स्त्री० अच्छीवास,मश्क,खुशबू।

सं० सुगन्धित-(सुगन्ध) क० जिस में अच्छी बास हो, सुगन्धदाता, खुशबूदार।

सं० सुगम-(सु=अच्छी तरहसे,गम्=जाना)गु०सहज, आसान,सरल।

सं० सुगमता--भा० स्त्री० सरलता, आसानी।

सं० सुग्रीव-- (सु=सुन्दर, ग्रीवा=गरदन) पु० वानरों का राजा और सूर्य का बेटा जो किष्किन्धापुरी का राजा और श्रीरामचन्द्र का मित्र और सहायकथा,२विष्णु के रथ का घोड़ा।

प्रा० सुघड़-- (सुघट,सु=अच्छा,घट=वनाहुआ, घट्=वनाना) गु० सुन्दर, सुडौल, सुथरा, मनोहर, वहुत अच्छा।

सं० सुघटित-र्म० सुन्दर रचित।

प्रा० सुचकना--(सं०सुचकित)क्रि० अ० अचंभा करना।

सं० सुचरित--(चर=जाना,खाना) क० पु० श्रेष्ठाचार, शुभाचरण, नेकचलन।

सं० सुचित्--(सु=अच्छा,चित्=मन) गु०सुगम, आसान, २ निश्चिन्त, वेफिक्र,निचिन्त, ३चौकस,सावधान।

प्रा०सुचिताई भा०स्त्री०निश्चिन्ताई, सावधानी, वेफिक्री।

सं०सुचेत--(सु=अच्छी,चेत=सुध गु० चौकस,सावधान,होशियार,सचेत।

सं० सुजन-- (सु=अच्छा, जन=मनुष्य) गु० साधु, सज्जन, भलामानस, भलाआदमी।

सं० सुजनता--भा० स्त्री० सौम्यता, सौजन्यता, सीधापन, भलमनसई, भलमन्सी।

प्रा० सुजान-- (सं० सज्ञानी, सु=अच्छा, ज्ञानी=जाननेवाला) गु०=ज्ञानी, चतुर, प्रवीण, वहुत अच्छा जानने वाला।

प्रा० सुझाना--क्रि०स० दिखाना, वताना, समझाना।

प्रा० सुठि--(सं०सुष्टु,सु=अच्छीतरह से, स्था=ठहरना)गु० सुन्दर,उत्तम, २ वहुत, अत्यन्त।

प्रा० सुडौल / सुढव } (सु=अच्छा,डौलया ढव=रूप)गु०सुघड़, सुथरा,सुन्दर, मनोहर।

सं० सुत--(सु=पैदा होना,जन्मना) पु० वेटा, पुत्र,लड़का।

सं० सुता--(सुत) स्त्री० वेटी, पुत्री, कन्या,लड़की।

प्रा० सुतार--(सं० सुत) पु० वढ़ई, खाती (सं० सुतारा, सु=अच्छा,

तारा=नक्षत्र) अच्छा समय, अवकाश, घात, दांव।

प्रा० सुथरा—गु० अच्छा, सुन्दर, सुडौल, सुहावना। [फकीर।

प्रा० सुथरासाही—पु० नानकसाही

सं०सुदर्शन—(सु=अच्छा, दर्शन=देखना जो अच्छा देखा जाता है) पु० विष्णु का चक्र,२गु० जो देखने में अच्छा हो, सुन्दर, सुहावना।

सं०सुदामा—(सु=अच्छा,दा=देना) पु०एक माली का नाम जिसने मथुरा में जाते समय श्रीकृष्ण को माला पहनाई थी,२ श्रीकृष्णके साथी एक ग्वाल का नाम, ३ श्रीकृष्ण के एक ग़रीब मित्र का नाम जो जाति का ब्राह्मणथा जिसको फिर श्रीकृष्णने बहुतही धनवान् बनादिया,४बादल, ५ एक पहाड़ का नाम, ६ समुद्र।

सं०सुदि—(सु=अच्छी तरहसे, दिव्=चमकना) अव्य० उजाला पख, शुक्लपक्ष।

सं०सुदिन—(सु+दिन) पु० अच्छा दिन, अच्छा समय।

प्रा० सुध / सुधि (सं० सुधी, सु=अच्छी, धी=बुद्धि) स्त्री० चेत, याद, स्मरण, खबरदारी।

प्रा०सुधबुध—(सं० शुद्धबुद्धि) स्त्री० समझ, बूझ, चेत, शुद्धज्ञान।

प्रा०सुधलेना—बोल० खबर लेना।

प्रा० सुधरना—(सं० सुधरण, सु=अच्छी तरह से, धृ=रखना) क्रि० अ० सही होना, अच्छा होना, २ बनना,सफल होना, ३ संभलना।

सं०सुधा—(सु=अच्छी भांतिसे, धे=पीना,या धा=रखना)पु०अमृत,अमी, पीयूष, आबहयात, २ रस, जल।

सं० सुधांशु—(सुधा=अमृत, अंशु=किरण, जिसकी किरणें अमृत के ऐसी आनन्द देनेवाली हैं) पु० चांद, चन्द्रमा, २ कपूर।

सं० सुधाकर—(सुधा=अमृत, कर=किरण) पु० चांद, चंद्रमा, २ कपूर।

प्रा०सुधारना—(सुधरना) क्रि० स० सँवारना,बनाना,अच्छा करना, सही करना, सजाना, ठीक ठाक करना

सं० सुधी—(सु=अच्छी, धी=बुद्धि जिसकी हो) पु० पण्डित, बुद्धिमान्, विद्वान्, सुबुद्धि, विज्ञ।

प्रा०सुन—(सं०शून्य) गु० बेहोश,मूर्छित,शीतांगी,२खाली,छूछा,रीता।

प्रा० सुनसान—बोल० उजाड़, २ चुपचाप, ३ एकान्त, निराला।

प्रा०सुनना—(सं० श्रवण) क्रि० स० कान देना, श्रवण करना।

सं० सुनयना—स्त्री० सुन्दर नेत्र वा-

स्त्री, २ जनकपत्नी ।

प्रा० सुनहरा } (सोना) क० सो-
सुनहरी } नहला, सोने का
या सोना सा ।

प्रा० सुनार—(सं० स्वर्णकार, स्वर्ण =सोना, कार=करनेवाला, कृ= करना । अर्थात् जो सोने की चीज बनावें) क० पु० सोने चांदी की चीज बनानेवाला ।

प्रा० सुनारिन } स्त्री० सुनार की
सुनारनी } स्त्री, सुनार की
लुगाई ।

प्रा०सुनारी—स्त्री० सुनार का काम ।

प्रा० सुनावनी—(सुनाना) स्त्री० मरने के समाचार, जो कोई आद-मी परदेश मे मर जाय उसके मर ने की खबर ।

सं०सुनासीर—(सु=अच्छा, नासीर =सेना का मुँह । अर्थात् जिसकी सेना अच्छी सजी हुई हो) पु० इन्द्र, देवताओं का राजा ।

सं० सुन्दर—(सु=अच्छी तरह से, दृ=आदरकरना) गु० मनोहर, सुरूप, बहुत अच्छा, सुडौल, खूबसूरत ।

सं० सुन्दरता—(सुन्दर) भा० स्त्री० मनोहरता, शोभा, छवि ।

सं०सुन्दरी—(सुन्दर) स्त्री० रूपवती, खूबसूरत स्त्री । [बिन्दी ।

प्रा०सुन्ना—(सं० शून्य) स्त्री० सिफर,

सं०सुपथ—(सु=अच्छा, पथ=रास्ता) पु० अच्छी रस्ता, सुमार्ग, अच्छी राह, २ अच्छा चलन ।

सं०सुपर्ण—(सु=अच्छा, पर्ण=पत्ता, या पर्ण) पु० गरुड़, २ गु० अच्छे पत्तोंवाला ।

सं०सुपात्र--(सु+पात्र) गु० योग्य, भलामानस, उत्तमजन, २ पु० अच्छा बरतन, शरीफ ।

प्रा० सुपारी--स्त्री० एक कड़ा फल जिसको पान के साथ खाते हैं, पूंगीफल । [ता ।

प्रा० सुपास--पु० आराम, सुख, सुभी-

सं० सुपुत्र--(सु=अच्छा, पुत्र=बेटा) पु० सपूत, अच्छा लड़का ।

सं० सुप्त—(स्वप्=सोना) क० पु० निद्रित, सोयाहुआ ।

सं० सुप्ति--भा० स्त्री० नींद, निद्रा ।

सं० सुफल--(सु+फल) गु० सिद्ध, फलदायक, सफल, लाभकारी, २ पु० अच्छा फलवाला पेड़ ।

सं०सुबुद्धि—(सु+बुद्धि) गु० बुद्धि-मान, अच्छी समझवाला, चतुर, प्रवीण ।

सं०सुभग-(सु=अच्छा, भग=ऐश्वर्य) गु० सुन्दर, मनोहर, प्यारा, सौभाग्य-वान, ऐश्वर्यवान, प्रतापी, भागवाला ।

सं० सुभगा--(सुभग) स्त्री० सौभा-

ग्यवती स्त्री, सुन्दर स्त्री, वह स्त्री जिसको उसका पति बहुत चाहे।

सं० सुभगता--(सुभग)भा०स्त्री०उत्तमता, अच्छाई, भलाई।

सं० सुभट--(सु=अच्छा, भट=लड़ाका)पु० वीर, बहादुर।

सं० सुभद्रा--(सु=अच्छा, भद्र=कल्याणरूप) स्त्री० श्रीकृष्ण की बहन, जिसको संन्यासी का रूप धर अर्जुन लेगया था, २ श्रेष्ठ नारी।

सं० सुभाव--(सु+भाव)पु० अच्छा सुभाव, सुशीलता।

प्रा० सुभीता--(सं० शुभ+हित, शुभ=अच्छा, हित=जैसाचाहिये) पु० अवकाश, अवसर, फुर्सत।

सं० सुभुज--(सु+भुज)पु०सुबाहु नाम दैत्य।

सं० सुमति--(सु=अच्छी, मति=बुद्धि) स्त्री० अच्छीबुद्धि, सुमति, भलमनसाई।

प्रा०सुमन--(सं०सुमनस, सु=अच्छा, मनस्=मन। अर्थात् जिससे मन प्रसन्न होजाय) पु० फूल, पुष्प, २ गु० सुन्दर।

सं० सुमना--स्त्री० चमेली, मालती।

प्रा०सुमन्त--(सं०सुमंत्र, सु=अच्छी, मंत्र्=सलाह देना)पु०राजा दशरथ का सारथि और मंत्री।

सं० सुमन्त्रक--का० पु० वजीर, मुशीर, मन्त्री।

प्रा० सुमरण, सुमिरण, सुमरन--(सं०स्मरण) पु० याद, नाम लेना, स्मरण, २ (सं० स्मरणी) स्त्री० माला, जपमाला।

प्रा० सुमरना, सुमिरना--(सं०स्मरण) क्रि० स० याद करना, स्मरण करना, नाम लेना, २ (सं० स्मरणी) स्त्री० माला, जपमाला।

सं० सुमित्रा--(सु=अच्छी तरह से, मिद्=प्यार करना) स्त्री० दशरथ राजा की पत्नी और लक्ष्मण की मा।

सं० सुमुखी--(सु=सुन्दर, मुख=मुँह) स्त्री० सुन्दर मुँहवाली, सुन्दरी।

सं० सुमेरु--(सु+मेरु) पु० मेरु पहाड़ जिसको हिंदू सोने का और रत्नों का बना हुआ कहते हैं और जहां देवता रहते हैं, २ ज्योतिष में उत्तर ध्रुव, ३ जपमाला के सिरे पर का दाना या मनका। [ठसनी।

प्रा० सुम्बा--पु० बंदूक का, कागज,

सं० सुयश--(सु+यश) पुं० अच्छायश, अच्छा नाम, नामवरी।

सं० सुयोग--(सु+योग)पु०अच्छी संगत, सुसंगति।

सं० सुर--(सु=अच्छा, रा=देना, अर्थात् मन चाही चीज को देने वाला, सुर=ऐश्वर्य रखना या चमकना अथवा सु=बहुत बल रखना) पु० देवता, देव, २ सूर्य।

प्रा० सुर--(सं० स्वर) पु० ताल, तान, आवाज़, राग, गान।

प्रा० सुरमिलाना--बोल० एक सुर करना, अच्छे सुर से गाना।

सं० सुरगुरु--(सुर+गुरु) पु० देवताओं के गुरु, बृहस्पति।

सं० सुरङ्ग--(सु+रङ्ग) पु० हिंगलू, २ स्त्री० जमीन के नीचे रस्ता, ३ गु० लाल या तेलिया रंग का (सुरङ्ग जैसे घोड़ा) ४ सुन्दर, जिसका रंग अच्छा हो, चमकीला।

सं० सुरत--(सु=अच्छी तरह से रम्=खेलना) पु० स्त्रीसंग, मैथुन, भोग, विलास।

प्रा० सुरत, सुरता--(सं० स्मृति) स्त्री० सुध, चेत, खबर, याद, ध्यान।

सं० सुरतरु--(सुर+तरु) पु० देवताओं का वृक्ष, कल्पवृक्ष।

प्रा० सुरता, सुरतीला--(सं० स्मर्ता, स्मृ=याद करना) गु० सुचेत, सावधान।

प्रा० सुरती--स्त्री० तमाकू, तम्बाकू।

सं० सुरधेनु--(सुर+धेनु) स्त्री० कामधेनु, इन्द्र की गाय।

सं० सुरनदी--(सुर+नदी) स्त्री० वियत गंगा, आकाशगंगा, मन्दाकिनी, सुरदीर्घिका।

सं० सुरपति--(सुर+पति) पु० देवताओं का राजा, इन्द्र।

सं० सुरपुर-पु०, सुरपुरी-स्त्री० (सुर+पुर, या पुरी) स्वर्ग, इन्द्रलोक, अमरावती।

सं० सुरभि--(सु=अच्छी तरह से, रभ्=बहुत चाहना, या शब्द करना) पु० सुगन्ध, २ वसन्तऋतु, ३ जायफल, ४ चैत का महीना, ५ सोना, ६ (सुरभी) स्त्री० कामधेनु, ७ गाय, ८ धरती, जमीन, गु० सुगन्धित, २ विख्यात, ३ अच्छा, सुंदर, मनोहर।

प्रा० सुरलोक--(सुर+लोक) पु० स्वर्ग, इन्द्रलोक, सुरपुरी।

सं० सुरस--(सु=अच्छा, रस=स्वाद) गु० मीठा, सुस्वाद।

प्रा० सुरसरि, सुरसरिता (सं० सुरसरित्, सुर=देवता, सरित्=नदी) स्त्री० गंगा।

सं० सुरसा--(सुरस) स्त्री० नागों की मा, अहिनकी माता।

सं० सुरसेनप--(सुर+सेन+पा=बचाना) पु० कार्तिकेय, कीर्तिमुख, षडानन।

सं० सुरा--(सुर्=चमकना, या बहुत बल रखना) स्त्री० मदिरा, मद्=दारू, शराब।

सं० सुराङ्गना--(सुर=देवता, अङ्गना=स्त्री) स्त्री० देवताओं की स्त्री, देवपत्नी, अप्सरा।

सं० सुराचार्य–(सुर+आचार्य) पु० देवताओं के गुरु बृहस्पति।

सं० सुरारि–(सुर+अरि) पु० देवताओं के वैरी, असुर, राक्षस, दैत्य।

सं० सुरापगा–(सुर+आपगा) स्त्री० देवनदी, गंगा।

सं० सुरूप–(सु+रूप) गु० सुन्दर, सुडौल, मनोहर।

सं० सुरेन्द्र–(सुर+इन्द्र) पु० देवताओं का राजा, सुरपति, इन्द्र।

सं० सुरेश, सुरेश्वर–(सुर+ईश, या ईश्वर) पु० इन्द्र, २ महादेव, शिव।

सं० सुरेश्वरी–(सुरेश्वर) स्त्री० देवी, दुर्गा, महामाया, योगमाया।

प्रा० सुरैत, सुरैतिन–(सुरत) स्त्री० वह स्त्री जिसके साथ ब्याह नहीं हुआ हो और ऐसेही घर में डाल ली जाय, रखनी, उढ़री, उपपत्नी।

प्रा० सुलगना, सिलगना–(सं० संलग्न) क्रि० अ० जल उठना, लहरना, बलना, धुआं निकलना।

प्रा० सुलझना–क्रि० अ० खुलना, सुधरना।

सं० सुलभ–(सु=अच्छीतरह से, लभ्=पाना) गु० सहज, सुगम, आसान, सहल, २ जो सहजसे मिल जाय।

सं० सुलोचना–(सु=अच्छी, लोचन=आंख, जिसकी हो) स्त्री० जिस स्त्रीकी आंखें अच्छी हों, सुन्दरी, मनोहर स्त्री, २ रावणके बेटे मेघनाद की स्त्री का नाम।

प्रा० सुवन–(सं० सूनु) पु० बेटा, पुत्र, लड़का।

सं० सुवर्ण–(सु+वर्ण) पु० सोना, २ हरिचंदन, ३ सोना गेरू मिट्टी, गु० सुजात, अच्छी जात का, २ सुंदर, चमकीला, ३ सुरंग, अच्छेरंगका।

सं० सुवास–(सु+वास) अच्छा घर, अच्छा मकान, २ स्त्री० सुगन्ध, खुशबू।

सं० सुवासिनी–(सु=सुखसे, वस्=रहना) स्त्री० सुहागिन, २ अपने बाप के घर बहुत रहने वाली स्त्री।

सं० सुबाहु–(सु+बाहु) पु० एक राक्षस का नाम।

सं० सुवेल–(सु=अच्छा, वेल=किनारा, जो समंदर के पास है) पु० समुद्रतट, त्रिकूट पहाड़।

सं० सुशील–(सु+शील) गु० सुस्वभाव, अच्छी चाल चलन वाला, सीधा, साधु।

सं० सुषुप्त–(स्वप्=सोना) कृ० पु० सोनेवाला, ज्ञानशून्य।

सं० सुषुप्ति–स्त्री० सुनिद्रा, नींद जाग्रत्, स्वप्न, सुषुप्ति, तुरीय, इनचार, अवस्था[1] में से एक अवस्था का नाम।

(१) नेत्रस्थ जाग्रतविद्यात्स्वप्न कण्ठेतमाविशेत्। सुषुप्तिहृदयेचैवतुरीयमूर्ध्निसंस्थितम् । १ ।

प्रा० सुसकारना--क्रि० अ० फन फनाना, सिसकारी मारना।

सं० सुसङ्ग--(सु+सङ्ग) पु० अच्छी संगत, सुसंगति, नेक सुहबत।

प्रा० सुसताना--(सं० स्वस्थ, या सुस्थ) क्रि० अ० विश्रामलेना, ठहरना, सांसलेना, आरामकरना।

प्रा० सुसर, सुसरा--(सं० श्वशुर) पु० पति या पत्नी का बाप।

प्रा० सुसरार, सुसराल--(श्वशुरालय, श्वशुर=ससुर, आलय =घर) स्त्री० ससुरकाघर या घराना।

सं० सुस्थ--(सु=अच्छी तरहसे, स्था =ठहरना) गु० भलाचंगा, नीरोगी, २ सुखी, प्रसन्न, हर्षित।

सं० सुस्थिर--(सु+स्थिर) गु० अटल, अचल, निश्चल, दृढ़, ठहराऊ।

सं० सुस्वाद--(सु+स्वाद) गु० जिसमें अच्छा स्वाद हो, मज़ेदार, सुरस, मधुर, मीठा।

प्रा० सुहाग--(सं० सौभाग्य) पु० अच्छा भाग, २ पति का प्यार, ३ पति के जीते रहने की दशा, ४ स्त्री का गहना अर्थात् काजल टीकीआदि जो पति के जीने का चिह्न है) यह शब्द 'रंडापा' का उलटा है)।

प्रा० सुहागन, सुहागिन--(सं० सौभागिनी, सुभगा अच्छेभाग वाली) स्त्री० वह लुगाई जिसका पति जीता हो, सधवा स्त्री, सपतिका।

प्रा० सुहाना, सुहावना--(सं० शोभन) गु० सुंदर, मनभावन, मनोहर, २ क्रि० अ० अच्छालगना, मनभाना, फबना, रुचना।

सं० सुहृद--(सु=अच्छा, हृद=मन) गु० मित्र, दोस्त, हितू, सखा।

प्रा० सुअर--(सं० सूकर, सू=ऐसाशब्द। कर=करनेवाला, कृ=करना) पु० एक जंगलीजानवरका नाम, वराह, शूकर।

प्रा० सूआ, सूवा, सूगा--(सं० शुक) पु० तोता, सुग्गा।

प्रा० सूआ, सूवा--पु० बड़ी सूई।

प्रा० सूई--(सं० सूची, सूच्=जतलाना, या सिव्=सीना) स्त्री० कपड़े सीने की चीज़।

प्रा० सूंघना--(सं० सुघ्राण, सु, घ्रा= सूंघना) क्रि० स० वास लेना, महक लेना, सुगंध लेना।

प्रा० सूंट--स्त्री० चुप, मौन।

प्रा० सूंटभरना, यामारना--बोल० चुपचाप रहना। [चला जाना।

प्रा० सूंटमारेजाना-बोल० चुपचाप

प्रा० सूंड--(सं० शुण्ड, शुण्=जाना) स्त्री० हाथी की नाक।

प्रा० सूंतना } क्रि० स० तोड़ना
सूंथना } (जैसे पेड़ से पत्ते)
२ खैंचना (जैसे तलवार)।

प्रा० सूकी—स्त्री० चौअन्नी।

सं० सूक्त—(सु+उक्त, सु=सुन्दर, उक्त=कहा,वच्=कहना) पु०सुन्दर वार्ता, पुरुषसूक्त।

सं० सूक्ष्म—(सूच्=जतलाना) गु० थोड़ा, छोटा, पतला, महीन, बारीक, पतील।

सं० सूक्ष्मता—(सूक्ष्म) भा०स्त्री० छोटापन, पतलाई, बारीकी, पतलापन।

सं० सूक्ष्मदर्शी—(सूक्ष्म+दर्शी=देखनेवाला, दृश्=देखना) गु० चतुर, प्रवीण, बुद्धिमान्, तेज, २ जिसकी नजर तेज़ हो, बारीकबीं।

प्रा० सूखना } (सं० शोषण,शुष्=
सूकना } सूखना) क्रि० अ० शुष्कहोना,कड़ा होना, खुश्क होना, २ मरना,जलना,(जैसे पेड़ आदि) ३ उड़ना, हवा होना, (जैसे अर्क आदि) ४ पचकना, टूटना, (जैसे स्त्री का अथवा गाय आदि का दूध) ५ दुबला होना, ६ बिगड़ना, गलना, खराब होना, कुम्हलाना, मुरझाना, बेरस होना।

प्रा०सूखा—(सं० शुष्क) गु० बेरस, शुष्क, गला, सड़ा।

सं०सूचक—(सूच्+अक,सूच्=जतलाना) क०पु० जतलानेवाला, बतलानेवाला, सिखानेवाला, बोधक, पिशुन, चवाई।

प्रा०सूचना—(सूच्=जतलाना)स्त्री० जतलाना, चिताना, इत्तिला।

सं० सूचनापत्र—पु० इत्तिलानामा, नोटिस, इश्तिहार।

सं०सूचिक—क०पु० दरजी खैय्यात।

सं०सूचित—भू० जताया गया।

सं०सूचीपत्र—(सूची=जतलाना,पत्र=कागज) पु० फेहरिस्त, २ बीजक।

प्रा० सूजना—(सं०शोथ,या श्वयथु, श्वि=फूलना) क्रि० अ० फूलना, मोटा होना, बढ़ना, किसी रोग से देह का कोई अंग मोटा हो जाना।

प्रा० सूजी—(सं०सूचिक)पु०दरजी, सीनेवाला, २ (सं० सूची) स्त्री० सूई।

प्रा० सूजी—स्त्री० मोटा आटा, दरदरा आटा।

प्रा० सूझना—क्रि० अ० दीखना, नजर आना, दीख पड़ना, दिखाई देना, मालूम होना, प्रकट होना, प्रत्यक्ष होना।

प्रा० सूत—(सं० सूत्र) पु० डोरा, तागा, धागा, रुई का डोरा।

सं० सूत—(सू=चलाना, बहुनबल रखना, या पैदा होना) पु० रथवा।

सारथि, २ बढ़ई, ३ भाट, ४ वर्ण-संकर, दोगला, जिसका बाप राजपूत और मा ब्राह्मणी हो, ५ पुराणों का जानने वाला एक पंडित जिसका नाम लोमहर्षण था, जिसने नैमिषारण्य में बहुत से ऋषियों को पुराण और महाभारत की कथा सुनाई थी और इसको बलदेव जीने मार डाला था।

सं० सूतक—(सू=पैदा होना) पु० लड़के के पैदा होने से, या गर्भ के गिरने से, या मौत हो जाने से जो अपवित्रता होतीहै उसे सूतककहते हैं।

प्रा० सूतना--(सं०सुप्त) क्रि० अ० सोना।

प्रा० सूतली--(सूत्र) स्त्री० सन की डोरी, रस्सी।

प्रा०सूती—(सं० सूत्रीय) गु० सूत से बना हुआ।

सं० सूत्र—(सूत्र्=गूंथना, या सिव्=सीना)पु० सूत, डोरा, धागा, तागा, २ रीति, कायदा, ३ ऐसा वाक्य जिस में संक्षेप से बहुत से अर्थ का ज्ञानहो, जैसे व्याकरणआदिके सूत्र।

सं० सूत्रधार—(धृ=धरना) पु० प्रधान नट, नाटकके खेल का मुखिया।

प्रा० सूथन—पु० पायजामा, पाजामा, जांघिया, सुथनी।

सं० सूदन—(सूद्=मारना) पु० मारना, गु० मारनेवाला।

प्रा० सूधा—(सं०शुद्ध) गु० सीधा, भोला, निष्कपट, शुद्ध।

सं०सूदशाला—स्त्री० पाकशाला, रसोई घर, बावरचीखाना, कुकिंरूम।

प्रा० सूना--(सं०शून्य) गु० खाली, छूछा, रीता, २ उजाड़।

सं० सूनु—(सू=पैदा होना) पु० बेटा, पुत्र, लड़का।

प्रा० सूप—(सं० सूर्प, सूर्प्=नापना) पु० छाज, अनाज पछोरने की चीज।

सं० सूपकार—(सूप=रसोई, कार=करनेवाला) पु० पाचक, रसोईवरदार।

प्रा० सूम—(अ० शूम) पु० कंजूस, मक्खीचूस, कृपण।

सं० सूर--(सू=चलाना) पु० सूर्य, २ सूरदास।

प्रा०सूर—(सं०शूर) पु० वीर, बहादुर।

प्रा० सूरज—(सं०सूर्य्य) पु० रवि, भानु, दिनकर, आफताब, खुर्शेद।

प्रा०सूरजगहन } (सं०सूर्य्यग्रहण)
सूरजग्रहण } पु० सूर्यका गहन।

प्रा०सूरजमुखी—(सं०सूर्य्यमुखी) पु० एक फूल का नाम।

प्रा० सूरन--(सं० सूरण) पु० जिमीकंद, सूरन।

सं० सूरदास—पु० एक हिंदी कवि और गवैये का नाम जो अंधा था इस लिये अब हिंदुओं में अंधे को

सूरदास कहते हैं ।

प्रा० सूरबीर--(सं० शूरवीर) पु० वीर, बहादुर, सावन्त योद्धा ।

प्रा० सूरमल्लार--पु० एक रागिणी का नाम ।

प्रा० सूरमा--(सं० शूर) गु० बहादुर, वीर, सावन्त, सूरवीर ।

प्रा० सूरमापन--भा० पु० बहादुरी, वीरता ।

प्रा० सूरा--(सं० शूर) पु० बहादुर, सूरवीर, योद्धा, (एकआदमी लड़ाई में जाने के लिये तैयारी कर रहाथा उससमयमें उसकी स्त्रीने कहा कि)

"सूरा रणमें जायकै"
"लोहा करो निशंक ।
"ना मोहिं चढ़ै रंडापरो
"ना तोहि चढ़ै कलंक" ॥

अर्थ—हे वीर! लड़ाई में जाकर निडर होके लड़ो, जिससे न तो मैं रांडहोऊं, और न तुम्हारे नामको दाग लगे ।

सं० सूर्य्य--(सृ=चलना) पु० सूर्य ।

सं० सूर्य्यवंशी-(सूर्य=सूर्य, वंशी=घरानेके) पु० राजपूतोंकी एक जात जिनकी राजधानी अयोध्यापुरीथी ।

सं० सूर्य्योदय--(सूर्य्य+उदय) पु० सूर्य का निकलना, दिन चढ़ना, सबेरा, तड़का, भोर, विहान, प्रभात ।

प्रा० सूल--(सं० शूल, शूल्=बीमार होना) पु० बावगोला, वावसूल, एक तरहकी बीमारी जिसके होने से पसलियों में और पेट में बहुत दर्द होता है, २ त्रिशूल, सेल, ३ भाले की नोक, ४ कांटा ।

प्रा० सूरत--पु० दशा, हाल, हालत ।

प्रा० सूली--(सं० शूल) स्त्री० एक तरह का कांटा जिसपर अपराधी लटकाया जाता है ।

प्रा० सूसी--स्त्री० एकतरहका कपड़ा ।

प्रा० सूहा--(सं० शोण, शोण्=लाल होना) गु० लाल, राता, किरमची, २ पु० एक रागका नाम ।

सं० सृष्ट--(सृज्=पैदा होना) सर्व० रचित, निर्म्मित ।

सं० सृष्टि--(सृज्=पैदा होना) स्त्री० उत्पत्ति, संसार, जगत्, दुनिया, २ स्वभाव, प्रकृति ।

सं० सृष्टिशिरोमणि--पु० स्त्री० संसार में श्रेष्ठ, सर्वोत्तम, अशर्फुलमख्लूकात, मनुष्य, इन्सान ।

प्रा० सेंकना--क्रि० स० गर्म करना, तत्ता करना, उष्ण करना, भूनना, भूंजना, झुलसना ।

प्रा० सेंत } सेंतमेंत } क्रि० वि० मुफ्त, बिना मोल, बेदाम का ।

प्रा० सेंध--(सं० सन्धि) पु० छेद जिसको चोर चोरी करने के समय दीवार में करते हैं ।

प्रा० सेंधा--(सं० सैन्धव) पु० २

होरी नमक, पहाड़ी नमक ।

प्रा० सेंधिया--(सिन्ध) पु० ग्वा-लियर के महाराजा की जात जो शायद सिन्ध नदी के पास के देश से फैले हों, २ ज़हर, विष, ३ (सेंध) सेंध लगानेवाला, चोर, घरफोरनेवाला, सेंधमार, सेंधचोर ।

सं० सेचन--(सिच्=सींचना) पु० सींचना, छिड़काव ।

सं० सेचक--क० पु० सींचनेवाला, भिगोनेवाला ।

सं० सेचित-म्र्म० आर्द्रीकृत, तरकिया हुआ, सींचागया, भिगोया गया ।

प्रा० सेज--(सं० शय्या) स्त्री० पलँग, बिछौना ।

प्रा० सेठ--(सं० श्रेष्ठ) पु० साहूकार, महाजन, हुण्डीवाल, धनवान् ।

प्रा० सेत--(सं० श्वेत) गु० धौला, सफेद, उजला ।

सं० सेतु--(सि=बांधना) पु० स्त्री० पुल, बांध, बंध ।

सं० सेतुबन्ध--(सेतु+बन्ध) पु० वह जगह जहां श्री रामचन्द्र ने लंका जानेके लिये नल और नील वानरसे पुल बंधवाया था ।

सं० सेतुबन्धरामेश्वर--(सेतुबन्ध +रामेश्वर) पु० महादेव जिन को श्रीरामचन्द्र ने लंका जाने के समय सेतुबन्धपर स्थापन किये थे ।

सं० सेना--(स=साथ, इन=मालिक या सि=बांधना) स्त्री० कटक, दल, फ़ौज, लश्कर, सिपाह ।

सं० सेनानी--(सेना+नी=लेचलना) क० पु० सेनापति, सिपह सालार, कप्तान ।

सं० सेनापति--(सेना+पति) पु० फ़ौज का सिरदार ।

प्रा० सेमल--(सं० शाल्मली) पु० एक पेड़का नाम । [तौल ।

प्रा० सेर--पु० सोलह छटांक की

प्रा० सेल } (सं० शूल) पु० बर्छी,
सेला } बर्छा, बल्लम, भाला ।

प्रा० सेला--पु० एक तरहकी चद्दर, एक तरह का कपड़ा, २ एक तरह का बाघ ।

प्रा० सेली--स्त्री० बद्धी या जाली जिसको फकीर गलेमें पहने रहते हैं ।

प्रा० सेव--स्त्री० एक तरह का फल ।

सं० सेवक-(सेव्=सेवाकरना) क० पु० सेवा करनेवाला, पूजा करनेवाला, पुजारी, २ नौकर, दास, चाकर ।

प्रा० सेवकाई--(सेवक) भा० स्त्री० नौकरी, चाकरी, टहल, सेवा ।

प्रा० सेवड़ा--पु० एक तरह के हिन्दू फ़कीर, २ जैन मतका भिखारी ।

प्रा० सेवती--(सं० सेमन्ती, सिम्=नाश होना या तोड़ाजाना) स्त्री० एक फूल का नाम ।

प्रा० सेवना—(सं० सेवन,सेव्=सेवा करना) क्रि० स० सेवा करना, २ पालना, अंडा सेना, अंडों को पकाना पोसना।

सं० सेवा—(सेव्=सेवा करना)स्त्री० नौकरी, चाकरी, टहल, सेवकाई, २ पूजा, सत्कार।

सं० सेवित—(सेव् = सेवाकरना) कर्म० उपासित, सेवा किया हुआ, पूजा किया हुआ।

सं० सेवी—क० पु० पुजारी, नौकर, दास, चाकर।

प्रा० सेवैं—(सं० समिता,सम्=साथ, इण् = जाना) स्त्री० बहुव० मैदा की वनी हुई खाने की चीज़, क्रि० सेवा करैं।

सं० सेव्य--(सेव्=सेवा करना) कर्म० सेवा करने योग्य, पूजा करने योग्य, उपास्य, सेवने योग्य, मखदूम।

प्रा० सैंकड़ा—(सं० शतक) गु० शतकड़ा, १००।

प्रा० सैंतालीस—(सं० सप्तचत्वारिंशत्) गु० चालीस और सात।

प्रा० सैंतीस—(सं० सप्तत्रिंशत्)गु० तीस और सात।

प्रा० सैन ⎫ (सं० संज्ञा) स्त्री० सं-
सेन ⎭ केत, इशारा, चिह्न, आंख का या अंगुली का इशारा, २ (सं० सैन्य) फौज, कटक, सेना, ३ (सं० शयन) पु० सोना, नींदलेना।

प्रा० सैनासैनी—बोल० आपस में आंखसे या अंगुली से इशाराकरना।

सं० सैन्धव--(सिंधु) गु० सिंधनदी के पास के देशों में पैदा होनेवाला, २ पु० सेंधा निमक, लाहौरी निमक, ३ घोड़ा।

सं० सैन्य--(सेना) स्त्री० फौज, कटक, सेना, दल।

सं० सैन्यनिकेत--पु० पदातिस्थान, सैन्यवास, छावनी।

सं० सैन्यप्रदर्शनीय- स्त्री० फ़ौजी नुमायश, सेना की सजावट।

प्रा० सोअर--(सं० सूतिकागृह, सूतिका = जच्चा (सू=पैदा होना) और गृह=घर) पु० कोठरी जिस में जच्चा अर्थात् वह स्त्री जिस के बच्चा पैदा हुआ है, रहे।

प्रा० सोआ--स्त्री०एक तरह का साग।

प्रा०सोई--सर्वना० वही, आप।

प्रा० सों, से,साथ।

प्रा० सोंटा--पु० लाठी, लट्ठ।

प्रा० सोंठ—(सं० शुण्ठि, शुण्ठ= सूखना) स्त्री० सूखा अदरक।

सं० सोढ—(सह्=सहना) क० पु० शान्त, सहनशील।

सं०सोढा--(सह्=सहना) क० पु० शान्त, सहनशील, मुतहम्मिल।

सं० सौंधा--(सं० सुगन्ध) पु० सु

गंधित मसाला जिससे बाल धोये जाते हैं, २ सुगंध, बास, बू, ३ ऐसी बू जैसी कि मिट्टी के कोरे बरतनों को भिगोने से या चने आदि के सेंकने से निकलती है।

प्रा० सौंपना } सोंपना } (सं०समर्पण) क्रि० स० दे देना, हवाले करना, सुपुर्द करना।

प्रा० सौंह--(सं०शपथ) स्त्री०सौगंद, शपथ, किरिया, क़सम।

प्रा० सौंहीं--(सं० हम्मुख, सन्मुख) क्रि० वि० साम्हने, आगे, सन्मुख।

प्रा० सोखना--(सं० शोषण, शुष्=सूखना) क्रि० स० चूसना, पी लेना, खींचना।

प्रा० सोग--(सं०शोक) पु०चिन्ता, फिक्र, शोच, उदासी, दुःख।

प्रा० सोच--(सोचना) पु० ध्यान, खयाल, विचार, २ चिन्ता, फिक्र।

प्रा० सोचना--(सं० शोचन, सुच्=सोचना) क्रि० खयाल करना, समझना, विचारना, ध्यानकरना।

प्रा० सोझा--गु० सीधा, खड़ा।

प्रा० सोत } सोता } (सं० स्रोत) पु०धारा, चश्मा, झर्ना।

प्रा० सोध--(शोधना) स्त्री० शुद्ध करना, शोधन, २ खोज, पता, भेद, खबर।

प्रा० सोधना--(सं० शोधन) क्रि० स० सही करना, गलतीनिकालना, शुद्ध करना, जांचना, २ ऋण चुकाना, कर्ज़ चुकाना, ३ धातु को साफ करना।

प्रा० सोन--(सं० शोण, शोण्=जाना) पु० स्त्री० एकनदीका नाम, २ रुधिर, रक्त, उदासी, ब्रह्मचारी।

प्रा० सोनहरा } सोनहला } (सोना) गु० सुनहरा, सुनहरी, सोने का या सोने सा।

प्रा० सोना--(सं०स्वर्ण) पु०बहुत मोल की धातु, कंचन, कनक।

प्रा० सोना } सोवना } (सं०शयन)क्रि०अ० नींद लेना, पौढ़ना, सूतना।

सं० सोपान--(स=साथ, उप=पास, अन्=जीना, पर उप उपसर्ग के साथ आने से इसका अर्थ चढ़ना होजाता है) स्त्री० सीढ़ी, नसेनी।

प्रा० सोभना--(सं० शोभन) क्रि० अ० सोहना, अच्छा दिखाई देना।

सं० सोम--(सू=पैदाहोना, या फेंकना किरण को) पु० चांद, चंद्रमा, २ अमृत, ३ देवताओं का खजानची कुबेर, ४ हवा, ५ यमराज, ६ कपूर, ७ सोमलतानाम जड़ी और उसका रस, ८ (स=साथ, उमा=पार्वती) शिव, महादेव, ९ वानरेश, सुग्रीव, १० द्रव्य, धन, ११ आकाश।

सं० सोमज--(सोम+जन्=पैदाहोना) पु० बुधग्रह, अमृत, दुग्ध।

सं० सोमपा--(सोम+पा=पीना) क० पु० यज्ञवल्लीका पीनेवाला, याज्ञिक, यजमान।

सं० सोमवार--(सोम=चांद,वार=दिन) पु० चांद का दिन,चंद्रवार।

सं० सोमवल्क--पु० करञ्ज, कंजा, रीठी,श्वेतखदिर,सफेद खैर,कैफरा।

प्रा० सोरठ--स्त्री० एक रागिणी का नाम।

प्रा० सोरठा--पु० हिंदी बोली में एक छंद जिसके पहले पद में ११ और दूसरे में १३ फिर तीसरे में ११ और चौथे में १३ मात्रा होती हैं और यह छंद दोहे का उलटा है।

प्रा० सोरह } सोलह } (सं०षोड़श) गु० दश और छः।

अं० सोशलरिफार्मकमेटी-सभाजिक संशोधन सभा, जल्सारिफाह आम।

प्रा० सोहना--(सं० शोभन, शुभ्=चमकना) क्रि० अ० शोभना, अच्छा दिखाई देना, फबना, भला दीखना।

प्रा० सौ-(सं० शत) गु० दशदहाई।

प्रा० सौसिरकाहोना--बोल० बहुत बलवान्, या मगरा होना, २ बहुत सहना। [आन।

प्रा० सौगन्द--पु० शपथ, किरिया,

सं० सौगन्ध--सुगन्ध, भा० पु० खुशबू, २ कपूर।

प्रा० सौघाई--(सं० स्वर्घता, सु=अच्छा, अर्घ=मोल) स्त्री० सस्ती, सस्ताई।

प्रा० सौंफ--(सं० शतपुष्पा) स्त्री० एक ठंढी पाचक दवाई। [जीवी।

सं० सौचि--भा० पु० दर्जी जीवन-

सं० सौजन्य } सौजन्यता } (सुजन) भा० पु० सुजनता, भलमनसात, साधुपन, सुशीलता, शराफत।

प्रा० सौत } सौतन } सवति } (सं० सपत्नी स=एक ही, पति भर्त्ता है जिसका) स्त्री० एकही पति की दूसरी स्त्री, सौती।

प्रा० सौतेला--(सौत) गु० सौतसे जनमा हुआ।

सं० सौदामनी } सौदामिनी } (सुदामन्=बादल अर्थात् बादलों में रहनेवाली, सु=बहुत, दा=देना) स्त्री० बिजली, दामिनी।

सं० सौध-- (सुधा=पोतने की एक लाल चीज, उससे रंगा हुआ, सु=अच्छी तरह से, धा=रखना) पु० महल, प्रासाद, राजमंदिर, देवमन्दिर।

सं० सौनिक--पु० व्याध, वधिक, बहेलिया, हिंसक, कसाई जैसे "सौनिकेनयथापशुः"।

सं० सौन्दर्य्य--(सुन्दर) भ

सुन्दरता, खूबसूरती, चमकदमक, रंगरूप।

सं० सौभरि--पु० एक ऋषि का नाम जिसने मान्धाता राजाकी पचास लड़कियों से व्याह किया था जिसकी कथा विष्णुपुराण में है ये ऋषि यमुना नदी तीर पर बैठे तप कर रहे थे, वहां गरुड़ ने जाय एक मछली मार कर खाई, तब ऋषि ने गरुड़ को शापदिया कि जो फिर इस जगह आवेगा जीता न बचेगा।

सं० सौभद्र--भा० पु० सुभद्रा का पुत्र, अभिमन्यु।

सं० सौभाग्य--(सुभग) भा० पु० भागवानी, अच्छा भाग, २ ज्योतिष में चौथा योग।

सं० सौमित्र--(सुमित्रा) भा०पु० सुमित्रा का बेटा, लक्ष्मण, श्रीरामचन्द्र का छोटा भाई।

सं० सौम्य--पु० बुध, चन्द्र, गु० सुशील, सुन्दर, मनोहर, प्रियदर्शन, क्रोधरहित, मुतहम्मिल,बुर्दबार।

सं० सौम्यता--भा०स्त्री०सुशीलता, सीधापन, संगीदगी।

सं० सौर--(सूर=सूर्य) गु० सूर्यसंबंधी, सूरज का, (महीना दिन आदि) २ पु० शनीचर।

सं० सौरभेय } भा०पु० सुरभीपुत्र,
सौरभेयी } वृषभ, बैल व स्त्री० गौ, वशिष्ठ की धेनु, नन्दनी।

प्रा० सौरज--(सं० शौर्य्य) भा० पु० शूरमापन, सूरवीरता, बहादुरी।

सं० सौरभ--(सुरभि) पु० सुगन्ध, खुशबू, महक, २ केशर, ३ आमकापेड़।

सं० सौरि--भा० पु० शनैश्चर, कृष्ण, वसुदेव।

सं० सौवर्चल--पु० कालानमक।

सं० सौहार्द--भा०पु० मित्रता, दोस्ती।

सं० स्कन्ध--(स्कन्द=ऊपर जाना) पु० कंधा, कांधा, २ पेड़ की धड़, मोटे गुद्दे, ३ पुस्तक का एक भाग जिसमें कई अध्याय हों, ४ बाणासुर का बेटा ५ व्यूह ६ युद्ध, समूह।

सं० स्खलित--(स्खल्=गिरना) क० पु० चुत, गिरा, गिर पड़ा।

सं० स्तन--(स्तन्=शब्द करना) पु० चूंची, छाती, पयोधर।

सं० स्तनयित्नु--पु० गर्जना विद्युत, बिजुली, मृत्यु, रोग।

सं० स्तब्ध--(स्तम्भ्=रोकना) गु० रुका हुआ, ठहराहुआ, मूर्ख, सुस्त।

सं० स्तब्धत्व--पु० अदब, दबाव।

सं० स्तम्भ--(स्तम्भ = ठहरना, रोकना) पु० खंभा, थंभा, थंम, थूनी, रुकाव, अटकाव।

सं० स्तम्भन--भा० पु० रोकना, जड़ करना।

सं० स्तव-(स्तु=सराहना)पु०स्तुति, बड़ाई, प्रशंसा, तारीफ, सराह।

सं० स्तवक--पु०गुच्छा, गुलदस्ता।

सं० स्तवन--भा०पु०स्तुति, प्रशंसा।

सं० स्तिमित--गु० अचल, स्थिर।

सं० स्तुति--(स्तु=सराहना) स्त्री० सराह, बड़ाई, तारीफ, प्रशंसा, २ भजन।

सं० स्तुत्य--र्म०प्रशंसित स्तवनीय, तारीफ के लायक।

सं० स्तेन--(स्तेन=चोरी करना) पु० चोर, चौर, दुज़्द। [दुज़्दी।

सं० स्तेय--पु० चौरकर्म, चोरी,

सं० स्तोता--क०पु०प्रशंसक, तारीफ करनेवाला।

सं० स्तोत्र--(स्तु=सराहना) पु० सराह, बड़ाई, स्तुति।

सं० स्तोम--पु० पुंज, समूह, २ यज्ञ, स्तुति, ३ मस्तक, ४ लोहदण्ड।

सं० स्त्री--(स्त्यै=इकट्ठा होना) स्त्री० लुगाई, नारी, औरत।

सं० स्त्रीधन--पु० दायज, महर।

सं०स्थपति-बृहस्पति, यज्ञकर्ता, शिल्पी।

सं० स्थल--(स्थल्=ठहरना) पु० सूखी धरती, खुश्की जगह।

सं०स्थाणु--पु० शिव, २ पीपल, ३गु०मोटा, ४ठुंडावृक्ष, पत्ररहितवृक्ष।

सं०स्थान-(स्था=ठहरना)पु०जगह, घर, ठौर, ठांव, ठिकाना।

सं० स्थापन--(स्था=ठहरना) पु० बैठाना, रखना, धरना, ठहराना, जमाना।

सं० स्थापित--(स्था=ठहरना)र्म० बैठायाहुआ, ठहरायाहुआ, जमाया हुआ, स्थापन कियाहुआ।

सं० स्थायिन्--क०पु०ठहरनेवाला।

सं० स्थाल--पु० थाला, थारा।

सं० स्थाली--स्त्री० बटलोई, पाक पात्र, हांडी।

सं० स्थावर--(स्था=ठहरना) गु० अचल, अटल, ठहराहुआ, जो चले नहीं, जैसे पेड़, पत्थर आदि।

सं० स्थिति--(स्था=ठहरना) भा० स्त्री० ठहराव, टिकाव, वास, रहना, पालन, आसन, मर्यादा, सीमा।

सं० स्थिर--(स्था=ठहरना) गु०ठहरा हुआ, अचल, अटल, दृढ़, २ शान्त, ठंढा, कोमल।

सं० स्थिरपूंजी--स्त्री० स्थिरधन, जायदाद, गैरमन्कूला।

सं० स्थूल--(स्थूल्=मोटा होना)गु० मोटा, फूला हुआ, बड़ा।

सं० स्नातक--(स्ना=न्हाना) क० पु०गृहस्थब्राह्मण, व्रती, स्नानकारी।

सं० स्नान--(स्ना=न्हाना) गु० न्हाना। [न्हानेवाला।

सं० स्नायी--क० पु० स्नानकर्ता

सं० स्नायु--स्त्री० नस, रग ।

सं० स्निग्ध--गु० चिक्कण, चिकना, मेहरबान, दयालु ।

सं० स्नेह--(स्निह्=प्यार करना,या चिकनाहोना)पु० प्यार, छोह, मोह, प्रेम, नेह, मिताई, २ तेल आदि चिकनी चीज, ३ चिकनाई ।

सं० स्पर्द्धा--(स्पर्द्ध=डाह करना) स्त्री० डाह, जलन, हिस्का, द्वेष, विरोध, वैर, ईर्षा ।

सं० स्पर्श--(स्पृश्=छूना)पु०छूना, छुहावट, परसना, २ एकतरह की बीमारी जो छूने से लगती है ।

सं० स्पष्ट--(स्पश्=देखना, या प्रकट होना) गु० साफ़, खुला खुला, शुद्ध, सही, प्रकाशित, प्रकट ।

सं० स्पृष्ट--(स्पृश्+त,स्पृश्=छूना) रुपै० छुआगया, कृतस्पर्श ।

सं० स्पृहा--(स्पृह्=चाहना) स्त्री० चाह, इच्छा, वाञ्छा, अभिलाष ।

सं० स्पृही--क० इच्छान्वित, रलवा-हिशमन्द ।

सं० स्फटिक--(स्फट्=फटना, या खुलना) पु० बिल्लौर का पत्थर ।

सं० स्फुटन--(स्फुट्=विकसना) भा० पु० खिलना, फूटना ।

सं०स्फुटित-क०विकसित,प्रफुल्लित ।

सं० स्फोटक--(स्फुट्=फूटनिकलना) फोड़ा, चेचक ।

सं० स्फूर्त्ति--(स्फुर्=हिलना) स्त्री० हिलाव, धड़धड़ाहट, स्फुरन ।

सं० स्मर--(स्मृ=याद करना)पु० कामदेव, २ याद, स्मरण ।

सं० स्मरण--(स्मृ=यादकरना)पु० चिंतन, याद, सुध, चेत, स्मृति ।

सं० स्मरहर--(स्मर=कामदेव, हर =नाश करनेवाला, हृ=नाश करना) पु० शिव, महादेव ।

सं० स्मारक--(स्मृ+अक, स्मरण करना) क० पु० स्मृतिज्ञाता,स्मरण करानेवाला ।

अं० स्मालकाज़कोर्ट-अल्पन्याया-लय, अदालतख़फ़ीफ़ा ।

सं० स्मित--(स्मि=थोड़ा हँसना)पु० ईषद्धास्य, थोड़ाहँसना, मुसक्याना, मुसकिराना, गु० विकसित, विस्मित ।

सं० स्मृति--(स्मृ=याद करना)स्त्री० याद, सुमिरन, स्मरण, २ धर्मशास्त्र, जैसे मनुस्मृति और याज्ञवल्क्य स्मृति आदि ।

सं० स्यन्दन--(स्यन्द्=जाना)पु० रथ, २ सारथी, ३ जल, ४ वृक्ष ।

सं० स्यात्--अव्य०विद्यमान,२समीचीन, ३ शायद ।

प्रा०स्यानपन-(स्याना) भा०पु०स्त्री० बुद्धिमानी, चतुराई, निपुणता, प्रवीणता । [देखो ।

प्रा० स्याना--सियाना शब्द को

प्रा० स्यार } (सं० शृगाल) पु०
स्याल } गीदड़ ।

सं० स्रक्--(सृज्=बनाना) स्त्री० माला, पुष्प माला ।

प्रा० स्रवना--(सं० स्रवण, स्रु=बहना)क्रि०अ० चूना, बहना, गिरना ।

सं० स्रोतः--(स्रु=बहना) पु० सोता, बहाव, धारा, नाला ।

सं० स्व--सर्वना० अपना, आप, आपका, निज, निजका, २ पु० धन, ३ जाति ।

सं० स्वकीय--पु० अपना, निजका ।

सं० स्वकीया--(स्व=अपना) स्त्री० अपनी ब्याही हुई स्त्री ।

सं० स्वच्छ-(सु=बहुत, अच्छ=साफ़) गु० निर्मल, शुद्ध, उज्ज्वल, साफ़ ।

सं० स्वच्छता--(स्वच्छ) भा० स्त्री० निर्मलता, सफाई, उज्ज्वलता ।

सं० स्वच्छन्द--(स्व=अपनी, छन्द=इच्छा या मतलब) गु० अपनी चाह के अनुसार चलनेवाला, आप मौजी, स्वाधीन ।

सं० स्वच्छन्दता--स्त्री० स्वतन्त्रता, स्वेच्छाचारिता, खुद मुख़्तारी ।

सं० स्वतन्त्र--(स्व=अपने तन्त्र=वश) गु० स्वाधीनता, अपने वश ।

सं० स्वतन्त्रता--(स्वतन्त्र) स्त्री० स्वाधीनता ।

सं० स्वतः--(स्व) क्रि० वि० आपसे, आपसे आप, आपही, स्वभाव से ।

सं० स्वत्वस्थापितकरना-क़बज़ा करना, दखल करना । [खली ।

सं० स्वत्वापहरण--भा० पु० बेद-

सं० स्वधर्म-(स्व + धर्म्म) पु० अपना धर्म, अपना काम, (जैसे=वेदशास्त्र पढ़ना पढ़ाना ब्राह्मणों का धर्म, देश का प्रबन्ध करना राजपूतों का धर्म, खेती बनिज करना वैश्योंका धर्म, और नौकरी चाकरी करना शूद्रों का धर्म)

सं० स्वधा--(स्वद्=स्वाद लेना, या स्व=आप, धा=रखना या धे=पीना) अव्य० पितरों को जब पिंड देते हैं तब यह शब्द बोल कर पिंड देते हैं, २ स्त्री० दुर्गा, देवी, माया ।

सं० स्वप्न--(स्वप्=सोना) पु० सपना, नींद में जो देखा जाय ।

सं० स्वभाव--(स्व+भाव) पु० प्रकृति, टेव, बान, सुभाव, आदत, खू ।

सं० स्वयम्--(स्व, या सु=अच्छीतरह से अय्=जाना) अव्य० आप, निज, अपना, आपसे ।

सं० स्वयंवर--(स्वयम्=आपसे, वृ=पसंद करना) पु० स्त्रीका आपसे पतिको पसंद करना ।

सं० स्वयम्भु } स्वयम् = आपसे,
स्वयम्भू } भू=होना) ०

ब्रह्मा, आपसे पैदा होनेवाला ।

सं० **स्वयंसिद्ध**--(स्वयम्=आपसे, सिद्ध=बनाहुआ) गु० आपही सच, जो आपही से पक्का ठहराया जाय ।

सं० **स्वर**--(स्वृ=शब्द करना) पु० शब्द, आवाज़, २ वे अक्षर जो आपसे बोले जायँ और जिनके मिलने से व्यंजन भी बोले जायँ, ३ गानविद्या में तानसुर आदि ।

सं० **स्वर्**--(स्वृ=शब्द करना) पु० स्वर्ग, आकाश ।

सं० **स्वरापगा**--(स्वः=स्वर्ग,आपगा =नदी) स्त्री० आकाशगंगा ।

सं० **स्वरित**--गु० उदात्तानुदात्त युक्त अर्थात् स्वरों की ऊंची नीची आवाज़ ।

सं० **स्वरूप**--(स्व+रूप) पु० अपना रूप,छवि, शोभा, सुन्दरता ।

सं० **स्वर्ग**--(स्वर्, गै=गाना या कहलाना, अर्थात् जो स्वर् कहलाता है, या सु=अच्छी तरह से, ऋज्= जाना अर्थात् जहां अच्छी तरह से जाते हैं या रहते हैं) पु० इन्द्रलोक, देवताओंके रहनेकीजगह, आकाश।

सं० **स्वर्गीय** } (स्वर्ग)गु०स्वर्गका ।
स्वर्ग्य }

सं० **स्वर्ण**--(सु=अच्छा, अर्ण या वर्ण रंग, जिस का रंग अच्छा है या सु अच्छी तरहसे, ऋण् या ऋ= जाना) पु० सोना, कंचन, कनक, हेम, बहुत मोल की धातु ।

सं० **स्वर्णकार**--(स्वर्ण=सोना,कार =करना) पु० सोनेका काम करने वाला, सुनार ।

सं० **स्वल्प**--(सु=बहुत,अल्प=थोड़ा) गु० बहुत थोड़ा, बहुत छोटा, किंचित्, ज़रा ।

सं० **स्वस्ति**--(सु=अच्छा, भला, अस्=होना) अव्य० कल्याण, मंगल, अच्छा हो, भला हो, २ ऐसाही हो, तथास्तु ।

सं० **स्वस्तिवाचन**--(स्वस्ति=कल्याण,वाचन=कहना, वच्=कहना) पु० किसी अच्छे काम के शुरूअ में किसी तरह का बिगाड़ न होने के लिये और देवताओं की आशिष पानेके लिये ब्राह्मणों से वेद के मंत्र पढ़वाना, शान्ति, मंगलाचार ।

सं० **स्वस्तिवाचक**-(वच्+अक, वच्=कहना) क० पु० मंगलपाठक, दुआगो ।

सं० **स्वस्त्ययन**--(स्वस्ति+अयन) पु० शुभस्थान, शुभ का लाभ, मंगलाचरण ।

सं० **स्वस्थ**-(स्व=अपने,स्था=रहना) क० सुखसे रहने वाला, सावधान ।

ग्रा० **स्वांग**--सवांग शब्दका देखो ।

सं० **स्वागत**--(सु=अच्छी तरहसे,

आगत=आया हुआ) पु० आदर, सन्मान, सत्कार, कुशल क्षेम।

सं० स्वाति—(सु=अच्छी तरह से, अत्=जाना) स्त्री० पन्द्रहवां नक्षत्र, २ चन्द्र की एक स्त्री।

सं० स्वाद—(स्वद्=या स्वाद्=स्वाद लेना) पु० रस, सवाद, चाट, मज़ा, लज़्ज़त, २ मिठास, ३ खुशी, प्यार, प्रीति।

सं० स्वादिष्ठ, स्वादुयुक्त } गु० मज़ेदार, ज़ायकेदार।

सं० स्वादु—(स्वद् या स्वाद्=स्वाद लेना) गु० मीठा, रसीला, सुरस, मज़ेदार, २ चाहा हुआ।

सं० स्वाधीन—(स्व+आधीन) गु० अपने वश, स्वतन्त्र।

सं० स्वाभाविक—(स्वभाव) गु० जो स्वभाव से हो।

सं० स्वामित्व—(स्वामी) पु० स्वामीपन, मालिकियत, अधिकार, प्रभुता।

सं० स्वामी—(स्व=धन या आप) पु० मालिक, धनी, प्रभु, २ भर्त्ता, पति, ३ राजा, ४ गुरु ५ परमहंस।

सं० स्वार्थ—(स्व=अपना, अर्थ=मतलब, अभिप्राय) पु० अपना मतलब, अपना काम, अपने लाभकी चाह।

सं० स्वार्थी—(स्वार्थ) गु० आप मतलबी, आप काजी, आत्मपालक, खुद गरज।

सं० स्वास्थ्य—(स्वस्थ) भा० पु० आरोग्य, तन्दुरुस्ती, संतोष, सुख।

सं० स्वाहा—(सु=अच्छी तरह से, आ = सब ओर से, ह्वे = बुलाना) अव्य० होम या यज्ञ करते समय जब देवताओं को बलि देते हैं तब यह शब्द बोलते हैं, २ स्त्री० आग की स्त्री, ३ देवी, दुर्गा, माया।

सं० स्वीकार—(स्व=आप या अपना, कृ=करना) पु० अंगीकार, मानना, हांमी, हां, मंज़ूर, कबूल।

सं० स्वेच्छा—(स्व+इच्छा) स्त्री० अपनी चाह, स्वाधीनता।

सं० स्वेद—(स्विद्=पसीना होना) पु० पसीना, पसेव, प्रस्वेद, ताप, गर्मी।

सं० स्वेदज—(स्वेद=पसीना या गर्मी जन्=पैदा होना) पु० चिलुवा, जूं आदि छोटे छोटे जानवर जो पसीने से या भाफ अथवा गर्मीसे पैदा हो जाते हैं।

सं० स्वैर—(स्व+ईर्=जाना) पु० स्वेच्छा, यथेच्छा, स्वतन्त्र, स्वच्छन्द।

सं० स्वैरिणी—(स्वैर+इन+ई) स्त्री० कुलटा, स्वेच्छाचारिणी।

सं० स्वैरन्ध्री, सैरन्ध्री } (स्वैर+न्ध्र+ई) क० स्त्री० पराये घर में रहनेवाली २ शिल्पकारिणी।

सं० स्वैरी—(स्वैर+ई) क० स्त्री० स्वतन्त्र, स्वेच्छाचारिणी।

सं० ह—(हा=छोड़ना, या जाना) पु० शिव, २ पानी, ३ आकाश, ४

(१) [illegible]

स्वर्ग, ५ मंगल, ६ लोहू, ७ वि० वो० हाय हो, हाहा, ८ पद पूरा करने के लिये, ९ सम्बोधन के लिये, १० नियोग, ११ क्षेप फेंकना १२ निग्रह, १३ प्रसिद्ध ।

प्रा० **हँकाना**—(हांकना) क्रि० स० निकाल देना, चलाना, हांकना ।

सं० **हुङ्कार**—(हम् = ऐसा क्रोध का शब्द, कृ=करना) पु० हांक, पुकार, चिल्लाहट, २ निकालना, हांकना ।

प्रा० **हंडा**— (सं० हण्ड, हन्=मारना) पु० तांबे पीतल का अथवा मिट्टी का बड़ा बरतन, कड़ाह ।

प्रा० **हंडा फोड़ना**— बोल० भेद खोल देना, राज खोलदेना ।

सं० **हंस**— (हन् =मारना या जाना, अथवा हस्=हंसना) पु० एक तरह के पखेरू जो पानी के सरोवरों में रहते हैं, २ आत्मा, जीव, ३ परमात्मा, ब्रह्म, ४ नृप, ५ योगी, ६ तुरङ्ग, श्वेत, सफेद ।

सं० **हंसक**— क० पु० पादकटक, बिछुआ, घुंघुरू ।

प्रा० **हंसगमनी**, **हंसगवनी** (सं० हंसगामिनी हंस, गामिनी =चलने वाली, गम् = जाना चलना) स्त्री० जिस स्त्री की चाल हंस कीसी हो ।

प्रा० **हँसना**—(सं० हसन, हस्=हँसना) क्रि० अ० हँसी करना, मुसकुराना, ठट्ठा करना ।

प्रा० **हँसमुख**—(सं० हास्यमुख) गु० जिस के मुंहपर हँसी खुशी जानी जाय मगन, आनन्दी, हँसने वाला ।

प्रा० **हँसा**-पु०, **हँसी**-स्त्री० (सं० हास्य) हांसी, मुसकुराहट, खुशी, खेल, विनोद ।

प्रा० **हँसाई**—(सं० हास्य) स्त्री० हँसी, ठट्ठा, ठठोली ।

प्रा० **हँसिया**, **हँसुआ** पु० दरांती, दांत, दात्र।

प्रा० **हकराना**— क्रि० स० बुलाना, पुकारना, बुलवाना, बुलालेना ।

प्रा० **हकबकाना**—क्रि० अ० घबराना, व्याकुल होना, हड़बड़ाना ।

प्रा० **हकला**—गु० तोतला, लड़बड़ा, जो तुतला कर बोले ।

प्रा० **हकलाना**—क्रि० अ० तुतलाना, हिचक २ के बोलना, अटक अटक के बोलना ।

प्रा० **हकाबका**— गु० घबराया हुआ, परेशान, बेहोश, व्याकुल, अचंभे में, चकित, विस्मित ।

प्रा० **हगना**—(सं० हद्=झाड़ा फिरना) क्रि० अ० झाड़ा फिरना, जंगलजाना, दिशाजाना, पाखाने जाना ।

प्रा० हचका } पु० धक्का, झोंक,
हचकोला } टक्कर।

प्रा० हचरमचर—पु० वाद विवाद, झूंठा झगड़ा, २ आगा पीछा, सोच विचार, पसोपेश।

प्रा० हटकना—क्रि० अ० रुकना, अटकना, छेंकना, क्रि० स० रोकना।

प्रा० हटताल—(हट=हाट, ताल =ताला) स्त्री० किसी दुःख अथवा अन्याय होनेसेदूकानों को तालालगा देना वज़ार बन्ध।

प्रा० हटना—क्रि० अ० पीछेचला जाना, पीछे फिर जाना, टलना, चला जाना, अलग हो जाना, २ हार जाना।

प्रा० हटवा—(हाट) पु० तोलने वाला, कयाल, दूकानदार।

प्रा० हटाना—क्रि० स० दूरकरना, अलग करना, टाल देना, निकाल देना, सरकाना, पीछे खैंच लेना।

सं० हट्ट—(हट्=चमकना) स्त्री० हाट, दूकान, वाज़ार।

प्रा० हट्टाकट्टा—गु० वलवान् और चालाक, संडमुसंड, पोढ़ा, गाढ़ा, धाकड़, ज़ोरावर।

सं० हठ—(हठ्=हठ करना) पु० मगराई, मचलाई अड़, ज़िद, वलात्कार, जबरदस्ती।

प्रा० हठकरना } बोल० मग
हठकीटेकपरहोना } राई से किसी वात को नहीं मानना, ज़िदकरना।

प्रा० हठधर्मी—गु० ज़िद्दी, हठीला।

सं० हठात्—क्रि० वि० वलात्, वल से, जबरन्।

प्रा० हठी } (हठ) गु० मगरा,
हठीला } चिड़चिड़ा।

प्रा० हड़गिल्ला } (सं० हड्ड= हड्डी,
हड़गीला } गॄ=निगलना) पु० एक पखेरूका नाम जो पांचफुट ऊंचा होता है और उसके पंख फैलने से पन्द्रह फुटतक नापा गया है।

प्रा० हड़फूटन-पु० हड्डियों में दर्द।

प्रा० हड़बड़ाना-क्रि० अ० घवराना, व्याकुलहोना, हकवकाना, जल्दी करना।

प्रा० हड़बड़ी- स्त्री० खलवली, हुल्लड़, वलवा, हौरा।

प्रा० हड़हड़ाना-क्रि० अ० कांपना, थरथराना, २ खड़खड़ाना, धड़धड़ाना, आवाज़होना। [हट,आवाज़।

प्रा० हड़हड़ाहट-स्त्री० खड़खड़ा-

प्रा० हड्डी-(सं० हड्ड) स्त्री० हाड़।

प्रा० हत्-वि० वो० दुर, दुत।

प्रा० हतना } (सं० हनन, हन्=
हनना } मारना) क्रि० स० मारना, मारडालना।

सं० हत-(हन्=मारना) मर्म० मारा हुआ, नष्ट।

सं० हति-(हन्=मारना) स्त्री० मारना हनना, गुणना।

सं० हत्या-(हन्=मारना) स्त्री० मारना, हिंसा, खून, पाप।

सं० हताशा-(हत+आशा) गु० छिन्नाशा, नउम्मैद।

प्रा० हत्यारा-(सं० हत्याकार) क० पु० हत्याकरनेवाला, हिंसक, पापी, दुष्टी।

प्रा० हथ-(सं० हस्त) पु० हाथ।

प्रा० हथकड़ी-स्त्री० हाथ की बेड़ी, एक बड़ा भारी लोहे का कड़ा जो कैदियोंकेहाथमें डालदियाजाताहै।

प्रा० हथखण्डा-(हथ=हाथ, खंडा =ढब) पु० ढब, ढंब, अभ्यास, करतब, चाल, बान, हथौटी।

प्रा० हथनी-(सं० हस्तिनी) स्त्री० हस्तिनी।

प्रा० हथफेर-बोल० अदला बदली, एरा फेरी, २ छल, फरेब, खोटे रुपये को चालाकी से अच्छे रुपयेसे बदल लेना।

प्रा० हथलेवा-(हथ=हाथ, लेवा =लेना) पु० व्याह में दुलहा दुलहिन का हाथ मिला देना, व्याह की एकरीति।

प्रा० हथवासना-क्रि० स० हाथ में लेना, हाथ में पकड़ना।

प्रा० हथवासे-क्रि० वि० हाथ में अपने अधिकार में।

प्रा० हथा, हत्था (सं० हस्त) पु० बेंट, कबज़ा, २ बेलचा, खोदनी।

प्रा० हथिया-(सं० हस्त) पु० ज्योतिष में तेरहवां नक्षत्र।

प्रा० हथियाना-(हाथ) क्रि० स० पकड़ना, हाथ में लेलेना।

प्रा० हथियार-(हाथ) पु० शस्त्र, २ कलकांटा, औजार।

प्रा० हथेली-(हाथ) स्त्री० हाथ में बीच की जगह।

प्रा० हथौटी-(हाथ) स्त्री० चतुराई, प्रवीणता, होशियारी, गुण, हुनर।

प्रा० हथौड़ा-पु० घन, बड़ामार्तोल।

प्रा० हथौड़ी-स्त्री० छोटा हथौड़ा।

सं० हनन-(हन+अन, हन्=मारना) भा० पु० मारना, घात, हिंसा।

सं० हननीय-(हन+अनीय, हन =मारना) मर्म० मारनेयोग्य।

सं० हनुमान्-(हनु=ठुड्डी, (हन्= नाश करना) मत्=वाला) पु० श्रीरामचन्द्र का दूत, पवनका पूत, हनुमन्त, महावीर।

सं० हन्तव्य-(हन+तव्य) मर्म० मारने के लायक, हनने योग्य।

सं० हन्ता--कृ० पु० मारने वाला, घातक।

सं० हन्यमान--(हन् =मान, हन्= मारना)कृ० वध्यमान, मारनेवाला।

सं० हय--(हय् या हि=जाना) पु० घोड़ा, अश्व, तुरंग।

सं० हर--(हृ=लेना) पु० शिव,महादेव, २ आग, अग्नि, ३ गणित विद्या में भाजक, भिन्न गणित में वह अंक जो जतलाता है कि एक पूरी चीज के कितने टुकड़े किये गये हैं, नसवनुमा।

प्रा० हर-(सं० हल) पु० हल शब्द को देखो।

प्रा० हरख / हरष (सं० हर्ष)पु०आनन्द सुख,खुशी, प्रसन्नता।

प्रा० हरखना / हरषना (सं० हर्षण, हृष्= खुश होना) क्रि० अ० प्रसन्न होना, खुश होना, फूलना, खिलना, सुखी होना, आनन्दित होना।

सं० हरगिरि--(हर + गिरि) पु० महादेव का पहाड़, कैलास पहाड़।

सं० हरण--(हृ=लेना) भा०पु०जबरदस्ती से किसीकी चीज लेलेना, लूट, चोरी।

प्रा० हरता--(सं०हर्त्ता) कृ० पु०लेने वाला, हरने वाला, दूरकरनेवाला, २ चोर, लुटेरा, ठग।

प्रा० हरना--(हरण) क्रि० स० लेलेना, ज़बरदस्ती से लेना, लूटना, चुराना।

सं० हरणीय--(हृ+अनीय, हृ= हरना) कर्म० हार्य्य, हरणयोग्य।

प्रा० हरनौटा / हिरनौटा (हरिण) पु० हरिण का बच्चा।

प्रा० हरमुष्टा--गु० बली, बलवान्, हट्टा कट्टा।

प्रा० हरा--(सं०हरित्) गु० सब्ज़, सबुज़ रंग, २ ताज़ा, नया।

प्रा० हराना--(हारना) क्रि० स० थकाना, शिकस्त देना, हरा देना, जीतना, जीतपाना।

प्रा० हरावल--पु० स्त्री० आगे की सेना, (यह शब्द तुर्की है) २ अगाड़ी, आगा।

प्रा० हरास--(सं० ह्रास) पु०दुःख, शोक।

सं० हरि--(हृ=लेना, दूर करना) पु० विष्णु, २ इन्द्र, ३ सांप, ४ मेंडक, ५ सिंह, ६ घोड़ा, ७ सूर्य, ८ चांद, ९ सूआ, सूवा, तोता, १० वानर, ११ यमराज, १२ हवा,–
("हरिर्विष्णावहाविन्द्रे,
भेकेसिंहेहयेरवौ।
चंद्रेकीरेप्लवङ्गेच,
यमेवातेचवाजिनि.")
१३ ब्रह्मा, १४ शिव, १५ किरण, १६ मोर, १७ कोयल, कोकिला,

हंस, १९ आग, २० धनुष्, २१ पर्वत, २२ गज २३ कामदेव गु० हरा रंग ।

प्रा० हरिअरे--गु० हराहरा, २ हरि को अरे=शत्रु समझना ।

सं० हरिचन्दन--पु० देववृक्ष, गोरोचन, मलयागिरि चन्दन, सफेद चन्दन, ज्योत्स्ना, केशर ।

प्रा० हरिचंद
सं० हरिचन्द्र
सं० हरिश्चन्द्र
} (हरि=विष्णु, चन्द्र=चांद) पु० एक बड़े दानी राजा का नाम जो अपना सत और धर्म निबाहने के लिये एक चंडाल के घर दासहोकर रहाथा ।

सं० हरिजन--(हरि=विष्णु, जन=भक्त) पु० विष्णुका भक्त, भगवान् का भक्त, ३ प्रह्लाद, हिरण्यकशिपु का बेटा ।

सं० हरिण--(हृ=लेना) पु० एक जानवर का नाम, मृग, मृगा, कुरंग, गु० हरा ।

सं० हरिणी--स्त्री० मृगी, २ सुवर्ण की प्रतिमा, हरे रङ्ग की ।

सं० हरित्--(हृ=लेना मनको) गु० हरा, सब्ज़, हरियर, पीला, पु० हरारंग, २ सूर्य का घोड़ा, ३ सिंह, ४ सूर्य, ५ विष्णु ।

सं० हरिताल--(हरित्) स्त्री० पीले रंग की एक धातु ।

सं० हरितालक--(हरित्) पु० हरित् कपोत, हरा कबूतर, शुक, सुग्गा, नाटक, हरताल ।

सं० हरितालिका- स्त्री० भादों सुदी तीज का स्त्रियों का व्रत दूर्वा, दूब ।

सं० हरिद्रा--(हरित्=हरा, या पीला रंग, द्रु=जाना) स्त्री० हल्दी ।

सं० हरिद्वार--(हरि=विष्णु, द्वार=दरवाज़ा, अर्थात् जहां गंगा में न्हाने से वैकुंठ मिलता है) पु० एक शहर का नाम जो गंगा के तीर पर है वहां गंगा में न्हाने का बहुत फल है ।

प्रा० हरिपैड़ी--(सं० हरि पंक्ति) स्त्री० हरिघाट, विष्णुघाट, विष्णु पैड़ी ।

सं० हरिप्रिया--(हरि + प्रिया) स्त्री० लक्ष्मी, तुलसी, द्वादशी ।

सं० हरिभक्त--(हरि + भक्त) पु० विष्णु का भक्त, विष्णुउपासक, वैष्णव । [विष्णु का भजन ।

प्रा० हरिभजन--(हरि + भजन) पु०

प्रा० हरियल--(हरा) पु० एक तरह का हरा कबूतर ।

सं० हरियान--(हरि=विष्णु, यान=वाहन) पु० गरुड़, विष्णु का वाहन ।

प्रा० हरियाली--(हरा) स्त्री० हराई, हरिअरी, सब्ज़ी ।

सं० हरिवाहन--(हरि + वाहन) पु०

---

(१) चन्द्र टरै सूरज टरै टरै जगत व्यौहार । पै दृढ़ श्री हरिचन्द्र को टरै न सत्य विचार ॥

विष्णु की सवारी, गरुड़ ।

सं॰ **हरीश**--(हरि=वानर, ईश=मालिक) पु॰ वानरों का राजा सुग्रीव।

प्रा॰ **हरु** / **हरुअ** } गु॰ हलका । [कापन ।

प्रा॰ **हरुआई**-- स्त्री॰ हलकाई, हल-

प्रा॰ **हर्डा** / **हर्डे** / **हर्रा** / **हर्रे** } (सं॰ हरीतकी, हरिद्दरावा पीलारंग, इण्=पाना) स्त्री॰ एकदवाई का नाम।

सं॰ **हर्त्तव्य**--(हृ+तव्य, हृ=लेना) म्मं॰ लेने योग्य ।

सं॰ **हर्त्ता**--(हृ=लेना) क॰ पु॰ लेने वाला, हरने वाला, दूर करनेवाला, पु॰ चोर।

सं॰ **हर्म्य**--पु॰ अट्टालिका, अटारी, प्रासाद, अंटा, ऊपर का कोटा ।

सं॰ **हर्ष**--(हृष्=प्रसन्न होना) पु॰ आनन्द, सुख, प्रसन्नता, खुशी ।

सं॰ **हर्षण**--(हृष्+अन, हृष्=प्रसन्न होना) भा॰ पु॰ आनन्द, ज्योतिषका एक योग।

सं॰ **हर्षित**--(हर्ष) क॰ आनंदित, प्रसन्न, खुश, मगन, प्रफुल्लित, आह्लादित ।

सं॰ **हल**--(हल=हल चलना) पु॰ हर, नागल, लांगल, एक चीज़ जिससे किसान बीज बोते समय धरती को साफ़ करते हैं २ व्यञ्जन अक्षर । [का धंधा ।

सं॰ **हलभूति**--स्त्री॰ कृषिवृत्ति, खेती

प्रा॰ **हलका**--गु॰ हौला, हलुक, फुलका, २ सस्ता, ३ ओछा, नीच, अधम, तुच्छ ।

प्रा॰ **हलकाकरना**-बोल॰ बोझ उतारना, घटाना, कम करना, ३ बेआबरू करना, हेठा करना, पानी उतारना, लतारना, बेइज्ज़तकरना ।

प्रा॰ **हलकाजानना**--बोल॰ तुच्छ समझना, अयोग्य जानना ।

प्रा॰ **हलकाना**--क्रि॰ स॰ सहारा देना, उकसाना ।

प्रा॰ **हलकोरना**--क्रि॰ स॰ इकट्ठा करना, बटोरना, समेटना, २ लहराना, फहराना, मौजमारना ।

प्रा॰ **हलचल**--पु॰ खलबली, हड़बड़ी, घबराहट, डर, हुल्लड़, बलवा ।

प्रा॰ **हलचलमचना**--बोल॰ हुल्लड़ होजाना, गदर होना ।

प्रा॰ **हलदिया**--(हल्दी) पु॰ एक तरह का जहर, २ कौंवल रोग या पांडुरोग जिसमें सारा शरीर पीला पड़ जाताहै पीलिया रोग, ३ गु॰ पीला रंग, हल्दी का रंग ।

प्रा॰ **हल्दी**--(सं॰ हरिद्रा) स्त्री॰ एक तरह का मसाला ।

सं० हलधर--(हल, धृ=रखना) पु० वलदेव, बलराम।

प्रा० हलपना--क्रि० अ० तड़फड़ाना, तड़फना, लोट पोट होना, २ जाड़े की तप से कांपना।

प्रा० हलफल--स्त्री० शिष्टाचार, सन्मान, आदर, २ हड़बड़ी, हलचल।

प्रा० हलरावना--क्रि० स० बहलाना, बच्चे को खेलाना।

प्रा० हलवाहा--(हल) क० पु० जोता, हल जोतने वाला।

प्रा० हलहलाहट--स्त्री० जर से या डर से कांपना।

सं० हलायुध--(हल+आयुध) पु० बलराम जिनका हथियार हल है, बलदेव, हलधर।

सं० हलाहल--पु० विष, ज़हर, माहुर, बड़ा जहर।

सं० हली--(हल+अ+इन, हल्=जोतना) क० पु० बलराम।

प्रा० हलोरा } (सं० हिल्लोल,
हिलोरा } हिल्लोल्=डोलना, हिलना) पु० लहर, मौज, तरंग।

प्रा० हल्ला--(त्र्य० हमला) पु० धावा, चढ़ाई रौला, हुल्लड़।

सं० हवन--(हु=होम करना) पु० होम, यज्ञ, आहुति।

सं० हविः } (हु=होमना) पु० स्त्री०
हविष्य } घी तिल चावल आदि होम की सामग्री।

सं० हव्य--(हु=होमना) पु० देवता को बलि या भेंट, नैवेद्य।

सं० हविष्यान्न--(हविष्य+अन्न) पु० तिल, चावल, जवादि।

सं० हविर्भुज्--पु० देवता, अग्नि।

सं० हस्त--(हस्=हँसना) पु० हाथ २ हाथी की सूंड़, ३ तेरहवां नक्षत्र, ४ कोहनी से लेकर बीच की अंगुली के शिर तक का नाम।

सं० हस्तगत--र्म्म० हाथ में आया।

सं० हस्तामलक--(हस्त=हाथ आमलक=आंवला, हाथ में आंवले के ऐसे अर्थात् बहुत सहज या हस्त हाथ, अमल=निर्मल, क=पानी अर्थात् हाथ में निर्मल पानी की बूंद की तरह) गु० सहज, सुगम, बेमिहनत, २ पु० एक ग्रन्थ का नाम।

सं० हस्तिदन्त--(हस्ती+दन्त) पु० [हाथीदांत।

सं० हस्तिनापुर-- (हस्तिन्=एक राजा, पुर=नगर) पु० पुरानी दिल्ली जिस को हस्तिन् नाम राजा ने बसाई थी और जो राजा युधिष्ठिर और उस के भाइयों की राजधानी थी, उसके खंडहरे और चिह्न दिल्ली से ५७ मील ईशान कोनको गंगा की पुरानी नहर पर अबतक हैं।

सं० हलधर--(हल, धृ=रखना) पु० वलदेव, वलराम ।

प्रा० हलफना--क्रि०अ० तड़फड़ाना, तड़फना, लोट पोट होना, २ जाड़े की तप से कांपना ।

प्रा० हलफल--स्त्री० शिष्टाचार, सन्मान, आदर, २हड़बड़ी, हलचल ।

प्रा० हलरावना--क्रि०स० बहलाना, बच्चे को खेलाना ।

प्रा० हलवाहा--(हल) क० पु० जोता, हल जोतने वाला ।

प्रा० हलहल्लाहट--स्त्री० जर से या डर से कांपना ।

सं० हलायुध--(हल+आयुध) पु० वलराम जिनका हथियार हल है, वलदेव, हलधर ।

सं० हलाहल--पु० विष, जहर, माहुर, वड़ा जहर ।

सं० हली--(हल+अ+इन, हल्=जोतना) क० पु० वलराम ।

प्रा० हलोरा, हिलोरा--(सं० हिल्लोल, हिल्लोल्=डोलना, हिलना) पु० लहर, मौज, तरंग ।

प्रा० हल्ला--(अ० हमला) पु० धावा, चढ़ाई रौला, हुल्लड़ ।

सं० हवन--(हु=होम करना) पु० होम, यज्ञ, आहुति ।

सं० हविः, हविष्य--(हु=होमना) पु० स्त्री० घी तिल चावल आदि होम की सामग्री ।

सं० हव्य--(हु=होमना) पु० देवता को बलि या भेंट, नैवेद्य ।

सं० हविष्यान्न--(हविष्य+अन्न) पु० तिल, चावल, जवादि ।

सं० हविर्भुज्--पु० देवता, अग्नि ।

सं० हस्त--(हस्=हँसना) पु० हाथ २ हाथी की सूंड़, ३ तेरहवां नक्षत्र, ४ कोहनी से लेकर वीच की अंगुली के शिर तक का नाम ।

सं० हस्तगत--र्म० हाथ में आया ।

सं० हस्तामलक--(हस्त=हाथ आमलक=आंवला, हाथ में आंवले के ऐसे अर्थात् वहुत सहज या हस्त हाथ, अमल=निर्मल, क=पानी अर्थात् हाथ में निर्मल पानीकी बूंद की तरह) गु० सहज, सुगम, वेमिहनत, २ पु० एक ग्रन्थ का नाम ।

सं० हस्तिदन्त--(हस्ती+दन्त) पु० [हाथीदांत ।

सं० हस्तिनापुर--(हस्तिन्=एक राजा, पुर=नगर) पु० पुरानी दिल्ली जिस को हस्तिन् नाम राजा ने वसाई थी और जो राजा युधिष्ठिर और उस के भाइयों की राजधानी थी, उसके खंडहरे और चिह्न दिल्ली से ५७ मील ईशान कोनको गंगा की पुरानी नहर पर अवतक हैं ।

प्रा०हाथबढ़ाना—बोल० किसी चीजके मिलने के लिये कोशिशकरना, २ दूसरे आदमी के माल असबाव पर दखल करना ।

प्रा० हाथबांधना—बोल० हाथ जोड़ना, बिनती करना ।

प्रा०हाथबैठना--बोल० जमना, किसी हुनर में ख़ूब अभ्यासहोना ।

प्रा०हाथभरना-बोल०हाथथकजाना।

प्रा० हाथमलना--बोल० पछतावा करना, सोचकरना, फिक्रकरना ।

प्रा० हाथमारना--बोल० वचन देना, ताली मारना, २ पाना, ले लेना, छीन लेना, लूट लेना, ३ तलवारसेघायलकरना, वारकरना।

प्रा०हाथमिलाना--बोल० बराबरी का दावा करना, २ कुश्ती लड़ने को तैयार होना ।

प्रा० हाथमेंरखना--बोल० अपने अधिकार में रखना, अपने अखतियार में रखना, वश में होना ।

प्रा०हाथलगना--बोल०हाथआना, मिलना, पाना, हासिल होना ।

प्रा० हाथलगाना-- बोल० हाथ रखना, छूना, २ झिड़कना, सजा देना, ३ किसी काम में लगाना, किसी काम को शुरूम करना ।

प्रा० हाथसमेटना--बोल० देने से हाथ को रोक लेना ।

प्रा०हाथपाईकरना } बोल० धक्कम धक्का
हाथबाहीकरना } करना, धौलधप्पा चलाना, लात मुक्की मारना, आपस में लड़ना ।

प्रा०हाथोंहाथकरना--बोल० सब मिलके करना ।

प्रा०हाथोंहाथ--बोल० तुरन्त, झटपट, तुरत, फुरत ।

प्रा० हाथोंहाथलेजाना— बोल० झटपट लेजाना, तुर्तफुर्त झपटलेना।

प्रा०हाथा--(सं० हस्त)पु० हाथ, २ अधिकार, वश । [का नाम ।

प्रा० हाथाजोड़ी--स्त्री० एक पौधे

प्रा०हाथी--(सं० हस्ती) पु० एक जानवर का नाम मतंग, गज ।

प्रा०हाथीदांत--(सं० हस्तीदन्त) पु० हाथी का दांत ।

प्रा० हाथीवान्—पु० महावत।

प्रा०हान } (हा=त्यागना, छोड़ना)
सं०हानि } स्त्री०घटी, टोटा, नुकसान ।

प्रा० हाय } (सं० हाहा) वि० बो०
हायहाय } आह, ओह, २ स्त्री० दुःख, पछतावा ।

सं० हायन--पु० स्त्री० वर्ष, वत्सर, वर्ष का दिन ।

प्रा० हायमारना—[illegible] पछताना, दुःख करना, [illegible] करना, आह

प्रा० हात } (सं० हस्त) पु०शरीर
हाथ } का एक अंग, हस्त, कर, २ कोहनीसे लेकर बीचकी अंगुली के शिरे तकका नाप, ३ अधिकार, वश, कबज़ा।

प्रा० हाथआना } बोल० अपने
हाथमेंआना } अधिकार में आना, कबज़े में आना, मिलना, हाथ लगना, मिलजाना।

प्रा० हाथउठाना—बोल० छोड़ देना, किसी काम के करने से रुक जाना, २ हाथ शिर पर लगा के सलाम करना, ३ मारना, ४ भीख देना खैरात बांटना।

प्रा० हाथकमरपररखना—बोल० बहुत निबल होना, बहुत कम जोर होना।

प्रा० हाथकानोंपररखना—बोल० अचंभे मे होना, २ झटपट इनकार कर जाना।

प्रा० हाथखैंचना—बोल० छोड़ना, मुंह फेरना, दूर भागना, किनारे होना, अलग होना।

प्रा० हाथचाटना--बोल० किसी अच्छे खाने का बहुत स्वाद लेना, या अच्छे खानेको बहुत खुशी से खाना।

प्रा० हाथजोड़ना—बोल० विनती करना, गिड़गिड़ाना।

प्रा०हाथडालना-बोल० किसीकाम में अपनाअधिकारकरना,दस्तअंदाज़ी करना, दखल करना, दबाना।

प्रा० हाथधोना--बोल० निरास होना, नाउम्मैद होना।

प्रा० हाथपड़ना--बोल० अपने अधिकार में आना, कबज़े में आना, हाथ लगना।

प्रा०हाथपत्थरतलेदबना—बोल० बेवश होना, कुछ नहीं कर सकना।

प्रा० हाथपसारना--बोल०मांगना, चाहना।

प्रा० हाथपांवफूलजाना--बोल० घबरा जाना, काम करने से हिचकिचाना।

प्रा० हाथपांवमारना--बोल०मिहनत करना, कोशिश करना, २ घबरा जाना, वृथा परिश्रम करना।

प्रा० हाथफेंकना-- बोल० पटा या लकड़ी चलाना, २ मुफत का माल लेना।

प्रा० हाथफेरना--बोल० प्यार करना, दुलार करना, छोह करना, गलेलगाना, फुसलाना, शाबाशीदेना।

प्रा० हाथबंदहोना--बोल० काम में बहुत लगा रहना, कुछ फुर्सत नहीं पाना, २ गरीब होना, खाली हाथ होना, निर्द्धन होना।

प्रा० हाथबढ़ाना—बोल० किसी चीजके मिलने के लिये कोशिशकरना, २ दूसरे आदमी के माल असबाव पर दखल करना ।

प्रा० हाथबांधना—बोल० हाथ जोड़ना, विनती करना ।

प्रा० हाथबैठना—बोल० जमना, किसी हुनर मे ख़ूब अभ्यासहोना ।

प्रा० हाथभरना—बोल० हाथथकजाना।

प्रा० हाथमलना—बोल० पछतावा करना, सोचकरना, फिक्रकरना ।

प्रा० हाथमारना—बोल० वचन देना, ताली मारना, २ पाना, ले लेना, छीन लेना, लूट लेना, ३ तलवारसेघायलकरना, वारकरना।

प्रा० हाथमिलाना—बोल० बराबरी का दावा करना, २ कुश्ती लड़ने को तैयार होना ।

प्रा० हाथमेंरखना—बोल० अपने अधिकार में रखना, अपने अखतियार में रखना, वश में होना ।

प्रा० हाथलगना—बोल० हाथआना, मिलना, पाना, हासिल होना ।

प्रा० हाथलगाना—बोल० हाथ रखना, छूना, २ झिड़कना, सज़ा देना, ३ किसी काम में लगना, किसी काम को शुरूअ करना ।

प्रा० हाथसमेटना—बोल० देने से हाथ को रोक लेना ।

प्रा० हाथपाईकरना, **हाथबाहीकरना**—बोल० धक्कम धक्का करना, धौलधप्पा चलाना, लात मुक्की मारना, आपस में लड़ना ।

प्रा० हाथोहाथकरना—बोल० सब मिलके करना ।

प्रा० हाथोंहाथ—बोल० तुरन्त, झटपट, तुरत, फुरत ।

प्रा० हाथोंहाथलेजाना—बोल० झटपट लेजाना, तुर्तफुर्त झपटलेना।

प्रा० हाथा—(सं० हस्त) पु० हाथ, २ अधिकार, वश । [का नाम ।

प्रा० हाथाजोड़ी—स्त्री० एक पौधे

प्रा० हाथी—(सं० हस्ती) पु० एक जानवर का नाम मतंग, गज ।

प्रा० हाथीदांत—(सं० हस्तीदन्त) पु० हाथी का दांत ।

प्रा० हाथीवान्—पु० महावत।

प्रा० हान, **सं० हानि**—(हा=त्यागना, छोड़ना) स्त्री० घटी, टोटा, नुक़सान।

प्रा० हाय, **हायहाय**—(सं० हाहा) वि० बो० आह, ओह, २ स्त्री० दुःख, पछतावा ।

सं० हायन—पु० स्त्री० वर्ष, बरस, वर्ष का दिन ।

प्रा० हायमारना—बोल० पछताना, दुःख करना, [illegible]

भरना, किसी की उन्नति देखकर कुढ़ना।

प्रा॰ हायहायकरना—बोल॰ रोना, पीटना, दुःख से रोना।

सं॰ हार--(हृ=लेना) पु॰ मोती अथवा फूलों की माला।

प्रा॰ हार—(सं॰ हारि, हृ=लेना) स्त्री॰ शिकस्त, पराजय, घटी, २ पु॰ बैलों का झुण्ड, ३ चरनेकी जगह, चरी, चरागाह।

सं॰ हारक—(हृ+अक, हृ=लेना) क॰ पु॰ कितव, चोर, भाजकाङ्क, चुरानेवाला।

प्रा॰ हारना--(सं॰ हारण, हृ=लेना या पकड़ना) क्रि॰ अ॰ थकना, शिकस्त खाना, पराजितहोना, २ खेलखोना, खेलमें मात होना।

प्रा॰ हारमानना / **हारमानलेना** } बोल॰ निराश होकेछोड़देना।

सं॰ हारित—र्मा॰ हर गया, छीना गया, जबरदस्ती से लिया गया।

सं॰ हार्दिकदुःख—भा॰ पु॰ चित्त-ताप, दिली सदमा।

सं॰ हारी—क॰ पु॰ चोर, ठग।

सं॰हार्य्य—र्म॰हर्तव्य,चुरानेलायक।

सं॰ हाव—(ह्वे=बुलाना, या कामदेव को उठाना) पु॰ नखरा, चोचला, हावभाव, हावभाव, रावचाव।

सं॰हावभाव--(हाव+भाव) पु॰ रावचाव, रंगरस, दुलारप्यार, नखरा, चोंचला।

सं॰ हास्य--(हस्=हंसना) पु॰ हंसी, हांसी, खुशी, कौतुक, खेल, ठट्ठा।

सं॰हाहा--(हा=छोड़ना सुख को) क्रि॰वि॰ हायहाय, आह, ओह, २ अचंभा, वाह, वाहवाह।

सं॰ हाहाकार--(हाहा=हायहाय कृ=करना) पु॰ हाय हायकरना, घबराहट, २ लड़ाई का शब्द, हुल्लड़, कोलाहल, शोक का शब्द।

प्रा॰हाहाहीही--स्त्री॰ हंसी, हंसना।

प्रा॰ हाहाहीहीकरना--बोल॰ हंसना, दांतनिकालना।

प्रा॰ हि-अव्य॰ हेतु,निश्चय, अवधारण, निकालना, विशेष, प्रश्न,सम्भ्रम, हेतु, उपदेश, शोक, असूया, निंदा।

प्रा॰ हिंडोल--(सं॰ हिन्दोल, हिल्लोल्=हिलना) स्त्री॰ एक राग का नाम जो वसन्त ऋतु में भोर के समय गाया जाता है।

प्रा॰ हिंडोला--(सं॰ हिन्दोल, हिल्लोल्=हिलना) पु॰ पलना, झूला, २ गीत जो झूलते समय गाया जाता है।

सं॰ हिंसक / **हिंस्रक** } (हिंस्+अक, हिंस=मारना) क॰ पु॰

मारने वाला, हिंसा करने वाला, घातक, वधिक, २ दुर्जन, दुष्ट, पापी, ३ जंगली जानवर जैसे बाघ भेड़िया चीता आदि । [मारना ।

सं० **हिंसन**—भा० स्त्री० वध करना,

सं० **हिंसा**--(हिंस्=मारना) स्त्री० मारना, वध, घात, २ नुकसान ।

सं० **हिक्का**—स्त्री० हेचकी, हिचकी, रोगभेद ।

सं० **हिंगु**—पु० रामठ, हींग ।

सं० **हिंगुल**—(हिंगु एक लाल चीज, ला=लेना) पु० सिन्दूर ऐसी लाल चीज़, शिंगरफ ।

प्रा० **हिचकना**—क्रि० अ० आगा पीछा करना, रुकना, दबना, झझकना, हटना, टलना, ठिठकना ।

प्रा० **हिचकाना**—क्रि० स० धक्का देना, झोका देना, दिल छोटा करना, हिम्मत पस्त करना ।

प्रा० **हिचकिचाना**--बोल० संदेह में पड़ना, दुविधा में होना, आगा पीछा करना, २ हकलाना, लड़ खड़ाना ।

प्रा० **हिचकी**--(सं० हिक्का, हिक्= हिचकी लेना) स्त्री० हिच् ऐसा शब्द जो गले में से निकलता है ।

प्रा० **हिजड़ा**--पु० नपुंसक, नामर्द ।

सं० **हित**--(हि=जाना, या बढ़ना, अथवा धा=रखना) पु० प्यार, मित्राई, २ उपकार, भलाई, ३ गु० उचित, ठीक, योग्य, भला ।

सं० **हितकार** } (हित=भला, कार
हितकारी } या कारी=करने वाला, कृ=करना) क० भला करने वाला, मित्र, सज्जन, उपकारी, हितू ।

ग्रा० **हितू**--(हित) क० मित्र, हितकारी ।

सं० **हितैषी**---(हित=भला, इष्= चाहना) गु० दूसरे का भला चाहनेवाला, परोपकारी, हितकारी ।

सं० **हितोपदेश**--(हित=भला, उपदेश=शिक्षा) पु० भली शिक्षा, अच्छी सीख २ संस्कृत में विष्णुशर्म्मा की बनाई हुई एक पुस्तक जिसमे राजनीति की बातें लिखी है ।

प्रा० **हिनहिनाना**--क्रि० अ० घोड़े का बोलना, हींसना ।

प्रा० **हिन्द**—(यह शब्द सिंधु से निकला है क्योंकि पश्चिमी देशों के लोग स की जगह ह बोलते हैं और जब सिकन्दर यहां आया तो उसने सिंधु नदी के इस पार के देश को हिन्द कहा और आज तक यूनान वाले इसे 'इन्द' कहते हैं उसी से 'इण्डिया' शब्द बना है जिस नाम से अंगरेज हिन्दुस्तान को पुकारते हैं) पु० भारतवर्ष हिन्दुस्तान ।

प्रा० हिन्दी-(हिन्द) गु० हिंदुस्तानका, हिंदुस्तानी, २ स्त्री० हिंदुस्तानकीबोली।

प्रा० हिंदू--(हिन्द) पु० हिंदुस्तान का वासी जो वेदके मतकोमानते हैं।

सं० हिम-(हि=जाना, या बढ़ना) पु० पाला, बर्फ, शीत, तुषार, गु० ठंढा, जमा हुआ।

सं० हिमऋतु--(हिम+ऋतु) स्त्री० जाड़ा, जाड़े की ऋतु, शीतकाल, सर्दी की ऋतु।

सं हिमकर--(हिम=ठंढी, कर= किरण) पु० चांद, २ कपूर।

सं० हिमकूट--पु० शिशिरऋतु, जाड़ा।

सं० हिमगिरि--(हिम+गिरि) पु० हिमालय पहाड़।

सं० हिमवत्--(हिम=बर्फ, वत्=वाला) पु० हिमालय पहाड़, गु० बर्फ वाला, बहुत ठंढा।

सं० हिमांशु--(हिम=ठंढी, अंशु= किरण) पु० चांद, २ कपूर।

सं० हिमाद्रि--(हिम=बर्फ आद्रि= पहाड़) हिमालय पहाड़।

सं० हिमालय--(हिम=बर्फ, आलय = जगह) पु० हिंदुस्तान का एक पहाड़ जो उत्तर में है और संसार के सारे पहाड़ों से ऊंचा है और जिसको हिमाचल, हिमाद्रि, हिम गिरि भी कहते हैं।

प्रा० हिय, हिया, हियौ (सं० हृद् या हृदय) पु० हिरदा, मन, हृदय।

प्रा० हियाव (सं० हृदय) भा० पु० शूरमापन, शूरवीरता, हिम्मत, साहस।

प्रा० हियो=जब गाय गोरूको बुलाते हैं तब यह शब्द बोलते हैं।

सं० हिरण, हिरण्य (हृ=लेना, मनको) पु० सोना, सुवर्ण।

सं० हिरण्यकशिपु (हिरण्य=सोना, कशिपु=कपड़ा, कश्=शब्द करना) पु० एक दैत्य का नाम जो प्रह्लाद का बाप था जिसको विष्णु ने नृसिंह अवतार लेके मारा।

सं० हिरण्यगर्भ--(हिरण्य=सोना, गर्भ=पेट) पु० जिसके पेट में सुवर्ण हो, शालग्राम की मूर्ति, २ ब्रह्मा।

सं० हिरण्याक्ष-- (हिरण्य=सोना, अक्ष=आंख जिसकी आंखें सोने सी लाल चमकती हों) पु० हिरण्यकशिपु का भाई जो फिर कुम्भकरण और दन्तवक्र हुआ था।

प्रा० हिरद, हिरदा (सं० हृद्, वा हृदय) पु० हिया, हृदय, छाती, मन, अन्तः करण।

प्रा० हिरन--(सं० हरिण) पु० एक जानवर का नाम, मृग, मृगा।

प्रा० हिराना--क्रि० स० खोना, रख कर भूल जाना।

प्रा० हिलकना-क्रि० अ० दर्दसे ऐंठना।

प्रा० हिलकोर स्त्री० } (सं० हिल्लोल) लहर, तरंग, मौज, २ हिलाव, लहराव।
हिलकोरा पु० }

प्रा० हिलकोरना--(हिलकोर) क्रि० अ० लहराना, मौजमारना, हिलाना।

प्रा० हिलना--(हिल्लोल) क्रि० अ० डोलना, कांपना, २ मिलजुल जाना, वश हो जाना।

प्रा० हिलमिलजाना--बोल० मिला जुला रहना, मिलजुल जाना।

प्रा० हिलामिला-बोल० मिलाजुला।

प्रा० हिलोरना--(हिल्लोल) क्रि० अ० लहराना, मौजमारना, हिलकोरना।

प्रा० हिलोरा--(हिल्लोल) पु० लहर, तरङ्ग, मौज, हिलकोरा।

प्रा० हिस्का-पु० बराबरी, देखादेखी। बदाबदी, लाग।

प्रा० हींग--(सं० हिंगु हिम=ठंढा, गम्=जाना) स्त्री० एक सुगंधित चीज जिसको घीमें गर्मकरके दाल आदि तरकारी में बघार देते हैं।

प्रा० हींसना-क्रि० अ० हिनहिनाना।

प्रा० हींक--स्त्री० उबकाई, मतलाई।

सं० हीन--(हा=छोड़ना) गु० विन, छोड़ा हुआ, रहित, कम, २ नीच, अधम, ३ गरीब, दीन।

सं० हीनजाति--(हीन=नीच, जाति=जात) गु० नीच जात का, २ स्त्री० गणितमें बड़े नाम के अंकको छोटे नामके अंकमें लाना जैसे रुपये को आने के रूप मे लाना आदि।

सं० हीनवर्ण--(हीन+वर्ण) गु० नीच जाति का, अधम, नीच।

सं० हीर--(हृ=लेना) पु० सार, गूदा, २ वज्र, ३ हीरा, ४ शिव, ५ सांप, ६ हार, ७ सिंह।

प्रा० हीर--स्त्री० एक स्त्री का नाम जो रांझा को बहुत प्यारी थी।

प्रा० हीरा--(सं० हीर) पु० एक रत्न का नाम।

प्रा० हीरामन--पु० एक तरह का तोता, एक तरह का सुवा।

प्रा० हीरावल } (सं० हरि+आवली, अर्थात जिस पर हरि हरि ऐसा लिखा हो या हीर=हीरा, आवली=पांत) स्त्री० एक तरह का कपड़ा जिस को योगी ओढ़ते हैं।
हीरावली }

प्रा० हीही--बि० बो० हंसनेकाशब्द, हाहाहीही, २ मनने का शब्द, आहा, वाहवाह।

सं० हुङ्कार--(हुम् ऐसा शब्द

करना) स्त्री० पुकार, गर्जन, डराने का शब्द। [उपद्रवी।

प्रा० हुड़दंगा--पु० दंगैत, लड़ाक,

प्रा० हुंडवी } हुंडी } स्त्री० रुपये के पहुँचाने की चिट्ठी।

प्रा० हुंडाभाड़ा--पु० बीमा, जोखिम, पहुँचावन, किसी चीज या सोने चांदी आदि के जेवर को एक जगह से दूसरी जगह पहुँचा देने के लिये जो कुछ ठहरे।

प्रा० हुंडार--पु० भेड़िया।

प्रा० हुंडावन } हुंडियावन } स्त्री० हुण्डी का वट्टा, हुण्डी के लिये जो कुछ दिया जाय।

प्रा० हुंडीवाल--पु० कोठीवाल, वह महाजन जिसके हुण्डीका व्यवहार होता है।

सं० हुत--(हु=होमना) म्म० होमी हुई, पु० होमनेकी चीज जैसे घीआदि।

सं० हुतभुक्--पु० अग्निदेवता।

सं० हुताश } हुताशन } (हुत+अश्=भक्षण करना) अग्नि, वह्नि।

प्रा० हुमकना--क्रि० अ० उछलना।

प्रा० हुलसना--(सं० उल्लसन उत्, लस्=खेलना, आनंद करना) क्रि० अ० खुश होना, प्रसन्न होना, आनन्दित होना।

प्रा० हुलसी-- स्त्री० सुखी, खुशी, तुलसीदास की माता का नाम।

प्रा० हुलास--(सं० उल्लास) पु० आनंद, हर्ष, खुशी, प्रसन्नता।

प्रा० हुल्लड़--पु० रौला, बखेड़ा, हलचल, हौड़ा।

प्रा० हूं--क्रि० वि० हां, भी, सही, भला, ठीक, अच्छा, २ वर्त्तमानकाल में एक वचन उत्तमपुरुषका चिह्न।

प्रा० हूंहां--पु० धूमधाम, हुल्लड़।

प्रा० हूक--स्त्री० पीड़ा, टसक।

प्रा० हूकहूककेरोना--बोल० सिसकी भर के रोना, टसकरके रोना।

सं० हूति--(ह्वे=बुलाना) स्त्री० आह्वान, बुलावा। [सिक्का।

सं० हून--पु० मदरास का सोने का

प्रा० हूलना--क्रि० स० पेल देना, (जैसे हाथी को) चलना, २ चुभाना, खींचना, आंकुस मारना।

सं० हृत-(हृ=लेना) म्म० लियाहुआ।

सं० हृद } हृदय } (हृ=लेना) पु० मन, दिल, २ कुण्ड, हिरदा, हिया, छाती।

सं० हृषीकेश--(हृषीक=इन्द्रिय(हृष्=प्रसन्न होना) और ईश=मालिक) पु० विष्णु, भगवान्, नारायण।

सं० हृष्ट--(हृष्=प्रसन्न होना) क० प्रसन्न, हर्षित, आनंदित, मग्न।

सं० हृष्टपुष्ट--(हृष्ट=प्रसन्न, पुष्ट=मो-

टा ताज़ा) क०मोटा ताज़ा,प्रसन्न, संडमुसंड, मुटकड़ ।

सं०हे--अव्य० सम्बोधन,बुलाना,आह्वान करना, असूया करना, निन्दा करना ।

प्रा०हेठ—क्रि० वि०नीचे, तले, हेठे ।

प्रा० हेठा—(सं० हेठ्=रोकना) गु० डरपोकना, २ ढीला, आसकती, आलसी, ३ नीच । [ज्यादा।

सं०हेति-सूर्य्यका तेज,शस्त्र, अग्निकी

सं०हेतु—(हि=जाना,या बढ़ना) पु० कारण, सबब, अर्थ, अभिप्राय, मतलब, फल ।

सं० हेम—(हि=बढ़ना) पु० सोना, सुवर्ण, कंचन ।

सं० हेममाली-पु०सूर्य,स्वर्णमाली ।

सं०हेमन्त-(हि=जाना,या बढ़ना)पु० जाड़ेकी ऋतु, एक ऋतु जो अगहन और पूसके महीनोंमें रहती है,सर्दी ।

सं०हेय—(हा=छोड़ना)म्मी०त्याज्य, छोड़ने योग्य ।

प्रा०हेरना—क्रि०स०खोजना, ढूंढ़ना, २ देखना, ३ रगेदना, खदेड़ना ।

सं०हेरम्ब—(हे=शिव, रबि=जाना) पु० गणेश ।

प्रा० हेलना—क्रि०अ०पैरना, तैरना, पार होना ।

सं०हेला--(हेल्=अवज्ञा करना)स्त्री० खेल, क्रीड़ा, २ अवज्ञा, अनादर ।

प्रा० हौंकना—क्रि० अ० हांपना, हफहफाना, ऊंचा सांस लेना ।

प्रा० हौंठ } (सं० ओष्ठ) पु०मुँहके
होठ } बाहरका हिस्सा, ओष्ठ ।

प्रा० होड़--स्त्री० पण, वचन, दांव, पेच, शर्त ।

प्रा० होड़बदना-बोल०शर्तलगाना ।

प्रा० होड़लगाना--बोल० शर्त लगाना,वचन करना, पणकरना, बाजी लगाना ।

प्रा०होड़हारना-बोल०बाज़ीहारना ।

प्रा०होत--(होना) स्त्री० वश,शक्ति, सामर्थ्य, पहुँच ।

प्रा० होतब-(सं० भवितव्य)पु० भाग, क़िस्मत, प्रारब्ध ।

प्रा होतव्यता--(सं० भवितव्यता) स्त्री० होनहार,संयोग, भाग, प्रारब्ध ।

सं० होता--(हु=होमना) क० पु० होम करनेवाला ।

प्रा० होना--(सं० भवन, भू=होना) क्रि० अ० रहना, विद्यमान रहना ।

प्रा० होआना--बोल० जाके चला आना ।

प्रा० होचुकना }
होलेना } बोल० पूराहोना ।

प्रा० होजाना—बोल० आपड़ना, संयोग बनना ।

प्रा० होतेहोते—बोल० धीरे धीरे, क्रम क्रम से।

प्रा० होन्हार } (होना) गु० होने
होनहार } वाला, संभव, जो होगा।

सं० होम—(हु=होमना) पु० हवन, यज्ञ, वेद के मंत्रों से देवताओं को बलि देने के लिये घी आदि को आग में डालना।

सं० होमकुण्ड—(होम=कुण्ड) पु० होम करने के लिये आग रखने का गढ़ा।

प्रा० होमना—(होम) क्रि० स० होम करना, घी आदि होम की चीज़ को आग में डालना।

सं० होमी—(हु=होम) क० पु० होम करनेवाला।

प्रा० होला—(सं० होलका, हु=खाना) पु० कच्चे चने, या आग में सेंके हुए कच्चे चने, छोला, बूट।

प्रा० होला—पु० एक तरह की नाव।

प्रा० होली—(सं० होला, अथवा होलिका, हु=होम करना या खाना) स्त्री० हिंदुओं का एक बड़ा तिहवार जो फागुन के महीने में होता है।

प्रा० हौंस—(अ० 'हवस') स्त्री० चाह, चोप, इच्छा, उमंग, बढ़ने की चाह।

प्रा० हौले—क्रि० वि० धीरे, धीमे।

सं० ह्रद—(ह्राद्=शब्द करना) पु० गहरी झील, सरोवर, दह, कुण्ड।

सं० ह्रस्व—(ह्रस्=छोटा होना) पु० एक मात्रा का स्वर, लघु, २ गु० छोटा, नाटा, बावना।

सं० ह्रास—(ह्रस्=छोटा होना, या शब्द करना) पु० घटी, कमी, क्षय, २ शब्द, आवाज़।

सं० ह्री—(ह्री=लजाना) स्त्री० लाज, लज्जा, शर्म।

सं० ह्लाद—(ह्लाद्=प्रसन्नहोना) पु० आनंद, हर्ष, संतोष, सुख।

सं० ह्लादित क० पु० आनन्दित, प्रसन्न, हर्षित।

सं० ह्लादिनी—स्त्री० बिजली, वज्र, ईश्वरी शक्ति, गु० आनन्दयुक्त।

सं० ह्ललन—(ह्लल्=जाना) पु० चलना, महादेव, ब्रह्मा, विष्णु, गणेश, स्त्री० सरस्वती, दुर्गा, लक्ष्मी।

सम्पूर्णम् ॥

प्रार्थना ॥

सज्जनों से विनय है कि इस पुस्तक में जहां कहीं अक्षर पद भ्रष्ट हो उसको मुझे अपनी अनुकम्पा दृष्टि से उल्लेख करें कि पुनः यंत्रित कराने में उसे शुद्ध करदूं पुनर्निवेदन यह है कि जिस पुस्तक पर मेरे हस्ताक्षर यावनी भाषा में अथवा मुहर न हो चोरी की जान कर मुझे सूचित करें मैं उनका धन्यवाद मानूंगा और ५) मुद्रा भेंट करूंगा ॥

निम्न लिखित पुस्तकें मेरे पास मिलसक्ती हैं

नागरी पुस्तकें

किष्किन्धाकाण्ड स० व्याकरणांग भूषित मूल्य ≈) म०)॥
आशयसंग्रहचन्द्रिका अर्थात् मज़मून नवी-
सीकी पुस्तक .... मूल्य ≡) म०)॥
अलंकार सुबोधिनी .... मूल्य ≈) म०)॥

उर्दू पुस्तकें

तालीमुल्मसाहत मयहल जिसमें १५००
सवाल जवाब हैं .... मूल्य १।) म० -)॥
तारीख़ अकमल हंटरसाहेब के तीनों हिस्सों
का खुलासा सवाल जवाब के तौरपर....मूल्य ।)॥ म०)॥